

धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

प्रधानसम्पादकः

पं० कुवेरनाथशुक्लः, एम. ए. व्याकरणाचार्यः

धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

सम्पादकः

श्रीसुभद्रशर्मा

राजकीयसरस्वतीभवनपुस्तकालयाध्यक्षः

प्रतिष्ठानम्—
उत्तरप्रदेशशासकीयमुद्रणालयाभ्यन्तः
इलाहाबाद

मूल्यम्

समर्पणपद्यानि

राजनीतिनिपुणोऽपि प्रत्याख्यातप्रियानृतव्याजः ॥
प्रेमोल्लसितसमाजः समाजनीयः समासद्भिः ॥ १ ॥
आधुनिकोऽपि निबद्धश्रद्धः प्राचीनपद्धतौ सुकृती ॥
घृतसंस्कृतसाहित्योद्धरणधुरश्चि द्विलासरसमधुरः ॥ २ ॥
श्रीसम्पूर्णानन्दोऽप्यानन्दतु मत्समर्पितं विन्दन् ॥
धर्मोत्तमव्यवस्थासंग्रहमुद्गासितं सद्यः ॥ ३ ॥
भवदादेशमहिम्ना ग्रन्थोऽयं वै प्रकाशितः श्लाघ्यः ॥
स्फुरतु भवत्करतलयोः सहस्रपत्रश्रिया निहितः ॥ ४ ॥
रान्यधुराभिर्भवतः सुबन्धुराभिर्नै शान्तिमनुभवतः ॥
वस्त्वन्तरे लघुन्यापि प्रवृत्तिरुच्चैरुदाहार्या ॥ ५ ॥

इति श्रीसुभद्रस्य

सन् १९५४ ई० में काशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुछ चुने हुए इस्त-जिलित ग्रन्थों को प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरमोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-सम्राट की तीन-पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इस ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि यहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता परिदित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता सबद्ध धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८२६ साल तक की फलस्फे की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे सबद्ध प्रधानतया परिदित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासयें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी शातव्य है कि आरम्भिक वर्षों में परिदित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी परिदित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन परिदित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

परिदितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि परिदितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संवादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम् !'

इस व्यवस्था संग्रह, में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा परिदत्तों में उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपील के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से परिदत्तों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र परिदत्तों की व्यवस्थाओं भी पुनर्निरीक्षण के हेतु सदर दीवानी अदालत के परिदत्त के पास भेजी जाती री। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थाएँ बङ्गाल में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, परिदत्त वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबंधित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १६वें शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा गद्य ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाषा की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। बङ्गलिपि में अथवा मूलकोप में व-व का भेद नहीं है—इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के ध्यान पर बाङ्गला में 'व' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से भिन्न भाषाओं के 'व' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाषा में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

सन् १९५४ ई० में काश्मिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुच चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों को प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-समग्र को तीन पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इन ग्रन्थ के अखिलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयधिकारियों की सहायता सबद धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८३६ साल तक की कलकत्ते की सद्दर दीवानी अदालत द्वारा उससे सबद प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासयें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी शतव्य है कि आरम्भिक दिनों में पण्डित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संपादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्।'

इस व्यवस्था-संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा परिदृश्यों ने, उनके उत्तर संस्कृत में, दिये हैं। अनेक अपोल के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से परिदृश्यों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र परिदृश्यों की व्यवस्थाएँ भी—पुनर्निरीक्षण के हेतु, सदर दीवानी अदालत के परिदृश के पास भेजी जाती थीं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थाएँ बङ्गाद्वार में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, परिदृश वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबंधित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत श्रमों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १९वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाषा की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत श्रमों में जो बहुत ही अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। बङ्गलिपि में अथवा मूलकोप में व-व का भेद नहीं है—इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बङ्गला में 'व' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से भिन्न भाषाओं के 'व' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाषा में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

है। अन्तिम भाग में पढ़ने वाले ऐसे वचन जो बार-बार पूर्व भाग में आ चुके हैं उनके लिए ऐसा निर्देश प्रायः नहीं दिया गया है।

लेख के साथ लिखना पड़ता है कि हमें कई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सके, अतः उनके वचनों के पाठों का मिलान हम नहीं कर सके हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में हमें महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पण्डित भी कुवेरनाथ शुक्ल ने बार-बार प्रोत्साहन देकर सहायता की है। पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थविभाग के मेरे साथियों में पण्डित भीविभूतिभूषण मद्राचार्य ने विभिन्न प्रकार से समय-समय पर सहयोग दिया है, पण्डित श्रीचन्द्रभानु पाण्डेय तथा पण्डित श्रीनिशाकान्त पाठक ने प्रतिलिपि बनाने में सहायता की थी, पण्डित तारकनाथजी ने आरम्भ से लेकर समाप्ति तक किसी न किसी रूप में मेरे इस कार्य में हाथ बँटाया है, पण्डित श्रीधुनाथ पाण्डेय संस्कृत के प्रफु-संशोधन में मेरे निरन्तर सहयोगी रहे हैं तथा इस कार्य में समय-समय पर पण्डित श्रीराजाराम भट्टमहने भी सहयोग दिया है।

मैं इन सब साथियों का श्रेणी हूँ, साथ-साथ यह भी व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ कि इस ग्रन्थ की त्रुटियों का उत्तरदायित्व एक मात्र मुझ पर ही है, मेरे इन सहायकों पर नहीं।

मुझे दुःख है कि प्रेत के कर्मचारियों की अज्ञावधानी के कारण तथा मेरे दृष्टि दोष के कारण बहुत सी अशुद्धियों का संशोधन ग्रन्थ के आरम्भिक भाग में नहीं हो सका है। टाइपों के टूटने तथा प्रूफ की अस्वच्छता के कारण भी कई स्थानों पर त्रुटियाँ रह गयी हैं। अतः सावधान रहने पर भी शुद्धिपत्र कुछ लम्बा हो गया है। तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में मैं अपने माननीय गुरुदेव डा० श्री मुनीतिकुमारचटर्जी तथा कलकत्ता हाइकोर्ट के न्यायाधीश श्री प्रशान्तविहारोमुखर्जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इसे देखकर इसकी भूमिका की रचना में एवं ग्रन्थ के वज्रावर में भी प्रकाशित कराने के हेतु मेरी सब प्रकार की सहायता करने की उदारता प्रकट की है।

इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्यो का निदर्शन बृहद् भूमिका के बिना नहीं हो सकता है। इस कार्य में कुछ अधिक समय लगेगा, तथा एतर्ष मेरा कलकत्ते में कुछ सप्ताह बिताना आवश्यक है, जो अभी तक संभव मालूम नहीं पड़ रहा है। अतः भूमिका की प्रतीक्षा में ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब न कर इसे विद्वानों के समक्ष इस आशा से रख रहा हूँ कि सद्दय विद्वानों की दृष्टि इस पर पड़ेगी, तथा जिस भूमिका के लिखने की जो सुविधा मुझे नहीं हो सकी है, उसमें उनका भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

श्रीसुमद्रभा

१९ चैत्र १८७९ शकान्द

क्रमांकः	नामसंकृतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशकनिर्धारनस्थानम्	लिखितमुद्रितविकल्पम्	विशेषविषयवचनम्
१	भक्त.	भक्तनाम	ग्रन्थप्रकाशकनिर्धारनस्थानम्	मुद्रित०	कनकविंशतिद्विदान्तर्गता (२ संस्कारणम्)
२	आर्ष.	प्रशिसद्विदा	"	"	"
३	उर्ध.	आप्तसम्प्रदाय	"	"	"
४	जौ.	उद्योगसंज्ञिका	नारायणप्रैत, कलकत्ता, ई० १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्कारणम्)
५	कल्पन	कल्पन	सर्वस्वनीषण्वनुसन्धानालय०, ग० स० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १४०६१
६	वास्तव.	काल्याणस्यसृष्टिः	आर्यसंस्कृतिसंघे, पूना, ई०, सन १९३३	"	पी० पी० काशी
७	कणु	कालिकापुराणम्	"	"	"
८	रत्नक.	हरपालशरः	सरस्वतीमननपुस्तकालय०, ग० स० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११६७४/१३७६
९	गान.	गायत्रीतन्त्रम्	अक्षयप्रभेस, काशी, ई० सन १८६७	मुद्रित०	हरिदासगुप्तेन प्रकाशितम्
१०	मीसं.	गौतमसुद्धि	बदवासीप्रैत, कलकत्ता, सन १९१६ काठ्.	"	ऊर्ध्वविद्युसद्विदान्तर्गता (२ संस्कारणम्)
११	वित्त.	वित्तिसूत्रम्	सायणप्रभेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्कारणम्)
१२	दत्त.	दत्तसंहिता	बदवासीप्रैस, कलकत्ता, सन १९१६ काठ्.	"	ऊर्ध्वविद्युसद्विदान्तर्गता (२ संस्कारणम्)
१३	दत्त.	दत्तसूत्रचन्द्रिका	गुरुप्रभे, कलकत्ता	"	मधुसूदनसृष्टितरुनप्रकाशित०
१४	दमी.	दत्तमीमांसा	"	"	"
१५	दत्त.	दत्तसूत्रप्रणः	सरस्वतीमननपुस्तकालय०, ग० स० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १३३०५
१६	रत्नौ.	दत्तकौमुदी	"	"	१२९९२
१७	दामा.	दामायाः	विद्येसरप्रैत, कलकत्ता, ई० सन १८६३	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्कारणम्)

विशेषविवरणम्
जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)

लिखितमुद्रितविवरणम्

क्रमांकः	नाममुद्रितः	प्रथमनाम	मुद्रित०	जोवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
१७	दाप.	दापरायणम्	"	"
१८	दापतन्त्रे.	दापतन्त्रप्रयोगः	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
१९	दानम्.	दानपद्युक्तः	"	"
२०	दिव्यम्.	दिव्यपत्रम्	"	मयंनारायणयुक्तस्वकारित०
२१	देवत.	देवप्रतिष्ठापत्रम्	"	पुस्तकसंख्या १३३४१
२२	द्वैतवि.	द्वैतविषयः	लिखित०	लक्ष्मणरायत्रीजोशीप्रकाशित०
२३	द्वैतप.	द्वैतपरिशिष्टम्	मुद्रित०	"
२४	धर्मो.	धर्मकोशः	"	के० स्यान्निवाराखिलसरोवित०
२५	नाय.	नारदस्मृति.	"	उन्नविवाहंशिवानन्दगता (२ संस्करणम्)
२६	नामस.	नारदीयमनुमहादिता	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
२७	पाम.	परा. रसदिता	"	"
२८	प्रयोग.	प्रयोगतन्त्रम्	"	"
२९	प्राथमि.	प्राथम्यविकेकः	"	औरतत्त्वमिरांगया सम्पादिता,
३०	प्राथमि.	प्राथम्यविकेकः	"	"
३१	पुण्य.	पुण्यविवरणम्	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
३२	मय.	मनुस्मृति	"	"
३३	मय.	मध्यप्रतिष्ठापत्रम्	"	"
३४	मन.	मल्लामानसम्	"	"

क्रमांकः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशनातिपासकस्थानम्	लिखितमुद्रितविकल्पम्	विशेषविवरणम्
१५	मदरा.	मरुतमरिचायः	सरस्वतीभवगुरुखण्डखण्ड, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११६१५१२०४२ ।
१६	मभा.	म्हाभासवन्	भारतसंस्कृतिसंस्थान, पुना, ई० सन १९३७	मुद्रित०	—
१७	मिवा.	मिताक्षरा	मिर्थायसंगणनेस, मुम्बई, ई० सन १९०६	"	—
१८	यससं	यमसंहिता	वहाबलीब्रिटेन, नल्लकटा, सन १२१६ बहायद	"	ऊनविशतीदितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
१९	बाष्ट.	याज्ञकवन्दनमृतिः	निर्व्यायसागरनेस, मुम्बई, ई० सन १९०६	"	—
२०	यसिस.	यसिसंहिता	पद्मबासीप्रेस, बल्लकटा, सन १२१६ बहायद	"	ऊनविशतीदितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
२१	यात.	याज्ञभट्टी	मद्रास, ब्रचवादिनप्रेस, ई० सन १९१२ ।	"	—
२२	मिचि.	विवादचिन्तामणिः	पल्लकटोसासंगुणनिधिसंस्थान, लुगा, १८६४	"	—
२३	विच.	विवादचन्द्रः	इराकगान्तर्वा विद्यासंस्थानात्वे मुद्रितः	"	—
२४	विद.	विवाहरसामरः	परिषदाधिकारोसाधरी, ई० सन १८५३	"	—
			रुष्यायद०, १९३२	"	—
२५	मिरो.	विवादायसहेतुः	वेदवेदसंस्थान, मुम्बई, सन १९४५	"	—
२६	मिगः	विवादभण्डारः	सरस्वतीभवगुरुखण्डखण्ड, ग० सं० कालेज काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या - १२३८६ ।
२७	मिपू.	विपुसृष्टिः	परिषदाधिकारोसाधरी, बल्लकटा, ई० सन १८८२	मुद्रित०	—
२८	मिमि.	वीरमिमेदयः	मुंबाएनेस, बल्लकटा, ई० सन १८७५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, व्यवहारपत्र्यायः ।
			नीलमबांससुगमिरीग, बलास " १९३०	"	जयशंकरदासविद्यासुखमकाशित० "
२९	पेसप०.	वैद्यनसुखमंजरी		"	

अनुपलब्धपुस्तकनामानि—

- १—व्यवहारकौस्तुभः .
 - २—दायरहस्यम्
 - ३—व्यवहारचिन्तामणिः
 - ४—दत्तकदीधितिः
 - ५—गौतमप्रश्नः
 - ६—भक्तामरस्तुतिः
 - ७—व्यवहारार्णवः
 - ८—धर्मरत्नम्
-

व्यवस्था-पत्र-संग्रहः

श्रीज्जयतिराम्

१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयाती सदर इरेजी १८२४ साल तारिख १० माह जुलाइ मतावक वङ्गला १२३१ साल तारिख २८ आपाड रोज शनिवार आदालत मज्जुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर बैठके ... ।

वाबु हरप्रकाश सिंह ...आपीलाएट ।

मृत बाजा' देलगञ्जन देओ ... रप्पाडएट ।

सन हालेर २५ मार्च मासेर हओया ए आदालतेर परिसप्टेर जवावे सन हालेर १५ मेइ मासेर लिखित एलाका वारानसेर भवनसन कोटेर हाकिमदिगेरा पाठानो रिटरन ओ ताहार सम्बलितेर रोवकारि ओ कागजात सहित लम्बरे पहुँछिया छटे आइल । ताहार पर लाला राधाकृष्ण ओ मौलवि गोलाम एजदानि उकिलेरा मृत राजा देलगञ्जन देओयेर स्त्री रागी' गोलाव कोडरेर तरफ हइते आपनादिगेर नामिक एक केता ओकागचनामा' द्वारा ओ मौलवी नेयामत आलि वाबु शुभनाथ सिंहेर तरफ हइते आपन नामिक एक केता ओकागचनामा' दाखिल करिया हाजिर हइल । हाल शनेर ३ जुलाइ मासेर दाखिल हओया वाबु हरकनाथ सिंहेर सओयाल इत्यादि । ऐ सओयालेर सम्पर्कीय कागजात सम्बलित ताहार उकिल मुनशी हसन आलिर हाजिरिते छटे (आ)इल । जाना गेल जे सरकारेर आइने राखा ओ राजार कथा नाहि, ओ इरेजी १७६३ सालेर पगार

१. राजा ।

२. राणी गोलाव कोडर ।

३. ओकागचनामा ।

आइन अनुसार, जे इरेजी १७९५ सालेर चौथिल्लिप आइन मते वारानसेर एलाकाते जाति हय, ये व्यक्ति धन ओ वृत्ति राखिया मरे ताहार धन ओ वृत्ति, यदि हिन्दु हय शास्त्र माफिक ओ यदि मशालमान हय शरा माफिक, ताहार उत्तराधिकारिदिगेर मध्ये विभाज हइवेक । ओ ए मकईगाते मजुन कागजात अनुसार आर एइ हटे ये राजा देलगञ्जन देओ अकस्मात दालानेर छात पडिया मरियाछे प्रकाश वटे ये, ऐ व्यक्ति मरण पर्यन्त आपन धन ओ वृत्तिर उपर दखिल ओ कावेज छिल, ओ जखन मरणेर किछु अनुमान छिल ना आसन समचे कोन व्यक्तिके आपन धन ओ वृत्तिर उपर कखने दखिल ओ कावेज कराइयाछिल ना । अतएव आमार निकट ताहार स्त्री राणी गोलाव कोडरेर दखल एजाहार नितान्त अमूलक ओ अनर्थक वटे; ओ फले ए मकरदमार काजिया उपस्थित हओने पर्यन्त कहारो दखल छिलो ना, ओ तिन पचेरइ दखल ना थाकन 'प्रकरणे इरेजी १८१३ सालेर पठ आइनेर निःसम्पर्क प्रकारा वटे । ए कारण शास्त्रेर आहा जानान निमित्ते पण्डितदिगेर स्थाने सओयोगल करण आवश्यक हइल । ओ जाना गेल ये राजा भओयावल' देओ राजा ईश्वरि बक्स देओ ओ राजा देलगञ्जन देओ ओ बाबु आहुलाल' सिंह ओ बाबु शुभनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ ये चारि इजेर मध्ये प्रथम राजा ईश्वरि बक्स देओ अप्राप्तव्यवहार एक पुत्र, ये ताहार नाम जाना गेलो ना, ओ बड स्त्री राणी सिउराज कोडर ओ छोट स्त्री राणी अभिमान कोडरके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ताहार पर ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्र मरिल । तदपर बाबु आहुलाल सिंह बाबु हरकनाथ ओ बाबु जयनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ताहार पर राजा देलगञ्जन देओ राणी गोलाव कोडरके उत्तराधिकारि राखिया निःसन्तान

१. मयाबलदेव ।

२. बाबु र सिंह

भरिल, ओ वावु शुभनाथ सिंह अद्यापि वर्तमान आछे । अतएव ए अदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने जिहासा जाय ये पश्चिम देशेर शास्त्रमते राजा देलगञ्जन देओवेर त्यक्त धन ओ वृत्ति कोन व्यक्तिके, अर्थात् ताहार स्त्री राणी गोलाव कोडरके किन्वा ताहार भ्राता शुभनाथ सिंहके अथवा ताहार भ्रातुपुत्र हरकनाथ सिंह ओ जयनाथ सिंहके अर्शे, ओ एइ सओयालेर जवाब लिखने मृत व्यक्ति ये राजा छिल ताहार पर दृष्टि करिवेन ना । ऐ व्यक्तिके अन्य २ लोक ह्थोने जे प्रकार जवाब लिखितेन सेइ प्रकार जवाब लिखिवेन; ओ पण्डितदिगेर जवाब दाखिल ह्थोन परे पुनर्वार कागजात दृष्टे आनिया मनाशीव हुकुम देओया जाइवेक, ओ एइ रोवकारि सओयालेर स्थाने जाना जाय, इहार नकल पण्डितदिगेके समर्पण करा जाय ।

श्रीर्जयतिराम

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुंबीशमिडतादेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितो देलगंजननामा कश्चन व्यक्तिशेषो गोलावकोमराख्यां पत्नीमेकां शुभनाथसिंहनामानमेकं सोदरभ्रातरं हरकनाथ-
सिंह-अथनाथसिंहनामानौ द्वौ भ्रातृपुत्रौ च संरक्ष्य मृतः । तत्र तदीयविभक्त-
स्थावरास्थावरपने तत्रत्या गोलावकोमराख्याया एवाधिकारः । मओया-
बलदेवसंज्ञकः चतुरः पुत्रान्^१ ईश्वरीवकरादेव-देलायगंजनदेव-वावु-आलहाद-
सिंह-वावु-शुभनाथसिंहानुस्तराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र सेपान्तजन-
मविभवतं चेत्तदा देलगंजनयोग्यांशे सोदरभ्रातुः शुभनाथसिंहस्याधि-
कारः, तत्पत्नी यावञ्जीवनमाच्छादनमागिनीति पश्चिमदेशप्रचलित-
मिताहारादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

१. मर्मावतदेवसंज्ञकः

२. पुत्राणि

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धु—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थधृत (पृ-२१७) याज्ञ-
वल्क्य-वचनम् (२, १३५) ॥ १ ॥

अपुत्रघनं पत्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि
तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि इत्यादि
तद्धृत-बृहद्विष्णु-वचनम् ॥ २ ॥

पत्नी गृहणीयात् इत्येतद्वचनजातं विभक्तआतृस्त्रीविषयम् । इति
मिताक्षरा (पृ० २१७)-लिखनम् ॥ ३ ॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति मनुवचनञ्चेति
(६, १८७) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२—लम्बर २०४२

२ सदर देमनी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी
इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ।

दुल्ली पाडे ओ गयरह

काशी पाँडे ओ गयरह

आपीलाएटान्

रप्पाडएटानेर

२०४२ लम्बरेर मकरमाते इङ्गरेजी सन १८२४ सालेर
२६ जुलाई मासेर रोबकारिर लिखित चेहारेर शास्त्रमते आइन्दा
मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त जबाब दाखिल करखेर म्यादे
ए आदालतेर परिहित वैद्यनाथ मिश्रेर नामे सओयाल एहं ये—

प्रथम सञ्चोयाल-

बेहारदेशे चलितशास्त्रमते कोन व्यक्तिके, जे से आपन पितार एक पुत्र बटे, दत्तक प्रकारे पुत्रताते लखोन सिद्ध बटे कि ना ।

द्वितीय सञ्चोयाल-

स्थावर किंवा अस्थावर साधारण ओ अविभक्त धनेर हेवा दाता व्यक्ति अंशे संबन्धे सिद्ध बटे किना ।

तृतीय सञ्चोयाल-

महाब्राह्मणीय वृत्ति हस्तान्तर योग्य बटे कि ना । आर यद्यपि कयेक जन ब्रह्मणे मध्ये साधारणे थाके ताहार मध्ये कोनो व्यक्तिके विभाग ना हओते विक्रय किन्वा हेवा प्रकारे आपन हिस्सा हस्तान्तर करणे रमता आछे कि ना ।

चतुर्थ सञ्चोयाल-

महाब्राह्मणीय वृत्ति जे ताहार उपर अंशीरा दिन नियुक्त पाला प्रकारे दाखिल ओ भोगी थाके शास्त्रानुसारे एक पालार अंशी दिगेर अंश समस्त अंशीगेर मध्ये साधारण ओ अविभक्त, किन्वा से पालार अंशीदिगेरइ पृथक् ओ विभक्त जाना जाय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्ब्रह्माधिकरणद्वितीयाधिपातश्रीसुतकुट्टनीदशमिदसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नपत्रमत्रलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् । यः कश्चित् स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः स च बेहारदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणान्यस्य दत्तकपुत्रतां न प्राप्नोतीति ।

१. श्रीर्जयतितराम्—व्यप० ।

२. कश्चित्—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम् —

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कथञ्चन ।
बहुपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ
६६) दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ ११) धृत-शौनकवचनम् ।

न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहणीयाद्वा स हि सन्तानाय पूर्वेषाम्
इति मिताक्षरा- (२/२१३)-दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ १०)-
धृतवास्तववचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् । सामुदायिकानेकस्त्वत्वात्सदीभूतादिमत्त-
साधारण्यस्थावरास्थावरधने स्वामिना मध्ये कश्चित् सर्वेषां स्वामिनामनुमतिं
विना स्वार्थं कल्पयित्वा तस्य दानं कर्तुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम् —

अविभक्ता विभक्ता वा सर्वाण्युदाः स्थावरे समाः ।

एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाधमनविक्रये ॥ इति मिताक्षरा (पृष्ठ
२१६) धृत-व्यासवचनम् ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्व चान्वये सति ।

आपस्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ।

अदेयान्याहुराचार्या यच्च साधारणं धनम् ॥ इति दत्तकमीमांसा
(पृष्ठ ११२) धृत-नारदवचनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम् —

महाब्राह्मणानां वृत्तिर्माहब्राह्मण (य) भिन्नगामनयोग्या न
भवति, महाब्राह्मणानामेव प्रेतभ्रातृभोजन-प्रेतोद्देश्यकशय्या-वाहनादि-

१. कथाचन इति पाठो दत्तकमीमांसायाम् :

२. न त्वेकं पुत्रं दद्यात्... अर्थकोषपृष्ठ २० सू० २५/१-८, मिता०-२/१३०
६० मी०-१११

३. "सपिण्डाः" इत्यस्य स्थाने "दायका" इति वा पाठः, सू० च० १६१८
करयोक्तिरियमिति मिताक्षरायां श्रातुं न शक्यते ।

४. ६० मी० ५० ११२, प०को०-७६८

दान-स्वीकर्तृत्वेन तेषां वृत्तिर्महाब्राह्मणैकयोग्यत्वात् । तत्र यदि बहूनां महाब्राह्मण(णा)नां साधारण्यविभक्ता सा वृत्तिर्मवति तदा तेषां मध्ये कस्यचिदप्येकस्य विभागं विनाऽन्येषामंशिनानामनुमतिं विना तस्यांशं कल्पयित्वा विक्रयदानक्षमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम् :—

यत्रालङ्कारशब्दादि पितुर्यद्वाहनादिकम् ।

गन्धमाल्यैः समभ्यर्च्य श्राद्धमोक्षत्रे समर्पयेत् ॥ इति मिताक्षरा-
(पृ० २/११६) लिखित-वृहस्पति-वननम् (पृष्ठ ३४६) ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्य चान्वये सति—इत्यादिदत्तकमीमांसा-
धृतनारदवननञ्च ।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र बहूनां महाब्राह्मणानां कान्चिद् वृत्तिस्तस्यां वृत्तौ एतद्दिनोत्पन्नानि द्रव्याण्येतेषाम्, एतद्दिनोत्पन्नान्यन्येषामितिरीत्या ते नियुक्ता भोगिनश्च । तत्र एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनो दिनान्तरोत्पन्नद्रव्यभोगिभ्यो विभक्ता एव । तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं तद्दिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनामसाधारण्यं विभक्तं भवति । किन्तु एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनां तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं साधारण्यविभक्तञ्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारीणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् —

विभागो - नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानान्तदेक-
देशेषु विषयतया व्यवस्थापनम् ॥ इति मिताक्षरा (पृ० २१३)
लिखनम् ।

श्रीर्जयतित्रराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके सश्रोयाल एइ ये—

सश्रोयाल

ए आदालतेर पण्डितेरा कल्य द्विप्रहरेर मध्ये ए विपयेर जवाब दाखिल करेन—ये जिला सारन साकिनेर हिन्दुजाति एक व्यक्ति दुइ सहोदर भ्रातार दुइ पुत्र ओ अन्य दुइ सहोदर' भ्रातार करु जन पौत्र उत्तराधिकारि राखिया मरियाळे, ओ ऐ देशेर चलित शास्त्रमते मृतव्यक्तिर त्यक्त घन केवल ताहार भ्रातृपुत्रदिगेके अशें, किंवा ताहार भ्रातृपुत्रदिगे एवं ताहार अन्य सहोदर दुइ भ्रातार पौत्र दिग्गेइ अशें इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिनतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्माधिकरण-जिरितप्रश्नवचनमत्रजोबन यादराबोधो षातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते । यत्र सारणदेशीयहिन्दुबानीयः कश्चन व्यक्तिशेखर चतुर्थी सोदरभ्रातृणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोर्द्वौ पुत्रौ द्वयोर्भ्रात्रोः कतिपयपौत्रांश्चोत्तराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र तदीयधने पुत्रपौत्रपौत्ररूपापत्यपत्न्यादिभ्रातृपर्यन्तानपत्यधनाधिकार्यमात्रे तत्सोदरभ्रातृपुत्रयोरधिकारे न तु तयोः सतोः भ्रातृपौत्राणाम्-इति तदशचलितमिताद्वारादिमन्यानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः इत्यादिमिताद्वारादि-ग्रन्थ (पृ० २|१३५) धृत-याशक्तस्य-वचनम् । १ ।

१. सश्रीदक-व्यप० ।

२. पौत्राश-व्यप० ।

३. सश्री-व्यप० ।

अनपत्यस्य धनं पत्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे
आतृपुत्रगामि ॥ इत्यादि मित्ताक्षरादिग्रन्थ (पृ० २/१३५) धृत-विष्णु-
वचनम् । २ ।

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यत्स्वासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यघनं हरेत् ॥

इत्यादि बृहस्पतिवचनञ्चेति । ३ ।

श्रीर्ज्जयतिराम्

श्रीहरिःशरणां

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४—रोवकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिख २५
माह आगस्त सन् १८२४ ई० मतावक १० माह भाद्र सन् १२३१
वाङ्गला ए आदालतेर कायम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत जान
हरयट हारिण्टीन साहेवेर बैठके ।

मुसन्मात दिपु

आपीलाष्ट

गौरिशङ्कर

रप्पाडष्ट

आपीलाष्टेर उकिल बाबु जगन्नाथ सिंह ओ रप्पाडष्टेर
एइ क्षणकार उकिलगण मुनशी आमजद आलि ओ मुनशी
आमिनर्दिन आहमद सालि हाजीर आसिल । एइ सनेर जुन
मासेर ३० तारिखेर हुकुम मते रप्पाडष्टेर उकिलगणेर दाखिल
करा व्यवस्था तर्जमा हइया ऐ तारिखे दाखिल हइया रप्पा-
डष्टेर दरखास्त सम्बि(म्बलि)त पढा गेल । रप्पाडष्टेर
उकिलगण जिझासा कालीन जाहिर करिलेक जे गणेशदत्त शर्मा
ओ त्रिपाठी वेदमणि शर्मा ओ चातुर्वेदि विश्वम्भरदत्त शर्मा
ओ रामनाथ शर्मा ओ विक्रम शर्मा ऐ जुन मासेर ३० तारिखेर

१. "बृहस्पति-व्यय०"

२. प० कोप—१५१८ 'बृहस्पति' इत्यस्यस्यानि 'मनु'—इति पाठः—व्यय० ।

दाखिल हओया व्यवस्था लेखक पण्डितगण सहर आजिमा-
 वाद साकिमेर प्रधान पण्डित वटेन, किन्तु चादार मध्ये केह
 आदालतेर पण्डिति कर्म किन्वा सरकारेर अन्य कर्म राखे ना-
 इति । अतएव यद्यपि एमत वाजे पण्डितगणेर व्यवस्था उपर
 ये सरकारेर चागजगणेर मध्ये नाइ आदालतेर प्रत्यह(य)
 हइले पारे ना । किन्तु एइ दृष्टे ये एइ मकईमार तजविज ओ
 निष्पत्तिकालीन एइ आदालतेर पूर्वैर पण्डित शोभाशाखिर
 माजुलि प्रयुक्त एक पण्डित अर्थात् रामतनुविद्यावागीशेर
 व्यवस्था लओया गिकाहे, एइ लण शोभाशाखिर एओजे वैद्य-
 नाथ मिश्र पण्डित नियुक्त हइयाछेन हुकुम हइल, ये एइ
 मकईमार कागज नधि वैद्यनाथ मिश्रेर हाथोयले करा जाय,
 तवे एइ सनेर फेओवरि मासेर ६ तारिखेर रोवकारि लिखित
 सओयाल सकलेर जवाब सुबे बेदारैर महाल सकल सहर
 पाटना प्रभृतिर चलित शास्त्रमते महरम ओ दशहरार तातिलेर
 पर १५ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल फरेन । तवे ताहार परे
 ए आदालतेर काएम मकाम हाकिमेर विवेचनाय एइ केताय
 जे उचित जाना जाइवेक हुकुम देओया जाइवेक इति ।

रोवकारि मिंसिल आदालत देओयानी सहर तारिख ६
 फेपरओरे सन १८८४ इङ्गरेजी मतायक यङ्गला १२२० साल
 तारिख १८ माघ रोज सोमवार आदालत मजकुरार काएम
 मकाम हाकिम श्रीयुत जान हरबट हारिखटीन सादेवेर बैठके ।

मुसम्मात दिपु पापड

गौरीशङ्कर

आपीतारट

रण्याडएट

आपीतारटेर उमिल घाबु जगन्नाथ सिंह ओ खोद रण्याडएट
 ओ ताहार उमिल मुनशी, दादारचक्र ओ लाला आठवजाल
 हाजिर हइल । एइ मासेर ३ तारिखेर हुकुममते सेरस्तादार एक
 केता वैकियत ताहार लिखित बिपयेर मजमुने ओ अनुप सिंहेर

सन्तानेर कुरशीनांमा एक केता दाखिल करिघेन^१ । दृष्टे आइल । तदपरे उभयेर चकिलेरां ऐ कुरशीनामार सत्यतार उपर स्वीकार करिवेक इति । ए मकईमार समस्त कागचेर अनुमोदने जाना गेल ये रप्पाडण्ट मुहइ एइ एजहारे सहर अजिमावादेर मध्ये जियाताम्बुल महल्वा साकिमेर^२ गुलु चौधुरि पितामहेर ओ पितार स्वोपार्जित मालामाल मिलकियंत ओ मकररि ग्राम सकल ओ शोना ओ रूपार अलङ्कार ओ ओ काँचा पाका घाटी संकल ओ ओगाहि पटी^३ ओ शतरङ्गी ओ गालिचा विछाना ओ पितलिया हाडी आदि वासन ओ पोपाकी कापड ओ दोशाला आदि वस्त्र सकल ये मिलकियत मकररि ग्राम सकल ओ ओगाहि पाटार उपर स्वत्व ओ वाटी सकल ओ अलङ्कार ओ शतरङ्गी ओ गालिचा आदिर किन्मत एकुने आन्दाजि मवलग ६००१ टाका निचेर लिखित मारफिक हइवेक राखिया फसली १२१३ सालेर आश्विन मासे मुर्दइके ओ आपन भ्रातुपुत्र जगुके उत्तराधिकारि राखिया मरिलेक, ओ पूर्वाधिकारि मरयेर पर आपन पूर्वाधिकारि त्क धनेर उपर दखिल ओ भोगी हइल । ताहार^४ पर आमार भ्राता जगु फसली १२१६ सालेर १० माघ मासे केवल आमाके उत्तराधि(कारी) राखिआ मरिल । एइ क्षणे ऐ जगु(र) स्त्री मसम्मात दिपु त्क धनेर उपर दखिल हइया दसु नाम जगुर भागिनेयके आपन मालिक मक्तार जानिया समस्त धन, वस्त्र ओ ग्राम आदिर उपस्वत्व भोग कराइते छे, ओ आमाके, जो उत्तराधिकारि घटी, वेदखल करे इति । जगु वावुर छि दीपु ओ ऐ जगु वावुर भागिनेय दसुलालेर उपर

१. करिलेन—इति साधोयान् पाठः

२. साकिनेर इति साधोयान् पाठः ।

३. भोगाहि कुठी ।

४. 'भोगाहिपाटी' इत्यपि पठितुं शक्यते ।

५. ताहार ताहार—इति वदप० ।

दावि करिलेक, ओ मुद्दर उकिल प्रवनसन कोटेर रह जवावे
 येओरा वयान करिलेक जे आमार मओकल गुलु वावुर त्यक्त घने
 दावि राखे, ओ गुलु वावुर मृत्युर पर गुलु वावुर सहोदर भ्रातार
 पुत्र जगु दखिल रहिल, जगुर मृत्युर पर आमार मओकल
 व्यतित, जे गुलु वावुर खुडतुता भ्रातुपुत्र हय, गुलु वावुर अन्य
 उत्तराधिकारि नाइ इति। ओ मुद्दाआलेहेरा प्रवनसन कोट
 आदालतेर जवावे ओ वद' जवावे' ओ एइ क्षण दसुनाखेर'
 मृत्युर पर मसम्मात दिपु आपीलाएट ए आदालतेर दाखिल
 करा आरजी मजुवाते अनुपसिंहेर त्यक्त धन ताहार पुत्रदिगोर
 मध्ये, अर्थात् आपीलाएटेर पति जगु वावुर पितामह भोलानाथ
 ओ रप्पाडटेर पितामह शम्सुनाथेर सहित, विभाग हओन, ओ
 ऐ भोलानाथेर मौरसी हिस्यार दुइ केता वाटी व्यतित विरोधि
 समुदय धन गुलु वावुर निकट, ताहार पिता भोलानाथेर त्यक्त धन
 हइते, जे ऐ भोलानाथ हरनाथ सेठीर कन्या के विवाह करिया
 छिल, उपाजर्जन हओन ओ गुलु वावुर भ्रातुपुत्र जगन्नाथ वावुर
 उत्तराधिकारित्व-सन्वे गुलु वावुर एकरार जे गुलु वावुर मृत्युर
 पर ऐ एकरार मते ओ भ्रातुपुत्र सम्पर्कगुलुवावुर मृत्युर
 आइयाम फसली १११२ सालेर माह आशिवन हइते आपन मृत्यु
 फसली १२१६ सालेर माघमास पर्यन्त मुद्दर ओ अन्य काहारी
 बिना दाओया ओ आपत्तिते गुलु वावुर त्यक्त धनेर पर दखिल
 रहियाछे। एजाहार मुद्दर उत्तराधिकारित्व सत्वेर उपर
 अस्वीकार हइल, ओ शाखमते आपन उत्तराधिकारित्व-सत्वेर
 जाहेर करिलेक, ओ प्रवनसन कोटेर जओयावे मुद्दाआलेहेरा
 जाहेर करियाछिल जे हरनाथ सेठीर स्त्री भोलानाथेर प्रथम
 पुत्र वस्तीरामेर माहा(ता)मही ये, एइ भोलानाथ हरनाथ

१. रद ।

२. जवा वे ओ इति व्यप० ।

३. दसुनाथेर इति साधीवान् पठः ।

सेठीर कन्याके विवाह करियाछिल, ऐ वस्तीरामके आपन पुत्र करिया लइया समस्त धन, वस्त्र ओ ओगाहि कुठीर^१ कारवारेर कर्त्ता करियाछिल। यथा वस्तीराम आपन जीवदशायपुर्व्वन्त ओगाहि ओ गयरहेर कारवार करियाछे, ऐ वस्तीरामेर मृत्यु पर अर्द्धक^२ ओगाहि कारवारेर आज्ञाम गुलु बाबु करियाछे, ओ वस्तीरामेर अर्द्धक हिस्वार आज्ञाम ताहार पुत्र जगुलाल ओ दीहित्र दशुलाल दियाछे। यथा ओगाहिर कारवारे अनेक टाका महाजनैर देना हइयाछिल दसुलाल आपन मातार अलङ्कार विक्रय करिआ महाजनान् देनाते दियाछे। एइ चण्ह महाजनान् देना बाकी आछे इति। किन्तु इङ्गरेजी १८१३ सालेर १७ आपरेल मासेर हओया प्रबन्सन कोटेर रोवकारिते मुदाआलेहेदिगेर उकिल एइ विषय जिज्ञासाकालीन ये आपन जवाब दाविते लिखियाछे ये वस्तीरामके ऐ वस्तीरामेर माहा(ता) मही हरनाथ सेठीर^३ की आपन पुत्र करिया लइयाछे। जखन ऐ वस्तीराम अन्येर सन्तानेर मध्ये दाखिल हइल गुलुर मृत्यु पर वस्तीरामेर पुत्र जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे कि प्रकार आदालते हाजिर हइया मकदमार सओयाल जवाब करियाछे। जवाब दिलेक ये वस्तीराम आपन माहा(ता) महीर दत्तक हइआ छिल ना, जवाब दाविते सहक्रमे लेखा गियाछे, ओ वस्तीराम आपन जीवदशाय आपन पुत्र जगुके गुलुर स्थाने समर्पन करिया छिल, ओ एइ हेतुते जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे आदालते हाजिर हइया नालिप करियाछिल इति। अर्थात् गुलु बाबु मुदहमिबनजिबुल्ला ओ दौरदान खातुन मुदाआलेहेदिगेर मकदमाते ये मौजे मकरिया ओ अनेर ए विवरावत ऐ गुलुर जीवदशाते सह्र पाटनार आदालते तजविजेर निचे छिल। ऐ गुलुर उत्तराधिकारि

१. पाटीर ।

२. अर्द्धक ।

३. सेठी ।

तलवे इस्ताहार जाति हञ्जोन फालीन जगु बाबु उत्तराधिकारि-
 त्वे प्रकारे मुद्दिरा कापम मकाम हइया हाजिर हइया इङ्गरेजी
 १८०७ सालेर ११ युन मासेर हञ्जोया ऐ आदालतेर डिफरि
 थापन सत्वे हासील करिलेक, ओ इङ्गरेजी १८२० सालेर २२
 नवम्बर मासेर हञ्जोया ए आदालतेर सावेक चतुर्थ हाकीमेर
 हुकुम करा तहकिकाते गुलु बाबुर पितामह अनुपसिहेर त्यक्त
 ताहार मृत्युर पर ताहार पुत्र भोलानाथेर दखली साहताज मगल
 महल्वार छोटी दुइ केता घाटी व्यतित विरोधिय अन्य किछु
 माल अनुप सिहेर त्यक्त साव्यस्थ हय नाइ, ओ ऐ छोटी दुइ केता
 घाटीर परियर्त्ते ये भोलानाथेर हिस्सा हय ऐ महल्वार अनुप
 सिहेर त्यक्त ओ ताहार पुत्र ऐ मुद्दिर पितामह शम्भुनाथेर
 दखली । बड एक केता पाका घाटी हिजिरि १२२२ साल मतावक
 फसली १२२५ सालेर २२ सहरस ६ वान तारिख स्वयं मुद्दिर
 निकट हइते लाला मूलचन्द्रेर निकट विक्रय हइल । यथा स्वयं
 लाला मूलचन्द्रेर जवानबन्दिते तहकिकह हइल, ओ यद्यपि
 अनुपसिहेर त्यक्त मालामाल ताहार पुत्र भोलानाथ ओ शम्भु
 नाथेर मध्ये विभाग हञ्जोन दीर्घकालगत हञ्जोन हेतुते आपी-
 लाष्टेर मानित साक्षीदिगेर साक्षाते उचित मत साव्यस्थ
 हइल ना । तत्रापि पृथक् २ घाटीते ऐ दुइ भातार उत्तराधिकारि
 दिगेर प्रथम दखल हेतुते ओ रघनाडष्टेर मानित साक्षीर द्वाराय
 दीर्घकाल पर्यन्त एकान्न ओ साधारणेर कारवार साव्यस्थ ना
 हञ्जोने आपिलाष्टेर पति जगु बाबुर' मुरप भोलानाथ ओ
 मुरप शम्भुनाथेर मध्ये पूर्व विभाग हञ्जोनेर द्रुत बोध हय ।
 अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर, नकल उभयेर उकिलगणेर
 स्वीकार करा कुरशीनामा सम्वलित ए आदालतेर पण्डितदिगके

समर्पण' करा जाय ये सुवे येहारेर चलित शास्त्रमते एक सप्ताहेर मध्ये एइ सञ्चोयालेर जबाब व्यवस्था दाखिल करेन ।

प्रथम सञ्चोयालः—

उपरे उल्लेख करा विषय सकलेर ओ ऐ कुशीनामार दृष्टे जगु वावुर मृत्युर पर गुलु वावु ओ जगु वावुर त्यक्त धनेर' उपर कोन व्यक्ति उत्तराधिकारित्वेर सत्व राखे, ओ यद्यपि जगु वावुर ओ मसम्मात दिपु जीवईशा पर्यन्त ऐ धनेर उपर सत्व राखे, ताहार मृत्युर पर कोन व्यक्ति के बर्तित्वे ।

द्वितीय सञ्चोयालः—

यद्यपि जगु वावुर पिता' वस्ती रामके ताहार मातामही हरनाथ सेठीर श्री आपन कर्ता पुत्र करिया थाके, ए हेतुते जगु वावुर खुडा गुलुवावुर त्यक्त धनेर उपर जगुवावुर उत्तराधिकारित्व स्वत्व नष्ट हय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

एतद्धर्मधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतबानदस्ववटहारिणदीन-साहेब-धर्मधिकरण-लिखित-प्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तदाज्ञापितवंशावलीपत्रं नावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् ।

श्रुत्वापिहसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविरोधः पूर्वमार्शित्तस्य पुत्रौ भोलानाथराम्भूनाथौ । तयोर्मध्ये भोलानाथोऽनुपपिहस्य हर्म्यत्रयमध्ये लघु-हर्म्यद्वयमादाय विभागपत्रादिकमकृत्वापि यथासीत् ; शम्भूनाथोऽपि तत्रैव नृदत्तदायिकहर्म्यमादायासीत्तथापि तदिनमारम्य भोलानाथराम्भूनाथयोः पृथक् पृथक् स्थितिः^१ वाणिव्यकरणकृत्यादिना । एवं तयोः पुत्रपौत्राणामपि

१. पितार स्त्रीग्राम-व्यप० ।

२. स्थिति-व्यप० ।

पृथगेव स्थिति, 'वाणिज्यकरणाकृम्यादिना' । एवं शम्भूनापट्टहीतानुप-
 सिद्ध्यवृहदेकदम्भस्य केवलं तत्पौत्रगौरीशंकरकृत्कविक्रयेणापि चानुप-
 सिद्धनस्य विभाग एव निश्चितः । एवं निश्चिते विभागे मोलानायपुत्र कश्चित्
 गुल्लुवाबुसंज्ञकः सोदरभ्रातृपुत्रादीनुत्तराधिकारिणः सोदय मृत । तदीय-
 समस्त-व्यावसायिकव्यवधानं तत्सोदरभ्रातृपुत्रेण जग्मुवाबुसंज्ञकेनोत्तराधि-
 कृत्त्वेन प्राप्तमिति । तदीयधनमपि जग्मुवाबुसंज्ञकस्य स्वत्वात्स्वीकृतं जातम् ।
 अतो जग्मुवाबुसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वात्स्वीकृतं वाददन् तदुत्तराधि-
 कारिणा(म्) भवति । अतस्तदने जग्मुवाबुसंज्ञकस्य पत्नी दीपुनाम्नी भवत्यधि-
 कारिणी । तत्पुत्राद्यन्वयाभावात् तन्मरणोत्तरं तदानीं वर्तमानानां तस्या
 मर्तुस्यपिण्डादीनां मध्ये य आसन्नतरः सपिण्डादिस्तस्य (तदने) भवित्य-
 तीति वेदार्देशप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रणयम्—

विभागस्य निह्वेऽपलापे ज्ञातिभिः पितृबन्धुभिः मातृबन्धुभिः
 मातुलादिभिः साक्षिभिः पूर्वोक्तलक्षणैः स्वरूपेण च विभागपत्रेण
 विभागभावना विभागनिश्चयो ज्ञातव्यः, तथा पौतकैः पृथक्कृतैर्गृह-
 क्षेत्रैश्च—इति मिताक्षरा (पृष्ठ २३१।) लिखनम् ॥१॥

दानमहर्ष्यपदवत्पट्टक्षेत्रपरिमहाः ।

विभक्ता नोपृथग् ज्ञेयाः पराकथम्भोगमव्यथाः ॥२॥

येपामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिवधतः ।

विभक्तानवगच्छेयुल्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥३॥ इति विराट्चिन्ता-
 मणि (३१।१०४)—वीरमिश्रोदय-व्यवहारसम्बन्धाद्यनेक-ग्रन्थभूतनारदवचनम्
 (नामसं० २४।३६) ।

१. कृम्यादिना च व्यप० ।

२. केवल-व्यप० ।

३. 'निश्चयो' शब्दस्य स्थाने 'निश्चयो' मिताक्षरायाम् ।

पत्नी दुहितरस्यैव पितरौ आतरस्तथा ॥

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सप्तसचारिणः—इत्यादि
मिताक्षरादिप्रत्ययधृतपाठवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

यद्यपि जगुवावुसंज्ञकस्य पिता यस्तीरामः स्वमातामह्या हरनाथसेटी^१
संज्ञकस्य स्त्रिया कृत्रिमपुत्रः कृतः, कृत्रिमपुत्रस्यैव मिथिलादेशे कर्तापुत्र
इति प्रसिद्धिः, तथापि कृत्रिमपुत्रस्य जनकादिप्रियडानां पुत्रत्वकरस्य च
घनाधिकारित्वम्, तदुभयोः आद्याधिकारित्वञ्च मैथिलप्रान्यकारसंमतं
मिथिलादेशप्रचलितं च । अतो जगुवावुसंज्ञकस्य पितृव्य(स्य) गुल्जुवावु-
संज्ञकस्य मरणोत्तरं तदीयघने जगुवावुसंज्ञकस्योत्तराधिकारित्वेन स्वत-
नाशो न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

स च पुत्रत्वकरस्यापि प्रियडप्रदः मिजपित्नादीनां(च) प्रियडप्रदत्वं
तस्य तिष्ठत्येव^२ इति शुद्धिविवेके^३ द्रवरोपाध्यायलिखितम् (पृ०
३१ ख० पङ्क्ति ६) ।

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रंण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१ हरनाथसेटी ।

२ तिष्ठत्येव—ध्वप० ।

३ स न पुत्रत्वकरस्य प्रियडप्रदः इति शुद्धिविवेकपाठः ।

श्रीर्जयतिराम्

५ रोवकारि, सिव्जिल, आदालत देशोयानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २६ अक्तुबर मतावक ११ माइ कार्तिक सन १२३१ याङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशामिट साहेबेर बैठके—

शेख गोलाम आली— वनाम—मिरज एबराहिम वेग

मुनशां दादारवक्श उकिल विद्यमाने आसिया आपन नामिक एक केता ओकालतनामा सायेलेर तरप हइते दाखिल करिलेक । तत परे हालसालेर १० आगस्ति मासेर लिखित वारानसेर कोट आपीलेर रिटरन ताहार सम्बलितेर रोवकारि ओ मकहमार रोयदाद सहित पँहुळिया ए आदालतेर दाखिल करा सओलादिर सङ्गे अद्य दृष्ट आइल । हुकुम हइल जे ए आदालतेर शरवे अधिकारीरा ५ लंबरे वरावत शेख गोलाम आलीर दाओयार आरजि ओ १० लंबरे वरावत श्रीमति धनवंत ओ श्रीमति धन्नार सओयाल २० लंबरे वरावत मिरजा एबराहिम वेग मुदाआलेहेर दाखिल करा दाविर जवाबेर मजमुन वेत्ता हइया फतोआ लिखेन जे आमिर वक्शेर त्यक्त धन ऐ मुहई के अशें, किम्बा ताहार माता ओ भगिनी सकल ओ भ्राता सकल केँ ये अद्यापि हिन्दु जातितेँ छिर आछे, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा ५ ऐ तिन कागचेर मजमुनेर वेत्ता हइया ऐ सओयालेर जवाब वारानशेर शाखानुसारे लिखेन । तवे फतोया ओ व्यवस्था दृष्ट हओन परे जे उचित हुकुम देओया जाइवेक ।

१ दिनीत-भ्यप० ।

२ लम्बरेर वाक्य—एति साधीयान् पाठः ।

३ किम्बा किम्बा-भ्यप० ।

४ स्थिर ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्दनीइशमित्साहेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।
प्रमारोशापितपत्रत्रयार्थपरिज्ञानेन मितवक्शनाम्नो काचित् स्त्री पूर्वं हिन्दु-
जातीया आसीत्, तज्जातिस्थितया तथा यदुपार्जितं तत् स्वमात्रे दत्त्वा
पश्चाद्यवनजातीयैः निरजाएवराहिमवेगसंशकेन सह स्थिता, बहुकालं
तद्गृह^१ एव स्थित्वाऽकृतप्रायश्चित्तैव मृतेति ज्ञताम् । तत्र तरया यवनजाति-
संसर्ग^२शाकृतप्रायश्चित्तया हिन्दुजाति-वहिर्भूतत्वाद्यवनजातिस्थितया तथा
यदुपार्जितं^३ द्रव्यजातं सत्र हिन्दुजातिस्थितानां तन्मातृमगिन्यादीनां तत्सम्बन्धा-
भावात् न तद्वनाधिकार इति वाराणस्यादि^४प्रचलितमिताक्षरादिग्रन्था-
नुधारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

याजनं योनिसंबन्धं स्वाध्यायं सहभोजनम् ।

कृवा सद्यः पतत्येव पतितेन न संशयः ॥

इति मिताक्षरादि (पृष्ठ ४१४) ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

महापातकादौ व्यवहार्यत्वं निषिद्धम्—इति मिताक्षरा—

(पृष्ठ ३७५) लिखितम् ॥२॥

-
- १ पश्चाद्यवनव्यप० ।
२ तद्गृह—व्यप० ।
३ संसर्गेण—व्यप० ॥
४ उपार्जितम्—व्यप० ।
५ वाराणस्यवादि०—व्यप० ।

पुरुषस्य यानि पतननिमित्तानि स्त्रीणांमपि तान्येव—इति मितान्-
राधृतशौनकवचनञ्चेति ॥३॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री हरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतिराम्

लम्बर २२६७

६ रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजी १८२४
साल तारिख २३ माह नवम्बर मतावक चाङ्गला १२३१ साल
६ माह अग्रहायण रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय
हाकिम श्री युत कुर्टनी इशामिट साहेबेर बैठके ।

रामसेवक सिंह

आपीलाष्ट

मृत हाजारि दमन सिंह ओ गायरह

रप्पाडएटान्

रप्पाडएट दिगेर उकिल मौलवि नेयामत आलि हाजिर
हइया १३ हाल मासेर हुकुमानुसारे निवेदन करिलेक ये
हाजारि हरशहाय सिंहेर भ्राता रामशहाय सिंह अप्राप्त-व्यवहार
घटे, ओ मृत हाजारिदमन सिंहेर स्त्री ओ दुइ कन्या चारान-
सेर शास्त्रानुसारे सत्याधिकारि नाइ, ए निमित्ते केवल हाजारि
हरशहाय सिंहेर तरफ हइते ओकालतनामा दाखिल हय । हुकुम
हइल ये ए रोवकारि नकल ओ १३ तारिखेर हाल मासेर रोव-
कारि नकल एइ प्रनेते ये मृत हाजारिदमनसिंहेर त्यक्त धन
वाद्दार उत्तराधिकारिदिगेर विवरण अनुसारे, जाहा १३ तारिखेर
रोवकारिते लेखा गया छे, कोन व्यक्ति के अर्शे, पण्डित दिगेके

समर्पण करा जाय, पण्डित दिगेर जवाब दाखिल हओन परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति ।

१३ हाल मासेर रोवकारि एइ—ये हाल सालेर १६ आक्टुबर मासेर लिखित चारानसेर प्रबनसन कोटेर एक बेता रिटरन ताहार सम्बलितेर रोवकारि सहित लम्बर पहुँछिया पडा गेल, जाना गेल—ये पूर्व इङ्गरेजी १८२० साले १७ जुलाई मासेर टीकासिंह सूत्रधर ओ गुरुदत्त तेओयारि एजाहारे प्रतिपत्र हय जे हाजारि दमनसिंह रामशहाय ओ हरशहाय नाम दुइ पुत्र आर दुइ कन्या ओ एक स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, आर ए आदालते केवल हाजारि हरशहायसिंहेर तरफ हइते ओकालत नामा मौलवी नेयामत आलि उकिलेर नामे दाखिल हय, अतएव ऐ उकिलके जिज्ञासा गेलो ये कि निमित्त पाच जन उत्तराधिकारि मध्ये केवल एक उत्तराधि(कारि) ओकालत नामा दियाछे । जवाब दिलेक रठ्पाडण्टदिगेर मध्ये राम सेठनसिंहेर स्थाने जे कलिकाता सहरे मजुत आछे जानिया निवेदन करिवेक । ए मते हुकुम हइल जे एइ क्षण स्थकित थाके, उकिल आइन्दा रिटरन पडिबार दिवस पर्यन्त आपन करार माफिक आमार आपने इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्गर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबगर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशधोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र हाजारीदमनसिंहसंज्ञकः कश्चित्^१ रामशहायसिंहहरशहायसिंह-

१—अप्रस-व्यप० ।

२—कश्चिन व्यप० ।

संज्ञकौ द्वौ पुत्रौ पत्नीमेका द्वे च कन्ये संरक्ष्य मृतस्वध तदीयघने द्वौ पुत्रावधि-
कारिणौ भवतः तयोः सप्तोः^१ तत्परन्यास्तत्कन्ययोर्था नाधिकार इति
वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

उत्पत्यैवार्धस्वामित्वं लभत^२ इत्याचार्याः—इति मिताक्षरादि
(पृ० १६६) ग्रन्थभूतगीतमवचनम् । १

तस्मात्सैवके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वम्—इति मिताक्षरा-
लिखितम् ॥ २

अनपत्यस्य घनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि
मिताक्षरादि (पृ० २१७) ग्रन्थभूतद्वहद्विधुवचनञ्चेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीज्जयतितराम्

सन्वत् २२२४

सञ्चोयाल—

७ सदर देञ्चोयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी
इरामिट साहेवेर हुजुर इहते २२२४ संवरेर वावत ।

१—सत्वे—व्यप० ।

२—अपत्यमाणम्—व्यप० ।

३—‘लभते’ इत्यस्य स्थाने ‘लभेत’ इति पाठः मिता० ।

४—‘द्वहद्विधु’ इत्यस्य स्थाने ‘द्वहद्विधुः’ इति पाठः मिता० ।

५—अपुत्रपनमिति वा पाठः

जगमोहन मुखोपाध्याय प्रभृति

आपिलाष्टान

पञ्चानन चट्टोपाध्याय प्रभृति

रघ्पाड्यटानेर

मकईमाते इङ्गरेजी १८२४ सालेर २५ नवम्बर मासेर रोषकारिर लिखित ए आदालतेर पण्डितदिगेर नामे श्रगौणे जबाब दाखिलकरण हुकुमे सञ्चोयाल एइ ये

कुशलचन्द्र चट्टोपाध्याय मानिक ठाकुरानी स्त्री श्रो ताराचान्द्र श्रो निमाइचरण पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, श्रो निमाइचरण लुइधर पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, श्रो लुइधर पञ्चानन श्रो ईश्वरचन्द्र दुइ पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, श्रो कुशलचन्द्रेर द्वितीय पुत्र ताराचान्द्र गोलकमनि कन्या श्रो शशिमुखि स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, श्रो गोलकमनि जगमोहन मुखोपाध्याय श्रो गोपीमोहन पुत्रगणके राखिया मरिल, तदपरे ताराचान्द्रेर स्त्री शशीमुखी मरिल, श्रो मानिक ठाकुराणि आपन पुत्र ताराचान्द्र श्रो निमाइचरणेर मृत्युर पर मरिल। बङ्गदेशेर शास्त्रमते कुशलचन्द्रेर अर्द्धक त्यक्त धनेर, जे ताहार पुत्र ताराचान्द्रेर स्वत्व छिल, एइ क्षण निमाइचरणेर पौत्र पञ्चानन श्रो ईश्वरचन्द्रके स्वत्व वत्तै, किन्वा ताराचान्द्रेर कन्या गोलकमणिर पुत्र जगमोहन मुखोपाध्याय श्रो गोपीमोहन मुखोपाध्यायेर सत्य बटे इति।

श्रीर्जयतिराम्

जबाबव्यवस्था

एतदुर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुनीइश.मटसाहेबधर्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमयलोक्ष्य बाह्यशोधोबातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कुशलचन्द्रचट्टोपाध्यायताराचादिनिमाइचरणसंज्ञकौ द्वौ पुत्राश्च-
राधिकारिणौ संक्षय मृतस्तयोर्माध्ये निमाइचरणसंज्ञकः लुइधरसंज्ञकं

पुत्रमुत्तराधिकारिणं संरक्ष्य मृतः, लुहधरोऽपि पञ्चानन-ईश्वरचन्द्रसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, एवं ताराचार्दसंज्ञकोऽपि 'शशि-मुखीनाम्नीं पत्नीमुत्तराधिकारिणीं संरक्ष्य मृतः', शशिमुख्यपि बगमोहन मुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायसंज्ञकौ द्वौ दौहित्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, तत्र कुशलचन्द्रधनादस्य तत्पुत्रताराचार्दसंज्ञकस्य अमिक-धनस्याधिकारिणौ ताराचार्दसंज्ञकस्य दौहित्रौ बगमोहनमुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायौ भवत । न तु दौहित्रयोः सतो^१ भ्रातृत्वात्पौत्राणामधिकारः इति बङ्गदेशप्रचलितदायमागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तसुतो^२ गोत्रजो बन्धुः ।

इत्यादि दायमागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (पृ० २१६) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्री हरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

आरामतनुशर्मविद्यानागोशेन

श्रीर्जयतितराम्

सदर देशोयानी आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने सश्रोयाल—
मुञ्ज^३ कि, ओ कोन वैदिक कर्मते व्यवहार्य ह्यः । ओ शास्त्रानु-
सारे स्वर्णकार जातिदिगेर प्रति ऐ मुञ्ज^३ व्यवहार करणे निषेध
आछे कि ना । यद्यपि स्यात् निषेध थाके, तवे कोन शास्त्रानुसारे,
एवं बाङ्गलादेशेर स्वर्णकारदिगेर प्रति ताहार चलन आछे
कि ना, आर कंपनी वहादूरेर सरकारेर शासित देशसकलेर
मध्यगत कोन देशे ऐ मुञ्ज^३ व्यवहार्य आछे कि ना । अतएव

१ सतो—व्यप०

२ 'तसुतो' इत्यस्य स्थाने—'तद सतो'—व्यप० ।

३ मुञ्ज—व्यप० ।

शास्त्रानुसारे ए सञ्चोयालेर जवाव लिखिया दाखिल करेन इति ।

जवावव्यवस्था

प्रमुक्तप्रश्नानुसारेण उत्तरं लिख्यते—

मुञ्जस्तृणविशेषः । तथाहि कश्मिश्चिद्देशे वाराणस्यादौ मध्यदेशादौ च भाषायां 'काणा' इति प्रसिद्धोऽपरः कश्मिश्चिद्विलादेशादौ 'शरकाणा' इति प्रसिद्धो, वङ्गदेशादौ शरपाता इति प्रसिद्धः, कश्मिश्चिद् दीर्घपरिमाण-स्तृणवृक्षः, तस्य पुष्पगर्मकोपावरणरूपो मुञ्जः, भाषायाञ्च 'मुव' इति प्रसिद्धः । एवं तद्व्यवहारश्च ब्राह्मणजातेर्मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयन संस्काररूपवैदिककर्मणि मेखलानिर्माणे । एवं स्वर्णकारजातीनां शूद्र-रूपत्वेन तादृशमुञ्जनिर्मित मेखलाव्यवहारः शास्त्रबोधितो न भवति । यद्यद् वैदिकं कर्म लोके प्रसिद्धं भवति तत्तत्सर्वं तत्तत्कर्मविधायकशास्त्रा-देवेति स्वर्णकारजातेरुपनयनविधायकशास्त्राभावात् निषेधवचनाच्च मुञ्ज-निर्मितमेखलाव्यवहारस्य निषेध एव । एवं वङ्गदेशीयस्वर्णकारजाती-नां तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्त्येव । एवं श्रीमत्संस्कार-कंपिनीवाहादूराख्यसार्धमौमराजशासितदेशानाम्मध्ये कश्मिश्चिदपि देशे स्वर्णकारजातीनां मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयनसंस्काररूपवैदिककर्मण्य-धिकाराभावात् तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्तीति शास्त्रानु-सारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

'मुञ्जःशरः' इति संस्कारतत्त्वे स्तुनन्दनभट्टाचार्यव्याख्यानम् ।

मौञ्जीनिबन्धनुपनयनम् इति—मन्वर्थमुकावल्यां द्वितीयाध्याये

कुल्लुकभट्टव्याख्यानम् (२।२७) ॥२॥

मौञ्जी त्रिवृत् समा श्लक्ष्णा कपो विप्रस्य मेखला ।

१ पर कश्मिश्चिद्—व्यप० । २ जातानां व्यप० । शस्त्रुत० भाग २ (५० १३०) ।

४ कुल्लुक—व्यप० । ५ उच्यते—व्यप० ।

क्षत्रियस्य तु भौती ज्या वैश्यस्य शरणागतवी'—इति मनुवचनम्
(२।४२) ॥ ३ ॥

दण्डाजिनोपवीतानि भेषलाञ्छय धारयेत्—इत्यादिमितान्-
रादिभूतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।२६) ॥४

प्रालाशादिदण्डमजिनं कर्णादि, उपवीतं कार्पासादिनिर्मितं,
भेषला मुञ्जादिनिर्मिता मास्योदिर्भक्षचारी धारयेत् इत्यादि-
मितान्तरा (पृ० ६) लिखनम् ॥५

द्विजानां पोडशैव स्युः शूद्राणां द्वादशैव हि ।

पञ्चैव मिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः ॥

वेदव्रतोपनयनमहानाम्ना महाव्रतम् ।

पिनाद्वादश शूद्राणां संस्काराणामभ्यन्तः—

इति शूद्रकमलाकर (पृ० १६) भूतशारङ्गधरवचनञ्चेति ॥६॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल इरेजि मिसिल मुञ्जेर सधोयालेर^१
जवाब ।

श्रीर्जयतितराम्

६—रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजी १८२५
साल तारिख ४ माह जानथोरि मतावक बाङ्गला १२३१ माह पीप
रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्तनी
इशामिट साहेबेर बैठके—

श्रीमति हेमलता चौधुरानी

आपीलाएट

श्रीमति पद्ममणि

रप्पाडएट

आपीलाएटेर उकिलगण मुनशी महाम्मद पाता ओ मुनशी दादार वक्स ओ सदासुक पण्डित, ओ रप्पाडएटेर उकिलगण मुनशी हसन आली ओ ओजरदारान राममणि दास्यार उकिल मुनशी फकिर महाम्मद ओ गौरकिशोर मजुमदारेर उकिल मुनशी गोलाम बतुन ओ स्वयं गौरकिशोर मजुमदार हाजिर हइल । मकईमा पूर्व इङ्गरेजी १८२४ सालेर जुलाई मासेर १४ ओ १५ ओ आगस्त मासेर २१ तारिख सकले तृतीय हाकिमेर बैठके रोवकार ओर प्रवनसन कोट आदालतेर कागज सकल १ लम्बर अवधि ८५ लम्बर पर्यन्त पडा गिया स्थिति छिल, ओ एइ न्ण आमार बैठके रोवकार हइया प्रवनसन कोटेर कागज सकल १ लम्बर हइते तथाकार फएसला पर्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया आरजी मजुवात ओ जवाव ओ उजरदारान राममणि दास्यार सओयाल ओ गौरकिशोर मजुमदारेर सओयाल छपी आइल । तत्परे राममणि दास्यार उकिलइ ये मकईमार सम्पर्के आपीलाएट ओ रप्पाडएटेर कोनो सत्व नकरण ओ राममणि दास्यार ताहार सत्व अधिकारि थाकन ओ ऐ राममणि दास्यार दाखिल करा वंशावलीपत्र अनुसारे ऐ राममणि आपन पितामातार धनेर उपर स्थायी हओयार प्रार्थनाय विवरणे एक कीता सओयाल लम्बरे... दाखिल करिलेक, पडा गेल । तदन्तर गौरकिशोर मजुमदारेर ओजरदारेर उकिल स्थाने, जे ताहार ओजरेर सओयाल ७१ लम्बरे दाखिल आछे, जिज्ञासा गेलो जे तोमार मकजेर मातार नाम कि छिल, ओ से कोन सने मरियाछे । जवाव दिलेक जे ताहार नाम नारायणि छील, ओ

१—बतुन—इति साधोयान् पाठः । २—मजुमदार—२५० ।

३—सम्पर्के—२५० ।

वाङ्गला ११८६ साले आमार मकलेर मातामह चौधरि रघुराम-
 रायेर मृत्युर पर आमार मकलेर मातुल रामकिशोर रायेर
 समुखे मरियाछे । पुनर्बार जिज्ञासा गेलो जे कोन आपीले कि
 निमित्ते तोमार मकलेर तरप हइते ओजरेर सओयाल गुजरे
 नाइ । जवाब दिलेक जे आमार मकल ऐ रामकिशोर रायेर
 कन्या राममणिर पुत्र सकल एकथार मरण वार्ता हइते अज्ञात
 छिल, न तु वा कोट आपीले ओजरेर सओयाल गुजराइत ।
 तत्परे ऐ राममणि दास्यार उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार
 मओकल कोट आपीले मकईमा दाएर थाकनकालीन कि निमित्ते
 ओजरेर सओयाल गुजराए नाइ । जवाब दिलेक जे अमार
 मकल वाङ्गला १२२५ साले वृन्दावन तीर्थे गीयाछिल, मकईमा
 निष्पत्तेर परे आशीयाछे, ए कार(ण) कोट आपीले ताहार तर्प हइते
 सओयाल गुजरे नाइ । ताहार परे आपीलाएट ओ रप्पाडएटेर
 उकिलान स्थाने जिज्ञासा गेल जे पूर्व पुरुस रघुराम चौधुरि
 दुइ पुत्र व्यतित नारायणि नाम एक कन्याओ राखिया मरियाछे
 कि ना; यद्यपि राखिया थाके गौरकिशोर मजुमदार ओजर-
 दार ऐ नारायणिर पुत्र बटे कि ना । आपीलाएटेर उकिलेरा
 जवाब दिलेक जे अमरा नारायणिर वार्ता श्रात नाइ, एवं गौर
 किशोर मजुमदार ताहार कन्यार पुत्र एहाओ जानि ना, ओ
 रप्पाडएटेर उकिल आरजि करिलेक जे चौधुरि रघुरामराय
 कोन कन्या राखिया मरे नाइ, ओ ऐ गौरकिशोर मजुमदार
 ऐ रघुराम रायेर कन्यार पुत्र नहे, वरं कोटेर फयसलार परे
 ऐ मजुमदार आमार मओकलार तरप हइते आपनाके
 मोक्षारकार कहिया मकईमा सओयाल जवावेर कारण
 आमार निकट रुजु छिल, ओ तत्कालीन आपन दौहित्रे कोन
 उल्लेख करे नाइ, शेष द्वितीय पक्षेर सहित योग करिया दौहित्र
 मुस्य हइयाछे । ओज रदा(रे) सओयाल गुजराइया छे । परे राम-

मणि ओजरदारैर उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मञ्चोकला गौरकिशोर मजुमदारैर एजाहार सत्य कहे कि मिथ्या । जबाव दिलेक जे आमार मञ्चोकलार पाठानो वंशावलि पत्रानुसारे गौरकिशोर मजुमदार यथार्थरूप रघुराम रायेर कन्या नारायणदास्यार पुत्र बोध हय, वरं हुकुम अनुसारै सादा कागजे वंशावलि पत्र लंघरे गुजराइवेक । जाना गेल जे बाङ्गला १२०१ सालेर १४ भाद्रमासेर लिखित पद्ममणि रप्पाडण्टेर दाखिलकरा अनुमति पत्र जे, कोटेर नथी २३ लंघरे आछे, कोट आपीले ताहार कोन साब्यस्त हय नाइ । ओ यद्यपि स्यात् इङ्गरेजी १८१६ साले १३ आगस्त मासेर हञ्चोया ३८ लम्बर धावत केलेकदुरिर रोवकारिते रप्पाडण्टेर पतिर अनुमतिर उल्लेख आछे । किन्तु ऐ रोवकारिर मजमुने जाना जाय जे रप्पाडण्ट ताहार आपन कथार सत्यतार कोन दस्तावेज तत्कालीन उपस्थित करे नाइ, ओ ताहार पति मरणेर मुर्दत २२ वाइप बत्सर परे उल्लेख हइयाछे । अतएव अनुमति पत्र एवं ऐ रूप आपीलाण्टेर समुर रामचन्द्र रायेर तरप हइते लेखा जाओन एजाहारै बाङ्गला १२१६ सालेर ३ आश्विन मासेर लिखित २८ लंघरेर एकरारनामा प्रत्ययेर किछु सत्यता राखे ना । ओ इहाओ जाना जाइतेछे ऐ रप्पाडण्ट एइ क्षण पर्यन्त ताहार आपन पतिर विना अनुमतिते किम्धा अनुमतिते कोन व्यक्तिके आपन पुत्रताते लय नाइ । धाकी रहिल उत्तराधिकारित्वेर कथा, अर्थात् ऐ जे रप्पाडण्टके द्वितीय सने ताहार पति रामकुमार राय ओ पतिर भ्राता रामजीवन ओ रामकमल रायेर त्यक्त धनेर मध्य किछु आर्शिवेक कि ना । ओर जाना जाइतेछे जे उभय पक्षइ ए कथा स्वीकृत' आछे । रप्पाडण्टेर पति आपन पिता रामकेशव रायेर सम्मुखे' मरि-

थाछे, ओ ताहार दुइ भ्राता ऐ रामकिशोर रायेर मृत्युर परे मरियाछे । एवं ताहाओ जाना गेल जे ए मकदमा उभय पक्ष व्यक्तित ऐ रामकेशव रायेर कन्या राममणि ऐ रामकेशव रायेर सहोदर ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्र रायेर मध्यम पुत्र रामलोचन रायेर स्त्री चन्द्रावली एइ क्षण पर्यन्त वर्त्तमान थाछे, ओ कोर्ट आपीलेर समस्त कागजे रघुरामराय चौधुरि (र) कन्या नारायणिर कोनो उल्लेख जे गौरकिशोर मजुमदार आपन के ऐ नारायणिर पुत्र कहे पाओया जायना, ओ ए आदालतेर आपीलास्ट ओ रप्पाडएटेर उकिलेरा अपनादिगेके नारायणिर उत्पत्ति हइते ओ गौरकिशोरमजुमदारेर दौहित्रता हइते अज्ञात जाहेर करितेछे । अतएव हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डितेरा उपरेर विवरण करा वृत्तान्त ओ कोटेर नथिर २७ नवरेर दाखिलि यंशावलि पत्र जे एइ मकदमार विवरण माफिक बोध हइते छे पडिया ओ बुकिया बङ्गदेशेर शास्त्र अनुसारे व्यवस्था लिखिया देन जे रामकेशवरायेर पुत्र रामकुमाररायेर अंश हइते जे ऐ रामकुमारराय पितार सन्मुखे मरियाछे, ओ ऐ रामकुमाररायेर सहोदर भ्राता रामजीवन राय ओ रामकमल रायेर हिस्सा हइते, जे ताहारा आपनादिगेर पितार मृत्युर पर निःसन्तान मरियाछे दत्तक करणेर कथा उपर्येय पद्ममणि के स्त्रीत्व बाबत किछु अशे कि ना । यदि अशे, कि परिमान अशे । उचित जे परस्व दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त एइ सञ्चोपालेर जवाब दाखिल करेन । ओ पण्डितदिगेर जवाब दाखिल हओय परे ताहार मजमुन दिष्टे उभयेर साक्षि सोननेर आवश्यक ओ अनावश्यक विषय उचित हुकुम देओया जाइवेक ।

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीसुतकुटुम्बीशमिदसा हेयधर्माधिकरणलिखितपत्रप्रतिरूपपत्रान्तर्गतप्रश्नमेवं तदाज्ञापितवंशावलोपत्रं चावलो-
क्यावगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र रघुरामरायस्य द्वौ पुत्रौ, रामचन्द्ररायरामकेशवरायसंज्ञकौ
स्थितौ । तयोर्मध्ये रामकेशवस्य त्रयः पुत्राः रामकुमाररामजीवन-
रामकमलसंज्ञकाः । तेषां मध्ये पितरि जीवत्येव यद्यनपत्यो रामकुमारः
पद्मसिंहासिं स्त्रियं संरक्ष्य मृतः, पश्चाद्रामकेशवोऽप्यसिंशौ द्वौ पुत्रौ
शुचराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, तत्र रामकेशवस्वामिकथने तु पितरि
जीवति रामकुमारस्य मरणात् स्वत्वनिवृत्तेस्तत्पत्न्याः पद्ममण्याः स्वभर्तु-
पैतृकथने नाधिकारः, किन्तु मासाच्छादनभागित्वं स्वमर्तुरसाधारणधने
ओत्तराधिकारित्वेन यावज्जीवमधिकारः; एवं रामजीवनरामकमलयोर्मध्ये
मातरि शङ्करीदास्यां सत्यां यद्येको मृतस्तदा तद्योग्यांशभागित्वं तन्मातुः
शङ्करीदास्याः । एवं सत्यां च मातरि द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा तन्मातुर्द्वयो-
र्धनाधिकारित्वम् । एवं मृतायां च मातरि तयोर्द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा
यदि रामकेशवस्य कन्यायाः राममण्याः पुत्राःस्थितास्तदा तेषां तयोर्धना-
धिकारः; तेषां मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तन्मातुः राममण्या
अधिकारः । यदि रामजीवन रामकमलयोः सतोरेव तयोर्माता शङ्करीदासी
मृता, रामकेशवदीहित्राश्च मृतास्तदा राममण्यास्तयोर्मगिन्या न तद-
नाधिकारः । किन्तु तयोर्मरणोत्तरं रघुरामरायतत्पुत्रतत्पौत्रतत्पत्नी-
प्राणां मध्ये ये आसन्नास्तदानीं विद्यमानास्तेषामधिकारः । तेषां मरणो-
त्तरं तेषां ये उत्तराधिकारिणस्तेषामधिकारः इति बद्धदेशप्रचलित-
दायभागदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

१—यावज्जीवम्—व्यप० ।

२—तन्मातुरामण्या व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

उद्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पितृक रिषयमनीशास्ते हि जीवतोः ॥

इति दायभागादिग्रन्थ (पृ० ११) धृतमनुवचनम् (६।१०४) ॥१॥

पितृभ्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्य हि भवेदेषा निर्दोषे पितरि स्थिते—इति तद्भूतदेवल-
वचनम् (पृ० १३) ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो चन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ (पृ० १५१) :

धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावेपिन्दोहितस्याधिकारो बोद्धव्यः—

इति दायभाग (पृ० २०८) लिखनञ्चति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्री हरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१०—सदर देमानी आदालतेर फायेम मकाम प्रथम हाकिम
श्री युत जान हरवरट हारिडटीन साहेबेर हजुर हइते ए आदा-
लतेर पण्डितदिगेर नाम ।

श्याम सुन्दर महेन्द्र

आपिल्लाएट

छप्पण चन्द्र भ्रमरवरराय पापड

रप्पाडएटेर

२४ ६६ लंबरेर वाचत मकईमाते अंगरेजी १८२५ सालेर

१—श्रीविनोः—पृ० १ ।

२—दाय० ११४

१२ फिबरवरी मासेर रोवकारिर लिखित ए मकईमाते मुद्दईर दाखिल करा ६५ लंवरेर दस्तावेज चटार अर्थात् लिखन ओ जिला कटकेर कमिसनर साहेबेर फाचारीते दाखिल हओया उभयेर सओयाल ओ जवाब दष्टे सुवे उडिस्यार चलित शाखानुसारे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करण निर्वन्धे सवाल एइ ये—

लंवर २४६६

रयामसुन्दरमहेन्द्र

आपीलाष्ट

कृष्णचन्द्रभ्रमरवरराय

रष्पाडसट

यद्यपि विरोधीय राज्य ओ जमीदारिर दखिलकार राजा रामचन्द्र ऐ दस्तावेजेर मजमूने लिखन मुद्दईर निकट लिखिया थाके । तत्परे ऐ राज्य ओ जमीदारीते मुद्दईके विना दाखिलकार करणे मरिया थाके, ऐ लिखनेर लिखित त्यागकरण अचिद्रयत ताहार साज्यस्त हओोन प्रकारे मुद्दईसत्वेर ताहार लिखित राज्य ओ जमिदारीर दान ओ अचिद्रयत ओ राजा रामचन्द्रेर औरस पुत्र फुल विवाहेर और गर्भजात कृष्णचन्द्र महेन्द्र आसल गुदाभालेहेर उत्तराधिकारित्व-मत्व असिद्धतार लिपिते ऐ सुवार चलित शाखानुसारे बलवत्तर ओ गुणदायक वटे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रथम जवाब व्यवस्था—रामतनुविद्यावागीश—

राजा रामचन्द्रेण मानसिंदस्य राज्ञो दत्तकपुत्रकृष्णचन्द्रभ्रमरवर-संज्ञकस्य कर्तृत्वादिकरणार्थं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरावनिधानेऽपि यद्विहितं तद्विहितानुसारेण दानकरणादप्यत्र करणान्न रामचन्द्रस्वत्वात्पदीभूतराज्यादौ तत्स्यत्वरमागानन्तरं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्य स्वत्वं जातम् । एवं रामचन्द्र-लिखना(नु)रोधात् दासीगर्भजातः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्तु पितृद्विद्, अतस्त-दान्यादौ तस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति इत्योद्देशचलितमनुमितादरा-दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥१॥

मनसा पात्रमुद्दिश्य भूमौ तोयं विनिःक्षिपेत् ।

विद्यते सागरस्यान्तो दानस्यान्तो न विद्यते ॥ इति नारदवचनम्^१ ॥२॥

भूमिं दत्त्वा तु यः पत्रं कुर्याच्चन्द्रार्कसाक्षिकम् ।

अनाद्येधमनाहार्यं दानलेख्यन्तु तद्विदुः ॥ इति बृहस्पति (पृ० ६१)-
वचनम्^२ ॥३॥

पितृद्विट् पतितः (पण्डो) यश्च स्यादौपपातिकः ।

औरसा अपि नेतेऽशं लभेरन् क्षेत्रजाः कुतः ॥

इति नारदवचनञ्च^३ इति (पृ० १६५) ॥४॥

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतिराम

द्वितीय व्यवस्था—वैद्यनाथमिश्र—

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तभ्रीयुक्तज्ञानहरवरटहारियटीन-
सादेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभोराज्ञापितवादिप्रतिवादिनोः प्रश्नोत्तरपत्रार्थपरिज्ञानेन राज्ञा

१. दानमभूदे नारद —(पृष्ठ० १२) । तत्र “दानस्यान्तो न विद्यते” इत्यस्य स्थाने
“तस्यान्तो नैव विद्यते” इति पाठः ।

२. बृ०-पद्ये०-११४ । तत्र “चन्द्रार्कसाक्षिकम्” इत्यस्य स्थाने “चन्द्रार्क-
साक्षिकम्” इति पाठः । “तद्विदुः” इत्यस्य स्थाने “तदभ्यु-” इति पाठः
व्यप० मध्ये ।

३. नार०-१० १६५ । तत्र “औरसा” इत्यस्य स्थाने “औरसा” इति पाठः ।

त्रिलोचनसिंहेन फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नो राजा रामचन्द्रः शौर्व्येण तदुत्तराधिकारित्वेन वा समस्तमेव पैत्रं राज्यं प्राप्य कतिपयदिनान्युपभुङ्ग्य फूलविवाहितायां स्त्रियां कृष्णशरणनामानं कृष्णचन्द्रमहेन्द्रप्रसिद्धं पुत्रमुत्पाद्य^१ कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनोऽन्तिके चर्चावसंज्ञकं^२ पत्रं प्रेषयित्वा मृत इति ज्ञातम् । तत्र यदि तद्देशे फूलविवाह-शब्देन शास्त्रोक्तगान्धर्वविवाह उच्यते तदा गान्धर्वविवाहसंस्कृतायां पत्न्यामुत्पन्नो^३ राजा रामचन्द्रः स्वपितुः मुख्य एवोरसः पुत्रः, तथा रामचन्द्रस्य फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रो मुख्य एवोरसः पुत्रः । यदि च तद्देशे दास्येव फूलविवाहिताशब्देनोच्यते तदा दास्यामुत्पन्नो^४ राजा रामचन्द्रस्तथापि स्वपितुरोरस एव । उभयथा राजा रामचन्द्रः शूद्र एव । शूद्रेण विवाहितायां^५ स्त्रियामुत्पन्नो दास्यामुत्पन्नश्च घनाधिकारी भवत्येव । सति पुत्राद्यन्वये^६ घनाधिकारिणि विद्यमाने सर्वस्वदान तदननु-मत्या क्रमागतस्वाञ्चितस्थावरदानं चासिद्धम् । अतो रामचन्द्रप्रेषितपत्र-लिखितत्यागकरणदिवृत्तान्तेन रामचन्द्रस्वामिकराज्यादेशे कृष्णचन्द्र-भ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनः स्वत्वं न भवति । एवं रामचन्द्रेण फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नस्य कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्य तदुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशो न भवति—इति उत्कलदेशप्रचलितमनुमिवाक्षरावोरमिश्रोदय-व्यवहारमयूखप्रभृतिग्रन्थानुषारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

एक एवोरसः पुत्रः पितृस्य वसुनः प्रभुः—इत्यादि मनुवचनम्
(६।१६३) ॥१॥

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारमुताहते ।

१. कृष्णचन्द्र-व्यप० ।

२. उत्पश्य-व्यप० ।

३. "चटार" इत्यपि भविष्युवर्षति ।

४. उतपन्नो-व्यप० ।

५. विवाहितया-व्यप० ।

६. उत्पन्ने-व्यप० ।

नान्वये^१ सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्^२ ॥ इति मिताक्षरा-वीर-
मित्रोदयादि (पृ० ६५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्^३ (२।७५) ॥२॥

पुत्रपौत्राद्यन्वये^४ विद्यमाने सर्वं धनं न दद्यात्—इति मिताक्षरा-
(पृ० २४५)लिखनम् ॥३॥

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते^५ च पुत्रादिपारतन्व्यमेव—
इति मिताक्षरा(याज्ञ० २।११३ पृ० २००)लिखनम् ॥४॥

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोऽशहरो भवेत् ।

मृते पितरि कुर्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥

अभ्रातृको हरेत्सर्वं दुहितृणां सुतादृते—इति मिताक्षरा-
वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३३-४ पृ० २१६)वचनञ्चेति ॥५॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

११ एड् मर्कट् माते प्रथमेते श्रीयुत कुट्टनी इरामिट साहेव
द्वितीय हाकिमेर बैठकेते सओयाल । एड् ये
सओयाल—

जेला माहावाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर
भ्रातार पुत्रके पुत्रताते लइलेक । ताहार पर ए व्यक्ति औरस
पुत्र जन्मिल । ऐ व्यक्ति मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये

१. नाशने—व्यय० ।

२. प्रतिपाम्—व्यय० ।

३. स्वकुटुम्बदितोषेन—व्यय० ।

४. पुत्रपौत्रपन्वये—व्यय० ।

५. स्वार्जिते पैत्रादि०—व्यय० ।

औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक, उचित-ये अतिशीघ्र एइ सओयालेर जवाव ऐ देशेर शाखानुसारे दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुंबीहरामिटसाहेवधर्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो धातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चित् हिन्दूजातीयः शाहाबादप्रदेशीयः सोदरभ्रातृपुत्रं^१ दत्तकत्वेन गृहीत्वानन्तरमौरसपुत्रमेकमुत्पाद्य मृतः, तत्र तदीयसमस्तस्थावरस्थावरधनं चतुर्धा विभज्य भागत्रयमौरसः^२ पुत्रो गृह्णीयात्^३, दत्तकपुत्रस्त्वेकं भागं गृह्णीयादिति शाहाबादप्रदेशादिचलितमिताक्षरादत्तकमीमांसादिग्रन्थानु-सारिणी^४ व्यवस्था इति ।

तत्र प्रमाणम्—

तस्मिंश्चेत् प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते^५ ।

चतुर्थभागभागी स्यात्^६ दत्तकः ॥ इति मिताक्षरा (याच० २।१३२)
दत्तकमीमांसादि(द०मी० १०३/श्रुतवशिष्ठवचनम्^६ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१. भ्रातृपुत्र—व्यप० ।

२. भीक्षः—व्यप० ।

३. गृह्णीत—व्यप० ।

४. दत्तमीमांसा—व्यप० ।

५. उत्पद्यते—व्यप० ।

६. तस्मिन् दत्तके प्रतिगृहीते यऔरस उत्पद्यते तदा दत्तकः चतुर्धा लभ्ये न सम-
शमित्यर्थः इति द०मी० पाठः ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सञ्चोयाल—

१२—योगि जातिर स्त्री स्वामिर मरस्योर पर आपन इच्छाते स्वामिर सहित दग्ध हृदते पारे कि ना ।

जवाय-व्यवस्था

योगिजातेः स्त्री स्वामिरणानन्तरं स्वेच्छया स्वामिसहगमनं कर्तुमर्हतीति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल रेजेष्टर मेघनाटन साहेबेर निकट ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

१३—सञ्चोयाल—

रामकृष्णोर चारि पुत्र, षष्ठ पुत्र रामहरि, द्वितीय रामचन्द्र, तृतीय पुत्र राममोहन, चतुर्थ पुत्र रामकान्त । ताहर मध्ये रामहरिर आपन ऐ तिन भ्राता ओ पिता मर्त्तमाने' दुइ पुत्र राखिया मृत्यु हय । रामहरि आपन उपार्जन' द्वारा धन सञ्चय करिया दुइ पुत्रेर नामे उडल अर्थात्' विभागपत्र करिया देन । राम

१. श्रीर्ज्जयतितराम्—५५० ।

२. मर्त्तमाने अत्रि सतीदान् पाठः ।

३. उपाजन—५५० ।

४. अर्थात्—५५० ।

कृष्ण ओ रामचन्द्र ओ राममोहन ओ रामकान्त प्रत्येके एइ धनेर अंशेर दाओया करे । यद्यपि ऐ धन रामहरि आपन धन ओ आपन सरीरायास द्वारा उपार्जन करिया थाके, ताहाते ताहारा किम्बा के के, एवं ताहादिगेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ धनेर कत अंश पाइते पारे । यद्यपि ऐ धन पितार धन ओ ताहार साहाय्य-ताते एवँ सुपारिष द्वारा उपार्जन करिया थाके ताहाते ताहारा कि रूप अंश पाइवे । एकान्न किम्बा पृथकान्न थाकिले ऐ धन ग्रहणेर कि विशेष इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जयाव्यवस्था

प्रभुकृतप्रभानुसारेणोत्तरं लिख्यते । यत्र चतुष्टयां सोदरभ्रातृणां मध्ये एको भ्राता पृथगन्नस्थितोऽपृथगन्नस्थितो वा विद्यमाने पितरि विद्यमानेषु त्रिषु भ्रातृषु चास्मद्विजितसमस्तधनमस्मत्पुत्रयोरित्यभिप्रायेण^१ विभागवत् कृत्वा मुनस्तत्र यदि तदनं यदि पितृधनोपघातेन पितुः शरीराघातेन वा उपाजितं स्यात्तदा तदुपाजितसमस्तधनास्पाद्वर्द्धभागित्वं पितुरवशिष्टार्द्धभागस्य पञ्च भागान् कृत्वा भागद्वयमुपाजैकस्यैकैतो भागश्चाणां भ्रातृणाम् । यदि च पितृधनानुपघातेन पितुः शरीरायासव्यापारव्यतिरेकेणोपाजितं स्यात्तदा तद्भ्रातृणां न तद्वनाधिकारः, किन्तु समुदायद्रव्यस्पाद्वर्द्धभागित्वं पितुरर्द्धभागित्वमुपाजैकस्य । उभयपक्ष एवोपाजैकपुत्रयोरुपाजैकभागभागित्वम् इति बङ्गदेशप्रचलितदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् ।

द्वयं शहरोऽर्द्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनास्तिता —

इति दायभाग (पृ ४८, २।६५) दायतत्त्वादि (दात०—२४,५)—

ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ ८५१) वचनम् ।

१. साशब्धताते—इति साधुयान् पाठः ।

२. श्रीर्जयतितराम्—व्यप० ।

३. ०स्मदुजसंत—व्यप० ।

तत्र पितृद्रव्योपघातेन पुत्रार्जितवित्तस्यार्द्धं पितुरर्जकस्य पुत्रस्योश-
द्वयमितरेषामेकैकांशिता^१, अनुपघाते पितुरंशद्वयमर्जकस्यापि तावदेव
इतरेषामनंशस्त्वम्—इति दायभाग(पृ० ५१ २।७१)ग्रन्थलिखित-
द्वचनव्याख्यानञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१४—लम्बर २३३६

रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इरेजी सन
१८२५ साल तारिख ५ माह आपरेल मतावक वाङ्गना सन
१२३१ साल २४ चैत्र रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय
हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके—

प्रियागसिंह

आपीलाएट

अत्रध्यासिंह

रप्पाडएट

आपीलाएटेर उकिलगण मुनमी महम्मद प(ना)ह ओ लाला
आयुधलाल^१ ओ रप्पाडएटेर उकिलगण नवि नेयामत आली
विद्यमाने आडल। मकरमा रोवकार हइल। कोट आपीलेर दाखिल
हओया कागज लम्बर हइते तथाकार फयमला पर्यन्त ओ ए
आदालते दाखिल हओया आरजि मजुवात ओ जथाय ओ २३३६
लम्बरे मकरमा कागजमकल पडागेल। तदपरं आपीलाएटेर

१. •कांशता—ज्यप।

२. आयुधनाथ आयुधलाल—२५०।

उकिलेरा सनहिंसिंह ओ मुसम्मात पाना आपीलाइट वालमुकुन्द
 रप्पाडण्टेर मकईमाते इरेजि १८१३ साले २० आपरेल मासेर
 हओयोया एक केता फयसला(र) नकल ओ जिला त्रिहोटेर देओयानी
 आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल ओ जिला साहा-
 वादेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल छय टाका
 मूल्येर फेरस्त द्वारा लम्बरे दाखिल करिल दृष्टे आइल । तत्परे ए
 आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करारगेज एइ वयाने
 जे जिला साहावाद साकिमेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर
 आवार पुत्रके पुत्रताते नइलेक । ताहार पर ऐ व्यक्तिर औरस पुत्र
 जन्मिल । ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये औरस
 पुत्र कि परिमाण ओ दत्तक पुत्र कि परिमाण पाइवेक । उचित जे
 अतिशिघ्र एइ सओयालेर जवाब ऐ देशेर शाखानुनारे दाखिल
 करेन इति । सन १८२५ साल इङ्गरेजी तारिख ५ आपरेल यथा
 पण्डितेरा जवाब दाखिल करिलेक, ताहार तरजमार विवरण
 एइ ये, यद्यपि जिला साहावाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन
 सहोदरभ्रातृपुत्रके अपन पुत्रताते नइलेक । ओ तत्परे ऐ
 व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिलेक । ताहार मृत्युर पर ताहार स्थावर-
 स्थावर समुदाय धन चारि अंश हइया, ताहार मध्ये हइते तिन
 अंश ताहार औरस पुत्रके ओ एकांश ताहार दत्तक पुत्रके
 वत्तिवेक । जिला साहावाद ओ गयरहेर चलिता मिताक्षरा ओ
 दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थानुजाइ एइ व्यवस्था । इहार प्रमाण
 मिताक्षरा दत्तकमीमांसा ग्रन्थसकलेर लिखित वसिष्ठमुनिर'
 वचन । अर्थ एइ—यद्यपि कोन व्यक्ति प्रथम दत्तक ग्रहण करिया
 थाके ओ तदपरे ताहार औरस पुत्र जन्मे, से प्रकारे ताहार
 मृत्युर पर दत्तक पुत्रके चतुर्थ अंश वत्तिवेक इति । यथा ए

१. गणिर—व्यप० ।

२. दत्त—व्यप० ।

आदालतेर पण्डितदिगेर जवाव अनुसारे उचित झिल जे कोटेर डिगिरि रण्पाडटेर दाबिर अद्वेकेर, कारण जे पूर्व हइते अद्वेक त्यक्त धनेर सपर देखिल आछे, हइतो । ओ वृत्तान्त पइ ये आपील आदालतेर पण्डितेरे जवाव अनुसारे दाओयार तिन एवं चौथाइर डिगिरि हइयाछे । पण्डितेरे स्थाने आपीलेर हाकिमेर सओयालेर वयान—जद्यपि हिन्दु जाति कोन व्यक्ति आपन' धातु-पुत्रके दत्तक करे, ओ ताहार दत्तक करणेरे पर दत्तकमहीत-छीर एक पुत्र जन्मे । अतएव ए प्रकारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनादि दत्तक ओरस' पुत्रे सहित शास्त्रानुसारे कि प्रकार विभाग हइवेक । कोट आपीलेर पण्डितेरे जवावे(र) तरजमार विवरण-इहार मिताक्षरा ओ व्यवहारमयूख प्रभृति शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनके दुइ अंश करिया परे एक अंशके चारि अंश करा जावेक । सेइ चारि अंशेर एकांश दत्तक पुत्रके वत्तिवेक, ओ अधशिष्ट समुदाय त्यक्त धन ऐ औरस पुत्रे सत्व—वशिष्टमुनि ओ कात्यायनमुनिर कथित पइ कथा । अतएव हुकुम हइल ये पइ रोचकारि नकल ए आदालतेर पण्डितदिगेके समर्पन करा जाय । ये आपिल आदालतेर पण्डितेरे जवावे ये तदनुसारे सृत' व्यक्तिर समस्त धन मध्ये सोलो आनार चोर्द्ध आना औरस पुत्रके ओ दुइ आना दत्तक पुत्रके वर्ते-शुद्ध बटे कि अशुद्ध, ओ यदि शुद्ध हय, तवे कि प्रकारे ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्थाते सम्यक धनेर तिन चौथाइ, ये सोल आनार चार आना हय, औरस पुत्रे(र) सत्व, ओ चतुर्थांश' अर्थात् चारि आनार

१. आपन आपन—न्यप० ।

२. औत्त—एनि हापीवान पाठः ।

३. मृतु—न्यप० ।

४. चर्थांश—न्यप० ।

दत्तक पुत्रे सत्त्व लिखियाछे' । उचित ये कल्य दुह प्रहरेर मध्येः
एइ सञ्चोयालेर जवाव दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवावन्यवस्थापत्र ।

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिधीयुतकुटुंबीहशमिटाहेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

एतद्विवादविषये कोर्टश्रीपीलाख्यधर्माधिकरणनियुक्तपरिद्वेतेन
यत्तत्स्थानाधिपतिकृतप्रश्नोत्तरव्यवस्थापत्रे दत्तकपुत्रस्य प्रहीतृधनाष्टमांश-
भागित्वं लिखितम्, तल्लि(खित)तवशिष्टवचनकात्यायनवचनाभ्यामेवमिदानीं
तद्देशप्रचलितग्रन्थैश्च नायाति । तथा हि तल्लिखितवचनयोर्मध्ये वशिष्ठ-
वचनस्यायमर्थः—दत्तकपुत्रे गृहीते सति गद्यौरसपुत्र उत्पद्यते तदा
दत्तकपुत्रश्चतुर्थभागभागीति, एवं कात्यायनवचनस्यायमर्थः—औरसपुत्रे
उत्पन्ने^२ सति दत्तकाद्यः पुत्राश्चतुर्थांशभागिन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१५--रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इक्करेजी १८२५
साल तारिख ६ माह जुन मत्तावक सन १२३२ वाङ्गला २५ माह

१. लिखिया छे—न्या० ।

२. उत्पन्ने—व्य० ।

३. श्रीर्जयति—व्य० ।

ज्येष्ठ रोज सोमवार आदालत मजकुरार प्रथम हाकिमेर कायम
मोकाम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

धर्मचन्द्र ओ गयरह

सायेलान

साएलदीगेर उकिल मदासुकपण्डित हाजीर हइल । मौजे
भूलुपुरेर मण्डलहायेर पुजारि-कर्म भोजकजाति ओ शिव-
नर्माल्य-प्राहक कालुरामेर बहालि विषये अन्य २ क्यान
सन्वलित सहर वारानशेर मेजप्टर साहेब ओ एलाका वारानशेर
दायेर सायब आदालतेर द्वितीय हाकिमेर हुकुमसकलेर नारा-
जीते सायेलदिगेर सञ्चोयाल, हुलासीराम ओ मानिकचन्द्रेर
नामिक मुक्तारनामा ओ ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा
ओ इङ्गरेजी सन १८२० सालेर ५ ओ १६ मेइ ओ सन १८२३
सालेर ६।१० आक्टुबर ओ २ दिजम्बर ओ १८२४ सालेर मार्च
मासेर लिखित सहर वारानशेर फौजदारि आदालतेर ६ फीता
रोवकारि नकल इङ्गरेजि सन १८२४ सालेर ३ आपरेल ओ सन
हालेर २६।३१ मार्च ओ २८ ओ ३० आपरेल मासेर हओया
एलाका वारानशेर दायेर सायेर आदालतेर ६ फेता रोवकारि
नकल ओ ४ फेता एजाहारेर नकल ओ ६ फेता दरखास्तेर नकल
इत्यादि दस्तावेजा सहित, जे हाल मासेर ४ तारिख दाखिल
हइयाछील, वाराचन्द्र ओ लालचन्द्रेर उकिल मुनशी हसन
आलीर हाजिरिते, जे आपन नामिक ताहादिगेर पत्ते ओकालत-
नामा दाखिल करिलेऊ, दरपेश हइया दृष्टी आइल । तदपरे सायेल-
दिगेर उकिल पण्डितदिगेर' व्यवस्था तरजमाय नकल इङ्गरेजी
अक्षर ओ पाठे दाखिल करिलेऊ, पढागेल । परे जिज्ञासा गेल
जे उभयेर मानित शालिपदीगेर हाल सालेर जानओरि मासेर
२१ तारिखेर पाठानो कैफियत फोता । जवाब दिलेऊ 'मजूद नाइ' ।

पुनराय जिज्ञासा गेज जे पाठशालार पण्डितेरा एमत लिखेन नाइ जे कालूराम पूजारि बहालिर योग्य नहे, वरं एइ लिखिया छेन जे कोनो व्यक्ति भोजक पूजारि थाकने शास्त्रानुसारे हानि नाइ । आर एइ लिखिया छेन जे अतएव देवालय स्वतंत्र की साधारण थाकनेर विवरण आमारदीगेर निटक प्रकाश नाइ । यदि साधारण हय ओ अतएव ओ कालूरामके रहित करावार योग्य जाने, रहितेर योग्य बटे, ओ यदि बहाल राखनेर योग्य जाने, बहालिर योग्य बटे । अतएव जिज्ञासा जाय जे तोमार मञ्जुसाले सञ्चोयाले कि निमित्ते व्यवस्था मजमुनेर व्यतिक्रम लिखियाछे । जवाब दिलेक जे सञ्चोयाल लिखन पर्यन्त व्यवस्था पहुँछिया छिल ना । परे व्यवस्था इङ्गरेजीर तरजमाय जे दिगम्बरी-दीगेर ओ सेतम्बरीदिगेर देवालय साधारण हय, कि स्वतन्त्र, ओ यद्यपि साधारण हय, ताहार पुजारि रहित ओ नियुक्त करण एक श्रेणीर क्षमताते हइते पारे, किम्वा दुइ श्रेणारेइ क्षमतार आवश्यक राखे । आर कोन व्यक्ति भोजक जाति हओन प्रकारे ऐ देवालयते तहाके पूजारि हओनेर निषेध शास्त्रानुसारे बोध हय कि ना । उचित्त्वे सायेलदीगेर सञ्चोयाल ओ एइ रोवकारि ओ इङ्गरेजी १८२४ सालेर ६ मार्च ओ १८२३ सालेर १० आक्तुबर मासेर लिखित सहर वारानशेर फौजदारि आदालतेर रोवकारि ओ सन हालेर २६ मार्च ओ २४।३० आपरेल हओया वारानशेर कोट सरकटेर रोवकारि अवगत हइया ऐ सञ्चोयाल सकलेर जवाब बुधवार पर दिवस दुइ प्रहर पन्तर्ष्य^१ दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्दुर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रौयुक्तकुर्तनीदशमिट-
साहेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तदाशापितैतद्धर्माधिकरण-
वादिनां प्रश्नपत्रम् अक्षरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-
मार्चमासीयपष्टदिवसलिखितत्रयोविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयावतुवरमासीय-
दशमदिवसलिखितवाराणस्याधिकरणफौजदारिसंज्ञकधर्माधिकरणलिखित-
विचारपत्रपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयोनत्रिंशद्विंशत्यधिकाष्ट-
शताब्दीयाष्टाविंशतिदिवसीयत्रिंशद्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयवाराणस्याधिकरणक-
कोटसरकटसंज्ञकधर्माधिकरणलिखितविचारपत्राणि^१ चावलोक्य यादृश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितपत्राणामर्थनिवगस्य वादिप्रतिवादिनोर्द्वयोरेव पारश-
नायाख्यदेवोपासकत्वमिति निश्चितम् । पारशनायाख्यदेवोपासना च
धर्मशास्त्रे न^२ क्वापि लिखितेति । पारशनायाख्यदेवोपासकान्तर्गतयोर्दिगम्बर-
श्वेताम्बरयोस्तद्देवालयाः साधारण्यः, पृथक् पृथग्देवालयाद्वयं वेत्तत्रापि
धर्मशास्त्रालिखितत्वेन^३ धर्मशास्त्रानुसारेण तद्देवालस्य साधारण्या-
साधारण्यनिश्चयो भवतु नाहति । परन्तु पञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-
मार्चमासीयोनत्रिंशद्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयवाराणस्याधिकरणक—कोटं सरकट-संज्ञक-धर्मा-
धिकरणलिखितविचारपत्रेण विवादास्पदीभूतमन्दिरद्वयमध्ये एकं मन्दिरं
दिग्बन्धनाख्यमनाधारणमित्युपयवाद्भिस्तद्धमिति गम्यते । ततस्तद्विग्न-

१. शीर्षकलिखितम्—व्यप० ।

२. धारानरूपधिकरणकम्—व्यप० ।

३. स्वकठ—व्यप० ।

४. ०य—व्यप० ।

५. धर्मशास्त्रालिखितत्वेन—व्यप० ।

६. एकं धर्म—व्यप० ।

साधारण्ये मन्दिरे पूजकनियोगकरणं दोषहितपूजकस्यागकरणं च दिग्मवरा-
णानिच्छया भवति ।

द्वितीयञ्च मन्दिरं तयोर्द्वयोर्मध्ये कस्यासाधारणं भवतीत्युपरिनिश्चित-
पत्रैर्नावगम्यते इति । द्वितीयं मन्दिरं तयोर्द्वयोः साधारण्यं चेत्
तदा तत्र पूजकनियोगकरणं दोषहितपूजकस्य स्थागकरणञ्च तयोर्द्वयोरे-
वेच्छया भवति । यदि च तयोर्मध्ये एकस्यासाधारण्यं तन्मन्दिरमिति निश्चयं
भवति तदा यस्यासाधारण्यं तन्मन्दिरं भवति तदिच्छयैव तत्र पूजकनियोग-
करणं दोषहितस्य पूजकस्य स्थागकरणमिति लोके व्यवहारसिद्धमपि ।
अथ च धर्मशास्त्रोक्तभूर्जकण्टकजातीय एव लोकभाषायां भोजक जाति-
शब्देन प्रसिद्धः । स च भूर्जकण्टकः षोडशवर्षपर्यन्तमुन्नयन-
संस्कारहीनस्वरूपवात्याद् 'ब्राह्मण्यामुत्पन्नो' भवति (कुल्लूकः—मनुः—
१०।२१) । नात्यस्य त्पनयनसंस्कारहीनत्वेन पतितत्वाद् ब्राह्मणजात्युक्त-
कर्मानर्हत्वम् । अतः सुतरां ब्राह्मणोत्पन्नस्य भूर्जकण्टकशब्दवाच्यस्य भाषाया
भोजक जातिशब्देन प्रसिद्धस्य धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणकर्मानर्हत्वम्—इति मनु-
मिताक्षराविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

तत्र प्रमाणम्—

कामादिति अत्याज्यत्यागे ऋत्विजः ।

सदृत्विकृत्यागे* याज्यस्य च पणशतद्वयं दण्डः ॥

सदोषस्य तु त्यागे न दोषः इत्यर्थः ।

इति (पृ० ३३।१५-१६) विवादचिन्तामण्यिग्रन्थलिखनम् ॥१॥

द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यप्रतांस्तु यान् ।

तान् मावित्रीपरिभ्रष्टान् ब्राह्म्यानि विनिर्दिशेत् ॥

इति मनुवचनम् (१०।२०) ।

१. मात्यादिमादृशाङ्ग—व्यप० ।

२. उत्पन्न०—व्यप० ।*

३. अरिश्च०—विगर्हा० ।

व्रात्यात् जायते विप्रात् पापात्मा भूर्जकण्टकः ।

आवन्त्यवाटघानौ च पुष्पघः शैल एव च ॥

इति मनुवचनम् (१०।२१) ।

उपनयनकालस्थ परमावधिमाह—

आ'पोडशादाद्दशविंशच्चतुर्विंशच्च षत्सरात् ।

वक्षत्तत्रविंशां काल^२ औपनायनिकः परः ॥

अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः ।

सावित्रोरतिता व्रात्या व्रात्यस्तांमादते^३ कतोः ॥ इति मितान्तर-

लिलनम् (या० स्मृ० १।३७-३८) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१६—रोवकारि मिसिल अदालत नेजामत सदर इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख २२ माह सेतम्बर मतावक वाङ्गला १२३२ साल ७ आश्विन रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार काएम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत् कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

धर्मचन्द्रप्रभृति

शायेल

सायेलदिगेर उकिल सदासुखः पण्डित ओ ताराचान्द,
सेतान्वरिर उकिल मुनशी मुहम्मद पानाह ओ मुनशी इशान

१. भाष्येऽत्रात्—व्यप० ।

२. ०च षत्सरात्—व्यप० ।

३. कालोपनायनिकः परः—व्यप० ।

४. मादयस्तोऽऽऽ कतोऽन्वेदि—व्यप० ;

आलि हाजिर हइल । हुजुरेर तलव करा वारानशेर (वाराणसेय) पाटशाला(र) पण्डितदिगेर व्यवस्था असुद्ध, ओ ए आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्था यथार्थ थाकन ओ सायेलदिगेर श्रेणीमत्त कोनो भोजक जाति ठाकूर-पूजार कर्मेर योग्य ना हओन विशये ओ जती जाति पपाकर द्वाराय, जे ताहादिगेर नाम एइ दरखास्तेर निचे लेखा गयाछे, ए विषयेर ताहाकी-कातेर प्रार्थनार सायेलदिगेर शओयाल अन्य-हेतु सम्बलित, ये हाल मासेर १७ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अथ "कार पहुच्छा, हाल शनेर १२ आगस्त मासेर लिखित वारानशेर कोर्ट शरकटेर रिटर्न ओ रोवकारि इत्यादि कागज ओ पाटशालार पण्डित-दिगेर जवाब सम्बलित पडा गेल । जाना गेल जे पाटशालार पण्डितेरा हाल शालेर २६ जुन मासेर हुकुम माफिक कलुराम भोजक पूजा करणेर योग्य हओन विशये द्वितीय व्यवस्था लिखियाछेन । अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर पण्डितेरा हालेर व्यवस्था सुन्दर रूप अनुमोदने पडोया ताहारदिगेर तजविजे शास्त्रानुसारे याहा हय लिखिया दाखिल करेन, ओ यद्यपि आपनदिगेर पूर्व व्यवस्थार कोन विशय परिवर्तकरण विवेचना करेन ताहार बेओरा कैफियत लिखेन, ओ सोमवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त जवाब दाखिल करेन; ताहा दृष्टेर परे उचित हुकुम देओया याइवेक इति ।

श्रीजयतिराम

जवाब व्यवस्था

एतदन्माधिकरणप्रथमाधिपति-स्थानाभिपिक्त-श्रीयुत-कुटनी इशमित
राहेव धर्माधिकरण-समर्पित-वाराणस्यधिकरणक-श्रीमत्-सरकार-कंपिनी

वहादुरारव्य-चार्वभौम-पाठशालास्थ-परिद्वत-लिखित-व्यवस्था-पत्रम-
 वलोक्य विविच्य च शास्त्रानुसारेण पर्यवसितार्थो लिख्यते । उपरिलिखित-
 व्यवस्थापत्रे यानि प्रमाणानि लिखितानि तानि विश्वम्भरवास्तुशास्त्ररथानि
 जातिविवेकस्थानि बालम्भट्टकृताचाराध्यायस्य मिताक्षराटीकारूपग्रन्थ-
 स्थानीति(?) लिखितम् । परन्तु केषां मुनीनां तानि वचनानीति तत्र न
 लिखितम् । तेषां ग्रन्थानामिदानीं प्रचाराभावात् कुत्रापि तदनुसारेण
 व्यवस्था न दीयते । केनापि यशस्यप्रचरिततत्तद्ग्रन्थानुसारेणैव तत्त्वसिद्धौ
 व्यवस्था दत्ता । परन्तु तद्व्यवस्थालिखितवचनजातैर्भोजकजातिर्देवमन्दिरे
 देवपूजायं नियोक्तव्य इति नायाति । तथा हि भोजकजातेरुत्पत्तिप्रकार-
 द्वयं लिखितम् । तैस्तद्वचनजातैः षोडशवर्षपर्यन्तमुपनयनेसंस्कारहीन-
 स्वरूपव्रात्याद्विभ्राद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नो भूर्जकण्टकजातिरित्येकः प्रकारः । द्वितीयश्च
 तस्मादेव भूर्जकण्टकाद् ब्राह्मण्याम् (उत्पन्नः) श्रावर्तकजातिः,
 श्रावर्तकाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः कटधानजातिः, कटधानाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः
 पुष्पशेखरजातिः, पुष्पशेखरजातीयायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नो भोजक-
 जातिरिति ।

स एव भोजको मागध इत्यनयोर्पक्षयोर्मध्ये पूर्वः पक्षस्तेषामभिमत-
 श्चेत्तदा पूर्वपक्षोक्तभूर्जकण्टकस्य देवपूजायं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानु-
 सारेण न सम्भवति, संस्कारहीनस्य व्रात्यस्य सावित्रीपतितत्वेन धर्मशास्त्रोक्त-
 ब्राह्मणजात्युक्तकर्मानधिकारित्वात् । तदुत्पन्नस्य भूर्जकण्टकस्यापि
 सावित्रीपतितत्वेन सुतरां धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मानर्हत्वम् ।
 द्वितीयः पक्षस्तेषामभिमतश्चेत्तदा द्वितीयपक्षोक्तभोजकजातेर्देवपूजायं
 देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानुसारेण कदाचिदपि न सम्भवति, सावित्रीपतित-

१. साङ्गनो०—२५१० ।

२. ० ज्युक्त०—२५५० ।

३. कर्मनई०—२५१० ।

व्रात्यवंशोद्भवायां पुण्यशेखरायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नस्य भोजकस्य तदभिमत-
मागधाग्निधस्य पतितस्त्रीजातत्वेन पतितत्वात्, मागधत्वेन वर्णसङ्करत्वाद्
धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मानर्हत्वम् ।

यत्तु तैत्तिरीयं क्वचित् पुस्तके भूजकण्टकस्य पूजकत्वविषये नियेधाभावाद्
देवमन्दिरे देवपूजायं नियुक्तो भोजकजातीयः कालूरामाख्यो निष्कारयितुमयुक्त
एव, तदपि न—

अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः । (यास्मृ० १।१८)
इत्यादिना योगीश्वरेण,
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः । (२।२६)

इत्यनेन मनुना [च] धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्ममात्र एव
नस्यानधिकारविधानात् ।

यत्तुक्तम्—भोजकापेक्षया निकृष्टस्य देवलकादेर्धर्मशास्त्रे देवपूज-
कत्वमुक्तम्, तत्र प्रमाणं किमपि न लिखितं तैत्तिरीयामिरपि न दृष्टं
क्वपि, अतस्तदपि हेयमेव । तस्मादस्माभिलिखिता पूर्वव्यवस्थाऽस्मिन्
विधादे परावर्तनयोग्या न भवतीति ।

श्रीर्जयवित्तराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीज्जयतिराम्

लम्बर २३०२

१७ जानकीनाथराय प्रभृति

गङ्गागोविन्दवन्द्योपाध्याय

सञ्चोयाल

आपीलाष्टान्

रस्पाडष्ट

सदर देञ्चोयानी आदालतेर कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनि इशामिट साहेबेर हजुर हइते जानकीनाथराय प्रभृति आपिलाष्टान गङ्गागोविन्द(वन्द्यो)पाध्याय रस्पाडष्टेर २३०२ लम्बरेर मोकदमाते अंगरेजी १८२५ सालेर २६ जुन मासेर लिखित ए आदालतेर पण्डितानेर नामे कल्य दुइ प्रहर पर्यन्त वचन प्रमाणेर तफसील संवलित जवाब दाखिल करणे हुकुम । सवाल एइ ये :—

प्रथम सञ्चोयाल—१

बङ्गदेश निवासी एक जन ब्राह्मण आपन मातार त्यक्त धनेर उपर दखिल थाकिया वैमात्रेय भ्राता ओ स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओइ त्यक्त धन स्त्रीके वसतिवे, कि वैमात्रेय भ्राताके ?

द्वितीय सञ्चोयाल—२

यद्यपि स्त्रीके वसति, तवे स्त्री निःसन्ताना मरिले, ओइ त्यक्त धन वैमात्रेय भ्राताके आशिवे कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल—३

ओइ दुइ जनेर मातामह पृथक थाकन, एक वैमात्रेय भ्रातार उत्तराधिकारि द्वितीय वैमात्रेय भ्राता हओने शास्यमत्तो निषेध आछे कि ना ?

चतुर्थ सञ्चोयाल—४

यद्यपि प्रथम सञ्चोयालेर जवावानुसारे मृत व्यक्तिर त्यक्त धन स्त्रीके पतिर ऋण परिशो(ध)नार्थे ओ ताहार स्वर्गार्थे किन्वा अन्य हेतुते किन्वा आपन इच्छा ओ मत्क्रमे ओइ सम्यक् धन किन्वा तार मध्ये कतोक विक्रय ओ हेवाकरणेर क्षमता आछे कि ना ?

पञ्चम सञ्चोयाल—५

यद्यपि प्रपौत्र ओ पुत्रेर दौहित्रेर वैमात्रेय भ्राता वर्तमान आछे, ओइ दुइ जनेर मध्ये दौहित्रेर स्त्री, जे पतिमरणेर परे ताहार धनेते दखिलकार छिलो, निः सन्ताना मरिले पर मातामहेर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शे ?

श्रीर्जयतिराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीमुत्कुटनीइशामिदृशैव-
धर्माधिकरणलिखितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वङ्गदेशीयः कश्चन ब्राह्मणः स्वमातृव्यक्तधनं प्राप्य तद्धनं आवत्तत्वं
उभ्याश्च स्वपत्नीमुत्तराधिकारिणीं स्ववैमात्रेयभ्रातरञ्चोत्तराधिकारिणं संरक्ष्य
मृतस्तत्र तद्धनं यदि स्वमातृस्त्रीपत्नं स्यादथवा तस्याः पैतृकं धनमुत्तराधि-
कारित्वेन तत्संक्रान्तं स्याद्, उभयथाप्युत्तराधिकारित्वेन पुत्रेण प्राप्तं तद्धनं
पुत्रमरणानन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तत्र च सत्यां
पत्न्यां तस्या एवाधिकारो न तु वैमात्रेयभ्रातुरिति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । इत्यादि दायभागादि (दामा० ११।४) ग्रन्थधृतयाश्वल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण तद्धनोधिकारिण्याः पत्न्या मरणोत्तरं दुहितृदौहित्रपितृमातृसहोदरभ्रातृपर्यान्ताभावे तद्धने वैमात्रेयभ्रातुरधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ १ ॥ तत्रापि प्रथमं सोदरस्तदभावे वैमात्रेयः—इति दायभागादिग्रन्थ (दामा०—११।५।७)^१ लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भिन्नमातामहकवैमात्रेयभ्रातृधने भिन्नमातामहकापरवैमात्रेयभ्रातुरधिकारे शास्त्रानुसारेण निषेधो नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण मृतस्य धनिनः पत्न्या गृहीतधनायाः पतिकृतकुटुम्बभरणार्थं^१परिशोधनार्थं स्वशरीरधारणार्थं भर्तृकुटुम्बभरणार्थं पत्युपवश्यकभ्राद्वाद्यर्थं च तद्धनविक्रयाधिकारः । एवं पतिस्वर्गार्थं धनानुसारेण दानाधिकारोऽपि । परन्तु यावद्धनविक्रयेण^२ पतिकृतकुटुम्बभरणार्थं^३परिशोधनं पतिभ्राद्वादि पतिकुटुम्बभरणं स्वशरीरधारणञ्च भवति तावद्धनविक्रय एवाधिकारो, न त्वधिकधनविक्रये । यदि च समुदायधनविक्रय-

१. सद्दर०—व्य० ।

२. भ्रातरस्येत्युक्तभ्रातुरधिरारावसरे प्रथमं सोदरो गृहीयादित्यर्थः । तस्य स्वभावे सापत्नो भ्राता, एकप्रभवात्वेन तस्यापि भ्रातृगण्यार्थत्वात् । (दामा० ११।५।७) ।

३. ०वित्तयो—व्य० ।

व्यतिरेकेण पतिकृतकुटुम्बभरणार्थं परिशोधनादिकमेव न भवति तदां तदर्थं समुदायधनविक्रयेऽप्यधिकारः, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा समुदायधनस्य यत्किञ्चिदनस्य वा दानविक्रयाधिकारः ।

अत्र प्रमाणम्—

'कर्तुं कामेन वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं दद्यात् श्रितं स्त्रिया ॥

इति विवादमङ्गारणं (१ विवाभ० पृ० २०६) विवादाणवसेतु (पृ० ३०)

धृतनारदवचनम् (पृ० ५१) ॥ १ ॥

यदि भर्तृघनं स्त्रिया गृहीतमप्र(पन्ना)पि स्वीकारमकुर्वत्यपि शोधयेत् । यदि तु मृत्युकाले भर्त्रा त्वया मम ऋणं देयमित्याज्ञापिता स्वीकारं करोति तदाऽगृहीतधनापि शोधयेत्—इति विवादमङ्गारणवलिखनम् (१, पृ० २०६ ख) ॥ २ ॥

एवञ्च पत्युरीर्द्व्यदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतमिति—इति दाय-भागलिखनम् (११।१।६१) ॥ ३ ॥

वर्तनारक्तो आधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तो विक्रयणमपि—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (११।१।६२) ॥ ४ ॥

रिक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादमङ्गारणवादि (१, पृ० २१४ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।५१) ॥ ५ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन—इति भारताद् (१३।४७।२४) अपहारशब्दार्थेन यद्येष्टदानविक्रयाद्यनधिकार इति दायरहस्य लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

१. कर्तुं कामेन—विभसे० ।

२. धनं यथाश्रितं स्त्रिया—विभसे० ।

३. न स्त्री पतिकृत दद्यात्पुत्रकृतं तथा । अर्भ्युरीताङ्गो यदा सः पत्या कर्तुं मरेत् ॥ नामसं० (पृ० २४) । विवादाणवसेतो धृतमिदं नारदीय वचनं नारदमनुमदित्वात् बहुभिर्मन्त्रैः परे पठितम् ।

४. रिक्थग्राहः ऋणं दाप्यः—इति यास्म०पाठः, ऋणग्राही व्यप० ।

५. दायारः—इति पाठान्तरम् । ऋणवित्तात् इति—यमं स्तोत्रम्. पाठः ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण धनाधिकारिणि दौहित्रैस्वगते संति दौहित्र-
मरणानन्तरं गृहीतधनायास्तत्त्वल्पा मरणोत्तरं दौहित्रवैमात्रेयभ्रातुरधिकारो
न तु प्रभुलिखितप्रभार्यावगतधनाधिकारिदौहित्रप्रमातामहप्रपौत्रस्य वर्तमा-
नस्याधिकार इति। वद्गदेशचलितदायभागदायतत्वविवादभङ्गार्थवविवा-
दार्थवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ५ ॥

अत्र प्रमाणम्—

तृतीयप्रश्नोत्तरविहितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

श्रीजर्जपतिराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनार्थमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

जंवर २४३६

१८. रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर अरेजी १८२५
साल तारिख ३ माह अगस्ति मतावक बाङ्गला १२३२ साल
तारिख २० माह भावण रोज बुधवार आदालत मजकुरार कायम
मेकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशामिट साहेबेर बैठके :—

मृत राजा अरिमर्दनशाहि

आपिलाएट

शिवदयाल उपाध्याय

रप्पाडएट

हाल शालेर १६ जुन मासेर लिखित जिला गोरकपुरेर जज
साहेबेर एक किता रिट्टरन ताहार शामिलेर रोवकारि आदि
सम्बलित लम्बर पहुँछियाछे, अद्य पडा गेलो। हुकुम हइलो ये
ए आदालतेर परिडतेरा हाल सनेर २२ जुन मासेर हओया
जिला गोरकपुरेर देमानी आदालतेर रोवकारि मजमुन घोष
करिया कल्य दुइ प्रहर पर्यन्त निवेदन करेन जे ऐ देशेर शाखा-

नुसारे देलमर्दनशाहि ओ समशेरशाहि दुइ सहोदर भ्राता, ओ पृथ्वीपतिशाहि सहोदर भ्रातृपुत्र, एहार मध्ये मृत राजा अरि-मर्दनशाहिर उत्तराधिकारि कोन व्यक्ति बोध ह्य । ओ मुनसी महम्मद पनाह ओ लाला अबधलाल ये प्रकारे ताहादिगेर नामिक ओकालतनामा ओइ देलमर्दनशाहिर तरफ हइते पहुँछियाछे ताहा कल्पकार मिशिले दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतिराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतकुर्तनीइशमितसाहेब-धर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसा-रेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्रानपत्यः पत्न्यादिपितृपर्यन्तरहितो राजा अरिमर्दनशाहिसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो दलमर्दनशाहि-शमशेरशाहिसंज्ञकौ द्वौ सोदरभ्रातरौ पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकमेकं सोदरभ्रातृपुत्रं च सरक्ष्य मृतः, तत्र तत्सोदर-भ्रातरौ दलमर्दनशाहिशमशेरशाहिसंज्ञकावेव तदुत्तराधिकारिणी । सतोः सोदरभ्रात्रोः सोदरभ्रातृपुत्रस्य पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य न तदुत्तराधिकारित्व-मिति । अत्र राज्ञोऽरिमर्दनशाहिसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्व-विषये विवदमानानां अंगरेजशब्दप्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादश-शताब्दीय— जुनमासीयद्वाविंशतिदिवसीयगोरखपुरसंज्ञकप्रदेशाधिकरणकदे-मानी-आदालत-संज्ञकधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रनिविष्टानां प्रयाणां मध्ये राज्ञी वदनकुमारिनाओ काचित् स्त्री यद्यपि लिखिता, परन्तु तस्याः कश्चिद् वृत्तान्तस्तद्विचारपत्रे न लिखित इति सा राज्ञी राजाअरिमर्दन-शाहिसंज्ञकस्य का भवतीति न ज्ञातः । अतएव सा राज्ञी राज्ञोऽरिमर्दन-शाहिसंज्ञकस्योत्तराधिकारिणी भवति न वेत्यपि न लिखितः । एवं तत्पत्र-निविष्टानां प्रयाणां मध्ये पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य धनिनो राज्ञः सोदर-

भ्रातृपुत्रश्चाहं राजो दत्तकपुत्रः, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं राजा मह्यं दत्तमित्यादिवृत्तान्तो यद्यपि तत्पत्रे लिखितः, किन्तु यथाशास्त्रं दत्तकपुत्र-प्रदृशं तेन राजा कृत्वं न वेत्यस्य, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं तस्मै राजा दत्तं न वेत्यस्य च तत्पत्रे(१)लिखितत्वेन तस्य दत्तकपुत्रत्वादिसिद्धिर्भवति न वेत्यपि निश्चयः कर्तुं न शक्यत इति गोरखपुर-संज्ञक-प्रचलित-मिताक्षरा-वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा । तत्सुताः—

इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१६) वीरमित्रोदय (पृ० ६०२) प्रभृति-ग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि तद्भूतवृद्धिष्णुवचनम् (मिता० पृ० २१७; वीर० पृ० ६०३) ॥२॥

अनन्तरः सपिएडाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् । इत्यादि मनु(६।१८७)-वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीहरिः शरणां
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागी तेन

श्रीर्जयतितराम्

१६. प्रथम हाकिम धीयुत कुर्तनी इशामिट साहेवेर घेठके सञ्चोयाल एइ ये—

परिहटदिगेर स्थाने सञ्चोयाल :—

ये हिन्दु ब्राह्मण हय, सोदरा दुइ भगिनीके विवाह करिया ओइ दुइ जनकेइ एकत्र आपन वाटीते राखिते पारे कि ना, वचन ओ कोन ग्रन्थेर लिखित ताहा सहित जवाव तलव इति ।

परिडतदिगेर आरजि सन १८२५, १३ सेतम्बर दाखिल हइल ।

कल्य हुजुर हइते एइ मजमुने हुकुम हइयाछे ये हिन्दु ब्राह्मण जाति दुइ सहोदरा भगिनीके विवाह करिया एकत्र ऐ दुइ जनके आपन वाटीते राखिते पारे कि ना-वचन ओ ग्रन्थेर नाम सम्बलित आगरा जवाव दाखिल करि । खोदावन्द सहोदरा दुइ भगिनीके विवाह-करण ओ ताहादिगेके एकत्र आपन वाटी-ते राखन वङ्गदेशे सम्यक प्रकारे ओ पश्चिमदेशे कोनो स्थले चलित आछे । ये विषयेर दलिल धर्मशास्त्रेर ग्रन्थे एइ षण पर्यन्त पाइ नाइ । तलाप करितेछि, पाइले हुजुरे समर्पन करा प्रश्नेर जवाव दाखिल करिव ।

श्रीर्जयतिराम

जवाव-व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतकुटुनीइशामिडसाहेब-धर्माधिकरणलिखित(म)केनचिद् ब्राह्मणेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये विवाह स्व-गृहे स्थापयितुं शक्यते न चेत्पर्यन्तमभ्रपत्रमवलोक्य यादृशभोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

वङ्गदेशे सर्वत्र, पश्चिमदेशेषु च स्वनिदेकेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये ततोप्यधिकतरा विवाह स्वगृहे स्थाप्यन्ते इति व्यवहारः । अत्र विषये

२. प्रश०—१५० ।

३. ततोप्यधिकतरा—१५० ।

यद्यपीदानीं प्रसिद्धधर्मशास्त्रे क्वापि विधिनियेधौ न लिखितौ,
तथापि पुराणादौ मुनीनां तादृशाचारदर्शनात्तदनुसारेणोदानीन्त-
नानामपि तादृशाचारः। अतएव तत्तद्देशाचारानुसारेणैव तत्तद्देशीयव्यव-
हारनिश्चयो भवितुमर्हतीति धर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति ।

सर्व्यं तद्यौवनाशस्य मान्यातुः क्षेत्रमुच्यते ॥ (६।६।१०)

शशबिन्दोर्दुहितरि विन्दुमत्यामधान्नृपः ।

पुरुकुत्समम्बरीपं मुचुकुन्दञ्च योगिनम् ॥ (६।६।३८)

तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सीमरिं वग्निरे पतिम् । (६।६।३६-१)

शृतःस राजकन्याभिरेकः पञ्चाशतावरः ॥ (६।६।४३-२)

एवं शृहे वसन् कालं विरक्तो न्यासमास्थितः ।

वनं जगामानुपयुस्तत्पत्न्यः पतिदेवताः ॥ (६।६।५३)

इति श्रीभारवतीयनवमस्कन्धे सौभर्युपाख्यानम् ॥ १ ॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रजुभ्यतेऽन्यथा ॥

इतिबोरमित्रोदयग्रन्थ(धको०-पृ० १६४१, स्थूच०पृ० १०,
धर्मास्तत्र०-इति पाठान्तरम्, शृतवृहस्पतिवचनम् ॥ २ ॥

जातिजानपदानु धर्माञ्च्रेणीधर्माश्च धमेषित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत् ॥

इति मनुवचनञ्चेति (८।४१)॥३॥

श्रीजर्जपतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

सञ्चोयाल—

२०. रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इरेजि १८२५ साल तारिख ८ नवेम्बर मोतावक बाङ्गला १२३२ साल तारिख २४ कार्तिक रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठ—

कुन्दनगिर

आपिलाष्ट

दुर्गागिर ओ गायरह

रण्याडण्टान

एइ सनेर तारिख १३ सेतम्बर माहार जेला फानपुरेर यजसाहेबेर एक केता रोवकारिर सम्बलित रिटरन " लम्बरे प्राप्त हइया अद्य पडा गेल । हुकुम हइल ये ए अदालतेर पण्डितेरा एइ सनेर तारिख १० आगष्ट माहार गुजरान शिवराजपुरेर कायेम मोकाम थानादार सयिद कादेर आलिर आरजि दृष्टि करिया आरज करेन ये गङ्गा घाखन' यवन जातीया बेश्यार गर्भे जन्मिया ओ आपनार ज्ञानावस्थावधि हिन्दुर धर्म आचरण स्वीकार करिया छे, ओ ताहार पिता हिन्दु छिल, एतल्युक्त शास्त्रानुसारे हिन्दुर गणनाय आसिवेक कि ना, एवम् ए आदालतेर आरवावशारा उपरे उक्त कागज पडिया फतओया लेखेन ये ए व्यक्ति अपनार यवनि मातार त्यक्त धनेर उत्तराधिकारि (शरा) नुसारे हइते पारे कि ना । पण्डितदिगेर ओ आरवावशारा-प्रभृतिर (व्यवस्था) अवलोकनानन्तर उचित हुकुम देओया याइवेक इति ।

१. भीर्जयति०—ग्य० ।

२. ०वसतः—६ नि सगोपान् पाठः ।

श्रीर्जयतितरामं

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तधीयुतकुटनीइशमितसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमेवं तत्समर्पितअंगरेजी-शब्दप्रतिपाद्य'पञ्च-
विशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयागस्लिमासीयदशदिवसलिखितशिबरजपुरग्राम-
स्थस्थानपालप्रतिनिधि-सैयद-कादर-अली-संज्ञकस्य विश्वसिपत्रमवलोक्य
यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितप्रश्नपत्रसमर्पितपत्राभ्यां गङ्गावक्त्रसंज्ञकस्य यवन-
जातीयवेश्यागर्भजातत्वेन लिखितस्य स्वज्ञानावधि हिन्दुजातीयधर्मा-
चरणेऽपि तत्पितृर्हिन्दुजातित्वेऽपि हिन्दुजातावन्तर्भावः शास्त्रानुसारेण
भवितुं न शक्यते । प्रत्युत^१ गङ्गावक्त्रसपितृर्हिन्दुजातीयस्य उमरावगिर-
संज्ञकस्य सन्नासिनो^२ ज्ञानकृतयवनीगमनेनाकृतप्रायश्चित्तस्य यवन-
जातितुल्यत्वेन तत्पुत्रस्य तच्चन्यत्वेन यवनीगर्भजातित्वेन च सुतरां यवन-
जातीयत्वमेवेति कान्धपुरराज्यप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरानुसारिणी व्यवस्था-
इति ।

तत्र प्रमाणम्—

चण्डालान्त्यसियो गत्वा मुक्त्वा च प्रतिपृष्ट्य च ।
पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यन्तु गच्छति ॥

१. प्रतिपाद्य—ध्या० ।

२. प्रत्युत—व्यय० ।

३. सन्नासि—व्यय० ।

इति मनुसंहिता (११।१०५)मिताक्षरादिग्रन्थभृतमनुवचनम् ।

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशे

एइ व्यवस्था दाखिल कात्रेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्ट
इशमित साहेवेर बैठके—

२१. सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्ट
इशमित साहेवेर सओयाल—

यद्यपि दुइ जन हिन्दु ब्राह्मण जाति सरिकिमते मदिरा
चोतल सकल क्रय विक्रयेर वाणिज्य करे । ए प्रकार वाणिज्य वङ्ग
देशे ओ पश्चिमदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध चटे कि असिद्ध; इ
यद्यपि असिद्ध हय सरिकीर शेष^१ हइले पर एक अंशीके अन्
अंशीर उपर ताहार लभ्येर अंश दाओया अशे कि ना । उचि
ये ए विषयेर जवाब अगौणे दाखिल करेन इति ।

जवाब-व्यवस्था

ब्राह्मणजातेर्मदिरापात्रव्यापारः शाल्मसिद्धो न भवति । यद्यपि निन्दितत्वे
तेन कर्मणा द्वयोर्ब्राह्मणयोः संभूयकारिणोस्तन्नं धनम् तत्र द्वयोः समंश
इति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

याजनाथ्यापनप्रतिग्रहेर्द्विजो धनमर्जयेत्^२—इति दायभाग^३मिताक्षरा-
(पृ० ३१.२)भृतमनुवचनम् (१०।७६) ॥१॥

१. वचनमिदं मिताक्षरायामुपपातकशुद्धिप्रकरणे (यास्मि० ३।२६५) नोपलभ्यते ।
२. शेष शेष-व्यप० ।
३. मर्जयेत्—व्यप० ।
४. पश्यां तु कर्मणामस्य धीयि कर्मणि जीवित्वा ।
याजनाथ्यापने चैव त्रिशुद्धास प्रतिग्रहः ॥
इति मनुस्मृतिवचनम् । तथा च मिताक्षरायाम् ॥
५. दायभागो वचनमिदं नोपलभ्यम् ।

यदा तु स्वत्वं लौकिकं तदा—

असत्प्रतिग्रहादिलब्धस्यापि स्वत्वात् इति मितान्तरा (पृ० १६८-१६९)
लिखन्ञ्चेति ॥२॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

सभोयाल

२२. नानाशाखाध्यापक श्रीयुत वैद्यनाथमिश्र तथा श्रीयुत
रामतनुविद्यावागीशपण्डितान् सदर देओयानि आदालत सच्च-
रित्रेपु—

यदि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्र थाके, सेइ व्यक्ति आपन
जीवत्माने आपनार जमीदारी सेइ हुइ पुत्रके समर्पण करे, आर
ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्ता व्यक्ति वर्त्तमाने ताहार
ज्येष्ठ पुत्र एक स्त्री राखिया ताहाके पोष्यपुत्र राखिवार निमित्तक
अनुमति पत्र लिखिया दिया मृत्यु ह्य । ताहार कतक दिवस परे
ओइ कर्ता व्यक्ति, अर्थात् पुत्रदिगेर पितार, परलोक ह्य । तवे
शाखानुजाय ओइ कर्ता व्यक्ति ज्येष्ठ पुत्रे स्त्री जमीदारीर
हिस्सा पाइते पारे कि, केवल खोरपोप पाय । यदि स्यात् खोर-
पोप पाय, तवे कर्ता व्यक्ति कनिष्ठ पुत्रे नाम संवलित ओइ
स्त्रीलोकेर नाम सेरस्ताते दाखिल करा आवश्यक कि, कि प्रकार,
शाखानुजाय जाहा यथार्थ ह्य इहार विवेचना करिया अतित्व-
राय प्रत्युत्तर लिखिवेन इति । २२ फिवरवरि—

श्रीर्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था-पत्र ।

रोवडाख्यस्थानाधिपतिप्रेषितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशशोभो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पित्रा द्वयोः पुत्रयोः स्वस्वामिकसमस्तस्यावस्थावरधने समपितम्, ततः किञ्चित्कालानन्तरं जीवत्येव पितरि तयोर्मध्ये ज्येष्ठः पुत्रः स्वजायां प्राणिदत्तकपुत्रकरणार्थमनुमतिपत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः, तदनन्तरं कनिष्ठपुत्रं संरक्ष्य तयोः पिता मृतः स्यात्, अत्र प्रभोः पत्रलिखितसमर्पणशब्दस्यार्थद्वयं भवति । स्वस्वत्वत्यागपूर्वकपरस्वत्वापादनरूपं दानम्, सत्यपि स्वस्वत्वे घनसंरक्षणार्थमाज्ञाकरणं च । तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वत्यागपूर्वकपरस्वत्वापादनरूपं दानं कृतं स्यात्तदा तद्दानेन पितुः स्वत्वापगमात् पुत्रयोरेव तदनं जातम् । अतो जीवत्यपि पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्यानुमत्या भविष्यत्तत्पत्नीकृतदत्तकः पुत्र-रतदने स्वपितृयोग्यांशं लब्धुमर्हति । यदि तदनुमत्या तत्पत्नीकृतो दत्तकः पुत्रो नैव भविष्यति तथापि दानपक्षे स्त्रीत्वेन तत्पत्न्यपि स्वमर्त्ययोग्यांशभागिनी भवति । यदि च पित्रा सत्यपि स्वस्वत्वे घनसंरक्षणार्थमाज्ञा कृता स्यात्तदा तदाज्ञया पितुः स्वत्वाविनाशेन पुत्रयोस्तदनं न जातम् । अतो जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य तदनाशयोग्यताविरहेण तदने स्त्रीत्वेन तत्पत्न्या नाधिकारः । किन्तु पत्न्यनुमत्या भविष्यद्दत्तकस्य पितामहधने यादृशोऽंशो भविष्यति तादृशांशसंरक्षणकर्तृत्वेन भविष्यद्दत्तकस्याप्राप्तव्यवहारकालपर्यन्तं राज्ञा सा नियोज्यया । ततः सर्वथैव कर्तुः कनिष्ठपुत्रनामसहितं वत्या(पि)नाम राजस्थानेऽवश्यं लेख्यम्—इति बह्मदेशचलितमनुदायभाग-व्यवहारतत्त्वप्रभृतिग्रन्थानुष्ठारिणी व्यवस्था—

१ °परस्वत्वादानं—व्यप० ।

२ °परस्वत्वादानं—अप० ।

३. भविष्यत्—व्यप० ।

तत्र प्रमाणम्—

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वापादनं^१दानम्-इति (याज्ञवल्क्यस्मृति-टीकामुचोधिनी पृ० ७४१) कुल्लूकमट्टलिखनम् ॥ १ ॥

न आतरो न पितरः पुत्रा स्थियहराः पितुः-इति मनुवचनम् ॥ २ ॥ (६।१८५) ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा-इत्यादि दायभागादि(दाय०-११।१।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ३ ॥ (२।१३५)

अस्वाम्यं हि भवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते-इति दायभागादिग्रन्थधृत-देवलवचनम् (दाय ६।१।८) ॥ ४ ॥

पुत्रान् द्वादश यानाह नृणां स्वायम्भुवो मनुः ।

तेषां षड्वन्धुदायादाः षडदायादवन्धवाः ॥

औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च ।

गुढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा वान्धवाश्च षट् ॥

-इति मनुवचनद्वयम् ॥५॥ (६।१५८-१५९)

ये ज ता येप्यज्राताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति च येऽभिसंज्ञन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥

-इति दायभागादि(ग्रन्थ-, दाय-१।४५)धृतमनुवचनम् ॥६॥

अभावे वीजिनो याता तदभावे तु पूर्ववः ।

-इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६४६५)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ३० २।१३) ॥७॥

१. आदान-व्या० ।

२. पुत्रान-व्या० ।

३. व्यासवचनमिदमिति धर्मकोशाख्यायते, मिताक्षरायाम् (१।११३) । इदमुद्धृतम् । मनुस्मृतौ तु षट्त्रयस्त्रयोः । मनोरथवचनमिदमिति दायभागेऽप्युल्लिखितम् ।

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोपितानां तथैव च ॥

-इति दास्यभाग, पृ० ६२ ३।१६) वृत्तकाल्यायनवचनञ्चेति ॥२॥

(८५५) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणात्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल बोरडरमनु

श्रीर्जयतितराम्

२३—सदर ने नामत आदालतेर पयिडतदिगेर नामे सओयाल ।

श्रीहृदनिवाशि एक व्यक्ति आपन दाशी, ताहार चारि मुत्र ओ एक कन्या सहित मूल्य निर्वाप्य करिया अन्य कोनो व्यक्तिक निकट विक्रय करिते चाहे । ताहारा अर्थात् ऐ दाशी-प्रभृतिरा आदालते एइ रूप दरखास्त गुजराइलेक ये आमरा आपन मनिवेर सेवा करिते सन्मत आछि, तथापि आमारदिगेर मनिव शत्रुता करिया जाहार निकट आमारदिगेके विक्रय करिते उद्यत हइयाछे ताहार सहित एइ प्रकार याग करियाछे ये आमादिगेके भिन्न देसो निया पृथक २ भिन्न २ स्थाने विक्रय करे । अनएव जिज्ञासा जाय—श्राहृददेशेर चलित शास्त्रमते एइरूप विक्रयेर स्थाने दास-दिगेर ए प्रकार ओजर सिद्ध हय कि ना; यदि सिद्ध हय तबे ऐ दास-व्यक्तिरा आपनादिगेर स्वीकारमत अन्यत्रक जन क्रय-कर्ता निर्दिष्ट करिते पारे कि ना; किन्वा ताहार निद्वार्य्य हओया मूल्य यद्यपि कोन प्रकारे मजुत करिते पारे, मूल्येर टाका आदाय करिया खालाश पाइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयंतितराम्

जवाव-व्यवस्था

प्रभुवृत्तप्रशानुसारेणोत्तरलिख्यते—उपरिलिखितप्रभार्यावगमेन शास्त्रोक्तान्चदशदासानां मध्ये एतत्प्रश्रुतिलिखितदासप्रभृतयो गृहजाता अथवाभ्यन्ते । तत्र च गृहजात-क्रीत-सन्ध-दायप्राप्तात्मविक्रेतृणां पञ्चानां दासानां स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः । तथा च यदि दासविक्रये प्रसन्नः स्वामी गृहजातादीनां पञ्चानां दासानां स्वकल्पितमूल्यद्वारा विक्रयेण दास्यमोक्षमिच्छति तदा प्रभुत्वात् स्वातन्त्र्याच्च^१ स्वामिसेवां कर्तुमिच्छतामपि दासानां विक्रयं कर्तुमर्हति । तत्र यदि स्वामिनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशात् स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणे दासानामात्यन्तिकं दुःखं स्यात्तदा दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा तदेव स्वकल्पितदासमूल्यं गृहीत्वा स्वामिनो गृहजातादिदासमोक्षार्थं शास्त्रीययुक्तिसिद्धं भवितुमर्हति, दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणेऽपि स्वामिनः क्षतिविरहात्^२ । परन्तु गृहजातादयो दासाः स्वधनात् स्वामिकल्पितमूल्यं दत्त्वा कदाचिदपि दास्यान्न मुच्यन्ते दासधनेऽपि स्वामिनः प्रभुत्वात्-इति वदन्देशान्तर्गतश्रीहृद्देशप्रदेशप्रचलितपिवादमद्गार्हवदायकमसंग्रहदायभागप्रभृतिप्रन्या(१)नुसारिणो व्यवस्येति ।

तत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो सन्धो दायदुपागतः ।

अत्रा^३कालभृतस्तद्दाहितः स्वामिना च यः ॥

१. स्वातन्त्र्या च—व्यप० ।

२. विरहात्—व्यप० ।

३. अत्राका०—व्यप० । अत्रानादिभूतस्तद्दायच स्वा० नाममे० । अत्राका०—
धतो० ।

मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः परो जितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः^१ कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवामृतः^२ ।

विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥

—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० ५१६ क)दायक्रमसंग्रह
(पृ० ५२)मृतनारदवचनम् (नामसं०-पृ० ६६), गृहजातो दासामुत्वचनः^३

—इति दायक्रमसंग्रहव्याख्यानम् (पृ० ५२) ॥ २ ॥

एतेषां गृहजातादिचतुर्णामात्मविक्रेतुश्च स्वामिप्रसादं विना न दास्य-
मोक्षः—इति दायक्रमसंग्रहलिखनम् (पृ० ५४) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनियर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥

—इति व्यवहारतत्त्वादि(स्मृत० २।पृ० १६६)ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्
(बृस्मृ०—१।१११) ॥ ४ ॥

गार्ह्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः^४ स्मृताः ।

यत्ते समधिगच्छन्ति यस्येते^५ तस्य तद्धनम् ॥

१. अर्थात् मोक्षितोऽनन्त्याद् युद्धप्राप्त-नामसं० ।

२. प्रव्रज्यावसितः—नामसं० ।

३. ०हन-धनो० ।

४. ०मुतपन्न-न्यप० ।

५. एव धना-न्यप० ।

६. यस्येते तस्येन-इति विवाभ० पाठः ।

इति विवादभङ्गार्थव(१ विवाम० ५३३क)दायभाग'दायतत्त्वादिग्रन्थ-
धृतमनुवचनम् (८१४१६)चेति ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल अंगरेजी मिसिलते दासेर विषय ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

२४—प्रश्न—यत्र कश्चिद् एतावत्^१कालपर्यन्तमथाद्दशवर्षपर्यन्तं
विंशतिवर्षपर्यन्तं वा तत्र दास्यमहं करिष्यामीति परिभाष्य स्थितः, तत्र
दास्यावस्थायामुत्पन्नान्यपत्यानि स्वामिनो दास्यं कर्तुमर्हन्ति न वेति ।
यद्यर्हन्ति तदा पितुर्दास्यकालपर्यन्तमधिकं न्यूनं वेति च ।

एतस्योत्तरम्—

प्रमुकृतप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितदासः शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये क्रीतदासः । क्रीत-
दासस्य^२मोक्षः क्रीतकाल^३व्यपगमेनैव । दास्यावस्थायां क्रीत^४क्रीतकाल-
दासेनोत्पन्नानामपि दास्यमोक्षः पित्रा सहैव—इतिशास्त्रीययुक्तिसिद्धा
व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल आशिपटण्ट सादेवेर निकटे ।

१. न च भार्या पुत्रधेरेत्यादिवद् अस्वातन्त्र्याभिप्रायमिति वाच्यम्, तदानीं स्वत्वे
प्रमाणाभावात् । भार्यादिषु तु यत्ने समाधिगच्छन्नि अर्जयन्तीति स्वत्वे सिद्धे
दुनमस्वातन्त्र्यवर्धनम्—इति दायभागे (५० १२) मनुवचनस्येव । वचनमिदं
दास्यतत्त्वे न दृश्यम् ।

२. एतावता—व्यप० ।

३. कालत्रा०—व्यप० ।

४. इति०—व्यप० ।

श्रीर्जयतितराम्

ल० २३००

२५—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेके सश्रोयाल करा याइतेछे ।—ई० १८२६ सालेर मार्चमासेर १३ तारिखे ऐ सदर देओयानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलीयम नसेष्टर साहेव ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलीयम डोविन साहेवेर बैठके—

मृत भवानीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारी राधावन्धवचन्द्र ओ गयरह—
आपीलाएटान—

मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरिर उत्तराधिकारी जगतचन्द्र चौधरी ओ गयरह—
रेप्पाडएटान—

हुकुम हइल ये मृत राजा चित्रसेनेर प्रधाना रानी आपीलाएट ओ कनिष्ठा रानी रेप्पाडएडेर ५३२ लम्बरेर मोकइमार ओ जगतचन्द्रसेन आपीलाएट ओ केशवानन्दगोस्वामी ओ गयरह रेप्पाडएडेर ८३२ लम्बरेर मोकइमार दाखिल हओया दुइ केता व्यवस्था एवं १६ लम्बरेर भवाणीचरणेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ११ लम्बरेर गाविन्दचन्द्रेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ऐ पाट्टाजातेर सम्पर्कीय दुइ केता रसीद ल० १७२२ तोमारदिगके अर्पण करा जाय । उचित^१ ये नीचेर लिखित सश्रोयालेर जओयाव ३ तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेन ।

उपरेर लिखित मोकइमार दाखिल हओया व्यवस्थाते जाना याइतेछे ये देवशेवार भूमि हइते जाहा उत्पन्न हय ताहा देवतार वस्तु वटे, ओ शाखानुसारे देवतार भूमि विक्रय कि दान कि बन्धककरण सिद्ध नहे, आर केवल देवतार सेवार निर्वाह ओ सरवधाह हओनेर अर्थे देवतार भूमिर रक्षणपेचणेर क्षमता देवतार

करणीया व्यक्ति अर्थात् देवत्र भूमिर रक्षक ११ ओ १६ लम्बरेर पाट्टार न्याय अन्य कोनो व्यक्तिके पुत्रपौत्रादिक्रमे सेलामीर टाका (देओया पूर्व ह्य ना) । एतावता पनेर टाकार वदले मकररी जमाते मकररी पाडा देय । एमत् पाट्टा शास्त्रमते सिद्ध वटे, कि सेवाती व्यक्तिर ऐ पाट्टा देओनेर क्षमता नाहि; ओ पाट्टा देओयानीर व्यक्तिर मृत्यु परे ये व्यक्तिके ताहार रक्षणपेक्षणकरण उत्तराधिकारित्वे अशें से ऐ पाट्टा रहित करणेर ओ देवत्र भूमिर नूतन वन्दवस्त करणेर क्षमता राखे ना, ओ ए विषये बाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे किछु हुकुम कि व्यवहार आछे कि ना ओ एमत् मोकदमार सिद्ध असिद्ध हओन एइ अर्थे ये ऐ मकदमार देवत्र वस्तुर लाभ ओ क्षति हओने सम्पर्क राखे (कि ना) इति—

एतदधिकांशकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुत - अलीयमनशष्टरसाहेवचतुर्थाधिपतिश्रीयुत - अलीयमडोरशाहेवतदुमयधर्माधिकरणलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंशकपत्रद्वयं त(त्)मन्वन्धिसप्तदशाङ्काङ्कितद्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंशकपत्रद्वयबाबलोकिय विविच्यच यादृशाबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

देवसेवार्योत्सृष्टभूम्यादिस्तदुत्पन्नञ्च द्रव्यं देवस्वम् । देवस्वभूम्यादिविक्रयदानवन्धककरण क्षमता देवार्थभूम्युत्पन्नैकस्य^१ तदुत्तराधिकारिणां वा नास्ति । केवलं देवसेवानिर्व्वाहार्थं देवस्वभूम्यादे रक्षणा-वेक्षण-दि-कर्तृत्वं यो देवनेवां कारयति स एव वङ्गदेशे^२ सेवारतरान्देनप्रसिद्धो यद्यन्वस्मै कस्मैचिद् देवार्थं दर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिलिखितमकररीपाटासंशकपत्रद्वयलिखितरीत्या . मकररीपाटासंशकं नियमपत्रं

१. सम्पर्क—न्यप० ।

२. भूम्युत्पन्नं—न्यप० ।

३. वङ्गदेश—न्यप० ।

ददाति तदा तन्नियमपत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुमारेण च सिद्धं भवति, नहि देवस्वभूमेर्माकररीपाट्टासंज्ञकनियमपत्रदानं विक्रयो न च दानं न वा बन्धको भवति । मूल्यग्रहणप्रयुक्तस्वस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वेन स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्त्यनुकूलव्यापारस्य दानपदार्थत्वेन चाधमर्णोत्तमर्णसमीपे ऋणपरिशोधनकालपर्यन्तं विश्वासार्थं स्थापितस्य स्वकीयद्रव्यस्य बन्धत्वेन च देवस्वभूमौ माकररीपाट्टासंज्ञकपत्रदातुः स्वत्वाभावेन मूल्यग्रहणपूर्वकतन्निवृत्तेर्वा दानप्रकारेण वा तन्निवृत्तेरसम्भवात्, बन्धनेन स्थापनाभावाच्च । यथा राजा ग्रामाधिपतिना वा स्वकीयग्राम-क्षेत्रादिः प्रत्याब्दिकरग्रहणार्थमन्यस्यै प्रजायै वा कालनियमं कृत्वा शकृत्वा वा पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्दमेता मुद्रा दत्त्वा त्वयैतद्ग्रामः क्षेत्रादिर्वा भुज्यतामिति नियमपत्र पाट्टासंज्ञकपत्र माकररीपाट्टासंज्ञकं वा दत्त्वा सम-र्प्यते^१, तथा देवसेवायोंस्तुष्टुभूमिरपि वङ्गदेशसेवाइतपदवाच्ये^२ नोपरिलिखित-रीत्या समर्प्यते^३ इति वङ्गदेशव्यवहारः । देवस्वभूमावेतादृशव्यवहारसिद्धौ तद्भूमाव^४तिवृष्ट्यानावृष्ट्या वा शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसे-याया श्रवाधः, इत्येव लाभः । तदसिद्धौ अतिवृष्ट्यादिदोषेण शस्यानुत्पा-दाद्देवसेवाश्रयोऽपि भङ्गितुं शक्नोति, इत्येव क्षतिः । एवञ्चैतद्^५विवादे यद्युपरिलिखितमाकररीपाट्टासंज्ञकपत्रद्वयान्तर्गतपोडशाङ्काङ्कितश्री देवमुद्रा-ङ्कित नियमपत्रं तत्सम्बन्धिरसीदसंज्ञकपत्रञ्च वङ्गदेशे सेवाइतशब्दान्या या राज्ञा देवसेवार्थं दर्शनीयमुद्रा देवकोपे निवेश्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्द-मेता मुद्रा दत्त्वा भुज्यतामित्युपरिलिखितनियमपत्रमन्यस्मै^६ कर्मैचित् पोड-

१. सत्त्वाभावेन—व्यप० ।

२. त्वयैतन्—व्यप० ।

३. समर्पने—व्यप० ।

४. पदवाच्येन—व्यप० ।

५. समर्प्यते—व्यप० ।

६. तद्भूमा—व्यप० ।

७. चैतद्—व्यप० ।

८. मन्यस्मै करथै—व्यप० ।

शाधिकद्वादशशताब्दे दत्तं तन्नियमपत्रेऽन्यस्याधिककरदातुरूपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामितिलिखनाभावात् तन्नियमपत्रदाय्याः सेवाइतशब्द-
वाच्याया मरयोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव । देवसेवार्थोत्सृष्टभूमे
रक्षणावेक्षणदिकर्तृत्वं यस्य भवति स तु तत्पत्रमकर्म्मण्यं कृत्वा नियम-
पत्रान्तरं दातुं न शक्नोति-इति बङ्गदेशप्रचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थ-
मुक्तावलीविवादभङ्गार्णवप्रचृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

देवस्यं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मापरे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥

—इति मनुवचनम् ॥१॥ (१११२६)

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम् ।

—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥ (मनु० १११२६)

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रचुम्ब्यतेऽन्यथा ॥

—इति बृहस्पतिवचनम् ॥ ३ ॥ (१११२६)

एकत्र बन्धस्यान्यत्रबन्धदानवद् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशी-
भवनमयोग्यमिति भूमिसमर्पणसमये अन्यस्याधिककरदातुरूपस्थितिं
यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या-इति विवादभङ्गार्णव-
(१ विवाभ० पृ० ३१० ख)लिखनम् ॥ ४ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्यैव एकत्र वशीकृत-

१. कुल्लूक—अप० ।

२. वा भेनो—अप० ।

३. पापी परे—अप० ।

४. गृध्रो—अप० ।

५. देशजातिकुलानाञ्च ये धर्मास्तत्प्रवर्तिता इति कुल्लूकवच० ।

द्रव्यस्यान्यत्र वशीकरोऽपि असिद्धिरेव-इति विवादभङ्गार्थं लिखनञ्चेति
(१ विवाम० पृ० ३१६ क) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशम्भेविधावागीशेन

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपति-श्रीयुतञ्जोलियमलसेष्टरसाहेवैतद्धर्मा-
धिकरणचतुर्थाधिपति — श्रीयुतञ्जोलियमडोरनराहेवैतदुभयधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितै-
कादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयं, तत्सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कित-
द्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंज्ञकपत्रद्वयमवलोक्य विविच्य च यादृशाधोघो-
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

देवसेवार्थो(त्सुष्ट)भूमिरक्षकः सेवाइतशब्देन (उच्यते) । यद्यसावन्यस्मै
कस्मैचित् देवार्थदर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिनिश्चितमकररी-
पाटासंज्ञकपत्रद्वयम् लिखितरीत्या मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं ददाति तदा तन्म-
कररीपाटासंज्ञकं पत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च
सिद्धं भवति । एवञ्च तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रदातृसेवायितकृतु^१र्भरणानन्तरं
तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव । देवसेवार्थभूमे रक्षणावेक्षणैककृतु^२त्वं
यस्य भवति स यदि तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रेऽन्यस्याधिककरदातृ^३रूपस्थितिं
यावत्प्रतिवपं त्वया भुज्यताम्—इति लिखनं (करोति), न चेत्तदा तन्मकररी-
पाटासंज्ञकं पत्रमकर्मण्यं कृत्वा नूतनवन्दोवस्तसंज्ञकमायामं कर्तुं न शक्नोति ।
एवञ्च देवसेवार्थभूमौ मकररीपाटासंज्ञकपत्रदानं व्यवहारानुसारेण शास्त्रानु-
सारेण च सिद्धं चेत्, अतिवृष्ट्याऽनावृष्ट्या वा तद्भूमौ^४ शस्यानुत्पादेऽपि
नियमितद्रव्यसाध्यदेवसेवाया अबाधः-इत्येव लाभः । तदसिद्धावतिवृष्ट्यादि-

१ सप्तदशाङ्काङ्कितदशाशा व्यप० ।

२ सेवाइत व्यक्तुर्भारण—व्यप० ।

३ ०परिधत पावत—व्यप० ।

४ तद्भूमौ—व्यप० ।

दोषेण शस्यानुत्पादाद् देवसेवात्राधोऽपि भवितुं शक्नोति इत्येव-क्षतिः—इति
चन्द्रदेशप्रचलितमनुविवादमद्धार्यावप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्माश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्—इतिमनुवचनम् (८।४१) ॥१॥

एकत्र बन्धद्रव्यास्यान्यत्रबन्धदानवत् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र
वशीभवनमयोग्यम्—इति भूमिसमर्पणसमयेऽन्यस्याधिककरदानुरूपस्थिति-
यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्वेव प्रतिज्ञा कर्तव्या—इति विवादमद्धार-
्यावलिलनम् (१ पृ० ३१० ख) ॥ २ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्येव एकत्र वशी-
कृतद्रव्यस्यान्यत्रवशीकरणेऽपि, असिद्धिरेव—इतिविवादमद्धार्यावलिल-
नञ्चेति (१ विवाभ० पृ० ३१६क) ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

सवाल

२६ सडर देमानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलियम
लसेष्टर साहेव ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलियम डोरण
साहेवेर हुजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितगणेर प्रति अंगरेजी
१८२६ साल १० अपरेल तारिकेर रोवकारिर हुकुमानुसारे—

राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह

आपीलारटान

जगच्चन्द्रचौधुरी ओ गयरह

रण्याडण्टान

पूर्वे मोकहिमासकले लंबर ५३२ ओ ८३२ वावत ये

व्यवस्थासकल दाखिल हइयाछे, ताहार सत्वे देवोत्तर भूमिर

१ ०नुस्तरार—५५० ।

२ प्रतिपालयेत्—मन्म० ।

सेवाइतेर लिखित पुत्र-पौत्रादि क्रमे मोकररी पाटा सिद्ध ह्योनेर विषये तोमरा आपनारदिगेर मत उत्तरे लिखिया छ । अतएव पुनर्वार जिज्ञासा करा जाइतेछे ये हिन्दुलोकेर कोनो शाखे मोकररी पाटार प्रस्ताव आछे; प्रबल सन्देहेर द्वाराय यदि एमत कोनो प्रस्ताव शास्त्रे पावा जाइतेछे ना, तबे पश्चाद् ग्रन्थकार-गनेर ग्रन्थेर मध्ये कोनो ग्रन्थे वाहार प्रस्ताव आछे, ओ तोमार-दिगेर उत्तरेर लिखनानुसारे व्यवहार ओ ओइ व्यवहारेर सिद्ध-तार प्रस्ताव कोन ग्रन्थे पावा जाइतेछे । ये हेतुक एचरणे एइ विषयेर सन्देह आछे, ये कोनो वचन ए विषयेर जन्मे नाइ, वरं हिन्दुलोकेर ग्रन्थे ओ ए विषयेर प्रसङ्गमात्र नाइ ओ ए विषयेर विचार पूर्व व्यवस्थासकल ओ चलित आइनसकलेर अनुसारे आदालतेर हाकिमानेर सहितइ सम्पर्क राखे इति ।

श्रीज्जयतिराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतश्रीोलियमलनेष्टरयाहेवैत'द्धर्माधिकरणचतुर्थाधिपतिश्रीयुत— श्रीोलियमडोरणसाहेवैतदुभयधर्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

हिन्दुजातेर्धर्माशास्त्रीयस्मृतिचन्द्रिकावीरमिनोदय-व्यवहारमातृकाव्य-व्याख्यानविवादादभङ्गार्थग्रन्थेषु लोके भाषायां मकररीपाटा-शब्देन प्रसिद्धस्य शास्त्रोक्तशासनपत्रस्यास्ति प्रस्तावः । एवमस्मदुत्तर-लिखितव्यवहारस्य तादृशव्यवहारसिद्धतायाश्चोपरिलिखितग्रन्थेभ्यः प्राप्तत्वात्-इत्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

१. पश्चात् व्यप० ।

२. श्रीज्जयति०—२५० ?

३. वैतद्धर्मा०—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

राजलेख्यं स्थानकृतं स्वहस्तलिखितं तथा ।

लेख्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं भिन्नं तद् बहुधा पुनः ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् (वृस्मृ० ६।१८) ॥१॥

तत्रशासनं निरूपयितुमाह याज्ञवल्क्यः

शासनं कारयेद्धर्म्यं^१ स्थानवंशाभिसंयुतम् ॥ (वृस्मृ० ६।१६)

दत्त्वा भूमिं निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।

आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः ॥ (यास्मृ० १।३१८)

निबन्धो वाणिज्यादिकरादिभिः प्रतिवपं प्रतिमासं वा किञ्चिद्धनमस्मै
ब्राह्मणायस्यै देवतायै देयमित्यादिप्रभुसमयलभ्यमित्यर्थः । भूमिमिति
आमाराभादीनामुपलक्ष्यार्थम् । अतएव बृहस्पतिः—

दत्त्वा भूम्यादिकं राजा ताम्रपट्टे^२ ऽथवा पटे ।

शासनं कारयेद्धर्म्यं^३ स्थानवंशाभिसंयुतम् ॥

—इतिस्मृतिचन्द्रिकालिखनम् । २ (स्मृचव्य० २।५५)

योगीश्वरः शासनमाह :—

भूमिं दत्त्वा निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।

आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः ॥ (यास्मृ० १।३१८)

पटे वा ताम्रपट्टे वा स्वमुद्रापरिचिह्नितम्—इत्यादिवीरमित्रोदय (पृ०

३५६) व्यवहारचिन्तामण्यादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तामिथ्य वपोंपयुक्तचरदानेन वपोंपयुक्तस्वत्वमज्ज्यते । तद्वपे च
राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति । यदि तु प्रतिवपं
स्वया मुज्यतामित्यादि प्रतिज्ञाभवत् तदा तु यावद्वपेष्वेव स्वत्वानुमतेः
कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यमिति विवादभङ्गाणवलिखनम् ॥४॥

(१ विवाभ० पृ० ३०८ कल)

१. लिखितं तावद् द्विविधं स्वहस्तलिखनमन्वत्कृतमन्व—नी० मि० पृ० ५२०, यार००

२. ०परिज्ञानाय—अप० ।

३. २।८५ अया० ३३६ तमे पृष्ठे वचनमिदमुद्धृतमिति धत्ते० ।

३. ताम्रपत्रेऽथवा पटे इति वृस्मृ० पाठान्तरम्, ताम्रपट्टे तथा पटे स्मृचव्य० ५५

४. ०दर्मम्—यूस्मृ० ।

देशाचाराविरुद्धं यद्व्यक्ताधिविधि^१लक्षणम् ।
तत्प्रमाणं स्मृतं खेल्पमविलुप्तक्रमाक्षरम् ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतनारदवचनम् । (नामसं० २।११३) ॥५॥
पृ० ५२) ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।

—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० १६६)व्यवहारमातृका(पृ० २८४)धृतनारद-
वचनम् । (नामसं—१।३४) ॥६॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्माहानिः प्रजायते ॥ —इति तत्तद्ग्रन्थधृत
(व्यमा० २८२ : २६४)बृहस्पतिवचनम्, युक्तिसौक्यव्यवहारः—इति
तत्तद्ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२७ सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी
इशामिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर परिडतदिगेर नामे
मित्रजितसिंहेर ओ श्रीमति मनुबिबी सायलार मकहमाते तिन
रोजेर मध्ये पश्चिमदेशेर एव' बङ्गदेशेर शास्त्रमते यवाव दाखिल
करखेर हुकुमे इंगरेजी १८२६ शालेर ३० मे भासेर रोवकारिर
लिखित सवाल एइ—एऊ व्यक्ति क्षत्रि र्खी, ये ताहार आपन
स्वामीर त्यक्त धने दाखिलकार छिल, ताहार आपन स्वामीर

१. ० विरुद्धं—नामसं० ।

२. मिताक्षरा इति पठनीयः २।८६ ॥

३. युक्तिर्नाथः स च लोकन्यवहारः इति व्यवहारमातृका—न्यत० पृ० १६६ ।

मानुल पुत्र राखिया भरियाछे । अन्य उत्तराधिकारी ना थाकन एवं ऐ मृत स्त्री-व्यक्तीर दत्तक पुत्र ना थाकन कालीन ऐ स्त्रीर त्यक्त धन ऐ पुत्र पाइते पारे कि ना इति ।

यवावव्यवस्था(१)

एतद्ग्रन्थाधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीइशमितसाहेवधर्माधिकरणलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते :—

यत्र कस्यचिद् अनपत्यस्य तत्रत्रियस्य स्त्री स्वस्वामित्यक्तधने भोग्यती ध्यासीत्, स्वस्वामिमातुलपुत्रं संरक्ष्य मृतास्यात्, तत्र यदि तस्याः स्वामिनः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादि—मानुष्यस्त्रीयपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो न स्युः, तदापश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण एव वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णवर्कालङ्कारकृतदायक्रमसंग्रह-विवादार्यवसेतु-विवादभङ्गार्यव-ग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादि—मातुलपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो यदि न स्युःतदा वङ्गदेशीयतत्तद्ग्रन्थानुसारेण अथ च वङ्गदेशीयश्रीकृष्णवर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादिमातृष्वस्त्रीयपर्यन्ता धनाधिकारिणो यदि स्युः, तदा वङ्गदेशीयतद्ग्रन्थानुसारेण एवशैतन्मतत्रय एव मृतायास्तस्याः स्त्रिया यदा दत्तकः पुत्रो नास्ति तदा च तस्याः द्वित्रयास्त्यक्तधनं तत्स्वामिमातुल पुत्र आदावेव बन्धुत्वेन प्राप्तुं शक्नोति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेणो वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णवर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारुमसंग्रह - विवादार्यवसेतु - विवादभङ्गार्यवादि-ग्रन्थानुसारेणो च व्यवस्था ।

१ मृता—पृ० ।

२ ० त्वस्त्रीय०—पृ० ।

३ आद्यव—पृ० ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखितयाज्ञवल्क्य-
वचनम् (यास्मृ० २।१३५) । १

गोत्रजाभावे बन्धवो धनभाजः । बन्धवश्च त्रिविधाः ।

आत्मबन्धवः पितृबन्धवो मातृबन्धवश्चेति ॥

यथोक्तम्—

आत्मपितृष्वसुः^१ पुत्रा आत्ममातृष्वसुः सुताः ।

आत्ममातुलपुत्राश्च^२ विज्ञेया आत्मबान्धवाः ॥

पितुः पितृष्वसुः पुत्राः पितुर्मातृष्वसुः सुताः ।

पितु(२)मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः ॥

मातुः पितृष्वसुः पुत्रा मातृर्मातृष्वसुः सुताः ।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः ॥

इति । तत्र चान्तरङ्गत्वात् प्रथममात्मबन्धवो धनभाजस्तदभावे पितृ-
बन्धवस्तदभावे मातृबन्धवः—इति क्रमो वेदितव्यः—इति मिताक्षरादि-
(मिता० २।१३, पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तदभावे मातुलस्तदभावे मातुलपुत्रस्तदभावे मातुलपौत्रस्तदभावे
मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इत्यादिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(दाय)क्रमसंग्रह
ग्रन्थलिखनम् । (१०।१५, पृ० ६) ॥ ३ ॥

१. आत्मपितृष्वसुः पुत्रा पितृमातृ०—न्यय० ।

२. पितृर्मातृ०—न्यय० ।

तत्र प्रथमं मातुलस्तदभावे मातृपत्नीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-
पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका
रूपग्रन्थलिखनम् । ॥ ४ ॥

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्य तथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२८ लंबर—

रोवकारी मिसिल आदालत देमाना सदर अंगरेजी १८२६
साल तारीख ७ माहे दिशम्बर मतावक वाङ्गजा १२३३ साल
२३ माहे अमहायण रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

श्रीमति मुलतणा—

श्यामाप्रसादनन्दी ओ गयरह

आपीलाष्ट

रप्पाडस्टान

सन हालेर २० लंबर (नवम्बर) मासेर लिखित जिला
मेदनीपुरेर जजसाहेबेर एक किता रिटरन, ताहार सामिलेर
रोवकारी ओ गयरह संवलित पहुचिया अद्य श्यामाप्रसादनन्दी
ओ लक्ष्मीनारायणचौधुरीर उकिल मुनशी गोलाम बतुल ओ
ब्रजलालचौधुरीर उकिल मुनसी दादारबकश ओ सदासुख
पण्डित ओ आनन्दलालचौधुरी ओ नन्दलालचौधुरि ओ
मसम्मात हरिप्रियामणी राणीर उकिल सदासुख

१. तत्रापि प्रथमं मातुलस्तदभावे मातृपत्नीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-
पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति दाय-
भागटीकायां कृष्णतर्कालङ्कारलिखनम् (पृ० २१५, २१६ परि०)

२. हरिप्रियामणी स्त्रीर—अप० ।

परिडतेर हॉजीरीते तोनि आंदांलतेर कागजांत संहित दरपेस हइयां पंडा गेलों। तंपरे ब्रंजलाल चौधुरीर वकीलेंरां अयोध्याप्रसाददासि मुद्दई श्यामाप्रसादंनन्दी ओ गैरह मुद्दांआं-लेहेर मोकहिमांते अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च मासेर हंओयां एलाका कलिकातार कोर्ट आपीलेर एक कित्ता रोवकारिर नकल ७ तंवरे दाखिल करिलेक, दृष्टि आइलो। जाना गेलो ये आंदांलतेर साबिक तृतीय हाकिम अंगरेजी १८२२ सालेर १४ शितम्बर मासेर हआया हुकुमे एइ लिखियाछेन ये विरोधी निष्पत्ति पर्यन्त मृत मधुसूदनर हिस्सा सरवराहकारेर इलाकांते थाके, ओ ताहार हिस्सार मोनफा सरवराहकारेर निकट आमोनत थाके, ओ कि प्रकारे विरोधी निष्पत्ति हय, ओ कोन व्यक्ति स्वत्व—ए विषयेर किछु तजवीज करेन नाइ, अतएव ए विषयेर हुकुम सादर करण आवश्यक हइलो, ओ अंगरेजी १८११ सालेर माइ मासेर लिखित ए आंदांलतेर फयसलार दृष्टे वोध हय जे दौहिदरदिगेर मध्ये अर्थात् डिगरीदारानेर मध्ये एक जन मरिले, ताहार हिस्सा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक। ओइ फयस-नाते ए विषयेर किछु हुकुम नाइ। आर अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च मासेर ११ एगारह तारिकेर हआया कलिकाता(र) कोटेर रोवकारीते अन्य मोकहिमाते, अर्थात् अयोध्याराम मुद्द चनाम श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकहिमाते सम्पर्क राखे, मइ हुकुम आछे ये मधुसूदन मुद्दाआलेहेर पिता अन्य उत्तराधिकारीरां मोकहिमार तद्विर करे, ओ ओइ रोवकारी अन्य मोकहिमार सम्पर्कीय ए मोकहिमाय प्रवेश हइते पारे ना। वरं ओइ रोवकारीर गरज अयोध्याराम मुद्दइर मोकहिमार..... छिलो। मृत मधुसूदनर उत्तराधिकारीदिगेर विरोधे निष्पत्तिर छिलो ना, ओ से मोकहिमाते ओइ मुद्दइर नातिस कलिकातार कोटे डिसमिस हइया मृत मधुसूदनर उत्तराधिकारीदिगेर विरोधेर किछु निष्पत्ति कोटे हय नाइ।

आर जाना जाय ये छय ६ जन दौहित्र अर्थात् डिगरी(दारदिगे)र-
मध्ये केवल ओइ मधुसूदन मरियाछे । बाकी पाच जन । ताहार
मध्ये मृत व्यक्ति सहोदर भ्राता तिनि एइ दण पर्यन्त वर्तमान
आछे, ओ ब्रजलालचौधुरीर स्त्री हरिप्रियामणीर गर्भे अन्य
दौहित्र जन्मे नाइ, आर मधुसूदनचौधुरीर पिता ब्रजलाल-
चौधुरी ओ माता हरिप्रिया ओ सहोदर तीनि भ्राता, आनन्दलाल
ओ नन्दलाल ओ गङ्गानारायणचौधुरीके राखिया मरियाछे ।
अतएव हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितान् स्थाने सवाल
करा जाय ये ओइ प्रकारे मृत मधुसूदनेर अंश कोन व्यक्तिके
अशे; ताहार पिता आदि उत्तराधिकारिदिगेके किंवा मृत राजा
जादवरायेर, ये ओइ छय जनेर मातामह छिलो, ताहार बाकी
पाच जन दौहित्रके अशे । उचित ये अंगरेजी १८११ सालेर २७
माइ मासेर हओयो ए आदालतेर फयसलार मजमून हात हइया
दायभागशाख मते ये सेइ शाख मते ए मोकहिमा ए आदालते
निष्पत्ति हइयाछे; ओइ सवालेर यवाय परसु दुइ प्रहर पर्यन्त
वचनग्रन्थेर बेओरा सम्बलित दाखिल करेन । पण्डितदिगेर
यवाय दाखिल हइले पर उचित हुकुम देया जाइवेक इति ।

श्रीर्जयतितराम'

जगद्व्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्तनीइशमितसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रथमतिरुामवलोक्यैवं तत्प्रमर्षितांगरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यैकादशाधिकाष्टादशशताब्दीयमाहमासीयसप्तविंशतिदिबरीवैतद्दर्मा-

१. श्रीर्जयति०—२५० ।

२. काण्ड०—२५० ।

धिकरणीयनयपत्रार्थमवगत्य च यादृशत्रोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते । यत्र मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो ब्रजलालचौधुरीसंज्ञकं पितरं हरिप्रियामणोनाम्नीं मातरमानन्दलाल-नन्दलालगङ्गानारायणचौधुरीसंज्ञकान् त्रीन् सोदरभ्रातृन् संख्य मृतः तत्रोपरिलिखितैर्द्विभ्र्माधिकरणीयनयपत्रानुसारेणोत्तराधिकारित्वेन मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकस्यत्वास्पदीभूताशस्य तदीयधनत्वेन तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारो न तु पूर्वस्वाम्युत्तराधिकारिणाम् । तत्र च तत्पुत्र-पौत्र-पत्नी-दुहितृ-दौहित्र-पर्यन्ताभावे तत्पितु(र्ब्रजलाल-चौधुरीसंज्ञकस्याधिकारः, (अ)पति पितरि मातृ-सोदर-भ्रात्रादीनाम्, एवं मृतस्य राज्ञो यादयरामरायस्य पूर्वधनस्वामिनोऽवशिष्टा(नां) पञ्चदौहित्राणां नाधिकारः-इति दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि दायभागादि(दामा० पृ० १५१, १११, ११४)ग्रन्थभूतविष्णुवचनम् (विष्णु० १७४) । १

दौहित्रस्याभावे पितुर्न मातुः—इत्यादि दायभागग्रन्थ (दामा० पृ० १८५,

१११, ३११)लिखनम् । २

तदभावे पिता तदभावे माता तदभावे भ्राता—इत्यादि श्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थ(दामा० टी० पृ० २१८, प० १२)-लिखनञ्चेति ।

श्रीर्जनयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१. आनीन्—व्यप० ।

२. सेते धर्मा०—व्यप० ।

सवाल

२६—सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुक्त कुर्टनी इशामिट साहेबेर हजुर हइते कमलाकान्तघोशाल ओ गैरह चनामे रामहरिनन्दिग्रामी ओ गैरहेर; मोकदिमाते अंगरेजी १८२६ सालेर १३ दिशम्बर मासे रोवकारीर लिखित अदालत मजकुरार पण्डितानेर नामे परसु दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ प्रमाणेर बेओरा संबलित यथाव तत्तव मजमुने सवाल एइ ये—

गोवर्द्धननन्दिग्रामी नरेन्द्रनित्यानन्दग्रामी ओ शीताराम-नन्दिग्रामी दुइ पुत्र(के) उत्तराधिकारी राखिया मरिलो, ओ नरेन्द्र-नित्यानन्द एक पुत्र गोपीनाथके राखिया मरिलो, ओ सीताराम एक पुत्र सहदेव नाम ओ एक कन्या, (या)हार नाम प्रकाश नाइ, उत्तराधिकारी राखिया मरिलो । ओ ओइ गोपीनाथ तीनि पुत्र रामहरिनन्दिग्रामी ओ गौरहरिनन्दिग्रामी ओ हारुनन्दिग्रामी-के राखिया मरिलो; ओ सहदेव निःसन्तान मरिलो, ओ ताहार भगिनी एक कन्या राखिया मरिलो, ओ ओइ सहदेव आपन जीवइशाते भगिनीर मृत्युर पर आपन भगिनीर कन्यार जीव-इशाते ताहार आपन भगिनीर पुत्र रामशङ्करघोशालके कयेक विधा ब्रह्मोत्तरं ओ देवत्तर भूमि दातव्य करियाछे; ओ ताहार दानपत्र लिखिया दियाछे; ओ ग्रहीताके दातव्य करा भूमिर उपर दखिल कराइया ताहार तीनि बत्सर परे मरियाछे; ओ दातकालीन गोपीनाथनन्दिग्रामीर पुत्र रामहरी ओ गौरहरी ओ हारु नन्दिग्रामी वर्त्तमान छिलो, एवं आछे । ओ ओइ गोपीनाथ मरियाछे, ओ दाता व्यक्ति मृत्युर कएक बत्सर परे ग्रहीता व्यक्ति मरियाछे । ताहार पुत्रेरा दान करा-भूमिर उपर दखिल हइयाछे । यहदेशेर शास्त्रानुसारे ओइ

सहदेवेर लिखिया देया हेवा सिद्ध, कि असिद्ध, थो ताहा असिद्ध ह्मोन प्रकारे दान करा भूमि कोन व्यक्ति के अशें इति ।

श्रीर्जयतिराम्

पुत्र व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीदशमित्वादेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र गोवर्द्धननन्दिग्रामोसंश्रुः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो नरेन्द्रनित्यानन्दनन्दिग्रामीसीतारामनन्दिग्रामीसंश्रुको द्वौ पुत्राशुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, नरेन्द्रनित्यानन्दोऽपि गोपीनायसंजकमेकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः, एवं सीतारामोऽपि सहदेवनामानमेकं पुत्रमेकां कन्यां च संरक्ष्य मृतः, एवं गोपीनायो रामहरी-गौरहरी-शरूखंडकान् शौन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतः, तद्योपरिलिखितसहदेवः स्वजीवनदशायां स्वभगिनीदीहिनाय रामशङ्करघोशालाय यदि कतिपयविधाशब्दवाच्या^१ कांचिद् ब्रह्मत्रभूमिदेवत्र भूमिश्च दत्त्वा, तस्याश्च दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वा, तस्यां च ब्रह्मीतुराय^२ सत्त्वं सम्पाद्य संवत्सरत्रयानन्तरमनपत्य एव मृतस्तदा दानकाले इदानीं च गोपीनाथपुत्रेषु रामहर्यांशुपरिलिखितेषु त्रिषु सत्त्वप्यविभक्तायां भूमौ स्वांशयोग्यायाः विभक्त्यां च स्वांशरूपाया वा ब्रह्मत्रभूमेर्दानं कृतं तद् ब्रह्मदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, स्वतन्त्रस्वामिकृतत्वात्, एवं दानपत्रलिखिताया देवत्रभूमेर्दानं तत्र सिद्ध्यति^३, देवत्रभूमौ केवल देवताया एव स्वत्वं देवमिन्नानां केवाञ्चिदपि स्वत्वाभावात् । किन्तु देवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं लोकानामेव व्यवहाराद् दृश्यते । तत्र यद्यनेन केनचिद् भूम्यधिपतिना देवत्तेवार्थं कांचिद् भूमिर्त्रियमिता तत्संरक्षणादि^४ कर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा सहदेवाय, तत्पूर्वपुरुषाय वा दत्तं स्यात्तदा

१. शीर्षं दत्ति—व्यप० ।

२. वाच्या कांचिद् ब्रह्मत्रभूमिर्देवत्रभूमिश्च दत्ता दत्तः—व्यप० ।

३. राक्षत्र—व्यप० ।

४. सिद्धसि—व्यप० ।

तदेव स्वकर्तव्यस्ववशीभूतसंरक्षणादिकर्तृत्वं तदेवपूजकत्वं वा यदि सहदेवेनोपरिलिखितरामशङ्करघोशालाय दत्तं स्यात्तदा, यदि वा स्वयमेव सहदेवेन देवसेवार्यं स्वोयकाचिद्भूमिर्त्रियमिता तस्याः संरक्षणादिकर्तृत्वं तदेवपूजकत्वं वा तस्मै दत्तं स्यात्, तदा चैतदुभयविधं दानं लोकव्यवहारात्सिद्ध्यतीति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हतीति ब्रह्मदेशचलितदायभागमनुष्पवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुस्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते^१ स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागादि (नामा० २।२६, पृ० ३५) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० १५७, १४।४२) । १

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनम् । (मत्सृ० ५।१५२) । २

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विक्रेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् (मत्सृ० ८।१६६) । ३

व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते^४—इति व्यवहारतत्त्वादि-ग्रन्थ (व्यत० पृ० १६६) धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ८, १।३४)^५

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

१. ०लदेव०—व्यप० ।

२. ०नत्व०—व्यप० ।

३. स्वानरान्—नामसं० ।

४. कुस्युर्यथे—व्यप० ।

५. मीराते—नामसं० ।

६. नादकीकृते—नामसं० ।

सवाल

३०—सदर दैमानी अदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अंगरेजी १८२६ सालेर १८ दिशम्वर मासेर रोवकारिर लिखित भवानीलालेर नामे हरीशचीवीर मोकदिमाते परसु दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा संवलिख यवाव दाखिल करनेर हुकुमे सवाल, एइ ये—

एक व्यक्ति हिन्दु, कायस्थ जाति, स्त्री ओ पिताके राखिया मरिलो । ताहार पर पिता स्त्रीके, ये प्रथम मृत व्यक्तिर माता नहे, आर अप्राप्त-व्यवहार पुत्र ओ भगिनीर पुत्रके राखिया मरिलो । पश्चात् ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्र निःसन्तान मरिलो । तपरे ऐ पितार स्त्री, ये अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर मृत्युर परे ऐ पितार त्यक्त धनेर उपर दखिलकार हइयाछिलो, आपन पतिर भगिनीर पुत्रके, ये उपरे उल्लेख हइलो, ऐ त्यक्त धनेर असियतनामा लिखिया दिया ग्रहीताके दान करा वस्तु उपर दखिल ना करा-इतेइ मरिलो मैथिलदेश ओ वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ऐ असियतनामा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री थाकने ओ सिद्ध ओ चलित वटे, कि ना ? आर यद्यपि असियतनामा लिखा ना हइतो, एइ स्वीकार करा जाय उत्तराधिकारित्वक्रमे ऐ त्यक्त धन द्वितीय मृत व्यक्तिर भगिनीर पुत्रके किम्वा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्रीके अपितो इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जन्माव्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणद्वितीया(धि)पति - श्रीयुत-कुटनीइशमिटसाहेबधर्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चित्कायस्थजातिः स्वस्त्रियं स्वापितरश्च संरक्ष्य मृतस्तदनन्तरं सतिपता तद्विभातरमप्राप्तव्यवहारं पुत्रश्चैकं स्वभगिनीपुत्रश्च संरक्ष्य मृतः, पश्चादप्राप्तव्यवहारः स पुत्रोऽप्यनपत्य एव मृतः, तदनन्तरमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य पितुः पत्नी तस्मिन्विवादास्पदीभूतधने भोगवती भूत्वा स्वपतिभगिनीपुत्राय उपरिलिखिताय तस्यैव स्वायत्तीभूतधनस्य^१ अस्थियतनामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा गृहीततत्पत्रं तत्पत्रलिखितवस्तुपुं^२ भोगमकारयित्वा मृता स्यात्तदा मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च तदेव^३ अस्थियतनामाख्यपत्रं प्रथममृतव्यक्तेः त्रियां सत्यामसत्यां^४ वा सिद्धं प्रचलितं (च) भवितुं न शक्नोति । एवञ्च विवादास्पदीभूतधने उत्तराधिकारिणामयं क्रमः^५ । तथाहि जीवति पितरि प्रथममृतो यः पुत्रस्तदीयविभक्तमसाधारणञ्च धनं तत्पत्नी मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च प्राप्नुमर्हति; यदि च तस्य स्वोपाजितं धन साधारणं स्थितं तदा तत्पत्नी तद्योग्यांशं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्राप्नुमर्हति, न तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, तद्देशीयग्रन्थकारैः साधारणधने विभागे सत्येव पत्न्याधिकाराल्लक्षणात् । एवञ्च प्रथममृतव्यक्तेर्विभक्तासाधारणधनातिरिक्तं विवादास्पदीभूतं धनं एतदुभयविषयतदीयधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, अथ च तस्यैव पुत्रस्य विभक्तासाधारणं धनं विना तदुपाजितसाधारणधनेऽपि तद्योग्यांशञ्च विना विवादास्पदीभूतं धनम्, एतत्त्रिविधधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रथमपुत्रमरणोत्तरं तस्त्रियां सत्यामपि तत्पितुः स्वत्वास्पदीभूतम्, अतस्तस्मिन्मृते तस्याप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य उपरिलिखितपितृस्वत्वास्पदीभूतयावद्दनाधिकारे जाते सति तद्धनं तदीयमेव जातम् । अतस्तस्मिन्नपत्ये^६ मृते

१. ० धनस्यासि०—व्यप० ।

२. गृहीततत्पत्रलिखित्०—व्यप० ।

३. देवासि०—व्यप० ।

४. सत्याम्ना—व्यप० ।

५. मयक०—व्यप० ।

६. तस्मिन्नपत्ये—व्यप० ।

तदुत्तराधिकारिणामेव तदनाधिकारः । तत्र च तत्पल्यादिसगोत्रपर्यन्ता-
भावे तत्पितृभांगिनेयस्य अ(१)त्मबन्धुत्वेन मिथिलादेशचलितशास्त्रा-
नुसारेण, एवं पल्यादितत्पितामहप्रपौत्रपर्यन्ताभावे तत्पितामहदौहित्र-
त्वेन वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण चाधिकारः । एवञ्च सति प्रथममृत-
व्यक्तेः स्त्री उपरिलिखितप्रतिस्यत्वास्पदीभूतधनाभावे एतदनादेव
प्राक्ताच्छादनाधिकारिणीति — इति मिथिलादेशचलितविवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिपित्तात्^२ कथञ्चन ॥

इति विवादचिन्तामणि^१ विचि० पृ० २३८) दायगागादि(दाभा०
पृ० १७३, ११।१।६०) लिखितमहाभारतवचनम् (भारत-१३।४६७।२४) । १

अपहार ऐच्छिकं दानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणि-
ग्रन्थलिखनम् (पृ० २३८) । २

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—
इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि(विचि० पृ० २३५) ग्रन्थधृतविष्णुवचनम्
(विस्मृ० पृ० ४६) । ३

इदं च विभक्तपतिधनपरम्—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ०
२३४) । ४

१. स्त्रीणां तु पतिदायावन्—भारतम् ।

२. ०वित्तान्—व्यप०, ०दायाव—दाभा० ।

अतोऽविशेषेणैव विभक्तत्वाद्यनपेक्षैव^१ । अपुत्रस्य भर्तुः कृत्स्न-
धने पत्न्यधिकारः—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० १६६,
११।१।४६) । ५

‘सगोत्राभावे बन्धुः’—याज्ञवल्क्य(वचनात्), स (च) स्वबन्धुः
पितृबन्धुर्मातृबन्धुश्च ।

आत्मपितृष्वसुः^१ पुत्रा आत्ममातृष्वसुः^१ सुताः ॥

आत्ममातुलपुत्राश्च^१ विज्ञेया आत्मबान्धवाः ।

पितुः पितृष्वसुः पुत्रा पितुर्मातृष्वसुः^१ सुता ।

पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया पितृबान्धवाः ॥

मातुः^१ पितृष्वसुः^१ पुत्राः मातुर्मातृष्वसुः^१ सुताः ।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः मातृबान्धवाः ॥

एतेषां क्रमेणाधिकारः—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ०
२४२) । ६

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पितृदप्रत्यासक्ति^१
—क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ०
२०८-९) । ७

अविभागे तु शङ्क ।

आतृभार्याणां (च) स्तृपाणाञ्च न्याय(तः प्र)वृत्तानामनपत्यानां
पितृदमात्रं गुरुदंघात् ॥

१. ०नपेक्षैव—दाभा० ।

२. ०स्वसु—व्यप० ।

३. अक्रम०—व्यप० ।

४. पितृर्मा०—व्यप० ।

५. मातृपि०—व्यप० ।

६. प्रत्यासक्ति०—व्यप० ।

जीर्णानि वासांस्यविकृतानि'—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखन-
ञ्चेति (पृ० २३६)

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

३१—रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजि
१८२६ साल तारिख २८ माह देशम्बर मताबक बाङ्गला १२३३
साल तारिख १४ पौष रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके—

मृत गौरीप्रसादचौधुरि	आपिलाष्ट
मसर्मात जयमालाचौधुराणी	रप्पाडष्ट

मृत्युञ्जयशर्मा शायेलेर उकिल सदासुखपण्डित विद्यमाने
आइल । जयमालाचौधुराणी मुद्दाआलेहेर जमिदारि निलाभ
द्वाराय शायेलेर पओना डिगरि टाका देयानेर बाबत । शायेलेर
दरखास्त नामखुरिर विषये कोट आपिलेर तृतीय हाकिमेर
मजुर राखा सहर टाकार जजसाहेबेर हुकुमेर असर्मातिते
ओ ऐ चौधुराणीर जमिदारि किछु निलाभ करिया डिगरि
लिखित टाका देओयानेर निमित्ते कोर्ट आपिलेर हाकिमदिगेर
नामे ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय शाएलेर
दरखास्त ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ सन हालेर
१ मेइ मासेर लिखित जाहाङ्गीरनगरेर कोटेर रोवकारि नकल
आर कोटे दाखिल हओया शाएलेर सओयालेर नकल सम्बलित
जे हाल मासेर २३ तारिखे ए आदालते दाखिल हइयाखिल
अब दरपेप हइया दृष्टे आइल । जाना गेल ये इङ्गरेजि १८१४

शालेर १६ देशम्बर मामेर हञ्चोयां ए आदालतेर फयंशला अनुसारे गोविन्द्रप्रसादचौधुरिर त्यक्त परगने कांशीपुंर शाराने-वाशन गयरह जमिदोरिर आट आना रकमेर मध्ये ऐ गोविन्द्र प्रसादचौधुरिर प्रथमा स्त्री मसम्मात् पार्वतीचौधुराखिर दत्तक पुत्र गौरिप्रसादचौधुरिर स्वत्व अर्द्धक परिमाणे, आ ऐ चौधुरिर द्वितीया स्त्री मसम्मात जयमालार दत्तक पुत्र शिव-प्रसादेर स्वत्व' द्वितीय अर्द्धक परिमाणे साव्यस्थ हइयाछे । ओ ए आदालतेर फयंशालार परे द्वितीय स्त्रीर दत्तक पुत्र शिवप्रसाद-निःसन्तान मरिल; ओ ताहार मृत्यु हञ्चोन हेतुते ऐ गौरिप्रसाद चौधुरिर ताहार त्यक्त चारि आना स्वत्वेर दाओया करिलेक, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा इङ्गरेजी १८१७ शालेर ७ फेवरओयारि मासे प्रथम हाकिमेर सञ्चोयाजेर जवावे एक केता व्यवस्था एइ मजमुने, ये शिवप्रसादचौधुरीर त्यक्त चारि आना अंश ऐ अप्राप्त-व्यवहारेर प्रहीतृ-माता जयमालाके अशे, ताहार भ्राता गौरीप्रसादके अशे ना, दाखिल करिलेन । ताहार पर तारिणी-प्रसाद अप्राप्त-व्यवहार पुत्र राखिया ऐ गौरीप्रसाद मरिल, ओ इङ्गरेजि १८१६ शालेर ३१ आगष्ट मासे मृत्युञ्जय शर्मा शाएल ऐ जयमालार नामे, ये ए छण पर्यन्त वर्तमान आछे, प्रकाश हय, ६७६।)।र गण्डार डिगरि सहर टाकार देओयानी आदा-लत हइते पाइल; ओ चाहितेछे ये ए चारि आना हिंस्या किम्वा ताहार मध्ये किछु आपन हासिल करा डिगरिर टाका पाओनेर कारण विक्रय कराय, ओ मजमुकेर तारिख ये ए मृत्युञ्जयेर दाओयार मूल बटे अनिर्णय । आर मसम्मात जयमाला-चौधुराखीर एजहार, एइ जे आमार एक कन्या, ताहार सन्तान जन्मे नाइ सम्भावना आछे; ओ द्वितीय कन्या पति-वर्तमाना, ताहार गर्भज, अप्राप्त-व्यवहार एक पुत्र आछे, ओ आमि स्वयं

द्वितीय एक पुत्रके दत्तक करियाछि । ए प्रकारे ए आदालतेर पण्डितदिगेर (स्थाने) जिज्ञासा जाय ये जयमालार एजहार सत्य-प्रकारे ऐ चारि आना अंश, किन्वा ताहार मध्ये किछ मृत्युञ्जय शर्मार पाओया डिगारि निमित्ते विक्रय हइते पारे कि ना, ओ ताहार एजहार मिथ्या हअंन प्रकारे ताहार मृत्युर पर ऐ चारि आना हिस्वा ताहार सपत्नीर पौत्र अर्थात् गौरोप्रसादचौधुरि पुत्र तारिणीप्रसादचौधुरिके, किन्वा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक, आर ताहार एजहार (प्रकारे) ताहार दुइ कन्या ओ एक दत्तक पुत्र थाकनेय विषये मिथ्याइ स्वीकार करणेर जवाब बङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त दाखिल करेन इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपत्तश्रीयुतकुटनी - इरामितसाहेबधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशाओधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

मृत्युञ्जयशर्मणः प्रातःत्रयपत्रलिखितमुणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यक-
आदादौदूर्ध्वदेहिकक्रियार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं
तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयाशक्तिकर्यं विना न भवति तदा जय-
मालोपस्थापितवृत्तान्तस्य सत्यत्वेऽसत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितऋण-
परिशोधनोपयुक्तस्य तदोपांशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुमर्हति, न तु स्वेच्छया
स्वामिप्रायेण वा जयमालया कृतस्य ऋणस्य परिशोधनार्थम् । यथा
पतिधने पत्न्याः पतिश्चादादौदूर्ध्वदेहिकक्रियार्थं पतिहृतकुटुम्बभरणार्थम्
परिशोधनार्थं स्वभरणपोषणार्थंसाधने विक्रयेऽशक्तावधिकारस्तथा पुत्रधने
मातुरपि । एवञ्च जयमालामरणोत्तरं स एवांशान्तात्सपत्नीपौत्रस्य
तारिणीप्रसादचतुर्धरिणस्य पूर्वधनस्वामिशिवप्रसादध्रातृपुत्रस्य भविष्यति,
यतः पुत्रधनस्योत्तराधिकारित्वेन मातृसंक्रान्तत्वेऽपि गृहीतपुत्रधनाया
मातृरूपमे पूर्वधनस्वामिपुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं

भवति । तत्र च तद्भ्रातृपर्यन्ताभावे' सुतरां भ्रातृपुत्रस्यैवाधिकारः, सति भ्रातृपुत्रे पितृदोहित्रस्यानधिकारात्, स्वाभिमरणोत्तरमेकस्त्रीकृतस्य द्वितीय-दत्तकशास्त्रलिखितत्वाच्च—इतिवद्देशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-कृतदायभागटीकाक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम् :—

रिक्थमाह श्रुणं दाप्यः—

इत्यादिविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१विवा१७६स) धृतयाशवल्क्यवचनम् (२।५१) । १

पत्नी तद्धनं सुञ्जीतेव, परं न तु तस्य दानाधानविक्रयान् कर्तु-
मर्हति । तदाह-आत्यायनः

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ (कास्मृ० ६२१)

इतिदायभाग, पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

एवञ्च पत्युरौर्दोर्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतम् । अतएव
पतंनो'शक्तावाधानमपि, तत्राप्यशक्ती विक्रयणमपि—इत्यादि दायभाग-
ग्रन्थलिखनम् । (पृ० १६३, ११। १।६१-६२)

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो यन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थ (दामा० पृ०
१५१) लिखितयाशवल्क्यवचनम् ॥ (२।१३५) ५ ।

१ पयन्त०—न्य० ।

२ आश्रयमाही—न्य० ।

३ पत्युर्दोर्ध्व—न्य० ।

४ वसंताना०—न्य० ।

५ दिवते भ्रातरत्न०—न्य० ।

आतृपोत्रस्यामावे पितृदौहित्रस्याधिकारः—इति (दाप)कमसंग्रह-
लिखनञ्चेति (पृ० ६) । ६

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम् ।

३२—यत्र धनिनः सप्तमपुरुषशक्तिमातुलपुत्री विद्येते सप्त तयोर्मध्ये
नीमूतवाहनकृतदायमगमते धनिनो मातुलपुत्रस्यैव धनित्यक्तधने धनिनि-
मृतेऽधिकारः, विशानेश्वरकृतमिताचरामते तु तयोर्मध्ये सप्तमपुरुषशक्ति-
रेवाधिकारी न तु मातुलपुत्र इति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

३३ व्यवस्था दाखिल सदर देमानीका रजिष्टर साहेब श्री
मेघनादन साहेबका हजूर कलकत्तेका कोर्ट आपील आदालतके
ह्याकमान्के सवालके यथाव इति —

श्रीवैद्यनाथपरिणत

सवाल

३३—आगम केतने प्रकार है ? सप्त प्रकार आगम कौन
पुस्तकमे लिखा हो ? मिताचरा किम्बा अन्य कोइ ग्रन्थमे
लिखा हो इति ।

यवाव

शास्त्रोक्त आगम सप्त प्रकार, ओ सप्त प्रकार आगम मिताक्षरा वीरमित्रोदय ओ गैरह ग्रन्थमे लिखा है इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ यवाव दाखिल नाएव रजिष्टर श्रीयुत विष्ट साहेबका हुजुरमो इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रथम सवाल

३४—कुशलरायेर चारि पुत्रेरा ओहार त्यक्त जमिदारी प्रभृतीर अंश सकलेर उपर समान अंशते दखिलकार थाकिया कुशल-रायेर वृतीय पुत्र रामदुलाल आपन स्त्री रत्नादेव्याके राखिया निःसन्तान मरे, ओ ऐ स्त्रीलोक आपन जीवत्तदशापर्यन्त आपन स्वामीर त्यक्त जमिदारी-प्रभृतीर अंशेउपर दखिल थाकिया राजीवलोचन ओ कृष्णचन्द्र ओ रामगोपालेउर पुत्रगण, जयराम-रायेर पुत्र हरिहरराय, ओ राधाचरणेउर चारि पुत्र, राजचन्द्र ओ गयरहेर समन्ते भरिलो । अतएव रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर ताहार स्वामी अर्थात् कुशलराय मजकुरेउर वृतीय पुत्र रामदुलाल-रायेर त्यक्त अंश शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर मध्ये काहाके, की परिमान अर्शे इति ।

द्वितीय सवाल

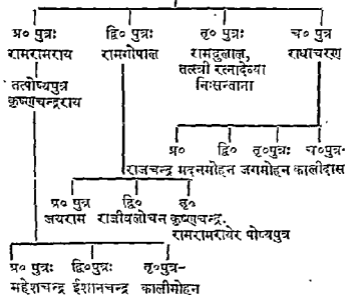
रामगोपालरायेर औरस पुत्र कृष्णचन्द्रके रामदुलालराय पोष्यपुत्रकरण प्रयुक्त कृष्णचन्द्र मजकुर रामदुलालेउर त्यक्तेर

स्वत्वे ताहार स्त्री रत्नादेव्यार मृत्युर पर आपन सहोदर भ्राता राजीवलोचन ओ पितृव्यपुत्रगण राजचन्द्र (ओ) गयरहैर सहित समान मर्यादा राखिवेक, कि ओदारदिगेर सम्पर्के ओदार स्वत्व न्यून किम्वा अधिक हइवेक इति ।

यद्यपि रामगोपालरायेर पुत्र जयरामराय रत्नादेव्यार समझे मरियाथाके, ए प्रयुक्त ताहार पुत्र हरिहरराय रत्नादेव्या मज्जकुरार मृत्युर पर राजीवलोचन ओ गयरह रामदुलालेर भ्रातृपुत्रगणेर न्याय ऐ रामदुलालेर त्यक्त विषयेर अंशे स्वत्वाधिकारी हइवेक, किम्वा रत्नार समझे ताहार पितार मृत्यु हओन प्रयुक्त स्वत्वाधिकारी हइवेक इति ।

मूलपुरुष

कुरालराय



श्रीर्जयतिराम्

जन्माव्यवस्था

प्रभुसमर्पितवशावलीपत्रानुसारेण प्रभानुसारेण चोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र कुशलरायस्य चत्वारः पुत्राः स्वपितृव्यक्तभराजकरस्थावराद्यंश-
चतुष्टयं कृत्वा स्वस्वांशभोगवन्तः स्थिताः, तेषां मध्ये कुशलरायस्य तृतीय-
पुत्रो रामदुलालः स्वपत्नी रत्नादेवी संरक्ष्य अनपत्य एव मृतः, ततो रत्ना-
देवी स्वजीवनकालपर्यन्तं स्वपितृव्यक्तभराजकरस्थावराद्यंशभोगं कृत्वा
रामगोपालपुत्रौ, राजीवलोचनकृष्णचन्द्रसंशकौ, जगदमरायसकैकं पुत्रं
हरिहररायसककं, राधाचरणस्य चतुरः^१ पुत्रान् राजचन्द्रमदनमोहन-^२रग-
मोहनकालिदास.न् संरक्ष्य मृता स्यात्, तदा रत्नादेव्याः स्वामिनोऽर्थात्
कुशलरायस्य तृतीयपुत्रस्य रामदुलालरायस्यांशं समस्तमेकादशधा वि-
भज्य द्वौ द्वौ भागौ राधाचरणपुत्र.स्य राजचन्द्रमदनमोहनरगमोहन-
कालिदासानां प्रत्येकं भवतः, तथैव द्वौ भागौ रामगोपालपुत्रस्य राजी-
वलोचनस्य भवतः, अत्र.श.र.श.नैको भागो वंशावलीपत्रावगतरामरामराय-
दत्तपुत्रस्य कृष्णचन्द्रस्य भवति ।

द्वितीयप्रश्नस्याप्यर्था.द.द.मे.वे.त्तरम्—इतिवद्देशप्रच.लि.व.दा.य.भा.ग.वि-
वा.द.भ.द्वा.र्ण.व.द.त्त.क.च.न्द्र.का.दि.ग्र.न्.पा.नु.सा.रिणी.व्य.व.स्था.त ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि रामगोपालरायस्य पुत्रो जगदमरायो रत्नादेव्यां सत्यां मृतः स्या-
त्, तदा तत्पुत्रो हरिहररायो रत्नादेव्या मरणोत्तरं रामदुलालभ्रा.तृ.पुत्रराजौ

१. शिपा०—२५० ।

२. मदनमोहन—२५० ।

३. चतुर पुत्र.३—२५० ।

चलोचनादिवद् रामदुलालत्यक्तधने अधिकारी न भवति, सत्यां रत्ना-
देव्यां मृतस्य जयरामरायस्य हरिहररायपितुस्तद्वने स्वत्वाभावात् । हरिहर-
रायस्य तु रामदुलालप्रवृत्तत्वेन सस्यु भ्रातृपुत्रेषु भ्रातृपौत्रस्य हरिहर-
रायस्य तद्वनाधिकाराभावाच्च (नाधिकारः) इति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमद्वितीयपञ्चोत्तरप्रमण्यन्तर्गतप्रथमद्वितीयप्रमण्यमेव । अत्र यद्यपि
द्वितीयपत्रेण कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चितं तथापि
वंशावलीनेण कृष्णचन्द्रस्य रामरामरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चित्यैष व्यवस्था
दत्ता । कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चितं भवति चेत्तदा
तन्निश्चयोत्तरं तदुत्तरं दास्यामीति—

श्रीजर्जयतितरा

श्रीदण्डिशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीराजतनुशर्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रजेष्टर साहेब श्रीयुत मेघनाटन माहेवके
हजुर कलकत्ता काट आगल आदालतको हाकिमानके
सत्रालके यथावमो कुशोनामा मै सवाल ।

सवाल

३५—जिले कानपुर साकिनेर एह हिन्दु जमीदार तीन स्त्री
राखितो । ओ ताहार एक छार गर्भ एक पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर गर्भ
ओ एक पुत्र एवं अन्य स्त्रीगर्भ पाँच पुत्र छिलो । ओ जमीदार
मजकुर ओइ सात पुत्र वर्त्तमान राखिया लाकान्तर ह्य । जमी-
दार मजकुरेरे पैठ ह जमोदारी ओइ सात सन्तानेर मध्ये की प्रकार
अंश हइवेक इति ।

सवाल

यदि स्यात् जमीदार मजकुरेर सन्तान सकलइ तीन खीर मध्ये एकेर गर्भजात हइया सकलइ परलोक प्राप्त हय तवे ओइ खीर कोनो सन्तान ना थाकावे ताहारदिगेर पैतृक हिस्सा की रूप वण्टक हइवेक, एवं कोन कोन व्यक्तिके अरिावेक इति ।

यथाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र कस्यचित् कानपुरप्रदेशीयस्य हिन्दुजातेभूस्वामिनस्तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भं एकः पुत्रो द्वितीयस्या अपि गर्भं एकः पुत्र एवमन्वस्या गर्भे पञ्च पुत्राः स्यताः; स भूस्वामी यद्युपरिलिखितमत्तपुत्रान् संरक्ष्य मृतः स्यात्तदा तद्भूस्वामिनः पैतृकं सराजकररूपावरं धर्मं सप्तधा विभज्य सप्तपुत्राणां प्रत्येकमेकैकांशो भवतीति—

तत्र प्रमाणम्—

अत उद्ध्वं पितुः पुत्रा विभजेयुर्धनं समम्—इति मितान्तरा (पृ० ५७५, यासृ० २११४) वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम् (धको० पृ० २१५२) ।

यद्युपरिलिखितभूस्वा(मि)नस्तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भजाताः सन्ततयः सन्त्याः परलोकं गतास्तदा तस्या मृतसन्तानायाः कस्या-

१. तत्प०—न्य० ।

२. भित्तुं कर्त्तुं गते पुत्रा विभजेत् अन्व न्याय-नासृ० ६०७७२ । पितृवृत्ते पुत्रा, विभजेयुर्धनं पितु —नासृ० स० पृ० १०६ ।

३. वीरमित्रोदये वचनमिदं न दृश्यते । सर्वत्र तदर्थकम् विभजेत् इति । विभजेत् अन्व-कण्ठ्य समम्-इति (यासृ० २१११०) धृत्म् ।

४. तिसृणाम्—न्य० ।

(श्रि)द्वर्त्तमानसन्ततेरभावेन तासां सतीनां पैतृकधनांशस्यायं विभागप्रकारः—यद्युपरिलिखितप्रभलिखितसत्तत्पक्षभ्रातृणां पैतृकं (धनं) सराब्करस्थावरमविभक्तं स्यात्तदा वर्त्तमाना ये सापत्नभ्रातरस्ते एव मृतानां सापत्नभ्रातृणां योऽशस्तस्य तत्पुत्रपोत्रप्रपात्रसोदरभ्रातृपर्यन्ताभावे समानांशभागिनो भवन्ति । यदि च ते प्रथम परस्परं विभक्ताः पुनर्विभक्तं धनं मिश्रीकृत्यैकत्रैकधर्मेण संसृष्टाः सन्तः केचन मृतास्तदा येन येन सद् ते संसृष्टाः (सन्तस्ते) स्थितास्तोपामेव^१ तद्धनम्, न त्वसंसृष्टानां पुत्रायभावेऽपि भवति । एतत्पक्षद्वये मृतानां धनप्राहियः सकाशात् तत्तत्तल्यः तत्तन्मा-
तरो^२ वा यावज्जीवमन्नाच्छ्रादनभागिन्यः^३ । यदि च तेषां तद्धनं विभक्तमय-
वोपरिलिखितरीत्या ते संसृष्टा न स्थितास्तदा तेषां पुत्रपात्रप्रपात्ररूपापत्य-
पत्नीदुहितृदौहिन्यपर्यन्ताभावे तेषां माता तत्तदंशभागिनी भवति—इति
कानपुरप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ-
(मिता० पृ० २१६) भृत्याञ्चवल्क्यवचनम् (२१३५) ॥१॥

सोदराणामभावे मित्रोदरा धनभाजः—इति मिताक्षरालिखनम्
(पृ० २२२) ॥ २ ॥

संसृष्टिनस्तु संसृष्टी—इत्यादि तद्द्यूतं, मिता० पृ० २२५) वाश-
वल्क्यवचनम् (२१३८) ॥ ३ ॥

१. ०णामंशो तत्तत्—व्यप० ।

२. ०मेकतुद्धनं न चा पुत्रायभावे भवति—व्यप० ।

३. ०पत्नी माता वा—व्यप० ।

४. ०भागिनी—व्यप० ।

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनज्ञातं विभक्तप्रातृतीविषयम्-इतिमितःक्षप-
लिखनम् (मिता० पृ० २१७) ॥ ५ ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरेशराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशम्भेऽद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रजिष्टर साहेब श्रेयुत मेघनाटनसाहेबका
हजुर कलकत्तेका सदर कर्मसनरके आयुत राससाहेब सदर
देमानी आदालतीके पञ्चम हाकिम(के) सवालके यवाव ।

: ३६-श्रीयुत रजिष्टर मेघनाटन साहेबेर हते सवाल-
प्रसादसिंह नामे एक व्यक्ति राजपूतेर औरसे धानक जाति
खीर गर्भ जन्मियाछे । इहाते यद्यपि ताहार पितार सहित ताहार
मातार विवाह ईश्या ना थाके, खोरपोष पाथोनेर योग्यता
राखे. कि ना-एइ सवालोर यवाव हिन्दुस्थानि परिडित लिखिया
दन इति ।

यशावच्यवस्था

यदि कश्चित् प्रसादसिंहो राजपुत्रबीजतो धानकजातीयस्त्रीगर्भे उत्पन्न-
स्तत्र यद्यपि तत्पित्रा सह तन्मातुर्विवाहो नाभूत् तथापि अन्न-व्युत्पादनं
प्राप्तुं शक्नोतीति ।

श्रीज्जयतितराम

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एइ व्यवस्था दाखिल रजिस्टर श्रीयुत मेघनाटन साहेबेर
हजुरे-

सभोयाल

३७—यद्यपि त्रिहोत जिला निवासी कोन व्यक्ति भ्रातृपुत्र-थाके से व्यक्ति दीहितके कृत्रिम पुत्र करिते पारे कि ना ?

यदाव

तीरभुक्तिप्रदेशीयेन केनचिदनपत्येन तद्देशचलितकेशवमिश्रकृतद्वैत-परिणिर्द्भद्रधरोपध्यापकृतशुद्धविवेकादग्रन्यविवेचनया मनुवचनानुसारेण तद्देशीयपूर्वापरव्यवहारानुसारेण च सत्यपि भ्रातृपुत्रे दीहितः कृत्रिमपुत्रः कस्यु शक्यते इति—

श्रीज्जयतिराम्
श्रीमधनायत्रिणेण

एइ व्यवस्था दाखिल श्रीयुत रेजेष्टर भेकनटन साहेवेर इजुरे ।

सभोयाल

३८—एक विधवा खिलोक आपन पतिर अनुमतिते शास्त्रोक्त-विधि मत एक बालकके दत्तक करिलेक । ए प्रकारे ऐ खीर जीव-इशाते ताहार मृत पतिर धन पाबोनेर सत्वाधिकारी ऐ दत्तक ह्य कि ना ।

यदाव

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रप्रतिरूपमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्येकया विधवाया खिया पत्यनुमत्या शास्त्रोक्तविधिना एको बालको दत्तकः कृतः स्यात्तदा तस्यां क्रियां नीवन्त्यामपि तस्या मृतपतिधनप्राप्तेः

स्वत्वाधिकारी स एव दत्तकः पुत्रो भवति. शास्त्रोक्तमुख्यगौणपुत्रागामेवं
पौत्रप्रपौत्राणां वाभाव एव पत्न्यादीनामधिकाराभिधानात्—इति मिताक्षरा-
दिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

एवं मुख्यगौणपुत्राननुक्रम्येतेषां दायग्रहणो क्रममाह—

पिण्डदोऽशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः—(यास्मृ० २।१३२)

इति—मिताक्षरालिखनम् (पृ० २१४) ॥ १ ॥

मुख्यगौणसुता दायं गृह्णन्ति—इति निरूपितम् । तेषामभावे सर्वेषां-
दायादक्रम उच्यते । पत्नी द्वाहतरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—(यास्मृ०
२।१३५) इत्यादि मिताक्षरादग्रन्थलिखनम् (पृ० २१६) ॥२॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीदरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथामश्रण

श्रीगमतनुशम्भविद्यावागीशेन

एव व्यवस्था दाखिल इन्द्रेजी मिशील

सभोयाल

३८—ये मंफर्डमाते ऐ सभोयाल कग गियाछे—आजमिर देरोर
सम्पर्कीय छिल । जिहासा जाइतेछे ये बङ्ग देश कायभाग मते
दत्तक पुत्रेर सत्वे ऐ आज्ञा सिद्ध बटे, कि ना । यदि सिद्ध ना हय
नाहार हेतु घचन प्रमाण सम्बलित निवेदन करेण इते । २६
शेतम्बर सन १८२६ इंद्रेजि ।

यत्राव-व्यवस्था

वङ्गदेश चलितदायभागादिग्रन्थमते दत्तऋषुत्रस्य स्वत्वे इयमेव व्यवस्था प्रमाणं भवतीति ।

श्रीर्जयतितराम
श्रीवचनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावार्गशेन

४०—सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अप्राप्त-व्यवहार शिवनाथघोषेर पत्ते अद्विवनवामवसुर' नामे भानुमतीदास्यार मकह'माते इङ्गरेजि १८२७ शालेर ७ फिघरओरि मासेर रोवकारिर लिखित पत्रस्य दुइ ग्रहर पत्येन्ता जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयालात, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वङ्ग देशनिवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तालुक हइते आपन खांके किछु भूमि पृथक करिया दिया ओ खांके ताहार उपर दखिल कराइया ताहार कएक बत्सर परे ऐ खांके ओ ताहार गर्भज तिन पुत्र राखिया मारियाछे । पश्चात् ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन खां राखिया मरियाछे । तपरे प्रथम मृत व्यक्तिर खां वाकी दुइ पुत्र राखिया मरियाछे । जिज्ञासा करा जाइतेछे ये ऐ भूमिते मृत पुत्रेर खांर पत्येशेर दाओया अरौं कि ना ? ॥ १ ॥

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री ऐ पुत्रेर मृत्युर पूर्व किम्बा ताहार पर ऐ सम्यक भूमिर हेवानामा वाकी दुइ पुत्रेर एक

जनार पुत्रके लिखिया दिया थाके, ओ गृहीताके हेवार' भूमिते दखिल कराइया थाके ए प्रकार हेवा सिद्ध ओ दात्रोर अन्य पुत्रदिगेर स्वत्वनाश बोधक बटे कि ना ॥ २ ॥

तृतीय सञ्चोयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिर ऐ भूमि पृथक करिया देओन काल पर्यन्त केवल ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन, अर्थात् गृहीतार पिता, सन्मिया थ के; ए प्रकारे शाखेर आज्ञाते उत्तराधिकारित्व स्वत्व ओ हेवा सिद्ध तार विषये विशेष आछे कि ना ? ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतिराम

यवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरण द्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीइश भित्ताहेयधर्माधिकरणलिखितप्रश्नरूपेणप्रथमवलोक्य यादृशमोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र बह्वदेशीयः कश्चन हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयतराज-करस्यावरात् स्वस्मिन्ने कश्चिद्भूमिं पृथक्कृत्य दत्त्वा तदुरति तस्याश्च भोगं कारयित्वा कतिपयवत्सरानन्तरं तां स्त्रियं तद्गमनांस्त्रान् पुत्रांश्च संरक्ष्य मृतः, पश्चात्तेषां प्रपत्न्यां मध्ये कश्चिदेकः पुत्रः स्वस्मिन्ने संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं प्रथममृतव्यक्तोः स्त्री त ववशिष्टी द्वौ पुत्रौ संरक्ष्य मृता स्यात् तत्र तद्भूमौ मातरि जीवन्त्यां मृतस्य पुत्रस्य स्त्री पत्न्यां कलायेत्वा प्रपत्नौ नर्हति । मातरि मृतायामेव विद्यमानानां पुत्राणां पुत्रत्वेन मृतुघने स्वस्वतास्या

१ हेवार—व्यव ।

२ पत्न्यां—व्यव ।

३ मातं—व्यव ।

दायत्वं भवति, जीवन्त्याञ्च मातरि मृतस्य मातृधने स्वत्वोत्पत्त्यभावेन दायत्वाभावात् तत्स्त्रियाः सुतरां तदनानधिकारित्वात् इति ।

अत्र प्रमाणम्—

पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्त्वाम्युपरमे' यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः - इति दायभागग्रन्थलिखितम् (पृ० ५) ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रथममृतव्यक्तः स्त्री तत्पुत्रमरणात् पूर्वं तदनन्तरं वा तस्मात्-
वर्षस्या एव भूमेर्दानपत्रमवशिष्टयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एकस्य पुत्रात्
लिखित्वा दत्त्वा महीतुर्दानकृताभूमौ भोग कारितयती स्थ.त्तदेत.दत्तादानं सिद्धं
भवितुम्, एवं दान्या अन्यपुत्रादीनामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वन.शबोधकञ्च
भवितुं न.ईत.यतो भर्तृदत्तस्यावरात्मकसोदायकस्त्रीधने ।स्त्रिया दानाद्यनधि-
कारस्य विशेषतो द.यभ.गा.दग्रन्थ.लिखितत्वेनोपरि ल.खत.ववादा.स्पदीभूब-
धनस्य भर्तृदत्तस्थ.वरात्मकसोदायिकस्त्रीधनत्वमात् ।

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सोदायिकं स्मृतम्—इत्यादि दाय-
भागादि (दामा० पृ० ७६, ४।२२, ग्रन्थलिखितकाल्यायनवचनम्
(कास्मृ० ६०१) ॥ १ ॥

सोदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्वावरेष्वपि—इति तद्वत्, दामा०
पृ० ७६, ४।२२) काल्यायनवचनम् (कास्मृ० ६०५) ॥ २ ॥

स्वावरेऽपि भर्तृदत्तगात्रे स्त्रिया दानाद्यनधिकारः । यथाह नारदः—

भर्ता श्रीतेन यद्वत्तं स्त्रिये तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।

सा यथाकाममश्नीयाद् दद्यात् वा स्थावरादते ॥—इत्यादि दाय
भागग्रन्थलिखनम् (पृ० ७६ ७७, ४।२३, नास्मृ० पृ० ५६) ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि प्रथममृतव्यक्तिकर्तृकतद्भूमिपृथक्करणदानकालपर्यन्तं तेषां
त्रयाणां पुत्राणां मध्ये केवलमेक एव अर्थाद् ग्रहीतुः पितृनोत्पन्नोऽभूद्
एतस्मिन् प्रकारे सत्यपि शास्त्राज्ञायामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वविषये एव दान
सिद्ध्यसिद्धिविषये च विशेषो नास्ति—इति 'वङ्गदेशचलितदायभागादि
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामतनुशर्माविद्यायांगोशेन

४१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर, इंगरेजि
१२२७ शाल २४ माहे आपरेल मतालक (मताबक) वाङ्गला
१२३४ शाल १२ माहे वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मज-
दुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर वैठके ।

नवकिशोरदास

सायेल

सायेलेर एफिल मुनसी गोलाम यतुल हाजीर हइल । साये-
लेर सओयालेर लिखित निवेदनेर अनुमोदने ओ दस्तावेजातेर
दृष्टे सायेलेर दखली स्थान हइते शरवराद्कार महकुफी ओ
अन्य २ विषय सम्बलित ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर

प्रार्थनाय ऐ सञ्चोयाल ओ जंगनाथ चक्रवर्तिर नामिक मक्कार-
नामा ओ ऐ उकिलेर, नामिक थोकालतनामा ओ इंगरेजी
१८२६ सालेर २० शेतम्बर मासेर हञ्चोया जिला मयमनसिहेर
आदालतेर रोषकारिर नकल ओ सन हालेर जनओरि मासेर
२०।२७ तारिखेर लिखित जाहाङ्गीर नगरेर कोट आपीलेर
रोषकारिर नकल दुइ केता सम्बलित, जे हाल मासेर २१ तारिखे
दाखिल हइयाछिल, अद्य पढा गेल । तदपरे सदासुखपरिडत
उकिल सञ्चोयालेर शामिल दस्तावेजातेर दृष्टे सरवराहकार
वहालीर, प्रार्थनाय एक केता सञ्चोयाल रामशङ्करराय ओ
शोनारामसरकारेर नामिक मक्कारनामा ओ आपन नामिक
थोकालतनामा ओ वाङ्गला पाठ ओ अचर वाङ्गला १२३१
शालेर १३ पौष मासेर लिखित नवकिशोरदासेर लिखिया
देया एक केता एकरारनामांर नकल सम्बलित अप्राप्त-व्यवहार
गोपीमोहनदासेर माता राजेश्वरिदासीर पक्ष हइते दाखिल
करिलेक दृष्टि आइल । ओ गुनशी हयदर आली उकिल हाजिर
हइया रामकिशोररायेर तरफ हइते ताहार हिस्या क्रोक हइते
खालाश पाओनेर मजमुने एलाका जाहाङ्गीरनगरेर कोटेर
हाकिमदिनेर हुकुम बहालिर प्रार्थनाय अन्य धिषय सम्बलित
एक केता सञ्चोयाल मये रघुनाथरायेर नामिक मक्कारनामा
ओ आपन नामेर थोकालतनामा दाखिल करिलेक, पढा गेल ।
तदपरे सायेलेर उकिलेर स्थाने जिज्ञाशा गेल जे आट भ्रातार
मध्ये चारि भ्राता जे आपन स्त्री राखिया तिःसन्तान मरियाछे
से चारि भ्रातार नाम कि छिल । जबाब दिलेक जे शिवमोहन
ओ ब्रजकिशोर ओ शोभाराम ओ कुञ्जकिशोर । ताहार मध्ये
कुञ्जकिशोर स्त्री ओ शिवमोहनेर स्त्री मरियाछे, ओ शोभारामेर
स्त्री ओ ब्रजकिशोर स्त्री वर्तमान आछे । जाना गेल जे नवकिशोर

दासेर सश्रोयाले लेखा आछे ये आमार भ्राता गौरकिशोरदास
ससार त्यग हइया आपन अस्थावर वस्तु आपन स्त्री राजेश्वरी
दास्याके श्रो स्यावर वस्तु आमाके दिया, वैराग्य धर्माश्रम
करिया दशान्त र हइया बहु काल परे पुनरायं आपन वाटीते
आसिया। ततुसालीन गोपीमोहनदास नामे एक पुत्र
राजेश्वरीदास्यार गर्भे जन्मियाछे । कि तु शास्त्रमते मसम्मा
मजकुरार ओ ताहार पुत्रर सत्व मिलकियते रहे नाइ इति ।
एमते हुकुम हइलो जे, ए अदालतेर, पण्डितदिगेर स्थाने दुइ
सश्रोयाल करा जाय । एक एइ ये यद्यपि ऐ नवकिशोरदासेर
एजहार सत्य हय, मन्यत हआया नाय राजेश्वरीदास्यार ओ
ताहार पुत्र गोपीमोहनदासक गौरकिशोरदासेर मिलकियत
अर्श कि ना ?

द्वितीय, एइ ये सहोदर आठ भ्रातर मध्ये दुइ भ्रातर
नि सन्तान दुइ स्त्री जे अद्याप वत्तमान आछे ताहारदिगेर
पतित्यक्त दुइ अष्टम अशेर सत्वाधिकारिणी वटे कि ना । उचित
ये शनिवार पर्यन्त वज्रदशेर शास्त्र नुसारे एइ दुइ सश्रोयालेर
जवाब दाखिल करण । पण्डितदिगेर व्यवस्था दष्ट उचित हुकुम
देया जाइवेक ।

जवाबव्यवस्था ।

एतद्वर्मा धरण्याद्वितीयाधपातश्रीयुवकुर्त्तनीदशभिरयादेवधर्माधि
करणलि खतवचनपनान्तगतमपूनप्र उरूपत्रमवल कथ य दशवाधी प्र वल
दनुस रेणोत्तर लिखते ।

प्रथमप्रभत्योत्तरम्—

यद्यपिनवकिशोरदासोपस्थागतवृत्तान्तगतनवकिशोरदाससम्प्रदान
कगौरकिशोरदासक वृत्तवस्त्व रशीभूतस्थ वरधन वपयुक्त स्वस्तीरात्रेभरी

दासीसम्प्रदानकगौरकिशोररायकृतकतत्वस्वत्वास्पदीभूतस्थावरपुनविपयक
दानं सत्यत्वेन मन्यमानं सन्निरुपाधिकं स्यात्तदा राजेश्वरीदास्यास्तत्पुत्रस्य
गोपीमोहनदासस्य वा गौरकिशोररायकृतकनवकिशोरदाससम्प्रदान-
कत्वस्वत्वास्पदीभूतयनान्तगतनिरुपाधिदानकृतस्थावरवस्तुषु जाधिकारः ।
किन्तु प्रतिलिखितराजेश्वरीदासीसम्प्रदानकनिरुपाधिदानकृतास्थावरवस्तुषु
राजेश्वरीदास्या भवत्येवाधिकारः, न तु तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य ।
एवं यद्यप्युपस्थापितगौरकिशोररायकृतकसंसारत्यागस्य वैराग्य-
धर्माभ्यणवृत्तान्तस्य च सत्यत्वेन मन्यमानत्वेऽपि राजेश्वरीगर्मजातस्य
गोपीमोहनदासस्य गौरकिशोररायोरस्य तत्कृतोपरिलिखितदानविपयीभूत-
स्थावरास्थावरारितिकतत्वस्वत्वास्पदीभूतस्थावरास्थावरवस्तुषु तत्त्वत्वो-
परमेऽधिकारः । यदि च उपरिलिखितं दानं घोषाधिकं स्यात्तदा तदुपाधि-
निश्चयं विना घोषाधिदानकृतस्थावरास्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्यास्त-
त्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य वा अधिकारो भवति न वेति निश्चयो भवितुं न
शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्याय्येष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वर्धनस्य वै ॥ इति दायभागादि-

(दामा० पृ० ३५, २।३१) अन्यधृतनारदवचनम् (नास्मृतं० पृ०
१५७, १४।४२) ॥ १ ॥

उत्पत्येवार्थं स्वामित्वं लभेत इति आचार्यो इति गोतमवचनम् ।

(गौष० १०।४८) । तदपि पितृस्वत्वोपरमेऽहजत्वस्य स्वामित्वहेतुत्वेनोत्प-
त्तिमात्रसम्बन्धेनान्यसम्बन्धाधिक्येन जनकधने पुत्राणां स्वामित्वात्तदने-

१. ० भूतं—व्यप० ।

२. गोपी०—व्यप० ।

३. ० दानं—व्यम० ।

४. स्वानंशान्—नास्मृतं ।

५. सर्वमीशास्ते—नास्मृतं० ।

६. ते—नास्मृतं० ।

७. ० र्थं स्वामित्वान्त्वम—व्यप० ।

८. ० त्वाद्गन्तुं—व्यप० ।

९. ० जत्वहेतुत्वेनोत्पत्तिः—व्यप० ।

पुत्रो लभेत, नान्यः सम्बन्धीत्याचार्या मन्यन्ते इत्यर्थकम्—इतिदायवत्त्व-
लिखनम् (पृ० २) ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

शदाना सहोदरभ्रातृणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोरनपत्ये द्वे लियौ विद्यमाने
स्याताम्, तयो स्वस्वपत्नित्वात्काष्ठभ्रातृसाधारण समुदायधनान्तर्गतस्वस्वपति-
योग्याशेऽधिकार—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वविवादमहाणव-
विवादाणवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चेव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादि-
(दामो) पृ० १५१, १५१, १५१)ग्रन्थभृत्याश्वत्थवचनम् (२, १३५)
॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्याभागीशेन

४२—रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इङ्गरेजी १५२७
शाल तारिख १ मैह भतावक १६ माह, वैशाख सन १२३४
धान्नला रोज मङ्गलवार, आदालत मजबुरार द्वितीय हाकिम
श्रीयुत घुर्टनी इशमिट साहेवेर बैठके—

शङ्करदास—

शायेल ।

शायेल हाजिर हइलो। हाल सनेर २६ मार्च मासेर लिखित
आजिमावादेर कोर्ट सरकोटेर एक बेता रिटरन ताहार सम्बलि-
तेर रोवकारि ओ मर्दमार कागजात समेत पहुँचिया ए आदा-
लते दारिल हओया सओयाल आदि सहित अय पढोगेल ।
हुकुम हइलो ये ए आदालतेर परिडतदिगेर स्थाने सओयाल
कराजाय ये यद्यपि मन्यत हओया जाय ये शङ्करदासपटन

ओयार सायेल ४४ टाका नगद किम्बा ५० टाकार एक केता तमरुसुक रामचरणपटनओयार स्थाने लिखाइया, लइया आपन स्त्री मसम्मार्त रघुवंशीयाके ऐ रामचरण स्थाने समर्पन कगिया थाके, ओ रामचरण ऐ, स्त्रीके आपन स्त्रीत्व व्यवहारे आनियाथाके ओ स्वयं ऐ स्त्री आपन आशल पतिर दौराल्म्येर एजहारे रामचरणपटनओयारेर निकट थाकिते सम्मत थाके । ए प्रकारे शङ्करदास शायेलेर निमित्ते स्वामित्व स्तृत्व बाकि रहियाछे कि ना । आर ऐ स्त्री ऐ रामचरणेर निकटे रहिवेक, किम्बा आशल पति तलब करण प्रकारे, सम्मत किम्बा असम्मत हय, पुनराय आशल पतिर निकट जाइवेक । उचित ये फोजदारिद कागजातेर मजमुन विवेचना करिया ए विषयेर जवाब पश्चिम देशेर शाखानुसारे शनिवार पर्यन्त दाखिल करेन । एत कालीन उचित हुकुम देया जाइवेक इति—

श्रीर्जयतिरामम्

जनाव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटनीदशमिटणाहेवधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितफौजादारिसकधर्माधिकरणीयपत्राणि चावलोक्य विविच्य च यादृशचोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

यद्यथिशङ्करदासपटनओयारेण चतुश्रत्वारिंशद्राजतमुद्रा किं वा पञ्चाशद्राजतमुद्राणामेकमृणालेख्य रामचरणपटनओयारसकाशाल्लेखयित्वा गृहीत्वा स्वस्ती रघुवंशीयानाम्नी तद्रामचरणस्थाने समर्पितेति मन्यमान स्याद्, एव रामचरणपटनआयारो रघुवंशीयया सह स्वस्तीनद्

१ ० रणोर-व्यप० ।

२ किम्बा—व्यप० ।

३ ०कं नय०—व्यप० ।

व्यवहारं कृतवान् स्याद्, अथ च सा स्त्री स्वकीयपाणिग्राहकपतिदौरात्म्योप-
स्थापनेन रामचरणपटनश्रोयारस्य सन्निधौ स्थातुं सम्मता स्यादेतादृश-
प्रकारे सत्यर्थिनिः शङ्करदासस्य पतित्वप्रयुक्तस्वत्वमस्त्येव; एवं सा स्त्री
स्वपतिकृताहाने सति तत्सन्निधौ स्थातुमसम्मता सम्मता वा पुनः स्व-
कीयपाणिग्राहकपतिसन्निधौ गन्तुं योग्या भवति, यतः प्रभुसमर्पितफौजदारी-
संश्लेषधर्माधिकरणीयपत्रजातविवेचनया अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वस्त्रीविक्र-
यस्य दानस्य वानवगमात्, प्रत्युत रत्नगोपालनामकसाक्ष्युपस्थापितवृत्ता-
न्तेनोपरिलिखितश्रृणुलेख्यञ्च अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वीकाराभावावगमात् ;
एवं शुवंशीयोपस्थापितवृत्तान्तेन तस्या रामचरणपटनश्रोयारस्थानस्थितौ
पतिदौरात्म्यमात्रस्यैव प्रयोजकत्वावगमात्, अथ च रामचरणपटनश्रोयारोप-
स्थापितवृत्तान्तेन तस्याः पतिभगिनीपतित्वसम्बन्धेन तत्सन्निधानस्थित्यव-
गमाच्च । एवं रामचरणपटनश्रोयारसंश्लेषधर्मिनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापित-
वृत्तान्तेनार्थिशङ्करदासकर्तृकरामचरणसकाशात् चतुश्चत्वारिंशद्राजत-
मुद्रामहणपूर्वकमेताश्चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा मया गृहीता इयं शुवंशीया-
नाम्नी स्त्री त्यक्तत्वर्थकलेख्यदानं प्रतीयते । परन्तु तल्लेख्यस्य प्रभु-
समर्पितपत्रेष्वदशनेन मुद्रामहणस्यापि सन्देहः । यद्यपि मुद्रा गृहीतास्तदा
तत्पत्रजातनिर्दिष्टश्रृणुलेख्यस्य किमावश्यकत्वमिति । यदि च प्रत्यर्थिराम-
चरणनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तस्यैव सत्यत्वेन स्वीकारस्तथाप्येतादृश-
दारविक्रयस्य, शास्त्रानुसारेण व्यवहारानुसारेण च सिद्धिर्भवितुं नार्हति ।
अथ च यदि कश्चित् शास्त्रव्यवहारविरुद्धं कर्म करोति तं दण्डयित्वा राजा
तत्कार्यमवश्यं परावर्त्तनीयम् । तस्माद्रामचरणसकाशात् गृहीता
शुवंशीयानाम्नी स्त्री अर्थिना शङ्करदासेन स्वभर्त्रा यत्नतो भरणीया-इति
पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखस्मृतिचन्द्रिकादिप्र-
न्यानुसारिणी व्यवस्था—

१ °वाने०—५५० ।

२ °लेख्यश्च—५५० ।

३ °दत्तवि०—५५० ।

अत्र प्रमाणम्—

निःक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्वं चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्यो यचान्यस्मै प्रतिश्रुतम्—इति मिताक्षरा (पृ० २४४) वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिका (पृ० १६१) व्यवहारमयूखादिग्रन्थलिखित-नारदवचनम् (नामसं०, पृ० ८६ ५।४, ५) । १ ।

गृह्णात्यदत्तं यो मोहाद् यच्चादेयं प्रयच्छति ।

दण्डनीयायुभावेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता—इति (मिता० पृ० २४६; २।१७६) वीरमित्रोदय (वीमि० पृ० ३६३) स्मृतिचन्द्रिकादिग्रन्थ- (स्मृच० पृ० १६४) धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ६१, ५।११; नास्मृ० १४०, ७।१२) । २ ।

अदत्तादेयमहणाद् गृहीतस्य परावर्तनमपि कार्यमिति गम्यते— इति वीरमित्रोदय (पृ० ३६४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

रक्षेत् कन्यां पिता विना पतिः पुत्रास्तु वादर्धके ।

अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः ॥

इति मिताक्षरा (पृ० २५) वीरमित्रोदयादि (वीमि० पृ० १५०) ग्रन्थलिखितायाशवल्क्यवचनम् (१, ८५) ४ ।

पिता रक्षति कीमारे भर्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्यावरे पुत्र न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥

इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतमनुवचनञ्चेति (भस्मृ० पृ० ३४६) ५ ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१ निःक्षेप पुत्रदार च—नास्मृ सं० ।

२ सर्वस्व धात्रं—व्यप० ।

३ गृह्णत्यं—व्यप० ।

४ लोभाद्—मिता० ।

५ यच्चा—नास्मृ० सं०, यच्चादेयं—व्यप० ।

६ अदेयदायको दण्डमस्तथादत्तमतीक्षक—नास्मृ०, तथादेयस्य दायक—नमसं० ।

७ गृहीतस्यपरावर्तनमपि महीक्षिता कार्यम्—स्मृतिचन्द्रिकायाम् ।

८ पुत्राद्य—१।४ स्मृ० ।

९ मिताक्षरायान्तु-क्वचिदपि स्त्रीणां नैव स्वातन्त्र्यम्—इति लभ्यते ।

४३—आदालत आपिल एलाके अजिमावाद—

शहर देओयानी आदालतैर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल-जवाब—यद्यपि एक व्यक्ति गयाओयाल ब्राह्मण आपन सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर नामे वाटीर दानपत्र, ये ताहार नकल पाठाने याइतेछे, एइ प्रकार करियाथाके ये आपन जीवदशा पर्यन्त ऐ वाटीते थाकिया आमार मृत्युर परे उहारा आमार क्रिया कर्म करिवेक, ओ सहोदरा भगिनी, ओ ताहार पति दातार पूर्वै मरियाछे, ओ ताहार परे दाता-मरियाछे, ए प्रकारे शांखानुसारे ऐ जायगा सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर उत्तराधिकारिदिगेके अशविक, किम्वा दातार उत्तराधिकारिदिगेके इति । शन १८२७ इङ्गरेजि तारिख ५ माहे मार्च मतावक २२ माहे फाल्गुण सन १२३४ फशली लेखा गेल—

रोवकारि मिशील आदालते दे(ओ)यानी सदर इरेजी सन १८२७ साल तारिख १५ मेइ मतावक— ...

लच्छिराम—

आपीलाएट—

मंशर्मात आनन्दिवाइ—

रप्पाडएट—

शन हालेर ५ मार्च मासेर लिखित अजिमावादेर प्रबनशन कोटेर एक केता सार्टापकिट ताहार सामिलेर रोवकारि आदि सहित पहुँचिया अद्य दृष्टि आइल । हुकुम हइल ये पण्डितदिगेर स्थाने जवाब शनिवार पर्यन्त दाखिल कराइया दृष्टि करा जावे इति ।

इरेजी शन १८२७ शालेर २६ मेइ व्यवस्था दाखिल हइया पाटन पाठानेर हुकुम सारद हइल—

श्रीजयतिराम

जवाबव्यवस्था

एतदमर्माधिकरणद्वितीयापिपठि श्रीसुतकुटनीदशमिदसादेवधर्माधिकरणलिखितसप्तविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयपञ्चदशदिवसीयविचार

पत्रलिखिताशानुसारेण .. तत्समर्पितपाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोटापीला-
ख्यधर्माधिकरणीयविचारपत्रादिनिविष्टप्रश्नपत्रमेवं दानपत्रप्रतिरूपपत्रञ्चाय-
लोक्य विविच्य च यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यद्येकः कश्चिद् गयावालब्राह्मणः स्वकीयसहोदरभगिनीनामकमेवं
तत्पतिनामकञ्च वाच्या दानपत्रमेतत्प्रकारेण लिखितवान्—स्वजीवन-
पर्यन्तं तस्यां वाद्यामहं स्थास्यामि; अस्मन्निधनानन्तरं तावत्सक्रियाः
करिष्यतः, एवं दातरि विद्यमाने सति तौ जायापती मृतौ स्यातामेवं तदनन्तरं
दाता मृतश्चेत् एतत्प्रकारे सति उपरिलिखितदानपत्रलिखितरीत्या शास्त्रा-
नुसारेण सा वादी दातुः सहोदरभगिन्यास्तत्पत्युश्चोत्तराधिकारिणामेव
भवति, न तु दातुरुत्तराधिकारिणाम्; यतो दानपत्रे श्रीविष्णुपदे सहोदर-
भगिनीतत्पत्युभयसम्प्रदानकं कुशोदकग्रहणपूर्वकसङ्कल्पकरणपूर्वक-
वाद्यादिसर्वस्वत्यागात्मकधर्मार्थदानं मया कृतमिति दात्रा लिखितम् ।
एतादृशवैधदानेन तदनन्तरकाल एष दातुः स्वत्वनिवृत्तिः, ग्रहीतुः स्वत्वो-
त्पत्तिश्च भवति । एवं दात्रा सम्प्रदानभूतयोस्तयोर्जायापत्योः ससन्तानयोः
स्वायत्तीभूतग्रहादिनिष्ठावत्तत्त्वसम्पादनमपि कृतमित्यपि लिखितम् । अथ च
दानादिना नद्धे तद्ग्रहे तौ सम्प्रदानभूतौ जायापती दानपत्रानुसारेण
तिष्ठतामायत्तत्वञ्च कुरुताम्, अस्मत्स्वत्वमन्नावधि किञ्चिदपि नास्तीति-
दानपत्रलिखनेन दातुः स्वत्वविनाशस्य सम्प्रदानभूतयोस्तयोः स्वत्वस्य च
दृष्टीभूतत्वेनावगमात् । अतएव दानकृतवाच्यां यावज्जीवं दातुः स्थितेः
सम्प्रदानकर्तृकदातुः श्राद्धार्थौर्ध्वदेहिकक्रियाकरणभावस्य च सम्प्रदान-
स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकोपाधिलं न सम्भवति, उपरिलिखितप्रकारेदानस्य
वैधत्वेन धर्मप्रयोजनकत्वेन मोगद्वारा पूर्णतया सम्पन्नत्वेन च शोपाधित्वा-
र्मावात्—इति पाटलिपुत्रप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरायोरमित्रोदयव्यवहार-
मंयूखादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देशे काल'उपायेन द्रव्यं श्रद्धासमन्वितम् ।

पात्रे प्रदीयते यत्तत् सकलं धर्मलक्षणम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
(मिताक्ष० ३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (११६) ॥ १ ॥

प्रदीयते यथा न प्रत्यावर्त्तने तथा परस्वत्त्वावसानं त्यज्यते ।

एतद्धर्मस्योत्पादकम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० ३) ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥ ३ ॥

स्वामी रिव्यक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु (गौध० १०।३८) ।

ब्राह्मणस्याधिकं लब्धम्—(गौध० १०।३६) ।

ह्यत्रियस्य विजितम् (गौध० १०।४०) ।

निर्विष्टं वैश्यशूद्रयोः (गौध० १०।४१) इति मिताक्षरा (पृ० १३५)

वीरमित्रोदयव्यवहारमयूखा (व्यम० ८६ उक्त०) दिग्रन्थधृतगौतमवचनम् ॥४॥

तत्र च हिरण्यवस्त्रादाबुदकदानानन्तरमेवोपादानादिसम्भवात्—

इत्यादिमिताक्षरालिखनम् (पृ० २४१) ॥ ५ ॥

श्रीर्जयतिरामम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४४—रोवकारि मिसिल आदालत देशोयानि सदर इक्करेजि
१८२७ साल तारिख १४ माहे जुन मतावक वाङ्गला १२३४ साल
१ आपाठ रोज घृहस्पतिवार आदालत भजकुरार द्वितीय हाकिम
श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर वैठके—

राममोहनघोष वनामे रामधनराय आगयरह
शायेलेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजिर हइल । सन हालेर
३१ मेइ मासेर हथोया रोवकारिर लिखित पञ्चम हाकिमेर
हुकुमानुसारे खास आपीलेर सओयाल ओ गयरह तत्तम्पर्काय

कागजात आमार बैठके उपस्थित हइया दृष्टे आइल । उभयेर एक धारे जाना जाइतेछे ये विरोधि लाट अर्थात् लाट परला वर्द्धमानेर काछारि मोकामे रासयात्रा दिवस निलाम हइया छे । मुर्देदिगेर एजहार एइ रूप जाना चाहतेछे ये आमरा रासयात्रार दिवस वाकि टाका जमिदारेर आगलाल निकट निया-छिलाम, जमिदारेर आमला रासयात्रार दिवस हओनेर ओजरे से दिवस वाकीर टाका लओनेर स्वीकार ना करिया जबाव दिलेक ये कल्य आइस, लओया जाइवेक, ओ आमरा गेले परे यात्रार दिवस हओनेओ महालेर द्वितीय वन्दवस्त करिलेक, आर इङ्गरेजि ८१६ शालेर अष्टम आइनेर द्वादश धाराते हुकुम आछे-निलाम, अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, ये एइ आपन निर्दिष्ट हओयार पूर्व हइया थाके, तत्सम्पर्कओ ऐ डाँडा ये ऐ आइनेर एकादश धाराते लेखाआछे, निलाम-अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, पूर्व प्रसिद्ध ओ बिना शठताय ओ देश व्यवस्थार मत हओन नियमेओ चर्चितेक । यथा सन्देह हइतेछे ये शास्त्रानुसारे एइ प्रकार कार्य रासयात्रार दिवस सिद्ध ना हय, विशेषतो रासयात्रार दिवस कहिया वाकीर टाका लओने अस्वीकार हइया, आगत कल्य ताहा लओनेर करार करिया, वाकिदारदिगेक विदाय दिया, परे सेइ दिवस रासयात्रार दिवस हओनेओ वाकि दाविर हेतुते महालेर द्वितीय वन्दवस्त ये वाकिदारदिगेर असाक्षाते करायाय सिद्ध रहिवेक ना । एइ प्रयुक्त ए विषये बङ्गदेशेर शाखेर जिज्ञासा करण आवश्यक हइनो । ए कारण हुकुम हइलो ये आदालतेर परिडतेरा बङ्गदेशेर शाखा-नुसारे परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त ए विषयेर जबाब लिखिया गुजराएन ये मुर्देदिगेर एजहार सत्य ओ रासयात्रार दिवस निलाम हओन सत्वेओ ए प्रकार कार्य यथार्थ ओ सिद्ध हइते पारे कि ना, ओ परिडतदिगेर जबाब दाखिल हइले परे उचित हुकुम वेओया जाइवेक इति ।

श्रीर्जयतिराम्

जवाचव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिधीयुतकुटुंबीदशमिटसाहेवधर्माधिक-
रणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रक्षप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्त्वद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यथिवृत्तान्तस्य सत्यत्वं स्यात्तदेतादृशकार्यस्य ह्यलकृतत्वेन, अप्य
चायिनोऽवशिष्टकरदानानुकूलव्यापारे सत्यपि सराजकरभूस्वाम्यधिकृतैस्तत्-
करमगृहीत्वा करदानानुरूपोपाधिसम्बन्धेन^१ भूस्वामिकृतदाननिमित्तमर्थिनां
भोगोपयुक्तं स्वत्वं यत्र तस्य प्रयासान्तरकरणेन निष्पन्नत्वाच्च सिद्धिर्भवति^२
नार्हति; यतः सराजकरभूस्वामिसकाशात् करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन^३ तत्-
कृतदानान् प्रजादीनां भोगोपयुक्तं स्वत्वमुत्पद्यते । तत्स्वत्वञ्च करदानरूपो-
पाधिसम्बन्धेन^४ तिष्ठति, तदभावे गच्छति । प्रकृते त्वर्धुपरयापितवृत्तान्तेन^५
अधिकृतृककरदानाभावामवगमात् सुतरां करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन भूस्वा-
मिनो दाननिमित्तमर्थिनां भोगोपयुक्तं स्वत्वं गन्तुं न शक्नोति । अथ च
भाषायां निलामशब्दवाच्यस्य द्वितीयवन्दवस्तशब्देन प्रसिद्धस्य द्वितीय-
प्रयासस्य रासयात्रादिवसीयत्वेन^६ सिद्धिर्भवति न धेत्यस्येदानीं वङ्गदेशचलित-
ग्रन्थेष्वलिखनात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुविषादमङ्गार्यावादिग्रन्थात्
सारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनेविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र वाप्युपाधि परयेत् तत्सर्वं विनिवर्त्तयेत्^१ ॥

—इति मनुवचनम् (८।१६५) ॥ १ ॥

१. सम्बन्धेन—व्यप० ।

२. सिद्धिः—व्यप० ।

३. च्छन्देन—व्यप० ।

४. ०न मितिः—व्यप० ।

५. दिशरीयत्वेन—व्यप० ।

६. निविर्त्तयेत्—व्यप० ।

तामिश्च वर्षो(प)युक्तकरदानेन वर्षोपयुक्तस्यत्वमर्ज्यते । तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणां न सिद्ध्यति । यदि तु प्रतिवर्षं मुज्यतां त्वया-इत्यादि प्रतिज्ञाभवत्तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यम् । यदि तु प्रजा करं न ददाति तदा सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धमिति अन्यत्र दातुं शक्नोतीति—इति विवादमङ्गारणवल्लिखनम् (१ विवाम० पृ० ३०८ क. ख) ॥ २ ॥

करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन राज्ञो दाननिमित्तमेव प्रजानां स्वामित्वं जायते । अन्यत्र गमने च करदानाभावे उपाध्यसिद्ध्या दानासिद्धिः । न च राजसम्बन्धतुल्यसम्बन्धापत्तिरिति वाच्यम्, राज्ञस्तथावधिच्छाभावात् । तथाहि-एतस्यां मम भूमौ मत्स्वत्वे विद्यमान एव निष्कण्टं भोगोपयुक्तं तव स्वत्वं भवतु-इति राज्ञस्तुष्ट्या तादृशमेव स्वत्वं जायते-इति (१ विवाम० पृ० ३१० क) विवादमङ्गारणवल्लिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४५—सदर देओरयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते आदालत मजकुरार पण्डित-दिगेर नामे इङ्गरेजी १८२७ शालेर ३ जुलाइ मासेर रोवकारि लिखित छन्दासिंह आपिलाष्ट मशन्मात दुर्गाकुमार रप्पाडशदेर मकर्दमाते वृहस्पतिवार दिवा दुइ प्रहरेर मध्ये वचन श्रो प्रन्धेर वेओरा सम्यलित जवाय दाखिल करगेर हुकुमे सओरयाल-सकल, ये एइ—

प्रथम सओरयाल—

पाटना सहर निवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तिन स्त्री ओ चारि कन्या थाकिते आपन धन आपन तिन स्त्रीर मध्ये एक

स्त्री भ्राताके ओ तिन स्त्री मध्ये द्वितीय स्त्री गर्भज कन्यार पतिके फशाली १२१६ शालेर ४ माघ तारिखे लिखिया दिया फशालि १२१६ शालेर २ वैशाख तारिखे ऐ तिन स्त्री ओ चारि कन्याके राखिया मरियाछे । तद्देशेर शाखानुसारे हेवानामा सिद्धि हइते पारे कि ना इति ।

द्वितीय सञ्चोयाल—

ऐ व्यक्ति ओ ताहार तिन स्त्री मध्ये दुइ स्त्री मरणेर परे तृतीय स्त्री तिन कन्यार मध्ये एक कन्या आपन दुइ भगिनीर विन सराकते, आपन मातार विद्यमाने, आपन भ्रातार पत्नी-दिगेर मध्ये एक जन निःसन्तान मरण हेतुते ऐ दाता व्यक्तिर त्यक्त धनेर अर्द्धकेर दाओया करिलेक । ऐ दान मिध्या हओन प्रकारे मृत कर्ता व्यक्तिर कन्यार पत्न हइते ए प्रकार दाओया, ये मुदाइयार मातार सम्मति क्रमे हइयाछे, सिद्ध हइते पारे कि ना इति ।

तृतीय सञ्चोयाल—

ऐ दानेर सिद्धताते मुदाइयार माता प्रभृति ऐ मृत व्यक्तिर स्त्रीरदिगेर एक वार यद्यपि ऐ कन्यार दाओयार पूर्व संपदन हइयाथाके कन्यार दाओयार निषेधि बोधक बटे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतदमर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिभीयुतकुटुम्बीहरामिटसाहेवधर्माधिकर-
शलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादराबोचो जातस्तदनुसारेयोत्तर
लिख्यते—

१. मध्ये मध्ये—प्य० ।

२. आपन मातार परनी—प्य० ।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्ति-
विशेषः स्वकीयानां तिसृणां स्त्रीणांभेवं चतसृणां कन्यकानां विद्यमानानां
मध्ये तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्याः स्त्रिया भ्रात्रे द्वितीयस्याः कस्याश्चि-
ज्जामात्रे स्वस्वत्वात्पदीभूतघनस्य^१ दानपत्रं लिखित्वा दत्तोपरिलिखिता-
स्तिसः^२ स्त्रियश्चतस्रः कन्यकांश्च संरक्ष्य मृतश्चेत्तदा तद्दानपत्रं यदि तिसृणां
स्त्री(णा)भ्रान्नाच्छ्रादनोपयुक्तं द्रव्यमेवं चतसृणां कन्यकानां मध्ये या न
विवाहितारतासां विवाहकालपर्यन्तमभ्राच्छ्रादनोपयुक्तं द्रव्यमथ च विवा-
होपयुक्तं द्रव्यं विनाऽवशिष्टघनस्य चेत्तदा तद्दानपत्रलिखितदत्तघनस्य
दानमेतत्प्रकाराभावे चोपरिलिखिताभ्राच्छ्रादनाद्युपयुक्तद्रव्यं विनाऽवशिष्ट-
घनस्य दानञ्च सिद्धं भवितुं शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

स्वं कुटुम्भाविरोधेन^३ देयम्—इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २४४) वीरमित्रो-
दय (पृ० ६५१) व्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थपृतया शबलक्यवचनम्
(२।७५) ॥ १ ॥

स्वमात्मीयं कुटुम्भाविरोधेन (कुटुम्बानुपरोधेन) कुटुम्बभरणा-
यशिष्टमिति यावत्तद्दद्यात् तद्भरणस्यावश्यकत्वात् । तथा च^४ मनुः-
वृद्धौ च मातापितरौ साध्वी भार्या सुतः शिशुः (८।३५)—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् (पृ० २४४) ।

देयस्वरूपमाह नारदः^५ (नामसंपृ० ८८, ५।६)

द्रव्यं कुटुम्बभरणाद्^६ यत्किञ्चिदतिरिच्यते ।

तद्देयमुप^७हृत्यान्वद् ददद्दोषमवाप्नुयात्—इति ।

१. स्वस्वदत्तं—व्यप० ।

२. ० तिस्रः स्त्रियाश्च—व्यप० ।

३. कुटुम्बविरोधेन—व्यप० ।

४. यथा—मिता० ।

५. स एव—व्यप० ।

६. भरणात्—व्यप० ।

७. उपहृत्यान्वत्तद्दोषो—व्यप० । उपहृत्यान्वो—सूच० ।

८. ददद्दागः समाप्नु०—नामस० ।

अन्यद् उपहृत्य भर्तव्यकुटुम्बमनवरुध्येत्यर्थः । उपरोधश्च (निस्वतया) भोजनाच्छादनादि राहित्यनिबन्धनतोऽत्राभिमतो, न ताम्बूलादिभोगसाधनैकल्यनिबन्धनः—इत्यादि (वीमि० पृ० ३६४) स्मृतिचन्द्रिका (पृ० १६०) ग्रन्थलिखनम् । ३ ।

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्यादेशं वैवाहिकं वसु—इति स्मृतिचन्द्रिका- (पृ० १६०) ग्रन्थलिखितदेवलवचनम् । ४ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्व्यक्तेस्तिष्ठणां तत्स्रोणां मध्ये द्वयोः स्त्रियोश्च मरणोत्तरं तृतीयस्याः स्त्रियाः कन्याः, आसां मध्ये एकस्याः कन्यकायाः स्वकीय भगिनोद्वय-साधारण्यं विना विद्यमानायां स्वमातरि सा परमातृणां मध्ये एकस्याः निःसन्तानायाः मरणेन तस्या दातृव्यक्तेस्त्यं कंधनाद्भातिस्तदानस्य मिष्यात्वप्रकारे सत्यपि तन्मातृसम्मत्यापि सिद्धां भवितुं न शक्नोति, यतस्तस्याः पूर्वमधिकारिणां मातरि विद्यमानायां तस्याः स्वत्वमेव नोत्पद्यते इति—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यमिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मित-क्षरादि (मिता० पृ० २१७) ग्रन्थपृतवृहद्विष्णुवचनम् (विसृ० १७।६-७) । १ ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तदानं दातृव्यक्तेरुत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकं चेदयिन्या मातृप्रभृतीनामर्थान्मृतव्यक्तेः स्त्रीणां तत्तत्कन्याया धनप्राप्तीच्छायां पूर्वकालोनस्य स्वीकारस्य तदानसाधकत्वेन निर्दिश्य तत्कन्याया-स्तदानप्राप्तिनिषेधकत्वं विना साधकत्वं नास्ति—इति पाटलिपुत्राख्य-

१. अनपत्यम्—सूच० ।

२. उपरोधे०—सूच० ।

३. ० इत्येदानीं—सूच० ।

४. अत्रानयो०—सूच० ।

५. वीरनिशेधकं—सूच० ।

६. पितृद्रव्यं—सूच० ।

७. ० सम्मत्यापि—सूच० ।

८. ० च्छाया—सूच० ।

नगरप्रभृतिचलितामिताक्षरावोरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

(स्व)स्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनञ्च दानम्—इति सुत्रोधिनीलिखनम्^१

(पृ० ७४१)

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४६—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजि
१८२७ शाल तारिख २२ माहे जुलाइ मत्तावक वाङ्गला १२३४
शाल २६ आषाढ रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

छन्दासिंह

आपिलाष्ट

मसम्मात दुर्गाकोडर

रप्पाडष्ट

ए आदालतेर पयिडतेरा हाल मासेर ३ तारिखेर हुकुमानुसारे
व्यवस्था लम्बरे दाखिल करिलेन । आपिलाष्टेर उफिल मुनशी
महम्मद पनाह ओ लाला आबधलालेर हाजिरिते दृष्टे आइल ।
तत् पूरे मुनशी दादार बक्श ओ मौलवी गोनाम एजदानी उकि-
लेरा आपनादिगेर नामिक एक केता ओकालतनामा ओ ए
आदालतेर नाएव तहबिलदारेर दस्तखति आपनादिगेर मेहन-
तानार^२ चावत^३ सबलग २६६॥। आनार रशीद ओ हाल शनेर
९ जुन मासेर हुओया आजिमावादेर फोटेर रोवकारि नकल दुइ

टाका मूल्यकेहर बरह' द्वाराय रण्पाडरटेर पत्त हइते लम्बरे दाखिल करिलेक, पडागेल । तत् परे रण्पाडरटेर उकिलदिगेर स्थाने जिह्वासा करगेल ये फयशला जारि महकुंफिर बावत तोमादिगेर मञ्चोकेलार ओजर कि । जघाय दिलेक ये आमार-दिगेर मञ्चोकेलार ओजर एइ ये फयशला जारि हइयाछे, ओ मञ्चोकेलारा दखल पाइयाछे । हुकुम हइल ये ए आदानतेर पण्डितदिगेर स्थाने चतुर्थ शओयाल करा जाय । से, एइ ये सहर पाटना निचासी एक व्यक्ति हिन्दु तिन खी राखिया, ये ताहार मध्ये एक खी निःसन्ताना, ओ एक खीर तिन कन्या, ओ एक खीर एक कन्या जन्मियाछे, मरियाछे । ओ ताहार परे जे खी निःसन्ताना छिल मरियाछे । तदेशशास्त्रानुसारे मृत खीर अंश कोन व्यक्तिके, ओ ताहार दाओया करयेर समता कोन व्यक्तिके अर्श । उचित् ये एइ सओयालेर उचर परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त ग्रन्थ ओ वचनेर वेओरा सम्बलित दाखिल करेण । ताहार परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जघावव्यवस्था

एतदम्माधिकरणद्वितीयाधिपति श्रीयुतकुटनीदेशमिदयादेवधम्माधिकरयलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य शाहशयोओ जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

पद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राएयनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्तितः स्त्रिय एवं तायां तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या एकां कन्यामेकस्यास्तिस्रः कन्यका एकां निःसन्तानाश्च संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं निःसन्ताना स्त्री मृता चेत्तदा मृतायास्तस्या निःसन्तानायाः स्त्रियाः पतित्युत्तपनशो

१. ०१७३—पृ० ३ ।

२. उदवार—पृ० ३ ।

३. स्त्रिया निःसन्तानाश्च—पृ० ३ ।

जीवन्तीनां तत्सपत्नीनामेव भवति, एवं तत्प्राप्तीच्छाकरणक्षमतापि तत्सपत्नीनामेव, यतोऽनपत्यपतिधनस्योचराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तद्भर्तुंरुत्तराधिकारिणामेव भवति । तत्र च भर्तुंरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे पत्न्या एव प्राधान्यम्-इति पाटलिपुत्राख्यनगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूसव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारीणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

सुजीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः-इति वीरमित्रोदयादि-
(वीमि० पृ० ६२७)ग्रन्थभृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६२१) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि मिता-
क्षरादिग्रन्थभृत मिता० पृ० २१७)दुइद्विष्णुवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि तच्चदग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५)
॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

४७-सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इरामिट शाइवेर हुजुए हइते राय वंशीधर वनामे मनोहर लाल ओ गयरहेर मकर्द्माते इहरेजी १८२७ शालेर २४ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर बैओरा संस्त्रलित जबाव दाखिल करणेर हुकुमे आदालत मजकुरारार पण्डितदिगेर नामे सओयाल सकल, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वेशार जिला निवासी एक व्यक्ति हिन्दु कायेत जाति पितृ-
ग्न विभाग करणेर परे दुइ भ्रातृपुत्र ओ चारि दौहित्र राखिया

मरियाद्धे । ऐ देशेर शास्त्रानुसारे ताहार त्यक्त धन ताहार भ्रातृपुत्रदिगके अशं कि ताहार दौहित्रदिगके ?

द्वितीय सञ्चोचाल—

यद्यपि ऐ व्यक्ति पितृधन विना विभाग करणे मरितो ताहार त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अशितो ?

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुक्तकुटुंबीदशमितसाहेबवर्माधि-
करणलिखितप्रभप्रतिरुग्गवमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि वेहाराख्यप्रदेशनिवासी कश्चिदेकः कायस्थजातिः पितृधनविभाग-
करणानन्तरं द्वौ भ्रातृपुत्रो चतुरो दौहित्रौश्च^१ संख्य मृतः स्यात्तदा तत्-
त्यक्तधने चतुरां दौहित्राणामधिकारो, यतो दौहित्रेषु विद्यमानेषु विभक्तधने
भ्रातृपुत्राणां नाधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि मिवाक्षरावीरमित्रोदयादि(बीमि० ६०२)अन्यपुत्र-
यांश्चनत्कयवचनम् ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तद्व्यक्तिविशेषः पितृधनविभागमकृत्वा मृतस्तदा पितृधने तद्यो-
ग्यशो भ्रातृपुत्रपौत्रेव भवति, न तु दौहित्राणां विभक्तधन एव पत्नीदुहित-
दौहित्राणामधिकारस्य मिवाक्षरादिमन्यलिखितत्वात्, अविभक्तधने तेषामधि-
कारस्यालिखितत्वाच्च, यत् बालभग्नकृतमिताक्षराटीकायां^२ विभक्तधन एव
दौहित्राधिकारस्याविभक्तधने तदधिकाराभावस्य च स्पष्टीकृतत्वाच्चेति

बेहाराख्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमिश्रोदयपालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकादि-
ग्रन्थानुत्तरिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

एवं दीहित्रभ्रातृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दीहित्रस्य चलवत्त्वस्य
अंशहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव चलवान्, अविभक्तत्वे तु पितुः
भ्रातृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां
(पृ० २०) बालम्भट्टलिखनम् ॥ १ ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४८—सदर देओर्यानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत
कुर्टनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते दे आदालतेर पण्डितदिगेर
नामे स्वयं ओ आपन अप्राम-व्यवहार भाला आनन्दीलालेर
ओयाली रामधुमन्लाल सायेलेर मकरईमाते इहरेजी १८२७
शालेर २६ आगष्ट मासेर रोवकारिर लिखित सायेलेर सओयाल
ओ आजिमायादेर कोटेर फयशाला ये ताहाते आदालतेर सओ-
याल ओ तथाकार राधाकृष्णपण्डितेर जबाब लिखा आछे एष्ट
ओ सम्पूर्ण अनुमोदन परे बचन ओ ग्रन्थेर वेओराते परस्व
पर्यन्त जबाब दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

सओयाल—

राधाकृष्णपण्डितेर लिखिया देया आपिल आदालतेर सओ-
यालेर जबाब मिताक्षरा पुथि मत प्रसिद्ध बटे कि ना, अर्थात् हुइ
दाओयार मध्ये सायेलदिगेर नासी जितकेँरेर दाओया किन्वा
सायेलदिगेर दाओया प्रसिद्ध बटे, अथवा हुइ दाओयाइ मिथ्या

श्री परिहतेर जवाव प्रसिद्ध ।

राधाकृष्णपरिहतेर व्यवस्था, एइ ये—

पतिमरणानन्तरं तत्पत्नी तद्वनमु(पुत्र)स्य दुहितृविहाय^१ मृता । तत्रैका दुहितृमती, द्वितीया पुत्रवती, त्रैतीयास्तौ^२ यौवना समर्तृका^३ अनपत्या । तर्हि तदने ताः समांशभागिन्यो भवितुमर्हन्ति, दीहि-
त्री तु न तद्वनहारिणी । पत्नी दुहितरश्चैव—इति मिताक्षराधृतयाश्वत्स्य-
वचनात् (२।१३५) ।

अज्ञादज्ञात् सम्भवति पुत्रवद् दुहिता नृणाम् ।

तस्मात् पितृधनं त्वन्यः कथं गृह्णाति मानवः—इति (मिता० पृ०
२२१) वृहस्पतिवचनात्, सदृशी सदरोनोदा—इति वचनाच्च ।

त्रिवेदिश्रीराधाकृष्णशर्मणाम् ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सदर देशोयानी अदालतेर सश्रोयालेर जवाव व्यवस्था—

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिधीयुतकुटुम्बीरशमितसाहेबप्रधर्माधिकर-
णलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितार्थनिवेदनपत्रं चैवं पाटलिपुत्राख्य-
नगरसम्बन्धि कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयज्ञपत्रं तदन्तर्गततदधर्माधिकर-
णीयप्रभमेवं राधाकृष्णख्यपरिहतलिखिततत्प्रभोत्तरं चावलोक्य विविच्य
च यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

विवादास्पदीभूतं धनं यदि ज्ञानकोमराख्यायाः पतिमरणानन्तरं तदीय-
धनत्वेनोत्तराधिकारित्वेन उत्सकान्तं स्यात्, अथ च तिस्र एव दुहितरो
निर्धनाः^४, सर्वा एव वा सधनास्तदा राधाकृष्णख्यपरिहतलिखितकोट-
आपीलाख्यधर्माधिकरणप्रभोत्तरं मिताक्षराग्रन्थसम्मतं भवति । यदि च
तिस्रणां दुहितृणां मध्ये एका निर्धना द्वे वा^५ निर्धने तदा तत्परिहतस्योत्तरं

१. दुहितृ०—२५० ।

२. निर्धना०—२५० ।

५. हेवा०—२५० ।

२. स्त्रीया स्त्रीया०—२५० ।

५. सर्वा०—२५० ।

तद्ग्रन्थसम्मतं न भवति, मिताक्षरायां दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे
 अप्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धानां दुहितृणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात्
 सधनानां दुहितृणामधिकारविधानात् । एवं चैतत्पक्षे द्वयोर्द्वन्द्वप्रती-
 च्छयोर्मध्ये अर्थिनो मातृपुत्रनुर्जातकोमराख्यायास्तत्समस्तधनप्राप्तीच्छा
 केवलं तस्या एव निर्द्धानत्वे, द्वयोर्निर्द्धानत्वे तद्वनार्द्धप्राप्तीच्छा, तिसृणां
 निर्द्धानत्वे तत्तृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मता भवति । यदि च विवादा-
 स्पक्षेभूतं धनं ग्यानकोमराख्यायास्तदीयशुल्काभिन्नं स्त्रीधनं भवति,
 अथ च तिसृणां मध्ये पुत्रवत्याः सधनत्वे जीतकोमराख्यायास्तद्वनार्द्ध-
 प्राप्तीच्छा तद्ग्रन्थसम्मता भवति, मिताक्षरायां दुहितृणां मातृस्तादृशस्त्री-
 धनाधिकारप्रकरणे प्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धानाम् अनपत्यानां वा दुहितृणा-
 मभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात् सधनानां सापत्यानां वा दुहितृणामधिकार-
 विधानात् । एवं तिसृणां मध्ये द्वयोः पुत्रपौत्ररूपापत्यरहितत्वावगमात्
 पुत्रवत्या निर्द्धानत्वे, जीतकोमराख्यायास्तदनतृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थ-
 सम्मता भवति, तत्प्रकरणे मिताक्षरायां निर्द्धानपत्ययोर्द्विविधयोरेव
 दुहितोः प्रथममधिकारविधानात् । अर्थिनां तद्वनप्राप्तीच्छा चोपरिलिखित-
 पक्षद्वय एव विद्यमानत्वात् तन्मातृप्रभृतिषु तद्ग्रन्थसम्मता न भवतीति ।

अत्रप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थवृत्त (पृ० २१७) याज्ञ-
 चल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ १ ॥

अप्रतिष्ठिताप्रतिष्ठितानां समवाये अप्रतिष्ठितैव तदभावे प्रतिष्ठिता—
 इति दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ०-
 २२१) ॥ २ ॥

अप्रतिष्ठिता निर्द्धाना अनपत्या वा—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम्
 (पृ० २२१, खपुस्तके) ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठिताऽप्रतिष्ठितासमवायेऽप्रतिष्ठिता गृह्णाति, तदभावे प्रतिष्ठिता ।
 यथा गीतमो मुनिः स्त्रीधनं दुहितृणामप्रदानामप्रतिष्ठितानां चेति ।
 तत्र शब्दात् तत्र प्रदानां प्रतिष्ठितानाञ्च । अप्रतिष्ठिता निर्द्धाना अनपत्या

वा । एतच्च शुल्कव्यतिरेकेण—इत्यादि दुहितृणां मातुः स्त्रीधनाभिकार-
प्रकरणे मितान्तराग्रन्थलिखनं चेति (पृ० २२६) ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

सञ्चोयाल—

४६—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत
कुर्तनी इशमिट साहेबेर हुजुर^१ हइते ये आदालतेर पण्डितदिगेर
नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेवम्बर मासेर रोवकारि
लिखित अमिमानवाय^२ सा(ए)लेर मकईमाते परस्व हुइ प्रहर
पर्यन्त वाराणश देशेर शाखानुसारे वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा
सम्बलित जघाव दाखिल करणेर हुकुमे सञ्चोयाल, एइ ये—

हिन्दु चारि व्यक्ति टीका लइया आपनादिगेर मिलकियतेर
मौजार एक व्यक्ति हिन्दुर निकट बन्धक राखिलेक । ताहार परे
बन्धक दाता चारि जनेर मध्ये एक जन चाहिलेक ये ऐ^३ बन्धकेर
वेवाक टाका दिया समस्त मौजार बन्धक छाडाय, ओ बन्धक
प्रहोता वाकि बन्धक दाता तिन जनेर असम्मति जानाइया
एक जन बन्धक दातार स्थाने समुदाय बन्धकि टाका लखोन
ओ समस्त मौजार बन्धक हइते छाडन स्वीकार न करिया
वहिलेक ये ऐ एक व्यक्ति बन्धक दातार स्थाने बन्धक वायद
चतुर्थ अंश टाका लइया ताहार अंश परिमाण अर्थात् बन्धकि
मौजार चतुर्थ अंश छाडिया दिया वाकि चारय आना मौजार
दपर पूर्व मत वाकि तिन जन बन्धक दातार पक्ष हइते बन्धक

१. हुजुरा हते०—अर० २. अमिमानवाय—एति साधीयान् पाठः ।

३. येक बन्ध करे—अर० १

छाडान पर्यन्त दाखिलकार थाके । अतएव जिज्ञासा जाइते छे । यद्यपि यथार्थइ वाकि तिन जन बन्धक दाता आपन र हिस्कार बन्धक चतुर्थ बन्धक दातार पत्त हइते छाडानेते सम्मत ना थाके, ताहारदिगेर असम्मति बाकी वारय आना हिस्कार बन्धक छाडानेते निषेधि बटे, किम्वा चतुर्थ बन्धक दाताके वत्त, ये निजे समस्त बन्धकि टाका आदाय करिया आपन हिस्कार उपर अधिकार प्रकारे ओ वाकि तिन जन बन्धक दातार हिस्कार उपर बन्धक प्रहोत। प्रकारे देखल पान इति ।

श्रीज्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्तनीइशमितसाहेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य पाटशत्रोभो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रश्नार्थेन प्रश्नपत्रलिखिताशेषं श. स्नातचतुर्विधाध्यन्तर्गताकृतकालात्मकभोग्याधिलनिश्चयात्, तत्र यदि चतुर्भिर्हिन्दुजातीयैर्मुद्रां गृहीत्वा स्वस्वस्वास्पदीभूतग्राम एकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य निरुटे बन्धकीकृतः, तदनन्तरं बन्धकदातृणां चतुर्णां मध्ये एकः कश्चिद् बन्धकग्रामस्य समस्तमुद्रा दत्त्वा सम्पूर्णग्रामो बन्धकात् मोक्तव्य इतीच्छति, तत्र यदि बन्धकीभूतग्रामश्चतुर्णां साधारणश्चेत्, तदा तदन्तर्गतत्रयाणां यथार्थभूता स्वस्वभोग्यांशमोचनासम्मतिः मुतरामवशिष्टद्वादशाण्यपरिमितांशत्रयस्य बन्धकमोचने प्रतिबन्धिका भवति । एवं चतुर्थबन्धकदातुरवशिष्टबन्धकदातृणां त्रयाणां सम्मतिश्चेत् तदैव समस्तमुद्रा दत्त्वा स्वांशे स्वामित्वेनावशिष्टबन्धकदातृणां त्रयाणामंशं बन्धकग्रहीतृत्वेनायत्तत्वप्राप्तिर्भविष्यति, यतः साधारणधने सर्वेषामंशिनामनुमतिं विना तन्मध्ये एकस्य कस्यचिद्दानाधमनविक्रयत्मतता नास्तीति । अतः मुतरां साधारणधनाधिमोचनात्तत्प्राप्त्यर्थं तदैव । यदि च बन्धकभूतग्रामे तेषामंशनिर्णयश्चेत्तदा बन्धकदात्रन्तर्गतत्रयाणामनुमतिं विनापि

चतुर्थबन्धकदाता पृषड्'निर्दिष्टस्वांशं बन्धकान्मोचयितुमर्हति-इति वाराणसीप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुष्ठीयणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यस्थत्वाद्'एकस्यानिश्चयत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञावरणं कार्यम् । विभक्तेषु (तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्यूदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धयत्येव इति व्याख्येयम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

५०—सदर देशोयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्दनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर परिढतदिगेर नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेतम्बर मासेर रोबकाटीर लिखित भवानीचरणदत्त सायलेर मकईमाते निचेर लिखित दस्तावेजेर अनुमोदन पूर्वक परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेधोरा सम्बलित जवाब दाखिल करणेर हुकुमे मओयालः—

एइ ये, सनातन हालदारेर श्री मुषम्मात जानकी, ये आपन पतिर मृत्यु परे वाङ्गला १२३२ सालेर २६ चैत्र मासेर हओया दस्तावेज भवानीचरणदत्तके लिखिया दियाछे, मुशम्मात मजकुरार पत्न हइते ए प्रकार दस्तावेज लिखिया देशोन बङ्गदेशेर शास्रालुसारे सिद्ध छिल कि ना; ओ दस्तावेज लिखार एक बतसर परे मुशम्मात मजकुरार मृत्यु हओन हेतुवे ऐ दस्तावेज जे तत्सम्पर्क मशम्मात मजकुरार पतिर भ्रातारा ओ भ्रातुषुत्रेरा प्रतिबन्धक ओ स्वीकार आछे मिथ्या हय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जत्रावव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीदशमिदसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तस्मिन्पितवाङ्गलाख्यद्वात्रिंशदधिकद्वादश-
शतान्दोषोत्रिंशद्विषयीयचैत्रमासीयदस्तावेजसंज्ञकपत्रज्ञावलोक्य विविच्य
च यादृशबोधो वातस्तदनुचारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि सनातनहालदारस्त्रिया ज्ञानक्या पतिमरणानन्तरमुपरिलिखित-
दस्तावेजसंज्ञकपत्रं भवानीचरणदत्ताय लिखित्वा दत्तं तत्र तत्पत्रलिखित-
वृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत्तदादशपत्रदानं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण
चिद्विद्माप्नीत्, यतोऽनपत्यपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वे पत्न्या
वर्त्तनाद्यशक्ती तदुपयुक्ततदनाधानविक्रयणं शास्त्रानुमतं भवति । वर्त्त-
नादिमूलीभूतस्य तद्वनरक्षणावश्यकत्वेन सुतरां तद्वनरक्षणाय तदुप-
युक्तस्य तद्वनस्याधानविक्रयणं शास्त्रसम्मतं भवति । प्रकृते तूपरिलिखित-
तत्पत्रेण ज्ञानक्याः स्वामिमरणानन्तरं सत्यतिप्रत्यधिकतरातिभ्राता-
द्यधिकतरपत्रलिखितविवादद्वयनिष्कर्षेक्षतराधिकारित्वेन फेवलं तस्या एव
कर्त्तव्यत्वेन तत्र तस्या अशक्त्या उपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रलिखित-
धनदानात् तद्विवादिनिष्पत्त्या अवश्यं तत्पतिकर्त्तव्यत्वघनरक्षणवत् तत्-
पत्रलिखितधनादवशिष्टसमुदायपतित्यक्तघनरक्षणार्थत्वात् तत्पत्रस्य इत्यव-
गमात्, एवं तत्पत्रलिखितानन्तरमेकसंवल्लरानन्तरं ज्ञानक्या मरणेन
तत्पत्रं तस्याः पत्युः भ्रातृभिरेव तत्पतिभ्रातृषुत्रैश्च प्रतिबन्धमस्तीकृतञ्च
मिथ्या भवितुं नार्हति, यत्तत्पत्रेण तत्पतिभ्रातृसमये तत्पतिभ्रातृभिस्तत्पुत्रैर्वा
उपरिलिखितविवादद्वयान्तर्गतैकस्मिन् विवादे विरोधित्वेन तथा सह विवादं

१. रक्षणस्यावस्थानरयक०—म्य० ।

२ पतिः पतिः—म्य० ।

कृत्वा तत्प्रचलितखनतस्तस्या निवारणं न कृतमित्यवगमाद्, इदानीं तस्या मरणेन तत्प्रतिबन्धस्य च अग्रयोजकत्वात्—इति घन-देशचलितदायभागविवादभङ्गार्थंवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रय-
णमपि—इति दायभागलिखनम् (पृ० १७३, ११०१६२) । १ ।

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म करोति
मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—
इति विवादभङ्गार्थं (२ विवाह० पृ० ३१६ क) लिखनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीचैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

५१—सदर देमानी आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत आलक
सुन्दर राश साहेवेर हुजुर हँते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे
इंराजि १८२७ सालेर ११ सेतम्बर मासेर रोवकारिरे लिखित
१८५७ लम्बरेर वाचत गणेश आर्षालाएट विनसिया रप्पाडएटेर
मकईमाते धारानश देशेर चलित शाख मते घृहस्पतिवार पर्यन्त
जवाय दाखिल करणेर हुकुमे सञ्चोयाल सकल एइ ये—

प्रथम सञ्चोयाल—

धारानश साकिनेर फल्लुजाति एक खालोकेर विवाह फोन
व्यक्तिरे सहित हइयादिल, ओ वाहार स्वामि अनुदेश हइल,

१. अनाठ—व्य० ।

३. विनसिया—इति सापीयान् पाठः ।

२ लम्बरे वाचा—व्य० ।

ओ ऐ स्त्रीलोक तांहार स्वामि अनुदेश हओयार तेर बत्सरैर परे ताहार पतिर कनिष्ठ भ्रातार सहित शाङ्गा करिते पारे कि ना, ए प्रकार (शाङ्गा) शास्त्र अनुसारै सिद्ध हय कि ना ।

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि ए प्रकार शाङ्गा सिद्ध हय, ओ ऐ स्त्रीलोकेर द्वितीय पति ऐ स्त्रीलोक व्यक्ति ओ आपन पिता ओ तिन सहोदरभ्राताके राखिया मरियाछे, ओ समस्त धन साधारण कि असाधारण हय, ए दुइ प्रकार मृत व्यक्तिकर अस्थावर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके (अर्थ) इति ।

जवाब न्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रायुतआलकशरडरधर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

शास्त्रे शाङ्गाइशब्दवान्यकार्यस्य प्रस्तावो नास्ति । परन्तु यदि धाराणसीप्रदेशीयानां^१ रैलकारजातीयानां प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकसंगाइशब्दवान्यस्य व्यवहारश्चेत् तदा प्रश्नपत्रलिखितशास्त्रालिखितप्रकारक^२संगाइशब्दवान्यं कार्यं कर्तुं शक्नोति । एवमेतत्प्रकारकं संगाइशब्दवान्यं तत्कार्यमुपरिलिखितव्यवहारसिद्धमिति चेत्तदा शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं गवितुं शक्नोति, व्यवहारस्य शास्त्रानुसारेण बलवत्त्वादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मावित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥

इति—मनुवचनम् (८।४१) । १ ।

१ वारनसी—न्यप० ।

२. ०कार्यं—न्यप० ।

३ शास्त्रप्रति—न्यप० ।

यस्मिन् देशे यदाचारो^१ व्यवहारः कूलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽती यदा परामुपागतः ॥

—इति मिताक्षरादि (मिताष्ट० १०५) प्रन्वधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्
(१।३४३) । २ ।

स्यष्टशास्त्रानुपलम्भे तु^२ देशव्यवहारानुरोधे^३ निर्णयः कार्यः ।
इत्यप्याह स एव ।

तस्मात् शास्त्रानुसारेण राजकार्याणि साधयेत्, वाक्याभावे तु
सर्वेषां देशदृष्टमते नयेत्—इति वीरमित्रोदयलिलनम् । ३ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रश्नपत्रलिखितसगाइराब्दवाच्यं कार्यं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखित-
व्यवहारानुसारेण सिद्धं चेदथ च तस्या एव क्रिया द्वितीयवर्तित्वां क्रियमेव
स्वपितरं^४ प्रीन् स्वसोदरभ्रातृन्^५ च संरक्ष्य मृतः स्यादेवं तदीयसमस्तस्पावरघनं
पित्रा भ्रातृभिश्च सह^६ साधारणं चेत्तदा तयोग्यस्तदीयसावरघनां^७
भातया च भवति; यदि च केवलं पित्रा सह धनं^८ साधारणं चेत्तदा केवलं
रितुरेव; यदि वा केवलं भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा केवलं भ्रातृशामेव
भवति; यद्यसाधारणं तद्धनं चेदथ च तद्देशीयानां तज्जातीयानां^९ यथा
विवाहिता स्त्रो असाधारणपतिधने अधिकारिणी भवति तथैव सगा-
संबन्धकार्यकृत् स्म्यपि तद्धने अधिकारिणी भवतीति व्यवहारचेत्तदा सा
शास्त्रानुसारेणाभि^{१०} तद्धनं प्राप्तुं शक्नोति । एवं व्यवहारो न चेत्तदा
धनस्पासाधारणत्वत्वे तत्पितुरेव (तद्धनम्)—इति वाराणसी प्रचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयादिप्रन्वयानुसारिणी व्यवस्था ।

१. य आ०—याष्ट० ।

५. धनं च—व्य० ।

२. ० दोष्येति—व्य० ।

६. धनं सह साध०—व्य० ।

३. सोदरं भ्रातृं स्वसंरक्ष्य—व्य० ।

७. तज्जातीयानां—व्य० ।

४. *मिःस्वसह—व्य० ।

८. सारत्रं प्राप्तं शक्नोति—व्य० ।

९. वाराणसी—व्य० ।

अत्र प्रमाणम्—

तदुपरिलिखितमेव । १ ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादि (मिताक्षरा-पृ० २१६) ग्रन्थद्वारा प्रमाणवत्त्ववचनञ्चेति (२।१३५) । २ ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

सं० १८६७

५२—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२७ साल तारिख १५ माह सेतम्बर मोतावक याङ्गला १२३४ साल रोज शनिवार आदालत मजकुरार पञ्चम हाकिम श्रीयुक्त आलक सुन्दर राश साहेबेर बैठके—

गणेश

आपीलाएद

मुरान्मति बेलसिया

रण्यादएद

एइ मासेर ११ तारिखेर हुकुमानुसारे ए आदालतेर पण्डित-गण लम्बरे व्यवस्था दाखिले करिलेर दृष्टे आसिया द्वितीय सओ-याल उचित हइल । अतएव हुकुम हइल ये ए रोवकारि नकल एइ हुकुमे पण्डितगणके समर्पण करा जाय ये नीचेर लिखित सओयालेर जवाब तातिलेर परे दाखिल करेन ।

सओयाल—यद्यपि एइ मत सङ्गाइ वारानश देशे सिद्ध हय आर ऐ दाखिल करा व्यवस्था लिखित द्वितीय सओयालेर जवाब मते बोध हइते (छे ना) ये सङ्गाइ खीर द्वितीय पतिर त्यक धन किचु सङ्गाइ छिके अर्शिवेक फि ना; यदि ना अर्शे तवे ऐ छिर भरण पोपणेर अवधारण काहार जिम्बा थाकिवेक इति—

श्रीर्जयतितराम्

जत्राव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणपञ्चमाधिवतिश्रीयुतञ्जालकमुन्दरसाहेवधर्माधि
करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

यदि वाराणस्यादिप्रदेशे^१ एतादृशसगाइशब्दवाच्यं काव्यं
व्यवहारानुसारेण सिद्धं भवति; एवं सगाइशब्दवाच्यकार्यकृतस्त्रिया
द्वितीयपतित्यकथनं यदि तस्मिन्ना तद्भ्रातृभिश्च सह किंवा केवलं
तद्भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा सगाइशब्दवाच्यकार्यकृतस्त्रीस्वामि-
त्वेन किञ्चिदपि तद्दनात् प्राप्तुं न शक्नोति । एवं चेत्तदा तस्याः स्त्रिया
भरणपोषणं यावज्जीवनमेतद्विवादे पूर्वलिखितास्मद्ब्यवस्थान्तर्गतद्वितीय-
प्रश्नोत्तरव्यवस्थानुसारेण तस्या द्वितीयपतित्यकसाधारणधनाधिकारिभिरेव
कार्यम् । तत्र तस्य साधारणधनाधिकारिणो यदि पिता भ्रातरश्च सर्वे
भवन्ति तदा तैः सर्वैरेव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तस्मिन्ना भवति
अधिकारी तदा तेनैव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तद्भ्रातर एव भवन्ति तदा
तैरेव^२ कर्तव्यम्—इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी गृहीयादित्येतद्भ्रजनजातं विभक्तभ्रातृसीविषयम्—इति मिता-
क्षरालिखनम् (पृ० २१७) । १ ।

भरणं चास्य कुर्वीरन् सीयामाजीवनं क्षयात्—इत्यादि मिताक्षरा-
(पृ० २२०) वीर मित्रोदय (पृ० ६३६ ख) ग्रन्थभूतनारदवचनम्
(नास्मृ० पृ० १६६) । २ ।

१. वारानस्यादि—व्यप० । २. सिद्धं सिद्धं—व्यप० । ३. प्राप्त—व्यप० ।

४. तेनैव—व्यप० । ५. जीविन्—नास्मृ० ।

६. स्त्रीणामनन्त्यानां भत्यमात्रे नारदेन प्रतिष्ठादिनमिति क्षीमि० ग्रन्थे । नारद-

वचनं तु तत्र नोपलभ्यम् ।

स्वयंति स्वामिनि स्त्री तु त्रासाच्छादनमाग्निनी ।

अविमक्तो घनांशो तु त्राप्तोत्यामरणान्तिकम् ॥

इति धोरमिश्रोदयादि (वीमि० पृ० ६५४ ख) ग्रन्थधृतकात्यायन-
वचनं चेति (कास्मृ० ६२२) । २ ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१३- जिला गाजिपुरे फौजदारि आयालतेर रोवकारि
तारिख ५ छेत्तम्बर सन १८२७ इङ्गरेजी हेनरि ब्रिओनानओन
फण्ड साहेब मेजेष्टरेर^१ घैठके ।

सरकार

मुद्द

ओमराओ राय शतिर ओयारिश—

ओ दण्डघारि चौबे ओ कामराय मुदाआलेहेम ।

ओ परस आहिर

कारण मुपन्मात रामकलिर शति हओो थानादानिवने
हवसालि । अथ मकईमा रुवकार हइल । मुदाआलेहेने जओो-
व, ओ ओदनराय ओ सिओदयाल^२ ओ घनओोरि ओ सिव-
जोरराय ओ रामदेहलराय ओ आकुहुराय ओ अच्युत आनन्द^३
ओ हरनाम रा(य)ओ रओसन आली ओ दस्त साक्षीदिगेर
एजाहार दस्तुर मत लिखा जाइया मकईमार मिछिल सामिल
पढागेल । जे हेतुक एइ मकईमार कएक प्रकरण बोध करा आव-
श्यक, अतएव हुकुम हइल ये ओमराओ राय एक सउ टाकार
जामिन दिया हाजिर थाके, एवं अन्य अन्य आसामीयान साक्षी-
यान सहित विदाय हये । एक किता इङ्गराजी चिटो एक विपयेर

जिहासा पूर्वक जे ब्राह्मण जाति व्यतिरिक्त सती स्त्रीलोकेर प्रति-
स्वामीर मृत्यु संवाद श्रवणेर परे कत दिवस किम्वा काल अनुमरण
हइवार रीति निरूपित आछे-सदर नेजामते-पाठान जाय इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम

यवाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यते—

पतिमरण^१ भवणानन्तरं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री यद्यनुमरण-
मिच्छति तदा शीघ्रमेवानुमरणं कर्तुं महतीति शास्त्रे लिखितम् । किन्तु
शीघ्रशब्दस्यार्थः कश्चिद् विशेषतो न लिखितः । परन्तु अनुमरणस्यायं
व्यवहारः पतिमरणभ्रवणानन्तरमनुमरणकर्त्तुं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री
प्रथमतोऽनुमरणमहं कारिष्यामितीच्छति^२ । तत्र यदि कश्चिद्भौतिकः प्रति-
बन्धश्चेत्तदा तत्प्रतिबन्धकदूरीकरणानन्तरमपि शीघ्रमेवानुमरणं करोति ।
अथवा अनुमरणेच्छायां कृतायामपि यदि सा रजस्वला भवति तदा राज-
स्वलाशौचानन्तरमपि अनुमरणं करोति इति च व्यवहारः—इति गाजिपुरा-
ख्यादिप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अथञ्च सकल एव सर्वासां स्त्रीणामगमिणीनामबालापत्याना-
माचर्यदालं साधारणो धर्मः—इति मिताक्षराग्रन्यलिखनम् (पृ० २५) । १।

दयितं यान्यदेशस्थं मृतं श्रुत्वा पतिव्रता ॥

समारोहति दीप्तं ऽग्नीं तस्याः शक्तिं नियोधत ॥

यदि प्रविष्टो नरकं बद्धः पारोः सुदारुणैः ।

संप्राप्तो यातनास्थानं गृहीतो यमकिङ्करैः ॥

१. पातभस्या श्मशानं—२५० ।

२. भीतीच्छति—२५० ।

३. दरी कल्प—२५० ।

४. समारोहति—(गीम० पृ० १५२) ।

५. शीघ्रमेव—२५० ।

तिष्ठते विवशो दीनो वध्यमानः स्वकर्मभि ।
 व्यालमाही यथा व्यालं बलाद् गृह्णात्यशङ्कितः ।
 तद्दुर्गत्तारमादाय दिव्यं याति तपोबलात् ।
 तत्र सा भर्तृपरमा स्तूयमानापसरोगणैः ।
 कीडते पतिना सार्द्धं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥
 इति व्यासवचनश्चेति । २ ।

श्रीज्जपतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इहारेनि मिथिल सती विपवेर —

५४—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशामिट साहेवेर हुजुर हइते कालप्रसादराय सायेलेर मकई माते इहारेजी १८२७ सालेर ३० आक्तुबर मासेर रोवकारि लिखित मते परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त घड्ग दश चलित शाखानुसारे इहारेजी १८२४ सालेर २२ दिजम्बर मासेर लिखित जिला वर्द्धमानेर रोवकारी ओ इं० हाल सालेर १६ आपरेल मासेर लिखित फलिकातार कोटेर रोवकारि ओ सायेलेर सओयालेर मजमुन सकलेर अनुमोदने जबाब दाखिल करार हुकुमे आदालत मजकुरेर पण्डितगणेर नामे सओयाल ।

यद्यपि इहारे परे मृत पार्वती चरणेर भगिनी मराम्मात श्यामासुन्दरी गर्भे एक पुत्र जन्मे । ऐ पार्वतीचरणेर पितामही मुशाम्मात राशामणिर त्यक्त वस्तु ऐ पुत्रेर स्वत्व हइवेक कि ना ? यदि हइवेक, एइ त्राण ऐ वस्तु मसम्मात श्यामासुन्दरीर जिम्माय किम्वा

१. विवशा० — धन० ।

२. वध्यमानः—वीमि० ।

३. कित्तदुइते बलात्—वीमि० ।

४. तेनैव सह मोरवे—वीमि० ।

५. कपोतिकाचिशाङ्गीपाख्यानम्० ।

पार्वतीचरणेर खुडांगण अर्थात् फालीप्रसादराय ओ दुर्गा-
सुन्दररायेर जिम्माय राखा जाइवेक; ओ यद्यपि उहार खुडा-
गणेर जिम्माय रहिवेक, विरोधीय वस्तु हस्तान्तर ना करण
कराते उहादिगेर स्थान हइते जामिन लओया शाखेर आहा
सम्मत वटे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम

जवावव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणद्वितीयाधिपक्षीश्रीयुतकुटुम्बोहशमितसादेवधम्माधिकर-
णलिखितप्रथमप्रतिरूपपत्रमेवं तुल्यमपितेद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशत्यधि-
काष्टादशशताब्दीयद्वाविंशतिदिवसीयादिशम्बरमासीयवर्द्धमानबिलासधम्मा-
धिकरणीयविचारपत्रमथ च इद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यसप्तविंशत्यधिकाष्टादश-
शताब्दीयषोडशदिवसीयापरेलमासीयकलिकाताकोटापीलाख्यधम्माधिकर-
णीयविचारपत्रमेतद्दम्माधिकरणापिनिवेदनपत्रश्चावलोक्य विविन्म च
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

उपरिलिखितपत्रनातै रामसुन्दररायमरणानन्तरं तत्पुत्रेण
पार्वतीचरणेन प्राप्तमिदं शातमिति, विवादास्पदीभूतधनं पार्वती-
चरणस्यैव जातम् । अतस्तन्मरणानन्तरं तद्धनं तदुत्तराधिकारिणामेव
भवति । तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपितामहपर्यन्ताभावे
तलितामह्या राशमत्या उत्तराधिकारित्वेन तद्धनं प्राप्तम् । राशमत्या
मृतापामेत्तरं यद्यपि मृतस्य पार्वतीचरणस्य भगिन्याः श्यामामुन्दर्या गन्मै
एकः पुत्रो जनिष्यते तथापि पार्वतीचरणपितामहोरामणिसंक्रान्ततदीय-
धने भविष्यते पार्वतीचरणपितृदोहित्रस्याधिकारो न भविष्यति, यतो विवादा-
स्पदीभूतधनस्योत्तराधिकारित्वेन पार्वतीचरणपितामहीसंक्रान्तत्वे तन्म-
रणोत्तरं तस्याः पूर्वमधिकारिपितामहादपि पूर्वमधिकारिणः पितृदोहित्र-

स्याधिकारप्रतिपादकशाखाभावात्—इति बङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
दायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

आतृषीत्राभावे पितृदोहित्रः तदभावे पितामहः तदभावे पितामही-
इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् (पृ० २१८) ॥ १ ॥

दोहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो घनाधिकारी आसन्नत्वात्
तदभावे पितामही—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (२ विवाम० पृ०
३६४ ख) ॥ २ ॥

दोहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकारवत् पितृदोहित्रान्तसन्ताना-
भावे पितामहाधिकारः, सांष्टिकन्यायसिद्धत्वाद् घनिभोग्यप्रपितामह-
पिण्डदातृत्वाच्च पितामहाभावे पितामही—इति दायक्रमसंग्रहलिखन-
ज्ञेति (पृ० ७) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

५५—नं० ७१५५ आपील सदर आमीन—

रोवकारि आदालत देओयानी जिला वर्द्धमान इंरेजि १८२७
साल ११ जुन प्रथम रेजेष्टर श्रीयुत मेस्तर जान एङ्गलेश हारणी-
साहेवेर वेठके ।

रामप्रशादवन्द्योपाध्याय

आपीलाएट

आपन अग्राम्न-व्यवहारा कन्या

अन्नपूर्णादेव्यार पत्त हइते

श्रीमतिदेव्या ओ गयरह

रफ्पाडएटाट

सुचर्णादेव्या

ओजरदार

१ आतृषीत्राभावे आतृषीत्रः...तदभावे पितृदोहित्रः...तदभावे पितामहः—दायमान-
टीकापाठः ।

२. पितामहादय, सांष्टिक०—दायक्रमसंग्रहपाठः ।

ए मकई मार विवरण दृष्टे एइ जिलार पण्डितेर उपर व्यवस्था तलवे एइ सञ्चोयाल हइया छिल । ये यद्यपि हइ भग्नि पितृधने दखिलकार हइया, ताहार मध्ये एक जन भग्नि ओ दुइ पुत्र समझे मरे, तवे मृत व्यक्तिर धन भग्निके अर्शिवेक, किम्वा ताहार पुत्र-दिगेके अर्शिवेक । ताहाते एइ रूप व्यवस्था पहुँछिल ये मृतार धन ताहार भग्निके अर्शिवेक । एइ रूप आमार तलव करण मते एलाका फलिकातार कोट आपिल आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ये व्यवस्था पहुँछियाछे जिलार व्यवस्था ऐक्यता हइल । किन्तु विचारेर दाँडाते हजुरेर विवेचना सम्मत ना हइया उपरेर लिखित सञ्चोयाल एइ वेञ्चोराते ये दाञ्चोया करा वस्तु साधारण ओ पृथक धाकन प्रकारे उपरेर वेञ्चोरा करा कोन उत्तराधिकारिके अर्शिवेक—इरेजि चिटी द्वारा हुगुलि जिलाते पाठान गिया-छिल । हुगुलि जिलार पण्डित ए जिलार व्यवस्था नितान्त व्यतिक्रम, अर्थात् दाञ्चोया करा वस्तु साधारण किम्वा पृथक, दुइ प्रकारेइ पुत्रदिगेके अर्शिवेक लिपियाछे । अतएव व्यवस्था व्यतिक्रम हञ्चोने सन्देह उत्पत्ति हइया ताहार निष्पत्ति कारण सदर देञ्चोयानि आदालतेर व्यवस्था तलव करण आवश्यक बोध हइया हुकुम हइल ये सञ्चोयाल एइ रोयकारिर नकल द्वारा जज साहेबेर समीपे एइ प्राथेनाय पाठान जाय ये सञ्चोयालेर व्यवस्था सदर देञ्चोयानी आदालत हइते आनाइया ए आदालते पाठायन इति ।

रोयकारि आदालते देञ्चोयानी जिला वर्द्धमान तारिख १६ माह जुन शन १८२७ शाल मेस्तर हेनरि मेरट जज साहेबेर बैठके—

रामप्रसादयन्त्रोपाध्याय
आपन अप्राप्त-व्यवहारा फन्या
अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते—
श्रीमतिदेव्या ओ गयरह

आपीलाण्ट
रप्पाडण्टान्

सुवर्णादेव्या—

ओजरदार

एह मासेर ११ तारिखेर लिखित ए जिलार रेजेष्टर साहेबेर रोवकारिर एक केता नकल एक मृता स्त्रीर भग्नि ओ दुइ पुत्रेर उत्तराधिकारत्वेर' विशये ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था कोट आपिल आदालतेर व्यवस्थार सहित ऐक्य, ओ जिला हुगुलिर आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार सहित व्यतिक्रम ह्थोन मजमुने एक केता सञ्चोयाल सम्वलित सदर देश्चोयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था हासिल करणेर कारण ऐ सञ्चोयाल सदर देश्चोयानी आदालते पाठानेर प्रार्थनाय उपुल हइल । हुकुम हइल ये साहेब मौपुकेर आसल रोवकारि ऐ सञ्चोयाल सम्वलित एइ रोवकारिर नकल आमार इरेजि चिटिर सामिल सदर देश्चोयानि आदालतेर प्रथल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय इति—

सञ्चोयाल—

यद्यपि कोन व्यक्ति आपन दुइ कन्या वर्त्तमाना राखिया, फौत् करे । ताहार पर ऐ दुइ कन्यार एक कन्या आपन दुइ पुत्र ओ भग्निके राखिया फौत् करे । इहते मृता कन्यार विशय ताहार भग्निके अर्शे, कि ताहार पुत्रदिगेर अर्शे ? इहार संसृष्ट मते ओ विभाग प्रयोगे पृथक २ शाखानुसारे जबाय लिखिवेन इति ।

श्रीर्जयतिराम्

जवावव्यवस्था

भ्रमुसमापितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः स्वकीये द्वे कन्ये संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं द्वयोः कन्ययोर्मध्ये एका कन्या द्वौ पुत्रौ एकां भगिनोश्च संरक्ष्य मृता स्यात्, तत्र सा कन्या यदि अविवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी चेत्तदा, यदि च

विवाहिता सती (पतृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी बन्ध्या,
पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृत्वकथनादेशे तत्पुत्रयोरधिकारः ।
यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च
तस्याः सा भगिनी बन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः,
अथवा पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(या)वा, अधिकारः । पितृधने जडायां
दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितुरुत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तद्धनं
भवेति । तत्र च पितुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव
प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंश्लिष्टिनि, असंश्लिष्टिनि वा सति
पूर्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां बद्धदेशचलितशास्त्रानुसारेण
अधिकाराभावाच्च—इति बद्धदेशचलितदायभागक्षीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाखण्डेऽनुविवादमन्त्राणांवादिमन्थानुसारिणी
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्न्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः । कन्या
जाताधिकारा पश्चात् परित्यक्ता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा
तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः । न
तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात् । कुमार्थभावे चोढायाः
पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयोरेकतराभावे
एकतराधिकारः । बन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्वण्यपिण्डदा-
नोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व-
दुहितृभावे दीहितृस्थाधिकारः—इति दायकमसंग्रह (पृ० ३४) विवादा-
खण्डेऽनु (पृ० ४३-४४) प्रभृतिप्रग्न्यलिखनम् ॥ १ ॥

१. पत्न्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी । ...तदभावे चोढा...तत्रायं विशेषः । कन्या
जाताधिकारा पश्चात्परित्यक्ता अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा तत्पितृदाये
सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात् ।
तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी पत्योरेकतराभावे अन्यतरा-
धिकारः । ...सपुत्रद्वारा पार्वण्यपिण्डदायनोपकाराभावात् । इत्येकस्मिन्काराविशेषात् । ...कन्यापुत्र-
हीनविधवयोस्तु नाधिकारः । ...तयोरेकभावे दीहितृ—इति विवादाखण्डेऽनुविवादम् ।

... एवञ्च दुहितुरभ्यधिकारे जाते तस्यां गृतायां तदगात्रोक्ताः पितृधनाधिकारिणो गृह्णीयुः न तु दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायभाग (पृ० १७४) मन्थलिल(न)ञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशम्भेविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

५६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर तारिख २४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मतावेक १२ माहे माघ सन १२३४ बाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट धरलेन सिलि साहेबेर बैठके—

देविदयाल प्रभृति
हरहोरसिंह

आपीलाण्टानं
रप्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान आशील । ए मकहमा गत दिवस रप्पाडण्टेर असाच्याते आमार बैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल १० लम्बर पर्यन्त पढागिया स्थकित छिल । पुनराय अद्य रोवकार हइया ऐ आदालतेर वाकि कागज-सकल फयशला पर्यन्त ओ फोट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय कागज पढागेल । यथा ए मकहमार सम्पर्क नातक हुकुम सादर हओनेर पूर्व्य एइ विषय जानिन जे हरहोरसिंहेर धारो वैशन शाखानुसारे साव्यवस्थ वटे किना आवश्यक हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिं नकल सहित ए मकहमार समस्त कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे समर्पण करा जाय ये मकहमार दाखिल हओया सम्यक कागज ओ सकल दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर धारो

विवाहिता सती, पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी वन्ध्या,
 पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृत्यक्तघनारो वत्पुत्रयोरधिकारः ।
 यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च
 तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः,
 अर्थात् पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(याः)वा, अधिकारः । पितृधने ऊदाया
 दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितृदत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तदनं
 भवति । तत्र च पितृदत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव
 प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंश्लिनि, अतंसंश्लिनि वा सती
 पूर्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण
 अधिकारभावाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागभ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
 दायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाखण्डवसेतुविवादाभङ्गाखण्डादिग्रन्थानुसारिणी
 व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात् परिणीता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा
 तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः । न
 तु तद्भर्त्रादीनां, स्वीचन एव तेषामधिकारात् । कुमार्यभावे चोदायाः
 पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयारेकतरेभावे
 एकतराधिकारः । वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्वण्यपिण्डदा-
 नोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व-
 दुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति दायकमसंग्रह(पृ० ३-४) विवादा-
 खण्डवसेतु(पृ० ४३-४४)प्रसूतिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

१. कन्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी ।...तदभावे चोदा...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात्परिणीता अविद्यमानपुत्रा यदि मृता तदा तत्पितृदाये
 सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्वीचन एव तेषामधिकारात् ।
 तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी पत्योरप्येतरेभावे भगिन्या-
 धिकारः ।...सपुत्रताय पार्वण्यपिण्डदानाय द्वयोरकारविशेषश्च ।...कन्यापुत्र-
 हीनविधवयोस्तु नाधिकारः ।...तयोभावे दौहित्र—इति विवादाखण्डवसेतुवदम् ।

एवञ्च दुहितुरप्यधिकारे-जाते तस्यां मृतायां तदभावोक्ताः पितृधना-
धिकारिणो दृष्टीयुः न तु 'दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायमार्ग-
(१७४) ग्रन्थलिख(न)ञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशम्भेविद्यावागीशेन

। नम्बर २५६५

५६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर तारिख-
२४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मतावेक १२ माहे नाघ-
सन १२३४ बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम
श्रीयुत कटवरट थरलेन सिलि साहेबेरे घेठके—

देविदयाल प्रभृति

आपीलाष्टान

हरहोरसिंह

रप्पाडण्ट

आपीलाष्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान
आशील । ए मकहमा गत दिवस रप्पाडण्टेर असादयाते
आमार वैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल
१० लम्बर पर्यन्त पडागिया स्थकित छिल । पुनराय अथ रोव-
कार हइया ऐ आदालतेर बाकि कागज-सकल फयशला पर्यन्त
ओ फोट आदालतेर तावतू कागज ओ ए आदालतेर समुदय
कागज पडागेल । थया ए मकहमार सम्पके नातक हुकुम सादर
हओनेर पूर्व एइ विषय जानने जे हरहोरसिंहेर बाशे बैशन
शास्त्रानुसारे साम्यवस्थ बटे कि ना आवश्यक हइल । अतएव
हुकुम हइल ये एइ रोवकारिरे नकल सहित ए मकहमार समस्त
कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे अर्पण करा
जाय ये मकहमार द्राखिल हओया साम्यक कागज ओ सकल
दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर-बाशे

वैशान शाब्दानुसारे साव्यवस्थ बटे कि ना; श्रो व्यवस्था दाखिल ह् शोन परे उचित हुकुम सादय ह्दवेक इति ।

एतद्वर्माधिकरणधिपतिश्रीयुतकटवरटयरनेलतेलिसा हेवधर्माधिकरण लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवंतत्समापितैतद्विवादविषयनि विष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

हरहोरसिंहनिर्दिष्टसाक्ष्यपरयापितवृत्तान्तेन वाराणस्यधिकरणकोट-
 आपोलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टसप्तदशाङ्काङ्कितव्यवस्थापत्रेणैव महादशा-
 ङ्काङ्किततद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण चैवं तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नपत्रेण चैव-
 नेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातैश्च हरहोरसिंहः स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः,
 एवं जनकपितृमरणानन्तरं तन्मात्रा या मनेवाजसिंहाय भापायां राशशिनी-
 शब्दप्रतिपाद्यदत्तकपुत्रकरणार्थं दत्त इति ज्ञातम् । एतादृशवृत्तान्ते सति
 हरहोरसिंहस्य या मनेवानसिंहकर्तृकं भापायां राशनसिनोशब्दप्रतिपाद्य-
 दत्तकपुत्रत्वं सिद्धं भवितुं न शक्नोति । एकमात्रपुत्रो दत्तकपुत्रकरणार्थं न
 दातव्यः—शास्त्रे निषेधस्मरणात्, भर्तुंरनुमतिं विना स्त्रियाः पुत्रदान-
 निषेधाच्च । अथ च हरहोरसिंहनियुक्तैरुद्धानशब्दवाच्ये यद्व्यवस्थापत्रं
 वाराणस्यधिकरणकोटापिलाख्यधर्माधिकरणे निविष्टं तद्व्यवस्थापत्रे
 सत्प्रतिरूपपत्रे चेदमेव लिखितम् । काचिदेकपुत्रा तत्पुत्रमरणपोषणा-
 यसमर्था स्त्री स्वकीयमेकपुत्रं दत्तवती । आवयोः सकलकार्यकारी अयं
 पुत्रः अस्तु । अतएवायं द्वयामुष्यायणः पुत्रः सिद्धो भवतीति सदतीवा-
 शुद्धम् । तादृक् संविदः सत्यत्वस्य प्रभुसमापितपत्रबातैरेव प्राप्तत्वात्, पत्न्यनु-
 मतिं विना केवलभरणायसमर्था मात्रा दत्तस्यैकमात्रपुत्रस्य द्वयामुष्याय-
 णस्य शास्त्रालिखितत्वाद्, भर्तुंरनुमतेः प्रभुसमापितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्र-
 जातैरेवप्राप्तत्वाच्च । अथ च जिलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गत-

१. पत्रेन०—व्यप० ।
 २. भवनतोषणावस्था०—व्यप० ।
 ३. स्वकिया देक पुत्रमलेनराइ विदोश्चसति०—व्यप० ।
 ४. तादृश०—व्यप० ।
 ५. इति शास्त्रे—व्यप० ।

नेदम्माधिकरणनियुक्तपरिष्कृतलिखितव्यवस्थापत्रमेवं पाठशालास्थपरिष्कृत-
लिखितव्यवस्थापत्रं च शुद्धमशुद्धं वेत्पस्माभिर्न लिख्यते, यतस्तद्व्यव-
स्थाद्वये हरहोसिहस्य दत्तकपुत्रत्वसिद्धयसिद्धयोः प्रस्तावश्च नास्ति; इत्यत-
स्तस्यानावश्यकत्वमेव—इति धाराणस्यादिप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदय-
व्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकदीपितिदत्तक-
चन्द्रिकादत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

मात्रा भर्तुरनुज्ञया^१ प्रोपिते प्रेते वा भर्तारि पित्रा योभाभ्यां वा सवर्णांय
यो यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः ।

यथाह मनुः—

माता पिता वा दद्यातां यगद्भिः पुत्रमापदि ।

सदृशं श्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दन्निमः सुतः ॥—इति (६।१६८) ।

आपद्ग्रहणादनापदि न देयः । दानुरस्यं प्रतिषेधः । तथा एकपुत्रो न देयः ।
“न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वेति वशिष्ठस्मरणात्”, तथा “अनेक-
पुत्रसद्भावेऽपि ज्येष्ठे न देयः । ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति
मानवः”—इति (मनु०—६।१०६) ।

तस्यैव पुत्रकार्यकर्तरो मुख्यत्वात्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम्
(पृ० २१३-२४) ॥ १ ॥

अपुत्रेणेति पुं(स्त्व)ध्ववणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते ।
अतएव वशिष्ठः । न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः—
इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० ७) ॥ २ ॥

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कदाचन ।

बहुपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥—इति दत्तकचन्द्रिकादत्तक-
मीमांसादि (पृ० ६६) ग्रन्थधृतशौनकवचनञ्चेति (पृ० ११) ॥ ३ ॥

श्रीजैयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीचैद्यनार्थमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ५ माह मार्च सन १८२८ इङ्गरेजी मताबक २३ माह फालगुण सन १२३४ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेबेर बैठके—

जयरामगिर वनाम मयागिर ओ देविगिर — साएल हाजीर आशील । इ० १८२७ शालेर १३ आगस्त माशेर लिखित मरसीदावादेर प्रवलसिएल कोटेर एक केता रिट-रन तथाकार रोवकारि सहित ओ तहार सम्बलित मकईमार रोएदाद पौछिया ऐ सनेर जुलाइ माशेर २३ तारिखे दृष्टी हओयो। साएलेर सओयाल प्रभृति, ताहार सम्पर्कीय कागज-सकल अद्य दृष्टे आशिल । यथा साएलेर सओयाल सम्पर्के चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व शाख धिवेचना करण उचित बोध हइलो, अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितगनके अपेण कराजाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाब सोमवार पर्यन्त दाखिल करेण ।

सओयाल—यद्यपि एक व्यक्त गोसाबी आपन गुरुर मृत्युर पर उहार त्यक्त धने दाखिल हइया अन्य व्यक्तिके आपन चेला नियुक्त करे, ओ ताहार पर आपन चेलार असम्मतिसे आपन गुरुर त्यक्त धन ओ आपन स्वोपासित (धन)के गुरुर त्यक्त धन सम्बलित किम्वा पृथक् अन्य स्थाने हस्तान्तर करे । बङ्गदेशा चलित शाखानुसारे एमत हस्तान्तर सिद्ध बटे कि ना इति ।

श्रीर्जयतिराम् ।

एतद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरसाहेबधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्येतेष्वभलिखितकथितन्यासिगोस्वामी स्वगुरोमृत्योः परं तत्त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पादान्यं कश्चिद्व्यक्तिविशेषं शिष्यत्वेन नियुक्तवान् ।

तदनन्तरं तच्छिष्यानुमतिं विना स्वगुरुत्वकर्मनं स्वोपाजितधनं श्रीगुरुत्वं
 पृथग्याग्यस्य 'कस्यचिन्निकटे हस्तान्तरं' कृतवान् एवात्तत्र तदनं यदि
 देवसेवार्थं नियमितं भवति तदा देवस्वत्वासादीभूततद्दने हस्तान्तरं कर्तुः
 स्वत्वामायेन, यदि च तदनमतिथिसेवार्थं नियमितं तत्रायं नियमश्चेदे-
 तद्दनादतिथिसेवैतत्स्थाननियुक्तेन कर्त्तव्या, न तु दानविक्रयावपि, तदा च
 शिष्यानुमत्वा तदननुमत्वा वा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुं
 नार्हति; यतः शास्त्रानुसारेण पोष्यवर्गामरणे नरकं भवति । अथ च संन्या-
 सिनामिदानीन्तनानां प्रायशोऽतिथिसेवाव्यवहारो वर्त्तते । अथ चातिथिसेवार्थं
 धननियमोऽपि वर्त्तते । तदनदानविक्रयावपि न भवत इत्यपि व्यवहारः ।
 व्यवहारस्यापि शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वात् । अथ च संन्यासिनामनेके संप्रदाया
 अनेकाः भ्रंशस्तत्रैतत्प्रभलिलितसंन्यासिनो गोस्वामिनो गुरुपरम्परा-
 यामेतद्भव्यवहारश्चेत् शिष्यानुमतिं विना गुरुणा गुरुपरम्परागतधनस्य
 हस्तान्तरं न कर्त्तव्यं तदा तादृशव्यवहारत् शिष्यानुमतिं विना गुरुपरम्परा-
 गतधनस्य हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण भवितुं नार्हति । यदि च तद्गुरु-
 परम्परायां तादृशव्यवहारो न चेत्, तदैतत्प्रश्नलिलितधनं यदि देवसेवार्थ-
 मतिथिसेवार्थं वा नियमितं न भवति तदा च स्वोपाजितस्य गुरुपरम्परागत-
 स्य बोभयविषयधनस्यास्य संन्यासिनातिव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विनापि
 गुरुणा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धयति, अतः शास्त्रानुसारेणापि
 सिद्धं भवितुमर्हति । व्यवहारस्य शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वमुपरि लिखितमेव-इति
 बह्वदेशचलितमनुदायभागभीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाव्यवहारतत्त्व
 व्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं माक्षणस्वं वा लोभेनोपहिनेस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शुभ्रोच्छिष्टेन जीवति ।—इति मनुवचनम्

(११ । २६) । १ ।

१. हस्तान्तरं—व्यय० ।

२. शास्त्रानुसारेणपोष्य—व्यय० ।

३. धनस्यास्य व्यातसंन्यासिन्य०—व्यय० ।

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं^१ घनं देवस्वम्—इति कुल्लुकमहृव्याख्यान-
मिति (पृ० ४३०) । २ ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अहृतस्स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम्
(८।१६६) । ३ ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारतत्त्व (पृ०
४) व्यवहारमातृकादि (पृ० २८२) ग्रन्थवृत्तनारदवचनम् । (पृ० १७)
१।४०) । ४ ।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
वृत्त (दामा० पृ० ३३) मनुवचनम् । ५ ।

पिता माता गुरुर्भार्य्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥—इति श्रीकृष्णतर्का-
लङ्कारवृत्तमनुवचनम् (दामाटी० पृ० ३४) । ६ ।

जातिजनपदान् धर्माञ्छ्रेणीधर्मांश्च धर्मावित् ।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मां प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनं चेति
(८।४१) । ७ ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

—इन्द्रराजि दस्तखत—

१. देवता तर्कम०—धप० ।

२. मनुस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते ।

३. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते यद्यपि वाक्यमिदं "मनुनैरोक्तम्" इति दायभा-
गटीकातिशयम् ।

शओयाल—

५८—एक व्यक्ति सामन्त रजपूत जातीय राजा प्रथमा ओ द्वितीया दुइ वनिता ओ द्वितीया वनितार एक दुहिता ओ स्थावर ओ अस्थावर वस्तु स्वर्णादि राखिया निहतो अर्थात् मृत्यु ह्य । तदपरे ए निहतो व्यक्तिर द्वितीया वनितार एक दौहित्र ह्य । ऐ द्वितीय वनिता ओ ताहार दुहिता ओ दुहितार पुत्र वर्त्तमान आछे । ए ह्यणे ऐ राजार प्रथमा वनिता आपन स्वामीर कौतेर पर ऐ सकल वस्तुते दखिलकार थकिया आपन सपत्नीर साम्बत्सरेर भरण पोषणैर वेतन दिया आपन सजातीय चरि वत्सरेर वयक्नेर एक व्यक्तिके पौष्यपुत्र राखियाछे । एमते प्रस्ता जिहासा करा जाइतेछे । ऐ युत राजार द्वितीया वनितार दौहित्र बचनेगाने प्रथमा वनिता आपन स्वामीर विना अनुमतिते पौष्यपुत्र करिते पारे कि ना । यदि पारे कोन शाखेर मत, ओ शे शाखेर नाम को, ओ कोन वचन ओ प्रमाण ताहा एइ शओलेर पृष्ठे लिखियाइने । इति ई शन १८१८ साल, तारिख ७ माचचे ।

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुयमर्षितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते
प्रश्नपत्रलिखितस्य राज्ञो द्वितीयवनिताया दौहित्रे विद्यमाने सति प्रथमा
वनिता स्वस्वाम्यनुमतिं विना दत्तकपुत्रं कर्तुं न शक्नोति—इति दत्तकमोमांसा-
दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदोधितिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद् वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्तुः—इति दत्तक-
मोमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदोधितिप्रभृतिग्रन्थपृष्ठवशिठ-
वचनम् ।

श्रीर्जयतिराम् .

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

नं० २६८

५६—रोवकारि मिपिल आदालत देओनि सदर तारिख १३ माह मार्च सन १८२८ इङ्गरेजी मोतावक २ चैत्र सन १२३४ वाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम फटवरट धरनेल मिली साहेबेर बैठके—

नफरमित्र ओ राजीवमित्र—
रामकुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति—

आपीलाएटान
रघ्पाडएटान

आपीलाएटानेर उकिलगण मुनशी ह्यदरालि ओ मुनशी गोलाम बतुल रेप्पाडएटानेर उकीलगणेर मध्ये एक जन मौलवि फरम्-होशेन हाजिर आशील । पूर्वे एइ मकदमा एइ मासेर ११ ओ १२ तारिख सकले रोवकार हइया ओ शहर आदालत ओ प्रविनशल कोटेर कागजसकल तथाकार फयशला सहित पढागिया दिवा आवसान हेतु स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया खाप आपीलेर सओल थाहा मौलुवातेर स्थाने करार दियाछे ओ ताहार जवाब इङ्गरेजी १८२४ शालेर १७५२६ (?) जुलाई मासेर हओया ए आदालतेर रोवकारि सकल ओ आदालतेर समुदाय फागज पढागेल । जानागेल ये एइ मकदमाय सहरेर पण्डितेर निकट हइते दुइ व्यवस्था ओ कोटेर पण्डितेर निकट हइते एक व्यवस्था दाखिल हइयाछे, ओ ऐ व्यवस्थासकल परस्पर अनैक्य । अत-एव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्वे एइ आदालतेर पण्डित-गणेर निकट व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल नीचेर लिखित सओ(१)लसकल लिखिया मकदमार समुदाय कागज सहित एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय ।

प्रथम सओयाल । एइ जे यद्यपि रामकृष्णमित्रेर'खी मुसम्मात धनमणि आपन पतिर मृत्युर पर आपन पतिर अंश ओ त्यक्त

वाचत मलहि किसमतेर उपर, चाहा उत्तराधिकारित्व प्रकारे
उहाके पौछियाछे, दखिल हइया ताहा आपन दौहित्र मानिक-
लालके हेवा करिया थाके; एमत हेवा सिद्ध बटे कि ना ।

द्वितीय । एइ ये यद्यपि हेवानामा लिखिया देओन परे मुस-
म्मात'मजकुरा ऐ लिखित वस्तुके पुनराय रप्पाटस्टानेर पिता
डोमनचट्टोपाध्यायेर निकट विक्रि करियाथाके, एमत विक्री
करार ऐ मुसम्मातर' जमता छिल कि ना । ओ यदि स्यात् हेवा
ओ विक्रय दुइओ सिद्धि ना ह्य तवे ऐ वस्तु आपीलाष्टानके,
ये धनमशिर पतिर भातुपुत्र बटे, अशे कि ना ?

तृतीय' । यद्यपि धनमणि एखन पर्यन्त जीवमान थाके तवे
ऐ वस्तुते उहार स्वत्वाकी आछे कि ना । उचित ये परिदतगण
मकदमार समुदाय कागज दृष्टि करिया बङ्गदेश चजित शाखा-
नुसारे व्यवस्था दाखिल करेण इति ।

श्रीहरिःशरणम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्तकठवरटभरनेलसिलीसाहेधधर्माधिकरणा-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिधि-
पत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

उपरिलिखितपत्रान्तर्गतमुकसिदा'वादाख्यनगरसम्बन्धिधर्माधिकरणीय-
जयपत्रेणैकत्रिंशदङ्काङ्कितविचारपत्रेण तद्धर्माधिकरणनियुक्तपरिदतसंरन्धि-
प्रक्षपत्रेण चैवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयजयपत्रेणैकादशाङ्काङ्कितविचा-
रपत्रेण तद्धर्माधिकरणनियुक्तपरिदतसम्बन्धिप्रक्षपत्रेण च रामकृष्णमित्र-
मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनं गङ्गागोविन्दमित्रेण तत्पुत्रेणोत्तराधिकारित्वेन
प्राप्तमिति ज्ञातम् । अतो रामकृष्णमित्रस्वत्वास्पदीभूतपावद्धने तस्यैव

१. अतम्मात—न्यप० ।

२. अतम्मातर—न्यप० ।

३. द्वितीय—न्यप० ।

४. मुलसिदावादाख्य—न्यप० ।

स्वत्वं जातम् । अतस्तस्यानपत्यस्य पत्नीमारभ्य पितृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहितस्य मृतस्य शोचराधिकारित्वेन तन्मात्रा धनमन्या तद्धनं प्राप्या-
यत्तत्वं सम्पाद्य^१ माणिक्यलालनाम्ने स्वदीहिप्राय दत्तं चेत्, तदा तद्दानं
सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतो दानपत्रे धनमन्या लिखितं मया स्वेच्छया
तुभ्यमेतद्भाषायामशदशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यं धनं दत्तम्, अतएव स्वे-
च्छया स्त्रिया दानाधिकारस्योत्तराधिकारित्वेन संक्रान्तधने शास्त्रासिद्ध-
त्वात् । यथा पतित्यक्ते पत्नीसंक्रान्ते धने पत्याः स्वेच्छया दानाद्यनधिकार-
स्तथापुत्रत्यक्तेऽपि मातृसंक्रान्ते धने मातुरपीति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इति दायभाग-
(पृ० १७३) विवादभङ्गायंवादि (पृ० २ विवाभ० ३२१ क०) ग्रन्थधृत-
भारतवचनम् (१३४७१२४) । १ ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिदायान् कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दा-
र्थेन यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः—इति दायरहस्यलिखनम् । २ ।
यद्वा पत्नीत्युपलक्षम् । स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दाय-
भागादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण शास्त्रासिद्धदानपत्रलिखनानन्तरं धनमश्री
तद्दानपत्रलिखितवस्तुनः पुनरेतद्दर्माधिकरणप्रत्यर्थिनां पितुः^२ डोमनचट्टो-
पाध्याय(स्य) सत्तिशौ विक्रयं कृतवती स्यात्तदेतादृशविक्रयकरणे तस्या धन-
मण्याः क्षमता नासीत्, यतो विक्रयपत्रे स्वीकृतसंक्रान्तधनस्य^३ विक्रये
शास्त्रोक्तवश्यकानां हेतूनामलिखनात् प्रभुसम्पत्तित्वात्पत्रव्रजैरप्राप्त-
त्वाच्च शास्त्रोक्तविक्रयहेतुार्थिना पतित्यक्तधने यथा पत्या विक्रये नाधिकार-
स्तथा पुत्रत्यक्तधने मातुरपि नाधिकारः । एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण

१. सम्पाद्य—व्यप० ।

२. पितुः—व्यप० ।

३. ०त्स्य शास्त्रोक्तहेतूनां पितृने अतस्यज्ञानानलि०—व्यप० ।

दानविक्रययोरसिद्धौ सत्यां विवादास्पदीभूतधनान्तर्गतगङ्गागोविन्दमित्रस्य
 पूर्वस्वत्वास्पदीभूतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितवस्तुषु यदि
 गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थ-
 लेखितक्रमेण पत्नीमारभ्य पितामहपुत्रपर्यन्तानपत्यस्य धनाधिकारिणो न
 युस्तदैतद्वर्माधिकरणानिनां गङ्गागोविन्दमित्रस्य पितामहपौत्राणामधिकारो
 भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नांतरप्रमाणत्रयम् । तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदर-
 तदभावे पितृवैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रस्तदभावे पितृवैमात्रेयपुत्रः—
 त्सादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि धनमयी एतत्कालपर्यन्तं जीवति तदा विवादास्पदीभूतधनान्त-
 र्गताभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितं यद्रायकृष्णमित्रमरखोत्तरं
 त्रुप्रेण गङ्गागोविन्दमित्रेण प्राप्तं तद्धने धनमण्या मातृत्वेन स्वत्वम-
 न्येव, यतो गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृदौहितृ-
 तृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहित्यात् प्रमुसमर्पितभ्रजातैरवगमादुपरि-
 लिखितप्रकरणेण दानविक्रययोरसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागधी-
 श्वतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्थवदायरहस्यादिग्रन्थानुसारिणी
 वस्था ।

तृतीयप्रश्नोत्तरप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा तत्सुतः—इत्यादि दाय(पृ १५१)
 गादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

अत्र यद्यपि विवादास्पदीभूतं धनं भाषायामेकादशगण्डाधिकैकायाक-
 र्मितमिति विक्रयपत्रादिना शातम्, किन्तु तन्मध्ये भाषायामष्टादशगण्डा-
 शब्दप्रतिपाद्यं यद्धनमण्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तस्यैवेदमुत्तरं प्रमुसम-

सितप्रभपत्रानुसारेणं दत्तं, नावशिष्टस्य भाषायां त्रयोदशमएडाशब्दप्रति-
पाद्यस्य नवकान्तविक्षालविक्रीतस्य उद्विषयकप्रभुमभाभावात्-इतिनिवेदन-
मिति ।

श्रीज्जैयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

६०—रोवकारि मिसिल आदालते देओनि सदर तारिख
६ माह आपरेल शन १८१८ इङ्गरेजी मोतारफ २६ माह चैत्र
शन १२३५ वाङ्गला रोज बुधवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत
कटवरट धरनेल सिली साहेपेर बैठके ।

मुमम्मात ज्ञानकौशोर ओ जयाकौशोर आपिलष्टान
दुःखवहनसिंह ओ दोवदत्त रप्पाडष्टान

आपिलष्टानेर उकिलगण मौलवि मोलाम इजदाखी ओ
लाला आठवलाल, रप्पाडष्टानेर उकिलगणेर मध्ये एक जन
नदासुरुपशिष्टत हाजीर आसिल । कल्य एइ मकईमार रोवकार
हइया नालिशो आरजि पडागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकिल
द्विल, पुनराय अथ उपस्थित हइया प्रविन्शान कोटेर बाकि
कागज फयशला पर्यन्त ओ आदालते दाखिल हओया आरजि
मज्जुवात ओ जवाब प्रभुति समस्त कागज गृष्टे आशोल । यथा
ए मोकईमार सम्बन्धे चुडन्त हुकुम स(१)दर हओनेर पूर्व ए
आदालतेर परिहजगणेर स्थाने व्यवस्था लओन उचित दइल.
अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल मकईमार समुदग
कागज सम्बलित एइ सओयाले ए आदालतेर परिहजगणेर
हाओला कराजाय ये मुमम्मात ज्ञानकौशोर आपन पिता
केहरसिहेर त्यक्त स्थानेर परसुते ए आदालतेर डिफरि अनुभारे

उत्तराधिकारि प्रकारे कावेज हइयाछे, ओ मुसम्मात मजकुरा बन्धुसिंह नामे एक पुत्र ओ उम्मेदकौँओर ओ देओमुरत ओ नन्नाकौँओर नामिक तिन कन्या वा त ओ उहार पुत्र बन्धुसिंह जयाकौँओर नामे एक छि राखिया निःसन्तान मरिल । तपरे मुसम्मात देओमुरत द्वितीय कन्या दुइ पुत्र अर्थात् रप्पाडरटान-के राखिया मृत्यु हइल, ओ ताहार पर उहार तृतीय कन्या मुसम्मात नन्नाकौँओर मृत बन्धुसिंहेर छी मुसम्मात जया-कौँओरके ऐ समुदाय वस्तु किम्बा ताहार हइते किञ्चित दान करणेर क्षम निःसन्तान मरिल । अतएव मैथिल ओ पश्चिम देशेर चलित शास्त्रानुसारे ज्ञानकौँडरके (अपत्य) ना थाकाते तवे ताहार मृत्यु पर उहार सत्याधिकारि कोन व्यक्ति हइवेक । उचित ये कागज-सकल दृष्टी ओ अनुमोदन करिया एइ सञ्चोयालेर जवाब शाखेर प्रमाण सहित समाह मध्ये दाखिल करि(वे)न इति ।

श्रीज्जयतितराम

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकारयाधिपतिश्रीयुतकठवरटथरनेल मिलीठाहेयधर्माधिक-रयलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेव तत्समपितैतद्द्विवादविषय-निविटपत्रबातज्ञाबलोक्य विविच्य च यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमपितपत्रान्तर्गतपट्टविश्वङ्काङ्कितपूर्वलिखितैतद्धर्माधिकारयोष-बयपत्रानुसारेण केहरसिंहजितसिंहयोर्विमक्तयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोर्मध्ये केहर-सिंहस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य समस्तविभक्तस्वावरधनांशे तद्दुहितुर्ज्ञानकोठराख्याया उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते छति, शानकोठ-राख्याया गिमिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसा-रेण चोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिदनस्य वा

मृतस्य पुत्रबन्धुसिंहपत्नी जयाकोमराख्यामुद्दिश्य दानकरणे क्षमता नास्ति, यतः शास्त्रे लिखितं पुत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्दनस्यापि दानानधिकारः । अत एव पत्नीतो जयन्याया दुहितुरर्थात् पुत्रप्रपौत्रपरहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रधानाधिकारिण्याः पत्न्याः पश्चादधिकारिण्या उत्तराधिकारित्वेन विभक्तपितृधनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्दनस्य मृतस्य दानाधिकारित्वेनोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनारास्य दानकरणक्षमतायाः मुनरां दूरापास्तत्वाद्द्विवादास्पदीभूतधनस्य ज्ञानकोमराख्याया स्त्रीधनत्वाभावाच्च । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतोत्तराधिकारिणां दानपत्रेष्ववशिष्टपत्रज्ञातेऽप्यदृष्टार्थं दानानवगमात्, पैतृकसमुदायस्थावरधनांशदानावगमाच्च । एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण ज्ञानकोमराख्याया उपरिलिखितपैतृकसमस्तस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्दनस्य वा दानकरणक्षमतायामसत्तां, तस्या मरणोत्तरं तदन्नं धनिनः फेहरसिंहस्योत्तराधिकारिणामेव भवति; यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रप्रपौत्रपरहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तदन्नं तत्पत्न्युत्तराधिकारिणामेव यथा भवति तथा शास्त्रविवेचनया पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने दुहितुश्चत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तदन्नं वलितुश्चत्तराधिकारिणामेव भवति । प्रकृते तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतवंशावलीपट्टकलिखितस्य धनिनः फेहरसिंहस्य पितुः कृष्णसिंहस्य पितृनिवामद्वयनिवामहादिस्तन्तोनां मध्ये यः कश्चित् फेहरसिंहस्यसन्नतरः सपिण्डी ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं रथास्पर्जि स एवाधिकारी भविष्यति, यतो ज्ञानकोमराख्यायाः पितृर्धनिनः फेहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं प्रक्षयचलिखितानाम्, अर्थात् ज्ञानकोमराख्याया मृतपुत्रबन्धुसिंहपत्न्या जयाकोमराख्याया एवं तत्रप्रथमकन्याया उमदकोमराख्याया एवं तद्द्वितीयकन्याया देवमूर्तिकोमराख्यायाः पुत्रयोरर्थादितद्वर्माधिकारणप्रत्यदिनोरेव, एतद्भिन्नानामुपरिलिखितवंशावलीपट्टकलिखितानां मध्ये कस्यचिदपि मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण न भवति, यतो मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण घनाधिकारिश्चक्षुलाया-

मेतादृशानां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य सम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्, पश्चिम-
देशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितवंशावलीपट्टकलिखितस्तुतीसिंहाख्यो,
यां धनिनः केहरसिंहस्य दीहितः, स यदि ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं स्था-
स्यति तदा तस्याधिकारो भविष्यति, यतः प्रथमत्रलिखितानामुपरिलिखिता-
नामेवमुपरिलिखितवंशावलीपट्टकलिखितानामन्येषां च पश्चिमदेशचलित-
शास्त्रानुसारेण ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं
न भवति, यतः पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेणपुत्रधनाधिकारिशृङ्खलाया-
मेतादृशापुत्रसम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्—इति मिथिलादेशचलितविवाद-
चिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलित-
मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूख्यव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानु-
सारिणी च व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

भारते (१३।४५।१२) :—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

अपहारमेच्छिकदानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणिः (पृ० २३८)

लिखनम् ॥ १ ॥

यद्येष्टविनियोगार्थं तु कन्यायाः पितृधनग्रहणं दूरापास्तमेव—इति
वीरमित्रोदय (पृ० ६५६) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीताभरणात् ज्ञान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥

इति विवादरत्नाकरवीरमित्रोदयादिग्रन्थश्रुतकाल्यायनवचनम् (कास्मृ०
६२१) ॥३ ॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे साध्वी भार्या तदभावे दुहिता तदभावे
माता तदभावे पिता तदभावे भ्राता तदभावे तत्पुत्रस्तदभावे आसन्न-

सपिएडस्तदभावे यथाकमं व्यवहितसपिएडः—इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाग्—इति मिताक्षरा (पृ० २२१) ग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥ ५ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

११११

सञ्चोयाल—

६१—यदि कोन ग्रहस्तेर कन्याके ताहार पिता माता मूल्यादि
ना लइया काहारो नफरेर सङ्गे विवाह देय, एवं विवाह देञ्चोया
कालिन ऐ कन्यार पिता-माता ऐ कन्याके दासि करिया देञ्चोयार
कोनो लिखित पडित अथवा अङ्गिकार ना फरे, तवे सेइ कन्या
ओ ताहार गर्भजात सन्तानसकल यथाशास्त्र दासि ओ नफर
हइते पारे कि ना ? एवं कोन शास्त्रानुसारे ए विषयेर निषेध कि
विधिर व्यवस्था ह्य सेइ व्यवस्थार श्लोक ओ भाषाते विधरण
अवगत हञ्चोया आवश्यक इति ।

प्रमुखमर्षितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कस्यचिद् ग्रहस्थस्य कन्याया विवाहस्तत्पित्रा मात्रा वा मूल्यादिक-
मपहीत्वा कस्यचिन्नकरशब्दवाच्येनार्थादासेन सह कारितः, एवं विवाह-
समये तस्याः पित्रा मात्रा वा दासीत्वेन दानस्य किञ्चिल्लिखितादिकमथवा
स्वीकरणं न कृतं स्यात्तत्र यदि प्रश्नपत्रलिखितग्रहस्थशब्द (वाच्यः ?)
कस्यचिद् दासो(न)भवति, तत्कन्यापि कौमारवस्थायां कस्यचिद् दासी न
रिधता तदा, यदि वा प्रभपत्रलिखितग्रहस्थशब्देन (वाच्यः) कस्यचिद्दासो

भवति, वत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिदासी स्थिता, कस्यचिदासेन सह विवाहे तस्याः स्वामिनो यद्यनुमतिस्तदा च सा परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं शक्नोति । एवञ्च सत्येतत्पक्षद्वये तस्या गर्भजाताः सन्ताना अपि तत्परिणेतृदासेश्वरस्य दास्यो दासाश्च भवितुं शक्नुवन्ति, उपरिलिखित-प्रकारेण तस्या दासीत्वेन तद्गर्भजातसन्तानानामपि शास्त्रोक्तपञ्चदश-दासान्तःपातिगृहजातात्मकप्रथमदासत्वात् । यदि च सा कन्या कौमारा-वस्थायां कस्यचिदासी स्थिता किन्तु कस्यचिदासेन सह विवाहे तस्याः स्वामिनो नानुमतिस्तदा च सा कन्या परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं न शक्नोति, किन्तु पूर्वस्वामिन एव दासी भवति; एवं सत्येतत्पक्षे गर्भ-जाताः सन्ताना अपि एकस्य दासोत्पत्त्येन द्वितीयस्य दास्युत्पत्त्येन च द्वाभ्यामेव स्वामिन्यां विभज्य ग्रहोत्पत्त्या भवन्ति—इति बङ्गदेशचलित-विवादमङ्गार्षवक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुत्तारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दासेनोढा त्वदासी या सापि दासीत्वमानुयात् ।

यस्माद् मर्त्ता प्रभुस्तस्याः^१ स्वाम्यधीनः प्रभुर्यतः ॥

इतिविवादमङ्गार्षव (१ विद्या० पृ० ५३५ क) (दाय)कमसंग्रहादि-
(दायक०पृ० ५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ७२५) । १ ।

सा च द्विविधा । कस्यापि न दासी, अन्यदासी च । तत्र पूर्वा दासोढात्वमात्रेणैव दासेश्वरस्य दासी, परा च तत्प्रभोरनुमतिसहकारेण अनुमता च न दासी—इति कमसंग्रहग्रन्थलिखनम् (पृ० ५४) । २ ।

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायदुपागतः ।

अत्रा^२कालभृतस्तद्गृहाहितः स्वामिना च यः ॥

मोक्षितो महतश्चाण्ड युद्धे प्राप्तः परो जितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्या^३वसितः कृतः ॥

१ तस्याम्—दाकस० ।

२ ०प्रव्रज्यापस्त—नामस० ।

३ भ्रानादिभूतस्तद्गृहाहितः स्वामिना न यः । अथवाच मोक्षितोऽन्याद् युद्धप्राप्तः परो जितः—नामस० ।

मक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडंयामृतः ।

विक्रता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥

इतिविवादमहार्णव (१ विवा० ५१६ क) दायक्रमसंग्रहादि (दाकर्म०-
पृ० ५२) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं०—पृ० ६६) ॥३॥ ० ॥ ० ॥

एवञ्च यद्यप्यननुमत्या दासेन दासी परिणीता तदा च स्वस्वसा-
मिनोरेव दासदास्यो, तयोरेपत्यन्तु द्वाभ्यामेव स्वामिन्यां विभजनीयम्-इति
(दाय क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनत्रोति (पृ० ५५) ॥ ८ ॥ ० ॥

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६२—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुल
आलक मुन्दर रास साहेवेर हजुर हइते अग्राम-न्यवहार राजा
राशीभूपणदेवरायेर पत्ते अशी ? कमलारान्तचक्रवर्ति अपिलायट
गुरुगोविन्दचौधुरि रण्याडएटेर मकहमाय इङ्गरेजी १८२२ सालेर
१३ माह सेतम्बर मतावक वाङ्गला १२३५ सालेर ३० माह भाद्र
रोज शनिवारेर हओया रोवकारिर लिखित ऐ आदालतेर पण्डित-
गणोर नामे आपन्दा मिसिले जवाव दाखिल करयेर हुकुमे
सओयाल—

सओयाल—

कागज-सकलेर द्वाराय पट्ट आये ये पङ्कदेश निरासि राम
शाहुरराय नामिक एक व्यक्ति आपन जमिदारिर मध्ये एक ग्राम
आपन माता राजराजेश्वरीर भरण ओ पोपणेर परिवर्त्ते बाहा
त्गाद निर्दिष्ट द्दिल आपन माताके एइ प्रकार ओ एइ नियमे
तोपई करिल ये ऐ ग्रामेर विक्रय कयाला कृष्णप्रसादनन्दी एक

व्यक्तीर घिनामे लिखिया अन्य कोन व्यक्तिके ताहा विक्रय ओ हेवा ना करण, ओ ऐ राजराजेश्वरि आपन जीयइशा पर्थ्यन्त नांहार उपस्यत्वे भोगवान थाकने, ओ ऐ मुसम्मातेर सुत्युर पर ऐ ग्राम ऐ रामशङ्करे पुत्रे हथोन सम्वलित आपन मातार स्थान हइते एक किता एकरारनामा, ओ कृष्णप्रसादनन्द फरजि व्यक्ति हइते ऐ मुसम्मातेर लिखिया देओया एकरारनामार मजमुन मतो द्वितीय एक किता एकरारनामा लिखाइया लइल । तत् परे यखन सरकारेर वार्का खाजानार जन्ये समुदय महालेर, याहा ऐ रामशङ्करराय ओ ताहार पुत्र मोहनचन्द्रेर नामे कालेकटरि सिरस्ताते लेखाजाय, निलामेर इस्तहार कालेकटरि सिरस्ता हइत लटके, तखन ऐ राजराजेश्वरि ऐ रामशङ्करे अभिप्राय ओ फरजि व्यक्ति कृष्णप्रसादेर सम्मतिते ये ग्राम ऐ रामशङ्कर आपन माता मुसम्मात राजराजेश्वरिके नगद मास अचछादनेर परिवर्त्ते दियाच्छल द्वितीय एक व्यक्तीर हस्ते सम्यक प्रकारे विक्रय करिल । ओ ऐ कृष्णप्रसादनन्दर नाम हइते कवाला लेखा गेल । अतएव जिज्ञासा करा याइतेछे ये ऐ रामशङ्करे पुत्र मोहनचन्द्र प्राप्त व्यवहार थाकने, ओ द्वितीय विकार सम्वन्धे ताहार अनुमति ना थाकने, ओ ऐ मोहनचन्द्रेर अप्राप्त-व्यवहार ये द्वितीय विकार सम्वन्धे उहार अनुमति थाकने, फरजी व्यक्ती कृष्णप्रसादनन्दर लिखिया देओया द्वितीय विक्रयपत्र, याहा रामशङ्कर ओ ताहार माता मुसम्मात राजराजेश्वरि अभिप्राय मते हइयाछे, बह्मदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ सङ्गत बट कि ना इति ।

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीसुतआलकनुन्दरराससाहेबधर्माधि-
करणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य याहशाबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रथमलिखितप्रकारकरामशङ्कररायकर्तृकत्वस्वत्वासादीभूतसराजकर-
स्यावरान्तर्गतैकग्रामसम्बन्धिप्राथमिकछलविक्रयस्यार्थात् स्वमात्रे राजराजे-

श्वयं यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वभोगार्थं तद्ग्रामसमर्पणस्य प्रश्नपत्र-
लिखितप्रकारकाभ्यां राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रकृष्णप्रसादनन्दिनामक-
व्यक्त्यन्तरलिखितसंवित्पत्राभ्यां राजराजेश्वर्या यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वोत्पादकत्वपर्य्यवसायित्वेन तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां भूमौ
रामशङ्कररायस्य स्वत्वाविनाशकत्वात्, प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण राजरा-
जेश्वर्यै तद्ग्रामसमर्पणेन रामशङ्कररायस्य तद्भूमौ स्वत्वाविनाशकयोर्वास्त्वं
दानविक्रययोरनवगमाच्च, एषञ्च सति पितृस्वत्वे विद्यमाने युषस्वत्वाभावा-
द्योषकयद्गदेशचलितशास्त्रेण प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां
भूमौ मोहनचन्द्रस्य पितृ रामशङ्कररायस्य स्वत्वे विद्यमाने मोहनचन्द्रस्य
स्वत्वोत्पत्तिर्न भवति । नहि राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रेण राजराजेश्वरी-
मरणोत्तरं मोहनचन्द्रस्य स्वत्वं रामशङ्करस्य स्वत्वविनाशो वा तद्ग्रामे तद्-
ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वे वा भवति । उपरिलिखितप्रकारेण राजराजेश्वर्या यावज्जीवं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वमात्रस्वामित्वेन तद्ग्रामस्वामित्वाभावात् स्वमरणोत्तरं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वास्वामित्वात् राजराजेश्वरीलिखितैतादृशसंवित्पत्रस्य धर्म-
शास्त्रोक्तस्वत्वोत्पादकहेतुनन्तःपातित्वाच्च । एषञ्च सति जीवन्त्यां राजरा-
जेश्वर्यां रामशङ्करराये च जीवति सति सर्व्वथैव तद्ग्रामस्य तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वस्य चास्वामिनो मोहनचन्द्रस्य तद्ग्रामसम्बन्धिद्वितीयविक्रये अनुम-
तेरनावश्यकत्वेन तस्यमाप्तव्यवहारतार्या तदनुमतावसत्यामप्राप्तव्यवहारतार्या
च तदनुमतौ उत्पामपि द्वितीयविक्रयस्य तद्ग्रामसम्बन्धिभूस्वामिरामशङ्कर-
रायाभिप्रायेण कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरानुमत्या चोपरिलिखितप्र-
कारेण यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वस्वामिराजराजेश्वरीकृतत्वेनैव यदा
राजप्राहरकरग्रहणार्थं समुदायस्य सराजकरस्थावरस्य यत्तद्रामशङ्कररायतत्पु-
त्रमोहनचन्द्रयोर्नाम्ना फेलटरीमञ्जकराजस्थाने लिखितं तस्य निलामसंज्ञक-
विक्रयाशा तत्स्थानाभिपतिना दत्ता, तदा उपरिलिखितप्रकारेण जातत्वेन च
सिद्धेर्निष्पत्सूहृत्वेन तत्प्रमाणभूतं कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरान्ना
लिखितं द्वितीयविक्रयपत्रं यत्तद्राजराजेश्वरीरामशङ्करोभयसम्मत्या जातं शा-
स्त्रानुसारेण सिद्धं सद्गतञ्च भवति, यतः स्वामिसम्मत्या अस्वामिकृतोऽधि-
विक्रयः शास्त्रसिद्धः-इति बह्वदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तायत्नी-

दायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र चाप्युपधि पर्येतत्सर्वं विनिवर्त्तयेत् ॥

इति मनुवचनम् (८, १६५) ॥ १ ॥

योगशब्दश्छलवाची । छलेन ये धन्वकविक्रयदानप्रतिग्रहाः क्रियन्ते न तत्त्वतो, अन्यत्रापि निःक्षेपादौ यत्र छद्म जानीयात्, धस्तुतो निःक्षेपादि न कृतं तत्सर्वं निवर्त्तते । इति मन्वथंमुक्तावल्यां (पृ० ३०३) कुल्लूक-मट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥

पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥

इति दायभाग (पृ० १३) दायतत्त्व (पृ० ३) विवादभङ्गार्णवादि (२ विवा० ५ क) मन्वधृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुवचनम् (१०, ११६) ॥ ४ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

सुर्य्युर्धयेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागादि (पृ० ३५) मन्वधृतनारद (१३।४२-४३) वचनम् ॥ ५ ॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादभङ्गार्णव (१ विवा० ३०३ ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख २० माह माई सन १८२८ ई० मोतायक ८ माह ज्येष्ठ सन १२३५ वाङ्गला रोज मङ्गलवार एइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक मुन्दर रास साहेबेर बैठके—

रत्नसिंह

साएल

साएल हाजिर आसिल । साएतेर सओयाल एक आना छय दाम तेर कौडी नओ दुडिर । मफरमा ताहार त्रिगुण उपस्वत्य मवलग १३२१-११४ उनिप दामा तिन कौडीर तायदादे खास आपिल मजुर करणेर विषय एलाके आजिमावादेर प्रचिनसन कोटेर हाकिमगणेर नामे हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय मसम्मात धुषु ओ फथेसिंह ओ नियधारिसिंह ओ धोकलसिंह ओ कानायासिंहेर पत्तेर आपन नामिक मोच्चारनामा ओ एइ सनेर फेरवओरि माहेर ६ तारिखेर लिखित अजिमावादेर आपील आदालतेर एक कीता रोवकारिर नकल ओ ई १८२२ शालेर डिसम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित जेला बेहारेर रेजिष्टर साहेबेर डिगरिर नकल एक केता ओ ई० १८२५ शालेर माइ मासेर ११ तारिखेर लिखित ऐ जिलार जज साहेबेर डिगरिर नकल सहित ये गत दिवस हुजुरे दाखिल हइयाछिल अद्य दृष्टे आसिल । यथा साएलेर सओयालेर सम्बन्धे चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्वे ए आदालतेर परिडतदिनेर उपर सओयाल करा उचित घोष हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर परिडतगणके एइ हुकुमे अर्पन करा जाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेन ।

सओयाल—यद्यपि जिले बेहार निवासिनी हिन्दु एक स्त्री आदालत हइते आपन पतिर हिस्सा वाधत एक आना छय दाम तेर कौडी नओ दुडी जमिदारिर डिगरि हासिल

करिया ऐ रकमेर भूमि सकल स्वतन्त्र करिया लखोनेर ओ ऐ डिगरि मते ताहार उपर दखिल हओनेर अनुमति डिगरिते लिखा थाकनेओ आपन हिस्वार भूमि सकल पृथक करिया ना लइया हिस्वार सदी मते ताहार उपस्वत्व लइया पुत्र सन्तान ना राखिया मरे, एवं ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगण आपनादिगके ऐ हिस्वार स्वत्वाधिकार ओ एवं ऐ स्त्रीर पतिर भ्रातार सन्तानरा ऐ हिस्वा आवश्यक थाकन एजहारे ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगणेर स्वत्वेर अस्वीकारे आपनादिगके ऐ रकमेर स्वत्वाधिकार करार देय—एसत अघस्थाय डिगरि हओया रकम बण्टक किम्बा अवरटक बोध हवेक, ओ ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ दौहित्रगणके अथवा साहार पतिर भ्रातार सन्तान-गणके अर्पिवेक इति ।

श्रीर्जयतिराम्

जयव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतशालकमुन्दरराससाहेबधर्माधि-करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते यदि तत्प्रभुपत्रलिखितायाः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो जातः स्वात्तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहित-त्वेन तत्पतिभ्रातृपुत्रादिभिर्बलात्कारेण विभक्तं तत्पत्यंशं गृहीत्वा समुदायध-नमस्माकं साधारणमेव, नात्र विभागो जातः, अतएवेयं^१ पत्यंशयोम्यं प्राप्तुं नार्हतीत्युक्त्वा^२ तस्यै विभक्तः पत्यंशो न दत्तरचेत्तदा यदि सा धर्माधिकरणे निवेदनं कृत्वा स्वपत्युर्विभक्तंशस्य जयपत्रं प्राप्तवती, तजयपत्रलिखित-धनस्य पृथक्कृत्यं^३ ग्रहणस्यान्ते सति^४ तजयपत्रे लिखिते सत्यपि सा पृथक्-

१. ०अत्र वेदं—न्यप० ।

२. प्राप्तं नईनीत्युक्ता त स नि०—न्यप० ।

३. पृथक्०—न्यप० । ४. ग्रहणस्यान्तमती तजयपत्रे लिखिताया इत्यमपि—न्यप० ।

कृत्य तद्गृहीत्वा तदुपयुक्तोपस्वत्वं गृहीत्वा च मृताचेत् तथापि तत्रयपत्र-
लिखितघनं विभक्तमेवावगम्यते । एवं मृतायास्तस्याः स्त्रिया दुहितुस्त-
दभावे दौहित्राणां तत्राधिकारस्तस्याः पत्युर्भ्रातृपुत्रादीनां नाधिकारः ।
यदि च तस्याः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो न जातश्चेत्तदा प्रभुक्त
प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तथा अविभक्तघने पतियोग्यांशस्थावरोत्पन्नोपस्व
त्वग्रहणेऽपि तत्रयपत्रलिखितघनमविभक्तमेशवगम्यते । एतत्तत्रे तद्घने
तस्याः पतिभ्रातृपुत्रादीनामधिकारः, न तु तद्दुहितृणाम्, तदभावे दौहि-
त्राणां वा—इति चेद्व्याख्याप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-
घवव्यवहारमूलव्यवहारकौस्तुभमिताक्षराटीकासुत्रोपिनोव्यवहाराध्यायचाल
म्भट्टकृतमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशेषु
विपयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरा (पृ० १६७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशो व्यव-
स्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदय (पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्युभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्ता संसृष्टिघनभाजः (विमि० पृ० ५५६) ।
दुहितुरभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् (पृ० ६६१) ॥ ३ ॥

एवं दौहित्रभ्रातृमुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवच-
स्यशांहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव बलवान् । अविभक्तत्वे (तु) तद्-
भ्रातृमुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां
चालम्भट्ट (पृ० ८२०) लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

६४—रोवकारि मिसिल आदालत दिमानि सदर तारीख ७ माह आगष्ट सन १८२८ अङ्गरेजी मतावक १४ माह श्रावण सन १२३(?) बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ओइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर बैठके—

गङ्गाधरवाचस्पति

साएल

साएलेर उकील मुनसी फकिर महम्मद हाजिर आइलो । साएलेर हस्त हइते फतेहपुर परगणार मीजे आमरसिर बन्धक खालास विषये वारानसेर कोर्ट आपीलेर हाकिमानेर हुकुमेर असम्मतिते ओ ताहार बन्धक हओनेर विषये एइ आदालत हइते उचित हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय अन्य हेतु सम्बलित सइलेर सओयाल ओइ उकिलेनर नामिक उकालतनामा ओ एइ सनेर आपरेल मासेर तारिखेर लिखित वारानसेर आपील आदालतेर रोवकारीर नकल ओ इ १८ (?) सालेर आगष्ट मासेर तारिखेर लिखित जिला फतेपुरेर आदालतेर एककिता रोवकारि नकल सम्बलित याहा एइ मासेर २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल । यथा साइलेर सओयालेर सम्बन्धे हुकुम सादर हओनेर पूर्व शाखेर विवरण ज्ञात हओन उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये आदालतेर परिद्धत-गण निचेर लिखित सओयालेर जवाब एक सप्ताह गध्ये दाखिल करेण ।

सओयाल

यद्यपि वारानश देसेर कोन जमिदारि चारि सरीकेर मध्ये एकत्र ओ साधारणे थाके, ओ जमिदारीर सरीकगण मध्ये दुइ जने आपन २ अवयटक हिस्सा काहारोनिकट बन्धक राखे, तवे एइ प्रकार बन्धक वारानस देसेर चलित शाखानुसारे सिद्ध बट

कि ना ? ओ ताहा सिद्धि हथोन विषये अन्य सरिकेर अनुमति आवश्यक कि ना इति ।

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकमुन्दरराससाहेबवर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रथमप्रतिरूपपत्रमवलोक्य माहेशचोषो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ।

यद्यपि वाराणसीप्रदेशीया काचित्सराजकरभूधनुर्णामंशानां मध्ये एकव्यसाधारणे यत्ते । अथ च सराजकरभुवोऽशिना मध्ये द्वाविभक्तस्वत्वांशकस्यचिरिकटे बन्धकीकृत्य रत्तः, तदैतादृशबन्धककरणभवशिष्टयोर्द्वयोरशिनोरनुमति विना सिद्धं न भवति । अतएव तत्सिद्ध्या अरयन्तरानुमतिरवश्यकी—इति वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीधरत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्या । विभक्तेषु तु (उत्तरकालं विभक्ताग्निक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा न पुनरेकस्यानीधरत्वेन । अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धवत्येवेति ध्यात्वेयः—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एइ सजाल सोलही अगस्ति १६ रोज शनिवार प्रहर पाँच घण्टाके बखत मिला, ओ एदैन २१ अगस्ति रोज बुधरतिवार चारि घण्टाके ... व्यवस्था दाखिल किया सिरस्तामों ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यरायमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

नं० २५५३

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ११ माह आगस्त सन १८२८ इङ्गरेजि मतावक २८ माह श्रावण शान १२३५ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शेलि साहेवेर बैठके—

जयरामधामि स्वयं ओ मृत वखोरिधामिर स्त्री दिपुधामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्र धामिर पत्ते अलि प्रकारे—

मुशानधामि

आपिलाष्ट

रप्पाडष्ट

स्वयं आपिलाष्ट ओ रप्पाडष्टेर उकिल मीनधि गोलाम एज-
दानि हाजिर आसिल । ए मकदना इ १८२७ सालेर २५ आगस्त
मासेर हओया रोवकारि लिखि । सावे क द्वितीय हाकिमेर हुकुम
मते एइ मासेर सावेक ६ आ ७ तारिखे रावकार हइया ओ
जिलार आदालतेर दाखिल हओया कागज सकल १ लम्बर
हइते तथाकार फयशला ओ प्रवणसन कार्टर कागज सकल
तथाकार फयशला ओ ए आदालतेर कागज सकल १ लम्बर
हइते ३३ लम्बर तरु पडागिया दिवा अवरान प्रयुक्त स्वकित
छिलो, पुनराय अथ उपस्थित हइया ए आदालतेर वाकि कागज
सकल इ १८२७ सालेर २५ आगस्त मासेर लिखित सावेक
द्वितीय हाकिमेर राय सम्बलित दृष्टे आसिल । जानागेत ये जिला
वेहारेर जज साहेब ऐ जिलार आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था
लओन परे आपिलाष्टेर पूर्व पुरुस भोलाधामि ओरफे लछुमन
धामि ओ मृत वखोरिधामिर दावि डिफरि करेन । प्रवणसन
कोर्टे हाकिमगण शाब्दानुसारे भोलाधामि ओरफे लछुमनधामिके
मशाम्मात नेवाजो मतोफिया पुण्यपुत्र करण ओ मशाम्मात
मजहुरा वृत्ति रामशिला प्रभृति ऐ धामिके दान करयेर क्षमता
ना थाकन ज्ञान करिया जेलार डिगिरि रद्द करियाछेन । किन्तु

तद्विवादप्रत्ययिनी नेवाजोनाम्नी दत्तोत्तरतात्पर्यायें च भयंनुमत्यभावस्य निश्चितत्वेनावगमात् । एवं तस्या नेवाजोनाम्न्या रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य त्रस्यै लक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनाम्ने^१ दानकरणक्षमतापिवास्तवं नासीत् तत्प्रजातान्तर्गतैतद्धर्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रेणैवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयजवपत्रेण च एतद्धर्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्माधिकरणप्रत्ययिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पतिधनत्वेनावगमाद् अथ च तत्प्रजातान्तर्गतैतद्धर्माधिकरणीयचतुरङ्काङ्कितमाधवराभनाम्नकार्यिसम्बन्धिविवादनिविष्टनेवाजोनाम्नीप्रत्ययिनीदत्तोत्तरपत्रेणैवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्माधिकरणप्रत्ययिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतरामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पत्युः क्रमागतत्वेनावगमाच्च । यतस्तदुपरिलिखितप्रकारकपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तस्वेव्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि पत्या दानानधिकारः । प्रकृते तु तत्प्रजातान्तर्गतजिलाख्यधर्माधिकरणीयचतुर्विंशत्यङ्काङ्कितलक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनामकोद्देश्यकदानपत्रेण विवादास्पदीभूतधनस्यादृष्टार्थकदानानवगमाद् वरं विवादास्पदीभूतोपरिलिखितप्रकारकसमस्तपतिधनस्य स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च नेवाजोनाम्नीकर्तृकदानावगमाच्च—इति वेदाराख्यप्रदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्धर्तुः—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ७) दत्तकचन्द्रिका (पृ० ३) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थभूतवशिष्टवचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पाजयन्ती गुरो स्थिता ।

सुजीतामरणान् ज्ञान्ता दायादा उर्ध्वमानुयुः ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख पृ० ६२७)ग्रन्थभृतकात्यायन(कास्मृ०
६२१)वचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख पृ० ६२८)ग्रन्थभृतभारत(१३।४७।२४)
वचनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

नं० २६=४

६६-रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर वारिख
१९ माह आगस्त सन १८२= ई मलायक माह ५ भाद्र सन १२३५
वाङ्गला राज मङ्गलवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम धीयुत राव-
रट हालडन राटार साहेबेर बैठके ।

राजा गिरीशचन्द्रराय

आपिलाष्ट

मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण राज-
कोटर नरहरिचन्ददेवराय प्रभृतेर उद्ध राजा उमेशचन्द्रराय-
रप्पाडष्ट-

आपिलाष्टेर उकिल मुनसि गौलाम मण्डल, रप्पाडष्टेर
उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल । एइ मकईमा कत्य
रोयकार हइया प्रविशान कोटेर कागजसफल १ लग्नवर हइते
तथाकार फयशाला पर्यन्त थो ए आदालतेर दाखिल हओया

आरसि' मजुयात पढागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थित स्थित । पुनराय अय उपस्थित हइया ए आदालते दाखिल हइया जवाव दृष्टे आसिल । देशेर सर्वकालेर डाँडा आछे ये हिन्दु जाति ये पितार मृत्युर परे ताहार धन ओ वस्तु उत्तराधिकारिगणेर मध्ये बँटक हय । किन्तु ताहार बहिर्भूत उभयेर पूर्व पुरुष मृत राजा कृष्णचन्द्रराय आपन जीवदशाय कोटेर नधिते दाखिल हओया हेवानामाय आपन समुदाय वस्तु अन्य पुत्रगणेर नैराशे आपिला-एटेर पितामह ज्येष्ठ पुत्र राजा शिवचन्द्ररायके लिखिया दियाछे । यद्यपि ऐ राजा हइते देशेर ओ नियमेर डाँडार बहिर्भूत हइयाछे, तथा' च राजार दानकारण ओ हेवानामा लिखिया देओनेर क्षमता ताहाके छिल । किन्तु यथा ऐ हेवानामाते लेखा गियाछे ये कोडर शम्भुचन्द्रदेवरायेर अधिक पुष्य शालियाना मबलग १५००० हाजार टाका ओ कोडर महेशचन्द्रदेवरायेर शालियाना मबलग १०००० हाजार टाका ओ कोडर नरहरिचन्द्रदेवराय अप्राप्त-व्यवहार प्रभृतिर पिता कोडर ईशानचन्द्रदेवरायेर' शालिआना मबलग १०००० हाजार टाका ओ मृत भैरवचन्द्रदेवरायेर पुष्यपुत्र माधवचन्द्र देवरा(ये)र २५०० आडाइ हाजार टाका ओ मृत कोडर हरचन्द्रदेवरायेर पोष्यपुत्र यज्ञचन्द्ररायेर' शालिआना मबलग २५०० आडाइ हाजार टाका मशहरा देयाइया पाइवेन इति, ओ हेवानामाद मजमुनेर द्वाराय राजार आकांक्षा स्पष्ट बोध हइतेछेना ये मशहरा पाडयागणेर मृत्युर पर ताहांदिगेर उत्तराधिकारिगण मशहरा देइया पाइवेन, किन्वा बन्ध हइवेक । ओ आमार बुद्धे आइसे ये अन्य पुत्रगणेर जन्ये येसकल मशहरा नियुक्त राखि-याछे' ताहा फलितार्थे जामिदारि' प्रभृतिर अंशेर बइले ये ताहारो ओहार स्वत्वाधिकार छिल, हइयाछे । ओ ऐ हेतुते ऐ मशहरा

१. आरसि—इति तापीयान् पाठः । २. तथा च—व्यप० ।

३. देवराय—व्यप० ।

४. यज्ञचन्द्रराय शालि०—व्यप० ।

५. रामिया दे—व्यप० ।

६. जमिदारि प्रभृ०—व्यप० ।

प(१)इया गणेर उत्तराधिकारिगणसकल आपन आपन पूर्व पुरुष-गणेर सत्वे नियुक्त हओया मशाहेरा, याहा उहादिगेर पूर्व पुरुष-गणेर जमिदारि प्रभृतिर हिस्पार वदले वटे, पाओनेर वलवान स्वत्वाधिकारि बोध हय । किन्तु ऐ हेवानामाय मशाहेरार विस्तारित लेखा ना थाकन सन्देह प्रयुक्त ये ऐ मशाहेरासकल ताहा पाइयागणेर जीवदशा पर्यन्त वहाल थाकिवेक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर पर ओहादिगेर उत्तराधिकारिगणकेओ अशिंवेक । ऐ विषयेर उचित हुकुम सादर हओया अनुचित । अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व सन्देह छेदनार्थे एइ आदालतेर परिडनगण हइते एइ विषय जिज्ञासा करण उचित हइल ये यद्यपि मृत राजा कृष्णचन्द्ररायेर अन्य पुत्रगण पितृ-जमिदारि प्रभृति मालामालेरे अंश हइते नैराश हइवेन, ओ जमिदारि प्रभृतिर अंशेर वदले उहार दिगेर जन्ये मशाहेरा नियुक्त हइल, ए प्रयुक्त मशाहेरा पाओइया-गणेर जीवदशा तक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर परे उहादिगेर उत्तराधिकारीगणकेओ ऐसकल मशाहेरा अपेन परिडतगणेर विवेचनाय हय । उचित ये हेवानामार मजमुन सुन्दर प्रकार हात हइया ऐ विषयेर जवाब आएन्दा मङ्गलवारेर दश घण्टा पर्यन्त दाखिल करेन । अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारि नकल हेवानामा सहित परिडतगणके अपेन करा जाय ओ अद्य मकदमा सकित थाके इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणपत्रमाधिपतिधीयुतरावटंशालइनराटरिसाहेवधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य तत्सम्बन्धितज्ञानपत्रार्थमङ्गल्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ययदि मृतस्य राहः कृष्णचन्द्ररायस्यान्ये ये पुत्राः पितृकणराजकरभू-

प्रभृतिधनांशाभिरस्ताः अथ च सराजकरभूमभृतेरंशविनिमये तेषां प्रभुस-
मर्पितविचारपत्रलिखितप्रकारेण वार्षिकं नियुक्तम् । अतो वार्षिकग्राहिणां
मरणानन्तरं तेषामुत्तराधिकारिणामपि तत्समस्तवार्षिकसमर्पणमस्मद्विवेचने
सिद्धं भवति, यतः प्रभुसमर्पितदानपत्रेण मृतराजकृष्णचन्द्ररायकर्तृकराज-
शिवचन्द्ररायोद्देश्यकस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनदानावगमात् । तत्र
यदि राजशिवचन्द्ररायमरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणां तद्दानाधीनराजशिव-
चन्द्ररायस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनाधिकारस्तदा तदानपत्रलिखि-
तवार्षिकदानाधीनदानपत्रलिखितवार्षिकग्राहिवत्वास्पदीभूतवार्षिकधने तेषां
मरणानन्तरं तद्वार्षिकग्राह्युत्तराधिकारिणामप्यधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद्,
दानस्य उभयत्र तुल्यत्वाद् वार्षिकस्य तेषां सराजकरभूमभृतिधनांशविनिम-
यत्वात् । यतस्तद्दानेन वार्षिकग्राहिणां स्वत्वोत्पत्तिरत एव तदुत्तराधिकारिणां
तद्वार्षिकस्य दायत्वेन स्वत्वोत्पत्तेर्निष्पल्युहत्वात् । अथ च दानपत्रलिखित-
प्रकारेण स्वपुत्रभैरवचन्द्रदेवस्य श्रीरसपुत्रापेक्षया जपन्यदत्तकपुत्रमाधव-
चन्द्रदेवसंशकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन स्वपुत्रहरचन्द्रदेवस्य दत्तकपुत्र-
यशचन्द्रदेवसंशकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन च एवं मया यो नियमः कृत-
स्तस्योक्तदृष्टानं तैरेयं त्वया च कदाचिदपि न कर्तव्यम् ; यदि कश्चित्
कदाचिदेतन्नियमस्यान्यथाचरणोद्युक्तस्तदा तदन्यथाचरणं लोकतो धर्मतश्च
राजसन्निधौ चाग्राह्यमितिदानपत्रलिखनेन च मृतस्य राशः कृष्णचन्द्ररायस्य
तथाभिप्रायावगमाच्च—इति वङ्गदेशचर्चितमनुदायभागादिप्रन्थानुसारिणी
व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनम् । (५।१५२) ॥ १ ॥

सप्त विचागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचनम् ।

(१०।११५)

ततश्च पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

लं० २५६०

६७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २५ माह सेतम्बर सन १८२८ ईं मतावक ११ माह आश्विन सन १२३५ चाङ्गला रोज बुद्धस्पतिवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रोयुत उलयम नसष्टर साहेवेर बैठके ।

जयमणिदेव्या प्रभृति

आपिलाएटगण

फकिरचन्द्रचक्रवर्त्ति

रप्पाडएट

आपिलाएटगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रप्पाडएटेर उकिलगण मुनशी दादार वक्स ओ प्राणचन्द्रचट्टोपाध्याय हाजीर आसिल । ए मकदमा एइ सनेर आगष्ट मासेर २६ तारीखे आमार बैठके रोवकार हइया ए मकदामार खास आपिल मञ्जुरि हेतु सम्बलित ईं १८२३ सालेर नवम्बर मासेर ८ ओ ईं १८२४ सालेर जानओरि मासेर ७ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारि-सकलेर दृष्टे बोध हइल ये ए मकदमा शाखे सम्पर्क राखन ओ साखेर हेतुसकल यथार्थ विवेचना ना हओन दृष्टे ताहार आपिल मञ्जूर हइयाछे । अतएव समुदय फागज दृष्ट हओनेर पूर्व ऐ आदालतेर पण्डितगण हइते निचेर सओयालसकलेर जवाबे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकूम हइल ये एइ रोवकारि नकल ए आदालतेर पण्डितगणके समर्पण करा जाय, ये ऐ

सञ्चोयालसकलेर जवाय वङ्गदेश चलित शाखानुसारे एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

प्रथम सञ्चोयाल । यद्यपि एक व्यक्ति पैतृक देवोत्तर भूमि-सकल ओ देवसेवार पालि राखिया आपन स्त्री ओ पुत्र ओ पुत्रवधुर समत्ते मरे, ओ कथक दिवसान्तर मृत व्यक्ति पुत्र ओ माता ओ स्त्री राखिया निसन्तान मरे, तवे दुइ खिलोक अर्थात् सासुडि ओ पुत्रवधुर मध्ये के ऐ त्यक्त धनेर स्वत्वाधिकारिणी हइवेक ।

द्वितीय सञ्चोयाल । यदि स्यात् मृत व्यक्ति पुत्रे मृत्युर पर सासुडि ओ पुत्रवधु अनन्य प्रयुक्त ऐ सकल देवोत्तर भूमि सेवार पालि हिस्सा करिया लइया ताहार नादावि आपनादिगेर हिस्सा दान विक्रयेर स्नेमतार नियमे लिखित ओ पडित करिया थाके, तवे शाखानुसारे देवोत्तर भूमि ओ ठाकुरसेवार पालि बाबत एमत लिखित पडित सिद्धि कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल । यदि दुइ खिलोक नादाविर लिखित पडितेर अनुसारे देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालिते दखिल हइया ऐ सासुडि आपन पुत्रवधुर जिवदशाते आपन अंशेर देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालि काहारो निकट बन्धक राखेन, किम्वा आपन परकालेर कर्मेर पैतृके अथवा पतिर ऋण परिशोधनार्थ काहार हस्ते विक्रय करिया थाके, तवे एमत विक्रय-सिद्धि इहवे कि ना इति ।

श्रीर्जयतिराम्

जवावव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतश्रिलियमनवष्टरसाहेवधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिलिपपत्रमवलोक्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारेषोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकः कश्चित् पित्राद्यायत्तभूतां समस्तां देवप्रभूमिमय च देव-
सेवायाः कालिकाशं च संरक्ष्य विद्यमानायां स्वपत्न्यां स्वपुत्रे च विद्यमाने
पुत्रवध्वां च विद्यमानायां मृतः, ततः किञ्चित्कालानन्तरं मृतव्यक्तेः
पुत्रोऽपि स्वमातरं स्वपत्नीं च संरक्ष्य निःसन्तान एव मृतः, तदा द्वयोः
श्वश्रूपुत्रवध्वोर्मध्ये पुत्रवधूरेवोपरिलिखितप्रकारकघनेऽधिकारिणी भवति,
यत उपरिलिखितप्रकारेण पितृमरणोत्तरं तत्पक्षघने तत्पुत्रस्याधिकारे
जाते सति तद्धनं तत्पुत्रस्यैव जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारि-
णामेव तद्धनाधिकारः । तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य प्रभपत्र-
लिखितप्रकारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या एव प्राधान्यमिति—

अत्र प्रमाणम्—

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्का-
लङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
(दायभा० पृ० १२१) घृतयाश्वल्स्यवचनम् (२।१३५) ॥ २ ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतव्यक्तेः पुत्रस्य मरणानन्तरं श्वश्रूपुत्रवध्वोरनीक्येन तत्समस्तः
देवप्रभूमिमय च देवसेवायाः कालिकाशं च विमज्य ताभ्यां गृहीत्वा तस्य
देवप्रभूम्यादेः स्वध्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया कल्पितस्वस्वांशदानविक्रयज्ञमता-
नियमेन लिखितं कृतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण देवप्रभूमेदेवसेवायाभ-
कालिकाशस्यैतादृशं लिखितं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथममरणोत्तरलिखित-
प्रकारेण पुत्रवध्वा एव पतित्यक्तघनाधिकारित्वेन तस्याश्च तद्धने स्वेच्छया-
दानविक्रयैतादृशविभागकरणज्ञमताविरहाद् देवप्रभूमौ देवमिज्ञानां केया-
ञ्चिदपि स्वत्वामायाञ्चेति—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्यं बाह्यास्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शुभोच्छ्रष्टेन जीवति ॥—इति मनु (११।२६)

वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवत्वम्—इति कुल्लुकभट्ट (पृ०

४३०) व्याख्यानम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुजीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादि

(पृ० १७१) ग्रन्थभृतकात्यायन(कास्मृ० ६२१)वचनम् ॥३॥०॥०॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वे स्त्रियौ स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया लिखितानुसारेण समस्त-
देवत्रभूमौ देवसेवांशे चायत्तत्वं सम्पादितवत्यौ, तयोर्मध्ये श्रद्धार्जिवन्त्यां
स्वपुत्रवध्यां तल्लिखनानुसारेण स्वांशभूतत्वेन मन्यमाना या देवत्रभूमेस्तथा-
विषस्य देवसेवांशस्य च कस्पचिन्निकटे अन्धकमयवा स्वस्वर्गायोऽल्लेखे-
नाथवा पतिकृतर्णापाकरणयोऽल्लेखेन विक्रयं वा कृतवती तदैतादृशविक्रय-
करणं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तस्यास्तद्ध-
नस्वामित्वाभावाद्, द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया-
लिखितस्यासिद्धत्वेन तल्लिखितानुसारेणापि तस्यास्तद्धनस्वामित्वाभावाच्च-
इति वदन्देशचलितमनुकुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्तयेत् ॥—विवादभङ्गार्थवादि

(१ विवा ३१७ ल) ग्रन्थभृतकात्यायन(कास्मृ०—६१२)वचनम् ॥ १ ॥

१. ० देवतातदर्थम्—व्यप० ।

२. श्रियो—व्यप० ।

३. देवत्र देवत्र भूमौ—व्यप० ।

४. सम्पादितवत्यो—व्यप० ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु (८।१६६)
वचनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

६८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
१ माह दिशम्बर सन १८२८ ई मतावक १७ माह अग्रहायण शन
१२३५ वाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत फट-
वरट थरलेन सिलि साहेवेर वैठके ।

मृत बाबु अभयनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात पुनितकोडर ओ
कन्या मुसम्मात अस्यमोधकोडर— साएल ।

साएलानेर उकिलगण मुनशी दादार वकूस ओ मुनशी महम्मद
आलि खा ओ बाबु रूपनारायणसिंह, द्वितीय पत्तेर उकिल सदा-
मुक्त पण्डित हाजिर आसिल । एइ सनेर नवम्बर मासेर २६
तारिखे उभयेर दाखिल करा सओयाल प्रभृति ताहार सम्पर्कीय
कागजसकल आमार वैठके उपस्थित हइया दिवा अवसान प्रजुक्त
स्थिति छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया ऐ कागजसकल एइ
सनेर २७ आगस्त ओ २५ सितम्बर मासेर लिखित द्वितीय हाकिम
ओ पञ्चम हाकिमेर राय सम्बलित दृष्टे आसिल । तन् परे बाबु
रूपनारायणसिंहेर उकिल ई १८२७ शालेर मार्च मासेर २४ तारि-
खेर निवेदित आजिमावादेर प्रविनसन फोर्टेर दाखिल हओया
जेला त्रिहोतेर फालेकट्टर साहेवेर सओयालेर एक किता नकल ओ
इङ्गरेजि छय किता चिटिर नकल दाखिल करिल, पढागेल । यया

एइ मकदमार चूडन्त हुकुम सावर हओनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन उचित हइल अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर दाखिल हओया कागजसकलेर सम्वलित एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितगणके सम-पण करा जाय ये ए आदालतेर पण्डितगण ऐ कागजसकलेर दृष्टे मैथिल देसेर चलित शास्त्रानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

सओयाल —

चौधरिरी आजितसिंहेर तिन पुत्र । प्रथम बाबु दिगविजयसिंह, द्वितीय बाबु सर्वजितसिंह, तृतीय बाबु उमराओसिंह छिल । उमराओसिंह तृतीय पुत्र निस्वन्तान मरिल । बाबु दिगविजयसिंहेर पुत्र बाबु भुपनारायनसिंह ओ बाबु सर्वजितसिंहेर पुत्र बाबु रञ्जीतसिंह उत्तराधिकारित्व स्वत्वे आपनर पितार माल ओ मिलकियते भोगवान् छिलेन । ताहारद्विगेर मृत्युर पर बाबु भुपनारायणसिंहेर पुत्र बाबु अभयनारायणसिंह ओ बाबु रञ्जितसिंहेर पुत्र बाबु रूपनारायणसिंह आपनर पितार त्यक्त धन ओ वस्तुते दाखलकार हइया बाबु अभयनारायणसिंह मुसम्मात पुनितकोडर स्त्री ओ मुसम्मात अस्यमेपकोडर कन्या, आ तृतीय पुनिसिय खुडतात भ्राता बाबु रूपनारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय । अतएव जिज्ञासा जाय जे यद्यपि बाबु अभयनारायणसिंह आपन मृत्युर पूर्व तालुक केवल नारायणपुर प्रभृतिर अर्द्धक-हिस्वार उपर आपन खुडतुता भ्राता बाबु रूपनारायणसिंहेर साधारणे दाखिल थाकिया मरिया थाके तवे ऐ मृत व्यापार त्यक्त वस्तु कोन व्यक्तिके अर्थात् स्त्री, किन्वा कन्या, किन्वा बाबु रूपनारायणसिंहके असिबेक । ओ यद्यपि ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त अर्द्धक हिस्वा ताहार मृत्युर पूर्व विभाग हइया ऐ मृत व्यक्ति विभाग अनुसारे ताहार उपर भोगवान हइया मरिया थाके तवे ऐ व्यक्तिगणेर मध्ये कोन व्यक्तिके मृत व्यक्तिर त्यक्त वस्तु असिबेक इति ।

श्रीजयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरलेनसिलीसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद् विवादविषयनिविष्ट-
पत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते-

यद्यपि मृतबाहुध्रमयनारायणसिंहः स्वमृत्योः पूर्वं केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्यार्द्धांशे स्वपितृव्यपुत्रबाहुरूपनारायणसिंहस्य साधा-
रस्येन भुञ्जानस्यन् मृतस्तदा तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तं केशवनारायण-
पुरप्रभृतिसराजकरस्थावरस्यार्द्धांशं बाहुरूपनारायणसिंहः सपिएडत्वेन साधा-
रण्यप्रतियोगित्वेन च प्राप्तुं शक्नोति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूत-
क्रमागतसराजकरस्थावरान्तर्गतकेशवनारायणपुरप्रभृतिप्रामाण्यां तत्तद्प्रामा-
न्तर्गताया भूमेवां अशपरिच्छेदानवगमाद् यत् तत्पत्रजातान्तर्गतरिजीशब्द-
प्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशतान्दीयनवम्बरमाक्षीयचतुर्थदिवसलिखित-
घोरभुक्तिप्रदेशीयकलकटरपदाभिपिक्तसाहेवलिखितविचारपत्रेषु^१ सप्त-
विंशत्यधिकाष्टादशशतान्दीयापरेलमाक्षीयपञ्चमदिवसलिखितकलकटरपदा-
भिपिक्तसाहेवकृतनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्याभयनारायणसिंहरूपनारायणसिंहयोस्ताधारण्यव-
गमाद् एतादृशक्रमागतसाधारणधने पत्नीदुर्दिनोरधिकारप्रतिपादकं मिथि-
लादेशचलितशास्त्रामावाच । यदि च तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तार्द्धांशो-
विभक्तः, सा च मृतव्यक्तिविभागानुसारेण तदुपरि ह्यायत्तत्वं सम्पाद्य मृता,
सदोपरिलिखितानां मध्ये पुनीतमोमराख्या, तत्पत्नी, तस्या एव मृतव्यक्ते-
स्त्यक्तधनं प्राप्तुं शक्नोति, पुत्ररौत्रप्रगौररहितस्य मृतस्य विमक्तधने पत्न्या-
प्रधानाधिकारित्वात्—इति मिथिलादेशचलितवेवादरत्नाकरविवादिचिन्ता-
मणिविवादचन्द्रद्वैतनिर्युपद्वैतरिशिशादिग्रन्थानुसारणी व्यवस्था—

१. ०२शे.—व्यप० ।

२. राजेश—व्यप० ।

३. परदेबं—व्यप० ।

४. ०२दा१—व्यप० ।

अथ प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

पत्न्येव दद्यात् तत्त्रिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च ॥—इति विवाद-
श्लाकर (पृ० ५११) विवादचिन्तामण्यादि (पृ० २३६) ग्रन्थपृथक्प्रमत्त-
यचनम् ॥ १ ॥

इदञ्च विभक्तपतिघनपरम्—इति विवादचिन्तामणि (पृ० २३७)
ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अविमक्ते मृते पत्यो तस्योश एव नामूदिति किमियं गृह्णातु । न
च सेवांशप्रतियोगिनी प्रापकाभावात् । न चैतान्येव वाक्यानि प्रापकाणि
तेषां विभक्तघनपरत्वेनाप्युपपत्तेः—इति विवादचिन्तामणि (पृ० २३७)
ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

आतृमार्थ्यायां विधवायां पत्याहितगर्भायां तद्देवरादीनां विभागे प्रकान्ते
तस्या अपि शङ्कितपुत्रप्रसवायां दायं आप्रसवं स्वप्यः । स च
तस्याः पुत्रे जाते तत्पुत्रस्यैव भवति पुत्रेऽनुत्पन्ने तु देवरादिमिर्माहाः—
इत्यादि विवादचिन्तामणि (पृ० २३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

विभक्तानामपि यत्रांशपरिच्छेदो न जातस्तन्मध्यगमेव तिष्ठति तेन
तत्र साधारणत्वमेव—इति विवादचिन्तामणि (ख वि० चि० पृ० १६१)
द्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अनपत्यस्य घनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तद-

१. अविमक्ते मृते तु पत्यो—विचि० । २. मृत. किमि०—विचि० ।

३. एषां—विचि० । ४. प्राप्ते—विचि० ।

५. शङ्कित०—स्वप । ६. भा०—विचि० ।

७. पुत्रे अनुत्पन्ने—विचि० ।

८. तदभावे भ्रातृगामि—अतोऽयं विवादचिन्तामणौ नोपलभ्यते ।

भावे बन्धुगामि—इत्यादि विवादचिन्तमण्यादि (विचि० पृ० २३५) ग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

६९—सहर श्रीरामपुरेर देमानि आदालतेर जज साहेवेर हुजुर
हइते सदर देमानि आदालतेर पण्डितेरदिगेर प्रति सओयाल—
यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र वर्त्तमाने लोकान्तर हय, परे ऐ तिन
पुत्रेर मध्ये ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता अन्न प्रायंक्य हइया पैतृक सर्व-
साधारणेर एक वागान, याहाते कतरु प्रजार बसति आछे एवं
ताहादिगेर तिन भ्रातार अंशेर भिन्न२ सिमा चिह्नित हय नाइ,
ताहार तिन अंशेर एक अश कोन अन्य व्यक्तिके विक्रय करे।
ताहाते यदि आर दुइ भ्राता प्रतिवादि हइया हाकिमेर निकट
नालिस करिया ऐ तिन अंशेर एक अंश, याहा ताहादिगेर ज्येष्ठ
भ्राता विक्रय करे, ताहार यथार्थ मूल्य दिया खरिदेर प्रार्थना
राखे, तवे ऐ तिन अंशेर एक अंश खरिद करिते काहार अधिकार
हयः ऐ दुइ भ्रातार, अथवा ऐ खरिदारेर—इहार व्यवस्था
शास्त्रानुसारे लिखिबेन इति। शन १८२८, ७ मेइ मां शन १८३५,
२६ वैशाख।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशघोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।
यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतस्तदनन्तर तेषां प्रयाणां
पुत्राणां मध्ये ज्येष्ठः पृथगज्ञो भूत्वा पितृव्यक्तभ्रातृव्यसाधारणैकः कसम इक-
भूमेस्त्रयाणां भ्रातृणां विभाग्यज्ञकरोमाचरु हताया अंशप्रयममध्ये एकमंश-
मन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयं कृतवान्, कर्तुमिच्छति वा, तत्र यद्यवशिष्टौ द्वौ

भ्रातरौ प्रतिवादिनौ भूत्वा राजघनिधौ निवेदनं कृत्वा तेषां त्रयाणामंशानामे-
कमंशमर्धोज्ज्वेदभ्रात्रा विक्रोतं, विक्रोतव्यं वा, तस्य यथार्थं मूल्यं दत्त्वा क्रेतुं
प्रार्थयतस्तथापि तेषां त्रयाणामंशानामेकमंशं क्रेतुं यस्मै उपरिलिखितविक्रय-
कर्त्ता प्रसन्नस्सन् विक्रेतुमिच्छति तस्यैवाधिकारः, यत इदानीं बङ्गदेशचलित-
धर्मशास्त्रे ऋयकर्तुर्विचारो न लिखितः—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटोकाविवादमङ्गार्यावविवादादायावसेतुप्रभृतिग्रन्थानुजा-
रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभाग(पृ० ३५)

विवादमङ्गार्याव(१ विम० ख ४२३)विवादादायावसेतु(पृ० ८३)प्रभृतिग्रन्थघृता-
नारद(नामस० १३।४२-६३)वचनम् ॥ १ ॥

तथा च विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्धय-
त्येव अक्षपातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिदिभावाः—इति श्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटोका (पृ० ३५) लिखनञ्चेति ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

७०—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ८
माह आपरेत सन १८२६ ई० मतावक २७ माह चैत्र शन १२३५
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतैर प्रथम हाकिम श्रीयुत अल्लियम
नसप्टर साहेबेर बैठके—

१. प्रतिवादिनो—व्यप० ।

२. यथार्थमूल्य—व्यप० ।

३. तेन—व्यप० ।

४. उपरिलिखित—व्यप० ।

५. तथा च विभक्तस्यैवाविभक्त—व्यप० ।

६. सिद्धये च—व्यप० ।

राजचन्द्रराय

सायेल

एइ सनेर' मारच मासेर १४ तारिखेर सायेलेर मकईमार कागज सकल रोवकार ओ दृष्टी हइया कोरक करा भूमि निला-मेर निपेधि हुकुम सादर' हओन परे अनुमोदनार्थे स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया अन्य कागज सकल दृष्ट करारोल । यथा ए मकईमार सम्पर्के हुकुम हओनेर पूर्व देवोत्तर मुमिसकलेर सम्बन्धे शाखेर कथन आझा विवेचना करा उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय, ये निचेर सओयालसकलेर जबावे दुइ सप्ताह मध्ये शाखानुसारे व्यवस्था दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल—यद्यपि शाखानुसारे देवोत्तर भूमिसकल विक्रय करण एकान्त सिद्ध नहे । अतएव ताहार उपस्वत्व विक्रय करण (सिद्ध) हइवेक कि ना ?

द्वितीय सओयाल—सरवराहकारि कीम्या सेवाइती प्रयुक्त देवोत्तर भूमि अथवा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर किछु स्वत्व हय कि ना, ओ यद्यपि हय, ताहार किछु निर्दिष्ट आछे कि ना ? येमन एक विद्या देवोत्तर भूमि किम्या ताहार उपस्वत्व एक टाकार मध्ये सेवाइतेर स्वत्व कि परिमान हइवेक ?

तृतीय सओयाल—यद्यपि देवोत्तर भूमि किम्या ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर स्वत्व परिमाने निर्दिष्ट हइयाथाके, तवे सेवाइतेर देनार निमित्ते सेवाइतेर स्वत्वेर परिमानेर भूमि अथवा ताहा हइते ये परिमाने उपस्वत्व सेवाइतके(?)सकल हइते पारे विक्रय-हइवेक कि ना ?

चतुर्थ सओयाल—यद्यपि ये भूमिसकले किम्या ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर स्वत्व चत्तिया समुदय देवोत्तर भूमिसकलेर सम्बलित थाके, ओ सिमा चिह्नओ भिन्न ना हइया थाके, तवे समुदय देवोत्तर भूमि, किम्या ता हइते किश्चित् चण्टक ना

ह्यत्रोन हेतुकं सेवाइतेर देनार जन्त्ये विक्रयेर थोइ हइवेक, किम्वा
किछुइ नाइ इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतालियमनसएरसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयापरेलमासीयाष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं
यत्तन्मासीयपोडशदिने सपादघटिकाद्द्वयाधिकसमये भद्रा प्राप्तां तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यतः शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमिनां विक्रयकरणं कदाचिदपि न सिद्ध्यति
अतएव तदुत्पन्नोपस्वत्वस्यापि देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात्तद्विक्रय-
करणमपि न सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनापहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके वृष्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ --इति मनुवचनम्
(मनुस्मृ० ११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमा देयता । तदर्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम् ॥ --इति मन्वथमुक्ता-
यत्थां कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्यामिना उतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥ --इति मनुवचनम्
(मनुस्मृ० ८।१६६) ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भाषायां सरवरहकारशब्दवाच्यस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्य वा भाषायां
सत्वरहकारीकर्मप्रयुक्तं सेवाइतीकर्मप्रयुक्तं वा देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे
वा किञ्चिदपि न स्वत्वं धर्मशास्त्रीयप्रगाथाभावादिति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा सेवाइत-
शब्दवाच्यस्य स्वरवाभावेन तद्वैयपरिशोधनाय देवत्रभूमेस्तदुत्पन्नोपस्वत्वस्य

वा विक्रयो भवितुं नाईति । चतुर्थप्रश्नोत्तरमप्यर्थां(दा)यातमिति न पृथग् लिखितम् । —इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणां^१ व्यवस्था—

श्रीज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सं० २७६६

७१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ११ माह आपरेल शन १२२६ इ' मतावक ४ माह वैशाख सन १२३६ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत मान्त-किओ हेनरि टरम्बल साहेवेर बैठके ।

बाबु गङ्गाप्रसादनारायण

आपीलाएट

बाबु लक्ष्मिनारायण

रप्पाडएट

आपीलाएटेर उकिल मुनसो दादारवस्क ओ रप्पाडएटेर उकिल लाला आउधलाल हाजिर आसिल । ए मकदमा एइ सनेर मारच मासेर ३१ तारिखेर हुकुममते अद्य आमार बैठके रोवकार हइया प्रविशन फोटेर दाखिल हओया नालिसी आरजी प्रभृति कागज सकल तथाकार फयसला पर्यन्त थो ए आदालते दाखिल हओया आपीलेर मजुवात ओ ताहार जओयाव प्रभृति कागजसकल गत मारच मासेर ३१ तारिखेर ए आदालतेर तृतीय हाकिमेर बिलि-मर्म् रोवकारि सम्बलित पडागेल । यथा बोध हइल ये मुदाआ-लेहे, एइ हणकार आपीलाएट, एइ विपयेर आपत्ति राखे ये उभ-येर पूर्व पुरुष मृत बाबु नरसिंहनारायणसिंहेर कनिष्ठ भ्राता बाबु फतेनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात रामकोडरेर सालिसि शास्त्रानु-सारे सिद्ध ओ जारि हओनेर योग्य नहे । अतएव थो एवं जिला ओ फोटेर परिडतगणेर दाखिल करा व्यवस्थासकल ओ एइ दृष्टे

ये एकथा लओन वटे ऐ विपयेर सम्मन्वे शाखेर आज्ञासकल ज्ञात हओन उचित हइया ए मकहमार सम्पर्क चूडन्त हुकुम छादर हओनेर पूर्व हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके थर्पण करा जाय—ये निचेर सओयालसकलेर जबाब दुइ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल—जिला धारानश चलित शाखानुसारे खिलोकेर सालिसी सिद्ध वटे कि ना ?

द्वितीय सओयाल—यद्यपि दुइ व्यक्ति, नैकट्य कुटुम्ब, उभयेर विरोध ओ आपत्ति निष्पत्त्येर जन्ये, याहा उद्दादिगेर मध्ये थाके, आपन वंशेर एक खीलोकके, ये दुइ व्यक्तिर विस्वासी हय, आपनारदिगेर अभिप्राये सालिप नियुक्त करिया थाके, ओ ऐ खीलोक निष्पत्ती करिया देय । तवे एमत खिलोकेर सालिसी शाखेर आज्ञासकलेर मते सिद्ध ओ ताहार फयसला जाइर हओनेर योग्य हइवेक कि ना ? इति ।

जवाबव्यवस्था

एतदुर्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतमान्तकिहेनरीटरम्बलसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदन्दीयापरैलमासीपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्तरपत्र यत्तन्मासीयषोडशदिने चतुर्थप्रहरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते ।

प्रथमप्रश्नोत्तरम्—

मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रस्थानुसारेण स्त्रीकृतव्यवहारनिर्णयोऽसिद्ध एव । विवादचिन्तामणिबिवादचन्द्रनारदसंस्कृत्याद्यनुसारेणापत्तिवारणाय स्त्रीकृतोऽपि व्यवहारनिर्णयः सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

यलोप(१)धियिनिर्हृत्तान्प्रवहाराचिवर्तयेत् ।

स्त्रीनक्तमन्तरागारबहिःशत्रुकृतांस्तथा ॥

इति मिताक्षरा (पृ० १४३) व्यवहारचिन्तामणिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्
(२।३१) ॥ १ ॥

स्त्रीषु रात्रौ^१ बहिर्भागादन्तर्वेश्मन्यरातिषु ।
व्यवहारः कृतोऽप्येषु पुनः कर्तव्यतामियात् ॥

इत्यादि वीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं०
१, ३७) ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति व्यवहारचिन्तामणिविवाद-
चन्द्र (पृ० १४७) नारदस्मृत्यादिधृतनारदवचनम् (नामसं० २।२२) ॥ ३ ॥

आपत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतमपि प्रमाणमेव, अनापदीत्यभिधानात् — इति
विवादचन्द्रग्रन्थलिखनम् (पृ० १४७) ॥ ४ ॥

अनापदीत्यनेनापत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतान्यपि प्रमाणान्येवेत्युक्तम्—इति
व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वयोः सन्निहितसम्बन्धिनोर्विरोधस्यापत्तेष्व कस्याश्चिन्निष्पत्त्यर्थं स्व-
वंशसम्बन्धिनो एका काचित् स्त्री, या तद्गुणयोर्विश्वस्ता^२, ज्येष्ठा, श्रेष्ठा च,
स्वस्वामिप्रायेण स्वसम्बन्धिविवादनिर्यायकर्तृत्वेन द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां
नियुक्ता सती सैव स्त्री तद्विवादनिर्यायं कृतवती स्यात्तदैवविधिविवादनिर्यायो
मिताक्षरा^३ वीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण सिद्धो भवितुं तत्कृतत्रयपत्रं चापि प्रच-
लितं भवितुं नार्हति, व्यवहारमाधवग्रन्थानुसारेण च तन्निर्यायः सिद्धो भवितुं
तत्प्रमाणभूतं तत्रयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति, प्रश्नप्रललितप्रकारेण
द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां तदधिकारस्य तस्यै दत्तत्वेन तद्विवादनिष्पत्तेस्तदधीन-
त्वात् “यदि च तत्समये तया स्त्रिया यदि विवादनिर्यायो न भविष्यति तदा
धरमाकं महत्याप^४ भविष्यति”—इति शक्त्वा द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां विश्वस्ता

१. तिष्यत्तर्ष—व्य० ।

२. ० तद्गुणयोर्विश्वस्तो—व्य० ।

३. ० मिताक्षराया—व्य० ।

४. महत्यापविष्य—व्य० ।

ज्येष्ठा श्रेष्ठा सा स्त्री तदापन्निवारणाय^१ विवादानिर्णयकत्वेन नियुक्ता तदा तत्क्रीकृतविवादानिर्णयो व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेण सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तत्कृतजयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति-इति सारणदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रव्यवहारमाधवनारदस्मृत्यनुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितानि सर्वाण्येव ।

गुरुः स्वामी कुटुम्बो च पिता ज्येष्ठः पितामहः ।

विवादानय^१ पश्येयुः स्वाधीने विषये नृणाम् ॥-इति व्यवहारमाधव-
(पृ० २४) ग्रन्थभृतव्यासवचनञ्चेति ।

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

लम्बर २७८६

७२—रोवकारि मिसिल आदालत दैश्रोयानि सदर ४ माह माइ सन १८२६ इ^१ मतावक २३ माह बैशाख सन १२३६ वाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरटथरलेनसिलि साहेवेर वैठके ।

मुसम्मातदुलादेइ ओ सोनोसिंह

आपिलाएटान्

सेमाजितराय ओ किर्तिराय

रप्पाडएट

आपिलाएटगणेर उकिल लाला आउधलाल, ओ रप्पाडएटानेर उकिल मुनशी दादार वक्स हाजिर आसिल । ए मकहमा पूर्व्वे एइ सनेर आपरेल भासेर २७ ओ २८ ओ २९ तारिख सबले रोवकार हइया, ओ जिलार आदालतेर समुदय कागज १ लम्बर हइते तथा-कार फयशला पर्यन्त ओ प्रविनसन कोर्टेर कागजसकल फयश-

ला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ओ जेमाजितराय प्रभृ-
तिर नामिक सेक मद्दाहेर आलि प्रभृतिर मकदमा जिलार आदा-
लतेर समस्त कागज ओ कोर्टेर कागज १० लम्बर पर्यन्त पडा-
गिया, दिवा अबसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित
हइया ऐ मकदमा बाबत कोर्टेर बाकी कागज दृष्टे आसिल । तत्
परे रम्भाङ्गण्टेर उकिल इं १८२१ शालेर जुन मासेर २८ तारिखेर
लिखित जिला बेहारेर आदालतेर एक किता फयशलार नकल इं
१८२५ शालेर माइ मासेर २५ तारिखेर लिखित आजिमावादेर
प्रबिनसन कोर्टेर एक किता फयशलार नकल ओ इं १८२७ शालेर
सेतम्बर मासेर ६ ओ १३ तारिखेर लिखित ऐ प्रबिनसन कोर्टेर
दुइ किता रोबकारिर नकल ओ फशलि ११६६ सालेर रमजानेर
१५ तारिखेर लिखित धर्मनारायणेर लिखा एक किता सराकत-
नामा ओ इं १७६४ शालेर लवम्बर मासेर २० तारिखेर लिखित
सैयद महम्मद, ओ सैयद होसेन आलि ओ सैयद रोस्तम आलि
ओ सैयद आलि आमजद-मुहइगणेर उकिल सैयद केरामत होसे-
नेर लिखा एक किता राजिनामार नकल १२ टाका मूल्येर फेहर-
स्तेर द्वाराय लम्बरे दाखिल करिल, पडागेल । यथा ए मकदमार
चुडन्त हुकम सादर हथोनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डित हइते
व्यवस्था लथोन उचित बोध हइल, अतएव हुकम हइल ये मकद-
मार कागज सहित एइ रोबकारिर नकल पण्डितके समर्पण करा
जाय । उचित ये पण्डित मौ ए मकदमार समस्त कागजेर
अनुमोदने निचेर लिखित दुइ सञ्चोयालेर जबाब एक सप्ताह मध्ये
दाखिल करेण ।

प्रथम सञ्चोयाल-यद्यपि विरोधीय वस्तु बण्टक हइयाथाके,
ऐ अबस्थाय मुसम्मात दुलारदेइ आपिलाण्ट आपन जीबदशा-
पर्यन्त केवल भरण-भोषण पाइवेक, किन्वा आपन पतिर त्यक्त-
हिस्साय दखिलकार थाकिया ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकिवेक
ओ ताहा दानेर क्षमता राखिवेक कि ना इति ।

द्वितीय सञ्चोयाल—विरोधीय वस्तु अच्युतक धाकने मुस-
न्मात मज्जुरा प्रथम सञ्चोयालेर विस्तिर्ण सत्व-सकल हृते कोन
स्वत्वैर स्वत्वाधिकारि वटे इति ।

श्रीर्जयतितराम

जवावध्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीशुतकटवरटचरलेनतिलीसाहेयधम्माधिकरण-
लिखितैतदब्दीयमीमासीयचतुर्थदिवसीयविचारान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमेवं
तत्प्रमपितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयपद्यदिने यामद्वयानन्तरं
मया प्राप्तं तदपलोच्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि विवादास्पदीभूतं वस्तु विमत्तमभूत्तदा दुलारदेहनाश्री एत-
द्दम्माधिकरणाधिपिनी स्वजीवनपर्यन्तं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्वपतित्यक्तविभक्त-
धनांशे श्रायत्तत्वं सम्पाद्य तदुपस्वत्ये भोगवती स्थास्यति । एवं तद्वस्तुनो
आवश्यकदृष्टार्थं विना दानक्षमता तस्या न स्थास्यति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहितस्व मृतस्य विमत्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यावश्य-
कादृष्टार्थं विना तद्वनस्य दानकरणक्षमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

तस्मादपुत्रस्य स्वर्गात्स्या'संशुष्टिनो धनं परिष्णीता स्त्री संयता सकल
मेव गृह्णातीतिस्थितम्—इति मिताक्षर(पृ० २२१)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येद्वचनजातं विमत्तश्रीविषयम्—इति मिताक्षरग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्वतुः पतिविचात् कथञ्चन ॥

इति—वीगमिश्रोदयादि (विनि० ख० पृ० ६२८) ग्रन्थधृतमहामारत-
वचनम् (१३४७/२४) ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतं धनमविभक्तं चेत्तदैतद्द्रव्यमाधिकरणार्थिनी दुलारदेइ-
नाम्नी प्रथमप्रश्नलिखितस्वत्वधमुदायान्तर्गतकेवलं यावज्जीवं भरणपोषण-
प्राप्तिरूपप्रथमप्रकारोपयुक्तस्वत्वाधिकारिणी भवति, प्रमुखमर्पितपत्रजातैर्विवा-
दास्पदीभूतधनस्य विभागानवगमात्—इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरवीर-
मित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वयति स्वामिनि स्त्री तु प्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति धीरमित्रोदयादि-
(वीमि० ख० पृ० ६५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनं (कास्मृ० ६२२) चेति । १।

१८ मै सन हाल, दो प्रहर वाद दाखिल किया—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

लं० १७६३

७३—शैवकारी मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
६ माह माइ सन १८२६ ई० मतावक २५ माह वैशाख सन
१२३६ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत
मान्तेगिओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

गोवर्द्धनलाल—

आपिलाएट

मोहनलाल ओ मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि गङ्गाप्रसाद-
रेप्पाडएटान

आपिलाएटेर उकिल मुनशी दादार बकस ओ रेप्पाडएटा-
नेर मध्ये मोहनलाल रेप्पाडएटेर उकिल लाला आउपलाल
हाजिर आसिल । अद्य ए मफदमा तरतिथ' लम्बर मते आमार

निकट रोवकार हइया ईं १८२८ सालेर मारच मासेर ३१ तारि-
खेर लिखित ए आदालतेर परिसिप्टेर उत्तरे एइ सखेर आपरेल-
मासेर १६ तारिखेर लिखित जिला रामगडेर जजूसोहेवेर^१ पाठानो-
विवरण ताहार समभिव्याहारीय^२ रोवकारि प्रभृति कागजातसकल
सहित लम्बरे पौहुछिया पडागेल । यथा वेचुसिंह ओ द्वितीय
वेचुसिंह साक्षिगण, ओ गङ्गाप्रसादेर पिता मोहनलाल ओ भ्राता
जोगललालेर एजाहारे ओ रेप्पाडस्टगखेर मध्ये एक रेप्पाडस्ट
मृत सोहनलालेर स्त्री मुसम्मात धोपार दरखास्ते ऐ मृत व्यक्ति-
गङ्गाप्रसादके पोष्यपुत्र लओन सान्यस्थ हइल, अतएव हुकुम
हइल जे मृत रेप्पाडस्टेर स्थाने गङ्गाप्रसादेर नाम लेखा जाय ।
ताहाओ लेखागेल, ओ गङ्गाप्रसाद ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि
सान्यस्थ हओनेओ म्वर्य किम्बा उकिलेर द्वाराय ए अदालते
हाजिरहय नाइ, अतएव ऐ व्यक्तिर सम्बन्धे ए मकदमार तजविज
एकसपाटि प्रकारे कराजाय । किन्तु प्रकाश हय ये जद्यपि अन्यकेह
मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि ओ गङ्गाप्रसादेर पोष्यपुत्रता
मिथ्या हओनेर दावि करे । एइ हुकुम ताहारे दावि ओ स्वत्वेर
तजविजेर निषेधीय हइवेकना । ततपरे प्रचिनसन कोठ दाखिल
हओयो लालिसि आरजि प्रभृति कागजसकल तथाकार फय-
सला पर्यन्त ए आदालते दाखिल हइया आपिलेर मजुवात ओ
ताहार जवाब पडागेल । जानागेल जे ए मकदमार तजविज साखे
सम्पर्क राखे । अतएव ए मकदमार सम्बन्धे चूड(१)न्त हुकुम
सादर हओनेर पूर्व साखे(र) आज्ञासकल ज्ञात हओनार्थे व्यवस्था
लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल ये ए मकदमा अद्य स्थकित
थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल ७० लम्बरेर ईं १८१६ सालेर
जानओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित हेवानामा^३ दस्तावेज सहित
ए आदालतेर पण्डितके समर्पन कराजाय, जे पश्चिम देशेर,
जाहाते रामगड जिला थाकिवेक, चलित शाखानुसारेनिचेर

लिखित सञ्चोयालसकलेर जवावे एक सप्त(१)ह मध्ये व्यवस्था लिखिया दाखिल करेन ।

प्रथम सञ्चोयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते एक व्यक्ति आपन कृत स्थावर वस्तुसकल आपन पुत्रगण हइते एक पुत्रके दान करिया, दान गृहीताके ताहार दखल देओयाय । अतएव ऐ दान गृहीतार अन्य भ्रातागण थाकनेओ ताहार स्वत्वे ऐ दान सिद्धि हइवेक कि ना, ओ दातार मृत्युर पर आपन आपन अंश पाओनेर अन्ये अन्य भ्रातागणेर दावि अशें कि ना ?

द्वितीय सञ्चोयाल—यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुर पाच पुत्र, ओ ताहारद्विगेर मध्ये ये पुत्र भ्रातागण हइते कनिष्ठ छिल अन्ध थाके, ओ ऐ व्यक्ति आपन कृत अस्थावर वस्तुसकल चार पुत्रके, याहारा अन्ध नहे, सुस्थ स्वरिर वटेन, दिया आपन कृत स्थावर वस्तु, जाहा मृत्येर द्वाराय चारि पुत्रेर एक २ पुत्रेर अस्थावर वस्तु अंश हइते तुल्यकिन्वानून थाके, अन्ध पुत्रके आपन विशय उपजन करण हइते प्रथम थाकन दृष्टे दान करिया थाके, तवे ऐ दान एमत पुत्रेर स्वत्वे सिद्धि ओ यथार्थ हइवेक कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल—चण्डाल १ वागदि २ साहा ३ सुँडी ४ काँओरा ५ धोपा ६ ओ डोम ७-पइ कय व्यक्तिर सुकृतिपत्रेर द्वाराय शपथ हय कि ना इति ।

सञ्चोयाल सुप्रीम कोर्टोदालतिका मेघनाटन साहेवका हुकुम सेँ थवाव देना होगा इति ।

नकलयबाव

प्रभपत्रलिखितजातीयानां शास्त्रानुसारेण स्वीकृतिपत्रद्वारा शपथो भवितुं न शक्नोति प्रमाणाभावादि—

एतद्धर्माधिकरणपञ्चमाभिपतिश्रीसुतमान्तकीयूहेनरीटरम्बलसाहेवधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीजमेमासीयपञ्चदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रति—

रूपपत्रं यत्तन्मासोपनवमदिने यामद्वयानन्तरं (मया) प्राप्तं तदवलोक्य एवं तत्समर्पितदानपत्रञ्च विविच्य यादृशघोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्येकः कश्चित् हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितं सर्वमेव स्थावरं स्वपुत्राणां मध्ये एकस्मै पुत्राय दत्त्वा दानग्रहीतुस्तादुपरि श्रायत्तत्वं सम्पादितवान् स्यात्तत्र तद्दानं यदि पित्रा सर्वपुत्रानुमत्या कृतं तदा तद्दानग्रहीतुभ्रात्रन्तरेषु विद्यमानेष्वपि^१ तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं शक्नोति, एवं दातुर्भरणानन्तरं दानग्रहीतुभ्रात्रन्तराणां स्वयोग्यांशप्राप्तीच्छा न सम्भवति । यदा च पित्रा तद्दानं सर्वपुत्रानुमत्या न कृतं तदा तद्दानग्रहीतुभ्रात्रन्तरेषु सत्तु तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, एवं दातुर्भरणानन्तरं दानग्रहीतुभ्रात्रन्तराणां स्वस्वयोग्यांशप्राप्त्यर्थं तत्प्राप्तीच्छा सम्भवत्येव, यतः सर्वपुत्रानुमतिं विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्यापि दानकरणद्वमवाया अभावेन न तत्कृतदानेन तेषां तत्र स्वत्वविच्छेदाभावात् । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण तद्दाने दानग्रहीतुभ्रात्रन्तराणामनुमतेरनवगमाच्च ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्व्यमेव—इति मिताक्षरा(पृ० २००)जीरमित्रोदय^१(ख० पृ० ५३२)व्यवहारशास्त्र(पृ० १३२)व्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥

ये जाता येथ्यजाताश्च ये च गर्भे व्यरस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काञ्चन्ति न दानं न च विक्रयः—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतव्यास^१ मिता० पृ० २००)वचनद्वयञ्चेति ॥ २ ॥

१. विद्यमाणे—व्यप० ।

२. स्थावरादी तु स्वार्जिते पित्रादिपरम्पराप्राप्ते पुत्रादिपारतन्व्यं तुल्यमेवेति पाठः कीमि० य ।

द्वितीयप्रकरणस्योत्तरम्—

यद्यप्येकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य पञ्चपुत्राः, एतेषां मध्ये यः सर्वेभ्यो भ्रातृभ्यः कनिष्ठ आसीत् सोऽन्धः, एवं स एव व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितम-
स्थावरं सत्त्वं यस्तु अन्धभिन्नोभ्यः स्वस्थराशरीरेभ्यश्चतुर्भ्यः पुत्रेभ्योऽदत्त्वा
-स्वोपाजितं स्थावरं यस्तु यन्मूल्यद्वारा चतुर्णां पुत्राणाम् एकैकपुत्रांशास्था-
-वरधनांशात् तुल्यं न्यूनं वा भवति, तदन्धपुत्राय तद्दृष्ट्वा दत्तवान् । अथ
यं स्वयं धनोपाज्जनाक्षमः । तत्रापि सर्वपुत्रानुमत्या दत्तञ्चेत् सिद्धयति,
-नो चेन्न सिद्धयति, इति पश्चिमदेशान्तर्गतसमगडजिलाख्यावान्तरदेश-
-चलितमिताक्षराशीरमिमोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी
-व्यवस्था ।

अथ प्रमाणानि प्रीत्युपरिलिखितान्येव ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७४ । रोयकारि मिसिल आदालत देशोयानि मद्र तारिख
-२७ माह माइ सन १८२९ ई मतावक १५ माह ज्यैष्ठ सन १२१६
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियस
-नसष्टर साहेबेर बैठके ।

हलधरमुखोपाध्याय
अन्नपूर्णादेव्या प्रभृति

आपिलाष्ट
रप्पाडस्टान्

आपिलाष्टेर उकिल मुनशी सोहेन आलि ओ स्वयं आपि-
-लाष्ट हाजिर आसिल, ओ रप्पाडस्टानेर उकिल सदासुक
-पण्डित काहिलिर.....आपत्ये हाजिर हइलो ना । एइ मासेर
-२५ तारिखेर हुकुमानुमारे ए मकरमा आमार बैठके उपस्थित

हइया नालिपि आरजि प्रभृति प्रविनसन कोर्टेर कागजसकल ६६ लम्बर पर्यन्त पडागिया स्थकित छिल,अद्य पुनराय उपस्थित हइया प्रविणसन कोर्टेर वाकि कागजसकल तथाकार फयशला पर्यन्त ओ आपिलेर मजुवात ओ ताहार जवाय पडागेल । समस्त कागजेर अनुमोदने यद्यपि रग्पाडगटानेर मध्ये एक रग्पाडगट अन्नपूर्णादेव्यार लिखा एजाहार आपिलेखटेर दरपेप करा ई १८ (१) ७ शालेर जुन मासेर १२ तारिखेर लिखित २६ लम्बरेर दानपत्र निदर्शनेर सत्यतार प्रति पूर्ण सन्देह हइतेछे । किन्तु चूडान्त हुकुम (सादर) हओनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डित हइते नीचेर विस्तीर्ण हेतुसकलेर विवेचना कारण उचित बोध हइया हुकुम हइल ये प्रविनसन कोर्टेर नथिर १ नम्बरेर वाङ्गला १२११ शालेर आश्विन मासेर १ तारिखेर लिखित मृत बलराम भट्टाचार्येर लिखा मोक्षारनामा ओ च्छाब्बिस २६ लम्बरेर दानपत्र एइ रोवकारिर नकल सहित ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय, ये ऐ निदर्शनसकलेर उपर अनुमोदन करिया, वाङ्गलार चलित शाखानुसारे नीचेर लिखित प्रश्न सकलेर जवाय एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल-नुसम्मात अन्नपूर्णाेर दान सिद्ध बटे कि ना, ओ द्वितीय व्यक्तिगणेर अंशेर सम्मन्धे ताहा असिद्ध हओने अन्नपूर्णादेव्यार स्वयं अंश वायत सिद्ध हइवेक कि ना । ओ यद्यपि सिद्ध हय, उहार कि परिमाण अंश हइवेक ।

द्वितीय (सओयाल)—बलरामभट्टाचार्येर लिखा मोक्षारनामा मते मुदाआलेहेके किछु अंश अशे कि ना,ओ बलरामभट्टाचार्यके ताहार आपन एक स्त्री उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या थाकनेओ मुदाआलेहेके अंश देओनेर क्षमता छिल किना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

अनावश्यकवस्था

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभीयुतालियमनष्टरसाहेवधर्माधिकरणादिति-
 तैतदन्दीयसत्तविशतिदिवसीयमेइमासीयत्रिचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमेवं
 तत्समर्पितक्रोटांपिलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गतोनिशत्यङ्काङ्कितवा-
 द्मलाख्यैकादशाधिकद्वादशशताब्दीवाश्विनमासीवप्रथमदिवसीयमृतबलराम-
 भट्टाचार्यलिखितमोक्तारामायंशकपत्रमेवं पङ्क्तिराल्यङ्काङ्कितदानपत्रञ्च यजु-
 नमासीयपञ्चदशदिने सार्द्धंघटिभ्रान्तपुण्याधिक्यामद्वये मया प्राप्तं तदय-
 लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रभस्पोत्तरम्—

अत्रपूर्णांकृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतः प्रभुसमर्पितमोक्तार-
 नामामत्रकपत्रदानपत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधनस्यालपूर्णादेव्याः पत्युर्बलराम-
 भट्टाचार्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्पोत्तराधिकारित्वेन तत्सङ्कान्तत्वे-
 नाद्यगमेन, तस्याश्च स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा यदने दानानधिकारात् ।
 ग्रहते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानानुगमात्
 पत्न्यां विद्यमानायामन्येषामर्णाद् दुहित्रादीनां केषाञ्चिदपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहि-
 तस्य मूलस्य धनेऽधिकारप्रतिपादकवद्गदेशचलितशास्त्राभावेनांशविवेचनायां
 अनावश्यकत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयने भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुभीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः—इति दायभागदि-
 (दाय पृ० १७१) ग्रन्थप्रतिसंख्यायनयचनम् (कास्यु० ६२१) । १ ।

स्त्रीणां स्वयतिदायतु उपभोगफलःस्मृतः ।

नापहारं रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥—इति भारतादपहार-
 शब्दार्थेन वधेष्टदानविनयाधनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आंतरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-
याशयलभ्यवचनञ्चेति (पृ० २१६, २१३५) ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

वलरामभट्टाचार्य्यलिखितमोक्षारनामासंस्कृतपत्रानुसारेण प्रत्यर्थिनः कि-
ञ्चिदप्यंशत्वेन प्राप्नुं नार्हन्ति, तत्राप्येव प्रत्यर्थिनामंशप्राप्तिप्रयोजकस्य तत्स्व-
त्वोत्पत्तिप्रयोजकस्य प्रत्यर्थिन उद्दिश्य वलरामभट्टाचार्य्यकृतस्य दानादेरनव-
गमात् । वलरामभट्टाचार्य्यस्य पत्न्यामेकस्यां पुत्रवध्यामदत्तायां कन्यायामेक-
स्यां विद्यमानायामपि स्वातन्त्र्याद्वाधकाभावाच्च प्रत्यर्थिनांशदानानुमता
आसीत्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदाय-
क्रमसंग्रहनिवादमङ्गार्य्यविवादार्य्यवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

जुनमासस्य पञ्चदशतिदिने शुक्रवासरे घटिकाधिक्रयामद्वये दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैचनाथमिश्रेण

लं० २४६६

७५—रोवकारि मितिल आदालत देओयानि सदर तारिख
३ माह जुन शन १८२६ ई मतावक २२ माह ज्येष्ठ शन १२३६
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नस-
ष्टर साहेबेर बैठके—

आकबरराय प्रभृति मोकलेशगण आपिलाण्टान्

यदुनाथसिंह ओ साहेबसिंह प्रभृति रप्पाडण्टान्

रप्पाडण्टानेर मध्ये रामप्रतापसिंह एक रप्पाडण्ट हाजिर
आसिया ए मकदमास सानि तजविजेर प्रार्थनाय एक किता सओ-
याल वारानशेर पाठशालार ओ कलिकातार कालेजेर पखिडत-
गणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ताहार एक किता इङ्गरेजि तरजमा
ओ १७५७ लम्बरेर मकदमा ओ ए मकदमा बावत ई १८२३

सालेर माइ मासेर १० (तारिखेर) ओ एइ सनेर फेवरओरि मासेर २४ तारिखसकलेर लिखित आखेरि दुइ किता रोवकारिर नकल सम्बलित लं दाखिल करिल । एइ सनेर फेवरओरि मासेर २४ तारिखेर हओयो ए आदालतेर फयशला सहित पडागेल । यथा रप्पाडएटागेर सओयालेर उपर चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व १७५७ लम्बरेर मकईमा वावत इंरेजि १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओयो रोवकारिर लिखित सओयालेर जवावे ए आदालतेर एइक्षणकार परिडत हइते व्यवस्था लओन ओ इहा अवगत हओन ये ऐ लम्बरेर सरेर नथिते ३३ लम्बरे प्रथित ए आदालतेर पूर्वेर परिडतदिगेर व्यवस्था शाखानुसारे यथाथं वटे कि ना उचित हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि ओ इं १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओयो ए आदालतेर रोवकारिर लिखित सओयाल ओ ताहार जवावे ए आदालतेर पूर्वेर परिडतगणेर व्यवस्था ओ रप्पाडएटेर दाखिल करा दुइ किता व्यवस्था सहित ए आदालतेर एइक्षणकार परिडतके समर्पण करा जाय, जे इं १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओयो रोवकारिर लिखित सओयालेर ओ समर्पित व्यवस्था सकर मजमुनसकलेर अनुमोदने चलित शाखानुसारे व्यवस्था एइ कैफियत सम्बलित, ये पूर्वेर परिडतगणेर व्यवस्था शाखेर आज्ञानुसारे कि, ताहार किछु विपर्यय वटे, लिखिया दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनशहरवाहेवधर्माधिकरणलिखितैतद्द्वीयनुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गताज्ञापितं तद्विचारपत्रम् एवमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकविंशत्यधिकाष्टदशशताब्दीयफेवर(अरि)मासीयद्वितीयदिवसीयैतद्दम्माधिकरणलिखितविचारपत्रलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रं तदुत्तरवैतद्दम्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्वपरिडताभ्यां लिखितं व्यवस्थापत्र-

मेवमेतद्धर्माधिकरणप्रत्यधिनविष्टं व्यवस्थाद्वयञ्च यत्तन्मासीयैकादशदिने पट्टिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशमोषो चातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कस्यचित् साधारणसराजकरस्थावरस्य कतिचिद्दिनः क्रयकर्ता-
रश्च, येषामुपरि तत्स्थावरसम्बन्धराजकरदानसंरक्षणार्थेदद्यादिकर्तृत्वमारः
स्थितस्ते, तावदप्राप्तव्यवहारेष्वंशन्तरेषु विद्यमानेष्वेवं तेषामनुमतिं विना
संराजकरदानार्थं कस्यचिन्निकटे तस्यैवसराजकरस्थावरस्य विक्रयं कृतवन्तः
स्युस्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं प्रचलितुञ्च न शक्नोति, प्रभुहृतप्रभलि-
लि (ता) यामवस्थायां सत्यां साधारणस्थावरधने सर्वशर्मणिनामनुमतिं
विना एकस्य द्वयोर्वहूनां वा स्वस्वांशयोग्यस्य समुदायस्य वा दानाधमनवि-
कयानधिकाराद्, इदानीं वेहारदेशप्रचलितप्रणयेषु प्रमुसमर्पितवाराण्यस्यधिकर-
णकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे कलकत्ताख्यमहानगरसंबन्धि-
घाटशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे चाप्राप्तव्यवहारेषु शंश्यन्तरेषु सत्तु
प्राप्तव्यवहारैरंशिभिः साधारणसराजकरस्थावरसमुदायस्य स्वस्वांशयोग्यस्य
वा राजकरदानार्थं विक्रयः कर्तुं शक्यते, तैश्च कृतो विक्रयः सिद्धो भवितु
शक्नोतीत्येतद्विधायकस्य प्रमाणस्यालिखितत्वाच्च, शास्त्रानुसारेण बालकाना-
मर्यादप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य सर्वतोभावेन राशौ रक्तकत्वेन राजकरदानार्थ-
मप्राप्तव्यवहाराणां विक्रयस्य भवितुमशक्यत्वाच्च—इति वेहारदेशचलित-
मनुमिताक्षरामिताक्षराटोकामुबोधिनीवीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयू-
खव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

एवञ्चैतद्धर्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्वपण्डिताभ्यां पूर्व या व्यव-
स्था दत्ता सा वेहारदेशचलितशास्त्रसिद्धैव । नहि तस्यां व्यवस्थायां कश्चित्द-
व्यतिक्रमोप्यस्ति—इति श्रगस्तिमासस्य चतुर्थदिने घटिकैकाधिकयामद्वये
मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

१. करवनित्र—व्यप० ।

३. षट्षां—व्यप० ।

५. स्थावरस्य—व्यप० ।

२. तेषामनुमतिभिधना०—व्यप० ।

४. संबधि—व्यप० ।

६. नशास्त्राद्यं—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरस्य समस्तस्य गोप्रसाधारणस्य च ।

नैकः कुर्यात्कथं दानं परस्परगतं विना ॥—इति वीरमिश्रोदयादि-
(धी० मि० ख० पृ० ५८६) ग्रन्थभूतव्याख्यानम् ॥ १ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात्सर्वोभ्यनुज्ञा अवश्यं
कार्या, विभक्तेषु तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर-
्याय सर्वोभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेके-
णापि व्यवहारः सिद्धसत्येव—इति मिताक्षरा(पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

अत्रापि त्वविभक्तानुज्ञामन्तरेण दानाद्यसिद्धिः साधारणत्वाद्
द्रव्यस्य । विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि दानादिकमुपपद्यते—इत्यादि मिता-
क्षराटीकाभुवोधिनी (पु० ६११) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

वालदायादिकं विषयं तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत्स स्यात् समावृत्तो यावद्यातीतशेषः ॥ —इति मनु(८२७)-
वचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीवर्जयतिराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

लं० २५५३

७६—रोयफारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
४ माह अगस्त सन १२२६ ई मतावक २१ माह श्रावण सन
१२३६ वाङ्गला रोज मङ्गलवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत घाव-
रट हाण्डन राटरि साहेबेर धैठके ॥—

१. मध्यगत्वाद्—मिता० ।

२. दाय—व्यय० ।

३. साध्यतावाद्—व्यय० ।

४. कर्तव्यम्—व्यय० ।

५. राज्ञा—व्यय० ।

जयरामधामि स्वयं उच्चि प्रकारे मृत वखेरि-
धामिर स्त्री दिपु धामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र

रामचन्द्रधामिर पत्ने—

आपिलाएट—

मुशानधामि—

रप्पाडएट—

आपिलाएट स्वयं ओ रप्पाडएटेर उकिल मौलवि गोलाम एजदानि हाजिर आसिल । एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर ह-
ओया जेला बेहारेर जजसाहेवेर एक किता रिटरण, ताहार सम्ब-
लित रोवकारि प्रभृति पाँचिया अद्य एइ मकदमार नथि सम्बलित
रोवकार हइया जिलार आदालतेर कागजसकल १ लम्बर हइते
तथाकार फयशला पर्यन्त ओ प्रविनशन कोर्टर कागजात फय-
शला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ईराजि १८२७
शालेर आगस्त मासेर २५ तारिखेर हओया एइ आदालतेर पूर्व
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कोर्टनि इपमिट साहेवेर ओ ई० १८२८
शालेर १५ सेतम्बर मासेर लिखित ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत
कटवरट थरलेन सिली साहेवेर रायसकलेर सम्बलित पडागेत ।
ये हेतुक ए मकदमाते स्त्रीलोकेर पत्त हइते पोप्यपुत्र राखा जाओन
विशये जेलार आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकल ओ ए
आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्था मध्ये एइ प्रकार अनैक्य हइ-
याछे ये जिला बेहारेर आदालतेर नथिर व्यवस्था लेखा आछे ये
स्त्रीलोके स्वामिर विना अनुमतिते पोप्यपुत्र राखनेर क्षमता राखे
ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थाय लेखागियाछे ये स्त्रीलोक
स्वामीर अनुमति व्यतीत पोप्यपुत्र राखार क्षमता हवेक ना । अत-
एव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व बेहारदेशेर चलित शाख
ओ धामिदिगेर चंसेर डाँडा ओ व्यवहार ये यद्यपि कोन स्त्रीलोके
पतिर अनुमति व्यतीत पोप्यपुत्र राखिया थाके, ऐ पोप्यपुत्र
शाखानुसारे उहारदिगेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार दृष्टे सिद्ध हइ-

याछे कि ना—अवगत ह्छोन आवश्यक ह्इया हुकुम ह्इल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये ऐ जिलार जजसाहेब साकिम ऐ जिलार तिन चारि जन प्रधान पण्डितगणेर द्वाराय तथाकार चलित शाखेर आजा सकल ओ धामिगणेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार उपरेर लिखित प्रकारे तहकिकात् करिया ये साव्यस्त ह्य ताहार-कैफीयत लश्रोयाजिमा कागजसकलेर सम्बलिन, ओ यद्यपि कखन ओ धामिरदिगेर पोष्यपुत्र विषय याहा पतिर अनुमति व्यतीत राखियाछे, अन्य कोन एक मकईमा ऐ जिलार आदालते उपस्थित ओ निष्पत्ति ह्इयाथाके सेइ मकईमार आशल रोयदाद-ओ पाठाएन एक मास मेयादे परिसिष्टेर लेफाफा जेला बेहारेर जजसाहेबेर निकट पाठान याय, ओ एइ रोवकारिर द्वितीय नकल, एइ कारण ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओ-याला कराजाय ये ऐ पण्डित एइ कथासकलेर जवाब ये एइ मकईमा बाबत ताहान दाखिल करा व्यवस्था ओ जेला बेहारेर आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकले ये ये ग्रन्थेर नामसकल लेखा आछे, ऐ सकल व्यवस्था ऐ सकल ग्रन्थेर यचनसकलेर मते घटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख ह्इते एक सप्ताहं मध्ये दाखिल करेण इति ।

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुनरावरटहालइनराटरीसाहेबधर्माधिक-रणलिखितैतदब्दीयागस्तिमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूप-पत्रं यत्तन्मासीयचतुर्विंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदयलोक्य-यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

अरमल्लितव्यवस्थाया बेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणीय-व्यवस्थाभिः सह विरोधे इदमेव कारणम्—दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तक-दीधितिदत्तकदर्पणदत्तककौमुदीवीरमिश्रोदयव्यवहारमयूरादिदत्तकविषयक-ग्रन्थमात्र एव 'न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वाऽन्यत्रानुजानाद् मर्तुः' इति स्त्रियाभक्तं नुमतिं विना दत्तकपुत्रप्रदण्णाधिकारनिषेधकश्चिद्व्यचनस्य लिखितत्वात् कस्मिंश्चिदपि बेहारदेशचलितग्रन्थे कस्यचिदपि मुनेरेतादृशं यचनं

लिखितं नास्ति तद्वचनानुसारेण क्रियाभर्तृनुमतिं विनापि दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारो भवेत् । यद्विषयस्य मुनिवचनेन ग्रन्थमात्र एव निषेधो लिखितः स विषयः शास्त्रानुसारेण सिद्धो भवितुं न शक्नोति । एवं त्रिलाख्यधर्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गताश्चतस्रो व्यवस्थास्तासां प्रतिरूपाणि, एवञ्च मिलित्वा सप्तव्यवस्थासु च बहोरभट्टलिखितपञ्चविंशत्यङ्गाङ्कितव्यवस्थायां द्वात्रिंशदङ्गाङ्कितव्यवस्थायां च भर्तृनुमतिं विनापि क्रिया दत्तकत्वेन गृहीतः पुत्रस्यक्तुं न शक्यत इति यत्नेन परिहृतेन लिखितं तत्र शास्त्रसम्मतं भवति । यस्मिन् विषये यस्याः क्रियाः सामर्थ्यं नास्ति तथा कृतः स विषयो निवृत्तो भवितुं न शक्नोत्यर्थात् सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विधायकशास्त्राभावात् । एवं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरिदं वचनं “यदि काचित् स्त्री पत्युनुमतिं विना कस्यचिद्दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं कृतवती” स्यात्तदा सा स्त्री स्वयं तं दत्तकपुत्रं त्यक्तुं न शक्नोति । अनुमत्यभावेन यदि यस्याः पतिस्त्यक्तुमिच्छति तदा स दत्तकपुत्रस्यक्तो भवितुं शक्नोति” इति पञ्चविंशत्यङ्गाङ्कितव्यवस्थायां यत्नेन परिहृतेन लिखितं तदतीवनिम्बूलं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरन्यस्य कस्यचिद्वा मुनेरेतादृशार्थप्रतिपादकवचनाभावात् ।

अथ च पञ्चविंशत्यङ्गाङ्कितलीलाधरपरिहृतलिखितव्यवस्थायां पूर्वं यत् प्रभुप्रभृत्योत्तरे पतिपुत्रविहीना स्त्री रीत्यनुसारेण शास्त्रानुसारेण (च) दत्तकपुत्रं ग्रहीतुं शक्नोति स सिद्धो भवति इति यल्लिखितं तत्र शास्त्रज्ञाया अयमर्थो विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेषु लिखितः—स्त्री पत्युनुमत्या, यदि पतिर्नास्ति तदा ज्ञात्वनुमत्या, दत्तकपुत्रं कर्तुं शक्नोति स सिद्धो भवति इति यत्नेन परिहृतेन लिखितं तदतीवाशुद्धं मिथिलादेशचलितविवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेष्वपि “न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद् वा” इत्यत्र “अनुज्ञानाद्कर्तुः” इति क्रिया भर्तृनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्टवचनस्य लिखितत्वात् । पत्युरभावे शाल्य-

१. लिखित—व्य० ।

२. प्रतिरूप—व्य० ।

३. कृत—व्य० ।

४. विहिता—व्य० ।

५. शास्त्रानु०—व्य० ।

६. गृहीतुं—व्य० ।

७. सः—व्य० ।

नुमत्या स्त्रिया दत्तकपुत्रो ग्राह्य इत्यस्यालिखितत्वाद् परं तदन्तर्गतमिथिला-
देशचलितविवादचिन्तामणिग्रन्थे दत्ताप्रदानिकप्रकरणे “विशेषेण भर्तृनुमतौ
सत्यामपि स्त्रिया दत्तकपुत्रग्रहणे नाधिकारस्तदङ्गव्याहृतिहोमवाधादितिवर्तु-
लार्थः” इति लिखितत्वाच्च । एवं जिलाध्यधर्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गत-
व्यवस्थामु यद्यद्ग्रन्थानां नामानि लिखितानि सन्ति ताः सर्वत्र एव व्यव-
स्थास्तत्तद्ग्रन्थभूतमुनिवचनानां सम्मता न भवन्ति; यतस्तत्तद्ग्रन्थेषु सर्वेष्वे-
वान्येषु ग्रन्थजातेष्वपि विशेषेण “न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिशृङ्गीयाद्वाऽन्यत्रानु-
ज्ञानाद् भर्तुः” इति स्त्रिया भर्तृनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधक-
यशिष्टवचनस्य लिखितत्वात् । कस्मिंश्चिदपि वेदार्देशचलितग्रन्थे वेदार्-
देशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणीयव्यवस्थामु वा कस्यचिदपि मुनेरेता-
दृशं वचनं लिखितं नास्ति यद्यचनानुसारेण स्त्रिया भर्तृनुमतिं विनापि दत्त-
कपुत्रग्रहणाधिकारो भवेदिति ।

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिशृङ्गीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः—इतिदत्तक-
मीमांसा (पृ० ७) दत्तकचन्द्रिका (पृ० ३) दत्तकदीपित्तिदत्तकदर्शण (पृ० १
क, पं० १२) दत्तककौस्तुभ (पृ० १ क, पं० १२) वीरमिश्रोदयव्यवहारमयूख-
विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्परत्नरुप्रभृतिग्रन्थभूतवशिष्टवचनम् ॥ १ ॥

अत्र च निमित्तं भर्तृनुज्ञानं, ततश्च विधवाया भर्तृभावेनानुज्ञानास-
म्भवाच्चिन्तितकप्रतिप्रसवाप्रवृत्त्या प्रापकान्तराभावाच्च नाधिकारः इति
सर्वत्रादिसम्प्रतिपक्षमेव—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलित्वनम् (पृ० १२-१३)
॥ २ ॥

भर्तृनुज्ञानेऽपि स्त्रिया न ग्रहणाधिकारः, तदङ्गव्याहृतिहोमवाधा-
दिति वर्तुलार्थः । ननु ‘अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः’ इत्यविशेषेण अथवाद्
भर्तृनुज्ञानानवत् ग्रहणेऽपि स्त्र्यधिकारसिद्धौ तदन्तर्गिताप्रयुक्तिरपि तस्याः
कल्पते, इति चेत्, सत्यं सहत्वेन तस्या अधिकार इष्टिवच पृथक्त्वेन वाधसा-
येद्वधिष्यापत्तेः—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलित्वनश्चेति ॥ ३ ॥

श्रीतम्बरमासस्योनिंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था
-दत्तेति ।

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
१८ माह आगस्त शन १८२६ ई मतावक ३ माह भाद्र शन १२३६
वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रावरट हाल-
डन राटरी साहेवेर बैठके ।

सिओवकसमिद्धर वनाम देविप्रसादपाडे प्रभृति

साएलेर उकिल मुनशी होसेन आलि हाजिर आसिल । पर-
गणे घेसुवार मौजे पलाण एडिहार अद्वेकेर उपर आमल ओ
दखल देयाइया पाओनेर मकईमार तुगुण सदर जमा ६०३
टाकार शंख्याय खास आपिल मञ्जुरि प्रार्थनाय १० टाकार
मूल्येर इष्टम्प कागजेर उपर सायेलेर सओयाल, याहा ऐ उकिलेर
नामिक उकालतनामा ई १८२७ सालेर माइ मासेर १५ तारिखेर
लिखित वारानशेर प्रविनशन कोटेर फयसलार नकल सहित,
याहा ऐ सनेर अक्टुबर मासेर २६ तारिखे दुइ टाकार मूल्येर फेड-
रस्त द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल । हुकुम हइल ये
एइ रोवकारिर नकल एखने आपिलेर सम्पकिय कागजसकल एइ
हुकुमे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओला करा जाय-
ये ऐ पण्डित ऐ कागजसकलेर ए दोहित्र मातामहेर दत्त फता
सिद्धि हओन सम्बलित कोट आपिलेर पण्डितेर व्यवस्था ये ताहार
खोलासा मजमुन कोटेर फयसलार लिखा आछे, अनुमोदने ऐ
ये व्यवस्था सिद्धता ओ असिद्धता लिखेन, ओ पण्डितेर व्यवस्था
दाखिल हओन पर्यन्त सैयद रहमत आलिख खास आपिलेर

सञ्जोयाल मञ्जुर ओ नामञ्जुर हञ्जोनेर चूडन्त हुकुम सादर
हञ्जोन स्थकित थाके इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

जवावव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिधीयुतरावरटहालहनराटरिसाहेवधम्माधिकर-
णलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीया-
ष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम्पितैतद्विवादविष-
यनिविष्टपत्रजातं यत्तदब्दीयदिसम्बरमासीयाष्टाविंशतिदिवसीयप्रभ्वाशान्त-
रानुसारेण तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशद्दिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया
प्राप्तं तदवलोक्य निविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

दौहित्रो मातामहस्य दत्तकः सिद्धो भवतीत्येतदर्थप्रतिपादककोटापीलाख्य-
धम्माधिकरणनियुक्तपरिच्छित्तलिखिता व्यवस्था, यस्याः तात्पर्यार्थः कोटा-
पीलाख्ये धम्माधिकरणोपजयपत्रे लिखितः, सा व्यवस्था शास्त्रसिद्धा न-
भवति । प्रभुसम्पितपत्रजातैरर्थप्रत्ययिनो द्वयोरेव ब्राह्मणजातीयत्वनिश्चयेन-
ब्राह्मणजातौ दौहित्रो मातामहस्य दत्तको भवितुं न शक्नोतीति शास्त्रे निषे-
धाद्—इति धाराणस्यादिप्रचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधिति-
दत्तकदर्पणदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रो भाग्निनेयश्च शूद्रैश्च^१ क्रियते सुतः ।

ब्राह्मणादित्रये नारिते भाग्निनेयः सुतः ऋचिद् ॥ इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ५६) दत्तकचन्द्रिका (पृ० ७) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थभृतशौनक-
वचनम् ॥ १ ॥

तथा च भाग्निनेयपदं दौहित्रस्याप्युपलक्षणमेव—इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ६६-६७) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तथापि भागिनेयदौहित्रवर्जं विरुद्धसम्बन्धापरया पुत्रत्वबुद्ध्यनह-
आतृपितृव्यमानुलवर्जं च प्रयाणा वर्णानां स्वसमानवर्ण एव-इति दत्तक-
दीधितिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥—

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासोयेनविशतिदिने घटिकाप्रया-
धिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतिराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

नं० २८२२

७८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
१६ माह सितम्बर सन १८२६ ई मतावक १ माह आश्विन सन
१२३६ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट
थरलेन^१ सिली साहेबेर बैठके ।

आनन्दनाथराय आप्राप्तव्यवहारेर उल्लिखन भवानीप्रसाद-
चौधुरि ओ विश्वनाथ चङ्गदार—

आपीलाएटान—

राणी जगदम्बा—

रप्पाडएट—

आपिलाएटगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि, रप्पाडएटेर
उकिल सदासुख पण्डित हाजिर आसिल । ए मकदमा पूर्वे एइ
मासेर ७ ओ ८ ओ ९ ओ १० ओ १५ तारिखसकले रोवकार ओ
प्रविनशन कोटेर कागजसकल १ लम्बर हइते तथाकार फयसाला
पर्यन्त ए आदालतेर आरजी मजुधात ओ जवाब पडागिया
दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया
ए आदालतेर घाकी समस्त कागज एइ शनेर आगस्त मासेर १५
तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि

टरम्बल साहेबेर राय संबलित पढागेल । तत्परे रप्पाडगटेर उकिल चारि टाका मूल्येर फेहरेस्तेर द्वाराय विश्वनाथशर्मा चङ्गदार ओ मैरघनाथशर्मार जवाबेर १ किता नकल ओ बाङ्गला शर्कर ओ मजमुणेर एक किता दस्तावेजेर नकल लम्बरे दाखिल करिल, हटे आसिल । यथा चूडन्त हुकुम सादर हओनेर जवाब लओया उचित हइल, अंतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ मकहमा वाचत हुइ आदालतेर समुदय कागच एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण कर(र)। जाय ये ऐ पण्डित समस्त कागजेर हटे ओ अनुमोदने एइ विषयेर सओयालेर जवाब ये यद्यपि विरोधीय ग्रामसकल देवसेवा वाचत ओ ताहार उपर सरकारेर खालाना मकरर थाके, ऐ प्रकारे देवतार सेवाइत व्यक्तिके ऐ सकल ग्राम विक्रय करार छमता आछे कि ना, ओ बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एमत विक्रय सिद्ध ओ यथार्थ बटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते पञ्च दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिधीयुतकटवरटपरखेनसिलीसाहेवधम्माधिकरणात्तिलितेदन्दीयसितम्बरमासीयपोडशदिवसलितवित्तविचारपत्रान्तर्गतप्रभ-प्रतिरूपपत्रमेव तत्प्रमर्षितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयाष्टादशदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं, तदवलोक्य विविच्य च यादृशयोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि विवादारदीभूताः सर्वे ग्रामा देवतानां सराजका भवन्ति, तदा देवतायाः सेवाइतव्यक्तिशब्दवाच्यस्य व्यक्तिविशेषस्य तेषामेव ग्रामाणां विक्रयकरणे छमता नास्ति, एवमेतादृशविक्रयो बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थं भवितुं सिद्धो भवितुश्च न शक्नोति । प्रमुसमर्षितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूताः सर्वे ग्रामा एतादृशविक्रयात् पूर्वमेतदर्थमेव नियमिता स्यताः—यथा एतेषां ग्रामाणां राजमाहकरं राशे दत्त्वा अथवाशिष्टैरेतद्ग्रामोत्तर्नैर्देवतानां

सेवा भविष्यतीत्यवगमादेतादृश्यवृत्तान्ते सति देवतायाः सेवाइतशब्दवाच्यस्य तत्र संरक्षणावेक्षणैकिकर्तृत्वं विना राजग्राह्यकरस्य राजे समर्पणञ्च विना किञ्चिदपि स्वत्वाभावात् तत्तद्ग्रामाणां दानविक्रयकरणक्षमताया दूरापास्तात्वाद्, अथ च शास्त्रानुसारेणात्वामिकृतविक्रयस्य दानस्य वा राज्ञा परावर्त्तनीयत्वान्च—इति बह्मदेशचलितमनुकुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागविवादमद्गार्णवविवादार्यावसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोमेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शृग्नोच्छ्लिष्टेन जीवति ॥—इति मनुवचनम् (११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमृत्सृष्टं घनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लुकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (८।१६६) ॥ ३ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादार्यावसेतु (पृ० १३४) विवादमद्गार्णवादि (१ विवाह पृ० ३१७ ख) ग्रन्थभूतकाल्यायन- (कास्मृ० पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ ४ ॥

सितम्बरमासस्य पञ्चविंशतिदिने मयेवं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

परमात्मने नमः—

महामहिमश्रीयुक्तगवनरमेष्टसंस्कृतपाठशालास्थ

परिहृतपर्गेषु—

७९—कोनो व्यक्ति आपन सकर तालुकेर मध्ये कोन कोन ग्राम देवसेवार्थ देवतार नामे नियमित करिया, किञ्चित्काल देवसेवादि कारिया, कनिष्ठ पुत्रके ऐ देवसेवार्थ सकर स्थावर अर्पण पूर्वक देवसेवार्थ अनुमति करिया परलोकगामी ह्येन । परे ऐ कनिष्ठ पुत्र बहुकाल देवसेवक रूपे प्रसिद्ध थाकिया, ऐ स्थावरेर करग्रहण राजस्वदान देवसेवादि करिया, ऐ स्थावर देवनाम सम्बलित आपन नामे दस्तखत करिया विक्रय करेन । ऐ विक्रय सिद्ध हय कि ना । इहार व्यवस्था गौडदेश प्रचलित शास्त्रानुसारे लिखिते आज्ञा हय इति ।

देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य तद्देवसेवयेन देवनामसंबलितस्व-
नामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव । किन्त्वियान् विशेषः—विक्रेतुर्यथा
करग्रहणराजस्वप्रदानादिसम्पादकं लोकसिद्धं स्वत्वं तत्रासीत् केतुरपि तादृ-
शमेव लौकिकं स्वत्वं तत्र जातं देवस्वत्वस्य विजातीयकेतृस्वत्वं प्रत्यत्राधक-
त्वात्, स्वकरोपादानाय राजकृतविक्रये देवस्वत्वस्य केतृस्वत्वाबाधकत्ववत्
स्वपितृकृतदानाद् विक्रेतृकनिष्ठपुत्रस्वत्ववद् विक्रयमकृत्वा तस्मिन् मृते तदु-
त्तराधिकारिस्वत्ववच्च—इति गौडदेशप्रचलितभ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदाय-
भागटीकामिताक्षराग्रन्थविदाम्परामर्शः ॥ ० ॥

राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नुपतिना क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतृ-
स्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगित्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिगृहीत-
भूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविध-
स्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः
स्वत्वयोर्विरोधादिति । तथा स्वत्वधारावारणाय सजातीयस्वत्वं प्रतिस्वत्वं
विरोधीति सजातीयमतिक्रमणात् क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्वर्तिनि तादृशस्था-
वरादौ क्षेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादे न व्यभिचार इति च दायभागटीका-
कृन्द्बीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनम् । अनेन यस्मिन् द्रव्ये यस्य यादृशं स्वत्वं तेन
तद्द्रव्यविक्रये केतुस्तस्मिन् द्रव्ये तादृशमेव स्वत्वं जायते इति स्फुटमव-

गम्यते । उच्यते—लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वाद् ग्रीष्मादिवद्,
अपि च प्रत्यन्तवाणिनामप्यष्टशाल्व्यवहाराणां स्वत्वव्यवहारो दृश्यते,
क्रयविक्रयादिदर्शनात् । किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेति न्यायवि-
दो मन्यन्ते इत्यादि मिताक्षरालिखनम् (पृ० १६७) । एतेन स्वत्वस्य
लौकिकत्वात् (देव)सेवकस्यापि तत्र स्थानरे विजातीयस्वत्वमस्त्येव । अन्यथा
उदासीना अपि तत्स्थावरस्य करग्रहणादिकं देवसेवाञ्च कुर्व्युंरिति ।

परमात्मने नमः—

श्रीरामचन्द्रशर्मणाम् ।

श्रीहरिः शरणम् ।

नवद्वीपस्थ—

महामहिमश्रीयुक्तपण्डितवर्गेषु—

८०—तत्तद्देवसेवायं तत्तद्देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य बहुकालकृत-
तत्तद्देवसेवकेन तत्तद्देवतानामसंबलितस्वनामाङ्कितपत्र कृत्वा कृतो विक्रयः
सिद्ध एव । तत्र विक्रेतुनिरूपितकरग्रहणोपयोगिराजस्वदानसम्पादक-
लौकिकस्वत्वसजातीयकेतुस्त्वोत्पत्तौ बाधकामायास्त^१जातीयस्वत्वं प्रति स्वस-
जातीयस्वत्वप्रतिबन्धकतया देवस्वत्वादेर्विजातीयतया तादृशस्वत्वमप्रत्य
बाधकत्वाद्—इति विदुषाम्परामर्शः ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

गौडदेशचलितदायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारगट्टाचार्यलिख-
नम्—राज्यान्तराधिकारिणः सक्ताशान्तृपतिना^२ कीर्तेऽपि राज्यान्तरादौ
विक्रेतृस्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगि स्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु
दायप्रतिगृहीतभूम्यादिदृष्टिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां, तत्र तत्र
भूम्यादौ तथाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्बिरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात्
समानजातीययोः स्वत्वयोर्विरोधादिति (दाभाटी० पृ० १०), तथा स्वत्व-

१ म्ना ७६ अङ्किते व्यवस्थापत्रे तथा इदाम्प्यासीदित्यनुमीक्ये ।

२ ० रजजातीय०—व्यप० ।

३ सक्ताशान्तृप०—व्यप० ।

धारा(वा)रणाय सजातीयस्वत्वं प्रति स्वत्वं विरोधीतिः सजातीयमिति
करणात् । क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्व्यतिनि तादृशस्थावरादौ क्रोत्रादेः
क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः (दामादौ० पु० ६) इति च ॥०॥

श्रीहरिः—

श्रीरामलोचनशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीराममोहनशर्मणाम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामचन्द्रशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीरामशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकालीप्रसन्नशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकालीदासशर्मणाम्

श्रीजगदीशो जयति

श्रीकालिकाप्रसादशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीरघुनाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकाशीनाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीमोलानाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीराधानाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिश्चन्द्रशर्मणाम्

श्रीरामः—

श्रीराममुन्दरशर्मणाम्

विद्यामन्दिरस्थपण्डितवर्गेषु—

८१—वधन स्वाधिकृतसकरग्रामान्तर्वात्तिकियद्मामान् देवसेवार्थं
नियम्य, देवतानाम्ना विख्याप्य, कियत्कालं देवसेवादिकं कृत्वा कनिष्ठ-
पुत्रं तद्देवसेवार्थं तद्ग्रामाधिकारित्येन संस्थाप्य, लोकान्तरं गतः । अनन्तरं
सत्कनिष्ठपुत्रो देवसेवकत्वेन प्रसिद्धिमवलम्ब्य, तद्ग्रामसम्बन्धिकरप्रदण-

नियमितराजस्वप्रदानदेवसेवादिकं बहुकालं कृत्वा, तद्ग्रामान् देवनामसं-
लितस्वनामाङ्कितपत्रेषु विक्रीतवान् । तत्कृततद्विक्रयः स्वस्वत्वात्पदद्रव्य-
सम्बन्धितया विद्वत्स्येवेति विदुषां परामर्शः—

अत्र प्रमाणम्—

अत्रोच्यते । “लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वात् ग्रीह्यादि-
वत्” इत्युपक्रम्य, “अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टशास्त्रव्यवहाराणां
स्वत्वव्यवहारो दृश्यते, कथं विक्रयादिदर्शनात् । किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं
लोकसिद्धमेवेति न्यायविदो मन्यन्ते” इत्यादि मितान्तराङ्गिभिः (५०१६७)
स्वत्वस्य लौकिकत्वेन स्थिरीकृतत्वात्, लोके देवसेवार्थनियमितसकरस्था-
वरस्य स्वस्वत्वसंग्रहीतृस्वत्वजनकदानादिदर्शनात् च स्वस्वत्वध्वंसपरस्व-
त्वोत्पादनरूपदानान्यथानुपपरया, सकरभूमिदेवसेवार्थनियामकदेवसेवक-
स्यापि तत्र स्वत्वमिति स्थितम् । स्वत्वस्य च यथेष्टविनियोगप्रयोजकत्वेन
द्रव्ये स्वकीयं तादृशं स्वत्वं तादृशस्वत्वजनकदेवसेवककर्तृकविक्रयसिद्धि-
निर्वाधेति युक्तिः । तादृशस्थावरस्य करग्रहरणराजस्वप्रदानदेवसेवादि-
प्रयोजकतादृशविकं तृस्वत्वसकं तृस्वत्वोत्पत्तौ तु “पराजितनृपतिराज्या-
न्तर्वर्तितत्तत्पुरुषीयक्रमागतस्थावरादी जयादिना जेतुर्नृपतेः करग्रहणो-
पयोगिस्वत्वात्पादे तथा क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्वर्तिनि तादृशस्थावरादी
के प्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः” इति श्रीकृष्णतर्कालङ्का-
रलिखनं (५० ६) तुल्यस्थानीयत्वेन प्रमाणम् ॥०॥

श्रीहरिर्ज्जयति—

श्रीहरिः—

श्रीरामरत्नशर्मणाम्

श्रीपार्वतीचरणशर्मणाम्

श्रीगुरुर्ज्जयति—

श्रीहरिः—

श्रीहरनाथशर्मणाम्

श्रीजगन्मोहनशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिः—

श्रीनाथुरामशर्मणाम्

श्रीयोगध्यानमित्राणाम्

श्रीहरिःशरणम्—

श्रीलक्ष्मीनारायणशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीजयगोपालशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिप्रसादशर्मणाम्

श्रीशङ्करोजयति—

श्रीशम्भुचन्द्रशर्मणाम्

श्रीविष्णुर्जयति—

श्रीनिमाइचन्द्रशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीगंगाधरशर्मणाम्

श्रीहरिर्जयति—

श्रीपीताम्बरशर्मणाम्

८२—प्रथमप्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति 'जांमि सम्पत्त' कोन वस्तु ओ एक स्त्री ओ दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय । परे ऐ स्त्री ऐ दुइ कन्यार प्रतिपालन ओ आविश्यक खरचेर निमित्ते ऐ जमिर मध्ये किछु विक्रय करिया मृत्यु हय । परे ऐ दुइ कन्यार अवशिष्ट जमि विभाग करिया लेइया एक कन्या आपन अंश आपन भूमिके विक्रय करे । आर ऐ भूमिर तिन सन्तान । ताहार मध्ये एक धर्य-प्राप्त, आर दुइ नावालग । एमत स्थले ऐ वेक्त्या आपन नावालग पुत्रदेर भरण-पोषण ओ आविश्यक खरचेर जन्य आपन वयप्राप्त ओ नावालग ओ स्वामी-सकले एकात्रे थाकिया स्वामि ओ वयप्राप्त पुत्रेर सम्-मत्तिते ऐ दुइ पुत्र नावालग थाकिते उपरेर लिखित वस्तु घन्धक किन्वा विक्रय करिते शास्त्र सम्मत सिद्ध हइते पारे कि ना इति ।

द्वितीय प्रश्न—

कोन नावालग व्यक्तिदिगेर पिता ओ माता थाकिते नावालग वेक्तिदेर मालिक शास्त्र सम्मत अन्य केह हइते पारे कि ना ।

११. एड. दुइ. प्रश्नेर प्रत्युत्तर, वचन, ओ, तस्य भाशा इहार पारवे लिखियेन इति। शान १८२९ तारिख १० जुन, मो शन. १२३६ साल वा तां २९ ज्यैष्ठ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतिराम्

यवाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीराब्दप्रतिपाद्योनिश्रिद्धिकाष्टादशशताब्दीयलवम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिक्यामद्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः कांचिद् भूमिमेकां पत्नीं द्वे कन्ये च संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं सैव मृतस्य पत्नी तयोरेव द्वयोः कन्ययोः प्रतिपालनार्थं स्वकीयावश्यकव्ययार्थं च तस्या भूमेः किञ्चिद्विक्रयं कृत्वा मृता स्यात्, तदनन्तरं ते एव द्वे कन्येभ्यः शिष्टां भूमिं विभज्य, गृहीत्वा तयोर्मध्ये एका कन्या, प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतो यस्तदीयावश्यकव्ययस्तदर्थं स्वांशं स्वभगिन्या निकटे विक्रीतवती स्यात्, एवं क्रयकर्त्रा भगिन्यास्त्रयः सन्तानाः, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वावप्राप्तव्यवहारौ, एतादृशानुचान्ते सति सैव क्रयकर्त्री अप्राप्तव्यवहारेण स्वपुत्रेणाप्राप्तव्यवहाराभ्यां स्वपुत्राभ्यां च स्वपतिना च सहैकान्ते स्थिता सती, स्वपत्यनुमत्या प्राप्तव्यवहारस्वपुत्रानुमत्या च सतोर्द्वयोरप्राप्तव्यवहारयोः स्वपुत्रयोस्तुपरिलिखितवस्तुनो बन्धकं विक्रयं वा कृतवती स्यात्, तदा स बन्धको विक्रयो वा शास्त्रतः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि पत्न्या स्वभरणपोषणार्थं स्वकीयावश्यकव्ययार्थं च तदने दानाद्यमनधिक्रयाधिकारः तथा पत्न्यभावे दुहितुस्तुतपिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि

तस्या अप्यावश्यकव्ययार्थं स्वभरणपोषणार्थं च तद्धने दानाधमनविक-
याधिकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥—इति दायभागा(दाभा०

पृ० १७२)दिग्रन्थभृतभारतवचनम् (मभा०—१३।४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दात्तत्र
यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्तनाशक्तौ आपानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दाय-
भाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा०
पृ० १५१)ग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य मध-
पत्रलिखितमालिकशब्दाच्चोऽर्थात् सरत्तय रक्तां, अन्यः कश्चिच्छ्राद्धतो
भविष्यति नार्हति, अप्राप्तव्यवहाराणां विन्यपेक्षया मान्यपेक्षया चान्येषां सुहृत्त-
त्त्वाभावात्—इति बह्वदेशचलितदायभागदायरहस्यविवादमहार्णवव्यवहार-
तत्रव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे धीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ।—इति व्यवहारतत्त्वादि-
(पृ० ६५)ग्रन्थभृतनारद (नामसं०—२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अङ्गरेजीयन्दप्रतिगात्रशिक्षिकाष्टादशशतान्श्रीयज्ञानयतीमासीत्यनयम
दिनधम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिथेण

८३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२६ ई० मताबरु १ माह पौष शन १२१६ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेबेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति	आपिलाष्ट
तारामणिदास्या प्रभृति	रप्पाडष्ट

आपिलाष्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रप्पाडष्टगणेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजिर आसिल । एइ मकदमा पइ मासेर ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशान कोटेर फयसलासकल ओ ई० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १२ तारिखेर लिखित ऐ आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याहा मजुवात करार देया जाय, ओ ताहार जवाब ओ ऐ आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पढागिया स्थकित छिल, अथ पुनराय रोवकार हइया जिला ओ कोट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पढागेल । ये उभयेर पूर्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे । प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ऐ मकदमार आसल मुदाआलेहेगण गङ्गाधरनाग ओ गदाधरनागेर पूर्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुद्दगणेर पूर्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथ ओ चारि भ्रातागण आपनारदिगेर पूर्वाधिकारि मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कण्टक फरिया दखिल हइलेन । ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुद्दगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे । ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल । ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि-

तस्या अप्यावश्यकव्ययार्थं स्वभरणपोषणार्थं च तद्धने दानाधमनविक्रयाविकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥—इति दायभागा(दाभा०

पृ० १७२)दिग्रन्थधृतभारतवचनम् (मभा०—१३।४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्चनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभाग (पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य प्रभ-पत्रलिखितमालिकशब्दवाच्योऽर्थात् संरक्षणकर्ता, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो भविष्यं नार्हति, अप्राप्तव्यवहाराणां पितृपेक्षया मान्यपेक्षया चान्येषां सुहृत्तत्त्वाभावात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागादायरहस्यविवादमङ्गार्णवव्यवहार-तत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे वीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ।—इति व्यवहारतत्त्वादि- (पृ० ६५)ग्रन्थधृतनारद (नामसं०—२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यत्रिशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानयरीमासीयनवम दिनछम्बन्धियशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेपं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

८३—रोवकरि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२६ इ० मतावक १ माह पौष शन १२३६ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेबेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति	आपिलाण्ट
तारामणिदास्या प्रभृति	रप्पाडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुरु पण्डित, रप्पाडण्टगणेर उकिल मुनशी गोलाम धतुल हाजिर आसिल । एइ मकईमा एइ मासेर ९ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशन कोटेर फयसलासकल ओ इ० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १२ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याहा मजुवात करार दिया जाय, ओ ताहार जवाब ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया जिला ओ कोट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पडागेल । ये उभयेर पूर्वार्धिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे । प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकईमार आसल मुहाआलेहेगण गङ्गाधरनाग ओ गदाधरनागेर पूर्वार्धिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुद्दइगणेर पूर्वार्धिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथ; ओ चारि भ्रातागण आपनारदिगेर पूर्वार्धिकारि मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कण्टक करिया दखिल हइलेन । ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुद्दइगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे । ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल । ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर संम-
 स्त पैतृक ओ कृत वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन । तत्कालिन-
 प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु-
 मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्ति ओ मुश-
 म्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्ति
 समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाहिगेर सत्वेर
 एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ इ० १८०६ सालेर दिश-
 म्बर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेबेर तत्रविजे रामदु-
 ला(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा साब्यस्त हओन कारण दुई
 मकदमार मुद्दइगणेर दावि डिसमिप हइल, ओ इ० १८१२ सालेर
 जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर
 मकदमा सम्बन्धे जिलार फयशला बहाल थकिल, ओ राजेश्वरि
 मकदमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ
 साब्यस्थे, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) वहार
 पुत्र राधाकान्तके अशे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्दइगण हइते
 एरु जन मुशम्मात राजेश्वरि अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलो-
 चन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला बह ओ एइ हुकुमे
 डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाष्ट आपन अप्राप्तव्यवहार
 पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात
 अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरण-पोषण पाइवेक इति ।
 ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए
 आदालते नामजुर हइल, ओ ए मकदमार नालिशेर एइ मूल ज्ञान
 हइल-ये यत्कालिन मुशम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालि-
 काप्रसादेर त्यक्त वस्तु दखल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन ।
 तत्कालिन एइ मकदमार मुद्दआलेइगण गङ्गाधरनाग प्रभृति
 बाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मतायक इ० १८०६ सालेर ४ सेत-
 म्बर मासेर लिखत ८४ लेम्बरे गृथित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर भूमि-

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ खोलासा मजमुने
 एक किता एकरार लेखाइयाछे-ये मकदमाय ये परिमान खरंच
 हइवेक तोमरा दिवा, ओ आमरा आदालत हइते डिगरी पाइले
 कालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते
 । अथानार कमेर विक्रय कवाला लिखियादिव, ओ ताहार पर
 यखन ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत
 हइते ऐ राजेश्वरि अत्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णलोचन प्रभृतिर
 स्वत्वे ठिकरि हइल एइ मकदमार मुद्दइगणेर माता मुशम्मात
 राजेश्वरि हइते वाङ्गला १२१६ सालेर १४ पौष मतावक ई० १८२२
 सालेर दिशम्बर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्बरे गृथित
 विरोधीय रकम घावत कवाला, ओ ऐ तारिखेर लिखित मबलग
 २५०० टाका निर्वन्धे ८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय
 विरोधीय वस्तु उपर दखिलकार हइलेन, ओ आपिलाएटान,
 अर्थात् मुद्दइगण, ऐ छय आना रकमेर उपर दखल पाओनेर जन्ये
 एइ दलिले गद्दाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उद्धार-
 दिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व
 हस्तान्तर करणेर इमत। राखित ना; ओ रप्पाइएटान ताहार जघावे
 जाहेर करे ये उद्धारदिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उद्धार-
 दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक;
 अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिबेक इति । ये हेतुक
 उपरेर लिखितसकल हइते पष्ट आछे ये अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि
 पक्ष हइते कालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्बन्धे उद्धारदिगेर स्वत्व दष्टे
 ओ केवल आदालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा
 निदर्शन लिखित हइयाछे, ओ ऐ मुशम्मातेर नालिस मकदमाय
 ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशान
 कोदेर डिगरी आपिलाएटगणेर स्वत्व दष्टे हइयाछे, ऐ मुशम्मा-
 तानेस् स्वत्वे हय नाइ ओ इहाओ पष्ट आछे ये सरकारेर चलित

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर समस्त पैतृक ओ कृत वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन । तत्कालिन-प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु-मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्ति श्री मुशम्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्ति समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाहिगेर सत्वेर एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ इ० १८०६ शालेर दिशम्बर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेबेर तमबिजे रामदुर्ला(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा सान्यस्त हओन कारण दुई मकदमार मुद्दगणेर दावि डिसमिप हइल ओ इ० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर मकदमा सम्बन्धे जिलार फयशला बहाल थकिल ओ राजेश्वरि मकदमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ साल्यस्ये, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) उहार पुत्र राधाकान्तेर अशे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्दगण हइते एऊ जन मुशम्मात राजेश्वरि आप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला बइ ओ एइ हुकुमे डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाएट आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरय पोषण पाइवेक इति । ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए आदालते नामधुर हइल ओ ए मकदमार नालिशेर एइ मूलज्ञान हइल-ये यत्कालिन मुशम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु दरिल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन । तत्कालिन एइ मकदमार मुद्दगण गङ्गाधरनाग प्रभृति वाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मतीबेक इ० १८०६ शालेर ४ सेतम्बर मासेर लिखित ८४ लेखेरे गीर्धित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर भूमि-

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ खोलासा मजमुने एक किता एकरार लेखाइयाछे-ये मकदमाय' ये परिमान खरच हइवेक तोमरा दिवा, ओ आमरा आदालत हइते डिगंरि पाइले कालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते: आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते । आनार कमेर विक्रय कवाजा लिखियादिव, ओ ताहार पर यखन इ० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत हइते ऐ राजेश्वरि अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्वे टिकरि हइल एइ मकदमार मुद्दगणेर माता मुशम्मात राजेश्वरि हइते वाङ्गला १२१६ सालेर १४ पौष मतायक इ० १८२२ सालेर दिशम्बर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्बरे गृथित विरोधीय रकम वायत कवाजा, ओ ऐ तारिखेर लिखित मचलग १५०० टाका निर्वन्धे ८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय विरोधीय वस्तु उपर दखिलकार हइलेन, ओ आपिलाखटान, आर्यात मुद्दगण, ऐ छय आना रकमेर उपर दखल पाओनेर जन्ये एइ दलिले गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उद्धार-दिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शाखानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व हस्तान्तर करणेर छमता राखित ना, ओ रष्पाडखटान ताहार जवाबे जाहेर करे ये उद्धारदिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उद्धार-दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक; अतएव एमत विक्रय शाखानुसारे सिद्धि थाकिवेक इति । ये हेतुक उपरेर लिखितसकल हइते पष्ट आछे ये अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि पत्न हइते कालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्वन्धे उद्धारदिगेर स्वत्व हष्टे ओ केवल आदालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा निदर्शन लिखित हइयाछे, ओ ऐ मुशम्मातेर नालिसि मकदमाय इ० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशान कोटेर टिकरि आपिलाखटगणेर स्वत्व हष्टे हइयाछे, ऐ मुशम्मातानेस् स्वत्वे हय नाइ ओ इहाओ पष्ट आछे ये सरकारेर चलित

आइनसकल अनुसारे ऐ मुशम्मातानेरं मफलसिते नालिस करणेर
 दयमता छिल, ओ आदालतेर खरचार निमित्तकथेओ एवं आपि-
 लाष्टगणेर प्रतिपालनार्थे उद्दाहिगेर गुजराणेर कोनो हेतु ना थाकन
 प्रयुक्त ८५ लम्बरेर कवालार लिखित गुल्येर टाका देओन विषय
 ए मकदमार मुद्दाआलेहेगणेर एजहार विसिष्ट रूपे प्रतिपत्र नहे ।
 केनना आपिलाष्टगणेर पिता रामलोचन वर्त्तमान थाकने उद्दा-
 हिगेर भरण ओ पोषणेर भार ताहार पर उचित छिल । उद्दाहिगेर
 माता राजेश्वरि पर छिलना । अतएव चूडन्त हुकुम सादर हओ-
 नेर पूर्व ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित बोध
 हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल मकदमार कागज सम्ब-
 लित ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन कराजाय ये उपरे
 जे प्रकार लेखामेल मकदमार अवस्थार पर अनुमोदन परे एवं ८४
 ओ ८५ लम्बरेर एकरारनामा ओ कवाला दस्तावेजात ओ साक्षि-
 गणेर एजहारसकल दृष्टे याहा ई० १८२४ सालेर आगस्त मासेर
 १० तारिखेर हओया कोटेर हुकुम मते लओया गयाछे, ओ एइ
 दृष्टे ये कोनओ करार विक्रयेर दस्तावेज लिखिन कालिन राजेश्वरि
 स्वामी रामलोचन, अर्थात् मुद्दागणेर पिता, जिववान् छिल, ओ
 एवं पूर्वेर मकदमार विरोधीय वस्तु हरण कारक व्यक्ति हस्त
 हइते निकालन जन्ये सरकारेर आइन मते पूर्वेर नालिश
 उपस्थित करणार्थे आदालतेर किछु खरचार आविश्यक' छिल ना-
 इहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये लिखेन-ये ऐ विक्रय वङ्गदेश
 चलित शाखानुसारे सिद्धि वटे कि ना ? इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

यथाव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूदेनरीटरम्बलसाहेवधर्माधिक'.

रणलिखिताङ्गरेजोशब्दप्रतिपाद्योनत्रिशदधिकार्थादराशताब्दीपदिशम्बरमा-
सीयचतुर्दशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्प्रमर्षितैतद्विवा-
दविषयनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रे^१ पञ्चाशीत्यङ्काङ्कित-
विक्रयपत्रं, साक्षिणां साक्ष्यपत्रजातं च यत्तद्वदीयतन्मासीयत्रयोविंशतितमे-
दिनसम्बन्धिबुधवासरे षट्त्रैकाधिकयामद्वये मया प्राप्त तदवलोक्य विविच्य
च षाटशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति, मृतराधाक्रान्तत्यकधने
तस्मिन्तदौहित्वेनैतद्धर्माधिकरणार्थिनां कृष्णलोचनप्रभृतीनां स्वत्वे, एतद्ध-
र्माधिकरणाज्ञायां जातायामपि तन्मातुराजेश्वर्यास्तद्धनस्वामित्वस्य सर्व्वथैव
दूरापास्तत्वेन, तत्कृतैतादृशप्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितविक्रयः सिद्धो न भवति,
प्रभुसमर्पितचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रे अन्नपूर्णायां^२ राजेश्वर्यां चेत्येव लिखितं
मदीयैतद्विवादे यावान् व्ययो भविष्यति, स भवता देयः, अस्मानिः षोडशाण-
कपरिमितविवादास्पदीभूतसराङ्करस्थावरधनुदायात् षडाणकाः स्वस्वत्व-
त्यागपूर्व्वकं तुभ्यं दत्ताः । अतएवैतादृशनियमलिखनमेवैतद्विक्रयस्य मूलम् ।
तत्र च शास्त्रानुसारेणान्नपूर्णायाः राजेश्वर्यां वा तद्धनस्वामित्वस्याजातत्वेन,
धर्माधिकरणविचारेणापि तथा पर्य्यवधानेन च, तत्कृततत्त्ववित्पत्रस्य
तन्नियमानाक्रान्तत्वाद्, अस्वामिकृतविक्रयस्य शास्त्रानुसारेण परावर्त्तनीयत्वा-
च्च इति ब्रह्मदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्थादिग्रन्थानुसारिणी व्यव-
स्था ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अहतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु(पृ० २०६)

वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गाणवादि (१
विवाभ० पृ० ३१७ स्त)ग्रन्थधृतकाल्यायन (कास्मृ. पृ० ७६)वचनञ्चेति
॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकशतशतान्दीयेजानवरीमासीयपञ्च-
मदिने मङ्गलवासरे घटिकैकार्थिकयामद्वयानन्तरं मदेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण.

लं० ८ ई शन १८२७.

८४—रोवकारि कोट आपिल, एलाका मरसिदावाद, तारिख
६ माहे जानेओरि, शन १८२६ ई, मतावक २७ माहे शन १२३५
वाङ्गला; रोज शुक्रवार काएममोकाम हाकिमश्रीयुत रावट हेनरि
नेधवट साहेवेर बैठके ।

बदनचन्द्रसिंह

मतालके मरसिदावाद

ओ अप्राप्तव्यवहार

रामनारायणघोपेर पिता

जिवनकृष्णघोप

आपिलाएदान

राधानाथसिंह

रष्याडएट

तालुक कमलनयन घाटी प्रभृतिर हिस्साय दखल पाओन
मयलग १३८ । ८ गण्डा मकहमा ।

एइ मकहमार मिळिल भिन्न २ तारिखसकले रोवकार हइया
ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे स्थकित' छिल,
अद्य पुनराय आपिलाएटेर उकिल रामप्रानराय, रष्याडएटेर उकिल
चेतन्यप्रसादरायेर हाजिरिते ए मकहमा उपस्थित हइल । यथा
आपिलाएटगणेर उकिल ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार पर
अमत; ओ उचित मत आमारे विश्वास हइल ना । ओ मकहमार
व्यवस्था एइ ये कृपानाथेर दुइ पत्र, प्रथम मुरलिमजुनदार, द्वितीय

भवानीमंजुमदार, ओ एक कन्या ओ दौहित्र राखिया मृत्यु हय ओ गुरलिर अश ताहार दौहित्र पाइयाछे ओ भवानीमंजु-
मदारेर चारि पुत्र; प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय
कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल । ताहार मध्ये गङ्गाप्रसाद
निःसन्तान ओ हरगोविन्द नकर नामे आपन एक पुत्र ओ तिन-
कन्या राखिया पितार समन्ते मरे । तत्परे भवानीमंजुमदारेर मृत्यु
पर प्रथम कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान मरे ।
तदपरे ऐ नफरो निःसन्तान मरे । तत्परे प्रथम रामप्रसादेर स्त्री;
ताहार पर हरगोविन्देर स्त्री मरे । ओ हरगोविन्देर दौहित्रगण
वर्तमान ओ राधानाथ, ये रामप्रसाद ओ हरगोविन्द प्रसूतीर
पितामह कृपानाथेर दौहित्र बडे, हरगोविन्देर दौहित्रगणेर नामे
त्यक्त वस्तु दाविदार हइल । अतएव उपरेर लिखित व्यवस्थायं त्यक्त-
वस्तु 'फोन व्यक्तीके अश-इहार व्यवस्था शहर आदालतेर पण्डित-
गण' हइते लओन आविश्क । ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोबका-
रि नकल इङ्गरेजी चिठीर मध्ये कुतशीनामा ओ सओयाल सहित
सदरेद रेजेष्टर शाहेवेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय जे साहेब
मीसुफ शदरेर पण्डितगण हइते ऐ सओयालेर जवाब लइया एइ
आदालते पाठान, ओ ए मकदमा स्थकित थाके इति ।

बदनचन्द्रसिंह ओ गयरह

आपिलास्टा(न)

राधानाथसिंह

रप्पाडरट

एइ मकदमारं विवरण एइ ये कृपानाथ आपन दुइ पुत्र, अर्थात्
गुरलिमंजुमदार ओ भवानी मंजुमदार, ओर एक कन्या ओ दौहित्र
राखिया मृत्यु हय । गुरलिमंजुमदारेर हिस्या ताहार दौहित्रे
पाइयाछे, ओर भवानीमंजुमदार मजकुरेर चारि पुत्र, प्रथम हर-
गोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद
छिल । ओ चारि जणेर मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान, ओ हर-
गोविन्द नकर नामे एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया आपन पितार
संमुखे मृत्यु हय । तदपरे ऐ भवानीमंजुमदारेर मृत्यु पर प्रथम

कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान परलोक ह्य । तदपरे नफरेर मृत्यु ह्य । ताहार पर प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, तदपरे हरगोविन्देर स्त्री मृत्यु ह्य, ओ हरगोविन्देर दौहित्ररा वर्त्तमान-आछे । कृपानाथेर दौहित्र, अर्थात् रामप्रसाद ओ हरगोविन्द ओ गयरहेर पितामहेर दौहित्र राधानाथ तेच्य वस्तुर दावि हरगोविन्देर दौहित्रद्विगेर नामे राखे । ए जन्ये शदरेर पण्डित-द्विगेर निकट शाखानुसारे व्यवस्था एइ विषय लथोया आवि-श्रक ! ये उपरेर प्रकरखानुसारे एइ वस्तु के पाइते पारे । अतएव कुरसिनामा दृष्टे इहार ओ ए शाखानुसारे लिखेन इति । तारिख ६ जानेओरि । सन १८२९ इ० ।

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रमेवं वंशावलीपत्रञ्चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति गङ्गाप्रसादस्य द्वितीयपुत्रस्य निःसन्तानस्य भवानीमञ्जुमदारो पितरि विद्यमाने सति. मृतस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतधने स्वत्वानुत्पादात्, तदनन्तरं मृतस्य भवानीमञ्जुमदारस्यांशे जीवति पितरि मृतस्य प्रथमपुत्रस्य हरगोविन्दस्य पुत्रो नफरसंज्ञको भवानीमञ्जुमदारस्य तदानीं विद्यमानो तृतीयचतुर्थौ द्वौ पुत्रावर्थात् कालीप्रसादरामप्रसादौ च एते त्रय एव समानाधिकारिणो जातास्तत्रापि नफरसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वान्नाशय दीभूततत्पितृयोग्यतृतीयांशे तत्पितृहरगोविन्दस्य दौहित्राणामर्थाद् रामनारायण्यदनचन्द्रदोलगोविन्दानामधिकारो, यतो नफरसंज्ञके स्वपितृयोग्यतृतीयांशाधिकारिण्यनपत्ये पत्नीमारभ्य पितृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहिते मृते सति तन्मातृवृत्तपितृव्यधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तद्धने तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये प्रमुसमर्षितवंशावलीपत्रेण नफरसंज्ञकस्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तस्य पितृदौहित्रात् पूर्व्यधिकारिणोऽस्वत्वायगमाद् । अथ च विशिष्टांशद्वये रामप्रसादस्य पितामहकृपानाथदौहित्रस्यार्थाद्राधानापत्याधिकारो यतो रामप्रसादे भ्रातरि जीवति सति मृतस्य कालीप्रसादस्यांशे भ्रातृत्वेन रामप्रसादस्याधिकारे जाते सति तद्धनं रामप्रसादस्यैव जातम् । अतस्तस्मिन्नपत्ये मृते सति तत्स्वत्वान्नाशयदीभूत-

यावद्धने अर्थाद् भवानीमजुमदारस्यांशस्य त्रिधा विभक्त्यांशद्वये रामप्रसाद-
 छियाः शास्त्रानुसारेण पतिस्वत्वास्पदोभूतधनाधिकारिण्या नफरसंज्ञके राम-
 प्रसादभ्रातृपुत्रे मृते सत्यपि जीवन्त्यास्तस्या मरणोत्तरं तद्धने रामप्रसादस्य ये-
 उत्तराधिकारिण्यस्तेषामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिण्यम्मध्ये प्रमु-
 समर्पितवंशावलीपत्रेण रामप्रसादस्य पितामहप्रपौत्रपर्यन्तस्य पितामह-
 दौहित्रात् पूर्वमधिकारियोऽस्तत्वावगमाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभाग-
 श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादाण्यसेत्वादिग्रन्था-
 नुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुर्प्यपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते॥—इति दायभाग(पृ० १३)
 श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका,(पृ० १३) विवादभङ्गार्णव (२ विवाभ०
 पृ० ५ क) विवादाण्यसेत्वादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

यथा पितामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि,
 न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः—इति दायभाग (पृ० २६)
 ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितुर्दौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः—
 इति दायभाग (पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभाग-
 दि(दामा पृ० १७१)ग्रन्थधृतकात्यायन (कास्मृ० ६२१)वचनम् ॥४॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम् । स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
 दायभाग (पृ० १८४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्यादि दायमाणादि-
 (पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ६ ॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः प्रियङ्गुप्रत्यासत्ति-
 क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागः (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥
 तदभावे पुत्रः पितृदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका-
 (पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥
 तदभावे पितामहदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका
 (पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ९ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥—

श्रीर्जयतितराम्
 श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नः—

८५—यद्यपि कोन खोलाकेर स्वामी वायुमस्त अर्थात् वातुल
 ह्य । तत्कालीन ऐ वातुल व्यक्तिर पैवृक वस्तु विक्रयार्थे ऐ व्यक्ति
 आपन खोके अनुमति देया, ना देया तुल्य । एमते ऐ खोलोक
 आपन अशुरेर आद्धेर देना परिशोध ओ ऐ वातुल स्वामीर चिकि-
 त्सा कारण आपन स्वामीर पैवृक कोन वस्तु ऐ स्वामीर बिना
 अनुमतिते विक्रय करे । ताहा सिद्ध हइते पारे किना । इहार
 प्रत्युत्तर शास्त्रानुसारे वचन ओ ताहार भापा एइ प्रश्नेर पार्थे
 लिखिवेन । इति शन १८२६ शाल, तारिख ६ मेई । मोतावक
 शन १२३६ शाल तारिख २८ वैशाख ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुत्तमर्षितमभयप्रभवलोक्ष यादृशबोधो जातस्तदनुसारेषोत्तरं लिख्यते ।
 यत्र कस्याञ्चिन् स्त्रियाः पतिर्नायुप्रसक्तत्वमे तेनेय वायुमस्तेन पर्या
 स्वपैतृकधनविक्रयार्थं स्वपत्न्यै अनुमतिदानमदानश्च तुल्यमिति मत्वा सा स्त्री-

श्वशुरस्य आवश्यक भादार्यर्णपरिशोधनार्थम्^१ एवं तस्यैव वायुमस्तस्य पत्युः
त्रिक्रियायं तत्त्वत्वात्सदीभूतस्य तत्त्वैतृकस्य नक्त्यचिद्वस्तुनस्तस्यैव पत्युरनु-
मतिं विना विक्रयं कृतवती स्यात्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति यतः
शास्त्रानुसारेण प्रेतभाद्रकरणाद्यर्थं चिक्रिसार्थं वा येन केनापि सम्बन्धिना
दासेन वा कृतं तदुपयुक्तमृणं विक्रयादिकञ्च सिद्धयति—इति बङ्गदेशचलि-
तमनुदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादमङ्गार्णवविवादार्यवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी-
व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

'कुटुम्बार्थेऽव्यधीनोपि व्यवहारं यमाचरेत् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायाञ्च विचालयेत् ॥ इति मनु (पृ० ८ ।

२६७) वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ने तु गृहीत व्याधितेऽथवा ।

उपलभ्यनिमित्तञ्च विद्यादापत्कृतन्तु तत् ॥ २ ॥

कन्याविवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु यत्कृतम् ।

एतत्सर्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्व (पृ०

६५) दायतत्त्व (पृ० २०) विवादमङ्गार्णवादि (१ विवा १६६ ख) ग्रन्थ-
धृतकाल्यायन (का० स्मृ० ५४२-५४३) वचनम् ॥ ३ ॥

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बमरणादिरूपयादृशयादृशकार्ये उपस्थिते
दासकृतमृणं प्रमुणा शोधनीयमिति प्रतीयते, तादृशतादृशकार्यनिष्पत्त्यर्थं
प्रमुधनविक्रयो सिद्धयति । तदतिरिक्त एव स्वाम्यनुमतपदेन बोध्यते—
इति विवादमङ्गार्णवग्रन्थ (१ विवा ३३० क) लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीज्जर्जयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

१. आवश्यक—व्यप० ।

२. परिशोधन०—व्यप० ।

३. अशक्तेन इति पाठः व्यप० ।

४. व्याधितेन इति पाठः व्यप० ।

५. निमित्तं—शास्त्र० ।

६. शक्ने-तु—वास्तु० ।

२६—रोषकारि आदालत देओयानि जिला यशर जिला मज-
 कुरेर जज श्रीजान वित्रभ्याफटविष्ट साहेबेर बैठके सन १८२६
 शाल ६ भाइ मतावेक सन १२३६ शाल वाङ्गला २५ वैशाख रोज
 बुधवार ।—

गङ्गागोविन्दसेन
 रामलोचनसाहा

फरियादि
 आशामि

मकईमा डिगरि जारि

अद्य फरियादिर उकिल वैद्यनाथ मजुमदार ओ मुनशी माहा-
 मुद झादके ओ वैद्यनाथ मुनशी ओ ओजरदार चित्रामणिर
 उकिल गोलकचन्द्र चौधुरी ओ गुरुप्रसाद मुनशी हाजिर हइलेन ।
 हाल सनेर ७ आपरेल ओ २२ मार्च तारिखेर दाखिल हओओ
 फरियादिर दरखास्त ओ माहा(जन) मजकुरेर १३ तारिखेर
 दाखिल हओओया चित्रामणिर ओजरेर दरखास्त दृष्टि करागेल ।
 यद्यपि ए मकईमार डिगरि जारिर कागज फलिकातार प्रविनसियान
 क्रोट आदालतेर पाठान गयाछे, किन्तु एइ आदालतेर प्रस्तुत
 कागजातेर द्वाराय जानागेल । ए मकईमार विवरणः—एइ चे,
 आसामि मजकुर फरियादिके जानिन' दिया क्रोट आपबडेछेर
 सिरिस्तार कर्तार निकट राजा शशिभूषणदेवराय नावालगेर
 जमिदारि इजारा लइया, ताहार मालगुजारि परिशोध ना कराते
 फरियादिर तालुक निलाम हइया इजारार वाकि मालगुजारि
 ६६०० टाका उमुल हइयाछे । फरियादि ताहार नालिप करिया
 आसामि मजकुरेर पर मवलग मजकुरेर डिगरि पाइयाछे । सेइ
 डिगरि जारि करिया आसामिर कीर्तिनगरेर वसति घाटी ओ नीलेर
 फुटी ओ गरु ओ घोडा निलाम करिया, मवलगे १०२६१।० टाका
 वमुया पाइयाछिल । आसामिर पिता रामजिसाहा विकिर वस्तुके
 आपनार बलिया, निलाम असिद्ध करिवार' दरखास्त करिया-

१. जानिन—साधिवान् पठः ।

२. करियार—भ्य० ।

द्विल । ताहाते सदर देओयानिर हाकिमेरदिगेर विचारे ऐ वस्तुर
 निलाम असिद्ध हइया फेरियादिके-नालिप करिवार आशा हइ-
 याद्विल । एमते फेरियादि मजगुर नीलेर कुटी ओ वसती चाटीर
 वाविते दुइ लम्वरे रामलोचनसाहा ओ रामजिशाहा दुइ जनेर
 नामे एइ आदालते नालिप करिले । ए आदालतेर पूर्वकार जज
 साहेवेर विचारे नीलेर कुटी ओ वसति चाटीर अधिपति ओ
 कर्ता आशामि रामलोचनसाहाके-बोध हइया करियादिव-दुइ
 नालिप डिगारि हइयाद्विल । परे आसामिर पिता रामजिसाहा
 साहेय मोछफेर फयशलाते नाराज हइया एइ थोजरे आपिल
 करियाद्विल ये नीलेर कुटी, वसति चाटी, मजगुर आमार हक,
 आमार पुत्र रामलोचनसाहार सहित कोनो विषय नाइ । परे
 इहरेजि शन १८२८ शालेर १७ सेतम्वर तारिखे फलिफातारं
 कोट आपिलेर हाकिमेरदिगेर विचारे एइ हेतुक एइ आदालतेर
 दुइ फयशला असिद्ध हइयाछे । ये कुटि ओ वसति चाटीर प्रति
 डिगारि टाकार देन्दार रामलोचनसाहार अधिपत्यता आदालते
 सुस्पष्ट प्रकाश हइलना । ओ रामजिसाहा आपन नामेर एक
 पाटा ओ मोनसफेर तिन केता फयशला कुटि मजगुरेर जायगा
 आपन साब्यस्त कारण दरपेप कम्लेक । आर पितृ वर्त्तमाने
 पितृवस्तु पुत्रेर देनाय विक्रि हइते पारेना । एइ दशे फेरियादि शन
 १२३५ शालेर फाल्गुण मासे रामलोचनसाहार पिता रामजि
 साहार मृत्यु हइयाछे, ओ रामलोचन मजगुर आपन पितार
 तायत विषयेर सत्वाधिकारि हइयाछे बलिचा सेइसकल आपन
 पाओना डिगारि टाका उमुजेर जन्य ऐसकल विषय कोक ओ
 निलामेर दरखास्त करियाछे । ताहाते कोटेर हुकुम हइते परे
 रामलोचन आसामिर स्त्री चित्रामणि दरखास्त गुजराइलेक जे
 आमार स्वगुर रामजिसाहार बेकिछु जोतजमा ओ निष्कर
 भूमि ओ वसति चाटी समेन् एमारत् ओ नीलेर कुटी ओ तैजसादि
 ओ अलद्वार आदि स्यावर ओ अस्थावर आपन स्वकृत ये करि-

याद्विलेन ताहा आपन मृत्युर पूर्वें शन १२३५ शालेर १६ माचव
 तारिखे आमामके दान करिया ऐ तारिख मजकुर दानपत्र लिखिया
 दियाछेन; आमार स्वामि रामलोचनसाहा आमार स्वशुरेर अवा-
 ध्य स्थितेन । ताहार देनार जन्य आमार स्वशुरेर दत्त वस्तु आमार
 हक, ताहा क्रोक विक्रि हइते पारेना । परे तलवानुसारे चित्राम-
 णिर उकिल शन १२३५ शालेर १६ माच तारिखेर एक केता दान-
 पत्र प्रकाश्य रामजिसाहा दातार लिखित चित्रामणि महीतार नामे
 वाङ्मला भाषां ओ अक्षरेते लिखित एइ अदालतेर रेजष्टर साहेबेर
 निशानिते दरयेप करिलेक । ताहा दृष्टे करियादिर उकिल वैद्य-
 नाथ मजुमदारेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये चित्रामणिर नामेर
 रामजिसाहार दानपत्रेर सत्यताते तोमार मओकेलेर किछु आप-
 त्य अछे कि ना । जवाब दिलेक ये एमत दानपत्र लिखित पडिन
 हओयार सम्भव वटे । किन्तु एमत धारार दस्तावेज लिखिवा
 कारण केवल आमार मओकेलेर डिगरिर टाका जीर्ण करिवेक ।
 चित्रामणिर उकिलेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये रामलोचनसाहा
 व्यतिरेक रामजिसाहार आर पुत्र अछे कि ना । जवाब दिलेक ये
 रामलोचन भिन्न रामजिसाहार आर पुत्र नाइ इति । तजविज
 हइलो ये चूडन्त हुकुम प्रकाशेर पूर्वें ए मरुईमाते एइ कथा ज्ञातां
 हओया आवश्यक हइल ये चित्रामणिर दाखिल करा दानपत्र
 शास्त्रानुसारे मिद्ध हइवार योग्य वटे कि ना ।

ए विषय शास्त्रविदेर निकट तिन कथा प्रश्न करा उचित
 हइल । प्रथमनां एइ—यद्यपि दानपत्रेर लिखित वस्तु रामजि-
 साहा स्वपार्जित हय, आर रामजिसाहा ऐ वस्तु दान विक्रयेर
 स्वत्वाधिकारि करिया पुत्र पीत्र वर्तमान धाकिते ऐ वस्तु आपन
 पुत्रवधूके दान करे, एमत सर्वस्वान्त दानपत्र यथाशास्त्र प्राखेर
 याग्य कि ना । ओ द्वितीय—यद्यपि सेइ सकल वस्तु रामजि
 मजकुरार पैटुक हय, तवे एमत दान आपन पुत्रवधूके देया मिद्ध
 चह कि ना । तृतीय—यद्यपि दानेर वस्तु मध्ये किछु पैटुक, ओ

फिद्धु रामजिसाहार स्वकृत हय, ताहा हइते एमत दानपत्रे
द्वाराय ताहा हस्तान्तरं करा सम्यक प्रकारे सिद्ध, कि असिद्ध,
किम्वा कतो सिद्ध, कतो असिद्ध । एइ आदालतेर पखिडत श्रीश्रीराम
तर्कालङ्कार विदाय हइया आपन वाटी गियाछेन । ए जन्य हुकुम
हइत ये दानपत्र मजकुरे नकल समेत रोवकारि नकल सम्ब-
लित ओ ताहार वाङ्गला तरजमा इङ्गरेजि लिपि समभिव्याहारे
सदर देखोयानि आदालतेर हाकिमेरदिगेर निकट पाठान जाय
एइ प्रार्थनाय ये सदर देखोयानि आदालतेर हाकिमेरा अनुग्रह-
पुर्वक कागजात् मजकुरान् ए आदालतेर पखिडतेरदिगेर स्थाने
दिया हुकुम करिवेन—ये एइ मकहमार तावत विषयेर पर दृष्टि
करिया प्रभ्रसकलेर उत्तर शास्त्रानुसारे लिखेन । लेखा हओनेर
परे ताहार उत्तर एइ आदालते अनुग्रह करिया पाठान । आरं
आदालतेर नाजिरेर नामे परयाना लेखा जाय । नाजिर दोशरा
हुकुम प्रकाश हओो पर्यन्त आपन नाएय मपखलेर पाठाइया
फरियादिर दरखास्तेर निचेर लिखित वस्तु माफिक यावेवा क्रोक
करिया, एक जन् पेयादा ताहार रद्दार्थ नित्युक्त करे, ये क्रोकीवस्तु
स्थानान्तर हइते ना पाय । पेयादार वेतन फरियादिर स्थाने लय ।

आर एइ मकहमार डिगिरि जारिर आसल कागजेर नकल
ना राखिया क्रोट आपिल आदालते पाठान गियाछे, आर अरि-
यादिर' नालिपि मकहमार आमल कागज ये ताहाते नीलेर कुटि
ओ वसति वाटीते रामलोचनेर स्वत्व आछे—एइसकल कागज
दृष्टि करा आवश्यक । ए जन्ये पुनराय हुकुम हइल ये एक प्रस्त
चुम्बक रोवकारि सेइसकल कागज अनुग्रह मते पाठानेर प्रार्थ-
नाय क्रोट आपीले पाठान जाय इति ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रभ्रप्रतिरूपपत्रं दानपत्रञ्चावलोक्य यादश-
शोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानपत्रलिखितं वस्तु रामजीसाहायंशकस्य स्वोपाजितं भवति एवं रामजीसाहायंशकः स्वपुत्रवधुं तद्वस्तुनो दानविक्रयस्वामिनीं कृत्वा पुत्रे विद्यमाने पौत्रेषु च विद्यमानेषु सर्वं धनं तस्यै दत्तञ्चेत्तदा तदानं प्रमुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृचान्ते सति शास्त्रानुसारेण छलकृतत्वेन क्रोधकृतत्वेन च सिद्धं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रानुसारेण क्रोधकृतदानस्य छलकृतदानस्य च राजा परावर्त्यत्वात् । प्रमुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृचान्ते सति एकमात्रपुत्रस्य पितृव्यवहारयोम्ये तस्मिन्नेकरिमन् पुत्रे विद्यमाने अत्रातव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु विद्यमानेष्वपि तेषामज्ञाच्छादनोपयुक्तं धनमसरक्ष्य स्वपुत्रवधौ व्यवहारिकैतादृशादेपसर्वस्वदानस्य छलादिकं विना असम्भवाच्च । अतएव तत्प्रमाणभूतं तदानपत्रमपि शास्त्रानुसारेण ग्राह्यं भवितुं न शक्नोतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

योगायमनविकीर्तं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र वाप्युपधि पश्येत्तत्तव्यं विनिवर्तयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८, १६५) ॥ १ ॥

अदत्तन्तु भयक्रोधशोकनेगरुगन्धितैः ॥

तथोत्क्रोचपरीहासव्यत्यासछलयोगतः ॥ —इत्यादि विवादायवसेतु-
(पृ० १५२) विवादमज्ञार्थवादि (१ विवा० पृ० ४८५ ख) अन्वयधृत-
नारद (नाम सं० ६।८) वचनम् ॥ २ ॥

एवं यत्र धनिकादिप्रतारणार्थं स्वप्रीयद्रव्यमन्यनार्थवति अन्वयस्यै
दत्तमिति तत्रापि दानासिद्धिः—इत्यादि विवादमज्ञार्थव(१ विवा ४८७ ख)
लिखनम् ॥ ३ ॥

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुताहते ।

नान्ये सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥—इति विवादार्यव-
सेतु (पृ० १४८) विवादमद्धार्यवादि (१ विवा० ४४५ ख) अन्यधृतयाज्ञ-
यल्क्य (याज्ञ० पृ० २४४) वचनञ्चेति २।१७५ ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि च तदेव सर्वं यस्तु रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं भवति तदा स्व-
पुत्रवधूमुद्दिश्यैतादृशदानं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण छलकृतत्वात् क्रोध-
कृतत्वात् पैतामहे स्थावरदादी पुत्रपौत्राद्यनुमतिं विना पितुरेतादृशदाने प्रमु-
त्त्वाभावाच्च सिद्धं भवितुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

उपरिलिखितप्रमाणचतुष्टयम् ॥ ४ ॥

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्वस्यैव पिता प्रमुः ॥

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः॥—इति दायभागादि(पृ०
३३) अन्यधृतयाज्ञयल्क्यवचनम् ॥ ५ ॥

पितामहश्रुतेस्तद्भनविषयं वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व-
स्येति वचनात् सर्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रमुत्वं
न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायभाग (पृ० ३३) अन्यलिखन-
ञ्चेति ॥ ६ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानकृतयस्तुपु किञ्चिद्रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं किञ्चित् स्वो-
पाजितं भवति तदैतादृशदानपत्रद्वारा हस्तान्तरकरणं सर्वस्य यस्तुनस्तदन्त-
र्गतस्य किञ्चिद्रस्तुनो वा प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण सिद्धं भवितुं न
शक्नोति—इति वद्देशचलितगनुदायभागविवादमद्धार्यवविवादार्यवमेत्यादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

१ नेद याज्ञयल्क्यवचनम्, १६६ तमे पृष्ठे मित्ताक्षरायां श्लोके सम्पत्ते ।

२ सर्वस्येयुः—दाना० ।

अत्र प्रमाणानुपरिलिखितान्येवेति ॥ ६ ॥

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

सञ्चोयाल—

२७—फरियादियान नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्र-
गोस्वामी दिगर असामी वैष्णवानन्दगोस्वामिदिगरेर नामे हिस्व्या
वावति ५२७ टाकार दाविते १०२६ लम्बरे नालिप करियाछेन ।
फरियादियान् आपन आरजिते लिखेन ये फरियादियान श्रीश्री-
नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवार तावत देशीय वैष्णवसकल श्रीश्री-
नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवारेर सासित वैष्णव हथोन कालीन
माला चन्दन इत्यादि जाहा प्रथा आछे उहारा वैष्णव दिग्येदेर,
आर ऐ महालेर नाम भावकमहाल । अत्र विषये हाकिमेर विना
दलिले नित्यानन्द जिउर परिवारे साम्यक भावे साध्य आछे, ओ
एइ महाल राजदत्त नय । ये ये स्थाने नित्यानन्दजिउर परिवार-
सकल घास करिया आछेन, सेह २ स्थाने जे जे प्रकारे हिन्दुलोक
ओ वैष्णवलोक घास करेण । ताहादेर मध्ये ये केह नित्यानन्देर
उपर देशीय हन तेँ हा नित्यानन्देर परिवारेर निकट हाजिर हन
इति । आसामि लेखेन जे एइ महाल राजगुरुर शासन । राजदत्त
विशयसकलेर एइ महाल राजा हइते राजगुरुके अर्पण आछे,
ओ भावक महाल कोन समय हइते आछे, ओ कि प्रकारे नित्या-
नन्देर परिवारके अशिछे, एवं एइ महालेते किम्बा हाकिमेर द्वाराय
कोन प्रकारे किछु सम्पर्क आछे कि ना । यदि भेकाश्रित वैष्णव
हइते चाहे से व्यक्तिके नित्यानन्दजिउर परिवार व्यतिरेक अन्य
केह सेबक फरिते पारेन कि ना । एवं चदि स्यात् तावत् देशीय
भावकमहाल नित्यानन्देर परिवारसकलेर अंश हइया थाके, आर
नित्यानन्दजिउर परिवारेर मध्ये एक स्थानेर परिवार कोन व्यक्ति

अन्य स्थानेर परिवारेर सेवक हइते चाहिले सेवक हइते पारे कि ना, ओ ऐ परिवारेर भिन्य स्थानवासी ऐ व्यक्तिके सेवक करिते पारेन कि ना, एवं नित्यानन्दजिउर परिवार ये ये स्थाने वास करिया आछेन ऐ जायगाय उहादिम्येर अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर पन्थीय वैष्णवसकल आछेन ऐसकल स्थान उहादिम्येर शासन कि, तावतदूससकल उहादिम्येर प्रत्यक्ष अंश आछे, अर्थात् नित्यानन्देर परिवार केहो सिंहभूमवासी एवं केहो बराहभूमवासी, इहाते सिंहभूमनिवासी कोन व्यक्ति ऐ बराहभूमनिवासी नित्यानन्देर परिवारेर स्थाने सेवक हइते पारे कि ना। एवं नित्यानन्देर ये परिवार सिंहभूमे वास करिया आछेन, ताहार अधिकार केवल सिंहभूम कि बराहभूमो बटे। फलत तावत देशीय वैष्णवसकल नित्यानन्द जिउर तावत परिवारसकलेर साधारण मते अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर ये परिवार वास करिया आछेन ताहार सेइ जायगाय अधिकार, तद्व्यतिरिक्त अन्य देशे नाइ। अत्र विशये शास्त्रते किमत विधि आछे ज्ञातो हओया अविश्वक। अतएव सदर देओयानि आदालतेर पण्डित एइ सओयालेर जवाब दक्षिण' पार्श्वे लेखेन इति। शन १८२६ साल तारिख २५ जुन मतावक शन १२३६ साल १३ आपाड।

श्रीर्जयतिराम्

यज्ञव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतद्व्दीयागस्तिमासीयपञ्चविंशतिदिने षटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यज्ञातीयानां यच्छ्रेणीनां वा यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा यथा पूर्वोपरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निरणयो भवितुमर्हति। प्रभुसमर्पितप्रभपत्रलिखितविषयसमुदायस्यार्थाद्

भावक्रमहालसंज्ञकस्तुविशेषः क्रमात् समपादतेते इत्यस्य, एवं केन प्रकारेण श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारैस्तद्गस्तु प्राप्तमित्यस्यैवं तेषु^१ वस्तुषु सराजकरभूस्वामिनो राज्ञश्च वा केनापि प्रकारेण कश्चिदपि सम्बन्धो वर्तते न वेत्यस्य, एवं यदि कश्चिद्भेकाभितवैष्णवो भवितुमिच्छति तदा स श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारव्यतिरिक्तेनान्येन केनचित् सेवकः कर्तुं शक्यते न वेत्यस्य, एवं तावद्देशीयभावक्रमहालसंज्ञकस्य विशेषो यदि श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामसोऽभूद्, अथ च श्रीमन्नित्यानन्दपरिवाराणामध्ये एकस्थानस्य कश्चित्परिवारः स्थानान्तरवाचिपरिवाराणां सेवको भवितुमिच्छति चेत्तदा सेवको भवितुं (शक्नोति) न वेत्यस्य, एवं तत्परिवारवासरथानाद्विद्यस्थाननिवासी कश्चिच्छ्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्तं व्यक्तिविशेषं सेवकं कर्तुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारो यस्मिन् यस्मिन् स्थाने श्रीमन्नित्यानन्दस्य सम्प्रदाया वैष्णवाः सन्ति (तस्मिन्) तस्मिन्नेव स्थाने तेषामधिकारः, किंवा सर्वस्मिन्देसे तेषामंशोऽभ्यात् श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः केचित् सिद्धभूमिवाकिनः केचिच्च वराहभूमिवाकिनः, तत्र सिद्धभूमिनिवासो कश्चिद्व्यतिविशेषो वराहभूमिनिवाकिनः श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्य स्थाने सेवको भवितुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य ये परिवाराः सिद्धभूमिनिवाकिनस्तेषां केवलं सिद्धभूमाधिकारः किं वा वराहभूमावपि, अर्थात् तावद्देशीयवैष्णवेषु श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः चासं कुर्वन्ति तस्मिन् स्थान एव तेषामधिकारो नान्यत्रेत्यस्य चेदानीं प्रचलितास्मृतातधर्मशास्त्रालिखितत्वात् प्रश्नपत्रलिखितश्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामध्ये प्रश्नपत्रलिखितविषयसमुदायेषु पूर्व्यापरं यथा व्यवहारस्तदनुसारेण निश्चयो भवितुमर्हति, इति मनुदायतन्त्र-कल्पतरु-विवाहद्वारकर-व्यवहारमातृकाव्यवहारतन्त्र-वीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिज्ञानपदान् धर्माञ्छ्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८

४१॥) ॥ १ ॥

देशस्य जातेस्संघस्य धर्मां ग्रामस्य यां भृगुः ।

उदितः स्यात् स तेनैव दायभागं प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्व (पृ० ७) कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ८८४) ॥ २ ॥

व्यवहारो हि बलवान्धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) व्यवहारतत्त्वादि (पृ० ४) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ० १७) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) वीरमित्रोदय (पृ० १८) व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १६) ॥ ४ ॥

कीनाशाः कारुकाः शिल्पिकुसीदिश्वेयिनर्तकाः ।

लिङ्गिनस्तस्कराः कुर्युः स्वेन धर्मेण निर्णयम् ॥—इति वीरमित्रोदय (वीमि० ख पृ० ३०) व्यवहारमातृकादि (व्यमा० पृ० २८१) ग्रन्थधृता-बृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १२) ॥ ५ ॥

युक्तिल्लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (२८२) व्यवहारतत्त्व- (पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

दिसम्भरमासस्य प्रथमदिने यानद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१. तेनावहीयते—इति पाठान्तरम् ।

२. कारुका मल्लाः कुसीदत्रे यिनर्तकाः ।

लिङ्गिनस्तस्कराश्चैव स्वेन धर्मेण निर्णयम् ॥ (बृस्मृ० ०पाठ०)

३. युक्तिर्णयः । स च लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका—न्यप० ।

सञ्चोयाल—

८८—यदि दुइ अथवा अधिक भ्राता থাকे । एक जन ताहार वयप्राप्त । एवं अन्यसकल नाबालग । एवं ताहारदिगेर कोन गारहियेन् अर्थात् रक्षक विशेषरूपे मोकरर ना हइया थाके । एवं ताहारदिगेर ज्येष्ठ भ्राता, ये प्राप्तव्यवहार हइयाछे, स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ये स्थावर वस्तुते नाहार धातारदिगेर अंश छाले । ऐ स्थावर वस्तु विभाग करणे ताहार दिगेरके अंशी बोध फरा जाय । एमत हस्तान्तर करण शाखमते नाबालगेर पक्षे सिद्धहइते पारे कि ना ?

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रभार्त्तं यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयैकविंशतिदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशजोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि द्वौ सतोप्यधिका वा भ्रातरस्त्वन्ति, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोऽन्येभ्यः प्राप्तव्यवहाररतेपामप्राप्तव्यवहारानां विशेषतो रक्षकः कश्चिन् नियुक्तो नाभूत्सादेवं तेषां ज्येष्ठो भ्राता यः प्राप्तव्यवहारोऽभूत् स यदि एवंभूतं स्थावरं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, यत्र स्थावरे तद्भ्रातृशामंशोऽस्ति, एवं तत्स्थावरविभागकरणे तेषामप्राप्तव्यवहाराणामंशित्वेन ज्ञानं भवति, एतादृशवृत्तान्ते एतद् एतादृशहस्तान्तरकरणं शास्त्रतोऽप्राप्तव्यवहाराणामंशो अस्वामिकृतत्वात् सिद्धं भवितुं न शक्नोति । शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य निवर्तनीयत्वात्—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णवर्कालङ्कारकृतदायभाषटीकाविवादमङ्गार्यादिप्रन्धानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतस्तु तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम्

(८१६६) ॥ २ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादमद्वार्यावादि-
(१ विवाम० पृ० ३१७ ख)अन्यधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६१२)
॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

विभक्तस्यैवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादिं सिद्ध्यत्येव, अक्ष-
पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादितिभावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायभागटीका (पृ० ३५) लिखनम् ॥ ३ ॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन^१ विक्रये पराशयोग्येऽसिद्धिः-
स्वाशयोग्ये तु सिद्धिः—इत्यादि विवादमद्वार्याव (१ विवाम० पृ० ३०५
क) अन्यलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

दिसम्बरमासस्य द्वादशदिने शनिवासरे आमद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था
दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रथम सञ्चोयाल—

८६—यदि कोन हिन्दु जाती एक स्त्री, ओ कएक जन पुत्र वत्त-
मान थाकिते आपन पैरुफ रथावर वस्तु, याहा आपन पितार मृत्युर
पर उत्तराधिकारित्व प्रकारे उहाके आर्शियाछिल, ताहा समुदाय,
किम्वा ताहा हइते किञ्चित विक्रय करियाथाके, तवे एमत विक्रय
सिद्ध हइवेक कि ना, ओ विक्रयकर्त्ता किम्वा ताहार मृत्युर पर
उहार पुत्रगणेर द्वाराय क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर, आझा
देओयार क्षमता आदालतेर हाकिमगणेर आछे कि ना ?

द्वितीय सञ्चोयाल—

यद्यपि क्रयकर्त्ताके दखल दिया उहाके बेदखल करियाथाके तवे
हाकिमगण क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर आझा दिते पारेन कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल—

यदि क्रयकर्ता दखल ना पाइयाथाके तवे हाकिमगण क्रय-
कर्तार सदमन्धे दखल देओयार आजा दिते पारेन कि ना ?
प्रमुसमर्पितप्रभपत्रमवलोक्य यादराबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रभस्योत्तरम्—

प्रभपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति प्रभपत्रलिखितप्रकारकं समुदाय-
स्थावरं तदन्तर्गतकिञ्चित्स्थावरं वा कुटुम्बभरणपित्रादिआज्ञायावरयक-
कर्मकरणाय पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि यदि पित्रा विक्रीतं तदा पुत्राणामनुमतिं
विनापि स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यद्युपरिलिखितकुटुम्बभरणाया-
वरयककर्मकरणाय पित्रा न विक्रीतं किन्तु स्वैच्छया स्वाभिप्रायेण वा विक्रीतं
तदा पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति । एवञ्च सति तद्वि-
क्रयस्य सिद्धत्वपक्षे विक्रयकर्तारं प्रति तन्भरणानन्तरं तत्पुत्रान् प्रति वा
क्रयकर्तृण्यत्त्वसम्पादिकाया आज्ञाया दाने ज्ञमता घर्माधिकरणाधिपतो-
नामस्त्येव, सिद्धेन तद्विक्रयेण विक्रयकर्तुः स्वत्वविनाशेन तत्पुत्राणामपि
तत्र स्वत्वानुत्पादात् क्रयकर्तुः स्वत्वोत्पत्तेश्चेति ।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्वस्यैव पिता प्रमुः ।

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥ —इति दायभागा-
दिग्रन्थ (दाभा० पृ० ३३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ २ ॥

पितामहश्च तेस्तद्घनविपयकं वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः
सर्वस्येति वचनात् सर्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पिनुः प्रमुत्वं
न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायभाग(पृ० ३३) ग्रन्थलिखनम्
॥ २ ॥

१. वचनमिदं यादवत्वपरमृती न दृश्यते । २. ०१११वित्तं—म्यप० ।

३. उपादानात्—दाभा० ।

यदि पुनः सर्वस्थावरादिविक्रयमन्तरेण कुटुम्बवर्त्तनमेव न भवति तदा सर्वस्थापि विक्रयणादिकमर्थात् सिद्ध्यति—इति दायभाग(पृ० ३३)-ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विधीय परमं मृत्येन कोतुर्यो^१ न प्रयच्छति ।

स्थावरस्य क्षयं^२ दाप्यो जङ्गमस्य क्रियाफलम् ॥

इति विवादभङ्गार्णवविवादाणवसेत्वादि(पृ० १७८) ग्रन्थभूतनारद-
(नामसं० ६-१, ४) वचनम् ॥ ४ ॥

मूल्यग्रहणपूर्वकस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वाद्—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् ॥ ५ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लामः क्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचन-
ञ्चेति (१०।११५) ॥ ६ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदिक्रयकर्तुरायत्तत्वं सम्पादायत्तत्वमुत्थापितवान् स्यात्तदा क्रयकर्तुराय-
त्तत्वसम्पादिकामाशां धर्माधिकरणाधिपतयो दातुं शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्तर्गतचतुर्थप्रमाणम् ।

यदि क्रयकर्त्ता नायत्तत्वं प्राप्तं तदा धर्माधिकरणाधिपतयः क्रयकर्तु-
रायत्तत्वसम्पादिकामाशां दातुं शक्नुवन्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभाग-
विवादभङ्गार्णवविवादाणवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम् ।

२६ नवम्बर दरखास्त खास आपिल—

सन १८२६ साल—

प्रश्नः—

६०—यद्यपि कोन व्यक्ति आपन सुपाजित ओ पैतृक कोन वस्तु आपन स्वर्गार्थे काहाकेओ दान करे आर ऐ दाता व्यक्ति दानपत्रे एमत सरत राखे ये आपन जीवदशा पर्यन्त खोरपोप पाइवेक, अतएव ए प्रकार सरतेर दान ये ताहाते केवल दाता व्यक्तिर जीवदशा पर्यन्त खोरपोप सरत लेखा थाके-शाख सम्मत सिद्ध वटे कि ना-इहार प्रतिउत्तर एइ प्रश्नेर पार्श्वे, ओ तस्य भाषा लिखिवेन । इति १८२६ साल ता २६ नवम्बर मो० शन १२३६ साल ता० १२ अग्रहायन ।

श्रीर्जयतितराम

जवाबव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिशदधिकाष्टादशशताब्दी-यज्ञानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्यन्धिमङ्गलवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितं पैतृकं च कियद्वस्तु स्वस्वर्गार्थं कस्मैचिदत्तमान्, अथ च तेनैव दात्रा दानपत्रे एतादृशनियमो रक्षितः “स्वजीवनपर्यन्तमह मासाच्छादनं प्राप्नोमि” । अतएव यद्दानपत्रे केवलं दानुर्जीवनपर्यन्त मासाच्छादननियमो लिखितस्तदानं यदि दात्रा स्वजीवनपर्यन्तं मासाच्छादन प्राप्त तदा सिद्धवति, नोचेन्न सिद्धवति, यतः सोपाधि-दानमुपाधिमिद्धौ सिद्धम्, उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति—इति वङ्गदेशचलित-दायभागविवादभङ्गार्थमादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

१ प्रश्न — पृ० ।

२ सुपाजित—पृ० ३ उपाजित—इति साधोयान् पाठः ।

३ दत्तम्—पृ० ।

४ अ एव दात्रा—पृ० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान्^१ यदि दधु स्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्तन्वैमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादि-

(दाभा० पृ० ३०) ग्रन्थधृतनारद (नामस० १४।४२) वचनम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णव^२ (१ विवाभ० पृ० ३०८ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अत्रेदमवधेयम्—यदि कतिचिदुपाधयः यावज्जीवपर्यन्तं पोषणादयः कृताः कतिचिच्चौदूर्ध्वदैहिकक्रिया (कलाप^३) रूपा न कृतास्तत्र का व्यवस्था इति चेद् यावद्द्व्यापाराकरणेन सम्प्रदानप्रतिज्ञागङ्गादुद्देश्यफलानां किञ्चिदंशे विसंपादाय न दानसिद्धिः—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ (१ विवाभ० पृ० ४६५ क) लिखनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेब्रवरीमासोचतुर्थदिनसम्बन्धिबृहस्पति-वासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेषं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

८७ लम्बर

रास आपिल

शन १८२७

प्ररतः—

६१—यद्यपि कोन व्यक्ति किछु भुमि आपन कन्यार विवाह

१. स्वानशानिति नामसंघो पाठः ।

२. कमान—इति विभ० मूले पाठः ।

कालिन आपन जामाताके दान करिया धाके, आर ऐ कन्यार गर्भे सेओया एक कन्या श्रीमतीकुमारी नामे, पुत्र सन्तान ना हइया धाके; ए प्रकारे ऐ वस्तु यथाशास्त्र श्रीमतीकुमारीके कि ऐ प्रहीता व्यक्त्तिर द्वितीय पत्तेर सन्तानद्विगके अर्शे—इहार प्रति उत्तर वचन ओ तथ्य साहा एइ प्रश्नेर पार्शे लिखिवेन इति । शन १८२६ तारिख २२ दिशम्बर मोतावाक शन १२३६ तारिख ६ पौष ।

श्रीर्जयतितराम

जवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदन्दीपफेवरवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिषुक्र-
वास्तरे षटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तद्वलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः किञ्चिद्भूमि स्वकीयकन्याविवाहसमये स्वजामात्रे
दत्तवान्, अथ च तस्या गर्भे भोमतीकुमारीनाम्नीकान् कन्यां विना अन्य-
कश्चित् पुत्रादिसन्तानो न जातश्चेत्तत्र तदानं यदि “कन्याया इदं भवतु”
इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तावदेव वस्तु भोमतीकुमारीनाम्नी प्राप्तुं शक्नोति,
तन्मातुर्योक्तस्त्रीधनत्वात्, योक्तस्त्रीधने दुहितुरधिकारस्य निष्पत्त्युहत्वात् ।
यदि च तदानं तादृशभिसन्धि विना कृतमर्थाद्, “जामातुरिदं भवतु”
इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तद्वस्तु जामातुरुत्तराधिकारिणामर्थात्पुत्रपौत्र-
प्रपौत्रपत्नीदुहित्वादोनामेव भवति । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखि-
ताधिकारिततत्त्वचान्ततात्पर्याभेदमर्थाद् राममण्या औरसपुत्राभावेन शास्त्रा-
नुसारेणार्थिन एवोत्तराधिकारिण इत्यनेन विवादास्पदीभूतधनस्य राममणी-
मुद्दिरस्य तद्विगृह्यतदानापगमेन तादृशधनं राममण्या योक्तं स्त्रीधनं
भवत्येव, योक्तस्त्रीधने विद्यमानायां दुहितरे सप्तपुत्राणामर्थाधिकारिणामधि-
कारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्—इति यद्गद्देशचलितदायभागभूतकृतकालिका-
रकृतदायमागटीकादायक्रमसंहरियादभन्नाणवादिप्रन्धानुसारिणी व्यवस्था ।

१. विवाहकाले-यत्किञ्चिद्द्वारायोद्दिश्य दीयते ।

कन्यायास्तदनं सर्वमविभाज्यं च धनुभिः ॥—इति दायभाग(पृ०७५)

दायकमसंग्रहादि(दाकृतं० पृ० १३)अन्यभृतव्याख्यचनम् ॥ १ ॥

उद्दिश्येति कन्याया इदं भवत्वित्युद्दिश्य वराय यदानं न पुनरेतदभिसन्धिं विनापीत्यर्थः । अतएव विवाहकाल-इति अदर्शनाभं न पुनरेतदेव प्रयोजकं दायभिसन्धिनिमित्तत्वात् स्वत्वस्य-इति दायभाग(पृ०.७५)अन्य-लिखनम् ॥ २ ॥

न अत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पीत्रस्तदभावे प्रपीत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० २१८)लिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितश्चैव-इत्यादि दायभाग(पृ०.१५१)श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० १५१)नियमसङ्ग्रहविवादभङ्गाख्यत्रादि (२ विवा-भ० पृ० ३१४)अन्यभृतयाख्यकृत(२।१३५)पचनम् ॥ ४ ॥

तत्र यौतुकधने प्रथमं कुमार्या अधिकारस्तदभावे चागृहतायास्तदभावे चांढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च युगपदधिकार इति । तदभावे वन्ध्याविधवयोरपि तुल्यवदधिकार इति च । सर्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकारः—इति च दायकमसंग्रह(पृ० २३)अन्यलिखनञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

एतदन्दीपमदभावीपत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे षट्कैकाधिकशामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

नं०-२६५

६२—रोवकारि मिसिल अादालत देधोयानि सदर तारिक २१ माह जानधोरि शन १८३० इ० मत्वावक ६ माह माघ सन

१२३६ वाङ्मला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त मान्तेगियु हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

गोपालचन्द्र प्रभृति

आपिलाष्टगण .

बाबु कोडर सिंह

रप्पाडवट

आपिलाष्टगणेर वकिल मुनशी होसेन आलि ओ मौलवी न्यामत आलि, रप्पाडवटेर वकिल मुनशी दादार वक्स ओ मुनशी हयदर आलि ओ मौलवी करमत' होसेन हाजिर हइल । ए मकर्द्मा गत सनेर दिसम्बर मासेर ३० तारिखेर हुकुमानुसारे एइ मासेर ११ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिला ओ कोर्टेर आदालतेर फयसलासकल ओ इं १८२७ सालेर मार्च मासेर ६ ओ २७ तारिखेसकलेर लिखित ए आदालतेर वाकि कागज-सकल ओ खास आपीलेर दरखास्त, याहा मजुवात करियाछे, ओ ए आदालते दाखिल हओया ताहार जवाब ओ इं १८२६ सालेर दिसम्बर मासेर ३० तारिखेर रोवकारिरे विस्तिर्न ए आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त वलियम नसटर साहेबेर राय ओ एवं मकर्द्मार आविश्यकीय अन्य कागजात पुनराय पढागेल । यथा उभयेर ओजरसकल ओ एजहारसकलेर दृष्टे ए मकर्द्मार सन्वन्वे चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व निचेर सओयालेर जवाबे ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित हइल, अतएव हुकुम हइल जे मकर्द्मा अद्य स्थाकल थाके, ओ एइ रोवकारिरे नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण कराजाय ये जिला साहायादेर चलित शाहानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जवाबे एक सप्ताह मध्ये व्यवस्था दाखिल करेल ।

सओयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते केहो आपन बैठक-स्थावर वस्तुसकल हइले किछु ब्राह्म जाति हइते एक व्यक्तिके दान करे । ओ दान गृहीता ओ ताहार मृत्युर पर उहार उत्तरा-

धिकारिगण दान करा वस्तु उपर दखिल हइया थाके, ओ ता-
हार पर दाता व्यक्ति पुत्रगणेर मध्ये एक जन आपन पिता बर्त्त-
माने ऐ दान सिद्धि न हओयार एजाहारे आदालते नालिस करे ।
तवे एमत दान शाखानुसारे सिद्धि ओ चलित हइवेक कि ना
इति ।

श्रीर्जयतिराम

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूद्देनरीटरंबलसाहेवधर्माधिक-
रणलिखितैतदन्दीयजान(ओ)रीमासीयैकविंशतिदियसीयविचारपत्रान्तर्गत-
प्रथमतिरूपपत्रं यत् फेवरवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिपुत्रपवासरे पटिकैका-
धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशात्रोपो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते—

यद्यपि हिन्दुजात्यन्तःपाती कश्चित्पैतृकरथावरसमुदायात् किञ्चिद्-
ब्राह्मणजातीयायैकस्मै कस्मैचिद्वचनान्, अथ च दानप्रदोना तन्मरणा-
नन्तरं तदुत्तराधिकारिभिस्तद्दानकृतवस्तुनि आपत्तत्वं संवादितम्, तदनन्तरं
दातुः पुत्राणां मध्ये एकः कश्चिद् विद्यमाने पितरि स्वपितृकृतदानं सिद्धं न
भवतीति बद्धं धर्माधिकरणोऽभियोगं कृतवान् स्यात्—तत्र विद्यमाने पितरि
प्रश्नत्रलिखितप्रकारकपुत्रकृताभियोगदृष्ट्या तद्दानं यदि पित्रा स्वेच्छया
स्वामिप्रायेण^१ वा प्रसन्नतया वा कृतम्, तत्र पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्धं
चलितं च भवितुं शक्नोति, नो चेन्न शक्नोति, पैतामहे रथावरादौ पितापुत्र-
योस्तुल्यस्वामित्वेन साधारणतया तद्दानविक्रयादौ पुत्राणामनुमतेरावश्यक-
त्वात् । यदि च तद्दानं पित्रा मयस्त्रोघादिषोडशप्रकारान्तर्गतेन केनचित्
प्रकारेण कृतम्, ये षोडशप्रकाराः पञ्चमप्रमाणे स्पष्टीकृतास्तत्र पुत्राणां
मनुमतावननुमतौ वा सिद्धं चलितं च भवितुं नार्हति । यदि च तद्दानं
पित्राऽवश्यकर्त्तव्यपित्रादिश्राद्धादिषु यथादिषु वा ब्राह्मणत्वेन धर्माय वा,
अथात् तत्तद्देशचलितपित्रादिश्राद्धादिदक्षिणा यथादिदक्षिणा वा ब्रह्मणं वा

इ(ता)पैयं वा पादार्यो वा संकलो वा वृत्तिर्वा विष्णवादिदेवताप्रीत्यर्थं
 त्रेत्यादिरीत्या कृतं तदा धर्मार्थत्वेन सिद्धं चलितं च भवितुमर्हति । धर्माथं
 पितुराधिकारः । धर्माथं
 अदत्त्वेव मृतश्चेत्तथापि

(काश्चिदान् ५१२)

राशा तदनं तत्पुत्रा दापनीयाः(?)—इति मिताक्षरादिग्रन्थेषु विशेषतो लिखि-
 तत्वात्—इति साहावादप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्य-
 वहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्वस्यैव पिता प्रभुः ।
 स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा-
 (पृ० १६६) औरमित्रोदय (पृ० ५२४) व्यवहारमाधव (पृ० ३३१) व्यव-
 हारकौस्तुभादिग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य (पृ० १६६) वचनम् ॥ १ ॥

भूर्यां पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा ।
 तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितः पुत्रस्य (चैव हि) ॥—इत्युपरलि-
 खितग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य (पृ० २०६, २१२१) वचनम् ॥ २ ॥

तस्मात् पितृके पितामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वं तथापि पितुरावश्य-
 केषु धर्मकृत्येषु वाचनिकेषु प्रसाददानकुटुम्भभरणा (पद्मि) मोक्षादिषु च
 स्थावरव्यतिरिक्तद्रव्यविनियोगे स्वातन्त्र्यमिति स्थितम् । स्थावरे तु स्वा-
 जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव ।—इत्युपरिलिखितग्रन्थ (मिता-
 पृ० २००) लिखनम् ॥ ३ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमजितम् ।
 असम्मूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥
 ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि फांदात्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति बोपरि-
 लिखितग्रन्थभृत (मिता० पृ० २००) व्याख्येयवचनद्वयम् ॥ ४ ॥

१. पादार्यो वा संकलो वा—व्यप० । २. विष्णवादिदेवताप्रत्यये—व्यप० ।
 ३. पादस्त्वपरस्ती वचननिर्दि नोपलभ्यते ।

अदत्तं तु भयक्रोधशोकवेगरुगन्धितैः ।

तद्योक्तोचपरीहासव्यत्यासच्छ्रलयोगतः ॥

बालमुढास्यतन्त्रार्थमत्तोन्मत्तापयजितैः ।

कच्चा ममेदं कमेति प्रतिलाभेच्छ्रया च यद् ॥

अपात्रे पात्रमित्युक्ते कार्ये चाधर्मसंज्ञिते ।

यदत्तं स्यादविज्ञानाददत्तमिति तत्स्मृतम् ॥—इति चोपरिलिखितग्रन्थ-

(मिता० पृ० २४५) शृतनारद(नामसं० ६०)वचनम् ॥ ५ ॥

अस्वापवादः ॥

एकरोऽपि, स्थावरे, कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।

आपत्काले कुटुम्भार्थं धर्मार्थं च विशेषतः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-

(मिता० पृ० २००) शृतमुनिवचनम् ॥ ६ ॥

स्वस्थेनार्चेन वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तस्मृतो नात्र संशयः ॥—इति चोपरिलिखित-

ग्रन्थ(मिता० पृ० २४६) शृतकाल्यायन(कास्मृ० ५६६)वचनं चेति ॥७॥

मासार्चमासस्य त्रयोदशदिनसम्बन्धिशनिवारे घटिकैकाधिकयामद्वये मये

यं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

१३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख
११ माह फेवरओरि शन १८३० इ० मतावक १ माह फाल्गुण

१. रुवान्वीः—नामसं० ।

२. ०पयजितम्—नामसं०, मिता० ।

३. ममार्थं—नामसं० ।

४. संशये—मिता०, नामसं० ।

५. प्रकीर्तितम्—व्यस० ।

रान १२३६ बाङ्गला ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त अलियम नश-
ष्टर साहेबेर बैठके ।

अप्राप्तव्यवहार हरनाथसिंहेर माता मुसम्मात छधोबिबि'
तुह्यत नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करिमन ओ अप्राप्तव्यव-
हार कालीचरयेर माता मुसम्मात पद्म ओ मुसम्मात वदासु
ओ मुसम्मात उदासी सायेलगणा । छधोबिबिर उकिलगण मौलवी
गोलाम इजदानी ओ मुनसी महम्मद आलि खा ओ मुसम्मातान्
करिमन ओ पत्व ओ उदाशीर उकिलगण सदासुकपरिदत ओ
लाला वस्तिलाल हाजिर आसिल । इ० १८२६ शालेर सितम्बर
मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे सायेलगणार सञ्चोयालसकल
ओ ताहार सम्पर्कीय अन्य कागजात ओ सालिसगणेर फयसला
ऐ तारिखेर विस्तिर्न रोवकारि ए आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त
हालडन वावरट, राटरि साहेबेर राय सम्बलित पढागेल ।
जेहेतुक कागचसकलेर द्वाराय बोध हइते छे ये सायेलगणा, ये
आपनादिगके मृत बाबु जगन्नाथसिंहेर स्त्री ओ उत्तराधिकारिणी
प्रकाश करितेछे, केह मृत बाबुर स्वजाति ओ केह भिन्न जाति,
ओ एवं ताहार मध्ये केह सन्तानवति बटे । अतएव ए मकरमार
सम्मन्धे चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व हुकुम हइल ये मकर-
मार कागजात एइ रोवकारि नकल सहित एइ आदालतेर
परिदतके समर्पण कराजाय—ये ताहार दष्टे एइ सञ्चोयालेर लवावे
ये सायेलगणार मध्ये मृत बाबुर कोन २ स्त्री ओ एवं ताहारदिगेर
गर्भ हइते ये सन्तान हइयाछे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्ति पुत्र
ओ उत्तराधिकारि हय, ओ यद्यपि ऐ सायेलगणार मध्ये केह
किम्बा साहादिगेर पुत्र ऐ मृत व्यक्ति, उत्तराधिकारि हय, तवे
अन्य सायेलगणा ओ साहादिगेर सन्तान वा ऐ मृत व्यक्ति—
त्यक्त वस्तु हइते मरण ओ पोपयेर किछु सत्वा राखे कि ना—ये

१. छधोबिबि विदित नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करीमन—एत छधीवान् पद ।

मृत व्यक्तिर याज्ञिर^१ चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था लिखिया दाखिल करेण इति ।

श्रौज्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिथीयुतअलियमनसएरसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितैतद्दम्मीयकेवरवरीमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र-
मेवं तत्समर्पितैतद्विवाहविषयनिविष्टपत्रजातं यन्मार्चर्चमासीयचतुर्थदिनसम्ब-
न्धिवृहस्पतिवासरे षटिकैकाधिकयामद्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य
धिविच्य च यादृशत्रोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अर्थिनीनां मध्ये वदामूविधीनाम्नी मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य पत्नी
भवति, शास्त्रे पत्नीशब्दस्य विवाहसंस्कृतस्त्रीवाचकत्वात्, प्रभुसमर्पित-
पत्रजातान्तर्गतविदितनेजामङ्गीनमातुः करिमननाम्न्या अप्राप्तव्यवहार-
कालीचरणमातुः पद्दुनाम्न्याश्चोदासीनाम्न्याश्च निवेदनपत्रेणांगरेजोशब्दप्र-
तिपाद्योन्विशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयत्रयोविंशतिदिवसोयत्पु-
षिकृतकृतजयपत्रेण च वदामूविधीनाम्न्या मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंह-
विवाहितसजातीयस्त्रीत्वावगमात् । एवं वदामूविधीनाम्न्येवोत्तराधिकारि-
ण्यपि भवति, उत्तराधिकारित्वेनेदानीं तज्जातिव्यवहारानुसारेण) दत्त-
कृत्रिमपुत्राणां पुत्रपौत्राणां च मृतव्यक्तेरभावात् । एवं मृतस्य बाहुजगन्ना-
थसिंहस्य सजातीया विवाहित(स्त्री)सद्वोविधीनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहा-
रस्य हरनाथसिंहस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रान्तर्गतपौनर्भवपुत्रत्वेऽपि पौनर्भव-
पुत्रस्येदानीं व्यवहारभावात् शास्त्रनिषिद्धत्वाच्चोत्तराधिकारित्वं न सम्भ-
वति । एवं भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य काली-
चरणस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रानन्तर्गतस्य मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य
शास्त्रानुसारेणवर्द्धपुत्रत्वेऽप्यर्थादाधीपुत्रतुल्यत्वेऽपि तस्य च कृत्रिमजाती-
यस्य मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य त्यक्तपत्ने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वं न
सम्भवति । एवं चोपरिलिखितप्रकारेण वदामूविधीनाम्न्या मृतस्य बाहु-

जगन्नाथसिंहस्य पत्नीत्वे उत्तराधिकारित्वे च सति अन्यासामधिनीनां तार्त्ता-
 सन्तानानां च तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य त्यक्तपत्नाद् प्रा(सां)च्छादनस्य
 किञ्चित्स्वत्वे अयं विशेषः—या सजातीया, विवाहिता^१ उद्धोविधीनाम्नी,
 सा या च भिन्नजातीया पद्दुनाम्नी^२ च यदि मृतस्य वाबुजगन्नाथसिंहस्यो-
 त्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यवहारिणी वा न भवति तदा यावज्जीवं प्रासा-
 च्छादनभागिनी भवति नान्यथा । अथ च सजातीयविवाहितस्रोगर्भोत्-
 त्तस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनाथसिंहस्योपरिलिखितप्रकारेण पौनर्भवपुत्रस्य
 मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे प्रतिकूलत्वेऽपि बोभययैव यावज्जीवं
 प्रासाच्छादनभागित्वम्, भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्तस्याप्राप्तव्यवहारस्य
 कालीचरणस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं प्रासाच्छादन-
 भागित्वं नान्यथा, यवनजातीयस्य वित्तिमनेजामहीनस्य तन्मातुः करिमन-
 नाम्न्याश्च रजकजातीयोदासीनाम्न्याश्च मृतव्यक्तित्यक्तपत्नाद् प्रासाच्छादना-
 धिकारानधिकारविधायकशास्त्राभावाद्—इति मृतस्य वाबुजगन्नाथसिंहस्य
 क्षत्रियजातीयस्य प्रचलितमनुमिताक्षरवीरमित्रोदयदत्तकामीमांसादत्तकचन्द्रि-
 कादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी विवाहसंस्कृता—इति मिताक्षरा (पृ० २१७) वीरमित्रोदयादि-
 (वीमि० ख० पृ० ६२३) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१६)-
 वीरमित्रोदया (पृ० ६२३) दिग्रन्थधृतशुभवल्क्य (२११५) वचनम् ॥ २ ॥

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ।

उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥—इति भनु (पृ० ३७५)-
 वचनम् ॥ १ ॥

पौनर्भवस्तु पुत्रोऽक्षताया क्षतायां वा पुनर्भवा^३ सर्वाहुत्यः—इति ।
 मिताक्षरादि (मिं० पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

१ सजानां—अप० ।

२ विवाहिता—अप० ।

३ नान्नीयाव—अप० ।

४ सजातीया—अप० ।

दत्तोरसेतरेपां तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥—इति दत्तकमीमांसा-

(पृ० ३०)दिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥ ५ ॥

निर्व्यास्या व्यवभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ॥—इति मिताक्षरा-

दिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१४२) वचनम् ॥ ६ ॥

गर्भव्यास्यपरे सुताः—इति वीरमित्रोदयादि (वीमिख० पृ० ६१४)

ग्रन्थधृतबृहस्पति (२०७) वचनम् ॥ ७ ॥

द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यद्दं दूरतः

एव । इत्युत्सङ्गम् । किन्त्वनुकूलशक्तेर्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा-

(पृ० २१६) वीरमित्रोदयादि (पृ० ६२३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

बन्धूनामेकधर्मीणामेकस्यापि यदुच्यते ।

सर्वेषामेव तज्ज्ञेयमेकरूपा हि ते स्मृताः ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-

धृवीशनसवचनञ्चोक्तं ॥ ९ ॥

एतदन्दीयापरेलमासोपयद्द्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकात्रया-

धिक्रयामद्दयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीवर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६४—रोवकारि मिपिल आदालत देओयानि सदर तारिख

२२ माह माइसन १८३०इ० मोतावक १० माह ज्यैष्ठ सन १२३७

बाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तगिओ

हेनरि टरन्बल साहेचेर बैठके ।

बाबु माधोस्वहाय ओ वेनिस्वहाय

अप्राप्तव्यवहारगणेर भोकार—

आपिलाएट ।

बाबु रामचरणलाल—

मोसम्मात घादामो प्रभृति—

रस्पाडएटान् ।

१. इमान्-मनीषिणः—दत्तकमीमांसाया नोपलभ्यते ।

२. मिताक्षरायां श्रीरत्नसरस्वती च नोपलभ्यन् ।

आपिलाएटेर उकिल मुन्सि दादारवक्स हाजिर आइल । रस्पाडेएटगण ए आदालते एयालास शमार' पृष्ठे रसिद लिखिया, ओ स्वयं किन्वा उकिलेरे द्वारा हाजिर हइल ना । अतएव एइ मकईमा ताहारदिगेर असाह्याते अथ आमार बैठके दवकार हइया नालिशि आरजि प्रभृति प्रविनशाल कोटेर कागजसकल फयशला पर्यन्त ओ ए आदालतेर आपिलेरे मौजुवात् पढागेल । तत् परे आपिलाएटेर उकिल चारि टाकार मूल्येरे एक केता फेरेस्तेरे वराय' इंराजी अत्तर ओ एवारतेवइ'.....किता दस्तावेज लम्बरे दाखिल करिल, दृष्ट आसिल । जानागेल जे रस्पा-डेटान्, सावेक मुइइगण, मृत बाबु द्वारिकादासेरे त्यक्टेरे तृतीय अंश २५००००० टाका देयाइया पाओनेरे जन्ये एइ एज-हारे नालिस करिलेक—ये मृत बाबुर दुइ छी । प्रथमा खीर गर्भ हइते, ये ऐ बाबुर साक्षाते मृत्यु हय, दुइ कन्या' ओ द्वितीयां छी, अर्थात् मुपम्मात् शितलबहुर गर्भ हइते एक कन्या जन्ने; ओ ऐ बा(बु)र मृत्युर (पर) मुपम्मात् शितलबहु आपन जीव-इशा पर्यन्त त्यक्त धन ओ कुटीसकलेरे उपरे कावेज थाकिया देना ओ लेना ओ कुटीरे कर्म जांरि करिया मृत्यु हय; ओ ताहार मृत्युर पर उहार कन्या मुसम्मात् नद्धमन् ओ नद्धमनेरे पुत्रगणेरे माधोस्वहाय ओ वेणिस्वहाय त्यक्त धन प्रभृतिते दखिल हइयाछे । ये हेतुक शास्त्र ओ देशेरे व्यवहारमते मृत बाबुद्वारिकादासेरे कन्यागणेरे पुत्रगण व्यतित अन्य केह उत्तराधिकारी नहे, ओ बाबुद्वारिकादासेरे प्रथमा खीर गर्भजे कन्यागणेरे मध्ये एक कन्या आमि' मुसम्मात दादागुर पुत्र जगन्नाथदास उत्तराधिकारी ओ हकदार बटे । अतएव नालिश करितेछि ।

१. एजलासेरे हुजमनांमार—इति सापीवान् पाठः ।

२. दादाय—इति सापीवान् पाठः ।

४. कथा—न्यप० ।

३. एवारतेरे—इति सापीवान् पाठः ।

५. अर्थादित्यर्थः ।

ओ जओयावेर खोलासा एइ ये यखन बाबुद्वारिकादास आपन जीवदशार मुद्दैयार विवाह दिया, ये देना छिल ताहा दिया, विदाय करियाछेन हिन्दु जातिर व्यवहार ओ शास्त्र मते मुद्दैगणेर किछु स्वत्व ओ हिस्सा दावि बाकि (रहि)ल ना, ओ यद्यपि मुद्दैगणेर किछु दावि थाकित तवे ऐ बाबुर जीवदशाते अथवा ताहार मृत्युर पर शीतलबहुर उपर, ये १५ बत्सर पर्यन्त कावेज ओ दखिल थाकिया, आपन दौहित्रगणके उत्तराधिकारी ओ रासनसीन कराइया ओ तमलिकनामा लिखिया दियाछेन, आपत्ति करित । ओ जबाब मजबाब (ये)—मुसम्मात् शीतलबहु माधोस्वहायके, ये रामचरणलाल, अर्थात् मुसम्मात् नछमिर पतिर वड पुत्र वटे, रासनसीन् करण असिद्ध, ओ शीतलबहुर मृत्युर पर तमलिकनामा प्रस्तुत हओन ओ मृत बाबुर सकल दौहित्रगण तुल्यांशे स्वत्वाधिकारि थाकन सम्बलित वटे, ओ कोटेर हाकिम वारानसेर पाठशालार पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे मुद्दैगणेर दावि डिगिर करिलेन । यथा आपिलाएट एइ आपत्तिसकले ये—ऐ व्यवस्था शास्त्र-चहिर्भूत वटे आपिल करिलेक, ओ प्रकाश करिलेक, ओ प्रकाश करे ये उपरेर लिखित हेतु मते शास्त्रानुसारे विरोधीय वस्तु उपर माधोस्वहाय ए वैनिस्वहायेर स्वत्वा साव्यस्थ ओ प्रामाण्य वटे ।

अतएव एइ आदालतेर, पण्डित हइते नीचेर सओयालेर जओयावे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइलो—ये एइ रोवकारिर नकल ६५ लम्बरे प्रथित आशल हेवानामा दस्तावेज सम्बलित, एइ आदालतेर पण्डितके अर्पण करा याय—ये धारानस देशेर चलित शास्त्रानुसारे नीचेर सओयालेर जबावे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन ।

सओयाल—यद्यपि आगरओयाला महाजन जाति हइते केह एक स्त्री ओ ताहार गर्भज एक कन्या ओ प्रथमा स्त्री, ये पतिर साक्षाते मृत्यु हइयाछे, ताहार गर्भर दुइ कन्या ओ घनादि त्यक्त

वस्तु राक्षिया मरे, ओ ताहार पर द्वितीया स्त्री आपन जीवदशा
 पर्यन्त पतिर त्यक्त वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन गर्भज
 कन्यार पुत्रगणके रासूनसिन् करिया ऐ समुदय वस्तुर तमलि-
 कनामा व उहादिगके लिखिया दियाथाके तवे केवल द्वितीया
 स्त्रीर तमलिक मते ताहार कन्यार पुत्रगण मृत व्यक्ति वस्तुर
 कर्त्ता हइवेक, किम्वा प्रथमा स्त्रीर, ये पतिर साक्षाते मरियाछे,
 कन्यागणेर पुत्रगणे कर्त्ता हइवेक, ओ मृत व्यक्ति द्वितीया स्त्रीर
 आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके आपन पतिर अनुमति व्यतिव,
 रासूनसीन करण, ओ स्त्रीलोक आपनार पतिर त्यक्त स्थावर-
 किम्वा अस्थावर, सकल आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके तमलिक
 करण शास्त्रानुसारे सिद्ध धटे कि ना इति ।

श्रीर्जयतिराम् ।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभ्युतमान्तकिजुहेनरिटरम्बलसाहेवधर्माधि-
 करणलिखितैतदद्वीपमाहमासीयद्वाविंशतिदिनसम्बन्धिविचारपत्रान्तर्गतप्र-
 -थप्रतिरूपपत्रमेव पञ्चपष्ठद्वाद्विददानपत्रञ्च यज्जुनमासीयचतुर्दशदिनसम्ब-
 न्धचन्द्रवासरे पञ्चपठिकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
 जावस्तदनुसारेणोच्यं लिख्यते ।

यद्यपि कश्चिदगरवाला महाजनो व्यक्तिविशेषो द्वितीयविवाहितां पत्नी-
 -तद्गर्भजामेकां कन्यां तथा स्वाम्ने मृतप्रथमपत्नीगर्भजकन्याद्वयं हेमरूप्य-
 कुप्यादिघनञ्च (स) रक्ष्य दिवं गतः तदनन्तरं सैव द्वितीया पत्नी स्वजीवदशा-
 पर्यन्तं प्रतित्यक्तसर्ववस्तुन्यायत्तलं सम्पाद्य स्वगर्भजकन्याया पुत्रं राघन-
 सीनमर्यादत्तकपुत्रं कृत्वा अथ च तस्या एव पुत्राय सर्ववस्तुनस्तमलिक-
 नामा अर्थात् दानपत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्, समापि मृतवदव्यक्तेर्द्विती-
 यपत्नीहृतदानपत्रानुसारेण तद्गर्भजकन्यापुत्रयोः केवलयोर्मृतव्यक्तेः प्रथम-
 पत्नीगर्भजकन्यापुत्रम(न)पेक्ष्य तस्मिन् सर्ववस्तुनि स्वामित्वं न सम्भवति,
 किन्तु सर्वेषामेव मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रस्य तथा द्वितीयपत्नी-

गर्भजकन्यापुत्रयोर्लुप्त्याधिकारित्वात्, उत्तरोत्तराधिकारिक्रमबोधकशास्त्रे दो-
हित्रविरोधाश्रवणात्, पत्यनुमतिव्यतिरेकेण स्त्रीकृतस्य कन्यापुत्रराजनर्त्तनक-
रणस्यार्थादत्तककरणस्य, तथा स्वपतित्यक्तस्यावरास्थावरसर्व्ववस्तुनः स्वगर्भ-
जकन्यायाः पुत्रद्वयसम्प्रदानकदानपत्रकरणस्य च शास्त्रासम्मतत्वाच्च—इति ।
काशीप्रदेशचलितदत्तकमीमांसा-मिताक्षरा-वीरमित्रोदय-कृत्यकल्पतरु-विवाद-
चिन्तामणि-प्रभृतिग्रन्थानुयायिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

दुहित्रमाये दीहित्रो धनभाक्—इति मिताक्षरा (पृ० २२१) वीरमि-
त्रोदय (पृ० ६६१) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

अपुत्रेण सुतः कार्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिएडोदकक्रियाहेतोर्नामसङ्गीर्तनाय च ॥—इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ५) धृतमनुवचनम् ॥ २ ॥

अपुत्रे(रो)ति पुंस्त्वश्रवणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते इति ।

अतएव वशिष्ठः—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाङ्गर्तुः—इति ।
दत्तकमीमांसा (पृ० ७) विवादचिन्तामणि-कल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठ-
वचनम् ॥ ३ ॥

अनेन विधवाया भर्तृनुज्ञानासम्भवादनधिकारो गम्यते—इति तद्ग्रन्थ-
(दमी० पृ० ७) लिखनम् ॥ ४ ॥

भारते (१२।४७।२४) स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

अपहारमेच्छिकदानविक्रयादिकम् ।—इति विवादचिन्तामणि, पृ० .

२३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अपुत्रां शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति विवादरत्ना-

कर (पृ० ५११) कृत्यकल्पतरुवीरमित्रोदयादि (वीमि० पृ० ६२७) ग्रन्थ-

नः धृतकाल्यायन (कास्मि० पृ० ११२) वचनञ्चेति ॥ ६ ॥

१. विधि० पुत्रके वचनमिदं न प्राणम् । २. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते ।

जुनमासीपसतदशदिनसम्बन्धिगुब्बासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये
-दक्षेयं मया व्यवस्था ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देओनि सदर तारिख
२१ माह आगस्त सन १८३० इ० मतावक ६ माह भाद्र सन १२३७
वाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर
रास साहेबेर बैठके ।

कन्दर्पसिंह मोकशेल—

आपिलाएट ।

मृत राजामोहनलालखार श्रीगण राणी सुगन्धलता ओ राणी

रस्पाडएटान् ।

वङ्गलताप्रभृति—

आपिलाएटेर उकिलगण मुनसि ददारवक्स ओ मौलवि करम
होसेन ओ स्वयं आपिलाएट ओ रप्पाडएटगणेर उकिलगण
मुनसि होसेनआलि ओ मुनसि गोलामवतुल ओ सदासुकपरिहित
हाजिर आसिल । ए मकरईमा एलाका कलिकातार प्रविनशाल
कोर्टेर रिटरण पौ चन मते ए मासेर १४ तारिखे आमार निकट
पुनराय उपस्थित हइया ऐ तारिखेर रोवकारि लिखित कागज-
सकल पढागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया
प्रविनशाल कोर्ट आदालतेर वाकी कागजात् ओ ए आदालते
दाखिल हओया कागजसकल पढागेल । ए मकरईमार कागज-
सकल ओ मोहनलालखाँ आपिलाएट ओ राणी शिरोमणि रप्पा-
डएटेर ६५८ ल० मकरईमा ओ रूपचरणमहापात्र मोफयेल आपि-
लाएट आनन्दलालखाँपर भाता मोहनलालखाँ रप्पाडएटेर ६५८
ल० मकरईमा वावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वारा आमार
सान्यस्त हइल—ये राजा अजितसिंह ओ राणी शिरोमणिर् वंशे

दायभागशास्त्र चलित वटे, ओ ऐ शास्त्र ऐ फयशलासकलेर अनुसारै राजा अजितसिंहेर छी राणि शिरोमणिर मृत्युर पर, ये ऐ राजार त्यक्त जमिदारिर उपर उत्तराधिकारि प्रकारे दखिलकार छिल, राजा अजितसिंहेर मातुलपुत्रगण उहार बलवान उत्तराधिकारि ओ उत्तराधि(कार)प्रकारे उहार मतरुकार स्वत्वाधिकार वटे। ओ इहा येओ स्पष्ट—ये मोहनलालखाँएर भ्राता आनन्दलालखाँर नामिक राणि शिरोमणिर लिखिया हेओया हेवानामा, ताहाते राजा अजितसिंहेर उत्तराधिकारिगणेर अनुमति ना पाओने असिद्ध ओ मिथ्या हइयाछे, ओ रूपचरण आपिलाष्ट ओ मोहनलालखाँ रम्पाडएटेर मकई माय, ये आपिलाष्ट आपनाके लक्ष्मणसिंहेर भ्राता श्यामसिंहेर सन्तान करार दिया विरोधीय जमिदारिर कारण नालिप करियाछिल। दाखिल हओया व्यवस्था द्वाराय याहेर ये राणि शिरोमणिर मृत्युर पर यदि राजा अजितसिंहेर कोन निकटस्थ उत्तराधिकारि ना थाकित, राजा अजितसिंहेर मतरुकाते रूपचरणमहापात्रेर उत्तराधिकारि स्वत्व हइत। ओ एइ क्षण कन्दर्पसिंह लक्ष्मणसिंहके राजा अजितसिंहेर आदिपुरुष ओ आपनाके ओ सप्तमपुरुषीय स्वगोत्र बलिया उत्तराधिकारिरूपे विरोधीय वस्तु दाविदार वटे, ओ आपिलाष्टेर दाखिल करा कुरसिनामा ओ रूपचरणमहापात्र आपिलाष्टेर मकईमार आमलि ११८८ शालेर भाद्रमासेर १५ तारिखेर लिखित राणि शिरोमणि दाखिल करा कुरसिनामा ओ मोहनलालखाँ आपिलाष्ट राणि शिरोमणि रम्पाडएटेर मकईमार दाखिल हओया ऐ राणिर दरखास्तेर नकल द्वाराय जाना चाइतेछे ये कन्दर्पसिंह आपिलाष्ट ओ लक्ष्मणसिंह आदिपुरुषेर सहित नवम पुरुष ओ अजितसिंह लक्ष्मणसिंहेर सहित सप्तम पुरुष वटे। ओ दुइ व्यक्तिर तपसिल एइ ये।

आदि पुरुष लक्ष्मणसिंह

तस्य पुत्र पुरुषोत्तम

१ ज्येष्ठ पुत्र संभाम
 २ तस्य पुत्र रघुनाथ
 ३ तस्य पुत्र रामसिंह
 ४ तस्य पुत्र यशोमन्तसिंह
 ५ तस्य पुत्र अजितसिंह

१ प्रतापनारायणमहापात्र
 २ द्वितीय तस्य पुत्र सुबुद्धि
 ३ तस्य पुत्र दुर्गोधन
 ४ तस्य पुत्र रसिक
 ५ तस्य पुत्र वैष्णवचरण
 ६ तस्य पुत्र समिर
 ७ तस्य पुत्र कन्दर्पसिंह

१ ओ विरोधीय वस्तु दखिलकार राजा मोहनलालखा राजा
 २ अजितसिंहेर सकल मातुलपुत्रगणेर लिखिया देया नादावि द्वाराय
 ३ आपनाके विरोधीय जमिदारि-स्वत्वाधिकारि करार देय ।
 ४ अतएव शास्त्र द्वाराय एइ कथार तहकिकात् ये मातुलपुत्रगणेर
 ५ लिखिया देओया नादावि मुद्दे, अर्थात् आपिलाएटर, दाविर निये-
 ६ धीय हइते पारे किना, आवश्यक घोष हइया, हुकुम हइल ये एइ
 ७ रोवकारि नकल रूपचरणमहापात्र आपिलाएट मोहनलालखा
 ८ रष्पाइएट ओ मोहनलालखा आपिलाएट राणि शिरोमणि रष्पा-
 ९ इंगटेर मकहमार दाखिल हओया व्यवस्थासकल सहित एइ
 १० हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर हाओलात करा थाय ये ताहार दृष्टे
 ११ राजा अजितसिंहेर वंशेर चलित दायभागशाखानुसारे नीचेर
 १२ लिखित सओलेर जवाब सओयाल पाओनेर तारिख हइते
 १३ चारि दिवसेर मध्ये दाखिल करे ।

सओया(ल) — ए व्यवस्थासकल ओ ए मकहमासकलेर

१ बावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वाराय साव्यस्थ आछे
 २ ये राजा अजितसिंहेर वंशेर चलित दायभागशाखानुसारे राजा
 ३ अजितसिंहेर स्त्री राणी शिरोमणि मृत्युर पर ए राजा ओ राणिर
 ४ त्यक्त विरोधीय वस्तु राजा अजितसिंहेर मातुलपुत्रगणके, ये
 ५ उदार बलवान् उत्तराधिकारि वटे, अशिवेक ओ ताहारा ताहार
 ६ स्वत्वाधिकारि वटे; ओ उहादिगेर समीक्ष्ये सगोत्र उत्तराधिकारि
 ७ हइवेक ना; ओ कागजातेर द्वाराय साव्यस्थ ये ए आदालतेर

पूर्व पण्डितगणेर व्यवस्थासकल ओ फयशलासकलेर द्वाराय राखि शिरोमणिर मृत्युर पर मातुलपुत्रगण आपन विरोधीय वस्तुर स्वत्वाधिकार थाकनेओ, विरोधीय वस्तुके मोहनलालखाँयर दखले छाडिया दिया, ताहार नादावि लिखिया दियाछे। अतएव जिज्ञासा थाय ये नादावि लिखिया देखोनिया मातुलपुत्रगण, ये राखी शिरोमणिर मृत्युर पर राजा अजितसिंहेर बलवान् उत्तराधिकारी ओ विरोधीय जमिदारिर स्वत्वाधिकारि वटे, अजितसिंहेर अतिवृद्धप्रपितामहेर भ्रातार सन्तान, ये स्वगोत्र वटे, थाकनेओ ऐ सकल वस्तु हइते आपनादिगेर एकारे किछु ना राखिया, किम्वा श्राद्ध ओ आपनादिगेर निर्वाहार्थे ताहा हइते किछु राखिया, मोहनलालखाँके, ये भिन्न व्यक्ति वटे, विरोधीय वस्तुर नादावि लिखिया देखोयार क्षमता राखे कि ना, ओ ऐ नादावि आपलाएटेर स्वत्वेर ये स्वगोत्र वटे अपचय कारक हइवेक कि ना इति ।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभूयुतआलकसुन्दरराससाहेबधर्माधिकरणलिखितखरामाष्टेन्दुमिताब्दीयागस्तमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतमशनपत्रमेवमेतद्विवादिनिदिपत्रजातान्तर्गतात्रत्यपूर्वधर्माधिकरणलिखितद्वीन्द्वष्टेन्दुमिताब्दीयत्रनवरीमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रसंबलितव्यवस्थापत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयागस्तमासीयसप्तविंशतिदिनसम्यन्धिशुकवासरे नयमिनटाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

राशिशिरोमण्या मरणोत्तरं राशेऽजितसिंहस्य बलबदुत्तराधिकारिनिवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्वत्वाधिकार्यनभियोगपत्रलेखकमातुलपुत्रकर्तृकाजितसिंहस्य सगोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातृधुत्रसन्ताने वर्तमान एव सति तस्मात् सराजकरस्थावरात् स्वायत्तं किञ्चिदप्यरक्षित्वाऽथवा श्राद्धार्थं तथा स्वीयनिर्वाहार्थं तस्मादेवसराजकरस्थावरात् किञ्चिद्रक्षित्वाऽपीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकविवादास्पदीभूतवस्वनभियोगपत्रदाने यद्यपि तस्मात्सराजकर-

स्थावरात् किञ्चिदप्यरक्षित्वेति^१ कल्पे शास्त्रासिद्धवृत्तिलोपात्मकत्वेन
मृतधनिव्यक्तेरजितसिंहस्य श्राद्धार्थमर्द्धस्यारक्षणत्वेन तथान्वयसर्वप्रयुक्त-
निषिद्धसर्वस्वदानत्वेन लोकविद्वत्त्वादिना च सत्यसत्यपि वाऽधिन्येतादृश-
सराजकरस्थावरविषयकानभियोगपत्रदानस्य शास्त्रानुसारित्वं नास्ति, तथापि
राजाऽजितसिंहवंशचलितदायभागानुसारेण तु तैर्ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वक-
सम्मत्या दानासिद्धिसाधनबलभीतिच्छलादिविरहेण^२ पुत्रादिसम्मत्या च स-
त्यपि राजोऽजितसिंहस्य सगोत्रे वृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्ताने उदासीन-
मोहनलालखॉसम्प्रदानकैतादृशसराजकरस्थावरविषयकमप्यनभियोगपत्रं दातुं
शक्यते, राजोऽजितसिंहस्य बलबहुत्तराधिकारिमातुलपुत्राणां राजोऽजि-
तसिंहस्य वृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्तानस्यार्थिन उदासीनसदृशत्वेन तस्य
तन्मातुलपुत्रकर्तृकानभियोगपत्रदाने प्रतिबन्धकत्वात्, तादृशस्य च वि-
वादाक्षरदोभूतसराजकरस्थावरस्य तेषां तन्मातुलपुत्राणां दायरूपत्वादाय-
रूपेण तरिमन् स्वाच्छ्रान्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात् । परन्तु एतच्छास्त्रानुसारेण
दातुर्दोषो भविष्यति । तस्मात् किञ्चिदक्षित्वेति कल्पे श्राद्धार्थं तत्सराजकर-
स्थावरस्याद्धं तथा तस्मादेव स्थावरात् स्वपोष्यवर्गभरणाहं धनं रक्षित्वा तु
ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वकसम्मत्या बलभीतिच्छलादिविरहत्वेन पुत्रादि-
सम्मत्या च स्वाच्छ्रान्येनोदासीनमोहनलालखॉसम्प्रदानकमनभियोगपत्रं दातुं
शक्यते । यदि च किञ्चिदित्यनेन मानवर्द्धनमात्रं रक्षितं तथापि पूर्वो-
क्तज्ञानानुसारेणेत्यादितदानरीत्यान्यसम्प्रदानकमपि तदातुं शक्यते; परन्तु-
तदरक्षणस्याप्यरक्षणसमत्वेन दातुर्दोषो भविष्यति । राजोऽजितसिंहस्य बल-
बहुत्तराधिकारिमातुलपुत्रकर्तृकाजितसिंहस्य त्यक्तस्वदायरूपसराजकरस्थाव-
रविषयकमोदासीनमोहनलालखॉसम्प्रदानकानभियोगपत्रदानेनाजितसिंहस्य स-
गोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्तानस्यार्थिनोऽपचयो नास्ति, तत्पूर्वमुपचया-
भावात्तन्मातुलपुत्रसत्त्वे सगोत्रस्य तस्य स्वत्वाभावात्—इति तद्वशुचलित-
दायभागदिप्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

१ ०त्वे सति—अप० ।

३ ०सिस्त्रिभयत०—अप० ।

२ ०प्रय०—अप० ।

४ पुत्रगामादि०—अप० ।

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येऽप्यजातारच ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति (दाभा०
२४)मनुवचनम् ॥ १ ॥

समुत्पन्नाद्दत्तादक्षं तदर्थं स्थापयेत्पुत्रकम् ।

गासंपाणमासिके श्राद्धे वार्षिके च प्रयत्नतः ॥—इति दायभाग(पृ०
२०६।२१०)धृतबृहस्पति(पृ० २१६)वचनम् ॥ २ ॥

निःक्षेपः पुत्रदारांश्च सर्वस्वञ्चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्याः—इत्यादि विवादमङ्कार्षव(पृ० १-पृ० ४२१
ख)धृतनारद(नास्मृपृ० १३७)वचनम् ॥ ३ ॥

बलाद्दत्तं बलाद्मुक्तं बलाद् यच्चापि लेखितम् ।

सर्वान् बलकृतानर्धानकृतान्मनुरनवीत् ॥—इति मनु(पृ० १६८)-
वचनम् ॥ ४ ॥

स्वप्नामज्ञातिसामन्तदायादानुमतेन च ।

हिरण्योदकदानेन पद्मिर्गच्छति मेदिनी ।—इति दायतत्त्व(पृ०
१७६)धृतमुनिवचनम् ॥ ५ ॥

पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाभ्योपरमे यत्र (द्रव्ये) स्वत्वं तत्र निरू-
ढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)अन्धलिखनम् ॥ ६ ॥

मरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने तस्य तस्माद् यत्नेन तं मरेत् ॥—इति दायभाग(पृ०
३३)अन्यधृतमनुवचनम् (?) ॥ ७ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्यायः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारतत्त्व-
(पृ० ४)धृतबृहस्पति(पृ० १६)वचनम् ॥ ८ ॥

१, व्यासवचनमिति शरीरवचनमिति वा पठनीयम् ।—तत्र च चतुर्थे पादे—वृत्तिरान
न विद्यते—इति द्वितीयपाठः, न दानं न च विक्रयः—इति व्यासपाठः । २, तदर्थं—दाभा०

३, चास्य—दाभा० ।

स्वभागान् यदि दशुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्व्यर्थेप्येवं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दावभाग(पृ० ३५)-
धृतनारदा नामसं० पृ० १५७)वचनम् ॥ ६ ॥

व्यासवचनं तु (स्वामित्वेन दुष्टं तपुरुषगोचरविक्रयदानादिना)
कुदुम्यविरोधादधर्मभागिताज्ञापनार्थं निषेधरूपं न तु विक्रयाद्यनिष-
त्यर्थम्—इति तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनियतिः—
इति च दायभाग(पृ० ३४-३५)ग्रन्थलिखनम् ॥ १० ॥

तदभावे नानुलपुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे चाधस्तनसकु-
ल्यानां धनिभोग्यलेपदातृणां प्रतिप्रणन्तृप्रभृतिपुरुषप्रयाणां क्रमेणा-
धिकारः । तदभावे पुनरुद्धर्ध्वतनसकुल्यानां धनिदेयलेपदातृणां वृद्धप्रपि-
तामहादिसन्ततीनामासत्तिक्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायभगटीकग्रन्थ(पृ० २१८)लिखनञ्चेति ।

शेतम्बरमासीवसन्तदिनसम्बन्धिभौमवासरे साहस्रघटिकत्रयाधिकयामद्वये
दत्तेव मया व्यवस्था ।

श्रीर्जयपतिविराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६६—सञ्जोयान आदालत देञ्जोयानी कमिसनरी आतराक
मुसरक जिला रङ्गपूर वनामे पशिडतान् सदर देञ्जोयानी आदालत
सन् १८३० इंरेजी तारिख १० जुन मोताधक १२२७ बाङ्गला
तारिख २६ ज्यैष्ठ ।

विष्णुराम

मुद्द

पापड

धीरचन्द्रवहुया जमिदार

मुहायले

परगणे धूण्णी ओ गयरह

दावि १५०० टाका

१. धनिदेयलेपदातृणां वृद्धप्रपितामह—म्य० ।

चावन् लओयावाद

कउरि' परगणार उपस्वत्वे

मुद्दे मजकुर आपन मातुल मेघनारायण चौधुरि र वित्तेर पर दखिलकार थाका, आर मुद्दायाले परगणा मजकुरेर कएक मौजा जबरदस्तीते दखल करा एजहारे उपरेर लिखित मयलग मजकुरेर द्यायाते मुद्दायालेर नामे नालिष करे । तज्जिजू कालीन जाना-गियाछे—ये शिवनारायण नामे एक व्यक्ति परगणे लओयावाद कओरि र जमिदार छिल । ताहार मृत्यु हओयार पर तस्य पुत्र शम्भुनारायण आपन पितृवित्तेते दखिलकार हइया निःसन्तान रूपे मृत्यु हय । ए प्रयुक्त शिवनारायणेर दौहित्र मेघनारायण ऐ स्थावर वित्तेर अधिकारी हइयाछिल । कथक दिवस पर से निःसन्तान मृत्यु हइयाछे । मुद्दे मेघनारायण मजकुरेर भागिनेय हय । से मते सओयाल करा जाइतेछे—ये मेघनारायण निःसन्तान मृत्यु हओयाते शिवनारायणेर स्थावर वस्तुते, ये ताहार पुत्रे अधिकारी हइया परे मेघनारायणेर हस्तगत हय, शाखा-नुसारे मुद्दे ताहा पाओयार स्वत्ववान् हय कि ना । यदि मुद्देके ना अशे एवं मेघनारायणेर अथवा ताहार पूर्वाधिकारीर उत्तरा-धिकारी केह नाथाके, तवे ऐ स्थावर वस्तु काहाके अशिते पादे इति ।

प्रभुसमर्पितप्रभञ्जं यदेतदन्दीपजुलाइमाओवनञ्जमदिनसम्बन्धिओम-
चाररे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशओषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि शिवनारायणस्य मृतस्य तत्त्वत्स्वसम्बन्धिवस्थावरवस्तुनि शिव-
नारायणस्य पुत्रः शम्भुनारायण उत्तराधिकारित्वेनाधिकारं संशय निःसन्तान
एव दर्शितः, तदनन्तरं तद्भागिनेयो मेघनारायणस्तदेव वस्तु हस्तगतं
(६)रूपे निःसन्तानो मृतस्तथापि तन्मरणोत्तरं बह्मदेश-चलितशाखानुसारे-
स्याप्ययंमेघनारायणस्य भागिनेय एव तद्ग्रहणे स्वत्ववान् भवति—यत उच्य-
रिलिखितशास्त्रे मृतस्यस्तेभ्रातृभौत्रदर्यन्तोत्तराधिकार्यभावे तत्त्वत्कंधने

पितृदोहित्रस्यार्थांमृतव्यक्तेर्भागिनेयस्याधिकारोऽभिव्यक्तोऽतः सुतरां मृतव्य-
क्तेस्तद्व्यतिरिक्तो उत्तराधिकारिसामान्याभावस्य तथा मृतव्यक्तेःपूर्वाधिका-
रिणोऽर्थाच्छम्भुनारायणस्योत्तराधिकारिसामान्याभावस्य च सद्भावात्-इति
वङ्गदेशचलितदायभागाधीकृष्यतर्कालङ्कारकृतदायभागाटीकादायक्रमसंग्रहवि-
वांदभङ्गार्थविविवादाद्यैवसेतुप्रभृतिसंन्यानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदोहित्राधिकारो बोद्धव्यः—
इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तदभावे पितृदोहित्रः—इति धीकृष्यतर्कालङ्कारकृतदायभाग (पृ० २१८)
ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

आतृपौत्रस्याभावे पितृदोहित्रस्याधिकारः, घनिपित्रादित्रयपिण्डदा-
तृत्वात्—इति दायक्रमसंग्रहादि (पृ० ७) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

अगस्तमासीयदशमदिनसम्बन्धिमीमांसरे घटिकैकाधिकयामद्वये
दत्तैर्षं मया व्यवस्था इति—

श्रीश्रीज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देशोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

६७—सओयाल :-एक व्यक्ति युगि परामाणिकी मर्यादार
कडडिर दावि करे । अतएव एमत् प्रकार मर्यादार कडडि
देया ओ लओया शाखसम्मत् कि; उहादिगेर जातिर ओ
समाजस्य ओकेरा स्वेद्धाते विभाग ह्य-इहार प्रत्युत्तर ययाशाख
लिखिवा इति ।

तत्र कश्चिदयोगी व्यक्तिविशेषः परामाणिकीमर्यादासम्बन्धिकपरिहा-
यामेकद्रव्यविषयकस्वत्वामियोगं कुर्यात्, तत्र यद्यपि विशेषेण युगोत्प-
न्नस्य मर्यादाद्रव्यस्य दानग्रहणे कुत्रापि शास्त्रे न लिखिते तथापि तत्र यदि
तज्जातीयै राजा वा केनचित् संविद्धिशेषेणार्थात् धनुरैः कैश्चिद्वा कृतसरेतेन

समूहकार्यचिन्तनादर्थः प्रधानत्वेन व्यवस्थाप्य वृत्तिरूपकल्पिता, अथवेवं तज्जातीयानां पारम्परिकाचारोपि वा भवेत्, अथवा तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा धर्मो भवेत्, तदैतादृशद्रव्यस्य दानादानयोस्तज्जातितच्छ्रेणितत्समूहस्य वा व्यवहारसिद्धत्वात् तद्दानादानयोर्निष्प्रत्यूहमेव शास्त्रसिद्धत्वम्, यतो यच्छ्रेणीनां यज्जातीयानां वा यथापूर्व्यापरव्यवहारस्तदनुसारेण यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तच्छ्रेणीनां तज्जातीयानां वा यथा पूर्व्यापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निर्ययस्य शास्त्रसम्मतत्वात्— इति बह्वदेशचलितमनुदायभागव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादचिन्तामणिनिवादभङ्गाण्यवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

परन्वैतद्विवादमूलन्तु वृत्तिद्वयपरमाशिके रामकृष्णनयनयोः सहोदरत्वम्, तथा च प्रभुसमर्पितैतद्विवादानिविष्टपत्रजातान्तर्गताधिप्रत्याधिसम्मत-साक्षिभाषापत्रान्तुचिद्दोषोपि कश्चिदासीत्, अनयोरर्थाद्रामकृष्णनयनयोर्भ्रातेति नावगम्यत इति तु विभावनीयम्—

अत्र प्रमाणम्—

तथा च यस्य कस्यचिद् गणस्य या संवित् सैव प्रतिपाल्या । तेन नापितादीनां प्रामाणिकत्वेन स्यात्तस्य वचनातिक्रमे दोषो व्यवहारसिद्धः सङ्गच्छते—इति विवादभङ्गाण्यवग्रन्थलिलनम् ॥ १ ॥

यो धर्मः कर्म चैवैषामुपस्थानविधिश्च यः ।

यच्चैषां वृत्त्युपादानमनुमन्येत तत्तथा ॥ (नासृ० १३३)

धर्मः पारम्परिकाचारः कर्म जीवनानुकूलोचितव्यापारः वृत्त्युपादान-मुपादीयमाना वृत्तिः—इति (विवाद) रत्नाकरः (पृ० १७६) ।

अनुमन्येत राज्ञा इति शेषः । तथा चैषां पारम्परिकाचारादीन् कोऽप्यन्यथाकर्तुं न शक्नुयात् इत्यमिहितम्—इति च तद्ग्रन्थलिलनम् ॥२॥

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत् ॥—इति मनु(पृ०

२८१) वचनम् ॥ ३ ॥

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका-
(पृ० २८२) व्यवहारतत्त्वादि (पृ० ४) ग्रन्थधृतनारद (नामसं० पृ० ८)
वचनम् ॥ ४ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिरुद्धः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका-
(पृ० २८२) वीरमित्रोदयादि (वीमि० ख-१८) ग्रन्थधृतबृहस्पति (पृ० १६)
वचनम् ॥ ५ ॥

युक्तिलोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) व्यवहार
तत्त्व (पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहीमानन्दमिश्रेण

४२—लं खास आपिल । सन १८२६ शाल ई० सदर देओ-
यानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओल ।

६८—यद्यपि कोन व्यक्ति दुइ पुत्र राखिया लोकान्तर हय,
आर ऐ दुइ पुत्रेर मध्ये एक जन महाव्याधिप्रस्त ओ अपुत्रक,
ओ द्वितीय जन सुस्थशरीर थाके, तवे पितार धने ऐ दुइ पुत्र अधि-
कारी हय कि ना । आर ऐ महाव्याधिप्रस्त व्यक्ति आपन अंशेर
दान विक्रयेर क्षमता राखे कि ना । शास्त्रानुसारे इहार व्यवस्था
लिखिया । सन १८३० शाल, तारिख १० जुन ।

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदन्दीयजुलाइमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिगुरु-
वासरे षट्कैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशशोधो ज्ञात-
स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रद्वयं (स) रक्ष्य स्वर्गलोकमगमत् । एक-
श्च तयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एको महाव्याधिप्रस्तः, अथ च निःसन्तानो द्विती-
यश्च स्वस्थशरीरो भवेत् तथापि पितृत्वकधने निरुपाधिकपुत्र एक एवाधि-
कारी, नहि महाव्याधिप्रस्तशरीरोऽपि, यतः शास्त्रेऽन्वयत्पदगुत्वप्रतीकत्वा-

दिनानोपाध्यायतनोः भक्तान्छादनातिरेकेण धनांशाभावप्रतिपादनात् ।
 सिद्धे चांशाभावे मुतरां तद्दानविक्रययोः-क्षमताभावः-इति बङ्गदेशचलित-
 मनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायरूपसंग्रहविवादमङ्गा-
 र्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

क्लीवोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्सरोगाद्या भर्त्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥—इति दायभागादि-
 (पृ० १०२)ग्रन्थधृतगात्रवल्गव (२।१४०)वचनम् ॥ १ ॥

अनंशी क्लीवपतिती जास्यन्धवधिरी तथा ।

उन्मत्तजडमूकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥—इति मनु(६।२०१)
 वचनम् ॥ २ ॥

मृते पितरि न क्लीवकुट्टयुन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायोशमागिनः ॥

तेषां पतितवर्ज्येभ्यो महत्तद्वत् प्रदीयते ॥—इति दायभाग (पृ० १०२)
 विवादमङ्गार्यव (२ विवा० पृ० २११ ख)दायतत्त्वादिग्रन्थ (दात० पृ०
 १७२)धृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

अतीतव्यवहारान् प्रासान्छादनेर्विभृयुः ।

अन्धजडक्लीवव्यसनिव्याधितादीश्चाकर्मिणः । पतिततज्जातवर्ज्यम्-
 इति दायभागादि(दाभा० पृ० १०२)ग्रन्थधृतबौधायवचनञ्चेति ॥४॥

आगस्तमासीवैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे षट्कत्रयाधिकयामद्वये
 दत्तयं मया व्यवस्था—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देश्रोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सञ्चोयाल—
 ६६—कालीप्रसादरायघोपाल-आपिलाएट-कोर्ट कालिकाता
 दुर्गाप्रसाद-रसाडरट-मार्ष्टसाहेव—

७—लम्बर । आपिल सन १८२७ साल--

यद्यपि एक व्यक्ति एक स्त्री ओ एक पुत्र ओ एक कन्या राक्षिया मृत्यु ह्य, आर ऐ पुत्र आपन माता ओ भगिनीर संमुखे अविवाहित लोकान्तर ह्य; ताहार पर ऐ कन्यार एक पुत्र जन्मिया आपन मातामही ओ मातार जीवदशाय ओ महाव्याधि ओ यद्मा फारा प्रस्त हइया, एक स्त्री ओ दुइ कन्या राक्षिया, आपन मातार संमुखे मृत्यु ह्य । अतएव ऐ व्यक्ति ये ताहार लोकान्तर हइले, ताहार पुत्र आपन मातार संमुखे लोकान्तर(र) ह्य, ताहार पितार उत्तराधिकारिरा थाकिते उहार स्थावरास्थावर धन काहाके अरौ, एवं दीहित्रे स्त्री ताहा पत्तनि पुरते विक्रय करिते पारे कि नाशाखानुसारे इहार प्रत्युत्तर भापाय एइ सओयालेर पारौ लिखिवेन इति । सन १८३० साल तारिख १५ जुलाइ ।

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदन्दीयागस्तमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः एकां पत्नीमेकं पुत्रं कन्याञ्चैकां (सं)रक्षयैः लोकमत्यजत्, अथ च स बालोऽपि मातृभगिन्योरग्नेऽविवाहित एव स्वलोकमगतः, तदनन्तरञ्च तस्याः कन्यायाः पुत्रो भूत्वा स्वमातामहीमात्रोर्जीवदशावधिमाहाव्याधियद्माकासप्रस्तः सन्नेव स्वमातृसमक्षमेकां पत्नीं द्वे च कन्ये (सं)रक्ष्य मृतः स्यात्, तथाप्यविवाहितस्य मृतस्य तस्य मातृसंक्रान्ते स्थावरास्थावरपने, तस्यां मातरि मृतायां स्वमातामहीवर्त्तमानावधि वा कुठयद्माकासप्रस्तस्य पितृदौहित्रस्याधिकारो नास्ति, शास्त्रेऽचिकित्स्यरोगिणोऽनधिकारबोधनात्, यद्माकासादिरोगेऽचिकित्स्यत्वस्यायुर्वेदसिद्धत्वात्, चिकित्सयाप्यनुपशमेन मरणपर्यन्तस्थापित्याद्य, शास्त्रे कुष्ठिनोऽप्यनधिकारबोधनात्, कुठयद्माकासरोगप्रस्तस्य तु सुतयमनधिकारः । यदन्यतरसत्त्वे अनधिकारस्तत्समुदायसत्त्वेऽनधिकारस्य लोकव्यवहारप्रसिद्ध-

त्वात् । एवञ्च सति तत्सत्त्वस्याप्यसत्त्वसमत्वाद्दोहिव्रान्तपितृसन्तानाभावे पिता-
महसन्ताना(ना)मेवाधिकारो, न तु भगिन्यादीनाम् इति । मातुलघनेऽधि-
कारिणस्तु पत्न्याः कीदृशेऽपि पतिमातुलघनस्य विक्रये क्षमता नास्ति, पति-
सत्त्वेऽसत्त्वेऽपि वा; स्वसंक्रान्तपतिस्यावरस्यापि स्त्रीकसूक्तविक्रयनिषेधोऽस्ति
यतोऽतः सुतरां पत्सुर्यद्धनेऽधिकारः, तस्यास्तद्धने पतिद्वारमन्तरेणाधि-
कारित्वप्रतिपादकशास्त्राभावेनानधिकारित्वनिश्चयात्, अनधिकारिणो विक्रया-
सामर्थ्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादमहार्णव-
दायतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीवोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्वोऽचिकित्सरोगार्तो भर्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥—इति दायभा-
गादि(दाभा पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २२६)वचनम् ॥१॥

अचिकित्सरोगः अप्र तसमाधेययक्ष्मादिरोगप्रस्तः ।—इति मिता-
क्षरा(पृ० २२७)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

महारानं महाक्षीणमतीव(च) निपीडितम् ।

शूलशुष्कोदरंश्चैव यद्धिमयां परिवर्जयेत् ॥—इति आयुर्वेदीयवचनम् ॥३॥

मृते पितरि न स्त्रीवकुट्युन्मतजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायंशर्मांगिनः ॥—इति दायभागादि-
(पृ० १०२)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ ४ ॥

किन्तु पितुरपि मपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदोहितस्याधिकारो बोद्धव्यः
घनिदोहितस्येव एवं पितामहप्रपितामहसन्तरेपि दोहितान्तायाः पिरड-
प्रत्यासात्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी च भर्तृघनं मुञ्जीतेव, परं न नु तस्य दानाधानविक्रयान्
कर्तुमर्हति—इति दायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् सान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति च तद्ग्रन्थ-
(दाभा पृ० १७१)धृतकात्यायन(कास्यु पृ० ११२)वचनम् ॥ ७ ॥

व्यवहारोऽपि चलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।
 युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥--इति व्यवहारमातृकाभूत
 (पृ० २८२) वचनञ्चेति ॥ ८ ॥
 द्विजम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाप्रयाधिकयामद्वये
 दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्जयतितराम्
 श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१००—रोवकारि कोर्ट आपिल एलाके कलिकाता तारिख
 ५ माह मार्च सन १८३० ईं मतावक २३ माह फाल्गुण सन
 १२३६ वाङ्गला रोज शुक्रवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत गेलब
 वटकाधोण्टरि भाष्टर साहेवेर बैठके ।

मतालके जिलेय शहर
 मुपन्मात चित्रादासी

शाएला

इंराजी १८२६ सालेर शेतम्बर मासे दाखिल ह्ओया साए-
 लार सओयाल । ऐ तारिखेर लिखित ए अदालतेर हुकुमानुसारे
 यजसाहेवेर पाठान कागजात ओ गङ्गागोविन्द तरपसानिर
 सओयाल ओ अनुमति ओ चन्द्रमुखिदास्यार मजाहेमदाराणेर
 सओयालात ओ ईं १८१२ शालेर नवम्बर मासेर १० ओ २४
 तारिखेर लिखित ७५८ लम्बेरेर मकई मा घावत सदर देओयानि
 अदालतेर दुइ किता रोवकारि, ये ताहाते रामकुमारन्यायवाच-
 स्पति आपिलाण्ट, कृष्णकिङ्करतर्कभूषण रप्पाडण्ट छिल, ऐ
 आदालतेर परिदतगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ईं १८२५
 शालेर माइ मासेर २ ओ ३० तारिखेर लिखित सदर अदालतेर
 २ किता रोवकारिर नकल ये ताहाते साएलार शशुर रामजय-
 साहा साएल छिल ओ साएलार वकिलगण रसिकलालदत्त ओ

शिवनारायणचट्टोपाध्यायेर अथ दाखिल' पण्डितगणेश व्यवस्था सन्वलित अथ ताहारदिगेर ओ गङ्गागोविन्दसेनेर उकिल रूपचन्द्रसेन ओ मजाहेमदाराणेश उकिल राजनारायणदत्तेर समीचे दृष्टे आसिल। जानागेल ये गङ्गागोविन्दसेन म० १६०० टाकार दाबिते ये शाएलार पति रामलोचनसाहार इजारा लभ्य वावत ताहार तालुक निलम हइया उमुल हइयाछिल। ऐः रामलोचनेर नामे नालिप करिया डिगारि हासिल करिया डिगारि जारिते डिगारि देइनदारेर जायदाद करारे नीतेर कुटी ओ वास्तु याटी प्रभृति वस्तुसकल निलाम कराइयाछे। ओ देइनदारेर पिता रामजयसाहार दरखास्त मते ऐ जायदादके आपन जायदाद जाहिर कराइया छिल। सदर देओयानि आदालत हइते ऐ निलाम बद्ध हइया ऐसेन(?)प्रति नालिसेर अनुमति हय। तत परे ऐ सेनेर नालिप मते रामलोचनसाहा ओ ताहार पिता(र) नामे १ लम्बरे नीचेर कुटिर डिगारि ओ २ लम्बरे वास्तु याटीर डिगारि जिलार आदालते हासिल हइल। ए आदालते ऐ जायदादसकल रामजयसाहार थाकन हेतुक जिलार दुइ डिगारि बद्ध हइल, ओ एइ जणै ऐ रामजयसाहार मृत्युर पर ऐ डिगारिदार रामजयसाहार त्यक्त समुदय वस्तु देइनदारेर स्वत्व करार दिया ताहा विक्रय द्वाराय डिगारि(र) टाका आदाय हओयार जन्ये जिलार आदालते' दरखास्त दाखिल करिलेक, ओ ताहार रोवकारि हुकुम सादर हओनेर परे साएला एइ एजहारे एक किता दरखास्त दाखिल करिलेक ये रामजय मजकुर अनेक दिव(स) हइते आपन पुत्र रामलोचनके आजावाहक ना थाकन प्रयुक्त पुत्रत्व हइते दूर करियाछे। रामलोचन मजकुर पितार वस्तु हइते नैरास हओनेर पर मेहनत ओ मशमत ओ इजारा प्रभृति द्वाराय दिन जापन करित, ओ बाङ्गला १२३५ शालेर १६ वैशा-

श्रे रामजय मजकुर आपन वृद्धावस्थार दृष्टे साएलार नावालंक पुत्रे, ये उहार पौत्र बटे, ओ प्रतिपालन ओ तरवियतेर करा आपन स्वकृत समुदय स्थावर ओ अस्थावर वस्तु साएलाके हेवा करि-याछे । जिलार यजसाहेव ऐ हेवा सिद्धि कि असिद्धि ताहा सदर देओयानि आदालतेर परिडतगण हइते ज्ञात हओनार्थे ऐ आदालते आपन रोवकारि पाठाएन । सदर आदालतेर परिडतगणेर व्यवस्था पौद्धिल । परे ऐ हेवानामाके असिद्ध ज्ञान करिया ऐ जायदाद विक्रयेर हुकुम एइ हेतुते सादर करिलेन-ये रामलोचन-साहा व्यतित मृत रामजयसाहार अन्य सन्तान नाइ । अत-एव ताहार स्वत्वार प्रमाण तलब करार आविरवक हइल ना । ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकईमा वावत सदर आदा-लतेर इनफशालि रोवकारिर नकलेर द्वाराय जानागेल ये ऐ मक-ईमाते ऐ आदालतेर हाकिमगणेर मध्ये हुजुर हइते परिडतग-णेर निकट ए विषयेर सओयाल हइल—ये यद्यपि कोन ब्राह्मण ज्येष्ठ पुत्र विद्यमान राखिया थाकने आपन पैतृक ओ स्वकृत स्थावर ओ अस्थावर समुदय विषय कनिष्ठ पुत्रके दान करे, से दान बङ्गदेशचलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना ।

ऐ आदालतेर परिडतगण ताहार जवावे लिखिलेन—ये यद्यपि कोन ब्राह्मणजाति ज्येष्ठपुत्र वर्त्तमान थाकनेओ पैतृक ओ स्वकृत समुदाय स्थावर वस्तु ज्येष्ठ पुत्रके हेवा करे से हेवा सिद्ध बटे । किन्तु ये हेतुक पैतृक स्थावर समुदाय वस्तु दान करण शास्त्रनिषिद्ध बटे, अतएव पैतृक समुदाय वस्तु दान करणे पाप हय—बङ्गदेश-चलित शास्त्रानुसारे ए व्यवस्था बटे इति ।

सदर आदालतेर परिडत ए मकईमार यवावे लिखेन—ये यद्यपि हेवार लिखित वस्तुसरुल रामजयसाहार स्वकृत हय, ओ साहा मजकुर आपन पुत्र ओ पौत्र मौजुद थारुनेओ ताहा समुदाय आपन पुत्रवधूके ताहा दान ओ विक्रय करणेर सम्बन्धे उहार क्षेमता कर्तृत्व नियमे हेवा करिया थाके, एमत व्यवस्था

अनैक्य हेतुक ये रोवकारिर समुदय वृत्तान्ते ओ हुजुरेर समर्पित हेवानामा' सठता ओ क्रोधमते हइयाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध हइते पारे ना । केन ना शास्त्रानुसारे हाकिमके उचित ये ये हेवा, सठता ओ क्रोध क्रमे हइछे, अकर्मण्य करेन । ओ रोवकारिर विस्तीर्ण मते पिता एक पुत्रके हेवाकरण, ओ आपन आप्राप्तव्यवहार ओ अज्ञान पुत्र ओ अप्राप्तव्यवहार पौत्र थाकनेओ पुत्र ओ पौत्रेर भरण पोषणेर योग्य मिनाह ना दिया हेवार अयोग्य वस्तु हइते आपन पुत्रवधूके हेवाकरण शठता व्यतित हय ना । अतएव एइ दृष्टे ये आदालतेर फयशला ओ सदर देओयानि आदालतेर रोवकारिर नकलेर अनुसारे ए मकई माते साव्यस्थ नाइये । रामजयसाहा हेवा करणेर पूर्व आपन पुत्र रामलोचनके त्याग करियाछे, ओ ऐ हेवानामा लिखन कालिन रामजयसाहा ऐ रामलोचनेर सम्बन्धे शठता ओ क्रोध क्रमे साएलाके हेवा करियाछे, वरं ऐ हेवानामाते साएलार अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर, ये रामजयेर पौत्र वटे, प्रतिपालनेर उल्लेख लिखा नाइ । ताहाते साएलार सम्बन्धे हेवानामार लिखित समुदय वस्तु विक्रय ओ दानकरार क्षमता नाइ । ओ काहारो पिता बिना क्रोधे ओ अपराधे पुत्र त्याग करे ना । ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकई मार व्यवस्थार नकलेर द्वाराय जाहेर ये बड पुत्र थाकनेओ कनिष्ठ पुत्रके हेवा करा सिद्ध ओ ताहाते ज्येष्ठ पुत्रेर भरण-पोषणेर परिमाणेर किछु मिना लिखा नाइ । किन्तु से मकई माते ब्राह्मण जाति शब्द लिखा गियाछे । ओ साएला अन्य पण्डितानेर व्यवस्था एइ कारण दरपेप करिलेक ये रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकई मार व्यवस्था शास्त्रानुसारे ब्राह्मण ओ हिन्दु अन्य जाति स्वत्वे एक वटे; ये हेतुक रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिल्लाएट ओ कृष्ण-किङ्करतर्कभूषण रण्पाडण्टेर मकई मा वावत सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ ए मकई मा वावत व्यवस्था,

याहा आदालतेर सओयाल मते ऐ पण्डितगण दिवाछेन, अनैक्यां
अतएव उभय व्यवस्थार अनैक्यता परिष्कारार्थे, ओ आरो एइ ये
रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकईमार ब्राह्मणेर स्यत्वे ये हुकुम
आछे, ताहा समस्त हिन्दु जातिर मकईमाते सम्पर्क राखे ना।
हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ओ दुइ व्यवस्थार नकल
सहित इङ्गरेजी चिटीर सम्वलित सदर आदालतेर रेजिष्टर साहे-
बेर निकट एइ प्रार्थनाय पाठान जाय—सहेव मौपुफा ताइके
पण्डितगणेर निकट समर्पण करिया ताहार दृष्टे दुइ व्यवस्थार
अनैक्यतार परिष्कारेर विषय एवं वाचस्पतिर मकईमार
व्यवस्थार आज्ञा समस्त हिन्दु जातिर मकईमार सम्पर्क राखन,
ना राखन-विषये व्यवस्था दाखिल करेन—ताहा अनुग्रह पृर्वक
ए आदालते पाठान इति।

श्रीज्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रप्रतिरूपपत्रं सदरदेश्योयानीपदवाच्यधर्माधिकरणा-
धिकृतपूर्वापरपण्डितव्यवस्थाद्वयस्य यदेतदब्दीयगुलाइमासीयचतुर्विंशतिदि-
वसीयशनौ घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थातो ब्राह्मणब्राह्मणेतरभेदकचूर्कभेदो नास्ति
शास्त्रे एतद्विषये जातिविषये जातिविशेषाभक्त्वात्, तथापि रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वात् श्रीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाश्च शास्त्रसम्मतत्वात्, शास्त्राशास्त्र-
भूतयोस्तु व्यवस्थयोर्भेदोऽस्त्येव। पैतामहे स्थावरारथावरधने पितुः पुत्रस्य
च हृत्यस्यामित्येन बहुस्थामिकैकपदार्थस्य परस्परानुमतिव्यतिरेकेणैक-
चूर्कदानविश्रयादौ स्वांशदानादिसिद्धिव्यतिरेकेण पराशदानाद्यविद्वेः, शास्त्र-
लोचनव्यवहारोभयतिद्वत्वात्, पैतामहे स्थावरधने पितुर्विशेषतः स्वच्छन्द-
वृत्तितया अपि नियेषान्च, शास्त्रे पुत्रायनुमतिव्यतिरेकेण स्वोपावृत्तवर्ण-

स्यावरास्थावरघनदानस्यापि निषेधोऽस्ति, पोष्यवर्गस्यावश्यम्भरणीयत्वात्, तयान्ययस्वत्वप्रयुक्तसर्वस्वदानस्य वृत्तिलोपस्य च निषेधात् । एवञ्च सति रामकुमारन्यायवाचस्पतीयदिवादनविष्टव्यवस्थाधृतप्राप्तश्चित्तबोधकवचनस्य प्रसक्तिस्तु तत्रैव, यत्र केनचिद् दुर्वृत्तपुरुषेण तादृशविधिसुल्लङ्घ्यं स्वोपार्जितसर्वधनस्य दानं कृतं स्यात्, विहितपोष्यवर्गभरणस्थाननुष्ठानान्निन्दितस्य चान्ययस्वत्वप्रयुक्तसर्वस्वदानस्य वृत्तिलोपस्य च करणात् । न तु पैतामहस्थावरघनदाने तत्र पितुरेकस्य प्रसुत्वाभावात् शास्त्रानुसारात् किञ्चिदपि पुत्रवधूक्तृकोपकाराश्रयणादुत्तराधिकारिकोटावनन्तभूतत्वात्, विना निमित्तं स्वमित्रस्य कस्यापि कृतार्थनिपाकारित्वान्च तस्याः । तथा च कृते एतपि स्वाज्ञोत्पन्नकारित्वेन पुत्रत्यागे अप्राप्तव्यवहारेणाविदितगुणदोषेभ्यश्च च मुख्योत्तराधिकारिणु, स्वस्यार्थाद्रामजीसाहस्य तथार्थप्रस्तस्यै स्वपुत्रस्यार्थाद्रामलोचनसाहस्य कृतार्थनिपाकतृणु सत्त्वेवाप्राप्तव्यवहारेषु पौत्रेषु, तेषामदत्त्वा स्वकुटुम्बादन्यमदत्त्वा च पुत्रवधूत्प्रदानकदानपत्रस्य छुलादिव्यतिरेकेणासम्भवात् । अथ च यद्यप्राप्तव्यवहाराणां तेषां भरणार्थमेव तद्दानपत्रं दत्तं स्यात्, अथ च तस्य छुलादिकं नामितं स्यात्, तदा पुत्रवधूमर्थात्तन्मातरं मध्यस्थां कृत्वैव पौत्रसम्प्रदानकं कुतो न दत्तम्-एतादृशरीत्याप्यदानात् छुलादेः स्पष्टतरतया प्रतीतिः छुलादिकृतव्यवहारे परावर्तनीयत्वस्य शास्त्रसिद्धत्वात्-इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागदायक्रमसंग्रह-विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा ।

तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य चैव हि ॥

इति दायभाग(पृ० २६)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (१।१२१)वचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्व्युक्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

—इति तद्(दाभा० पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारद(नामसं १।५४२)वचनम् ।२।

१ ० धानपरत्वप्रयुक्तसर्वस्वस्य-व्यप० । २ प्रशस्तिरतु-व्यप० । ३ पुरोता-व्यप० ।

४ ० पुरोता-व्यप० । ५. प्रथम-व्यप० । ६. ० तानशान्-नामसं० ।

पिता चेत् पुत्रान् विभजेत्तस्य स्वेच्छा स्वयमुपात्तेऽर्थे^१। पीतामहे तु पि-
तापुत्रयोस्तुल्यं स्वामित्वम् ॥ — इति तद्ग्रन्थ(दाभा०पृ० ३१) धृतविष्णु-
वचनम् ॥ ३ ॥

यदि पिता पुत्रान् विभजति तदा स्योपाज्जितेऽर्थे न्यूनाधिकविभागं
स्वेच्छया पुत्रेभ्यो दद्यात् । पीतामहे तु नैतत्, यस्मात् तत्र तुल्यं स्वामित्वम्,
न पुनः पितुः स्वच्छन्दवृत्तिता — इति तद्(दाभा० पृ० ३१)ग्रन्थलिख-
नम् ॥ ४ ॥

पूर्वोक्तगुणवत्त्वादिनिमित्तेनापि पितामहधनस्य भूमिनिबन्धद्विपद-
(न्यतम)स्वरूपस्य न्यूनाधिकदाने पितुर्न प्रभुत्वम् — इति दायक्रमसंग्रह-
(पृ० ४०)ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

स्थावर द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्मूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥ — इति दायभा-
गादि(दाभा०पृ० ३५)ग्रन्थधृतवचनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोथ्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ — इति मनु(?)वच-
नम् ॥ ७ ॥

निःक्षेपः पुत्रदाराधिः सर्वस्वञ्चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि फट्टासु वर्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्याः — इत्यादि विवादमहार्णवादि(विभा०पृ० ४२१

ख)ग्रन्थधृतनारद(नामस० ५।५)वचनम् ॥ ८ ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि क्वाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥

— इति व्यास(धर्को० पृ० १५८०)वचनम् ॥ ९ ॥

विहितस्याननुष्ठानान्निन्दितस्य च सेवनात् ।

अनिमहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति ॥ इति प्रायश्चित्तविवेक-

(पृ० १०)धृतयाशवल्य(३।२१६)वचनम् ॥ १० ॥

१. ०मुपाज्जिते—यास्यु० ।

२. निक्षेप पुत्रदार च —नानस० ।

३. मनु०—व्यस० ।

४. ०मिन्दनि—भ्यस० ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो धनुः शिष्यः सप्रह्यचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्गात्स्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ —इति दायभागादि(पृ० २५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥१२॥

प्रतिपत्तं स्त्रिया देयं पत्या वा सह यत् कृतम् ।

स्वयं कृतं वा यदस्यां नान्यत् स्त्री दानुमर्हति ॥

—इति विवादमङ्गार्यादि(१ विवा०पृ०२०६ क)ग्रन्थधृततद्(याज्ञ० २।४६)वचनम् ॥ १२ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पीत्रस्तदभावे प्रपीत्रः ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागीकार् पृ० २१८)ग्रन्थलिखनम् ॥१३॥

पितरि प्रोपिते प्रेते व्यसनामिच्छुतेऽपि वा ।

पुत्रपौत्रैश्च देयं निह्वे साक्षिमावितम् ॥

इति विवादमङ्गार्याव(पृ०१७८ ल) धृतयाज्ञवल्क्य(२।५०)वचनम् ॥१४॥

योगाधमनविकीर्तं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र वाप्युपधि पश्येत् तत्सर्व्वं विनिर्वायेत् ॥—इति मनु (८।१६५)वचनञ्चेति ॥ १५ ॥ ० ॥ ० ॥

दिग्भ्रमरमासीथैऋत्रिशदिनसम्बन्धिभृगुवासरे चटिक(१)त्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ॥ ० ॥

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१०१—प्रभुपतिरितैतद्धर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिरुतस्य रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिप्रश्नरैतद्धर्माधिकरणप्राचीनपरिद्वयलि-
खितव्यवस्थापत्रं कलिकाताण्डरामदानगरसम्बन्धि कोट्यं गीताखण्डधर्माधिक-
रणाधिपतिरुतस्य चिनादासीयनेनादमन्विमप्रश्नैतद्धर्माधिकरणपरिद्व-

तस्थानामिपिकहीरानन्दमिभाख्यपरिडतलिखितव्यवस्थापत्रमन्यदप्यङ्गरेजी-
लिपिसमभिव्याहृतविचारपत्रद्वयं तत्रेपितमेवं यशहरबिलाखावान्तरभर्मा-
धिकरणाधिपतिकृतस्य चित्रादासीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यास्मल्लिखितव्यव-
स्थापत्रं चावलोक्य वादशब्दो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ।

रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थैतद्वर्माधिकरणे अङ्ग-
रेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वादशाधिकाष्टादशशताब्दे एतद्वर्माधिकरणप्राचीनप-
रिडताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारोभयावलोकनेनैवोपस्थापिता ।
एतद्वर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिस्तदनुसारेणाशयां दत्ताया सत्यां वङ्ग-
देशे तादृशव्यवहारः शास्त्रतोऽपि दृढीभूतः । अतएव मुद्रायन्त्रालये मुद्रि-
या परस्परमनैक्यमस्त्येव । तथापि यन्मतं यस्मिन् देशे पूर्वापरप्रचलितं-
भवति तस्मिन् देशे तदेव रक्षणीयम्, अन्यथा प्रजाप्रदोषः स्यात् । अथ च
वङ्गदेशीयैः सर्वैरेव प्राचीनार्वाचीनैः ग्रन्थकारैः स्वस्वग्रन्थेषु जीवति पितरि-
पुत्राणां पैतृकधने पैतामहधने च किञ्चिदपि स्वत्वं नास्तीति लिखितम् ।
विना पितुः स्वाजितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयनिषे-
धकान्येतद्वर्माधिकरणपरिडतस्थानामिपिकहीरानन्दमिभाख्यपरिडतलिखि-
तव्यवस्थालिखितवचनानि लिखित्वा इदमपि लिखितं पुत्रानुमतिं विना पितुः
स्वाजितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयकरणं नोचितं
भवतीत्येव । तादृशवचनानां तात्पर्यार्थः—यदि च पिता तदेव शास्त्रोक्ताश-
जातमुल्लङ्घ्यं स्वोपाजितस्थावरसमुदायस्य पैतृकसमुदायस्य वा पुत्रानुमतिं
विना दानं विक्रयं वा करोति, तदा तद्दानं विक्रयो वा सिद्ध्यत्येव, किन्तु पितुः
शास्त्रोलङ्घनबन्धः प्रत्यवायो भवति । तत्रापि यदि छलादिना क्रोधादिना वा
तादृशदानं विक्रयं वा करोति तदा न सिद्ध्यतीत्यपि लिखितम् । एवञ्च सति
रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमतीचित्रादासीय-
विवादसम्बन्धस्मल्लिखितव्यवस्थातो वास्तवमनैक्यं नास्त्येव । प्रकृते तु

१. सङ्ग—व्य० ।

२. अनुमतिं विना—व्य० ।

३. वाञ्छित—व्य० ।

४. शब्दो—व्य० ।

यशहरजिलाख्याबान्तरधर्माधिकरणाधिपति कृतांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यो न विद्य-
 -दधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयपट्टदिवंलिलिखितविचारपत्रान्तर्गतवृत्तान्ते स-
 -ति, तत्सम्पितदानपत्रलिखितवृत्तान्ते च सति, एकमात्रपुत्रस्य पितृव्यवहार-
 -योग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अप्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु च
 -विद्यमानेषु तेषामन्नाच्छादनोपयुक्तमपि धनमंतरक्ष्य पुत्रवधुं दानविक्रयस्व-
 -त्वाधिकारिणी कृत्वा व्यावहारिकैतादृशसर्वस्वदानस्य छलादिकं विना अस्-
 -म्भवत्वेन तादृशदानस्य छलादिकृतत्वं क्रोधादिकृत(त्व)ञ्च (अतस्तस्माद्)
 -दानासिद्धिप्रमाणीभूता व्यवस्था मया दत्ता । अत्र यद्यपि कलिकाताख्य-
 -महानगरसम्बन्धिकोटपीलाख्यधर्माधिकरणीयविचारपत्रद्वये तद्दानपत्रे
 -रामजीसाहसंशकस्याप्राप्तव्यवहाराणां पौत्राणामयां दधिन्याश्चित्रादास्याः
 -पुत्राणां मरणपोषणं लिखितं नास्ति; अतएवाधिन्याश्चित्रादास्या दानपत्र-
 -लिखितपत्तुनः समुदायस्य दानविक्रयादिकरणक्षमता नास्तीति लिखित-
 -मस्ति । परन्तु तद्दानपत्रे दात्रा रामजीसाहसंशकेन लिखितम्—एतस्य
 -दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारोऽस्त्येव; एतद्विषये मया किंवा ममान्येः केभ्य-
 -दुत्तराधिकारिभिः प्राप्तोच्छ्रा क्रियते चेत्तर्हि सा प्राप्तोच्छ्रा न ग्राह्या नैव शुद्धा
 -भवतीति । अतएव तद्दानपत्रे एतादृशलिलिखनेनाप्यधिन्याश्चित्रादास्यास्त-
 -दानप्रहीन्या यदि तदने दानविक्रयादिकरणक्षमता न भवति । तर्हि तद्दानपत्रं
 -तस्याः स्वत्वोत्पत्तेः प्रमाणं कथं भवति । तद्दानपत्रमप्रमाणञ्चेत् कथं तत्
 -प्रमाणेन तद्दानसिद्धिरिति । एवञ्च सति यदि जिलाख्याबान्तरधर्माधि-
 -करणाधिपतिकृतद्विचारपत्रलिखितवृत्तान्तेन तद्दानपत्रेण वा छलादेः
 -क्रोधादेर्वा निश्चयो वास्तवं न भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिन्य-
 -स्मल्लिखितव्यवस्था सुतरां प्रचारणीया नैव भवति, किन्तु रामकुमार-
 -न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्थैव प्रचारणीया भवति । यदि
 -च तद्विचारपत्रेण दानपत्रेण वा छलादेः क्रोधादेर्वा वास्तवं निश्चयो
 -भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिनी अस्मल्लिखितव्यवस्थैव प्रचार-
 -णीया भवति । एवञ्च सति एतद्वर्माधिकरणनियुक्तपरिदितसंभृतसंभ्रमता
 -व्यवस्था चैतद्वर्माधिकरणनियुक्तपरिदितसंभृतसंभ्रमता पराविर्त्तनयोग्या
 -न भवतीति । अतएव एतद्वर्माधिकरणपरिदितस्थानाभिषेकद्वयानन्द-

मिश्राख्य परिद्धतलिखितव्यवस्थालिखितेन रामकुमारन्यायवाचस्पतीय-
विवादसम्बन्धव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वादिति । अनेनापि रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्था परावर्त्तनयोग्या भवितुं न
शक्नोति—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटी-
कादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादभङ्गार्थव्यवहारार्थवसेनुदायक-
मसंग्रहादिग्रन्थानुसारेण निवेदनम्—इति

अत्र प्रमाख्यानानि—प्रभुसम्पत्तव्यवस्थात्रयलिखितानि चतुर्विंशति-
संख्याकानि ॥ २४ ॥

• स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमज्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सार्धान् न दानं नच विक्रयः ॥

इत्येवमादिकम् तदप्येवमेव वर्णनीयम् ।

• तथापि कर्त्तव्यपदमवश्यमत्राप्याहार्यम् ॥

• तेन दानविक्रयकर्त्तव्यतानिषेधात् तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति,
न तु दानाद्यनिष्पत्तिः, वचनशतेनापि वस्तुनोऽन्यथाकरणाशक्तेः—
इत्यादि दायभाग (पृ० ३५) ग्रन्थलिखनम् ॥ २५ ॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्रावप्रवर्तिताः ।

• तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रजुभ्यतेऽन्यथा—इति विवादभङ्गार्थ-
ग्रन्थधृतबृहस्पति (पृ० २१) वचनम् ॥ २६ ॥

देशस्य जाते. सङ्घस्य धर्मो ग्रामस्य यो भृगुः ।

उदितः स्यात् स तेनैव दायभाग. प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्वादि-
(दात० पृ० १६५) ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ० १०७) वचनम् ॥ २७ ॥

• (लोक) धर्मशास्त्र(यो) स्तु विरोधे लोकव्यवहार एवादरणीयः—
इत्याह स एव—

• धर्मशास्त्रविरोधे तु युक्तियुक्तौ विधिः स्मृतः ।

• व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।

• हीयते अवगम्यते, हीगतावित्यरमाज्ञातोः । अतएव बृहस्पतिः—

• केवलं शास्त्रमाभित्य-न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।

• युक्तिहीनविचारे, तु धर्महानिः प्रजायते ॥

युक्तिन्यायः, स च लोकाव्यवहारः—इतिव्यवहारमातृका (पृ० २८२)
इति व्यवहारतत्त्वादि (व्यत० पृ० ४) ग्रन्थलिखनम् ॥ २८ ॥

पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाभ्य हि भवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादि-
(दाभा० पृ० १३) ग्रन्थपूतदेवलयचनम् ॥ २९ ॥

यदि च परस्वत्योत्पत्तिफलकत्यागरूपं दानमेव करोति तदा उदा-
सीनवत् सिद्धमत्येन स्वाजिते पैतामहेऽपि स्थावरदादौ धने । परन्तु पुत्रानुमति
विना पैतामहस्थावरं ददतः पितुर्दुरदृष्टमेव भवतीत्येव तत्त्वम्—इति
विवादभङ्गार्णवग्रन्थ (पृ० ४८ क) लिखनम् ॥ ३० ॥

नहि यः पुत्रादिशरीरदाने प्रभुः स स्थावरदाने पुत्राद्यनुमति विना
न प्रभुरिति वक्तुं युज्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ लिखनम् ॥ ३१ ॥

एवञ्च यः कश्चित् पिता शास्त्रमुल्लङ्घ्य कर्मैचित् पुत्राय अन्यस्मै
वा स्वपैतृकं स्वाजित वा समस्तमद् वा स्थावरमन्यस्मै ददाति
तच्च दानं सिद्ध्यत्येव । इदं कामकोषच्छलादिविमक्तत्वे सत्येव । परन्तु
शास्त्रोल्लङ्घनजन्यं दुरदृष्ट भवति । इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ (२ विवा०
पृ० ६४ ए) लिखनम् ॥ ३२ ॥

द्वैषे यद्दूना वचनम्—इत्यादि व्यवहारतत्त्वादि (व्यत० पृ० ३३)
ग्रन्थपूतयाज्ञवल्क्य (२।७८) वचनञ्चेति ॥ ३३ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

सदर नेजामतेर ध्यादालतेर परिहृतेर प्रति प्रश्नः—

(प्रथम) प्रश्नः—

एतद्वद्वीयापरेलमासीयद्वितीयदिनेसम्बन्धिशुक्रवाधरे घटिकाद्वयाधिक-
यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

सञ्चोयाल—

१०३—शूद्रजातिर मध्ये एक व्यक्ति स्वोपाग्निंत स्थावरादि
धने अधिकार थाकिया परलोक हञ्चोयार पर ताहार पुत्र तद्वि-
पये उत्तराधिकारिसत्वे अधिकारि हइया ऐ समस्त वस्तु आपन
विमाताके हेवा करिया मृत्यु हइयाछे । ए स्थले ऐ हेवार वस्तु
सकल विमातार स्त्रीधन हय कि ना । परे ऐ विमाताकेवल
आपना पतिर भागिनेय विद्यमाने हेवार स्थावरादि सम्यदाय वस्तु
स्वजातीय एक जनके हेधा करियाछे । यद्यपि सपत्निर पुत्रे
हेवा अनुमारे ऐ वस्तु विमातार स्त्रीधन हइया थाके, तवे एमत्
वस्तु ऐ विमातार दान करा सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार
उत्तर लिखिवा इति ।

जिलार जञ्चोयाच—

एइ सञ्चोयालेर उत्तर निवेदन करितेछि—यथा ऐ पुरुषे
विमाताके पैतृक आपन धन हेवा अर्थात् दान करियाछे से दान
एवं ऐ स्त्रीलोक ये सपत्निपुत्र हइते लब्ध धन दान करियाछे, से
दान कि प्रकार व्यक्त लिखा नाहि मते ऐ हेवा-द्वयेर किरूप शब्द
प्रयोग आछे, ताहा ना जानाते ऐ दान सिद्धि हयोया नाहञ्चोया
दुइ प्रकार निवेदन करि । यथा दान सिद्धि ना हञ्चोयार ये २
हेतु आछे, ताहा विने ऐ पुरुष आपन सत्वे त्याग करिया विमाताके
ऐ स्थावरादि, सकल धन दिया थाके तवे ऐ सपत्निपुत्र देया
धन भर्तृदत्त स्थावरातिरिक्त स्त्रीधन हय । एमत् सौदायिक स्त्री-
धन दान सिद्धेर ये २ कारण आछे ताहा विने ऐ स्त्रीलोक आपन
सत्य त्याग करिया दिया थाके, तवे से दान अर्थात् हेवा सिद्ध
हय । आर ऐ पुरुष कि स्त्रीलोक दान सिद्धि नाहयोयार ये २
कारण आछे से कारणे दियाथाके, तवे दान सिद्धि हयना । दान-

असिद्धैरु कथक हेतु लिखि । यथा—कामे भये क्रोधे पीडाते भ्रमे शोके रोगे अथवा प्रतिलाभेच्छाते अर्थात् कोण शरते अपात्रके पात्र शङ्काते एवं उन्मादादिते दिया थाके तये से देया सिद्ध ह्यना । तार प्रमाण कथक लिखि । यथा—

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकस्त्वान्वितैः ।

तथोक्तोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः ॥

प्रतिलाभेच्छया दत्तमपात्रे पात्रशङ्कया ॥

इत्यादि नारद-काल्यायन-मुनि प्रभृति लिखित नाना वचनादि । ताहासकल लिखाते अधिक हय । मते किछु लिखिलाम् । ऐसकल हेवाते कि २ शब्द प्रयोग आछे, कि अभिप्राय, ये ह्योया ताहा ना जानाते सिद्ध ह्योया नाह्योया दुइ मतेरि कारण यथाशास्त्र निवेदन करिलाम् । साहेव फर्त्ता येमत् अभिप्राय निवेदनमेत(त्) इति ।

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयञ्च दानपत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीया-परेलमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे षट्कैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशचोद्यो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि शूद्रजात्यन्तःपातो कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितस्थावरादिघने आयत्तत्वं सम्पाद्य मृतस्तदनन्तरं तत्पुत्रोऽपि स्वपितृत्वकवने उत्तराधिकारित्वेनाधिकारी भूत्वा तदेव सर्वं वस्तु स्वविमाने दत्त्वा मृतः, तदा तदेव दत्तं सर्वं वस्तु विमातुः स्वीधनं भवितुं न शक्नोति, देवीप्रसादसंज्ञकसपत्नीपुत्रलिखितचित्वासीसंज्ञकविमातुसम्प्रदासकदानपत्रे तेनैव देवीप्रसादेन लिखितं त्वया यथाशक्ति अस्माकं पुत्र्यालुकमेण प्रमायं चे क्रियाकर्मसंदयः प्रवर्तितस्तान् संरक्ष्य भुज्यताम्—इति । अत्र वैतादृश-लिखनेन चितवास्पास्वदने दानधिकारान्निष्कारः । यस्मिन् घने दानविक्रयानधिकारः लिखास्तदने स्वीधनं भवत्येतद्विधायकशास्त्रामोवात् । एवं

तद्दानात् परं सैव विमाता केवलं स्वपतिभागिनेये विद्यमाने सति दानकृत-
स्थावरादि सर्वं वस्तु स्वजातीयवैकल्प्यै कर्मैचिद्वत्तवती स्यात् तत्रोपरिलिखित-
प्रकारेण तदेव सर्वं वस्तु विमातुः स्त्रीघनं न भवति । अतएव तत्रैव वस्तु-
नस्तया विमात्रा कृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति अस्वामिकृतत्वात्,
अस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य च आधेय परावर्त्तनीयत्वात्—इति बह-
देशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कलङ्कारकृतदायभागटीकादायकमसंग्रहवि-
वादभङ्गाणांवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यया स्थितिः ॥—इति मनु-
(पृ० ८११६६) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिष्य विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गाणांवादि-
(१ निवा ३१७ ख)ग्रन्थकृतकाल्यायन(पृ० ७६)वचनञ्चेति ॥२॥

एतदन्दीयमैमासीयअष्टविंशतिदिनसम्बन्धिंशुक्रवृत्तरे घटिकैकाधिकं-
यामद्दयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०४—रोषकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर सन
१८३१ इङ्गरेजि तारिख १५ जानेओरि मतावक सन १२३७
याङ्गला तारिख ३माघ रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम
झीयुंत मान्तंकीयू हेनरि टरन्बल साहेबेर बैठके ।

कारोनायदत्त मतफार श्रीकरुणा(मयी) ओ गंयरह—
आपिलाएटांम्

चन्द्रमाला मतफार स्वामी जयचन्द्रघोष—रसाडएट

आपिलाएटदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्तेर वकिल
मुंनशी दादारफस ओ बह्मचन्द्रदत्त, नवालगेर भावा कालाचाँद-

दत्त मतफार स्त्री मसम्मात कृष्णप्रिया श्री कारीनाथदत्त श्री मसम्मात करुणामयी मतफारदिगेर नावालग पुत्र भैरवचन्द्र-
 दत्तेर अद्धिमदान नारायणघोष उकिल मुनशी गोताम वतुल
 हाजिर हइल । आपिलाष्टदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्त
 श्री मसम्मात कृष्णप्रिया श्री गयरहू सश्रोयाल ए मकईमार
 तजविज सानि प्रार्थनाय, ताहार सम्पर्क कागजात सहित, आर
 सन १८३० इङ्गरेजी नवम्बर मासेर २४ तारिखेर हश्रोया ए
 आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नशाष्टर साहेबेर हुकुम माफिक
 मकईमार कागज अथ आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसि,
 आरजि, श्री सन १८२७ इङ्गरेजि जुलाइ मासेर ३ तारिखेर
 श्री सन १८२८ इङ्गरेजि जानेओरि मासेर १७ तारिखेर
 लिखित ए मकईमार राम आपिल मञ्जुरि रोयकारिमकल श्री
 सन १८३० इ० जुलाइ मासेर १५ तारिखेर हश्रोया ए
 मकईमा आखेरि रोयकारि श्री अथ जरुरि कागजसकल
 रस्पाडष्टेर उकिल सदासुरूपण्डितेर समक्षे दष्टे आशील । ए
 आदालतेर काएम-मकाम पण्डित हीरानन्दमिशेर एजाहार
 असिद्ध सम्य लित आपिलाष्ट ओजरतेर दष्टे जे सेइ पुनियाहे
 मकईमार तजविज हइयाछे, ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने
 लिखित व्यवस्था लशोन उचित घोव हइया हुकुम हइल-ये एइ
 रोयकारिर नकल आर जाहान्निरनगरेर फोर्टे आपीलेर पण्डितेर
 आसल व्यवस्था ४४ लम्बर तथाकार नथोर सामिल, श्री ए
 आदालतेर नधिर सामिल रस्पाडष्टेर दाखिल करा व्यवस्था
 सहित ए आदालतेर पण्डित वंशनाथमिशेर हाश्रोयाले करा-
 जाय, एइ हुकुमे जे उपरेर व्यवस्थासकल वेत्ता हइया सप्ताह
 मध्ये जवाब लिखेन-ये ऐ व्यवस्था बह्मदेश चलित शास्त्रानुमारे
 सिद्धि कि असिद्धि मात्र । पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हश्रोया
 पर आपिलाष्टेर तजविज सानिर सश्रोयालेर सम्पर्क मनाशीव
 हुकुम प्रकाश पाइवेक इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिधीयुतमान्तरीयूहेनरीटरम्वलसाहेवधर्माधिक-
रणलिखितैतद्वदीयजानवरीमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रथमप्रति-
रूपपत्रमेवं सत्समर्पितजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापोलाख्यधर्माधिकरणनि-
युक्तपरिदृष्टलिखितव्यवस्थापत्रमेवमेतद्धर्माधिकरणप्रत्योपसमुपस्थापितमेत-
द्धर्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रञ्च यत्केचनवरीमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिसोमवा-
सरे घटिकैनाधिकयामद्वये मथा प्रातन्तद्वलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापोलाख्य-
धर्माधिकरणनियुक्तपरिदृष्टलिखितव्यवस्थापत्रोपरिलिखितात् प्रभात् कीर्त्ति-
नारायणदत्तस्य मरणोत्तरं तद्योग्यारे शास्त्रानुसारेण तत्पुत्रस्याधिकारे जाते
सति तन्मरणोत्तरमनुमानादूनविंशतिपत्रोत्तरं विंशतिपत्रोत्तरं वा कीर्त्तिनारा-
यणदत्तस्यैकोदोदिव उत्पन्न इति ज्ञातम् । तथा सति कीर्त्तिनारायणदत्तस्याप्रात-
व्यवहारस्य पुत्रस्य मरणोत्तरं तस्यैमाप्रातन्वहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्त-
एव तद्वनाधिकारिणो भवन्ति । एतच्च सति वद्वदेशचलितशास्त्रे एतादृशं
किमपि प्रमाणं लिखितं नास्ति यदनुसारेणोपरिलिखितप्रकारेण विवादात्स-
दीभूतधनस्वामिनः कीर्त्तिनारायणदत्तपुत्रस्याप्रातव्यवहारस्य मरणसमये तत्पु-
त्रमारभ्य पितृदोहिवर्षान्ताभावे तदानीं विद्यमानस्य तदेतामहस्य तद-
भावे तदानीं विद्यमानायस्तदेतामह्यास्तदभावे तदानीं विद्यमानानां उत्-
पि(तृ)व्याना तदभावे पितृव्यपुत्राणां तदभावे पितृव्यपौत्राणां वा अथो-
लिखितप्रमाणैस्तरुणादेवोत्तरन्न स्वत्वं नश्येत् । अथवा तन्मरणोत्तरमनुमाना-
दूनविंशतिपत्रोत्तरं विंशतिपत्रोत्तरं चोत्तरस्यमानपितृदोहिवर्षान्तेः प्राक् तद्वनं
तावत्कालमव्यन्तं तिष्ठेत् । अथवा तत्पितृदोहिवर्षान्तेः प्राक् तद्वनं
कोऽपि रचेत् । एवं प्रभुमर्पितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतैतद्धर्माधिकरण-
प्रत्योपसमुपस्थापितैतद्धर्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रे दायभागलिखितं प्रमा-
णद्वयं लिखितमस्ति । तद्योग्ये प्रथमप्रमाणेन मातुलस्य मरणोत्तरं
तदीयधने ऊनविंशतिपत्रोत्तरं विंशतिपत्रोत्तरं चात्यन्तस्य भागिनेयस्य स्वत्व-

मुत्पद्यते इत्यर्थो न प्रतीयते । वरं मातुलस्य मरणानन्तरं तत्त्वक्तधने यदि
 वस्य पुत्रमारभ्य पितुःप्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रस्तु विद्यते, तदा
 स एवाधिकारी भवतीत्यर्थः प्रतीयते, प्रकृते तु पितृदौहित्रस्य तदानीं विद्य-
 मानत्वाभावात् । यच्च तद्व्यवस्थायां द्वितीयं प्रमाणं लिखितं, तस्य चायम-
 र्थः—ये जाता उत्पन्नाः । येभ्यजाताः भविष्यद्गर्भसम्बन्धाः । ये च गर्भे
 व्यवस्थितास्तेऽपि वृत्तिमाकाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपस्तेषां विगर्हितो भवति—इत्य-
 भेनापि तादृशभागिनेयस्य मातुलधने स्वत्वमुत्पद्यत इत्यर्थो न प्रतीयते,
 तद्वचनस्य स्वत्वोत्पत्तिकारणत्वाभावात् । अथच दायभागग्रन्थे (पृ० २५)
 तद्वचनं विभागप्रकरणे लिखितम् । यदि पित्रा स्वच्छ्रया क्रमागतधनस्य
 विभागो विभागप्रतियोगिनीं मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रियते तदा विभागोत्तर-
 जातानां वृत्तिलोपापत्तिः, अतएवासौ विभागो न युक्त इति विभागप्रतियोगिनी
 मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रमागतधनस्य विभागनिषेधार्थं तद्वचनं पञ्चमप्रमाणे
 स्पष्टीकृतं च । तत्रापि वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यत्र वृत्तिशब्दस्यार्थो दायभा-
 गटीकाकृतधीकृतकालिकारैर्दायभागटीकाशा (पृ० २५) मेव व्याख्यातः—
 वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशऋत्वमिति (दा०भा०टी०पृ० २५) । विवा-
 दभद्धार्षवग्रन्थेऽपि तस्यैव वृत्तिशब्दस्य क्रमागतधनमित्यर्थो व्याख्यातः ।
 अतएव मातुलधनं भागिनेयस्य वृत्तिर्न भवति, तस्य क्रमागतत्वाभावात् ।
 किन्तु आकस्मिकमेव तात्प्राप्तिर्भागिनेयस्य । अथ च वृत्तिलोपो विगर्हित
 इत्यनेन यदि केनचिद् विभागकरणेन दानविकल्पकरणेन वा कल्पचिद्
 वृत्तिलोपः क्रियते तदात्वसौ अपराधो भवति । प्रकृते तु विभागादिकरणेन
 वृत्तिलोपः येनापि न कृतः । अथ च बह्वदेशचलितदायभागादिग्रन्थमते
 दायस्थिते विशेषतः स्वस्वकारणं धनस्थानिसम्बन्धो धनस्वाम्योपरमश्च पूर्वं
 पूर्वसम्बन्धिनामभावश्चेति त्रितयं भवति । अथ च केपाखिले ग्रन्थानां मते
 जन्मैव पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां स्वत्वकारणं भवति । तत्र जन्म द्विविधम्—यस्मिन्
 काले यस्य गर्भाधानं तदेकविधं यस्मिन् काले गर्भतो निर्गतस्तद्द्वितीयम् ।
 प्रकृते तु कीर्त्तिनारायणपुत्रस्य कीर्त्तिनारायणमरणोत्तरं तद्योग्यांशस्था-
 मिनोऽप्रातव्यवहारस्य मरणसमये तद्भागिनेयस्य गर्भसम्बन्धस्याप्यभावेन
 तत्सम्बन्धस्य दूरापास्तत्वात् तत्त्वक्त(ध)ने तात्त्विकोत्पत्तिर्भावेतुमरा-

क्यैव ! अथ चोपदेशवर्षवयस्कानां बालकानामर्थादप्राप्तव्यवहाराणां धनरक्षणे मुनिभिरुपायः कृतः । तस्मादपि क्लृप्तमे प्रकृतस्थाने अनियमित-कालेनोत्पत्तमानानां धनरक्षणे कोप्युपायो मुनिभिर्गन्धकारैर्वा न कृतः । तस्मादपि अनुत्पन्नानां स्वत्व भवितुं न शक्नोति । तस्मात्प्रमुसमर्षितव्य-वस्थाद्वयं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हतीति न प्रतिभाति— इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादाय-त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्थादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तन्मुत्तं गोत्रजो बन्धुःशिष्यः सत्रह्यचारिणः ॥

एषामभावेपूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्थातरस्य ह्यपुत्रस्य सर्ववर्णेष्वयं विधिः— इति दायभागादि(शात० पृ० १५१) ग्रन्थश्रुतशाश्वत्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ १ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहरतदभावे पिता-मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रापितृसोदरपीत्रापितृवैमात्रेयपीत्राणां क्रमेषाधिकारः— इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ २ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावं पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात्, तदभावे पितामही—इत्यादि विवादभङ्गार्थव(२ विधा० पृ० ३६४ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तदभावे पितामहाधिकारः दौहित्रान्तरवसन्तानाभावे पितुरधिकार-वत्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० ७) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तस्मात् पतितत्वनिरग्रहत्वात्परमैः स्वत्वापगम इत्येकः कालोऽपरश्च सति स्वत्वे तादृच्छातशक्तिवाक्यद्वयमेव युक्तम् । भानुर्निवृत्तेरजसीतितत् पितामहधनाभिधायम् । निवृत्तेरजसि पुत्रान्तरसम्भावनाभावात् तदा-नीमाप पितुरीच्छयैव पुत्राणां विभागः । अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधन-विभागे पश्चाज्जातानां वृत्तलोपापत्तेः । न चासौ युक्तः ।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—

इति मनुवचनात्, इति दायभागग्रन्थ (पृ० २४) लिखनम् ॥ ५ ॥

वृत्तिलोपः पितामहघने निरंशकत्वम्— इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-

दायभागटीका (पृ० २५) लिखनम् ॥ ६ ॥

जीमूतवाहनास्तु अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधनविभागे पश्चाज्जातानां
वृत्तिलोपापत्तेन चासौ युक्तः ।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ।

इति मनुवचनादित्याहुः ।

क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते— इति १ तेषामभिप्रायः

इति विवादभङ्गार्थवत् (२ विवा० पृ० ७२ क) ग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः— इत्यादि वचनम्

(मनु० पृ० ४२२) ॥ ८ ॥

ततश्च पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्त्वाम्नोपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र-
निरूढो दायशब्दः— इति दायभाग (पृ० ५) ग्रन्थलिखनम् ॥ ९ ॥

तथा च तावदन्यतमसम्बन्धाधीनं सद् यत् पूर्वस्वामिस्वत्वनाश-
जन्यं स्वत्वं तद्वृत्ति घने निरूढो दायशब्द इत्यर्थः । न तु स्वत्वनाशानन्तरं
चेत्स्वत्वोत्पत्तिरिति, तदा तत्क्षणेऽस्वामिकतया निष्पादिवदुदासीनस्या-
प्युपादानात् स्वत्वापत्तिरिति चेत्, तत्र पुत्रादिसत्ताया एव विरोधित्वस्य
पुत्राद्यधिकारयोपकशास्रसिद्धत्वात्— इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-
टीका (पृ० ५) लिखनम् ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु पितृस्वत्वमेव पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुः । न चैवं पितृस्वत्वे
विद्यमानेऽपि तद्धने पुत्रस्वत्वापत्तिः । तत्र पितृस्वत्वनाशकस्यापि सहस्रा-
रित्वात् । स्वत्वनाश कश्च मरणपातित्यादि । तेषां स्वत्वनाशकत्वेन स्मृति-
प्रतिपादितानां मरणत्वपातित्यत्वादिविशेषरूपेणैवाध्यवहितोत्तराद्यन्त-

भविष्य पुत्रस्मृतोत्पत्तौ हेतुत्वम्—इत्यादि श्लोकान्तर्गतकालद्वारकृतदायभा-
गटीका (पृ० ५६) लिखनम् ॥ ११ ॥

ततश्च उत्पद्येयार्थं स्वामित्वाल्लभेत इत्याचार्या मन्यन्ते—इति मिता-
हारा (पृ० १६६) धृतगीतमवचनम् ॥ १२ ॥

अमूलं समूलत्वे वा यस्मिन् गर्भस्थे पित्रादिर्मृतः तत्परम्—इत्यादि-
श्लोकान्तर्गतकालद्वारकृतदायभागटीका (पृ० १४) लिखनम् ॥ १३ ॥

पितृनिधनकालीनं वा जीवनमेव पुत्रस्याज्जनं भविष्यति—इति दाय-
भाग (पृ० १६) ग्रन्थलिखनम् ॥ १४ ॥

पुत्रजीवनमेव स्वत्वहेतुः । तत्र पितृनिधनकालः सहकारीत्यर्थः ।
इति श्लोकान्तर्गतकालद्वारकृतदायभागटीका (पृ० १६) लिखनम् ॥ १५ ॥

बालदायादिकं रिक्तं तावद्राजानुपालयेत् ।

यावन् स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतरौशवः ॥—इति मनुवचन-
द्वयं (पृ० ८, २७) ॥ १५ ॥

अथचैतद्धर्माधिकरणप्रत्यायिसमुत्स्थापितैतद्धर्माधिकरणोपव्यवस्था-
लिखितद्वितीयप्रमाणस्य तद्व्यवस्थालिखितपारसिकप्रतिरूपेण यादृशार्थो-
ऽवगम्यते तादृशार्थस्तु कस्मिन्नपि ग्रन्थे न लिखितः । दायभागग्रन्थे तत्-
प्रमाणस्य यादृशार्थो व्याख्यातः स तु श्रीयुतहेनरीकुलबोडकसाहेवाभिधानैत-
द्धर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतधर्मशास्त्रान्तर्गतवज्रदेशचलितदायभागप्र-
तिरूपे इङ्गरेजोलिपिनिर्मिते विभागकालद्वयनिरूपणप्रकरणे विंशतिपत्रे
एकविंशतिपत्रे च एतद्व्यवस्थायाः पञ्चमप्रमाणेऽपि च स्पष्टीकृतः इति
निवेदनमिति ।

एतदन्दीयमान्चर्मासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयाम-
हये दक्षेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १० माहे माइ सन १८३१ इङ्गरेजि मतावक तारिख २६ माहे वैशाख सन १२३८ साल वाङ्गला बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम ओयुत मान्तगीओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

शीउमलुकसिंह—

आपिलाएट

रामप्रकाशसिंह—

रेष्पाडएट

आपिलाएटेर उकिलगण मौलवि नियामत आलि ओ सदा-सुख पण्डित रष्पाडएटेर उकिल मुनसि होसन आलि हाजिर हइल । आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ हाल मासेर ६ तारिखे ए मकदमा आमार बैठके उपस्थित हइया ऐ रोवकारिसकलेर विस्तुणो कागजसकल पडागिया स्थकिद स्थिल । अद्य पुनराय उपस्थित हइया एइ मासेर ६ तारिखे आपिलाएटेर उकिलगण साहिदिगेर एजहारेर तकल समस्त जे दाखिल हइयाछिल ओ आवश्यकीय अनेक कागजात पुनराय पडागेल । बोध हइल जे तालुकजखनिर कर्त्ता उभयेर पूर्वपुरुष रामरुचसिंह तिन पुत्र राखिन । एक जन आपिलाएट सिउमलुकसिंहेर पिता भुवनारायण सिंह, ओ द्वितीय प्रेमनारायणसिंह जे मुकुन्द नामे एक पुत्र ओ दुइ २ । एक जन बक्तकोडर, द्वितीय मुकुन्दसिंह मजकुरेर भाता नियत कोडरके राखिया मरियाछे । आर ऐ रामरुचसिंहेर तृतीय पुत्र हिङ्गलसिंहेर पिता ओ ए मकदमा मुहानेहे रामप्रकाशसिंहेर पितामह देनजितसिंह, आर इहाओ प्रकाशजे ऐ प्रेमनारायण आपन जीवदसाते जखनि तालुक हइते आपन तृतीय हिस्या वावत मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात बखतकोडर ओ नियत कोडर आपन छोणगेर नामे प्रत्येकेर अंशेर विना शक्याय एक केता हेवानामा लिखियादेथ, ओ प्रेमनारायणसिंहेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दसिंह अप्राप्तव्यवहार कालिन ओ ताहार पर चहार ओ मसम्मात बखतकोडर ओ मसम्मात नियतकोडरेर मृत्यु पर मृत भुवनारायणसिंहेर पुत्र शीउमलुकसिंह ओ मृत-

देनजीतसिंहेर पुत्र हिङ्गलसिंह वर्त्तमाने आछे । चुडन्त हुकुम हञ्जोनेर पूर्व एइ मकहमाते ए आदालतेर पण्डित हइते निचेर सञ्जोयालसकलेर जबाब व्यवस्था लञ्जोन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे मसम्मात वखतकोडर ओ नियतकोडर मुइइया बाबु सीउमलुकसिंह ओ देनजितसिंह मुद्दालेहेदिगेर नालिसी मकहमाय हिजरि स(न) १२६१ सालेर सहर जमादिआओनेर २५ तारिखेर लेखा, मृत प्रेमनारायणसिंहेर लिखित एक केता हेवानामा ओ १८५४ सम्मत मिति कोओदारा वदि सप्तमी तारिखेर लेखा, सीउमलुकसिंहेर लेखा, एक केता एकरारनामा लम्बर १३ ओ १५ सम्बलित एइ रोवकारि नकल ए आदालतेर पण्डितेरे स्थाने समार्पन कराजाय जे सप्ताह मध्ये ऐ सञ्जोयालेर जबाबे व्यवस्था लिसेन ।

प्रथम—एइ जे मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात वखतकोडर ओ नियतकोडर आपन श्रीगणके ताहारदिगेर भत्येकेर अंशेर विना शङ्काय ऐ प्रेमनारायण आपन पैतृक अंश हेवा करण शास्त्रानुसारे सिस्ति' वटि कि ना । ओ मसम्मात मजकुरा ऐ हेवा मते मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर हेवा करा तृतीय हिस्सा हइते कि परिमाण्य अंशेर स्वत्वाधिकारि हइवेक ।

द्वितीय—एइ जे मसम्मात मजकुरारा मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर स्यावर वस्तु हइते आपन स्वत्वेर समर्पके' ऐ हेवा अनुसारे दान ओ विक्रय ओ अन्य प्रकार हस्तान्तर करणेर चेमता थाकिवेक कि ना ।

तृतीय—एइ जे ऐ मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर ताहार माता नियतकोडर ओ विमाता वखतकोडर ओ ताहार खुडा देन' जीतसिंह से कालिन वर्त्तमान द्विल, ओ उहार खुडतात भ्राता शीउमलुकसिंह जियहसाय थाकने प्रेमनारायणेर अंशेर स्वत्वाधिकारि के हइवेक ।

चतुर्थ—एइ जे यद्यपि मृत मुकुन्दसिंहेर त्यक्त अंशेर दखल ओ कायेजेर सत्वाधिकारि ताहार माता मसर्माता वखतकोडर ओ नियतकोडर हवेक, तवे उहादिगेर मृत्युर पर ऐ प्रेमनारायण सिंहेर दान करा अंशेर सत्वाधिकारि फोण व्यक्ति, भुपनारायण सिंहेर पुत्र शीठमलुकसिंह किम्वा देनजितसिंहेर पुत्र हिङ्गल सिंह अथवा दुइ जनाइ तुल्यांश हइवेक इति ।

श्रीज्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीभुव-भान्तकीयूहेनरीटरम्बलवाहेवधर्माधि-
करणलिखितैतदद्वीपमेमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप -
पत्रमेवं तत्समर्पितत्रयोदशाह्लाङ्कितमृतप्रेमनारायणसिंहलिखितदानपत्रं
पञ्चदशाह्लाङ्कितश्रीमनोगसिंहलिखितसंवित्(?) पत्रञ्च यत्तन्मासीयैकविंशति-
दिनसंवन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोषो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते ॥

प्रथमप्रश्नरथोत्तरम्—

यदि तेनैव प्रेमनारायणसिंहेन स्वपैतृकधनस्य स्वांशो मुकुन्दसिंहनाम्ने
स्वपुत्राय वखतकुमरिनाम्नै नियतिकुमरिनाम्नै च स्वपत्न्यै तेषां ध्यायाणां
दानप्राहिणां मध्ये प्रत्येकमंशसंख्यामसृत्वैव दत्तः स्यात्तदा तदानं शास्त्रानु-
सारेण सिद्ध्यति, शास्त्रीवाचश्यकदानादौ सामान्यतः पुत्राणामनुमतेरनाव-
श्यकत्वेनाप्राष्टरूपाया अप्राप्तव्यवहारपुत्रानुमतेरनावश्यकत्वस्यार्थसिद्धत्वात्,
एत्या पत्नीभ्यः स्त्रीधनदानस्यादत्तस्त्रीवनाभ्यस्ताम्नो वा पुत्रसमानांशदानस्य
च शास्त्रीयत्वात्, प्रभुसमर्पितत्रयोदशाह्लाङ्कितदानपत्रेण प्रेमनारायणसिं-
हस्य पैतृकस्वांशस्य भ्रात्रादिभिः साधारण्यमावावगमेनाभ्रात्रादीनां तत्रानु-
मतेरप्यनपेक्षितत्वात्, भ्रात्रादीनां साधारण्येऽप्यप्रतिषेधरूपायास्तेषामनुमते-
रक्षतत्वाच्च, पञ्चदशाह्लाङ्कितश्रीमनोगसिंह लिखितसंवित्(?)पत्रेण तथा
पर्यवसानाच्च । एवं तदानानुसारेण पूर्वं प्रेमनारायणसिंहस्वलास्यदीभूत-
स्यांशस्य तृतीयांशाधिकारिणस्वस्तुत्रस्य मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्माता
नियतिकुमरख्या अंशद्वयाधिकारिणी, तद्विमाता वखतकुमरख्या च

तत्तृतीयांशरूपैकांशाधिकारिणी भवति । यतो यत्र दानादौ दानप्राहिण्यं
मंशानियमो न कृतस्तत्र शास्त्रानुसारेण ते दानादिप्राहिण्यः समानांशिनो
भवन्ति । तत्र मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य दौहित्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य
तदानानुसारेण साधारणधनांशे तन्मानुज्ञियतकुमराख्याया अधिकारस्य
शास्त्रसिद्धत्वाद् इति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥ १ ॥

अवश्यकर्त्तव्येषु^१ पित्रादिश्राद्धादिषु^२ स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमे-
कोऽपि समर्थः कुर्याद्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ० २००) ॥ २ ॥

तत्र तद्विधानबलादेवाधिकारो गम्यते—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
लिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥ ३ ॥

पितृमातृपतिप्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।

आधिवेदनिकाद्यञ्च स्त्रीधनं परिकीर्त्तितम् ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
घृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।१४३) वचनम् ॥ ४ ॥

यदि कुर्यात् समानांशान् पत्न्यः कार्याः समांशिकाः ।

न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा स्वशुरेण वा ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
घृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।११५) ॥ ५ ॥

अप्रतिपिद्धं परममतमप्यनुमतं^३ भवति—इति दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थ-
लिखनम् (दत्तच० पृ० १२) ॥ ६ ॥

समं स्यादश्रुतत्वादशपस्यं^४—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम्
(वी० मि० पृ० ५६५) ॥ ७ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ प्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थघृतयाज्ञवल्क्य-
(२।१३५)वचनम् ॥ ८ ॥

१. ०पुत्र २. पित्रादिश्राद्धि इति मिता०

३. परमनुमतम्—दत्तच० ।

४. अविशेषप्रकरणे सति समं स्यादश्रुतत्वाद्—इति वीमि० पाठ०

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातुर्विमातुर्वा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतान्तर्गतस्यावरधने अदृष्टार्थं दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थं स्वस्वभरणपोषणार्थं वा दानप्रकारेण विक्रयप्रकारेण वा अन्यप्रकारेण वा हस्तान्तरकरणे क्षमता स्थास्यत्येव, अन्यथा न स्थास्यत्येव । यत्रशास्त्रानुसारेण भर्तृदत्तस्थावरे पत्न्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः, पुत्रादिदोहित्रान्तरहितस्य मृतस्य पुत्रस्य धने उत्तराधिकारित्वेन मातुरधिकारे जातेऽपि तस्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण तद्धनेऽपि यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारश्चेति ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

गर्भा प्रीतेन यदत्तं स्त्रिये तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।

सा यथाकाममश्नीयाद् दद्याद्वा स्थावरादृते ॥

इति मिताक्षरा(पृ० १६६)वीरमित्रोदयादि(पृ० ६६१)ग्रन्थधृतनारद-
(नामसं० २।२४)वचनम् ॥ १ ॥

अदृष्टार्थे दाने दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थमाधौ विक्रये चास्त्येव पत्न्याः सकलभर्तृधनविययोऽधिकारः—इति वीरमित्रोदय(पृ० ६३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थो बाधकं विनाऽन्यत्रापि प्रवर्तते—इति उपरिलिखितग्रन्थलिखितम् ॥ ३ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्यैव मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातानियतकोमराख्या तद्विमाता वसतकोमराख्या च तदानीं जीवन्त्यासीत्, तत्पितृव्ये दलजीतसिंहे पितृव्यपुत्रे श्रीमनोगसिंहे च जीवति सत्यपि प्रेमनारायणसिंहस्य पूर्वस्वत्व-
स्पदीभूतांशस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेणाधिकारिण्यौ नियतिकुमरि-
वसतकुमर्यात्रैव भवतः, तयोर्जीवन्त्योः मुकुन्दसिंहपितृव्यस्य पितृव्यपुत्रस्य वा तत्र नाधिकार इति ॥

अत्र प्रमाणानि—प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि सर्वानुयेवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतस्य मुकुन्दसिंहस्य त्यक्तधनांशस्य स्वत्वाधिकारिणी तन्माता नियतकुमराख्या प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण जाता, तदा तन्मरणानन्तरं तत्र मनारायणसिंहकृतदानकृतस्यांशस्यान्तर्गतस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण मुकुन्दसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्य तत्तृतीयांशस्याधिकारी मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य पितामहपर्यन्तो नास्ति, तत्पितृव्यो भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चिद् विद्यमानश्चेत्तदा स एव भवति । तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः । पितृव्याणां मध्ये कस्यचिदपि एकस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावे तत्पितृव्यपुत्रो श्रीमनोगसिंहद्विजलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः । नियतकुमराख्याया बखतकुमराख्यायाश्च प्रत्येकं (१) मरणोत्तरं तयोः स्वस्वत्वास्पदीभूतवृत्तयोः शस्याधिकारी । यदि तयोः प्रत्येकं दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रप्रपौत्रमत्सृं सपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रदुहितृदौहित्रश्वश्रुश्वशुरपर्यन्तानां स्वीधनाधिकारिणा मध्ये कश्चिन्नास्ति तयोः पतिभ्राता भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चित् तदानीं विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवति, तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्याधिकारिणी भवतः । तयोर्मध्ये एकस्याप्यभावे तयोः पुत्रौ श्रीमनोगसिंहद्विजलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवपत्रहारकौस्तुभदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृताश्रवल्क्य-
(२।११५) वचनम् ॥ १ ॥

तत्र च पितृसन्तानाभावे पितामही पितामहः पितृव्यास्तत्पुत्राश्च क्रमेण धनभाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (५० २२३) ॥ २ ॥

पूर्वोक्तं स्वीधनमप्रजस्यनपत्यायां दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहितायां स्त्रियामतीतायां बान्धवा भर्त्रादयो वक्ष्यमाणा गृह्णन्ति—
इति मिताक्षराग्रन्यलिखनम् (पृ० २२६) ॥ ३ ॥

अप्रजसः स्त्रियाः पूर्वोक्तरूपाया मास्रदैवार्पणप्राजापत्येषु चतुर्षु
विवाहेषु भार्यात्वं प्राप्ताया अतीतायाः पूर्वोक्तं धनं प्रथमं भर्तुर्भवति,
रादमाये उत्पत्त्यासन्नानां सपिण्डानां भवति—इति मिताक्षराग्रन्य-
लिखनञ्चेति (पृ० २२६) ।

जूनमासीपद्धितीपदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे दत्तं मया व्यवस्था इति ।

श्रीजर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोयकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत तारिख
१८ माइ सन १८३१ साल इङ्गरेजि मोतायक दज्येष्टी शन १२३८
साल बाङ्गला रोज बुधवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट
थरलेन शिलि साहेवेर बैठके—

राजा गोविन्दनाथराय

आपिलाइट

गोलालचन्द्र ओरफे लालकावाबुगं

रेण्पाडइट

आपिलाइटेर डकिल मुनशि होसेन आलि ओ रेण्पाडइट-
गणेर डकिल सक मुनशी गोलाम बतुल ओ सदाशुक पण्डित
हाजिर आइलेन । एइ मकदमा एइ माहार १०।१।१२।१६।१७।
तारिखसकले आमार बैठके रुवकार हइया नालिसि आरजि
प्रभृति प्रेदिनरोल फोटेर कागजसकल फयशला पर्यन्त ओ एइ
आदालते दाखिलि हओया सओयाल जवाब ओ गयरह काय-
जात^१ पढागिया स्थकित छिल, अथ पुनराय रुवकार हइया गत
दिवसेर दाखिल हओया कागजात दृष्टे आसिल । यथा.चूडन्त-
हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ

विशय ज्ञात ह्येन उचित हइलये अछियतनामा अनुसारे ये तद्वाराय मुतिचन्द्रके पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षेमता राखे किना । अतएव हुकुम हइल ये एइ रुयकारिर नइल अछियतनामा सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ हुकुमे समर्पण कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नशकलेर उत्तर जेइन शाखानुसारे यद्यपि थाके नतुवा एतदेशीय चलित शाखानुसारे दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन ।

प्रथम प्रश्न—एइ ये विरोधिय लाटसकलेर कर्त्ता उत्तमचन्द्र लाहार पुष्य पुत्र विवेचना करण जैन्ये ओ उहार सत्य रक्षणार्थे मुतिचन्द्रके ओछि मकरर करिया अछियतनामा लिखियादिया मृत्यु हइल । ऐ मुतिचन्द्र मजकुरके आपन जीवत दशाय पुष्य पुत्रेर विवेचना करणेर सावकाश ना हइया प्राप्ति ह्य । अतएव मुतिचन्द्रेर मृत्युर पर उत्तमचन्द्रेर स्त्री मुसम्मात मायाकोडर पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षेमता राखे किना ।

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि जेइन शाखे थाके तवे ऐ शाखानुसारे ज्येष्ठ पुष्य पुत्र हइते पारे किना ।

तृतीय प्रश्न—एइ ये जेइन शाख मते कत बतसरेर पुत्र दत्तक हइते पारे, एवं ताहार संख्या कि ।

चतुर्थ प्रश्न—एइ ये पुष्य पुत्र राखनेर एवं ताहार सिद्धि ह्योनेर जैन्ये कि कि नियम बटे इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटपरलेनसिलीसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयमेमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र-
मेवं तत्त्वमर्पितमसीयतनामाख्यं पत्रं च यदेतदन्दीयज्ञानमासीयप्रथमदिन-
सम्बन्धिबुधवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदक-
सोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजक(र)स्थावरसमुदायस्य स्वामी उत्तमचन्द्रनाहारः स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणार्थं मतिचन्द्रनामोऽसीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगं कृत्वा तस्मै चासीयनामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः स्यात्तस्यैव मतिचन्द्रस्य स्वजीवनदशायामुत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रविवेचनाकरणस्था-वकारोऽजाते सत्येव मरणेनोत्तमचन्द्रस्य पत्नी मायाकोमराख्या पोष्यपुत्र-विवेचनाकरणक्षमतां रक्षत्येव^१ जैनशास्त्रानुसारेण^२ पतिमरणानन्तरं पुत्र-वत्याः पत्न्याः पतिवत् कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येन^३ पुत्रशुन्यायाः^४ पत्यनु-मतौ सत्यामसत्यां वा शतीनाम्^५ आशयां सत्यामसत्यां वा उर्ध्वथैव पोष्य-पुत्रकरणक्षमताया अर्थसिद्धत्वात् । तत्र चोत्तमचन्द्रनाहारेण स्वपितुः पाल-कपुत्राय मतिचन्द्राय स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणाक्षयां दत्तायामपि देवात् तदकृत्यैव मतिचन्द्रस्य मरणे^६ सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण पत्यनु-मतिमन्तरेणापि पोष्यपुत्रग्रहणाधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिवत् स्वा-च्छन्द्येन, कार्य्यमात्राधिकारिणश्चोत्तमचन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोम-राख्या(या)स्तद्विवेचनाकरणक्षमतायामपि बाधकाभावाच्चेति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्

यस्या स्त्रिया मत्ती^१ नास्ति सा यद् भव्यं तद्भाषयतु इति गौतमप्रश्नी-यग्रन्थभृतवर्धमानस्वामिवचनम् ॥ १ ॥

अस्मिञ् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे कुरुजङ्गलदेशः स्थितः । तस्मिन् हस्तिनापुरे वज्रजङ्घारथ्यो राजाऽभूत् । तस्य मह यवतीयतिदेवता वज्रमतीपट्टराज्ञी^२ आसीत् । तस्मिन्नेव नगरे कमलकान्ताख्यः कश्चि-देको धनी स्थितस्तस्य कमलाश्रीनाम्नी पत्नी बभूव । तस्य श्रेष्ठिनो

- | | | |
|-----------------------|---------------------------|---------------------------|
| १. पोष्यपुत्र—व्यप० । | २. पुत्रपुत्र—व्यप० । | ३. रक्षत्येव—व्यन । |
| ४. जैन—व्यप० । | ५. स्वाच्छन्द्येन—व्यप० । | ६. पुत्रशुन्यायाः—व्यप० । |
| ७. शतीनाम्—व्यप० । | ८. पोष्य—व्यप० । | ९. मायो—व्यप० । |
| १०. मत्ता—व्यप० | ११. दद०—व्यप० । | |

द्वात्रिंशत्कोटिपरिमिता मुद्राः स्थिताः । तासु मध्येऽष्टकोटयो मुद्रा-
 मृन्मध्ये निस्वाताः पुनरष्टौ कोटयो मुद्रास्तरणीषु, व्यवहारार्थं स्थापिताः,
 पुनरष्टौ कोटयो मुद्राः देशान्तरे व्यवहाराय प्रेषिताः, तदनन्तरमष्टौ
 कोटयो मुद्राः गृहेषु स्थापिताः । एवं त्रिंशत्सहस्रोत्तरद्विलक्षपरिमिता
 धेनवः स्थिताः । एवं तस्य पञ्चशतपरिमिता अधिकारिणः स्थिताः ।
 तेषु मध्ये एको गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिनामधेयो महा-
 मतिरासीत् । स तु धनिना कमलाकान्तेन पुत्रवन्मन्यते । स तु कमला-
 कान्तः किञ्चित्कालानन्तरं ज्वरातुरः सन् परलोकं गतवान् । ततः
 सप्तवर्षानन्तरं स गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिर्विद्युत्पातेन प्रणष्टः ।
 तदनन्तरं कमलाख्याः सहायाभावाद्घनरक्षाप्रमादो जातः । तदैकस्मिन्
 समये उदासीनतया मनस्येतद्विवेचितमिति । यदात्मीयं त्रिना संसारादि-
 रक्षा नो भवितुमर्हति, अत एकः पालकपुत्रो विधेयः । ततस्तस्मिन्नेव समये
 तदुद्यानपालेनागत्य श्रेष्ठिकां प्रति निवेदितम् । यदशोकवाटिकायां पञ्चद-
 शशतपिभिर्युक्तरचतुर्विधवोचशास्त्री(य)धर्मघोषसरितानामाचार्यैस्समा-
 गतः । तस्य दर्शनार्थं हस्तिनापुरवासिभिस्तत्रैव गम्यत इति । तत
 उद्यानपालामिहित निशम्य कमलाख्या श्रेष्ठिकया धनवत्या तद्वेदर्श-
 नार्थं तत्रैवोपस्थितम् । (तत्र च) धर्मपुराणीयकथाविशम्य तमाचार्य-
 मञ्जलिं यद्वा “ भो भगवन्, मम स्वामिनामरक्षा धनरक्षा आत्मनोऽपि
 रक्षा कथं भवेदिति ” पृष्टम् । तदा श्रेष्ठिकाभिहितं श्रुत्वा आचार्यैश्च
 वन्तुमारब्धम् । “ वरं यदद्य ” प्रभृति मासाभ्यन्तरेऽशोकवाटिकायां खलु
 पशोरालये” द्वात्रिंशद्दर्पवयस्कृष्टद्वेवराजसप्तविंशतिवर्ष-

१. निस्वाता — व्यप० ।

२. अष्टौ व्य० प० ।

३. नामधेयो — व्यप० ।

४. विद्युत्पातेन — व्यप० ।

५. मनसे — व्यप० ।

६. चतुर्विंशतिवरा श्रीधर्मघोष — व्यप० ।

७. अस्तमगतः — व्यप० ।

८. पृष्टम् — व्यप० ।

९. वर्त — व्यप० ।

१०. यद्वय — व्यप० ।

११. पशौ — व्यप० ।

ययस्कद्वितीयहंसराजद्वाविंशतिवर्षवयस्कतृतीयधनराजपोडशवर्षवयस्कच-
तुर्थधर्मराजाख्या एकमातृका महाजना आगमिष्यन्ति । तन्मध्ये
अभिलषितमेकं कञ्चित् पुत्रत्वेन स्वीकुरुविति" तदनन्तरमाचार्यमुखात्
श्रेष्ठिका तेषां पार्तो श्रुत्वा सुप्रसन्नेव तत्रमस्कृत्य पुनः पृच्छति । "यतः
किं कृत्वा स्वे..... इति ।" तदभिहितं निशम्याचार्यो वदति स्म ।
"यद्ये ऋषभदेवस्य नवाङ्गानि पूज्यानि, तदनन्तरं गुरुपुस्तकयोः पञ्च-
चोपचारेण, पोडशोपचारेण वा पूजा कार्या" इत्युक्तम् । एवं गुरुमक्ति-
विधेया, पश्चाद् गुरुमुखान्मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा पश्चान्निबकुलदेवीं प्रपूज्य
तदनन्तरं चतुर्विधसिंहसाक्षिके एवं देशाधिपतिसमीपे पुत्रं गृहीत्वा निज-
ज्ञातीयमोजनाय भवितविधेया इत्यदम्पतीगोत्रयित्वा एवं शुभ-
मूहूर्त्तं दृष्ट्वा 'नमो अरिहताणाम्' इत्युक्त्वा तं स्वपदे निवेश्य यद्रोलीति-
लक्षविन्दुमुच्यतादामतृणफुलफलचूर्णानि तस्मै दातव्यानि एवं शङ्ख-
ध्वनिभैरी (ध्वनिः) पुनर्नानावाद्यवृत्त्यादिकं कर्त्तव्यम् । एवं प्रकारेण
पुनः सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः सहगीतध्वनिः' स्वीयस्वीयमुखेन नानाविध-
मङ्गलाचारो विधेयः । एव श्रद्धया निजज्ञातिभ्य एवायत्राऽन्येभ्यो'द्रव्य-
मथवा श्रीफलादि दातव्यम् । एवं निर्द्धनश्चेत्तेन' पुगी'फलभेद्य दातव्यम् ।
रात्रिजागरणमपि विधेयम् । तन्मूलादिकमपि प्रत्येकं प्रत्येकं दातव्यम् ।
अधिकं तु आचारादि आकरे द्रष्टव्यम् (?) । अत्र किञ्चिन्मात्रमुक्तम् ।
श्रीवर्द्धमानरयामिहितं वाक्यं श्रुत्वा पुनर्वदति "भगवन्, कदाचि-
दस्मी धर्मे न स्थास्यति, यतः स्वे (?) " पुत्रो यदि मम सेवानिरतो न
भवेदेवं कुर्व्यसनेन धनक्षयं कुर्यात्, तदा मया किं कर्त्तव्यम्" इति ।
तदीयं वाक्यमाचार्येण श्रुत्वा पुनरुक्तं "यद्यप्यस्मी धर्मे न स्थास्यति तदा
त्याज्यो यथा अहिना दष्टमङ्गुष्ठं जनेस्त्यज्यते, तथा यः पोष्यपुत्रस्त' कथं
न त्यजेत्" इति तदीयामिहितं श्रुत्वा पुनरतमाचार्यं नमस्कृत्य निजगृह-

१. धनिः—व्यप० ।

२. निजज्ञातिभ्यरेतन्भवा इत्यद्रव्यम्—व्यप० ।

३. निर्द्धनश्चेत्तेन—व्यप० ।

४. श्चेत्तेन पु'गाफलम्—व्यप० ।

५. किञ्चिन्मात्रेण—व्यप० ।

६. पुनर्वदति—व्यप० ।

७. यो पु'पुत्रम्—व्यप० ।

मागत्य तत्राशोकवाटिकायां चत्वारः सेवका नियोजिताः । यदा मासः पूर्यो जातस्तदा आचार्यनिर्दिष्टाश्चत्वारो महाजनास्तस्यामशोकवाटिकायामागताः । तेषामागमनं दृष्ट्वा श्रेष्ठिकानियोजिता आगत्य कमलाश्रियं प्रति तेषामागमनवृत्तान्तं विज्ञापितवन्तः । कमलाश्रीरपि तद्वृत्तान्तं श्रुत्वा तांश्चतुरो गृहमानीय आचार्याज्ञया पुत्रत्वेन तेषां ज्येष्ठं देवराजाख्यं स्वीकृतवतीति गौतमप्रश्नीयमन्यलिलखनम् ॥१॥

श्रीसिंहपुरनगराधिपतेः सिंहसेनस्य सिंहावतीनाम्नी महिष्यासीत् । तथा सह सुखेन राज्यं कृतम् । तत्रानन्दपरमानन्ददेवानन्दाः क्षत्रिय-वंशोद्भवाः दुःखिनस्त्रयो भ्रातरः । तेषु मध्ये आनन्दाभिधान एको भ्राता धेनुं जुगोप । परमानन्दाभिधानो द्वितीयो भ्राता विविधकाष्ठमानीय विक्रयामास । देवानन्दाभिधानस्तृतीयो भ्राता शिशुः स्थितः । तदा सर्वैर्नगरस्थैर्जनैरानन्दस्य गोपाल इति नाम कृतम् , द्वितीयस्य परमानन्दस्य काष्ठजीवीत्यभिधानं कृतम् परन्तु ते त्रयो भ्रातर एकस्मिन्नेव स्थाने स्वकीयं स्वकीयं कार्यं कृतवन्तः । तत्रैकं यतिं विलोच्य त्रिभिर्भ्रातृभिर्मिलित्वा तं यतिं गत्वा स्थितम् । तदा स यतिस्तान् प्रति धर्ममुपदिष्टवान् । तदा ते भुनिधम्मोपदेशं निशम्य प्रीतिरता बभूवुः । पुनः साध्वान्नात् परिमितं वाचयं श्रुत्वा तेनाभ्यस्तं रात्रौ जलं न पातव्यमिति । तत्र कानने पुनश्च धेनुं पालयता तत्रैव निम्नगाकूले श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं प्रतिमां विधाय तत्रैकं गृहं कारयित्वा तन्मध्ये श्रीभगवतः प्रतिमा स्थापिता । तत्र प्रतिदिनं तेन तदर्चनं कृतम् । तत एकस्मिन् समये ऋषभमुखात् भक्तामरस्य माहात्म्यं शुश्राव । ततः ऋषिरानन्दं भक्तामरं पाठयित्वा जगाम । तदनन्तरमानन्दारूपः श्रीभगवतोऽपि प्रतिदिनं भक्तामरं स्मरतिस्म । तदेकस्मिन् दिने चकेश्वरीनाम्नी देवी प्रत्यक्षमागत्या-

१. तत्रानेकवाटिकायाम् व्यप० ।

२. तदा भ्य० ।

३. तद्वृत्तान्तम्० व्य० ५० ।

४. तारचतुरो व्यप० ।

५. मृतामयी व्यप० ।

६. प्रतिमामभिधाय व्यप० ।

७. सृष्टि रम भ्य० ।

८. तदा भ्य० ।

९. तारचतुरो व्यप० ।

१०. प्रतिमामभिधाय व्यप० ।

११. प्रत्यक्ष प्रागत्य व्यप० ।

स्मिन्नगरेऽधिपति (स्त्वं) भविष्यतीति वरं दत्त्वा अन्तरहिता^१ जाता । ततः किञ्चित्कालानन्तरं तन्नगरस्याधिपतिमृतः तस्यात्मजो न स्थितः । तदनन्तरं तस्य महिषी सिंहावती नाम्नीपुत्रशाकानुरा परमास^२...र्द्धदिन पर्यन्तं राज्यं कृतवती । तदैकस्मिन् समये वनयात्रार्थं महिषी सखीभिः^३ सह मिलित्वा वनं जगाम । तत्र कानने निम्नगाकूले एकं स्थानं दृष्टवती । सिंहावतीनाम्नी राज्ञी तत्रालये गत्वा श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयी^४ प्रतिमां विलोक्य तस्याः प्रतिमायाः स्तुतिं चकार । पुनस्तस्याग्रे आनन्दो भक्तामरं^५ स्मरति स्म । तत्रैव परमानन्ददेवानन्दौ स्थितौ । तान् त्रीन् भ्रातॄन् विलोक्य मनस्येतद्विवेचितम्—यतो मम पुत्रा^६ न स्थिताः किन्त्वय भगवता ऋषभदेवेन त्रयः पुत्रा मत्तं दत्ताः, अद्यैव मदीयं सर्व्वं दुःखं गतमिति^७ महिषी विचार्य्य आनायितान् तान् पुनः पुनर्विलोक्य पृच्छति स्म “हे वत्साः, युष्माकं किमाख्यास्तद् युष्माभिः प्रकाशनीयाः ।” तदा त्रयो भ्रातरोऽञ्जलिं यज्वा, तन्मध्ये आनन्दाभिधेयो ज्येष्ठभ्राता वदति स्म “हे अम्ह, वयं त्रयः सहोदराः, मम आनन्द इत्याभिधानम्, द्वितीयस्य परमानन्द इत्यभिधानम्, तृतीयस्य देवानन्द इत्यभिधानम् । तन्मध्ये ज्येष्ठ आनन्दाभिधानः श्रीऋषभदेवस्याग्रे सिंहावत्या महिष्या पत्ररत्नेन स्वीकृतः । तस्मान् काननात् कश्चिदेको मृत्युः स्वग्रामे प्रेषितः “त्वया तत्र गत्वा सुमत्याधिऋरिणां प्राति ववत्त्वयम् भवता-चन्द्रशेखर-कर्णलोचन-रूपसेना-ख्यैरगत्यैः सह पञ्च द्रव्याणि शङ्खादीनि गृहीत्वा तत्र गन्तव्यमिति” । तत्रैव तस्मिन् समये श्रीसिंहकेरारमूरि^८ नामाचार्य्यस्तमागतः । तत्रैवानन्दाख्येन पुत्रेण सह महिषी घर्म्मोपदेशमाकर्ण्य तमाचार्य्यं पृच्छति स्म “भगवता पौष्यपुत्रोत्सवो वक्तव्यः” तदीयाभिहितं निशम्य वक्तुमारब्धम् “यतो” गोतमप्रश्नीयत् श्रीमज्जिनेश्वरस्य नराङ्गीं पूजां कृत्वा पश्चाद्

१. आहिता—व्यप० ।

२. सखिभिः—व्यप० ।

३. भक्तामरम्—व्यप० ।

४. न प्रपुत्रान्—व्यप० ।

५. ०त्तरि—व्यप० ।

६. परमास—व्यप० ।

७. मृन्मयी—व्यप० ।

८. स्मृतिरम—व्यप० ।

९. मन्त्रा—व्यप० ।

१०. पत्नी—व्यप० ।

गुरुपुस्तकज्ञानोपकरणवस्त्रद्रव्यादिपूजा पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा कार्या" इत्युक्तम् "श्रीरस पुत्र जन्मांतरसमयोत्सववत् पालकपुत्रोत्सवः कर्तव्यः । तदनन्तरं चतुर्विधसिंहसात्तके निजकुलदेवी पूजनीया, तदनन्तरं स्वकीयज्ञातिभ्यो भोजनं मिष्टान्ने रससंयुक्तैर्दद्यात् । तदनन्तरं ताम्बूलवस्त्रद्रव्यश्रीफलपुष्पीफलानि च प्रत्येकं दातव्यनि एतदपेक्षयाधिक-पुत्रोत्सवविधिराचारादनकरे द्रष्टव्यः" । एतत् सिंहकेसरसूरिणाचार्यैरेणोक्तम् तदा पूजाद्रव्यं गृहीत्वा अमात्यैः सह सुमित्तिराजगाम । पुनः सिंहावती राज्ञी आनन्देन सह श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयी प्रतिमां विधाय षोडशोपचारेण प्रतिमां प्रपूजितवती । तदनन्तरं तस्य स्तुतिसमये श्रीऋषभदेवस्य सकाशात् पुष्पमानन्दस्य शरसि पपात । तदा आकाशात् "जय जय" इति शब्दो जातः । इत्यारश्चर्यम् तदा सुमातना चन्द्रशेखरकर्णलाचनरूपसेनारत्यैर्मन्त्रिभिः सह ५ (अ) तद्द्रव्याणि गृहादानीय तस्य आनन्दस्याग्रे स्थापितानि । तदनन्तरं तैः पञ्चद्रव्यैः तत्तत्कार्याणि तेन कृतानि । तदनन्तरं तस्मात् वाननात् अमात्यैः सह शङ्खवाद्यभेरिनानाप्रकारादिध्वनिगीतादिज्ञातिसौभाग्यवती दिभिः सह महामहोत्सवमानीय स्वगृहमागत्य आनन्देन राज्यसिंहासने स्थिता । तस्य परमानन्दो द्वितीयो भ्राता युवराजः कृतः । तस्य देवानन्दस्तृतीयो भ्राता भटपतिः कृतः । किञ्चित् कालानन्तरं तद्देशाधिपतिभिः सह तस्य युद्धमभूत् । पुनरतान् जित्वा सुप्तेन राज्यं कृतवान् । इति भस्तामरस्तुतिमन्वलिखनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण ज्येष्ठपुत्रः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति, जैनशास्त्रे ज्येष्ठपुत्राय पोष्यपुत्रताया निषेधाभावात्, तच्छास्त्रे पूर्वेषां तच्छास्त्रानुसारेण व्यवहरतां राज्ञीं पण्डिता च स्त्रीणां ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रकरणस्य लिखितत्वेनेदानीन्तनानामपि जैनशास्त्रानुसारेण व्यवहर्त्रीणां स्त्रीणां तथा व्यवहारस्य भवितुं शक्यत्वाच्चेति—

अत्र प्रमाणानि उपरिलिखितानि त्रीणि ॥ २ ॥

गो गीतम, अस्माकं मते ज्येष्ठकनिष्ठत्वे दत्तकः शिशुर्मातुः
सर्वलक्षणसंयुतः—इति गोतमप्रश्नीयग्रन्थभूतवर्द्धमानस्वामिवच-
नम् ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण गर्भाधानदिवसमारभ्य द्वात्रिंशद्दर्पपर्यन्तवयस्कः
पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति ॥०॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

कियद्वायनमितवयस्कः पुत्रो भ्राह्म इति गोतममुनेः प्रश्नः । यदा
तदा भगवता वर्द्धमानरवानिनोक्तम् स गर्भमारभ्य द्वात्रिंशद्दर्पपरिमित-
वयस्कः पुत्रो भ्राह्मः— इति गोतमप्रश्नीयग्रन्थलिखनम् ॥०॥०॥०॥

चतुर्थेप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण पोष्यपुत्ररक्षणार्थमेवं तत्सिद्धयर्थमेते^१ नियमाः ।
तथाहि—ऋषभदेवास्यस्य तद्देवस्य प्रथमतो नवाङ्गपूजनं तदनन्तरं गुरु-
पस्तकयोःपञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा पूजा कार्या एवं गुरुभक्तिर्वि-
धेया, परचाद् गुरुमुत्तान् मङ्गलवाचयं श्रुत्वा निजगुरुदेधीं प्रपूज्य गुरु-
गुरुपत्नीज्ञातिज्ञातिपत्नीनां चतुर्णामिव ग्रामाधिपतेर्विवेदनं कृत्वा पुत्रं
श्रीत्वा निजज्ञातीनां सपत्नीकानां भोजनं दत्त्वा शुभमुहूर्त्तं दृष्ट्वा^२ म(न्त्र)-
पाठपूर्वकं स्वस्थाने बालकमुपवेश्य रोलीयतिलकचिन्दुमुक्तचिन्दु^३
तरङ्गुलचूर्णानि वा तस्मै ललाटे दातव्यानि, एवं शङ्खध्वनिभेरीत्याद-
नानावाद्यनृत्यगीतादि नानाप्रकारेण सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः स्वीयस्वीय-
मुखेन नानाविधमङ्गलाचारो विधेयः । एवं श्रद्धया^४ स्वज्ञातिभ्यो ब्रह्म-
द्रव्यताम्बूलश्रीफलपूगीफलानि दातव्यानि^५; निर्धनश्चेत् पूर्वाफलमेव
दातव्यम्, रात्रिजागरणमपि विधेयम्-इति गोतमप्रश्नीयभक्तामरस्तुति-

१. सिद्धयर्थम् व्यप० ।

२. दृष्टा व्यप० ।

३. अद्वया व्यप० ।

४. दातव्यानि व्यप० ।

सन्तनाथचरित्ररूपसेनचरित्रप्रश्नोत्तरसार्द्धशतकराजप्रश्नसूत्रिषिद्धान्तादिज्ञानशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणाणि प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्येवेति—

एतदब्दीयजुलाइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे^१ यामद्वयानन्तरं मयेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१०७—रुवकारि आदालत दैओनी सदर इ०सन १८३१ शाल तारिख ४ माहे जुन मोतावेक सन १२३८ शाल तारिख २३ ज्यैष्ठ रोज शनिवार एइ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शिली साहेवेर वैठके—

कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय घनाम गद्गाचरणसेन । साएलानेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुक-परिडत, विपत्तेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ मुनशी फजर होसेन हाजिर आसिलेन । एइ आदालतेर हाल सनेर २१ आपरेलेर हुकुमानुसारे साएलानेर खास आपिलेर सओयाल ओ ताहार सम्पर्कीय फागजातसकल अद्य आमार वैठके दरपेप हइया एइ आदालतेर हाकिम रावरट^२ हालडन राटरि साहेवेर ऐ तारिख मजकुरेर रुवकारि ओ आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि शिकिपिएर साहेवेर हाल सनेर १४ मार्चेर रुवकारि सम्बलित मोलाहेजा हइवाते एइ मकदमार चूडान्त

१. रात्रि—व्यय० ।

२. रात्रि—व्यय० ।

हुकुम प्रकाश हद्दवार पूर्व्ये एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय ए विषय
ज्ञात हओया आचिश्क हइलो—ये जगमोहनरायेर पुत्र महेश-
चन्द्ररायेर मृत्युर पर महेशचन्द्ररायेर भगिनी श्रीमती ऐ मृत्यु
व्यक्तिर त्याज्य वस्तुते ओयारिप मते हिस्सा पाइवार सत्व राखे
कि, ताहार खुल्यतावण कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय ।
अतएव हुकुम देया साइतेछे—ये पे रुवकारिर सकल
कागजात सन्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने
समर्पण करा जाय—ये कागचसकल दृष्टे करिया निचेर प्रश्नेर
उत्तर ओ पाच दिवसेर मध्ये लिखेत ।

प्रश्न :—

यदि त्यान् परगणे हावेलि शिलामावादेर -१० देड आनार
मालिक कृष्णकिष्कररायेर पुत्र लक्ष्मीकान्तराय ओ जगमोहन-
राय ओ शम्भुचन्द्रराय, एइ चारि भ्राता पैतृक जमिदारि
उपर आपन २ हिस्सा मते दखिलकार थाकेन । प्रथमत लक्ष्मीकान्त-
राय निःसन्तान, ओ ताहार पर जगमोहन आपन पुत्र महेश-
चन्द्रराय ओ श्रीमती कन्याके राखिया मृत्यु ह्य । महेशचन्द्र-
राय आपन पैतृक हिस्सार उपर दखिलकार थाकिथा ओ श्रीमती
भगिनी ओ कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय खुल्यतावण
राखिया निःसन्तान मृत्यु ह्य, ओ ताहार स्त्री सहगामिनी ह्य ।
अनएव महेशचन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भगिनी श्रीमती, ये
एइ क्षण ताहार एक नाबालक पुत्र आछे, अशिबेक, कि ताहार
नुडावण शम्भुचन्द्रराय ओ कमलाकान्तरायेके अपिबेक इति ।०।

श्रीर्जयतिराम

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयनेलधिलीसाहिवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

प्रमेयं तत्समपितृत्वद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदन्दीयशुलाइमासीय-
नवमदिनसम्बन्धिनिवासरे सार्द्धघटिकाप्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशघोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति महेशचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्-
स्वत्वास्पदीभूतधने यदि तस्य पुत्रमारम्य पितुः) प्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्,
पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्, तदा तस्या-
धिकारः । जाते च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्त्यमानानां तद्भाग्रन्तराणा-
मर्यान्महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति ।
सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्ययोः शम्भुचन्द्ररायकमलाकान्तराययोर्ना-
धिकारः । यदि च महेशचन्द्ररायस्य पुत्रमारम्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहि-
तस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्, तदा
तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यभानुपपर्या तद्भगिन्याः श्रीमत्यास्तत्पितृ-
दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्काल-
पर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृधने दुहितुः अधिकारस्त-
या भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतो महेश-
चन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो महेशचन्द्रस्य पितुः पार्व्वण-
श्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याः श्रीमत्या नाधिकारः । किन्तु
तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति वङ्गदेशच-
लितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गाणांवादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था ॥१०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-
दौहित्रस्यैव इति—दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधिताद्—इति दायभागादि
(दाय भा. पृ० १३२) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१२२) वचनम् ॥ २ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-
मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः—इति च श्रीकृष्णतर्क-
ालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८) लिखनम् ॥१॥

पत्नीदुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादि(दाभा. पृ० १५१)प्रत्य-
श्रुतयाश्वल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥४॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तः
तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वण्यपिण्डदत्याभावाच्चाधिकारः, दुहितुस्तु
दौहित्रात् पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवति—इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः
इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१०)
लिखनम् ॥४॥

एतदन्दीय-अगत्यमासीयप्रथमदिनसम्बन्धितोमवाचरे घटिकैकाधिक-
यामद्वयानन्तरं मपेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०८ रोचकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत हेनरि
शिकशीपियेर साहेव आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके तारिख
७ शेतम्बर ३० सन १८३१ मोतायाक २३ भाद्र चाङ्गला सन
१२३८ साल रोज बुधवार ।

आनन्दमयीदेवी

छाएला

छाएलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ राधामोहनमिश्रि
उकिल मुनशी होशान आलि ओ श्रीमन्तमिश्रि ओ रामनायख
आचार्येर उकिलान् मुनशी दादार वकूशी ओ मीलुवि करम
होशान हाजिर आइल । एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि
टरम्बल साहेवेर शान हाल्लेर १६ आगष्ट तारिखेर हुकुम मोता-
याक एइ मोकईमार शओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदा-
लतेर हाकिमान् रावट हालदन राटरि शाहेव ओ आलक
सुन्दर रास साहेव ओ माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेवेर सन हाल्लेर
३० जुन ओ १६ जुलाइ ओ १६ आगष्टेर लिखित' राय सम्बलिव

प्रे आईल । तत परे छायेलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल
 द्राएलार तरफ हइते एक केता सओयाल दाखिल करिलेक, पडा-
 ल । यथा ए विषय ये नावालकेर मृत्युर पर प्रथमतो शाखानु-
 जाइ कोन व्यक्तिके ताहार उत्तराधिकारित्य, अर्शिवे, आर कि
 प्रकारे मोछुमोत आनन्दमयी ओ राधामोहन नावालकेर उत्तरा-
 धिकारि ओ हकदार हइवेक, अनुमोदन करा उचित हइल ।
 अतएव हुकुम हइल ये—आनन्दमयी ओ राधामोहनमिश्र
 आईल दुइ दरखास्त, जाहा एइ आदालतेर हाकिमानेर राय ले-
 वार पर दाखिल हइयाछे, एइ आदालतेर परिदतके एइ हुकुमे
 समर्पण करा जाय-ये परिदत मजकुर उपरेर लिखित विशयेर
 जओयाव ततक्षणात लिखिया दाखिल करे, एवं मोकदमा
 मुलतवि थाके इति ।

थीर्जयतितराम्

एतद्भर्माधिकरणधिपतिश्रीसुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेबधर्माधिकरण
 लिखितैतद्वदीयसितम्बरमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
 पत्रमेवं तत्समर्पितमानन्दमयीदेव्या निवेदनपत्रं राधामोहनमिश्रस्य निवेदन-
 पत्रञ्च यत्तन्मासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे पादोनघटिकाचतुष्टया-
 धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
 णोत्तरं लिख्यते ।

पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्याप्राप्तव्यवहारस्य^१ मरणोत्तरं
 प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः, यदि च तत्पितृदौहित्रस्तस्यैवाप्राप्तव्यव-
 हारस्य मरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा न भविष्यति, तदा तत्पितृ-
 दौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्योरर्थादहित्यादकिमण्योः तत्पितृ-
 दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तत्सम्यन्वमूलीभूतयोश्च^२ तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः
 प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्घने दुहितु-

रधिकारस्तथा भ्रातृघनेऽप्यधिकारः । सत्तु चाप्राप्तव्यवहारस्य पितृदौहित्रेषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्योऽप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योरर्थादहिल्याह्विमण्योर्नाधिकारः; किन्त्वप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योः पुत्राणामेवाधिकारः तत्पितृदौहित्राभावे तत्पितामहस्य, तदभावे तत्पितामह्या अर्थादानन्दमन्यास्तदभावे तत्पितुः सोदरभ्रातृस्तदभावे तत्पितुर्षेमात्रेयभ्रातृस्तदभावे सोदरभ्रातृपुत्रस्य तदभावे तत्पितुर्षेमात्रेयभ्रातृपुत्राणामर्थाद्राधामोहनप्रभृतीनामधिकारः—इति षड्देशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाव्यादमह्वार्षवधिवदादर्शवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्याद्युपरिलिखित(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५, वचनम् ॥१॥

।पतुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बांद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहितृभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्त्वाभावाच्चाधिकारः, दुहितृस्तु दौहित्रान्तपूर्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इतिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०)लिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्षेमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरः पुत्रपितृषेमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृषेमात्रेयपौत्राणां क्रमेणधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥४॥

एतद्वद्दीयसेतम्बरमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमघातरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोवकारि मिसिल आदालत देश्चोयानि सदर तारिख
२२ माह नवम्बर शन १८३१ इ० मतावक ८ माह अग्रहायण
शन १२३८ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्री-
युत मान्तेगिओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री करणामयी प्रभृति—आपीलाएटान्
चन्द्रमालार पति जयचन्द्र घोष— रेप्पाडएट

आपीलाएटगणेर उकिलगण मुनशि दादार वक्स ओ मुनशी
गोलाम धतुल, रेप्पाडएटेर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर
आसिल । ए मकदमा एइ शनेर माइ मासेर २५ तारिखेर हुकुमा-
नुसारे अद्य आमार बैठके उपस्थित हइया एइ मकदमा वावत
आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कोर्टेर फयशला ओ छानि
तजविजेर दरखास्त ओ इ० १८३० शालेर जुलाइ मासेर १५ तारि-
खेर लिखित ए मकदमार इनफशालि रोवकारि ओ कमलाकान्त-
राय प्रभृति वनाम गङ्गाचरणसेनेर मकदमा वावत ए आदालतेर
पण्डितेर व्यवस्थार नकल याहा रेप्पाडएटेर उकिले हुइ टाका
मुल्लेर एक किता फेइरेस्त द्वाराय अद्य लम्बरे दाखिल करिलेक
दृष्टे आसिल । ताहार पर आदालतेर पण्डितके हुजुरे तलव
दिया (जिह्वा)सा करामेल—ये तोमार दाखिल करा व्यवस्थाय
चन्द्रमालार स्वत्वेर उल्लेख केन छुटीयाछे, एइ क्षण तोमार अन्य
व्यवस्थार द्वाराय, याहा रेप्पाडएटेर उकिले अद्य दाखिल करि
लेक, जाना जाइतेछे ये चन्द्रमाला ओ श्रीमतिर न्याय ये दौहित्र-
गणेर उत्पत्तिर करण वटे, गोराचान्देर त्यक्तेर स्वत्वाधिकारिणि
वटे । ताहार उत्तर निवेदन करिलेन ये हुजुर हइते एइ परिमाण
सञ्चोयाल हइयाछिल ये शाखानुसारे कोर्टेर पण्डितेर व्यवस्था
यथार्थ घटे कि ना, ओ ऐ व्यवस्थाय कोर्टेर पण्डिते चन्द्रमालार
पुत्रके स्वत्वाधि(कारि) लिखियाछिल, ओ ततकालिन अर्थात्
पूर्वाधिकारि मृत्युर पर लालमोहनेर, ये ताहार माता अप्राप्त
व्यवहारा स्थित, जर्म हइयाछिल ना, ओ ये व्यक्तिर उत्पत्ति

ना थाके ताहार स्वत्व कोथा हइते अशिवेक । एइ हेतुक ताहाके अयथार्थ लिखियाछिलाम; ओ फलितार्थ गोराचान्देर मृत्युर-पर ताहार अन्य उत्तराधिकारिगण वर्त्तमान ना थाकने गोराचा-न्देर भग्नि मुसम्नात चन्द्रमाला, ये से गोराचान्देर पितृदौहित्र गणेर उत्पत्तिर कारण बटे, आपन भ्रातार मिलकीयतेर स्वत्वा-धिकारिणि हइवेक; एवं ए विशयेर विस्तारित एइ व्यवस्थाय. याहा अय रप्पाइपटेर उकिले दाखिल करिलेक, लिखा आछे इति । ऐ पण्डितेर एजहार दृष्टे उचित हइल ये निचेर सञ्चोयाल एइ आदालतेर पण्डितेर पर करा जाय ।

सञ्चोयाल—यद्यपि पूर्वाधिकारि निलकण्ठ तिन पुत्र, प्रथम कृष्णप्रसाद, द्वितीय प्रतापनारायण, तृतीय किर्त्तिनारायणके, राखिया मरे; ओ कृष्णप्रसादह तिन पुत्र रामराजा ओ राम-कृष्ण ओ काशीनाथके राखिया मरिलेक; ओ प्रतापनारायण ओ एक पुत्र कालाचादके राखिया मरिल ओ कीर्त्तिनारायणह पुत्र गोराचान्द ओ चन्द्रमाला कन्याके राखिया मरिलेक; ओ ततपरे गोराचान्दह निस्वन्तान मरिलेक । अतएव शाखानुसारे किर्त्तिनारायणेर त्यत्य, याता ताहार पुत्र गोराचान्दके अशिया-ङ्गिल, चन्द्रमालाके अशे, किम्या कोन व्यक्तिके । उचित ये ताहार जवाय तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलताहेवधर्माधि-करणलिखितैतब्दीयलवम्बरमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्न-तिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे षट्-काचतुष्टयाधिकयामद्वापानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति कीर्त्तिनारायणस्य मरणानन्तर-मुत्तराधिकारस्त्वेन प्राप्तपितृधनस्य तत्पुत्रस्य गोराचान्दसंश्लक्ष्य मरणोत्तरं-कस्तन्लासदीभूतघने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्

तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् गोराचौदसंशकस्य पितृ-
 दौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्तदा तस्याधिकारः ।
 ज्ञाते तस्याधिकारे पुनरुत्पत्त्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद् गोराचौदसंश-
 कस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति । सति च पितृदौ-
 हित्रे तत्पितृव्यपुत्राणां प्रभुसमर्पितप्रभपत्रलिखितानां मध्ये तदानां विद्यमा-
 नानां नाधिकारः । यदि च गोराचौदसंशकस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्त-
 रहितस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्तदा
 तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायास्तत्पितृ-
 दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्काल-
 पर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्वने दुहितुरधिकारः-
 तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च गोराचौदसंशकस्य पितृदौहित्रे स्वतो
 गोराचौदसंशकस्य पितुः पार्वण्यश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो गोराचौदसंशकस्य
 पितुः पार्वण्यश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याश्चन्द्रमालाया नापि-
 कारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—
 इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवाद-
 मङ्गलार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो घनिदौ-
 हित्रस्यैव-इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इतिदायभागादि-
 (दा० भा० १३२)ग्रन्थधृतयाशवल्क्य (पृ० २।१२२) वचनम् ॥२॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-
 मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्व्येमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-
 पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ०
 २१८) लिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव । इत्यादि दायभागादि(दाभा०पृ० १५१)ग्रन्थ-
 धृत याशवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ ४ ॥

यद्यपि दुहितृभावे दीहितस्यैव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः सीत्वेन पार्व्यणपिरदत्त्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दीहित्रात् पूर्वम्—“अज्ञादज्ञात् सम्भवति” इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०) लिखनं चेति ॥ ५ ॥

एतदब्दीपलवम्बरमासी १५ पञ्चविंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीजर्जपतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११०—रोवकारि मिद्विल शदर देओयानि आदालत मज-
कुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीवेर साहेवेर वैठके तारिख ५ दिज-
म्बर ३० शन १८३१ साल गोतावक २१ अप्रहायण वाङ्गला
शन १२३८ साल रोज सोमवार—

दलमर्दनसाहि

आपीलाएट

राजा पृथ्वीपतिसाहि ताहार मृत्युर पर खडर्गवाहादुरेर
अलि ओ माता राजेश्वर कोडर ओ मोद्वर्मात् मदनकोडर—

रेप्पाडएटान्—

आपीलाएटेर उकिल सदसुख पण्डित ओ रेप्पाडएटानेर उ-
किल मुनशी होशन आलि हाजिर हइल । तारिख १५ ओ २१
ओ २२ ओ २६ माह नवम्बरे एइ मोऊर्दमा रोवकारि ओ प्रीविण
शीयान क्रोटेर समुदाय कागजात ओ एइ मऊर्दमार वायत एइ
आदालतेर दाखिल करा सावेक कागजात पाठ हइया स्थकित
छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल । आमार रायेते राजा अरि-
मर्दनसाहिर राजा पृथ्वीपतिसाहिके पुण्यपुत्र राखनेते इच्छा ये
प्रकार उचित साक्षीगणेर साइदेर द्वाराय क्वार ओ याककाइ
शाब्द पौछिल । एवं इहाओ तहकित हइल ये राजा मजकुर आपन

होस वहाले ओ स्थिर बुद्धिते हेवानामा सकल राजा प्रध्वीपति साहिर नामे लिखिया दियाछिल । किन्तु एतदभिन्य ओ गोरकपुरे जाहाते उभय विवादि बसति राखे, ताहार सर्व्वदार रेओ-याज' मते एवं शाखेर दाडाते ओ समुदाइक शरत शफामते राजा प्रध्वीपतिसाहिर पुण्यपुत्रता सर्व्वतोभावे साव्यस्थ आसिया-छिल । से हेवानामा सकल शाखेर आज्ञानुसारे उचित बटे कि ना ? द्वितीयत्व ये ताहार तजविज नितान्त शाखेर दाडाते एलाका हइतेछे इति । आर अजिमावादेर प्रीविणशीयान कोटेर आदालतेर पण्डितेर एइ मोकईमार मिछिले दाखिल करा व्यवस्था द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये राजा प्रध्वीपतिसाहिर पुण्यपुत्रता उचित बोध हइल, आर शन हालेर २२ शेतम्बर तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेवेर रोवकारिर लिखित एइ आदालतेर पण्डितेर जवानि जओयावेते पण्डित बोध हय ना—ये पण्डित मजकुरेर ऐ व्यवस्थाते अक्यता हइयाछे कि ना । आर यदि स्यात् ना हइयाथाके कि जन्य हय नाहि । आर हाकिम मौछफेर रोवकारिर लिखित पण्डित मजकुरेर जओयावेते बोध हय ये ज्येष्ठ पुत्र पुण्यपुत्र हइते पारे । एइ शरतते ये उभय पुण्यपुत्रदाता ओ त्रिहिस्या(?) एइ विषये स्वीकृत हय—ये पुत्र मजकुर उभय दुइ व्यक्तिर आद्वे पण्डितदान करिबेक । किन्तु इहाते सस्पष्ट हयना—ये पुण्यपुत्रतार निर्द्धारितेर पूर्व्व ये रूप एइ मोकईमाय प्रकाश आछे, आत पितार मृत्युते ऐ प्रकार शरत वहाल थाके कि ना । एइ सकलेर प्रति दृष्टे आमार निकट सन्देह भञ्जनार्थे उचित ये मोकईमार कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे—ये पण्डित मजकुर कोट आ गयर-हर व्यवस्था ओ साक्षीगणेर एजहार ओ मिछिलेर कागजात अनुमोदने निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव तत्क्षणात लिखिया दाखिल करेण पाठान जाय ।

१. प्रथमतो एइ ये सात्तीगणेर सात्तीर द्वाराय राजा प्रध्वी-पतिसाहिके पुष्यपुत्र देओया ओ लओया उभय उहार माता ओ राजा अरिमर्दनसाहि ओ रानी मदनकोडर ये रूप उचित शाखानुजाइक आवान आशीयाछे कि ना ।

२. द्वितीय—पुष्यपुत्रतार दाडासकलेर पूर्व प्रध्वीपति-साहिर आपन पीता रणवाहादुरसाहिर मरणेते ताहार सत्य-तार किछु द्यति ह्य कि ना । आर यदि ताहाते द्यति बोध ह्य, एमत द्यति रणवाहादुरसाहिर पद्य हइते पूर्व समये पुष्यपुत्रतार कछुल करखेर सवाव ये प्रकार मोछन्मात मदन-कोडर एइ मोकदेनार आपीलेर जओयावे लेखे दुर हइते पारे कि ना ।

३. तृतीय—ये छि सहगामिनी ह्य, सेइ स्त्री सहगामी हओयार पूर्व आपन पुत्र अन्य कोन व्यक्तिके पुष्यपुत्र देओयाते यथा-शास्त्र पट रूप निषेध आछे कि ना ।

४. चतुर्थ—प्रध्वीपतिसाहिर छय बतसर बयक्रमे ताहार पुष्य-पुत्रतार निषेध कि ना ।

५. पञ्चम—ज्येष्ठ पुत्र हेतुक तस्य पुष्यपुत्रतार आपत्य जेला-गोरकपुरेर प्रचलित दाडा ओ शाच्छादात ये प्रकार राजा उद्योतनारायणसिंह एवं द्वितीय राजासकलेर सात्तीते शाछद पौछिल दुर हइते पारे कि ना ।

६. षष्ठ—राजा अरिमर्दनसाहिर लिखिया देओया हेवा-नामा सकल दोरस्त ह्य कि ना । आर यदि स्यात् दोरस्त ह्य, तवे राजा प्रध्वीपतिसाहि पुष्यपुत्रताभिन्य ताहार द्वाराय हेवार विषये हकदार ह्य कि ना ।

७. सप्तम—यदि स्यात् पुष्यपुत्रता ओ हेवानामासकल दुइ-ना दोरस्त ह्य, राजा अरिमर्दनसाहिर स्त्री रानी मदन कोड-

र ८५ लम्बरेर इ० शन १८२६ शालेर २८ मार्च तारिखेर लिखित एइ आदालतेर सावेक हाकिम कोर्टनि इरिमट साहेवेर रोवकारिते ये प्रकार लेखा, आछे आपन जीवदशा पर्यन्त उहार स्वामीर विषये कावेज ओ दखिलकारिर हकदार हइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपति श्रीहेनरीसिक्सपीयरसाहेब-धम्माधिकरणलिखिताङ्गरेजोशन्दप्रतिभायैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रबातञ्च यत्तदन्दीयतन्मासोपपञ्चदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

साक्षिणां साक्ष्यद्वारा राज्ञः पृथ्वीपतिसाहिसंशकस्य पुत्रप्रतिनिधित्वेन दानं ग्रहणं चैतद्वयं तस्य मानू राज्ञो अरिमर्हन्साहिसंशकस्य चैवं राज्यामदनकोमराख्यायारच यथोचितं भवति तथा शास्त्रानुसारेण जातमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमदमिः पुत्रमापदि ।

सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दन्निमः सुतः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २१३)

वीरमित्रोदयादि- (पृ० ६०८) ग्रन्थघृतमनु (६।१६८) वचनम् ॥ १ ॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् वन्धूनाह्वय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिमिर्हुत्वा अदूरयान्धवं वन्धुसचिकृष्टमेव प्रतिपद्नीयाद्इत्युपरिलिखितं (मिता पृ० २१४) ग्रन्थघृतवशिष्ठवचनम् ॥ २ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

पुत्रप्रतिनिधिताया रीतीनां पूर्वं पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य जनकपितृ रण-
वहादुरसाहिसंज्ञकस्य मरणात् पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधितास्य-
तायाः क्षतिर्यद्यपि सन्देहविपर्ययीभूता भवति तथाप्येतादृशो क्षतो रणवहादुर-
साहिसंज्ञकस्य सकाशात् पूर्वसमये पुत्रप्रतिनिधितायाः स्वीकारेणैतद्विवादे
एतद्वर्माधिकरस्योत्तरपत्रे राश्या मदनकोमराख्यया लिखितेन दूरीभवितुं श-
क्नोति, रणवहादुरसाहिसंज्ञकस्य तादृशस्वीकारेण तत्रानुमतेरवगमादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रथमप्रमाणम् ॥ १ ॥

मात्रा भर्तनुज्ञया प्रीयिते प्रेते वा भर्तारि पित्रा चोभाभ्यां वा सवर्णाय
यो' यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः—इति मिताक्षरा (पृ०, २१३) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

या स्त्री सहगामिनी अनुगामिनी वा भवति सा स्त्री सहमरणात् पूर्वं:
मनुमरणात्पूर्वं वा स्वकीयपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिकरणार्थमन्यस्मै, सम 'शं'
कचु' न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधो नास्तीति ।—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य षड्वर्षवयस्कत्वेन पुत्रप्रतिनिधिताया निषेधो
नासीत् । तत्रायं विशेषः यदि तत्समये स नोपनीतः, अथ च तज्जनकेन
पित्रा जनकपित्रमिप्रायेण तजनन्या मात्रा वा “आवयोरयं पुत्रः” इति
सम्प्रतिपत्त्या प्रहीत्रे दत्तः स्यात्तदा पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतमित्यद्र्यामुप्यायणपु-
त्रताया अथि निषेधो नासीत्, जनकपुत्रतायास्तत्राज्ञतत्वात् । यदि च ता-
दृशसम्प्रतिपत्तिं विनैव दत्तः एषादग च रूढान्तैस्संस्कारैर्ज्वनकेन संस्कृतः प्र-
तिग्रहीत्रा चापनयनादिभिस्संस्कृतस्तत्रापि तस्य पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतमित्य-
द्र्यामुप्यायणपुत्रताया निषेधो नासीत्, तत्रापि जनकपुत्रतायास्तस्मिन्
अज्ञतत्वात् । किन्तु यदि षड्वर्षवयस्कः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्तदानीमुपनीतः

स्यात्तदा दत्तकपुत्रताया निषेध आसीन्नतु कृत्रिमपुत्रतायाः; यतः कृत्रिमपुत्र-
करणे ज्येष्ठकृत्रियोन्नियमो नास्ति, उपनीतानुमनोतमोरपि नियमो नास्ति,
दानस्याप्यावश्यकता नास्ति, केवलं सजातीयत्वपुत्रत्वकरणयोरेव प्रयोज-
कत्वम् । अथ च जनकपितुः पुत्रत्वं नैव गच्छति । अथञ्च सर्वथैव दद्या-
मुप्यायणः जनकपुत्रत्वकरणयोर्द्वयोरपि धाद्वादिकरः । अथमेव कृत्रिमपुत्र-
पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकार्त्तपीलाख्यधर्माधिकरणनियुक्तारिडतेन लि-
खित इति ।

अत्र प्रमाणम्—

तथाहि द्विविधा दत्तकदयो नित्यवद्द्वयामुप्यायणा, अनित्यवद्-
द्वयामुप्यायणाश्चेति । तत्र नित्यद्वयामुप्यायणा न.म ये जनकप्रतिगृही-
तृभ्यामावयोरयं पुत्र इति संप्रतिपत्ताः; अनित्यद्वयामुप्यायणास्तु ये चूडान्तै-
(संस्कारै)र्जनकेन संस्कृताः उपनयनादिभिश्च प्रतिगृहीता, तेषां गोत्र-
द्वयेनापि संस्कृतत्वाद्वयामुप्यायणत्वं परन्त्वनित्यम्—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० १३०) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

सदृशं यं प्रकुर्वीति गुणदोषविचक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥—इति मनु (पृ० ३७४,
६।१७६) वचनम् ॥२॥

स च पुत्रत्वकारस्य पिण्डप्रदः, दिजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव—इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (३१ ख ६ पं०) लिखनम् ॥३॥

चूडाया यदि संस्कारा विजगोत्रेण वै कृताः ।

दद्याद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ७४)
दत्तकचन्द्रिकादि (दच० पृ० १६) ग्रन्थघृतकालिकापुराणवचनम् ॥४॥

चूडाया इत्यतद्गुणसंविज्ञानवहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः,
शूद्रस्य तु विवाहादिलाभः—इति दत्तकचन्द्रिका (पृ० २१) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥५॥

वस्तुतस्तु यस्य पञ्चदशवर्षपर्यन्तं दैवशाचूडादिसंस्कारो न जात-
स्तस्य यथाविधि गूहणोत्तरं संस्कारा अतिपत्येरक्षित्यादिवचनात् प्रायश्चि-

त्तात् महाव्याहृतिहोमं विधाय चूडादिसंस्कारे कृते दत्तकत्वं सिद्धत्वेव ।
न चोर्ध्वं त्वित्यादिवचनविरोध इति वाच्यम्, तस्येष्टिपदभ्रवणात् सामिक्र-
परत्वात् । पञ्च च पञ्च च पञ्चचेत्येकरोपात् पञ्च तेषां पूरणः पञ्चमः
पञ्चदश इति यावत्, तस्मादूर्ध्वं न दत्ताद्याः सुता इत्यर्थाच्च । एवञ्च
पञ्चमवर्षपदं स्वस्वजात्युक्तोपनयनकालोपान्त्यवर्षपरम् । उर्ध्वन्तु पञ्चमा-
द्वर्षादित्यादिवचनारम्भस्तु ब्राह्मणादीनां षोडशादिवर्षव्यावर्तनाय-इति
शुद्धिचन्द्रिकाग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥ (१)

पञ्चमप्ररनस्योत्तरम्—

ज्येष्ठपुत्रत्वेन तस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तिगोरखपुरप्रदेशचलि-
तरीत्या राज्ञ उद्योतनारायणसिंहस्यान्येषां राज्ञां साक्षिणां साक्ष्येण च
यथा निश्चित तेन दूरीभक्तितुं शक्नोति, तद्देशचलितरीतिसाक्ष्यपस्था-
पितवृत्तान्ताभ्यां गोरखपुरप्रदेशे ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधीकरणस्य सिद्धत्वेन,
तद्देशीयव्यवहारविरुद्धाया ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तेः शास्त्रानु-
सारेणापि दूरीकृतत्वस्यार्थसिद्धत्वात् तद्देशीयव्यवहारविरुद्धस्य कस्यचिदपि
कर्माणः शास्त्रानुसारेण तस्मिन् देशे कदाचिदपि भवितुमशक्यत्वाच्चेति ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान्श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम्
(मनु-८४१) ॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक्प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रहृम्यतेऽन्यथा ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थपृतनृहस्तवचनम् ॥२॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥३॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थभृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ४ ॥ • ॥ • ॥ • ॥

पष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

राजा अरिमहानसाहिसंशक्तेन लिखितं दानपत्रजातं तत्पत्न्या राज्या भ-
दनकोमराख्याया यावन्नीवं तत्कुलोपयुक्तप्रासाञ्छादनोपयुक्तावरयकविषवा-
धर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तधने सिद्ध्यति, प्रभुसमर्पितपत्रजाते राज्ञोऽरि-
महानसाहिसंशक्तस्य चतुर्णां भ्रातॄणां मध्ये स्वकुलोचितव्यवहारानुसारेण
ज्येष्ठत्वेनावशिष्टानां प्रवाणां भ्रातॄणां पृथक् पृथक् स्वकुलोचितप्रासाञ्छाद-
नोपयुक्तातिरिक्तराज्ये असाधारणस्वत्वेनासाधारणस्वत्वात्पदीभूतस्य राज्य-
स्य भ्रात्रन्तरसाधारण्याभावावगमेन तत्र भ्रात्रादीनामनुमतिं विनापि दाना-
द्यधिकारित्वेन सिद्धेर्निष्पत्स्युहत्यात् । एवं तदानस्य सिद्धौ सत्यां राज्ञापृथ्वी-
पतिसाहिसंशक्तः पुत्रप्रतिनिधितां विनापि दानानुसारेण दानकृतधनस्याधि-
कारी भवितुं शक्नोति । तदानेन प्रदोतुः स्वत्वोत्पादात्सप्तमप्रश्नस्योत्तरम-
र्षादुपरिलिखितोत्तरजनैरेव पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति गोरक्ष-
पुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तक-
चन्द्रिकाशुद्धिचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बमहत्त्ववसनादेयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादि (पृ० ३२४)
ग्रन्थभृतबृहस्पतिः पृ० १३७)वचनम् ॥ १ ॥

विभक्तेषु तूत्तरकाले विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्याय
सर्वाभ्यनुज्ञा न पुनरेकस्थानीभरत्वेन, अतो विभक्तानुपतिव्यतिरेकेणापि
व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मित्ताक्षरा (पृ० २००)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्वदाननिश्चितपूर्वक्रमरस्वत्वापादनं दानम्—इति मित्ताक्षरादि (सुबो-
धिनी पृ० ७४१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनञ्चेति ॥ ४ ॥०॥०॥०॥

अंगरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानवरीमालीयस-
प्तमदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था
रुत्तेति ॥—

श्रीज्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१११.—रोवकारि सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख
२६ दिजम्बर शान १८३१ साल मोतामेक शान १२३८ सालेर १२
पौष सोमवार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ऐ आदालतेर
हाकिमेर बैठके वदनचन्द्रहालदार ओगायरहवनाम रामचौद-
मुखोपाध्याय सापेलानेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ तरफ-
छानिर उकिल सदासुकपण्डित, हाजिर अइल । सन १८३१
शालेर १५ शेतम्बर तारिखेर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत
कटवरट धरनएल शेली साहेवेर हुकुमानुसारे सापेलानेर खास
आपीलेर सओयाल ओ गायरह ऐ मोतालकेर कागचसकल
अद्य आमार बैठके दरपेप हइया हाकिम मौछुफेर तारिख मज-
कुरेर रोवकारिर लिखित राय ओ सन १८३१ सालेर २८ शेतम्बर
तारिखेर दृष्ट करा तरफछानिर सओयालेर सहित दृष्टे आइल ।
तरफछानि जेलार मुद्दाइ जाहेर करे जे राधाकान्तहालदार मोत-
ओकफार स्त्री मौछुम्मात सुभद्रादेव्या खासपुर परगानार कालीघाट
ग्रामेर मोट सात बिघा देवसेवार जमीर मध्ये एक बिघा ओ
सालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला कालि-
ठाकुरानिर सेवा सहित आपन स्वामीर संगार्थे मुद्दाइके दान-
कुरिग्राछे । यद्यपि स्यात् जेलार फयदलार लिखित जेला चर्चिप
परगानार पण्डितेर व्यवस्था भजमुने प्रकाश आछे—ये देव-
सेवार जमी ओ सेवार पाला सेवा सहित अगिरा खीर दान

करिवार क्षमता आछे, किन्तु जेलार मुद्दाआलेहोम वदनचन्द्र-
हालदार ओ गायरह छाएलान् जाहेर करे ये अवीरा ओर
ठाकुराणीर पाला ओ देवसेवार जमी दान करिवार क्षमता
नाइ । ए जन्य हुकुम छादेर हओमेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितेर
स्थाने व्यवस्था लओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ
रोवकारिर नकल ओ राजचन्द्ररायेर मोकदमार दाखिल हओया
ए आदालतेर साबैक पण्डितेर व्यवस्था नकल, ये एइ दर-
खास्तेर सामिल आछे, एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर
जबाब व्यवस्था मजकुर दृष्ट करिया एक सप्ताह मध्ये दाखिल
करेण, ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय ।

यद्यपि स्यात् अवीरा ओ मोट शात विधा देवसेवार जमीर
मध्ये मओजी एक विधा जमी ओ सालियानापाच दिवस
पालार मध्ये एक दिवस पाला सेवा सहित स्वामीर स्वर्गार्थ
कोन—वैक्तिके दान करे, ए प्रकार दान वाङ्गलादेसेर शाखा
नुसारे यथार्थ बटे कि ना इति—

श्रीर्जयतिराम्

एतज्जम्भाधिकरणाधिपतिभूमिपुत्रअलकमुन्दरगससाहेवधर्माधिकरणलि-
खिताङ्गरेओशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दोयदिशम्बरमासीयषड्-
विंशतिदिवसीयविचारप्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेव तत्समर्पितराजचन्द्ररा-
यसम्बन्धिविवादविषयनिविष्टव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रञ्च यदेतदन्दीयजानवरीमासी-
यपत्रमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकैलाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं
तदबलोक्य यादराबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कान्चिदवीर स्त्री सप्तविंशतिशब्दप्रतिपाद्यदेवसेवासम्पादकभूमिसमु-
दायान्तर्गतैकविंशतिशब्दप्रतिपाद्यभूमिमेव वार्षिकपञ्चदिवसीयपालाशब्द-
प्रतिपाद्यान्तर्गतैकदिवसीयपालाशब्दप्रतिपाद्यञ्च देवसेवासहितं स्वपत्या
स्वर्गार्थं कर्मोच्चैश्चतुती स्यात्तदा तद्दानं यथार्थमेव भवति, देवसेवायाः देव-
सेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च सेवाइतरशब्दान्यस्यायत्तत्वेन सेवाइतरशब्द-

वाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रतीप्रहितस्य मृतस्य परशुद्धने जाताधिकारिण्या उपरि-
लिखितप्रकारकृतादृशदानकर्त्र्याः पत्न्यास्तादृशदानविषयीभूतदेवसेवायाः
देवसेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च तत्सम्पादकदेवत्रभूमेः समर्पणं विना
अनिष्ठावत्वेन तत्समर्पणरूपदानस्याप्यावश्यकत्वेन च यथोत्तराधिकारि-
त्वेन सेवादृशब्दवाच्यस्य पत्न्यास्तादृशदेवत्रभूमौ स्वत्वम्, अर्थात् तत्संरक्ष-
णावेक्षणदिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देव-
सेवादिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तथैव तथा पत्न्या कृतदानेन
तादृशं स्वत्वं प्रतिग्रहीतुरपि भवितुं शक्नोतीत्यत्र बाधकभावाद्-इति यद्वा-
देशचलितदायभागश्लोकप्रतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसम्-
हदायरहस्यव्यवस्थासर्वेषु विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसंरिखी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यवचनम्
॥ १ ॥

अपुत्रघने पौत्रप्रपौत्रागावे साध्याः पत्न्या अधिकारः, तत्रापि भर्तृ-
स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं भक्त्यो चाधिकारः, एतदति-
रिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरपिक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थासंवग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्यत्वनिवृत्तिपूर्वकारस्वत्वापादनं दानम्—इति विवादभङ्गार्थ-
(१ विवा० ३१८ ख)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विक्रेतुर्यादृशं स्वत्वं केतुस्तादृशमेव स्वत्वं कयाजायते—इति
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग (पृ० १०)टीकालिखनञ्चेति ।

एतदन्वेषजानवरीमासोद्यैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयाधि-
कयामद्वयानन्तरं मयेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११२—सदर देश्रोयानि आदात्तेर पण्डितेर-प्रति प्रश्न—

भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर मरणानन्तर ताहार उत्तराधिकारिगण बहुकालावधि ऐवस्तुते भोगवान् धाकित्ते भरणार्थं वस्तुते भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर उत्तराधिकारिगणेर सत्य लोप ह्य कि ना ? इति—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रनातं यदहरेबीशन्दप्र-
तिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयजुलाइमासीयोनिश्रद्धिवसोयशुकवासरे
घटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशभोगो जातस्त-
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कयाचित् कन्यया स्वपितुः सकाशाद्भरणार्थं किञ्चित् स्थावरं
घनं प्राप्तम्, तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिर्बहुकालावधिकं तदेव वस्तुस्व-
भोगास्पदीभूतं कृतं स्यात्तत्र यदि तया व्यक्त्या तद्वस्तु केवलं स्वजीवनपर्य-
न्तमेव भरणार्थं प्राप्तं स्यादेवं तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिः प्रभुसम-
र्पितपत्रावगतसम्बन्धेन प्रीत्या वा बहुकालपर्यन्तं तद्वस्तु भुक्तं चेदपि
तेषां तत्र स्वत्वानुत्पादेन स्वत्वसामान्याभावस्य विद्यमानत्वात् स्वत्वध्वंसो
दूरपास्त एव, एतादृशभोगस्य स्वत्वोत्पादकत्वाभावात् स्वत्वोत्पादकस्य,
दानाद्यागमस्यात्राप्राप्तत्वाच्च, सम्बन्धप्रयुक्तभोगस्य प्रीतिप्रयुक्तभोगस्य, वा
स्वत्वे प्रमाणत्वाभावाच्च । यदि च तया व्यक्त्या तद्वस्तु पुत्रपौत्रादिकमेण
भरणार्थं प्राप्तं स्यात्तदा तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामपि तादृशभर-
णार्थप्राप्तिरूपागमेन तादृशभरणोपयुक्तं स्वत्वमुत्पन्नं नष्टं भवितुं न
शक्नोति, वरं बहुकालावधिकतादृशभोगेन तादृशभरणोपयुक्तस्वत्वोत्पाद-
कस्तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपागमो दृढीभूतः—इति बह्मदेशचलितमनुव्यवहार-
मानुकाव्यवहारतत्त्वदायतत्वविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुवचनम्

(पृ० ४२२, १०।११५) ॥१॥

अस्वामिना तु यद्मुक्तं गृहक्षेत्रापणादिकम् ।
सुहृद्ग्रन्थसकुल्यस्य न तद्भोगेन हीयते ॥-इति दायतत्त्वव्यवहार-
तत्त्वादि (पृ० ५४) ग्रन्थधृतवृहस्पति (पृ० ७५) वचनम् ॥२॥

आगमेन विशुद्धेन भोगो याति प्रमाणताम् ।

अविशुद्धागमो भोगः प्रामाण्यं नैव गच्छति ॥-इति व्यवहारमातृ-
कादि (पृ० ३४५) ग्रन्थधृतनारद (नास्मृ पृ० ७०) वचनञ्चेति ॥३॥

अत्र भरणार्थं तद्वस्तु तथा व्यक्त्या केन प्रकारेण केन नियमेन वा
प्राप्तमिति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्जातुमशक्य एव तत्पत्रजातेषु प्रमाणभूतं
दानपत्रादिकं न प्राप्तमत एव व्यवस्थायां प्रकारद्वयं लिखितमिति
निवेदनम् ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयैक-
विंशतिदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे घटिक्रैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्ज्जपतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११३—सदर देओयानिर पण्डितेर पर सओयाल—

जद्यपि एक बेक्की हिन्दुर दुइ कन्या धाके । ताहाते एक कन्या ।
एक पुत्र आपन गर्भेर राखिया आपन पितार साक्षाते मृतु हए ।
ताहार पर दे बेक्की आपनार द्वितीय कन्यार साक्षाते मृतु हए ।
से भते मृत बेक्कीर तेक वस्तु वर्तमान कन्याय अरसे, कि ताहार
दौहित्रके, जे ताहार माता पुत्र राखिया आपन पीतार वर्तमाने
मृतु हइयाळे, ताहाके मृत बेक्कीर तेक वस्तु कहीछु अरसे
कि ना । जद्यपि अरसे तवे की प्रमाण ? ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशता-
ब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशभोगो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्रैकस्य कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य दुहितृद्वयमासीत्, तयोर्मध्ये एका दुहिता स्वगर्भोत्पन्नमेकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने स्वपितरि मृता, तदनन्तरं स एव व्यक्तिविशेषो परस्यां दुहितरि विद्यमानायां मृतस्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधनं विद्यमाना दुहिता, या प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण पुत्रवत्यवगम्यते, सा प्राप्तुं शक्नोति, तस्यां पुत्रवत्यां दुहितरि विद्यमानायां सत्यां स च दौहित्रो यस्य माता विद्यमाने स्वपितरि मृता प्राप्तुं न शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रवत्या दुहितरि जीवन्त्यां सत्यां कस्यचिदपि दौहित्रस्य विद्यमानमातृकस्य मृतमातृकस्य वा मातामहधने नाधिकारः— इति बह्वदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्व-दायक्रमसंग्रहविवादमङ्गार्षादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थघृत-याशब्दस्य (पृ० २१६।२।१३५)वचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी अष्टक्यं गृहीयात्तदभावे चोदा—इत्युपरि-लिखितग्रन्थघृत (दाकं सं० पृ० ३)पराशरवचनम् ॥ २ ॥

कुमार्यभावे चोदायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(या)श्च, (अगिन्याः) तुल्योऽधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति, स्वपुत्रद्वारेण पार्व्वणापिण्डदातृतया तयोरुपकाराविशेषाच्च—इति च, सर्वदुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसंग्रह (पृ० ४)ग्रन्थलिखन-ञ्चेति ॥ ३ ॥

इद्वार सन्धोयाज पापिते छिल, एइ निमित्ते एइ पत्रे लेखा-रोल ना ।

अक्षरेष्वीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशरातान्दीयफेवरवरोमासीयच-तुर्यदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेत ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जनयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमित्रेण

११४ सञ्जोश्वाल—आमार धात. हृद्धार कारण ए विसपर जिह्वासा करा आविरवक हृद्दल जे जद्यपि एक वेक्की हिन्दुर दुइ-पुत्र थाके । ताहाते एक पुत्र आपन पितार साक्षाते एक पुत्र जिव-मान राखिया मृत्तु ह्य । ताहार पर ऐ वेक्कि आपन द्वितीय पुत्र थो मृत पुत्रेर बालकेर साक्षाते मृत्तु ह्य । तवे ऐ मृत वेक्कीर तेक्त घन काहाके अर्रो इति ।

प्रमुष्मपितविचारपत्रे यत्प्रश्नान्तरं तदपलोक्य यादृशमोषो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्याचित् हिन्दूजातीयस्य व्यक्तिविशेषस्य पुत्रद्वयमासीत् तपोर्मध्ये एकः एकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने पितरि मृतस्तदनन्तरं सोऽपि व्यक्ति-विशेषो द्वितीये पुत्रे विद्यमाने मृतपितृकपौत्रे च विद्यमाने एति मृतस्तदा तस्यैव धनिनो मृतस्य तदनस्य र्धम द्विधा विभक्तस्वैकोऽशो विद्यमानपुत्र-स्यापरोऽशो मृतपितृकपौत्रस्य भवति । अत्र विशेषतः शास्त्रानुशया अघो-लिखितप्रमाणेष्वेव स्पष्टीकृतत्वाद्—इति चङ्गदेशचलितदायभागधौकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानु-सारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविमक्तो मृते पुत्रे तत्सुतं ऋक्ष्यमागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात् ।

त एवारास्तु सर्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभेत तत्सुतो वापि निशुचः परतो भवेद्—इति दायतत्त्वविवाद-भङ्गार्थवादिग्रन्थकृतकात्यायनवचनम् (कास्म० पृ० १०३)

यथा पितामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्सुत्राणां भवि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः, पार्व्यणविधिना पितृददानेन

* भिन्ने भेदे—इति धर्मसौत्ररथःपठः; अविमन्नेऽनुजे भेदे, इति वाग्ययनश्रुतिपठः ।

द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषाद्—इति दायभाग, पृ० २६) ग्रन्थलिख-
नम् ॥ २ ॥

मृतपितृकर्मोत्पत्तपितृपितामहकर्मपौत्रयोः पुत्रेण सह तुल्याधिकारः,
तेषां पार्ष्वण्यपि एव दातृत्वेनोपकाराविशेषाद्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० २)
ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एद्वार सञ्चोयाल पापिते छिल, एइ निमित्ते एइ पत्रे लेखा-
गेल ना ।

अङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकशतशतान्दीयपेत्तरवरोमासीयच-
तुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११५ सदर देञ्चोयानि आदालतेर पण्डित उपर सञ्चोयाल—
लं २ खास आपील शन १८३० साल—

मथुराराय ओ लक्ष्णाराय
राजुपाइक

आपिलायटान
रठ्पाडण्ट

१ दफा

गुरुप्रसाद नामक एक व्यक्ति अपुत्रक कारण छि, वर्त्तमाना
थाकिते ओ आपनार सकल विषय दानपत्रेर लेखार सरत मते
अन्य व्यक्तिके दान करिते पारे कि ना, आर दान करिते शांखा-
नुसारे से दान जथार्थ हइते पारे कि ना ?

२ दफा—

दानेर परे गुरुप्रसाद मजकुरेर मृत्यु हइते परे यद्यपि ये व्यक्ति
दान पाय से दानपत्रेर लेखार सरत मते गुरुप्रसाद मजकुरेर
अग्निकार्य ओ धादादि करिया आर उदार छिर अन्न-वस्त्र दि यो
याके, तवे दान मजकुरा यथार्थ हइते पारे कि ना ?

३ वक्रा—

गुरुप्रसाद मज्जकुरार ऐ प्रकार दान करिल्ले परे सेइ दानेर द्रव्यादि अन्य कोन व्यक्तिके कवालार द्वाराय विक्रय करिते परे कि ना इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमार्चमासीद्योनविंशतिदिनसम्बन्धि-
शनिवासरे यामद्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो बातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्गुरुप्रसादनामा व्यक्तिविशेषो निःसन्तानत्वेन हेतुना विद्यमाना-
यामपि पत्न्यां स्वस्वत्वात्पदीभूतसमुदायधनं प्रभुसमर्पितदानपत्रलिखितनि-
यमेनान्यस्मै दातुं शक्नोति । अथ च कृते च दाने शास्त्रानुसारेण तद्दानं
यथार्थं भवति, शास्त्रानुसारेणैतादृशदानसिद्धौ बाधकामावादिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बमक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते ।—इति विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थ-
(१ विम० ४४८ क)धृतवृहस्पति(पृ० १३७)वचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ।—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानानन्तरं तस्यैव गुरुप्रसादस्य मरणे सति दानग्रहीत्रा दानपत्र-
लिखितनियमानुसारेण तस्यैव गुरुप्रसादस्य अग्न्यादि सम्पाद्य दाहादिकार्य्यं
श्राद्धादिकार्य्यञ्च कृत्वा अथ च तत्पत्न्या प्रासाञ्छादनादिकं दत्तमभूत्,
तदा तद्दानं यथार्थं भवितुं शक्नोति शास्त्रानुसारेण सोपाधिदानस्योपाधि-
सिद्धौ सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोच्चारं प्रमाणत्रयम् ॥३॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादमङ्गार्यवग्रन्थलिखनम्
॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्

स एव गुरुप्रसादस्तादृशदानकरणानन्तरं तद्दानकृतद्रव्यादेः अन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयपत्रद्वारा विक्रयं कर्तुं न शक्नोति प्राथमिकतादृशदानकरणेन गुरुप्रसादस्य तद्द्रव्ये यावज्जीवं दम्पत्योर्भरणपोषणायुपयुक्तस्वत्वातिरिक्तस्वत्वस्यार्थादानविक्रयाद्युपयुक्तस्वत्वस्याभावेन प्राथमिकदानानन्तरं तत्कृतविक्रयस्यास्वामिकृतत्वेन, अस्वामिकृतविक्रयस्यासिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागभ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामनुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—”

अत्र प्रमाणम्

तथा च पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशक्तस्य दाघातोः—इत्यादि भ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(पृ० ४) दायभागटीकालिखनम् ॥ १ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इतिमनु(पृ० ३०६।
८।१६६)वचनम् ॥ १२ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्तयेद्—इति विवादमङ्गार्यवादिग्रन्थ(१ विवा० ३१७ ख)धृतकात्यायन(कास्मृ० ६१२, पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

ः आपरेलमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिषण्निवासरे दत्तयं मया व्यवस्था ॥०॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सदर देशोयाणी आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

११६—एक व्यक्ति अवीरा स्त्री आपन स्वामीर परकालेर क्रिया कर्मेर खरचेरदेना परिशोध प्रयुक्त स्वामीर उत्तपाधिका-रीगण वर्त्तमाने देवत्र भूमि देव सेवा समेत टाकार परिवर्त्तन दान करिते पारंकि ना । आर ताहा सिद्ध हय कि ना ? इति ।

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीप-मान्चर्ममासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिशनियासरे यामद्भयानन्तरं ममा दातं तद्वलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥ ० ॥

एका काचिद्वोर स्त्री स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थव्ययपरिशोधनार्थं पत्युस्त्तराधिकारिणु विद्यमानेषु देवत्रभूमि राजतमुद्राविनिमये दातुं न शक्नोति, एतं तद्दानं न सिद्ध्यति, देवत्रभूमौ देवभित्तानां केनाश्चिदपि स्व-त्वामावेन दानायोम्पत्वात् । देवसेवायाश्च सेवायितशब्दान्यस्यायत्तत्वेन सेवायितशब्दान्यस्य पुत्रपौत्रप्रगौरहितस्य मृतस्य पत्युरंशे उत्तराधि-कारित्वेन जाताधिकारा पत्नी । यदि राजतमुद्राविनिमये स्वपतियोग्यांशदेव-सेवादानमन्तरेण स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थव्ययपरिशोधनं कर्तुंमशक्ता स्यात्तदा तदर्थं स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवाया राजतमुद्राविनिमये दानं कर्तुं शक्नोति, तद्दानञ्च सिद्ध्यति । तत्र च द्रव्यसाध्यदेवसेवाया द्रव्यं विनाऽनिष्पाद्यत्वेन स्वपतियोग्यांशदेवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेत्त-णादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देवसेवाकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तस्य देव-सेवान्ययानुपपत्त्या संपर्पयां भवितुमर्हति, यतः सेवायितशब्दान्यस्य सम्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणो वा देवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संर-क्षणावेत्तणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा देवसेवान्ययानुपपत्त्या क्षमता-स्त्येव । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतैकविंशत्यद्वाङ्कितदेवसेवार्पण-
—हेवावेल एञ्चोण—संशकपत्रे अस्मत्स्वत्वे त्वं वर्त्तमानो भूत्वा-

श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवां भूमिसहितां स्वायत्तीकृत्य पुत्रपौत्राद्युत्तराधिकारिक्रमेण तद्भूमेरुपस्वत्वादिकमादाय श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवां कुरु इति लिखनेन स्वपतियोग्यांशरूपाया देवमेवायास्तत्सेवासम्पादकदेवप्रभूमिसहिताया राजतमुद्राविनिमये श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवार्थं समर्पणमेव स्पष्टीकृतम्—इति बङ्गदेशचलितमनुकुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

देवस्यं ब्राह्मणस्यं वा लोभेनोपहिंनस्ति यः ।

स मापात्मा परे लोके शृङ्गोच्छ्रियेन जीवति—इति मनु(११।२६)

वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति कुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली(पृ० ४३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायमागादिग्रन्थघृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

भर्तुरौर्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभागदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

विकेतुर्यादशं स्वत्वं क्रेतुस्तादृशमेव स्वत्वं क्रयाज्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयत्रयोविंशतिदिनसम्बन्धिरानिवासरे इत्थं भयाव्यवस्था ।

श्रीर्ज्जपतितगम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

११७ प्रमुक्तप्रश्नमवगत्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यप्येकस्यां पत्न्यामेकस्यां दुहितरि च विद्यमानायां विद्यमानयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितो राधाकृष्णाख्य एतद्वर्त्मोधिकरणनियुक्त-उक्लिशब्दवाच्यो मृतः स्यात्तदा तत्त्वक्तधनं यदि सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं न भवति तदा तत्पत्नीं प्राप्तुं शक्नोति । यदि च तद्धनं सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं भवति तदा तद्धने सोदरभ्रात्रोरेवाधिकारः, तत्पत्नी च यावज्जीव तद्धनाद् प्रासाञ्छादनभागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

प्रसुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यपचनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वर्ध्याते स्वामिनि स्त्री तु प्रासाञ्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यपचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११८—प्रश्नः—

यद्यपि कोनेह मृतं व्यक्तिं अवीरा पत्नी आपनं उत्तराधिकारि वर्तमाने आपन स्वामिर त्यक्त पैतृक अर्थवां निजेर अर्थात् स्त्री

धनरूपकोनह वागान आपन मृत स्वामिर विपयान्तर प्राप्त हइया ताहार रक्षार्थ आदालतेर खरचार कारण विक्रय करे तवे सेह विक्रय शास्त्र सिद्ध हय कि ना ?

प्रश्नः—

यद्यपि उत्तराधिकारि लिखित दलितेर द्वारा ये अवोदार उपरेर लिखित विपयेर दान विक्रयेर क्षमता बोध हय तवे सेह विक्रय शास्त्र सिद्धहय कि ना? ॥॥

श्रौर्ज्यतितराम

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकृतचान्ते सति तादृशविक्रयः शास्त्रसिद्धो भवति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरतस्य पत्सुद्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तस्य तदनस्याधानं विक्रयणं (च) शास्त्रानुमतं भवति । अतएत वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तदनरक्षणस्याप्यावश्यकत्वेन तदनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तदनस्य शक्तावशक्तौ वाभय-धैव स्वकीयस्त्रीधनस्य चाधानं विक्रयणं (च) शास्त्रसम्मतं भवतीति निष्पत्स्युर्मेव ।

दिलीपप्रश्नोत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्यवसन्नमिति पृथक् न लिखितम्—इति-वङ्गदेशचलितदायभागविवादमन्त्रार्थवादिग्रन्थानुसारेणो व्यवस्थेति ॥॥

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाराक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादकं यद् यद्वा कर्म करोति मृतभर्तृकापि स्वराक्षनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—इति विवादमन्त्रार्थवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागदि-
(पृ० ७६)ग्रन्थघृतकाल्यायर्ना पृ० ११०, ६०६)वचनञ्चेति ॥३॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११६—आदालते देशोयानि जङ्गल महाल सन १८३१ साल
ता० १६ मेइ—

सञ्चोयाल

जञ्चोयाव

कोनो कनज ब्राह्मण तिन चारि पुरुष वाङ्गला देसे वास करिया
विवाह आदि क्रिया कलाप मिताद्वाराशास्त्रानुसारे करिया आसिते-
छिल, एवं वाङ्गला देसे किछु जमिदारि कालेकटारि खरिदा ओ
दोपरा तानुक ओ गयरह सोपार्जित करिया कथोक दिन भोगवान
थकिया दस एगार बत्सरेर अधिक हइवेक अवर्त्तमान हइयाछे ।
ऐ चारि पुत्र आपन पितार मरणान्ते कथोक दिन एक अत्रे थकिया
पुथक अर्त्त हन । किन्तु यदि जमिदारि गयरह एजमालिते
थाकिया मालगुजारि ओ सरञ्जामि ओ संवा ओ सदावर्त्त
खरच पत्र वादे वाकि गुनफा चारि भ्राताते समान हिस्सा लइया
थाके, ओ चारि भ्रातार मर्दें एक भ्राता आपन नाओलद
अर्थाद् अघिरा एक कविला राखिया अवर्त्तमान हय । तवे शास्त्र-
मते फौती भ्रातार, अर्थात् ये भ्राता मरियाछे, ताहार मतरुका वस्तु,
जाहा चिन्हित ना हइया एजमालिते आछे, ऐ सफल वस्तुते
धनाधिकारि फौति व्यक्तिर भ्रातारा, कि ताहार कविला हइते
पारे ॥

२—सञ्चोयाल—

यदि चारि भ्राता वर्त्तमाने जमिदारि गयरह एजमालिते
राखिया चारि चारि आना जमिदारिर खजनार टाका आपन

२ हिस्सों प्रजागणैर पास उसुल तहशील करियाथाके, तवे शाखानुसारे उपरेर लिखित ओयारिस्तान मध्ये धनाधिकारि कविला कि भातारा हइते पारे—इहार जओयाथ शाखानुसारे लिखिया ए आदालते पाठाइवेन॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिश-
निवासरे पादोनघटिकाचनुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति यदि चतुर्भिर्भ्रातृभिः कान्यकुब्ज-
ब्राह्मणजातीयैः पुरुषचतुष्टयावधि पञ्चपुरुषावधि वा वज्रदेशनिवासिभिः
पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण स्वकीयविवाहादिक्रियाकलापादि-
कर्म कुर्वन्निः पृथग्नैः साधारणपैतृकपैतामहसराजकरस्थावरधनैः
साधारण्येन राजकरदानराजाशयाऽवश्यकराजदण्डादिदानदेवसेवादि-
सदाव्रतादिकर्म कुर्वन्निस्तत्कर्म न्ययितावशिष्टजन्मघनं विभक्त्य
प्रत्येकं तस्य समानांशो गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्णां भ्रातृणां च मध्ये एकः
कश्चित् पत्नीमेकां संरक्ष्य पुत्रपौत्रप्रगौरहितो मृतश्चेत्तदा तदीयविभक्त-
पैतृकपैत.महधनांशो तदीयस्योपाजितासाधारण्यधने तत्पत्न्येवाधिकारिणी,
न तु भ्रातरः । तदीयविभक्तसाधारण्यसराजकरस्थावरधनांशो च तद्भ्रतर
एवाधिकार्यो न तु तदाज्ञी । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन
स्योपाजितासाधारण्यधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जंघं तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासा-
च्छादनोदेरावश्यकविधवाधर्माद्य.चरणस्य वा निर्व्वाहो भावतुं न शक्यते
तदा भृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारण्यसराजकरस्थावरधनांशादधि-
यावज्जीव तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्मा-
द्य.चरणनैर्वाहोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवतीति ॥—

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥

तत्पुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाशुवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरामन्यलिखनम् ॥२॥

स्वर्थाते स्वामिनि स्त्री तु प्रासाञ्छादनभागिनी ।

अविभवते धनांशे तु प्रमोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि विद्यमानैश्चतुर्भिर्भ्रातृभिः सराजकरस्थावरादिधनं साधारणं रक्षित्वा प्रत्येकं तत्सराजकरस्थावरोपस्वत्वस्य राक्षतमुद्रात्मकस्य स्वस्वांशरूपश्चतुर्थांशः प्रजानां तन्निधौ गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्थां भ्रातृणां च मध्ये मृतस्यैकस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य विभक्तपैतृकपैतामहधनांशे स्वोपार्जितासाधारणधने च तत्पत्न्येवाधिकारिणी, न तु भ्रातरः; अविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशे च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो, न तु तत्पत्नी । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासाञ्छादनादेरावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणस्य वा निर्वाहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशादपि यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासाञ्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥ ३ ॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वान्यानां तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरादि ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदन्दीयजुनमासीयदशमदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे दत्तं मया व्यवस्येति ।

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रं

१२०—सञ्जाल आदालत देश्रोयानी कमिसनरि आतराफ मसरक जिला रङ्गपुर यनामै पण्डीताने सदर देश्रोयानि आदालत शन १८३१ इङ्गरेजि तारिख ३१ मार्चर्च मोताबेक सन १८३७ शाल वाङ्गला तारिख १६ चैत्र—

रामप्रसादचक्रवर्ति

आपीलाष्ट

पेनका ओ पचिवेत्ता

रेष्पाडष्ट ह्य

दावि ३० टाका वावत दाश दाशीर मूल्य—

एइ मोकदमाते एइ विशयेर व्यवस्था लओओ आविश्क हइया सञ्जाल करा जाइतेछे जे जादि कोन दास कि दाशी ताहार स्वामीर ताच्छल्य क्रमे अथवा अन्य कोन हेतुते पृथक थाकिया बहु काल पर्यन्त आपन उपाजित धन करणक दिन पात करे, तवे बहु काल परे ऐ स्वामिर कि स्वामिर उत्तराधिकारिर दाओो शाखानुसारे ऐ दास कि दासिर प्रति अशिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदन्दीयापरेलमासीयपड्विंशतिदिनसम्बन्धि-
मङ्गलवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदधलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिदासः काचिदासी वा स्वस्वामिनस्ताच्छील्यक्रमेणाथवान्येन हेतुना केनचित् पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं स्वोपाजितधनेन स्वनिष्वाह कृतवान् कृतवती स्याद्वा, तत्र यदि स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्त-

पञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासी भक्तदासी वा भवति तदा बहुकालानन्तरं तस्यैव स्वामिनस्तदुत्तराधिकारियो वा शास्त्रानुसारेण तदासम्प्रति दासी-
म्प्रति वा तप्राप्तीच्छा भवितुं न शक्नोति, स्वामिनो भक्तत्यागादेव तयो-
र्भक्तदासदास्योर्दास्यमुक्तैः, तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारियो वा स्वत्वा-
भावात् । यदि च स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गत-
भक्तदासो भक्तदासी वा न भवति एवं तयोर्दासदास्योः स्वस्वामिनस्ता-
च्छ्र(ील्यक्रमेणान्येन केनचिद्द्वेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं
स्वोपाजितधनकरणकनिर्वाहे सत्यपि बहुकालानन्तरमपि दास्यान्मुक्तिर्भवितुं
न शक्नोति । अतएव तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारियो वा तयोः प्राप्तीच्छा-
भवितुं शक्नोत्येव, स्वस्वामिनस्ताच्छ्रोल्यक्रमेणान्येन केनचिद्द्वेतुना वा
पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं स्वोपाजितधनकरणकनिर्वाहस्य भक्त-
दासभक्तदास्यतिरिक्तानां चतुर्दशप्रभेदानां दासदासीनां दासमुक्तिहेतुत्वाभा-
वेन पूर्ववत् तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारियो वा स्वत्वस्थानपावात्—
इति यद्देशचलितनारदस्मृतिविवादभङ्गार्णवविवादाणवसेगुदायक्रमसंग्रहा-
दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अथ प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।

अनाकालभृतस्तद्गृहाहितः स्वामिना च यः ॥

मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धेप्राप्तः पणोजितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव बडवामृतः ।

विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥ इत्युपरि लिखितग्रन्थ-

धृतनारदवचनम् नास्मृ. पृ. ६६) ॥ १ ॥

एतेषां मध्ये तु गृहजातादिचतुर्णांमात्मविक्रेतुश्च स्वामिप्रसादं विना
न दास्यमोक्षः । अनाकालभृतस्तु दुर्गिच्छे यद्मक्षितं तद्गोयुगसहितं
दत्त्वा मुच्येत । भक्तदासो भक्तत्यागात्—इति दायक्रमसंग्रहादि(पृ-
५२।५३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

आगष्टमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिबुधवाचरे घटिकैकाधिकय.मद्वयानन्तरं
दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२१—सदर देशोयानि आदालतेर परिद्वतेर प्रति प्रश्न—
सश्रोयाल—

यदि कोन छीर स्वामि प्रायश्चित्त करे, एवं ताहार वाटीते
ब्राह्मणसकले आहारादि करे, ओ आपन सरिकानेर सहित विषया-
दिर विभाग हइयाथाके, तवे ताहार मरणोत्तर ऐ विषये ताहार छि
अधिकारिणी ह्य कि ना, एवं ऐ छिर साक्षिरा उहार स्वामिर
प्रायश्चित्त करा एवं जाति पाश्रोया ये प्रकार कहियाछे शास्त्र-
सम्मत यथार्थ वटे कि ना—मिछिलेर कागजात दृष्टे यथाशास्त्र
व्यवस्था लिखिवा इति । १५ आपरेल ई १८३१ साल ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितेतिद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदे-
तदन्दीयमैमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवाचरे यामद्वयानन्तरं मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्याश्चित् द्वित्रयाः स्वामिना प्रायश्चित्तं कृतम्, एवं तद्गृहे
ब्राह्मणैराहारादिकमपि कृतम्, अथच तत्स्वामिनः स्वांशिभिः सह धनस्य
विभागोऽभूत् तदा तत्स्वामिमरणोत्तरं तत्पुत्राद्यने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-
भावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः ।
अथच तस्याः द्वित्रयाः साक्षिभिस्तस्थाः स्वामिनः प्रायश्चित्तकरणं यथोक्तं
जातिप्रातिर्वा यथोक्ता तच्छास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति बङ्गदेश-
चलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वविवादभङ्गार्थ-
वदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्येन स्वत्वनाराः प्रायश्चित्तवैमुख्ये बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६२)ग्रन्थलिलनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादि-ग्रन्थधृतयाशुबलम्भवचनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदन्दीयसितम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिनृहस्पतिवासरे घटिकैफाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैधनायमिश्रेण

१२२—लं० २६ सन १८३० इङ्गरेजी

वहमव' फएज गज़र खोदाओन्द न्यामत श्रीयुत कमिशनर साहेव आदालत देओयानि कमिशनरि आतवाफ मशावक जेला रँपूर दाभ एक वानहु ॥

आरजदास्त श्रीमोहनलाल सदर आमिन मतालके आदालत मजकुर गरिव परओर सेलामत । परगने पर्वत जोयारेर श्रीयुत राजेन्द्र नारायण चौधुरि जमिदार कृवनारायण चौधुरि' मोतफार
=) आना जमिदारि पाओयार प्रार्थनाते परगना मजकुरेर जमिदारान् श्रीअमृतसिंह चौधुरि ओ शरणसिंह चौधुरि ओ जगदीश्वरी चौधुराणी जओजे अमृतनारायण चौधुरि मोतफार मादरे गौरीनारायणसिंह चौधुरि मोतफार नामे १६२॥—) १२॥ गण्डार दाविते' नालिस करे । नथिर कागजात विवेचनाते

१. वश्यत अदाता वापरा अपि पठितुं शक्यते । २. कुडनारायण शयपि पठितुं शक्यते ।

१. दारिदे—अथ० ।

जानागेल, जे परगणे पर्वत जोयारेर सावेक जमिदार कलप-
चन्द्रचौधुरिर ३ पुत्र । ताहार एक पुत्र किशोरिसिंह निःसन्तान
मृत्यु हय, द्वितीय पुत्र फुलसिंहचौधुरिर २ पुत्र । ताहार १
एक पुत्र आजबसिंह निःसन्तान मृत्यु हय, आर १ पुत्र सुलतान-
सिंहचौधुरि । ऐ कलपचन्द्रेर पुत्र दलसिंहचौधुरि ताहार २
पुत्र अवनसिंह ओ किर्त्तिनारायणसिंहचौधुरि । किर्त्तिनारायणे
२ पत्ते ४ पुत्र । एक पत्ते राजेन्द्रनारायणसिंह ओ सरलसिंह ।
ऐ सरलसिंह सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारि
अधिकारि हइयाछे । आर एक पत्ते अर्थात् प्रथम पत्तेर पुत्र
अमृतसिंह ओ कृष्णनारायणसिंहचौधुरि । ऐ अमृतसिंह अवन-
सिंहचौधुरिर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारि अधिकारि
हइयाछे, वाकि ॥० आना, याहा कीर्त्तिनारायणसिंह मोतफार
हक, ताहार मध्ये =) आना राजेन्द्रनारायण ओ =) आना
कृष्णनारायणसिंह अधिकारि हइयाछे । कृष्णनारायण मजकुर
निःसन्तान मृत्यु हय । ताहार माता रुद्रेश्वरी ओ वैमात्रेय भ्राता
राजेन्द्रनारायण ओ सहोदर भ्राता अमृतनारायणसिंह, जे आपन
पितृव्येर पुष्यपुत्र हइयाछे, आर सरलसिंह वैमात्रेय भ्राता, जे
सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइयाछे, इहारा सकलि वर्त्तमान आछे ।
राजेन्द्रनारायण वैमात्रेय भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायण मोत-
फार =) आना दाओया राखे । अमृतनारायणसिंह पूर्वसहोदर
भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायणे =) आना अंशे आपन सन्व
वर्त्तय, एवं हेवानामा राखा ओ श्राद्धादि करा जाहेर करे । हेवा
नामा दरपेव करिते पारिलना । अतएव ऐ कृष्णनारायणे =)
आना अंशे कोन व्यक्ति अधिकारि हय-यथाशास्त्र इहार व्यवस्था
निमित्ते ओ पष्ट बुम्भार जन्ये एक कुरशीनामा एइ आरजि सह-
कारे पठाइया उमेदोयार जे हजुरेर रोबकारि द्वाराय कुरशीनामा
सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर निकट पाठाइया
व्यवस्था आनाइया ए आदालते देलाइते मरजि हय ।—इह'

आरज । इति सन १८३१ सालं इरेजी ता० ६ जुन मोतावेक
सन १२३८ साल चाङ्गला तारिख २७ ज्यैष्ठ ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदेतदन्दीयजुलाइमासीधोनत्रिं-
शद्दिनसम्बन्धिजुनयासरे घटिकादयाधिकयामद्वयान्तरं मया प्राप्तम्
तदवलोक्ष्य यादराभोगो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते ।—

प्रश्नपत्रवंशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति कृष्णनारायणसिंहस्य
मरणोत्तरं तत्पुत्राण्यकद्वयपरिमितारो यदि तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृ-
दौहित्रपितृपर्यन्तो न स्यात्तदा तन्मात् रुद्रेश्वर्या एवाधिकारः, तन्मातरि
रुद्रेश्वर्या विद्यमानायां तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजेन्द्रनारायणसिंहस्य, तत्सहोदर-
भ्रातुरमृतनारायणसिंहस्य, अर्थात् स्वपितृव्यस्यावनसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वेने-
दानीं स्वपितृव्यपुत्रस्य च तद्वैमात्रेयभ्रातृः सवलसिंहस्य अर्थात् स्वप्रपिता-
महकल्पचन्द्रचातुर्दरिकपुत्रकुलसिंहचातुर्दरिकपुत्रमुलतानसिंहचातुर्दरिकस्य
दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितामहप्रपौत्रस्य च नाधिकारः—इति वङ्ग-
देशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागीकादायकमसंप्रदिविवा-
दभङ्गार्थवाक्यादायवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतररतया ।

तत्सुतो गोत्रजो वन्धुः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाशवल्य-
वचनम् ॥ १ ॥

एतदन्दीपसेतम्बरमासीपसप्तमदिनसम्बन्धिजुषयासरे घटिकैकाधिक-
यामद्वयान्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैधनायमिश्रेण

१२३—सथोयाल—यदि एक विधवार कन्या थाके, तवे सेइ विधवा आपन स्वांमिर पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते. पारे कि ना. अथवा सेइ कन्या माता वर्त्तमाने. आपन मृत पितार पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते पारे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुप्रमपितप्रश्नपत्रं यदेतदन्दीयागस्तिमासीयविंशतिदिनसम्बन्धि-
शनिवासरे घटिकैकाधिकशामद्वये मया प्राप्त तद्वलोक्य शशशुभो वात-
स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्याश्चिद् विधवायः स्त्रियाः कन्या तिष्ठति । सा विधवा यदि पत्युः
पुत्रगौत्रप्रगौत्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तादृशस्य पत्युः पैतृकधनस्याधिका-
रिणी भवेतुं शक्नोति । तस्यां विधवायां मातरि विद्यमानायां सा दुहेता
मृतस्य स्वपेतुः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, पुत्रगौत्रप्रगौत्र-
रहितस्य मृतस्य घने शास्त्रानुसारेण पत्याः प्रधानाधिकारित्वात्, पत्या
अभव एव दुहितुरधिकाराच्च—इति बहूदेशचक्षितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादमञ्जर्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थभूतयाशुवल्क्यवचनम् ॥१॥

अनपत्यधनं पत्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्-
ग्रन्थभूतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥—

एतदन्दीय दशम्वरमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

१२४—प्रश्न—

कोन अपुत्रक खिलोक, ये ताहर चारि कन्या वर्त्तमाना, ओ ताहार मध्ये एक कन्या निःसन्ताना थाके, यद्यपि आपन स्वामिर परलोक प्राप्त हओनेर परे स्वामिर स्थावर वस्तु पुत्रवति तिन कन्यार मध्ये एक कन्यार स्वामिके, ये सेइ वेक्ति ऐ वस्तु नष्टोद्धार ओ खीलोकेर सेवा शुश्रूषा एवं पति पालनेर निमित्त आपन अर्थ व्यय ओ परिश्रमं करे, ताहारि परिधर्ते एक कन्यार सन्मति पूर्वक दान करे, एवं तत्परे द्वितीय कन्या ओ दौहित्र सकल ऐ दाने सन्मति लिखनं देय—ए रूप दान शास्त्रोक्त सिद्ध हय कि ना इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागतिमासीयविंशतिदिनसन्निघराणि-
वासरे घटिकैका षकयामद्वये मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तं
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति पतिभरणानन्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहिता पत्नी यद्युत्तराधिकारित्वेन स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनं पुत्रवतीनां तिस्रुणां
दुहितृणां मध्ये कस्याश्चिदप्येकस्याः पत्ये तत्स्थावरनष्टोद्धारं च स्वस्वत्वा-
सदीभूतद्रव्यव्ययेन तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनादिपरिश्रमकर्त्रे
च तादृशद्रव्यव्ययविनिमये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणीनां दुहितृणां दुहितृ-
नन्तरोत्तराधिकारिणां सर्वेषां दौहित्राणां च सम्मत्या दत्तवती स्यात्, तदै-
तादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्मोपरतस्य पत्यु-
र्धनस्मोत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यराज्ञौ तद्धनसम्ब-
न्ध्याधानविक्रयणादेः शास्त्रानुमतत्वेन वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनसम्बन्धि-
नष्टोद्धारस्याप्यावश्यकत्वेन तादृशनष्टोद्धारद्रव्यदानस्य तस्याः स्त्रियाः सेवाः
शुश्रूषाप्रतिपालनाद्युपयोगिद्रव्यविनिमयत्वेन च तत्सिद्धेः शास्त्रानुमतत्वत्या-
र्थसिद्धत्वात्, स्वाम्यनुत्यागस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य वा शास्त्रानुसारेण
सिद्धेर्द्विधप्रत्युहत्वेन स्वानन्तरोत्तराधिकार्यनुमत्या स्वानन्तरोत्तराधिकार्यः
नन्तराधिकार्यनुमत्या च धनस्वामिपूर्वाधिकारिकृतदानस्य शास्त्रानुसारेण

सिद्धेतिभ्रत्यूहत्वस्यार्थसिद्धत्याद्य—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादमङ्गार्षादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

यत्नी दुहितश्चैव पितरौ मातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अतएव वर्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म करोति
मृतमर्त्तृकमपि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—
इति विवादमङ्गार्षादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति,
व्यवहारोपि तथा—इति विवादमङ्गार्षादिग्रन्थलिखनञ्चेत् ॥४॥

एतदन्द-यदिशम्बरमासोपपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मधेयं व्यवस्था
इत्येति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

१२५—सञ्जोयाल—आदालते आपल कलिकाता वनामे
परिडित आदालते देञ्जोयानि सदर—

१ प्रथम सञ्जोयाल—

राममोहन तेञ्जोयारि आपन भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र, उपपत्नी ओ
साहार गर्भजात दुइ कन्या ओ एक पुत्र वर्त्तमाने आपन समुदय-
विषय उपपत्नीर गर्भजात आपन औरस पुत्रके दान करिया
सोकान्तर हइया थाके, तवे शास्त्रानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध हय
कि ना, ओ ए विधाने ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र मृत
व्यक्तिर घनाधिकारि हय कि ना ।

द्वितीय सञ्चोयाल—

यदि शास्त्रानुसारे ये दानपत्र सिद्ध ना ह्य, तवे ये मृत व्यक्ति-
भ्राता थो भ्रातृपुत्र ओ उपपत्नीर गर्भजात औरस पुत्र ओ दुइ-
कन्यार मध्ये कान व्यक्ति मृत व्यक्ति धनाधिकारि हइते पारे—
यथाशास्त्र इहार जञ्चोयाच लिखह इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतब्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिगति-
यासरे घटिकैकाधिकयामद्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि राममोहनत्रिवेदी स्वकीये ग्रहोदरभ्रातरि भ्रातृपुत्रे च विद्यमाने
सति स्वापपत्न्यां च विद्यमानायां तद्गर्भजातयोर्द्वयोः कन्ययोर्विद्यमानयो-
रेवं तद्गर्भजनिते सैकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने सति स्वस्वत्वात्स्वपत्नीभूतसमुदाय-
धनं स्वकीयोपपत्नीगर्भजाताय स्वकीयौरसपुत्राय दत्त्वा मृतः स्यात्तत्र यदि
सद्वनं भ्राता भ्रा पुत्रेण वा सह साधारणं भवति, एवं तदाने साधारण्य-
प्रतियोगिनोऽर्थात्तद्भ्रातृभ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिस्तादा तदान प्रभुसमर्पित-
प्रश्नपत्रावगतस्य विवाहसंस्कृतपत्नीगर्भजातपुत्रपौत्रप्रपीश्वरहितस्य मृतस्य
राममोहनत्रिवेदिनः प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतायाः विवाहसंस्कृतायाः-
पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवं प्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकतस्तुलोपयुक्त
विधवाधर्माशाचरणोपयुक्तातिरिक्तसमुदायधन एव यद्देशचलितशास्त्रा-
नुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च सिद्धं भवितुं शक्नोति । तेषा-
मनुमतःवमत्यामपि यद्देशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितविवाहसंस्कृ-
तायाःपत्न्याः सुगन्धानाम्न्या उपरिलिखितप्रकारकप्रासाच्छादनाद्युपयुक्ताति-
रिक्तस्नानयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति स्वेतगणयोग्ये च सिद्धं भवितुं न
शक्नोति । पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तु साधारण्यप्रतियोगिनो भ्रातृ-

भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिं विना समुदाये स्वांशयोग्येऽपि वा सिद्धं भवितुं न शक्नोति, स्वैतराशयोग्ये तत्सिद्धिर्दूरापास्तैश्च, पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणधने विभागं विना अशानर्णवाभावेन स्वांशयोग्येऽप्येकस्य स्वैतराशयनुमतिमन्तरा दानान्यनधिकारित्वात् । यदि च तद्दन मृतस्य राममोहन-त्रिवेदिनोऽसाधारणं विभक्तं वा भवति, तदा बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवमुपरिलिखितप्रकारकप्रासाञ्छादनाद्युक्त्यातिरिक्तः घनांशे सिद्धं भवितुं शक्नोति । एवञ्च सति तद्दानस्य सिद्धत्वबद्धे मृतव्यक्तैर्भ्राता भ्रातृपुत्रो वा मृतव्यक्तैर्धनाधिकारी न भवति, तद्दानेन मृतस्य तस्य दातुः स्वत्वबिच्छेदात्, प्रतेग्रहीतुः स्वत्वोत्पादाच्च । तद्दानस्यासिद्धत्वबद्धे अर्थात्तद्दानस्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तेषामनुमतिं विना तद्दानस्यासिद्धत्वे मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादानाम्, अथत् सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां द्वितीयप्रश्नात्तरलिखितप्रकारकप्रासाञ्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्ताविभक्तसाधारण्यतदंशो मृतव्यक्तेः पुत्र-नारद-पितृपर्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिन्नस्ति तदा तत्सहोदरभ्राता भवत्यधिकारी, सहोदरभ्रातरि विद्यमाने भ्रातृपुत्रो नाधिकारी भवतीति ॥ १ ॥

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेय यदतिरिच्यते—इति बङ्गदेशचलितविवादमहार्णवादिग्रन्थवृत्तम्, पश्चिमदेशचलितवोरमित्रादयादिग्रन्थवृत्तञ्च नारदवचनम् पृ० ६६ ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्ट तत्सर्वमीशास्त्रे स्वधनस्य वै ॥ इति बङ्गदेशचलितदाय-भागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः । स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति बङ्गदेशचलितविवादमहार्णवग्रन्थ (१ विवा० ३०५ क) लिखनम् ॥ ३ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वाद् एकस्यानीश्वरत्वात् सर्वाम्यनुज्ञाऽ-
वश्यं कार्य्या, विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध-
स्यैव—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

रथावारस्य समस्तस्य गौत्रसाधारणस्य च ।

नेकः कुर्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति पश्चिमदेश-
चलितधीरमिश्रोदथादिग्रन्थभृतव्यास्यवचनम् ॥ ५ ॥

स्वरवत्त्वेनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति वङ्गदेशचलित
विवादभङ्गार्थादिपश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥ ७ ॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तान्नातृपुत्रीविषयम्—इति

पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे अर्थात् तद्दान-
स्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये सति तेषामनुगतिं विना पश्चिम-
देशचलितशास्त्रानुसारेण तादृशदानस्यासिद्धत्वपक्षे प्रमुखमपितविचार-
पत्रलिखितानां मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादीनां सुगन्धानाग्नीमशु-
तीनां मध्ये धनाधिकारे अयं विशेषः । सुगन्धानाग्नी तत्पत्नी यावज्जीवं तत्कु-
लोपयुक्तप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्याधिका-
रिणी भवति । मृतस्य तस्योपपत्नी यदि मृतस्य राममोहनत्रिवेदिन उत्तर-
धिकारिणी प्रतिबूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा सापि स्वकुलोपयुक्त-
अप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च यावज्जीवं
भागिनी भवति । एवं तदुपपत्नी गर्भजातीरसपुत्रोऽपि यावज्जीवं प्रासाच्छा-
दनभागी भवति । एवं तदुपपत्नीगर्भजाते द्वे कन्येऽपि विवाहसंस्कारपर्यन्तं
प्रासाच्छादनस्य विवाहोपयुक्तधनस्य च भागिन्यौ भवतः—इति वङ्गदेश-
चलितशायभगश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्थावदायकम-

संहादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-
ध्वव्यवहारकौस्तुभादग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वप्यति भवामिनि स्त्री तु प्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते घनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति उपरिलिखित-
ग्रन्थधृतकाल्याणवचनम् ॥ १ ॥

तिर्च्वास्या व्यभिचारिस्यः प्रतिकूलास्तथैव च ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
वाञ्छवल्स्यवचनम् ॥ २ ॥

भरणां चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात् ।

रक्षन्ति शय्यां मर्त्तुश्चेदच्छिन्द्युरितरासु च—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥ ३ ॥

मर्त्तव्यास्तपरे सुताः ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृतवृद्धस्पतिवचनम् । ४ ॥

अपरिणीताजातस्य तु प्रतिपिद्धपुनत्वेनापकर्षाच्च भागिता, किन्तु
प्रासाच्छादनमात्रार्हता—इति बङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतशयभाग
टीका(पृ० १४२, लिखनम् ॥५॥

सुताश्चेपाञ्च मर्त्तव्या यावधो मर्त्तुं सात्कृताः । इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
वाञ्छवल्स्यवचनम् ॥ ६ ॥

कन्याम्यध्वपितृद्रव्याहंयं वैवाहिकं धसु—इति तत्तद्ग्रन्थ धृतदेवल-
वचनञ्चेति ॥ ७ ॥

अप्रराममोहनत्रिवेदिनो वंशे बङ्गदेशचलितशास्त्रस्य पश्चिमदेश-
चलितशास्त्रस्य वा प्रचार इति अनवगमात् प्रभुसमर्पितविचारपत्रेऽपि
बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा व्यवस्था
दातव्येति आशया अलिखितत्वाच्च बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिम-
देशचलितशास्त्रानुसारेण च व्यवस्था लिखितेति निवेदनम् ॥

एतदक्षीयदिसम्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यव-
स्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीद्विघनाथमिश्रेण

च ऋक्षकयसंविभागपरिग्रहाधिगमप्राप्तमिति व्याख्यानाच्च । मातृस्वत्वा-
स्पदीभूतद्रव्यमात्रस्य निश्चितस्त्रीधनत्वेन मातुरुर्ध्वं तदुत्तराधिकारिदुहित्रा-
दीनामेवाधिकारः । तत्र यदि अविभक्तैव माता मृता, तथापि तद्योग्यमंशं
तदुत्तराधिकारिण्या दुहित्रा विभज्य ग्रहीतुं शक्यत एव । यथा काचिन्नारी
दुहितृद्वयं रक्षित्वा स्वर्लोकमगमत्, तत्स्त्रीधने जाताधिकारयोर्दुहित्रोरवि-
भक्तैवैका मृता, अनन्तरं तद्दुहित्रा स्वमातृयोग्यभागं मातृध्वसतो विभज्य
गृह्यत एव । दायभागमते तु तद्धनस्य संक्रान्तधनत्वेन स्त्रीधनत्वाभावात्
विभक्ताविभक्तभेदानादरेणैव मातुरपरमे दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः—इति
वचनेन पूर्वस्थामिधनाधिकारिणां पुत्रादीनामेवाधिकार इति विशेषः—

प्रथमपत्रलिखितप्रकारकश्रुत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण मातृभागो नैव
भवति; प्रमाण्याभावात्, एकपुत्रस्थले पितृधनविभागस्यासंभवाच्च ।
माता “पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी”—इति कात्यायनवचनस्य
समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पती—इति नारदवचनस्य च
पितुरुर्ध्वं विभजतां माताप्यशं समं हरेद्—इति याज्ञवल्क्य-
वचनस्य च मृते पितरि जीवन्त्यां च मातरि, यदि दुर्भृताः पुत्राः पैतृकध-
नस्य विभाग कुर्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमभागं दद्युरित्यर्थवत्तया मिता-
क्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वाच्च ।

तदभावे तु जननी तनयांशसमांशिनी ।

समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशा तु कन्यका ॥

इति बृहस्पतिवचनस्य च विशेषत इति व्याख्यानेन । अर्थाद् अस्त्यर्थः—
‘पितुरभावे’.....पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती, मातरोऽपुत्रा
विमातरः एताः स्र्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इति । अनेन पुत्रैर्विभागे
क्रियमाणे एव मातृभोगाधिकारित्वप्रतिपादकत्वावगमाच्चान्यथा । यदि च
बहुपुत्रस्थले पुत्राणां विभागोपक्रमं विनापि विभागसंभावनारहिते एकपुत्र-
स्थले वा पुत्रेण सह मातृस्तुल्याधिकारित्व स्यात्तदा मातुः प्रथमाधिकार-

१. पितुरभावे—व्यस० ।

२. पुत्रे—व्यस० ।

३. पुत्रैर्विभागे क्रियमाने—व्यस० ।

(त्वात्)त्वेन पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य घने पत्नी-दुहितृ-दीहित्रा-दीनामधिकारप्रतिपादकस्य पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि याज्ञवल्क्यवचनस्य,

अननस्यस्य घनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि विष्णु-वचनस्य दत्तब्रह्माञ्जलि(६३)द्-इति द्वितीयतृतीयप्रश्रयोक्तरज्ञा तत्रैवमर्थ्यमत्रमिति पृथ(८ न) लिखितमिति-

पूर्वप्रेषितव्ययस्थापत्रस्योत्तरमस्माभिर्(६८म्), पाठशालास्थाशेषसर्वद-
शानामिहान.वेडतातुमोदितादन्यदत्त...या । तत्र चत्वारो हेतव उपन्यस्ताः ।
तान् दृष्ट्वास्माभिर्निश्चिनतम् । अस्मदत्तशास्त्रार्थवशं स्वया नादर्शि, यतो
भरदुकदेनूनामाशङ्काकोट्यै प्रविष्टानां समाधानस्य बहुशस्तस्मिन् शास्त्रार्थ-
पत्रे कृतत्वात् । दृष्टं तत्र चं चेत्ततः...तादृशोत्तरदाने भरदुकहेतुखण्ड-
नस्यापि खण्डनं भवता कृतं स्यात् । अतो बहुपकारकशङ्कासमाधानपुक्तं
पूर्वलिखितशास्त्रार्थवशं पुनरपि प्रेष्यते । तत्रस्य समाधानानां प्रत्येकं
खण्डनं कृत्वा भवता उत्तरेण सद् प्रेषिष्यते । तदा भरदत्तनुत्तरं पण्डितानां
मनोरमं स्यात् । तस्मान् सर्वेषां समाधानानां दूषणं विना भरदुत्तरम-
नुत्तरमिति । यत्रैव शास्त्रार्थपत्रे भरदुकचतुर्णां हेतूनां समाधानानि
पूर्वमेव कृतानि पण्डितैस्तथाशोधानां पुनरपि समाधानान्तराणि चाव्यन्ते-
ऽस्माभिः ॥ पातुभागो नैव भवति प्रमाणाभावादिति प्रथमो हेतुस्त्वया दत्तः
स न शोभनः ॥०॥

माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी-इति कात्यायनोप-समांश-
हारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पती-इतिनारदीय-पितुरुर्ध्वं विभजतां
नाताप्यंशं समं हरेद्-इति याज्ञवल्क्य-समांशा मातरस्त्वेवान्पुत्रीयां-
शास्तु कन्यका-इति धार्हश्यवचनसाम्यसिद्धप्रमाणानां सत्त्वात् ॥ नन्वेव-
मेभिर्वचनैः पुना यदि विभागं कुर्युस्तदा जनने स्वभागतममेकं भागं द्युरि-
त्युच्यते, न तु विभागोपक्रमन्तरा तथा भागं ग्रहीतुं शक्यते इति चेत् । एता-
दृशार्थकरणे प्रमाणाभावात् केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वाच्च ॥ याज्ञवल्क्य-
वचःस्ववर्त्तमानार्थकं * सद्यः(?)विभागं कुर्वतामित्यर्थकविभजतामित्यपद-

१. अस्मा तत्र ।

२. मनोगत-व्यप १ ।

मेव प्रमाणमिति न वचनीयम् । अनुवादविशेषणत्वेन लङ्घ्यस्य विवक्षित-
त्वात्, कातीयादियचरमु तदभावाच्च ॥ किञ्च हरेदित्यत्र विधौ लिङ्गविधिनम-
न्त्रण्ये-इति पाणिनिस्मरणात् । विधित्वं चात्यन्ताप्राप्ते प्रापकत्व... (म्) ॥
ऊर्ध्वं पितृश्च मातुश्च—इत्यादिमन्वादिवचनैर्जनकमरणोत्तरं पुत्रकर्तृक-
विभागकालः पुत्रकर्तृकविभागश्चोभौ विधीयते । एवञ्च तैत्तिरिचिविधिभिर्भ्रा-
तृणां परस्परं विभागे सिद्धे मातुर्भागो न प्राप्तः तावान् पूर्वोशः माताप्यंशं
समं हरेत् (या स्मृ० २।१२३) इत्यादिना च विधीयते । एवञ्च पति-
मरणोत्तरं स्वेच्छ्या मात्रापि पुत्रसमांशस्वांशो हर्त्तव्य इति विधेः शरीरं निष्प-
न्नम् । तत्रायं फलितार्थः । यथा पित्राद्युपरते तनयादिभिः पृथग्धर्मानु-
ष्ठानाय व्यवहारे यथेष्टविनियोगार्हस्वल्पसम्प्रदानाय जन्मनैव स्वत्वमितिमूलको
भागो गृह्यते, तथैव मात्रापि पुत्रैः सह पूर्वोक्ता तस्मिन्ने विवाह-
जन्यस्वत्वमितिमूलको भागो प्राप्त इति ॥ भवदुक्तरीत्या तु पुत्रकर्तृकमशदाने
सम्प्रदानीभूतया मात्रा माह्यमिति विधिः शरीरं माताप्यंशं समं हरेत् (या स्मृ०
२।१२३) इत्यादिना निष्पन्नं भवेत्तच्च न शोभनम् । ईदृशस्य विधेः ऋषे-
रेक्षणादनुत्पत्तेर्महर्षेरीदृशविधौ विवक्षिते विभजन्तः पितृश्चोर्ध्वं ददुर्मात्रे
समांशकम् इति — महर्षिणा पठितव्ये तथा पाठस्य कृतत्वाद्, भवदुक्तवच-
नार्थे विधित्वाभावापत्तेश्च । पितरि मृते संस्थितायां मातरि यदि दुर्बलौ पुत्रौ
भागं कुर्यातां तदा मात्रे भागं दद्यातामित्यत्र विभजतामित्यत्रस्य भवत्सम्मत-

यदि कुर्यात्समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समांशि ज्ञाः—इति याज्ञवल्क्य
वचसि पुत्रविभागकरणे प्रवृत्तस्य पत्न्या अपि विभागावगतेस्तदभिप्रायेण
दम्पत्योरित्यभिधानमिति समादधे । एवं

विभिन्नमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते ।

इति वचनं पुत्रार्थां भागग्राहकत्वं मातृद्वारेणैव बोधयति । तस्या
भागाभावेतद्द्वारेण तद्ग्राहकाणां तद्ग्रहणानां पतिः स्यादिति महा... केषः
स्मृतीनाम् । तस्माद् बहुमुनिभिर्द्वान्तिते ग्रन्थकृद्भिर्विरोधी कृते प्रमाणसिद्धे
मातृभागे प्रमाणाभावादित्येते दुर्म्मर्षाख्यानभिज्ञानानाम ग्र(?)हेतुदायकस्य
प्रकटयति । इति मातृभागे प्रमाणाभावखरडनम् । यदपि प्रलपितमातृ-
भागो नास्ति एकपुत्रस्थलेऽपि विभागस्यासम्भवाद् इति द्वितीयं कारणम्
तदपि न । एकपुत्रस्थलेऽपि विभागसम्भवस्य शास्त्रोक्तत्वात् । तद्यथा यदा
एकात्मजः पिता स्वेच्छया स्वोपाजितधनस्य चीन भागान् कृत्वा द्वावशौ
प्रतिपद्येत विभजन्नात्मनः पितेःत्यादिवचः(वचनाल्पिता)द्वौ भागौ स्वयं
गृह्णाति पुत्रादैकमग ददाति तदैकपुत्रस्थले विभागो न्वाय्य एव । एता-
दृशस्थले मितान्तरादिमते स्वोपाजितधने एव पितुरंशद्वयग्रहणसम्भवति
चीमूतवाहनादिमते तु मितान्तराद्युपाजितधने पुत्रोपाजितधने च पितुरंशद्वय-
ग्रहणम्, यतस्तेषां मते भूर्या पितामहोपात्ता इत्यादीनि वचनानि(या० स्मृ०
२।१२१) पितृकृतृकन्यूनधिकविभागनिषेधकानि, न तु पितुरंशद्वय-
ग्रहणाभावबोधकानीति विचारान्तरम् । परन्तु सर्वेषां निम्नकाराणां मते
एतादृशस्थले एकपुत्रस्थले भागो जायते; यथात्र जनको भागद्वयमेकस्मात्
पुत्रादुपाददाति तथा पत्न्यौ मृतेऽगृहीतस्त्रीधना माता तथाभूत्वात् पुत्राद्-
भागं गृहीतुं शक्नोत्येव समांशहारिणी माता—इत्यादिवचनात् ॥

नचैवं द्वावशौ प्रतिपद्येत विभजन्नात्मनः पिता इत्यादि(ना० स्मृ०
पृ० १६२)कमपि वचनमेकपुत्रस्थलातिरिक्तविषयमिति वाच्यम्, शङ्कलिखित-
वाक्यविरोधात् । तथा च शङ्कलिखितावाहृतः स हो एकपुत्रः स्याद्वै भागावात्मनः
कुर्यात् । न चैवं एकस्य पुत्र एकपुत्रः न पुनरेक एव पुत्रो यस्येति बहुमीहि-

स्तस्यान्यप्रदार्थप्रधानत्वेन पृथीतत्पुरुषाद् दुर्बलत्वाद्—इति जीमूतवाह-
नाचार्यकृतेननेनार्थेनेरुपुत्रस्थलातिरिक्तविषय^१ एवं शङ्खलिखिते बोध-
यतः पितुर्द्विभागमिति वाच्यम् । जीमूतवाहनतः प्राचीनानां नवीनानां
च ग्रन्थकर्तृणां मध्ये तु बहुव्रीहेरेव तत्र भिदान्तिजत्वात्, वीरमित्रोदये
दायभागप्रकरणे शङ्खवचनस्थैरुपुत्रपदन्याख्यावसरे तत्पुरुषस्वोकारे दोष-
दानेन जीमूतवाहनोक्तेर्दक्षितत्वात् च ॥

अतएव शुद्धिचिन्तामणौ तीर्थचिन्तामणौ मुण्डनप्रकरणे—मुण्डनं
चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः—इत्यत्र दूषणभयाद् बहुव्रीहितः
प्रबलभूतौ तत्पुरुषः कर्मधारयौ त्यक्त्वा बहुव्रीहेरेवाश्रितो महामहो-
पाध्यायवाचस्पतिमिश्रैः, इति एकपुत्रस्थले भागाभावादिति हेनुखण्ड-
नम् ॥ यद्य माता तु पितरि प्रेते पुत्रः इति कातोयस्य समांश-
हारिणी माता इति नारदीयस्य पितुरुर्ध्वं विभजतां माता इति
योगेश्वरवचनस्य च मृते पितरि मातरि जीवन्त्याञ्च यदा दुर्दृष्टाः
पुत्राः पैतृकस्य धनस्य विभागं कुर्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमं
दद्यः इत्यर्थकृतया मिताक्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वादितिमातुर्भागे तृतीयो
हेतुः सोऽपि न, मिताक्षरादिग्रन्थेषु एतादृशस्यार्थस्याप्यलाभात्, भवत्कृ-
तमिताक्षरादिग्रन्थस्याप्रमाणत्वादस्माभिरदृष्टत्वाच्च । अत्रेदं विचारणीयम् ।
यथा पुत्रादीनां जन्मनैव सामुदायिकं प्रादेशिकं चोत्पन्नमपि स्वत्वम्
ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च इत्यादि (मनु० ६।१०४) वचनानुराधेन पितुर
निच्छया दाक्षिणात्यप्राश्चात्यमैथिलसद्ग्रन्थकृन्मते पित्राजितघने, जीमूत-
वाहनाचार्य्यमते रितामहायजितघनेऽपि विभागानर्हता बोधयति । यथा वा
पत्न्यौ जीवति जायापत्योर्विभागो न विद्यते पाणिग्रहणाद्धि सहत्वम्
इत्यापस्तम्बोयेन पत्न्यः कार्य्यस्तमांशिकाः इति याज्ञवल्कीयेन (या०
स्मृ० २।१.५) च पत्या सह भार्य्यया भागो न लभ्यते; तथा अत्र
विवाहजन्यं मातुः स्वत्वं पुत्राणामनिच्छया मात्रा पुत्रेभ्यः स्वीयभागो

१. विधाय-व्यय. ।

२. ते-व्यय. ।

३. ०क्षितो व्यय. ।

४. मातुर्भागे-व्यय.

५. ०राप्यना०-व्यय.

६. ०पत्यो-व्यय.

न लभ्य इति न घोषयति, पूर्वस्थलवदत्र संकोचकवचनाभावात् ॥ प्रसुत
 मातुर्गो पुत्राणामेवास्वातन्त्र्यम्, ऊर्ध्वपितुश्च-इत्यादीनि (मनु० ६.१०४)
 वचांसि विदधति । अतएव तत्तन्निमित्तकारणमातुरग्रे पुत्रकर्तृविभागो न
 धर्म्योऽतदनुज्ञया—इत्याहुः । अतोऽसाधारणं मातुः स्वत्वं पुत्राणां
 विभागोपक्रमं विनाऽसंकोचकपिवाक्याभावेन मातुर्भागं घोषयतीति मात्रा
 पुत्रानिच्छया विभागो ब्राह्म इति । न चैवं पिता रक्षति बाल्ये हि भर्ता
 रक्षति घोषने, पुत्रास्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति—इत्यादि-
 नारदादि(ना० स्मृ० पृ० १६८)वृचनेभ्यो मातुरप्यस्वातन्त्र्यमिति विभा-
 गोपक्रमं विना तस्या न भाग इति वाच्यम् ॥ अकार्य्यकरणाद्रक्षेत्—
 इत्यर्थस्य महानिबन्धेषु दर्शनात्-स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु—इत्यादिवच-
 नानुसारेण वृथादानाद्यस्वातन्त्र्यं घोषनेत् माताप्यंशं समं हरेत्—इत्या-
 दिवचनानुरोधेन भागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यविधानाच्च
 ॥३॥ इति तृतीयहेतुस्य षट्ठमम् ॥

यच्च तदभावे तु जननी इति बार्हस्पत्यं वचः—अत्यार्थः..... ।
 पितुरभावे पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर
 एताः सर्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इत्यनेन पुत्रैर्विभागे त्रियमाणे मातुर्भा-
 गाधिकारित्वावगमादित्यनूय विभागभावनारहिते एकपुत्रस्थले, विभाग-
 सम्भावनायुक्ते बहुपुत्रस्थले, पुत्राणां विभागोपक्रममन्तरा तत्रैः सह
 मातुस्तुल्याधिकारित्वं चेन्मातुः प्रथमाधिकारि(स्त्री माता धनिनः) पात्रित्वेन
 पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादीनां दत्तञ्जलाञ्जलिता स्यादिति तुरीयहेतुवर्णनम्,
 तदप्यतितुच्छम् । एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् बार्हस्पत्यवाक्यात्तराद-
 लाभात् स्वकपोलक(स्त्रि तत्वात्, तदभावे तु जननी इत्यस्य-माता-
 प्यंशं समम्—इत्येतत्समानार्थकत्वाद्, उत्तरार्द्धन्तु पत्न्यः कार्य्याः समां-
 शिकाः इत्येतत्समानार्थकत्वाच्च । तदुक्तसिद्धान्तवदस्यापि सिद्धान्ति-
 (तत्वात्) अक्षरादलाभादेव श्रीकृष्णतर्कालङ्कारैर्यादि(२)प्युक्तमवाधे
 ...न्यसाम्यादितिन्यायात्तस्यापि ऋषिभिश्चत्वात् ॥ १ ॥ यथा

स्वेभ्योऽशम्यस्तु कन्याभ्यः प्रदद्युर्भ्रातरः पृथक् ।

स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदित्तवः,— इति मनु (६।११८) —
वचने, भगिन्यश्च निजादंशादत्वांशं तु तुरीयकम्— इति याज्ञवल्क्य-
(२।१२३) वचने च, प्रदद्युर्दत्तेत्यस्य कर्तृ तथा भ्रातृणांमन्ययात्तेषामधीन-
स्ताभ्यो दानं तथा जननीग्राह्ये भागे परतन्त्रविधायकवाक्याभावाद्द्विभागो-
पक्रमं विनापि बहुपुत्रस्थले विभागोभावस्थले एकपुत्रसत्वे, स्वेच्छया मात्रा
भागग्रहणं कार्यम् ॥ ० ॥

पत्नी दुहितरश्चैव— इति याज्ञवल्क्य (२।१२५), वचनम्, अनपत्यस्य
घनं पत्न्यभिगामि— इति विष्णुवचस्तु पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य.
यश्चदत्तस्य घने मिताक्षरादिमते पूर्वं माता समग्रधनाधिकारिणी, जीमूत-
वाहनमते पुत्रादिपित्रन्तरहितयश्चदत्तस्य समग्रधने माताधिकारिणी भवति
इत्यथ ब्रूते ॥

पितुरुच्यं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्— इत्यादि (वा०स्मृ० २।१२३)
मातृभागप्रापकवचनानि तु विष्णुमिश्रस्य पुत्रादिसत्त्वेऽपि मात्रा स्वभाग-
ग्रहणं कर्तव्यमिति घनैकदेशग्रहणं..... दधने इति मिश्रविषयत्वव्यवस्था-
पनेन चरितार्थानां वैयर्थ्याभावाद्दत्तवस्त्राञ्जलितोषपादनमशक्यं कर्तुं स्वया ।
किञ्च भवतामेव विरोधः स यथा देवदत्त. पञ्चम्यः पुत्रेभ्यो यथाशास्त्रं पञ्चभा-
गान् दत्त्वा स्वयं द्वावंशौ प्रतिपद्येत विभजेत्वात्मनः— इति (नार०स्मृ० ५०१६२)
प्रभृतिशास्त्रानुरोधेन द्वावंशौ प्रतिपद्ये विभक्तोऽभवत् । तत्र विभक्तेषु एकः
पुत्रादिदौहित्रान्तरहितो मृतः । तदने पत्नी दुहितरश्चैव— इति याज्ञवल्क्य-
अनपत्यस्य घनं पत्न्यभिगामि— इति विष्णुवचनोभ्या जीमूतवाहनमते
पिता समग्रधनाधिकारी, तदन्यमते माता समग्रधनस्वामिनी भवति । यथा
वा पितृमरणोत्तरं सर्वे भ्रातरो विभक्तास्तेष्वैकः कश्चन भ्राता पुत्रादिपित्रन्त-
रहितो ममार । तदने भ्रातृणां अधिकारोऽधिकारिक्रमबोधनेन शास्त्रेण
बोधितो भवति । भवन्मते उक्तस्थलयोः पितृभ्रातृश्च प्रथमाधिकारि-
ताः— इति (नार०स्मृ० ५०१६२) नतःपतित्वेन तेषामधिकारः स्यात् । अस्मन्मते उक्तस्थलयोर्यथायथं
पूर्वं पिता अंशद्वयाधिकारी, माता तु एकंशाधिकारिणी, भ्रातरस्तु
स्वांशाधिकारिणः ; पश्चादेतादृशस्थले पूर्वोक्ता मृतस्य समग्रधनाधिकारिणी ।

भवन्तीति विषयश्चरूपानेन भवदुभतेरेव दत्ततिलाञ्जलिता यानि । तस्माद्
घनस्य कृतस्यैकदेशरूपा व्यवस्था त्वया कर्तव्या ॥ यच्च केनाप्युक्तम् ॥
यत्र पतिपुत्रकर्तृको विभागः पत्या पुत्रेण वांशो दीयते, तत्रैव मानुर्भागो-
भवति । अत्र तु धनिना धनिपुत्रेण वा विभाग एव न कृतोऽतोमातुरंश
एव नास्ति; कृतो दुःखदादिभिलंभव्यमिति । तदधमोचीनम् । पत्या सह
भाष्याया भागप्रश्नेऽस्वातन्त्र्येऽपि पत्यु(रच्छ्रयैव तथा भागो लब्धव्य इति
तावत् सर्वेषां निर्दिष्टवादेऽपि पुत्राणां पितुरग्र इव मातृश्रेऽपि स्वातन्त्र्य(ः)-
भावस्य सर्वदेशीयप्रत्येयफलभ्यमानत्वेन मानुर्भागादाने स्वेच्छया दाने
च पुत्राणामनधिकार एव । किन्तु मातृगुमत्या पितृधने दुहितृभावे
सति जननीधने च पुत्रैर्भागो प्राप्यः, मात्रा तु स्वेच्छयैव पुत्राणामनिच्छा-
सत्वेऽपि भागो प्राप्यः । अनीशास्ते हि जीपतोः—इत्यादि मन्वाद्युक्तेः
माताप्यंशं समं हरेत्—इत्यादिविधिवोधकप्रत्ययाद्युदितस्मृतेः (१), एवं
सम्भावितमानुभागेऽपि दुहितुरधिकारो तेः । एतद्विचारस्तु तृतीयपुरीय-
हेतुखण्डने बहुतरं विचारितस्तत एवावधार्यः ॥

एवंपकारकमन्ये भवद्दूषणगणे जाते परिडितानां मातृमाह्यभाग-
विषायिणी अनुकम्पा बहुपुत्रस्थले विभागोपक्रम विना सकृत्पुत्रस्थले
(य)ऽपि मात्रा प्राह्वम् भागं बोधयन्ती मातृभागो नैव भवतीति प्रवचनुर्माता
भगिन्योऽप्य(भागि)त्वं बोधयति; यतः शास्त्राविद्वत्स्वार्थस्यापलापन(म्)ना-
ग्रहमूलकमेव भवति इत्याग्रहन्त्य(क्त्या कृतशुद्धिभिरन्यैः (रप,क्षपातैः सह
त्वयाऽवधार्यम् । भवदत्तोत्तरे शब्द(ः)शुद्धयोऽनन्वितपक्षयश्चास्माभिर्न दूषि-
तास्तद्दूपयो प्रयोगनाभावात् । अ(त्रत्यैः)“पाठशालास्थै(पाठशालास्थैश्च
सर्वैरपि गतागतशास्त्रार्थो दृष्टः, गुणशेषश्चावधारितः । अत्र शास्त्रार्थं
सर्वेषामनुमती भवतामप्यनु(म)तिरेव स्यात्, भूयसा व्यवदेश इति न्यायाद्
इत्यस्माकं प्रतिमतिः । किञ्च मूर्खाणामिव परिडितानामपि च नापरिडितेन
भवता न काप्यां, यतः शास्त्रार्थपत्रं समालोच्य प्रतिवादिभूतशास्त्रार्थ-
निराकरणपूर्वकं स्वमतं महद्भिलिख्यते इति मह(तां हर)णी तथा त्वया

न कृत इति परिद्वतानामग्रे परिद्वत्प्रयुक्तं गौरवं तत्तन्मतनिराकरणं
 विना कदापि न भवति । समाधानपूर्वपक्षादिकमस्मिन् शास्त्रार्थे बहूनि
 जातानि, तानि सर्व्वाणि विस्तरमयात्र लिखितानि । भवत्पूर्वपक्षायां
 समाधानान्येव परिद्वतैर्लिखितानि । शास्त्रार्थेनात्र परिद्वतानां वर्णशतेनापि
 पराजयो न भवति इति श्रोमद्भिर्निश्चेयम् । सुदुर्भावेनोच्यते मया
 ध्ययं शास्त्रार्थो भवते रोचते तर्हि व्यवस्थायां सम्मतिं कृत्वा परिद्वतानां
 (१)भवे साहवाय देया इति सताम्बरामर्शः शिवम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीचन्द्रनारायणशर्मणः— अत्रार्थे सम्मतिस्सुकुशर्मणाम् ।
 सम्मतिरत्रार्थे—

अत्रार्थे सम्मतिर्विद्वत्शास्त्रिणाम् । सद्यं तदर्थंजाते जातेर्चित्तु-
 ब्धेदहोरानन्दशर्मणपरिद्वतस्य ।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीकान्त- श्रीकृष्णदेवशर्मणां सम्मतिः ।
 शर्मणाम् ।

सम्मतिरेतदर्थे कारीनाथ- अत्रार्थे सम्मतिः श्रीलज्जाशङ्कर-
 शास्त्रिणः । शर्मणाम् ।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीपदुनाथशुक्ल- सम्मतिः ...
 शर्मणाम् । शर्मणाम् ।

पूर्वप्रेषितापरिलिखितव्यवस्थया पुत्राणां पैतृकधनविभागोपक्रमे
 मातृभागो निश्चित एव । एवञ्च मति विभागमन्तरा मातृभागभावप्रति-
 पादकहेतुलक्षणने यो हेतुः—माता तु पितरिं प्रेते पुत्रतुल्याशहारिणी इति
 कातोय—समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पती—इति नारदीय-
 पितृसूत्रं विमज्जतां माताप्यंशं समं हरेत्—इति याज्ञवल्क्योय-समांशा
 मातरस्त्वेपां तुरीयांशास्तु कन्यकाः—इति बार्हस्पत्यवचसां प्रसिद्धप्रमाणानां
 सत्त्वादिति दत्तः(७)तद्दातृया शुक्रसद्वचनपाठपरायणराणां धर्मशास्त्रा-
 र्थानभिधानां विदुषां पुरः प्रकाशयति । तेषां चतुर्णामपि वचनानां सति
 विभागोपक्रम एव मातुः पुत्रभागसमभागप्रतिपादकत्वात् । नचैतादृशार्थेन
 सम्भवत्येतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात्, केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वा-
 न्चेति वक्तुं युक्तम् । तेषु प्रथमस्य—माता तु पितरिं प्रेते पुत्रतुल्यांश-

हारिणी-इति कातीय (वचन)स्य विभज्यते तदा मातुर्भागमाह इत्यनेन दायतत्त्वे रघुनन्दनस्मात्तमद्वाचार्यैस्वतारितत्वात्, विवादमहार्णवविवा-
दाणवसेतुधीकृष्णवर्कालङ्कारादिकृतदायगागटीकासु बहुशः समुदितत्वाच्च;
तेषु समांशहारिणी माता-इति द्वितीयस्य नारदवचनस्य, पितरि चोपरते
सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः-इत्यर्थकतया
जीमूतवाहनमद्वाचार्यैर्दायभागे व्याख्यातत्वात् ।

अथ तृतीयस्य-पितुरूष्यं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत् इति याश-
वल्कीयस्य-पितुरूष्यं विभागेऽपि पत्नीनां स्यपुत्रसमांशित्वं दर्शयितुमाह
इत्यनेन मिताक्षरायामेव श्रीविशानेश्वरैस्वतारितत्वात् । किञ्च पितुरूष्यं
विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्-इति याशवल्कीयवचनस्य, पितृद्रव्य-
विभागः स्यात् जीवन्त्यामपि मातरि । न स्वतन्त्रतया स्वाम्यं यस्मान्मातुः
पति विना-इति थोरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिकादिनिबन्धधृत-संग्रहकारी येन
स्वतन्त्रतया पितर्यपरते तद्धनस्य विभाग कुर्वतां पुत्रास्यामस्वतन्त्रापि
माता पुत्रांशसमाश हरेत्तु भ्रात्रादिव(त्) (पूर्वस्था) पौत्रधर्मस्य सर्वसम्मत-
त्वा(त्) । अजीवद्विभागे मानुरंशक ' नामाहेत्यवत्' 'कथा याशवल्क्य-
वचोऽवतार्य एतच्च स्त्रीधनस्थाप्रदाने वेदितव्यमित्याद्य (परि व्या)ख्यात
एव । स्मृत्यन्तरे जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽपि समं हरेत्-इति अस्वधना
प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममंशं
हरेत्-इत्यर्थः-इति व्यवहारमाद्ये माधवापरपर्यायश्रीविद्यारण्यपादै-
र्विशिष्य प्रतिपादनेनैषमेव स्मृतिचन्द्रिकायां श्रीदेवा(नन्द)भट्टैः
तथाहि पतिद्वारागतं स्त्रीधनं नित्यं विभागानर्हमेव, लोके दम्पत्यो-
र्धने विभागादर्शनात् जायापत्योर्न विभागो विद्यते-इति हारोतस्मर-
णाच्च । एतेनाथ मातुः स्वस्वव्यवस्थापको दायविभागः । किन्तु यावदर्थ
मेवार्थहरणमिति मन्तव्यम् । अतएव स्मृत्यन्तरे निर्धनमातृविषयमेवांशहरणं
न मातृमात्रविषयमिदमिति ज्ञायते, जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽपि समं-
हरेत्-इतिस्मरणात्, अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रै-
रजीवद्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममेवांशं हरेत्-इत्यर्थः । जननीप्रदणं
तस्त्वपल्यादेरुपलक्षणार्थम् । मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः-इति

विष्णुस्मरणात् । अस्वधनेति विशेषणोपादानात् स्वधनादेव स्वकीयबीब-
नस्य स्वानुष्ठेय साध्यस्वकर्माणुः सिद्धिसम्भवे जनन्यादीनां न भाग-
ग्रहणमिति गम्यते । तथा च स्वधने मात्रा तयोः सिद्ध्यसम्भवे जनन्या-
दीनां सधनानामपि न समभागहरणम्, किन्तु यथोपयोगं न्यूनभागस्यैव
हरणमिति च गम्यते । तथा च विभा.....वसोरतिग्रहणत्वे निर्घना-
नामपि जनन्यादीनां न समांशहरणं किन्तु यथास्वोपयोगं समांशन्यूनस्यैवांश-
हरणमित्यपि गम्यते । अस्वधनेति विशेषणोपयोगवशादशहरणं जनन्या
न पुनर्भातृव (त्) (स्व)त्ववशादिति शापनार्थत्वात् । सममिति विशेषण-
शोपयोगवशादसमांशस्य हरणेऽप्यवैयर्थ्यम् । अल्पविभागवसोरधिकपूर-
णस्य प्राप्तस्य नितृत्पर्यत्वादिति प्रतिपादनेन भवदभिमतार्थस्य विभागोप-
क्रममन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्य दूरागस्तत्वात् । न च पुत्राणां पितृधन-
विभागस्वातन्त्र्ये ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य आतरः समम्—इति मान-
धीयेन, पुत्र...बोधकेन विरोध इति वाच्यम् । ऊर्ध्वं पितुः—इति पितृधन-
विभागकालः शानुरूर्ध्वम्—इति मातृधनविभागकालः । ततश्चैतदुक्तं
भवति पितरूर्ध्वं मातरि जीवन्त्यामपि पितृधनविभागस्तथा मातुरूर्ध्वं-
वितरि जीवत्यपि मातृधनविभागः कार्य्य एव, अन्यतरधनविभागे उभयो-
रूर्ध्वकालप्रतीक्ष्यानुपयोगादिति माधवीयव्याख्यानुपस्थांलोचनया तथा
अतएव पितरूर्ध्वम्—इति पितृधनविभागकालः मातुरूर्ध्वम्—इति मातृ-
धनविभागकालोऽभिहितः इत्यारभ्य, अतश्चानीशास्ते हि जीवतोः—इत्यपि
तत्तद्धने व्यवस्थाया अस्वातन्त्र्यप्रतिपादकं न स्वत्वप्रतिपादकं जन्मना स्वत्व
स्य पुत्राणां पितृधने व्यवस्थापनादित्यन्तेन वीरमित्रादयस्मृति चन्द्रिकादिनि-
बन्धलिखनेन अप्योरपि तदोपाप्रतीतेः । युवतं चैतज्जीवद्विभागोपगतं पितुः स्वा-
तन्त्र्यात् । अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यादित्यादिना विशेषतो वीरमि-
त्रादद्यादावजीवद्विभागे पुत्राणामेव स्वातन्त्र्यप्रतिपादनाच्च, अस्वातन्त्र्यप्रति-
पादकानां च जीवतोस्सतन्त्रः स्यात्—इत्यादिवचनाना सकलनिबन्धकारैः
-सृतेऽपि पितरि जीवन्त्यां च मातरि पुत्रकर्तृको यो विभागः (सः?) धर्म्य
इत्येतत्परत्वव्यवस्थापनात् । अतएवास्मद्वत्तपूर्वव्यवस्थायां पुत्रे दुर्दृष्टत्व-
विशेषणं सार्थकमिति (सुद्धमद) शापघातव्यम् । न चानुवादविशेष-

स्त्रीभूतस्य" अर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रमे मृतेऽपि मातृभागप्रापक-
 स्वसिद्धिरिति वाच्यम् । अविबक्ष्यां प्रमाणाभावात् । गहनवादविशेषणत्व-
 कथनेनैव सोऽर्थोऽवैति । यदपि पूर्वोक्तवचनद्वयैकरूप्यार्थं (?) तथा (कथ-
 नमिति लदपि न, तयोरपि सकलनिबन्धकारैरेतद्वचनसमानार्थकत्वेनैवोपपा-
 दितत्वात् । किञ्च लड्यर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रममन्तरापि मातृभागप्रा-
 पकत्वस्यपितात्यर्थ्यविषयत्वे विभजतामिति विशेषणपदस्यैवानर्थक्यापत्तिः ।
 पितुरूर्ध्वं तु पुत्राणां माताप्यंशं समं हरेत्--इत्येतावतैव भवदभिमतार्थ-
 स्वावगमात् अथाहाराभावप्रयुक्तलाघवानुरोधेन तादृशवचनप्रणयनस्यै-
 वोचितत्वाच्च । पितरि मृते सति पुत्रैः क्रियमाणे विभागेऽपि मातुः समांश
 एव । तथान योगीश्वरः पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत् ।
 पितुरूर्ध्वं पितृमरणान्तरम् ॥ अत्रापि न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा
 श्वशुरेण वा-इति, दानुरूर्ध्वं प्रकल्पयेत् --इति च वचनद्वयं योज्यं समा-
 नन्यायत्वात्, प्रतिषेधाभावाच्च । एवमेव विज्ञानेश्वरधारेश्वरादीनां मतम्--
 इति मदनपारिजातलिखनात् । वीरमित्रोदयादी तदुपरमविभागेऽपि पुत्रै-
 स्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः--इत्याहेतियाज्ञवल्क्यवचनस्यावतारित-
 त्वाच्चेति सुबुद्धिचञ्चवश्चिन्तयन्तु ॥ न च वरेत् --इति विधौ लिङ्-
 विधित्वञ्जात्यन्ताप्राप्तप्रापकत्वम् तच्च न घटत इति वाच्यम् । ऊर्ध्वं
 पितुश्च मातुश्च--इत्यादिमन्वादिवचनैः पितृधने जाताधिकारैः पुत्रै
 विभागे क्रियमाणे मातुरपि तत्समांशभागित्वमित्यपूर्वबोधनेनैव कृतार्थत्वात्,
 एतेनेदृशस्य विधेःश्रुपिरहारादनुत्पत्तेरित्यादिविधित्वाभावापत्तेश्चेत्यन्तं तद्व-
 चनाशयमजानद्भिरुक्तमपास्तम् । मातृभागप्रापकस्य समांशां मातरस्त्वेषां
 तुरीयोशास्तु कन्यकाः--इत्यवशिष्टेषु तुरीयस्यापि पुत्रकर्तृकविभागप्रक-
 रण एव सर्वैरुक्तत्वात्तस्यापि तदर्थबोधकत्वेन न तानि भवदर्थसाधकानीति
 मुधीभिराकलनीयम् ॥ यदपि प्रलपितं विभक्तेषु सुतो जातः सवर्णायां वि-
 भागभाग् इति, भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि । प्रातिभाव्यमृशं
 साक्ष्यमविभक्तेन तत्समृतम्--इति च तदतिगुच्छम् । तपोविभक्तेष्वि-
 त्यस्य विभागोत्तरं जायमानस्यासत्यां दुहितरि भागप्रापकत्वात्, तदर्थस्य
 चाविभाज्यत्वात् । न च तत्र सम्भावितभागम(१)दायैव वचनप्रवृत्तिरिति-

वाच्यम्, वचनात्प्रतीतेः । स्वकपोलकल्पितस्यार्थस्याप्रमाणत्वाच्च । द्वितीयस्य तु भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि—इति वचनस्य नितुकृतविभागविषयत्वत् पितुकृतविभागे मातृभागो भवति नवेत्यस्याविवाहत्वात् ? यदपि विभिन्नमातृकृतेषां मातृभागः प्रशस्यते—इति वचनं तदपि वीरभिन्नोदये यदपि व्यासवृहस्पतिवचसोरित्यादि कृतमधिकेनेत्यन्तेन ग्रन्थेन । तज्जीवनवधि तदाशाशवदत्तयस्थेयमिति समर्थितम् । अतस्तत् एवावधातव्यमिति प्रथमहेतौत्समर्थनम् । यदपि एकपुत्रस्थले विभागासम्भवादित्यत्र दोषो वनं तदपि देवानां... दानं ददायकमेव । पितुकृतं (?) कविभागस्याविवाहत्वात् पितर्युपरते तदभावस्यास्मदभिप्रेतत्वाच्च विवादास्पदभूतस्थलाभिप्रायकमेव लिखनाच्चेत्यलमिति जल्पनेनेति विभे, यमिति द्वितीयहेतुसमर्थनम् ॥

यदपि तृतीयेऽनुस्रष्टनेऽधिमिताक्षरमेतद्व्याख्यानं... लाभादिति तदपि ग्रन्थार्थं सूत्रकमेव मितान्तरायां जीवद्विभागे स्वपुत्रसमाशित्व पत्नीनामुक्तम् यदि कुर्यात् समानशानु—इत्यादिना पितुरूर्ध्वं विभागेऽपि पत्नीना स्वपुत्रसमाशित्व दर्शयितुमाहेत्यवतरणिकया पितुरूर्ध्वं विभजतामित्यवतारित्वात् । अजीवद्विभागे मातृशशकल्पनामाहेति याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य्य एतच्चेत्यादिना विशेषमुल्लिख्य जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागोऽर्थं समं हरेत्—इति स्मृत्यन्तरवचनमुपन्यस्य अस्वधना प्रातिस्विक्स्त्रीधनशून्या (?) जननीपुत्रैर्विभागोऽर्थे क्रियमाणे पुत्राशसमं हरेदित्यर्थः । इति माघवोयात्, जीवत्पितृकृविभागे पित्रयथा पुत्रांशसमांशभागिन्यः स्वपत्न्यः कुर्यात्तथा तदुपरमविभागेऽपि पुत्रैस्ताः स्वसमांशभागिन्यः कुर्याः—इति वीरभिन्नोदयलिखनेन याज्ञवल्क्यः पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्, विष्णुः—मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः, स्मृत्यन्तरे—जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागोऽर्थं समं हरेत्, स्वधना तु यावता स्वधनस्य पुत्रांशसमभागता भवति तावदेव हरेत्—इत्यर्थः । अशाधिकधनादारतु नांश—इति व्यवहारमयूखे नीलकण्ठभट्टलिखनेन च स्पष्टतया तदवगमाच्च । यथेदं विचा-

रशोयमित्यादिभागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यबोधनाच्चेत्) तदप्यत्यन्नाग्रहप्रस्तत्वाद्देयमेव । पुत्राणां जन्मनैव सामुदायिकस्य प्रादेशिकस्य वा स्वत्वस्य सत्त्वेऽपि जीवति पितरि तदनुमतिमन्तरा पितृधनविभागाभावस्य मैथिलगौडपश्चात्पदाक्षिणात्यमकलत्रिवन्धकृत्स्नममत्वत्त्वेऽपि तदुररमे ऊर्ध्वपितृश्च मातृश्च—इत्यादिवचनेन परस्परं तेषां तद्धनविभागस्य सर्वममत्वत्त्वेऽपि पाश्चिग्रहणनिबन्धस्य क्षीरनीरवदेकलोलीभावाः सहकारिकर्मोपयोगिनो मातृस्वत्वस्य सत्त्वेऽपि पत्न्याः भागप्रापकपिबचनाभावाद् यथा पत्युः सकाशात्) पत्न्या भागो ग्रहीतुं शक्यते, तथा तत्र एकपिवाक्यमन्तरा सद्ग्रन्थकारकृतव्याख्यानमन्तरापि वा विना विम गोपक्रम पुत्रेभ्योऽपि तद्ग्रहोपसर्गत्वात्, अस्वातन्त्र्यवचनकर्मवचनकारकृतव्याख्यानस्य सत्संकाचकस्य प्रत्युत सत्यत् । अतएव वीरामत्रादये पत्न्याःपतिद्रव्ये स्वत्वं क्षीरनीरवदेकलोलीभवापन्नसहकारिकर्मोपयोगिनः तु व्रततृणामिव परस्परमतएव तेषां विम गो न ज,यापत्यो रस्य युक्तं सङ्गच्छन् । न च क्षीरनीरवदेकलोलीभवापन्नस्यैकस्यैव पाण्यग्रहणनिबन्धस्य पत्न्याः स्वत्वस्य स्वीकारे पत्युपरमे स्वत्वप्रयोजकभूतदात्त पत्यभावाभावात् कथमपुत्रायाः कृत्स्नव्यधिकारबोधका अजीवद्वयमे पुत्रांशसमाशाधिकारप्राधिकाश्च ग्रन्थाः सङ्गच्छन्त इति वाच्यम् । पत्नी दुहितरश्चैव—इति पितृस्वर्ध्वविभजताम्—इत्यादि वाक्यवल्क्यदिवचनैः पृथगधिकारबोधनेनादाभात् मातुः स्वातन्त्र्यमवस्य पूर्वमेव बहुशःसमु दैतत्वात् पुत्रेभ्यो भागग्रहणातिरिक्तस्थलेऽस्वातन्त्र्यमित्यर्थं कल्पने प्रमाणाभावाच्च समांशहारेणी माता—इत्यादिवचनस्थान्यार्थत्वस्योक्तत्वाच्चेति मात्सर्य्यमुत्सर्ग्यं विच र्थ्यमास्पैरिति तृतीयस्य हेताः समर्थनम् ।

यदपि चतुर्थहेतुखण्डने एतादृशार्थकारणे प्रमा.ण.भावाद् बार्हस्पत्यवाक्यात्तरादलाभस्य कपालकलेःसत्त्वाच्चेति हेतुवयं तदतिफ महामशोपाध्ययवाचस्य.तामश्रुतविवादाचिन्तामस्यावेवैत.दृशार्थस्य स्पष्टतरतया प्रतीतेर्भवदुक्तेर्बालोक्तप्रत्ययान्मदुक्तेः सप्रमाणत्वाद् बार्हस्पत्यवाक्यात्तरादलाभादिति अत्रोत्तरं तु भवद्वत्पूर्वव्यवस्थायाम् । अस्यार्थः निरुभावे अर्थात्

१. ०च्चे तन्वदध्यवस्थापदो व्यय० ।

पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर एताः सर्वाः
पुत्रदुर्लभाशभागिन्यः, एषां भागिनां भगिन्यश्चा विवाहिताविवाहार्थं
स्वभ्रात्ररातुरीयांशभाजो विवाहोचितधनभागिन्यो भवन्तीति मदनरत्न-
विवादप्रकारविवादचिन्तामणिदायक्रमनिबन्धकारैः कृत इति लिखन
मेवेत्फलमधिकेन । एतेन स्वकरोलकलितत्वाद्दित्यपि प्रत्यस्यातामित्यवधा-
तव्यम् । यदपि भगिन्या भागे भ्रातृणां स्वतन्त्र्यबोधक्रमनुयायवत्क्य-
षननवन्मातृभागे तदभावात्तया स्वेच्छया भागग्रहणं कार्यमित तदप्यत्य-
न्ताग्रहप्रस्तत्वाद्देयमेव । प्रसिद्धप्रमाणानि याज्ञवल्क्यादिवर्चास प्रथम-
हेतुव्यवस्थापने लिखिततत्तन्निबन्धकारकृतव्याख्यानानि च युक्त्यामासै-
रपलाप्य प्रमाणगन्धशून्यस्वोक्त्या तदर्थस्य व्यवस्थापनेनाप्रमाणात्त्वादिति
चतुर्थद्विगुणमर्धनम् ॥

अथ भवन्मते विरोधो(द्भा)वनम् । कस्यचित् पुत्रिकाकरणान्तर-
मौरसपुत्राञ्जनि । तदनन्तरं पत्नी पुत्रिकां च त्यक्त्वा स लोकान्तरमग-
मत् । तत्कल्पपि प(श्चा)दिभं लोकमज्ञात् । तयोर्निधनानन्तरं पुत्रिकापुत्र-
योर्विभागसमुत्थानेऽहमन्मते समस्तत्र विभागः स्यात्—इत्यादिवचनेन
कृतधनस्य सम एव विभागः सकलनिबन्धसिद्धः । भवतां तु सा मातृभागं
पूर्वं गृहीत्वा पश्चात् पुनरवशिष्टार्द्धं ग्रहीतुमर्हतीति तत्तर्ह्यवचनव्याकोपो
वर्षसहस्रैरपि दुर्लभार्थ इति सूक्ष्मदृशाभ्यधातव्यम् ॥ यत्तु दत्तजलाञ्जलि-
तोपगदनमशक्यं कर्तुं त्वयेति तदाशयानवबोधतां बोधयति । विद्यमान-
मातृकस्याजातपुत्रादेदेवदत्तस्य मरणानन्तरं पत्नी दुहितरश्च - इति याज्ञव-
ल्क्य-अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि -इति वैष्णववचनाभ्यां पत्न्या अधिकारित्व-
बाधनेऽपि अविभक्तससृष्टभ्रातृतो भागाभावाय पूर्वोक्तवचनयोरविभक्तसंसृष्ट-
धनान्यविप्रयत्नमित्यर्थस्य गौडातिरिक्तसकलमुनिवचनव्याख्यातृसम्मतत्वेन
सत्यमपि मातरि तद्धनस्य अविभक्तससृष्टस्येन मातृतः पूर्वं पत्न्यधिकार-
बोधनस्य दत्तजलाञ्जलिता सहस्रा(स्यैरपि)दुर्लभारा इति सन्नतत्वज्ञा
विभावयन्तु ॥

१२७—रोवकारी मिछिल सदर देश्रोयानि आदालत
ओथाके सन १८१२ सालेर ५ जानेर मोतायर्क सन १२३८ सालेर

२२ पौष वृद्धस्पतिवार श्रुयुत हेनरी सिक्सपीयर साहेब से
आदालतेर हाकिमेर बैठके—

भैरवादासी वनामे नवकुण्णवसु

साएनार उकिल मुनसी गोलाम आहम्मद हाजिर आइल ।
पूर्व सन १८३१ सालेर १ दिजम्बर तारिखे साएनार खास
आपीलेर दरखास्त दरपेप हइया जेलार फैसला दिष्टि करण जन्वे
गूलतवि छिल, तदनुमारे गत कल्य साएनार द्वितीय दरखास्त
फैसला आगैरह सम्बलित उपस्थित हइया साविक दरखास्तेर
सम्बलित करिया उपस्थित करणेर हुकुम हइयाछिल । से प्रयुक्त
अच साएनार खास आपीलेर दरखास्त तत्समभिव्याहारि काग-
जात सम्बलित उपस्थित ओ पाठ होइल । हुकुम हइल ये जिलार
फैमला ओ साएनार ओकीलेर अचकार दाखिल करा व्यवस्था
ए विषये यवाच तलवे ये यलपि स्यात् उक्त फैसलार लिखित
प्रकरण सकल सत्य अथवा फैमलार लिखित व्यवस्था अथवा
साएनार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था—एह्यार कोन व्यवस्था
यथार्थ ए आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठानो जाय ये
पण्डित मजकुर उपरेर लिखित प्रकरणेर उत्तर अति त्वराय
लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रुयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेबवर्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीयजानचरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितजिलाखावान्तरवर्माधिकरणीयव्यपत्रमेतद्वर्माधिकर-
णाधिनीनियुक्तोकीलशब्दवाच्येन तद्दिने निविष्टं व्यवस्थापत्रञ्च यत्तदन्दी-
यतन्मासीयैरुर्विशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं
मया प्राप्तं तदथलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुगारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रमुसमर्पितव्यपत्रलिखितप्रकरणानां मध्ये एतद्वर्माधिकरणार्थिन्या
उत्तापत्रलिखितप्रकरणानां सत्यत्वे सत्येतद्वर्माधिकरणार्थिनो नियुक्तोक्त

संशुद्धवाच्यनिविष्टव्यवस्थैव शास्त्रसम्मतता भवति । तदुत्तरपत्रलिखितप्रकरणानामस्तत्त्वे तत्रयपत्रलिखितव्यवस्थैव शास्त्रसम्मतता भवतीति ॥

एतदब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशनिवाररे मयेयं व्यवस्था ति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथपिश्रेण

१२८—रोवकारि मिद्धिल सदर देओर्यानि आदालत ओयाके तारिख ७ जानेर सन १८३२ साल भोतावेक सन १२३८ सालेर २४ पीप शनिवार धीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ये आदालतेर हाकिमेर बैठके ॥

वदनचन्द्रसिंह

वनाम

मथुरामोहनपालीत ओ
महेशचन्द्रसिंह

साएलेर उकिल मौलवि करम होछेन ओ तरफछानिर उकिल सुनशी गोलाम बतुल हाजिर आइल । सायेलेर सओर्याल एक शत पञ्चाश टाका दामेर फागजेर पर दोस्तपुर आगवेगह तालुक विराधि विपयेर दखल पाइवार मोकईमाय मयलगे पाँच हजार टाका ए विपयेर दामेर तायदादे ओ उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ रामवृष्णवन्दोपाध्यायेर नामेर एक केता मोक्तारनामा ओ सन १८२८ सालेर २१ जुन तारिखेर हुगलि छेलार देओर्यानि आदालतेर एरु केता फयछलार नकल ओ सन १८३० सालेर १७ आगष्ट तारिखेर लिखित एलाका कलिकातार क्रोट आपीलेर एक केता फयशलार नकल ओ सन १८२६ सालेर २३ शेतम्वर तारिखेर लिखित कलिकातार क्रोट आपीलेर एक केता रोवकारिर नरल सहित ये, सन १८३० सालेर १६ दिजम्वर तारिखे दाखिल इइया छिल, अथ तरफछानिर सन १८३१ सालेर १३ आपरेल तारिखेर हाष्ट कया सओर्यालेर सहित दष्टे आइल,

बोध हइल ये पार्वतीचरण मोतओफकार तेज्य विषय लाट नारायण पाडा उहार चारि पुत्रेर मध्ये अर्थात् वदनचन्द्रसिंह प्राप्तव्यवहार ओ महेशचन्द्रसिंह ओ ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्र अप्राप्तव्यवहार एकत्तर ओ साधारणे छिल, ओ वदनचन्द्रसिंह मजकुर ये मालिक ओ कारबारेर कर्ता एवं भ्रातासकलेर सहित एकात्रं छिल लाट मजकुरेर मोतालकेर मौजे दोस्तपुर ओगयरह विरोधि विषय द्वितीय भ्रातासकलेर अंश सहित तरफद्वानिर जेभार मुद्दाइ मथुरमोहनपालीतेर निकट वयवलओफार ? प्रकरणे दरपत्तनि तालुक विक्रय करिया जखन वयवलओफार मेयादेर मध्ये पोनेर टाका आदाय करिलेऊ ना । मुद्दाइ सैइ समय शन १८०६ सालेर १७ कानुनेर नियम आमले आनिया वयवात सम्पन्य हइवार जन्य एइ नालिप दरपेप करिया जेना ओ कोट हइते ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्रेर अंशेर कर्तन वादे वदनचन्द्र ओ महेशचन्द्रेर अंश वयवातेर वावत डिगिरि हाशील करियाछे, ओ महेशचन्द्र जाहेर करे ये वयवलओफा हओनेर समय आमि अप्राप्तव्यवहार छिनाम, आमार पत्त हइते वदनचन्द्र कओलाते दस्तखत करिया दियाछे ओ वदनचन्द्रेर क्षमता छिल ना ये आमि अप्राप्तव्यवहारेर अंश वयवलओफा अथवा सम्पूर्ण विक्रय करे । ए जन्य आमार निकट हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था लओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयातेर जओयाव एइ रोवकारि पाओयार तारिख हइते एक सप्ताइ मेयाद् मध्ये दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति ॥

सओयाल—

यद्यपि स्यात् सहोदर दुइ भ्राता अथवा तिन चारि भ्राता आपनारा एकात्रभुक्त, ओ ताहार मध्ये एक जन प्राप्तव्यवहार, ओ द्वितीय सकल अप्राप्तव्यवहार थाके, ओ प्राप्तव्यवहार भ्राता

मौरुशी साधारण विशयैर मध्ये किद्दु अप्राप्तव्यवहारसकलेर अंश सहित हस्तान्तर करे, तवे ए प्रकार हस्तान्तर सिद्ध कि ना एवं प्राप्त-व्यवहार भ्रातार मौरुशी साधारण विशय अप्राप्तव्यवहार भ्रातार सकलेर अंशसहित, ये एकाग्रे थाके, कोन प्रकारे हस्तान्तर करणेर क्षमता वाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे आळे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकमुन्दरराससाहेवधर्माधिकरणलि-
खितैतदन्दीयजानवरीमासीयसप्तमःदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं
यत्तदन्दीयतन्मासीयोनविशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिकया-
भद्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

यद्यपि सहोदरौ द्वौ भ्रातरो प्रयश्चत्वारो वा भ्रातर एकापाकेन भोक्तारः,
तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोन्वये चाप्राप्तव्यवहारा भवन्ति । एवञ्च सति
प्राप्तव्यवहारो भ्राता क्रमागतसाधारणधनानाम्मध्ये किञ्चिद्धनमप्राप्तव्यव-
हाराणां सर्वेषामंशसहितं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, तत्र यदि तादृशहस्ता-
न्तरमधो लिखितहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मिन्नपि हेतौ सति कृतवान् स्यात्तदा
त्वांशयोग्ये स्वैतराशयोग्ये च सिद्ध्यति, तादृशहेतुसमुदायान्तर्गतैश्चमादपि-
हेतोर्विना तादृशहस्तान्तरकर्तुर्भ्रातुरंशे सिद्ध्यति, तदितरांशे न सिद्ध्यति ।
एवमेकापाकेन भोक्तुः प्राप्तव्यवहारस्य भ्रातुः क्रमागतसाधारणधनस्याप्राप्त-
व्यवहाराणां सर्वेषां भ्रातृणामंशसहितस्य कुटुम्बभरणाद्यर्थं मगिन्यादिविवा-
हाद्यर्थं वा भ्रात्रादिविवाहाद्यर्थं वा रोगोपशमनाद्यर्थं वा पित्रादिकृत-
र्यापाकरणाद्यर्थं वा पित्रादिभ्राद्राद्यावश्यककार्यादिसम्पत्यर्थं वा हस्तान्तर-
करणक्षमतास्त्येव । उपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्यार्थं दासा-
दीनामपि स्वामिघनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वेन चतुर्णां
सौदरभ्रातृणामेकापाकेन वसताम्मध्ये प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुरप्राप्तव्यव-
हाराणामवशिष्टानां प्रयाणां भ्रातृणां शास्त्रानुसारेण पितृव्यपतंगलना-
च्चावश्यककार्यकरणक्षमस्योपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्यकरणार्थं

साधारणकमागतधनानाम्मध्ये तत्तत्कार्योपयुक्तस्य धनस्य हस्तान्तरकरणक्ष-
मताया अर्थविद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागर्भकृष्णतर्कालङ्का-
रकृतदायभागटीकादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादार्यवसेतुविवा-
दभङ्गार्थ्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वगगान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीशुरथापि वा ।

कुर्यैर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥१॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये पगेशयोग्ये असिद्धिः,
स्वांशयाग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति विवाद-
भङ्गार्थग्रन्थलिखनम् ॥२॥

कुटुम्भार्थेऽप्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥३॥

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।

यद्गृहीतं कुटुम्भार्थं तद्गृही दातुमर्हति ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनम् ॥४॥

कुटुम्भार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्तञ्च विद्याशपत्कृतं तु यत् ॥
कन्यावेवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु यत्कृतम् ।

एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्भेन कृतं प्रभोः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

पितर्युपरते पुत्रा अष्टां ददयुर्यथाशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो धातामुद्रहेद्दुरम् ॥—इति विवादभङ्गार्थ-
वादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

१. कुटुम्भार्थमशक्तेन गृहीते व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्ते च विद्याशपत्कृते तु तत् ॥—कास्य०

२. प्रेतकार्येषु च—कास्य० ।

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बमरणादिरूपयादशयादशकार्यै उपस्थिते दासकृतमृण प्रभुणा शोधनायमिति प्रतीयते तादृशतादृशकार्यनिष्पत्त्यर्थं प्रभुघनविक्रयोऽपि सिद्ध्यति । तदतिरिक्तविषय एव स्वाम्यनुमतपदेन बाध्यते— इति विवादभङ्गार्थवग्रन्थाल्लेखनम् ॥७॥

पितैव पालयेत् पुत्रान् ज्येष्ठो भ्रातृन् यर्यायसः ।

पुत्रव्यापि वत्तैरमू ज्येष्ठे भ्रातार धर्म्मतः ॥—इति मनुवचनम् ॥८॥

एकोऽपि स्थावरे कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।

आपरकाले कुटुम्बायै धर्म्मायै च विशेषतः ॥—दायतत्त्वादिग्रन्थ-
वृत्तमुनिवचनञ्चेति ॥९॥

एतदन्दीयफेवरधरोमासीयैकविंशतिदिनसंग्रन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीउर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२६—रोवकारी मिछिल सहर देश्रोयानि आदालत ओयाके तारिख २१ माह जानओयारि ईं सन १२३२ माल मोतावक १३ माघ बाङ्गला सन १२३२ साल रोज बुधवार श्रीयुत हैनरि सिक्किमपीयर साहेबे आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके ॥

त्रिश्वेश्वरीदेवी वनामे ताराचन्द्रचाटुर्ग्या

छाएलार मोत्तार रामकानाशपोष हाजीर हइल । छाएलार सओयाल ईं सन १२३१ सालेर ६ माह शेनम्बर तारिखेर । एलाका सुरशीदावादेर प्रीविणसीयार कोटेर हाकिम फिलिप इरनिफ पाटल साहेबेर फयमला, जाहाते मुर्दाई ताराचन्द्रचाटुर्ग्यार हक्के डिगारि हइयाछे, ताहार नाराजीते एइ मोकईमाय माफनिशी आपील मब्जुरि प्राथेनाय मोजाहाय मुलुदी ओगथरह रकम दुइ आना

दुई कडार दखल पाओयार वाचते २७०१८६१२ टाकार ताइने ।
 मोक्तार मजकुरेर नामे मोक्तारनामा सम्वलित ओ इं मन १८३१
 सालेर ह् सेतम्बरेर लिखित एलाका गुरशीदावादेर कोटेर फयस-
 लार नकल अनैक्यता जे एइ माह जानओयारिर १६ तारिखे
 दाखल हइयांछज, पढागेल । यद्यपि स्यात्, एइ मोकदमर मोफ-
 निशां सुरत् आपील नामञ्जुरि कि मञ्जुरि हुकुम छादेर हथोनेर
 पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय निचेर लिखित विराय दरि-
 आप्त करा उचित हइल । ए जन्य हुकुम हइल ये तत्स मेहवारि
 कागजात सओयाल ओगयरह एइ गोवकारि नकल सम्वलित एइ
 आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-ये पण्डित
 मोछप काटेर फयदलारं लिखित सबबसकलेर एवं ताहार लिखित
 कौंक्यत् अनुमांदने एइ विशयेर जओयाव तत्क्षणात् लिखेन ये
 लिखित फयसलार लिखित पण्डितेर व्यवस्था दोरन्त वटे किन्वा
 मोकदमर हालत् अनुमोदने ताहार सत्यताय किछु सन्देह प्रकाश
 हइते पारे कि ना इति ॥

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिखियपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
 लिखितैतद्वदीयज्ञानवरीमासीयपञ्चविंशतदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
 तिरूपपत्रमेव तत्समपितैतद्विवादाविषयनिबिष्टनिवेदनपत्रादिकश्च यत्तद्वदीय-
 फेवरवरीमासीयदशमदिनसमग्रन्धिशुकवासरे घटिकात्रपाधिभयामद्वयानन्तरं
 मया प्र.पं तदवलोक्य यादृशघोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितत्रयपत्रलिखितप्रश्नत्रयस्योत्तरे तत्रयपत्रलिखितपण्डितदत्ता
 व्यवस्था शास्त्रममता भवति । किन्तु देवचन्द्ररायेण स्वजीवनदशायां स्व-
 स्वत्वरदीभूतधनमविवाहितायै स्वकन्यायै दासमन्यै दत्तमित्यर्थिन्या निवे-
 दनपत्रे लिखितमस्ति-तत्सत्यं चेत्तदा दासमन्या मरणोत्तरं तद्दानानुसारेण
 तत्सवत्यास्पर्दीभूतमौदायित्रीस्त्रीधने तददुहित्रभावे तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्रस्य स्वत्ये
 चाते संत तन्मरणोत्तरं तन्मातामह्यां वेदवत्यां पूर्वधनस्वामिनो देवचन्द्ररा-
 यस्य पत्न्यां विद्यमानायामपि तस्य सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रपौत्राभावे तत्पत्न्या
 विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारो यत्तत्तत्रयपत्रे लिखितमस्ति । प्रत्यधिनीविश्वे-

श्वरीदेवीनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन देवचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्कन्या-
या दासमन्या आयत्तं तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्यपि ज्ञातम्, किन्तु दासमन्या
मरणोत्तरं देवचन्द्ररायस्य पत्न्या वेदवत्या आयत्तमपि ज्ञातमिति । एतादृश-
लिखनेन देवचन्द्रस्य मरणोत्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्स्वत्वास्पदीभूत-
घने शास्त्रानुगारेण प्रथमतस्तत्पत्न्या वेदवत्या एवाधिकारित्वेन विद्यमानां
तां विहाय तत्कन्याया दासमन्या आयत्त तद्धनं कमप्येकं हेतुं विना भवितुं न
शक्नोतीति । अतएवास्त्येव कश्चिदधेतुरित्यवगमात् । एवञ्च सति तज्जयपत्र-
लिखितपरिदृष्टदत्तव्यवस्थैतद्विवादसम्पकंशून्यैव' — इतिवङ्गदेशचलितम-
नुदायभागभोक्तृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवा-
दार्यवमेतुविवादभङ्गस्यैवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्रप्रमाणम्—

प्रदान स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

ऊढया कन्यया याप पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् । पत्रोर्वा लभ्यं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-

गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्थिये यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु घने
प्रथमं कुमार्भ्यास्तदनन्तरमूदायाः पुत्रवतीसम्भावतपुत्रयोस्तदनन्तरं
बन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः । सर्वदुहित्रभावे पुत्रादेश्यैतुकधनवत् क्रमे-
णाधिकारः—इतिदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
धृतपाञ्चलत्ववचनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदन्दीयमाञ्चमासीयनवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था
इत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

२७६४लं—

१३०—रोवकारि मिच्छिल सदर 'देशोयानि आदालत' ओयाके तागिख ७ माह फिवरेल इं सन १८३२ साल मोतावक २६ माह माघ वाङ्गला शन १८३८ साल रोज मङ्गलवार श्रीयुत देनरि सिक्किशीयेर साहेब आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके—

दुर्गादत्त

आपिलाष्ट

बुनियादसिंह

रेष्पाड्यट

आपिलाष्टेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुद पण्डित, ओ रेष्पाड्यटेर उकिल मुनशी दादारवक्स हाजर आइल । इत पूर्व सन हालेर ३०३१ माह जानओयारिते एइ मोकदमा आमार बैठके रोवकार ओ प्रथम आदालतेर वावत् प्रविनशीयान क्रोटेर सादयक कागजात तथाकार फयछला पर्यन्त ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया कागजात गतो शनेर ४ आपरेलेर लिखित रोवकारि पर्यन्त पडा हइया, इवा अवसान प्रयुक्त मुलतवि छिल । अथ पुनराय दरपेप एइ मोकदमार वावत् एइ आदालतेर सकल कागजात ओ एइ आदालतेर तलब करा त्रिपुरसुन्दरिदत्तरे श्री गङ्गाजलिर मोकदमाय चजे कागजात पडागेल । तत्परे रेष्पाड्यटेर तरफ हइते मिरआकबर आलि एक केता मोकारनामा दाखिल करिलेक अनुमोदने आइल । जेलार जजसाहेबेर प्रेरित कागजातेर फिरण इहाइ मालुम हयजे जे समय जयदत्त ओ त्रिपुरसुन्दरिदत्तरे लिगयोर दखिलकारि तहकीकातेर कर्मजेर तजनिजे छिल, रेष्पाड्यट आदालतेर तलब मते चारि केता नकल छोनेनामा, जाहा कालेकटारिते दाखिल हइयाछिल, दरपेप करे । एवं ताहार परे जजसाहेब ताहा ओ तहकीकातेर कागजात सम्बलित प्रीविणशीयान क्रोटे पाठान इति । यद्यपि स्यात् सत्यतार तहकीकातेर पूर्व एइ विषयेर दरियात करा उचित हइल ये यद्यपि स्यात् पूर्व उक्त छोनेनामासकल सकलेर सम्मति मते लेखा हइयाथाके

तवे ताहार लिखित शरतसकल शाखेरे आ रामते सत्य,
ओ आमले आना उचित वटे कि ना । ए जन्य हुकुम हइल ये
चारि केता नकल छोनेनामा एइ हुकुमे ये अदालतेर पण्डित
ताहार मत्रमुन अनुमोदने उपरेर विशयेर जओयाव दुइ सप्ताह
मध्ये लिखेन-एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय-एवं
ताहार जओयाव आशा पच्यन्त मोकईमा मुलतवि धाऊ इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकार्याधिपतिश्रं युतहेनरीसिकिपरीपरसाहेबधर्माधिकार्य-
लिखितैवदन्दीयकेवरवरीमासोपगतमदेवभीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्तमर्णितसवितरप्रतिरूपपत्रवपुष्टयं च तत्तदन्वयतन्मासोपद्वा-
विंशतिदिनमन्वन्धवधानरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तम्
तदवलाक्य यादृशबाधो जातस्तदनुसारेणान्तर लिख्यते ॥

उपरिलिखितसवेत्तत्रायि यदि सर्वेषां समत्यां लिखितानि स्थुस्तदा
तत्तलिखितनियमाः शस्त्रानुसारेण यथार्था भवन्ति, एवं तत्तत्रियमानां
स्वीकरणमुचितं भवति । यत्रस्तत्तत्रवेत्तत्रेण तत्तत्रवेत्तत्रुभिः सर्वैरेव
लिखित पूर्वकृतत्रिभगोऽतोवासिद्ध इति । अतएव तत्तत्रसवेत्तत्र लिखित-
नियमैर्वास्तवं शास्त्रानुसारेण केपास्त्रिदपि काचिदपि स्वतन्त्रानिर्भवतीत्यन-
वगमात्— इति मिथिलादेशचलितमनुविधादचिन्तामणिविवादरत्नाकर-
विवादचन्द्रबोमित्रोदयप्रभृत्तन्मथानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रातरस्त्वविभक्ता ये स्वरुच्या तु परस्परम् ।

विभागपत्र कुर्वन्ति भागलेख्यं तदुच्यते ॥—इति वीरमिश्रोदयादि-
ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ० ॥

पतितस्तरमुतः क्लीबः षड्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽधिकात्स्यरोगार्तो भर्त्सव्यास्ते निरंशकाः ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ २ ॥

पश्चादप्यौषधादिना दोषनिर्हरणे 'ऋस्त्येवांशुभागिता—इति वीर-
मित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मृते पितरि न क्लीवकुष्ठयुग्मत्तज्जडान्पक्वाः ।

पणितः पतितापत्यं लिङ्गी दार्यांशुभागिनः ॥

तत्पुत्राः पितृदायांशं लभेरन् दोषवञ्जिताः—इति विवादचिन्ता-
मणिविवाहदस्ताकरादिग्रन्थभृतदेवलवचनम् ॥४॥

औरसाः क्षेत्रज्ञाश्चैषां निर्दोषा भागहारिणः ।

सुताश्चैषां च भर्त्तव्या यावन्नो मर्तुं सात्कृताः ॥

अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तवः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थभृत-
याश्वल्क्यवचनम् ॥५॥

भरणं च'स्य कुर्वीरिन् सीयामाजीवनज्ञयात्—इति तत्तद्ग्रन्थभृत-
शङ्खवचनञ्चेति ॥६॥

एतदन्दीयमार्चमासोयद्वाधिशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वा-
याधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३१—रोजकारी मिडिल सदर देओयानी आदालत ओयाफे
तारिख १६ माह फिवरेल इं सन १८३२ साल मोतावक ५
फाल्गुण व ज्जला शन १२३८ साल रोज बृहस्पतिवार श्रीयुत हेनरि
सिकिसपीयर साहेब आदालत मजकुरेर बैठके ॥

भैरवीदासी

वनामे

नवकृष्णवसु

सायेलार उकिल मुनशा गुलाम आहाम्मद ओ तरपडानिर
तरफ हइते सदासुखपाण्डत एक केता आंकालातनामा दाखिल
करिया हाजीर आइल । इत पूर्व गत सनेर १ दिजम्बर तारिखे
छापलार सओयाल दरपेप हइया फयद्वला अनुमोदनेर जन्म
मुलतवि छिल । तदनुजाइ छापलार दोपरा छओयाल फयद्वला

सम्बलित अनुमोदने सन हालेर ५ जानेओयारि तारिखे एइ विशयेर जओयाव तलब-ये यद्यपि स्यात् फयद्वलार मजकुरेर लिखित विशयसकल सत्य तवे फयद्वलार लिखित व्यवस्था अथवा छायेलार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त वटे। एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने (जिज्ञासा) हय। तदनुजाइ पण्डितेर जओयाव दाखिल हओयाते अघ छायेलार खाप आपीलेर छओयाल तत्समभिन्या-हारि कागजात सम्बलित आमार बैठके रोवकार हइया छायेलार उकिलेर स्थाने जिज्ञाशा करगेल-ये आसल दस्तावेज नेमपत्र जाहा ओछियत नामा छओयाले लिखियाछ, कोन मोऊईमाय कोन आदालते दाखिल हइयाछिल। जओयाव जेलाः—२४ परगणार देओयाणि आदालते मवलग १४८८॥० टाका तालुकातेर हिस्या वावन् ८५६ लम्बरेर मोऊईमाय, जाइते नवकृष्णवसु मुदाइ ओ भैरवादासी मुद्दालेहेम् छिल, दाखिल छिल इति। यद्यपि स्यात् एइ आदालतेर जओयावे एइ विषय लिखित ये यद्यपि स्यात् फयद्वलार लिखित छायेलार जओयावेर विषयसकल सत्य-हय, तदनुसारे छाएलार दाखिल करा व्यवस्था शाखानुजाइ दोरस्त वटे। याहाहउक, परे एइ विषय दरियात हयना ये 'फयद्वलार लिखित छाएलार जओयावेर लिखित कोन विषय दोरस्त ओ सग्य हओोन सववे' छाएलार दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त। ताहार प्रति दृष्टे हुकुम हइल ये नेमपत्र दस्तावेज मजकुर एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डित ताहार अनुमोदने उपरेर लिखित विषयेर पत्र ओ सारओयार एरु सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं ताहा आशा पर्थ्यन्त मोऊईमा मुलतवि थाके इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपति श्रीयु नदेनरीक्षितिसीशरसादेवधर्माधिकरण -
लिगिउतदन्दीयकेवरवरोमासीयरोडशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

पत्रमेवं तन्म पितनियमपत्रञ्च यत्तद्विद्यमानार्चमासीयत्तमदिनसम्बन्धिषुष-
वासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामदयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृश-
सोद्यो जातस्तदनगरेणोत्तरं लिख्यते ॥

जयपत्रलिखिता धिन्या उत्तरपत्रलिखितप्रकरणानाम्मध्येऽर्थिन्याः पति-
र्यदि द्वे पत्न्यौ भैरवीदासीरज्ञमर्षीदास्यावेवं रत्नमर्षीदासीगर्भजाता-
जन्माचिकित्सरोगार्त्तमेकं पुत्रं क्षेत्रचन्द्रनामानं संरक्ष्य मृतः स्यात्,
क्षेमचन्द्रोपि तादृशरोगग्रस्त एष मृत इत्यस्य आजन्माचिकित्सरोगार्त्तं
पुत्रे विद्यमाने सत्यर्थिन्या उत्तरपत्रलिखितस्य तत्पतिवृत्तस्योसीयच्छब्द-
वाच्यस्य कार्यस्य या एतयोर्द्वयोर्वा सत्यत्वे सत्येतद्वर्माधिकरणाधिनी-
नियुक्तोकीचशब्दवाच्य निविडव्यवस्था शास्त्रसम्भवा भवति, शास्त्रानुसारेणा-
जन्माचिकित्सरोगार्त्तपुत्रस्य पितृधनाधिकारित्वाभावेन तादृशपुत्रे विद्य-
माने सत्यप्यनशित्यप्रयोजकदोषशून्यपौत्रप्रपौत्राभावे अर्थिनीःतिपत्न्योर-
र्थाद्भैरवीदासीः ज्ञमर्षीदास्योरेवाधिकारस्तयोर्द्वयोर्मध्ये रत्नमर्षीदास्या
मरणे तत्सकान्ततरीयपतिधनांशेऽपि भैरवीदास्या अर्थिन्या एवाधिकारः ।
अर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः । पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहि-
तस्य द्विपत्नीकस्य मृतस्य धने तत्पत्न्योः प्रधानाधिकारित्वेन तयोर्मध्ये
एकस्याः पत्न्या मरणोत्तरं तत्सकान्ततत्पतिधनांशे तत्पत्यु(?)र्थ्ये उत्तरा-
धिकारिणस्ते एवाधिकारिणो भवन्ति, तत्पत्यु?, रुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्र-
पौत्रप्रपौत्राभावे जीवन्त्यास्तत्पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्—इति वङ्गदेश-
चलितदायमगधीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायकमसंग्रहवि-
वादाशंभवेतुविवादमङ्गार्शवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पतितस्तत्पुत्रः क्लेशः पङ्गुरुन्नतको जडः ॥

अन्योऽचिकित्सरोगार्त्तां भर्त्सन्वास्ते निरंशकाः ॥ इत्युपरिलिखित-

ग्रन्थवृत्तयाञ्जवल्क्यचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युष्येष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति तत्तद्ग्रन्थ-
धृतनारवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थश्रुतपाठ-
वलम्बवचनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणारक्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥ ४ ॥

अतः पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादिना ये पूर्वपूर्वस्याभावे परभूताधि-
कारिणो निर्दिष्टास्ते यथा पत्न्यधिकारप्रागभावे गृह्णीयुस्तथा जाताधि-
कारायाः पत्न्या अधिकारप्रध्वत्तेऽपि भोगावशिष्टं धनं गृह्णीयुः—इति
दायभागग्रन्थलक्षणश्चेति ॥ ५ ॥

एतदन्दीयापरेलमासोयाष्टादशदिनसम्बन्धबुधवःसरे भयेषां व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीचैद्यनाथमिश्रेण

५१३२ सहर ढाकार दैत्रोयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुत
दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्य स्थाने प्रश्न एइ लं० १६२-
भोलानाधराय— फौगदी—

मृत रामस्मरण रायेर स्त्री श्रीमतिसावित्रा ओ गोपालकृष्ण
ओ मदनमोहनसिंह ओ मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री—
आसामीयान् ॥

सावित्रार विक्रि १४॥—) क्रान्ति हिस्या जमिदारर कओ-
याला असिद्ध करिया ताहा दखलं पाओयार मकदमा—

हिन्दु एक व्यक्ति वैद्य जाति आपन स्त्री ओ तसगर्भजात
नावालग पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर पुष्यपुत्र राखिया मृत्यु ह्य, ओ ऐ

श्री ओ पुण्यपुत्र दुइ पुत्र छोलानामा अर्थात् विरोध मञ्जनीय पत्र द्वाराय ॥=३११ क्रान्ति हिस्वा ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रे सत्त ओ ।-६॥= क्रान्ति हिस्वा ऐ पुण्यपुत्रे सत्त हइया ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्रे सत्त ताहार मातृ एकारे छिलो, ऐ नावालम पुत्रे मृत्युर पर ऐ अचिरा श्री सावित्रा अर्थात् नावालगेर माता सेइ-दरवस्त ॥=१३१- दस आना सोया तेरगण्डा एक क्रान्ति हिस्वा ऐ पुण्यपुत्रे अनुमति व्यक्तित विशेषकरण विना अन्ये निकट विक्रि करिते पारे कि ना । ओ यदि सेइ दरवस्त मिलकियत विक्रि करिये काशीते थाकिये दिनपात करे, 'ओ पुण्यपुत्र' विक्रि असिद्धेरे जन्ये ऐ मिलकियत दखल पाओयार प्रार्थनाय आदालते वादि ह्य-एमत विशयेते विक्रि असिद्धेरे हुकुम आदालत हइते हइले पर ऐ पुण्यपुत्र विमातार जिवमाने विरोधि मिलकिअतेर उपर दखल पाइते पारे कि ना ॥

द्वितीय—

यदि ऐ हिस्वा विक्रि पर पुण्यपुत्र ऐ विमातार असङ्गत प्रकरण अर्थात् छेनाला कम्म हाकिमेर निकट प्रकाश करिया वादि हए ओ ताहा साबुद ना हइया डिपमिय हइले सेइ दत्तकपुत्र पितृमातृवस्तु पाइते पारे कि ना, अर्थात् विमातार प्रति एमत्त अत्युक्ति दत्तक सत्ते हक पाओयार निषेध ह्य कि ना । एसकल विषयेर उत्तर एतदेशीय चलित दायभाग प्रभृति शास्त्र सम्मत सप्ताहेर मद्रूवे लिखेन । इति सन १२३८ साल, तारिख २८ आवण मौ० शन १८३१—१२ आगस्त ।

समागतपारम्यरुवकारिखंवलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादशबोधोनात्-स्तदनुसारेण भाषया सुलबोपार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

अप्राप्तव्यवहार ईशानचन्द्रेर जननी सावित्रा आपन पति रामशरणरायेर मृत्युर पर पतिर स्थावर वस्तु दत्तकरूप सपत्नीपुत्र

भोलानाथरायेर सहित उभयतो यथाशास्त्र लिपि द्वारा तृतीयोत्तर
 एकांश ।—६॥— दत्तकपुत्रके दिया आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रे
 स्वत्वास्पर्दाभूत दुइ अंश ॥—१३॥— निजाधिकारे अर्थात् आपन
 एकारे राखिया ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रे मरणानन्तर अवीरा
 सावित्रा यथाशास्त्र स्वपुत्रधने अधिकारिणी हइया ऐ विभक्त
 समस्त स्थावर वस्तु विसिष्ट कारण बिना ऐ दत्तकपुत्रे अनुमति
 व्यतिरेक विक्रय करिते पारे ना । यदि ऐ तावत वस्तु विक्रय
 करिया सावित्रा काशीते थाकिया काल आपन करिते थाके, ऐ
 दत्तकपुत्र ऐ विरोधि विक्रीत वस्तु विक्रय असिद्ध हइया आपन
 अधिकार अर्थात् दखल पाओयार प्राथेनाय प्रतिवादि हय, ओ
 राजाशा द्वारा अर्थात् आदालतेर हुकुम मते विक्रय असिद्ध हय,
 तवे विमाता सावित्रा वर्तमान पर्यन्त ऐ विरोधि विभक्त वस्तुते
 सावित्रा बिना दत्तकपुत्र अधिकारि अर्थात् दखल पाइते पारे
 कि ना इति ॥

अत्र प्रमाणम्—

अप्रा शयनं भर्तः पालयन्ती धृते स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति कात्यायन-
 वचनात् ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इत्यादि वचनम् ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ऐ अंश विक्रय करणेर परे दत्तकपुत्र विमातार उपपति
 व्यभिचारादि दोष राजधानीते प्रकाश करिया प्रतिवादि हय,
 ताहार प्रमाण ना हओथाते राजविचारे ऐ दोष मिथ्या हइया
 मकईमा डिपमिप हय । एमत मातृद्वेष्टा दत्तकपुत्र कोनो मते
 विमातार धने अधिकारी हइते पारे ना । यद्यपि औरस पुत्र द्वेष्टा
 हइया मातृर्यथार्थ व्यभिचारादि दोष कोनो स्थाने प्रकाश करे
 तवे सेइ पुत्र मातृधनेर अधिकारी हय ना । दत्तकादिर पाओनेर

विषय कि । केन ना तावत् शास्त्रे लिखित आद्ये-ये पितृ-मातृर यथार्थं दोष पुत्रे सर्व्वतो भावे गोपन करिवेक । इहाते विद्वेष करिया यदि पितृ-मातृर मिथ्या दोष, याहाते अत्यन्त अपमान अव्यवहाय्यत्वादि दोष ह्य, इहा राजद्वारे प्रकाश करिले, सेइ पुत्र पितृमातृधनेर अधिकारि कोनो मते नहे, विशेषत दायभागेर लिखित धनग्रहण धनस्वामिर ऐहिक पारत्रिक उपकार कर्मैर वेतन स्वरूप ताहा, ना करिया, तद्विपरीत विद्वेषादि करिले सुतरां अनधिकारी ह्य-इति दायभागादिशास्त्रसम्मतता व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृद्विष्ट पतितः पण्डो यश्च स्यादीपपातिकः ।

औरसा अपि नेतैऽशं लभेरन् क्षेत्रज्ञाः कुतः॥ इति व्यासवचनम् ॥

गोपयेज्जन्म नक्षत्रं धनसारं गृहे मलम् ।

प्रभोरप्यवमानश्च तस्य दुश्चरितश्च यत् ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जानेन यो न विद्वाश्च धार्मिकः ।—इत्यादिवचनम् ॥

पुत्रान्मो नरफाद् यस्मात् प्रायते इत्यादि (वचनेन) पुत्रकर्तृकतया महाफलश्रुतेः । तत्कर्मवेतनं धनसम्बन्धित्वम् । अतस्तदकुर्व्वतः कुतो वेतनम्—इति दायभागः ।

शन १८३१ साल २५ आगष्ट ॥

श्रीईश्वरो जयति

श्रीदिगम्बरशर्मणः

१३३—सहर ढाकार वेयानि आदालतेर परिडत्त श्रीयुतं दिगम्बर तर्कवागीश भट्टाचार्य्य स्थाने प्रश्न एइ ये— तं० ४९२

भोलानाथराय

कैरावी

शाचित्रा श्रो गोपालकृष्णसिंह श्रो गयरह आत्तामीयान—

प्रथम प्रश्न—

पूर्व्व प्रश्न व्यवस्थापत्रे एतत् बोध ह्य ना ये मातारं व्यभिचा-

रादि दोष प्रकाशे पितृघन पाइते पारे ना । अतएव लिरा जाइते-
छे ये मातृ असङ्गत प्रकरण प्रकाशे पितृवस्तु पाओयार निषेध कि
ना-एहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे परस्यु दिवस मिद्धिलेर शमय
लिखिया पाठाएन ॥

द्वितीय—

पितृमातृदोष प्रकाशे ये पितृमातृघनेर अधिकारि नहे, एम-
स व्यवस्था लिखिया ताहार निचे व्यासवचन ओ दायभागवचन
ये लिखा गीयाछे ताहार अर्थ जथार्थ वाङ्गलाभापाते लिखिया
परस्यु दिवस मिद्धिलेर समय दारिल करेण, गौन ना ह्य । इति
शन १२३८ तारिख १२ भाद्र वाङ्गलार आङ्गरेजी शन १८३१-
२७ आगस्त ।

समागतपारुष्यरूपकारिसंबलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादृशोघो जात-
स्तदनुसारेण भाषया मुत्तबोधार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

मातृव्यभिचारादि दोष प्रकाश करिले पितृघन पुत्रे पाओनेर
बाधा नाइ । पूर्व परने लिखित मातृघन पाइते पारे ना-इति ।

द्वितीयप्रश्नेर उत्तर—

पितृमातृदोषप्रकाशे पितृमातृघने अधिकारी नहे । ताहार
प्रमाण ये व्यासवचन पितृद्विद् इत्यादि । ताहार अर्थ—एइ
पितृद्वेष्टा जीवदशाते वाक्य द्वारा किम्बा आघात द्वारा अपमान
करे एवं मृत्यु हइले श्राद्धादिते वैमुख ह्य, पतित, अव्यवहार्य,
ओ पण्ड, नपुंसक, औपपातिकः उपपातकयुक्तः—एरूप औरस
पुत्र पितृघने अधिकारी हइते पारे ना, सुनरा चेतत्रज दत्तकादि अधि-
कारी नहे ॥ द्वितीय विष्णुधर्मोत्तरवचन—गोपयेज्जन्म नक्षत्र-
इत्यादिर अर्थ—जन्मनक्षत्र, धनसार श्रेष्ठघन, गृहमल गृह-
द्विद्र, प्रभु-पितृ-मातृर अपमान, आर ताहारदिगेर दुष्कर्म गोपन
करिवेक । पितृशब्दे ओ प्रभुशब्दे पिता माता दुइ । इहार प्रमाण
दायभागादि अनेक शास्त्रे आछे । कोऽर्थः पुत्रेण—इत्यादि वचनेर

अर्थः—ये पुत्र धार्मिक ओ विद्वान् ना ह्य, से पुत्रे कि प्रयोजन आछे, अर्थात् धनि व्यक्ति उत्तराधिकारी धनिर द्वेष्टा हइले ताहार धन पाइते पारे ना । इहार प्रमाणः एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थः वाधकं विना अन्यत्रापि कल्प्यते—इति दायभागादिशास्त्रसम्भता व्यवस्था । इति सन १८३१ साल तारिख २६ आगष्ट ॥

श्रीईश्वरो जयति

श्रीदिगम्बरशर्मणः

नं० ४६२ —

१३४—मृत रामस्मरणरायेर पुण्यपुत्र भोलानाथराय-कैरादी ऐ मृतव्यक्तिर ओ सावित्रा ओ गोपालकृष्ण सिंह ओगयरह—
आसामीयान् ।

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने प्रश्न एइ ।

एइ आदालतेर प्रश्न जाहा सहर आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्य निकट पाठान गियाछिल, ओ भट्टाचार्य्य ये उत्तर ओ वचनेर अर्थ लिखियाछेन, ताहा पाठान जाये । यथाशास्त्र कि ना, एवं वचनेर अर्थ ये पण्डित लिखियाछेन ताहा यथार्थ कि ना, एवं यदि व्यवस्था यथाथे, ओ वचनेर अर्थ पण्डितेर व्यवस्थार अक्य ना ह्य, तवे ऐ प्रश्नेर यथाशास्त्र व्यवस्था ओ वचनेर यथार्थ अर्थ लिखिया पाठाएन ।

यदि एक व्यक्ति वैद्यजाति, आपन वित्त राखिया मृत्यु ह्य, आ सेइ वित्त प्रथम स्त्रीर पुण्यपुत्र ओ वर्तमाना द्वितीय स्त्रिर गर्भजात पुत्र मध्ये दुइ अंश, एक अशमते अंश जात हइया, औरस पुत्रेर दुइ अंश ताहार अप्राप्तव्यवहार निमित्तक ओ पश्चात् ताहार मृत्यु हओते आपन मातृ एकारे छिलो, एमत वित्त शास्त्रानुसारे ऐ पुण्यपुत्रेर मातृवित्त, कि पितृवित्त ह्य, इहार उत्तर लिखिया पाठाएन इति । सन १८३१ तारिख २६ आगस्त
मौ० वा० शन १२३८ तारिख १४ भाद्र ॥

श्रीर्जयतिराम

प्रमुखमपितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापनद्वयञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैक-
त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयेनविंशतिदिनसम्बन्धिसोमवास-
रे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबाधो-
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

जाहाङ्गोरनगरसम्बन्धिकोट्यापीलाख्यधर्माधिकरणीयप्रश्नयोदत्तरे सहर
जिलाख्यावान्नरधर्माधिकरणनियुक्तपरिषदतेन दिग्म्बरतर्कभागोशमट्टाचा-
र्येण लिखिते यथाशास्त्रे एव । एवं तत्प्रमाणीभूतवचनानामर्थं अपि
तत्परिषदलिखितं यथार्था एव । किन्तु अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैक-
त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तमासीयेनत्रिंशदिनलिखितप्रथमप्रश्नोत्तरे
व्यभिचारादिदोषप्रकाशकरणे सति पितृत्वत्वास्पदीभूतधनप्राप्तेर्बाधो
न भवति पुनस्येति यल्लिखितं तत्रापि विरोधो मिथ्याभूतमातृव्यभिचारादि-
दोषप्रकाशकर्तुं पुत्रस्थातीव निन्दितत्वेन मानश्च पित्रपेक्षया सहस्रगुणाधिक-
मान्यत्वेन च पितृदोषप्रकाश विनैव मातृव्यभिचारादिदोषप्रकाशेनैव-
पितृदोषप्रकाशकर्तुं पुत्रस्थाकृतयथाशास्त्रप्रायश्चित्तस्योत्तराधिकारित्वेन
कस्यापि धनग्रहणाधिकारित्वस्य योग्यता न भवतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

उपाध्यायाद्दशाचार्य्यं आचार्य्याणां शतं पिता ।

सहस्रन्तु पितुर्माता गौरवेण गतिरिच्छते ॥

गर्भधारणपोषाभ्यां तेन माता गरीयसी ।—इत्यादि श्लोकान्यतर्काल-
ङ्कारकृतदायभागटीकादिग्रन्थलिखितमनुबचनम् ॥१॥

पितृपत्यं सर्व्या मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मातृस्वसार-
स्तद्दुहितरश्च भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयान्यन्यथासङ्करकारिणः स्यु-
रिति प्रयोगतत्त्वादि उदाहृतत्वं पृ० ११८ ग्रन्थधृतसुमन्तु(१)वचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् वैद्यजातीयो व्यक्तिविरोधः स्वत्वत्वास्पदीभूतघनं संरक्ष्य मृतः स्यादथ च तदेव घनं तस्य प्रथमपत्नीपोष्यपुत्रवर्त्तमानद्वितीयपत्नीगर्भज-पुत्रयोर्मध्ये विभागेन अंशद्वयमौरसपुत्रस्यैकोऽंशः पोष्यपुत्रस्येति । तत्रौरस-पुत्रस्यांशद्वयं तस्याप्राप्तव्यवहारत्वेन पश्चात्तन्मरणेन च स्वमातुरायत्तं भवति । एतादृशं घनं यद्यपि पोष्यपुत्रस्य पितृघनमभूत्, किन्तु पश्चाद् भ्रातृत्वत्वास्प-दीभूतत्वेन भ्रातृघनं तन्मरणात्तन्मातृसंक्रान्तत्वेन च तन्मातृमरणानन्तरं मातृसंक्रान्तं भ्रातृघनं भविष्यतीति ॥

अङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीय-प्रथमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३५—यद्यपि पितृव्य ओ भ्रातृपुत्र पैतृक साधारण स्थावर एवं अस्थावर वस्तु वण्टकेर विवाद उपस्थित हइया सालिपेर निकट तावत वस्तु उत्तरकाल अश करिया लओनेर लिखित पठित हइया थाके, किन्तु तदनुसारे कोन वस्तु चिह्नित एयं नाम पृथक, अर्थात् जमिदारि आविर नाम खारिज, ना हइया सकर भूम्यादीर कर प्रदानेर निमित्त महाल खण्ड विलिमते उभये ओसुल तहसील करिया उभये साधारणे राजकर प्रदान करिया थाके, ठाकुरसेवा ओ बागान ओ वाटीदिगर तावत वस्तु साधा-रणे राखिया ऐ भ्रातृपुत्र आपन पितृव्य एयं स्त्री वत्तंमाने लोकान्तर हइया थाके, तवे मिताक्षराप्रन्थ मते ऐ मृत व्यक्ति ऐ सकल वस्तु उत्तराधिकारि ऐ स्त्री किन्वा ऐ पितृव्य हइवेक इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रसुप्तमर्षितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्सम्पर्कियावशिष्टपत्रचतुष्टयं च यदेत-दन्दीयजानवरीमासीयोनिविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिक-

यामद्रूपानन्तर मया प्राप्ता तदलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यते ॥

यदि कश्चित् स्वपितृष्वे विद्यमाने स्वपत्न्याञ्च विद्यमानाया मृतः स्यात्तदा
प्रश्नपत्रं लिखितप्रकारकञ्चान्ति सति मिताक्षरादिग्रन्थमते तस्यैव मृतस्य
स्वक्तवने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्याश्च
विद्यमानाया तत्पत्न्येवोर्ध्वकारी भवितुं न शक्नोति । प्रश्नपत्रलिखितेन
सराजकरस्मावरदेः करप्रदानार्थं पृथक् पृथक् सराजकरस्थावरखण्डस्य
निर्देशेन द्वाभ्यां करग्रहणं कृत्वा ताभ्यां द्वाभ्यां साधारण्येन राजकरो दत्तः
स्यादित्यनेन विवादास्पदीभूतधनविभागस्य शास्त्रानुसारेण निश्चल्युहत्वात् ।
मिताक्षरादिग्रन्थलिखितस्य विभागशब्दार्थस्यैतद् व्यवस्थाया अघोलिखित
तृतीयप्रमाणे स्पष्टीकृतत्वाच्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिमिताक्षरादिग्रन्थभूतयाशुवल्क्य
वचनम् ॥१॥

पत्नी गृहीयान्—इत्येतद्वचनजात विभक्तभ्रातृपत्नीविषयम्—इति मिता
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

विभागो नाम द्वयसमुदायविषयायामनेकत्वाम्यानान्तदेकदेशेषु व्य-
वस्थापनम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दानग्रहणपरञ्चगृहक्षेत्रपरिग्रहाः ।

विभक्तानां पृथग्विधायाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥—इति वीरमिश्रोद-
यादिग्रन्थभूतनारदवचनम् ॥४॥

साक्षात्त्वं प्रातमाव्यं च दानं ग्रहणमेव च ।

विभक्ता भ्रातरः कुर्युर्धाविभक्ताः कथञ्चन ॥ इति तत्तद्ग्रन्थभूत-
नारदवचनम् ॥ ५ ॥

येपामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिचयतः ।

विभक्तानवगच्छेद्युल्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थभूत-
नारदवचनञ्चइति ॥ ६ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिरासरे मयेय व्यवस्था
दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३६ इ सन १८३० साल तां २५ फेपरेल—

कोटेर पण्डितेर द्वाराय अजगतो हइवेन ये धार्गचे ब्राह्मण
गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे किना, आर यदि स्यात्
सगुण करे तवे ताहार धर्मो हाइन हइते पारे किना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशधोषो जातस्तदनुसारेणोत्तर
लिख्यते—

वागचीयापनामकत्राहणजातीयो गङ्गाजलेन शपथकरणस्य योग्यो
न भवति । यदि च तेन गङ्गाजलेन शपथ क्रियते तदा तस्य धर्महानि
र्भवत्येवेति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

यथा गङ्गोदकं तोयं गोमयं वा तथा द्विजम् ।

असत्यं वापि सत्यं वा स्पृष्ट्वा दिव्यं करोति यः ॥

त्रिजनेटिकुलसयुक्ता रौरव नरकं व्रजेत् ।

कर्ता कारयिता भद्रे तथैव नरकं व्रजेत् ॥ इति गायत्रीतन्त्रधृत

(पृ० ४४) महादेववचनम् ॥ १ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३७ सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर उपर सओयाल-
सओयाल—

यद्यपि मृत राजा चित्रसेनेर स्त्री राणी इन्द्रकुमारी अवीरा

आपन ओयारिप अर्थात् आपन स्वामीर भ्रातार पौत्र महाराजा तेजचन्द्र वाहादुरेर वर्त्तमाने सुपरेम कोटेर आदालतेर खरचार देना दान अर्थात् दाइक हईया सुपरेम कोटेर देना खरचा आदाय-कारण आपन दखली चित्रसेनेर त्यज्य कोन वागान विक्रय करिया थाके तवे शांखानुसारे ताहा सिद्ध हय किना । एवं यद्यपि मुद्दह महाराजा तेजचन्द्र वाहादुरेर महर करा लिपिद्वाराय राजा चित्रसेनेर स्त्री इन्द्रकुमारीर प्रति उपरेर लिखित वाग्गन विक्रयेर ओ हस्तान्तरकरणेर क्षमता बोध हय, सेमते ओ वागान मजकुरान् विक्री सिद्ध हय किना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुत्तमर्षितप्रश्नपत्रं यद्गुरुरेजोशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशता-
ब्दीयमाचमं मासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिषुशुकवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वया-
नन्तरं मया प्राप्तं तदुरलोत्थ यादृशबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तर लिखते ॥

यद्यपि मृतस्य राजश्चित्रसेनस्यावीरया पत्न्या राज्ये इन्द्रकुमार्या स्वपतिभ्रातृमेव महाराजतेजश्चन्द्ररायवहादुराख्ये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणि विद्यमाने सति सुप्रीमकोटाखण्डमर्माधिकरणव्ययप्रस्तया तथा तद्मर्माधि-
करणव्ययपरिशोधनाय राजश्चित्रसेनस्य त्यक्तः स्वायत्तीभूतः कश्चिदा-
रामो विक्रीतः स्यात्तदा शांखानुसारेण तादृशविक्रयः सिद्ध्यति, पुत्रपौत्र-
प्ररोचरहितस्य मृतस्य घने उत्तराधिकारिस्त्वेनाधिकारिण्याः पत्न्या आपन्नि-
वारणार्थम् आवश्यककार्यार्थान्तरार्थं च तत्तत्कार्योपरयुक्तस्य तद्गनेविक्र-
यस्य शांखानुसारेणाधिकारित्वात् । एवं यद्यप्येनो महाराजतेजश्चन्द्र-
वहादुराख्यस्य मुदाङ्गिलिपिद्वारेण राजश्चित्रसेनस्य पत्न्या इन्द्रकुमार्या उत्तरलिखितारामाणां विक्रयप्रकारेण प्रकारान्तरेण वा हस्तान्तरकरण-
क्षमताया बोधो भवति, तथापि तेरामारामाणां विक्रयः सिद्ध्यति, उत्तराधि-
कारिस्त्वेन प्राप्तानस्यपतिवनया पत्न्या कृतस्त्रोत्तराधिकारिसम्पत्त्याः प्रश्न-
परलिखितप्रकारकापन्निवारकावश्यकव्ययपरिशोधनाय तदुरयुक्तपतिवनवि-
कयस्य सिद्धेतिव्यस्तुद्वान्तरिति वदन्तरेण बलितदायभागश्लोकात्कर्तव्यं ।

द्वारकृतदायभागटीका-दायकमसंग्रह-व्यवहारतत्त्व-नारदस्मृति-विवादार्णव-
सेतुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः— इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाञ्चवल्न्य-
वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्तं च विद्यादापत्कृतञ्च तत्—इति व्यवहारतत्त्वादि-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कर्ष्यार्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाद्यमनविक्रयाः ॥ इति

एतान्यपि प्रमाणानि भर्ता यद्यनुमन्येत इति च नारदस्मृत्यादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म करोति
सृतभर्ता कापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत ।

इति विवादमङ्गार्यवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

अङ्गरेजोशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयभेदमासीयसप्तदशदि-
नसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीऽर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३८—अशेष शास्त्राध्यापक श्रील श्रीयुक्त सद्दर वैश्रोयानि
आद्यालतेर परिष्ठतजन सकल

सञ्चाल—

एकव्यक्ति रामकान्त भट्टाचार्य्य नामे छिल । ऐ रामकान्तेर
तिन पुत्र रामजय ओ कालीप्रसाद ओ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य
दृश्याछिल । ताहार मध्ये कालीप्रसाद निःसन्तान, आर रामजय

एक कन्या ओ एक स्त्री ऐ खीर गर्भे एक पुत्र राखिया आपन पिता ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर वर्त्तमाने फौत् करे । तदपरे रामजय भट्टाचार्य्येर पुत्र भूमिष्ठ हइले किछु काल गते रामकान्तभट्टाचार्य्ये एक पुत्र, अर्थात् ऐ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य ओ एक पौत्र अर्थात् ऐ रामजयेर पुत्रके ओयारिष एवं किछु भूम्यामि राखिया फौत् करे, आर ऐ सकल भूम्यादि रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आर ऐ रामजयेर पुत्रे एजमालि दखले थाके । तस्य परे रामजयेर पुत्र आपन माता ओ भग्नीर सन्मुखेते अष्ट बत्सर वयः क्रमे फौत् करे । उहार फौतेर पर ताहार माता, अर्थात् रामजयेर स्त्री, आपन ऐ एक कन्याके राखिया फौत् करे । ताहार पर रामजयेर कन्यार तिन पुत्र सन्तान हय । ऐ तिन पुत्रे मध्ये एक पुत्रे - प्राप्त हइयाछे, ए द्यने दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे । तदसेत्ताय रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आपन-पिता, रामकान्तभट्टाचार्य्य, ओ आपन मातार श्राद्धादि करिया एवं स्थावर वस्तुते दखिलकार धाकिया आपन नावालग दुइ पुत्र आर एक स्त्री अर्थात् ऐ नावालगेरदिगेर माताके राखिया फौत् करे । ए द्यने रामसुन्दरभट्टाचार्य्येर ऐ स्त्री ओ नावालग दुइ-पुत्र वर्त्तमान आछे एमते रामजयभट्टाचार्य्येर ऐ कन्यार दावि रामजयेर हिस्सार भूम्यादिर प्रति अर्शे किना । यदि स्यात् अर्शांय, तवे ताहार दावि ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर भूम्यादि वस्तुर प्रति कि आन्दाज अर्शांइते पारे इति । शन १८३२ साल तारिख १६ जानेओरि मत्तावक शन १२३८ साल तारिख ७ माघ—॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिगुणवासरे^१ घटिकाद्वयाधिक्यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति रामजयभट्टाचार्य्यस्य दुहितुरयोगो रामजयभट्टाचार्य्ययोग्याशभूम्यादिकं प्रति भवत्येव । अतएव रामजय-

भट्टाचार्यस्य पितृ रामकान्तभट्टाचार्यस्य स्वत्वास्पदीभूतभूम्यादिधनाद्दश-
परिमितभूम्यादिधनं प्रति तादृशाभियोगोऽयुक्तः, यतो रामकान्तभट्टाचार्यो
राममुन्दरभट्टाचार्यनामानमेकं पुत्रमेकश्च पौत्रमर्पाञ्जीवति पितरि मृतस्य
रामजयभट्टाचार्यस्य स्वकीयज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रश्च संरक्ष्य मृतः । अतएव राम-
कान्तभट्टाचार्यस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने शास्त्रानुसारेण तदानीं विद्य-
मानयोः पुत्रपौत्रयोरेव तुल्याधिकारः, रामकान्तभट्टाचार्याख्ये पितरि जीवति
सति श्वानपत्यस्य मृतस्य कालोप्रसाद्भट्टाचार्यस्य तद्द्वितीयपुत्रस्य पैतृका-
दिधने स्वत्वानुत्पादात् । एवञ्च सति रामकान्तभट्टाचार्यस्य पौत्रो यदि स्व-
जननीं स्वभगिनीं चैकं संरक्ष्यानपत्य एव मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधने
अर्थान्मूलद्रुपस्य रामकान्तभट्टाचार्यस्य त्यक्तधनाद्दशे तन्मातृरथात् राम-
जयभट्टाचार्यस्य पत्न्या एवाधिकारः तस्याञ्च मृतायां तत्संज्ञान्तस्वपुत्रधने
तत्पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एवाधिकारिणो भवन्ति । तत्र रामकान्त-
भट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः
कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा यथासीत्त-
दा तस्याधिकारः जाते^१ च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्त्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणा-
मर्थाद्रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव
भविष्यति । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रे तत्पितृव्यपुत्रा-
णामर्थात् राममुन्दरभट्टाचार्यस्य पुत्राणां प्रश्नपत्रलिखितानां नाधि-
कारः । यदि च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्र-
पर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे
व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्-
भगिन्यास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलो^२ भूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रो-
त्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृद्वने दुहितु-
रधिकारस्तथा भ्रानुधनेऽप्यधिकारः । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृ-
दौहित्रे स्वतः तत्पितुः पार्ष्णश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तत्पितुः पार्ष्णश्राद्ध-
पिण्डदानाधिकारिण्यास्तद्भगिन्या नाधिकारः । किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्रा-

णां बोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति बह्वदेशचलितदायभागभीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीका—दायतत्त्व-दायक्रमसंग्रह विवादमहार्णवादिम-
ग्यानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते भृते पुत्रे तत्सुतमृक्यभागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

समेतांशं स्वपिच्यन्तु पितृव्याप्तस्य वा सुतात्—इति दायतत्त्व-
विवादमहार्णवादिग्रन्थधृतकाल्यायनवचनम् ॥१॥

यथा पीतामहे घने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन्भृते तत्पुत्राणामपि, न
तत्र सर्वाकार्यविप्रकार्याभ्यां कोऽपि विशंपः । पार्ष्वण्यविधिनापि पिएडदानेन
द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषात्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ मातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः ॥—इत्यादितत्तद्ग्रन्थधृतपार्ष्वण्यवचनम् ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो घनिदौहि-
त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति तत्तद्ग्रन्थ-
धृतपार्ष्वण्यवचनम् ॥५॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
स्तदभावे पितुस्तोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमा-
त्रेयपुत्रः—इत्यादि च भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥६॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि
तस्याः स्त्रीत्वेन पार्ष्वण्यपिएडत्वाभावात्तदधिकारः । दुहितुस्तु दौहित्रात्
पूर्वमहार्णवादज्ञात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति भावः
इति भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीवचतुर्विंश-
तिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतिराम् ,
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण .

१ सदर देओयानि आदालतेर रुवकारि इङ्गरेजी संन १८३२
साल तारिक २३ माह फेब्रेओयारि मोतावक वाङ्गला १२३८ साल
१२ माह फाल्गुन रोज वृहस्पतिवार ए आदालतेर हाकिम विचा-
रुं ओयालपोल साहेवेर बैठके—

महाराजा गोविन्दनाथराय—

आपीलाण्ट—

गुलालचन्द्र ओरफे नानका वावु प्रभृति—

रेण्पाडण्टान—

आपिलेण्टेरे उकिल मुनशी हसन आलि ओ रेण्पानडेण्टा-
नेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ सदासुख पण्डित हाजिर
आइलेन । ए मकईमा पूर्व कयेक तारिके कथवर्ट धरनेल सिली
साहेव हाकिमेर समन्ने रुवकार ओ लालिसेर आरजि इत्यादि
प्रावेनसिएल क्रोटेर कागजात फयसाला पर्यन्त ओ ए आदालतेर
सओयाल ओ जओवाव पडागिया १८३१ साल १८ माह मे तारि-
खे कयेक प्रश्नेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डित हइते तलव हइया
ओहा दाखिल हओन वादे स्थकित छिल । गते दिवस आमार
बैठके रुवकार ओ नालिपेर आरजि इत्यादि क्रोटेर कागजात फय-
साला पर्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओओ गुजिवाते ओ
ओहार जवाव पडा गिया दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल । अद्य
पुनराय ए रुवकार हइया ए आदालतेर पण्डितेरे व्यवस्था ओ
मुशम्मात माया कोडरेर सओयाल ओहार उकिल मुनशी दादार

चकेसर साक्षरते दृष्टी हृदया बोध हइल ये विद्यादीय स्थानेर प्रकृत-
कर्ता माया कोडरेर स्वामीर उत्तमचन्द्रलाहार' मुनिचन्द्रके
आपन पोष्य एक पुत्र विवेचना करिया देखोन, ओ कोटेर व्या-
पार, ओ जमिदारीर कर्म सकल निर्वहण, ओ ए जमिदारि बहा-
लि, ओ ताहार दान विक्रय हइते स्त्री के विमुख राखन कारण,
ओसि नियुक्त करिया, ताहार नामे ओसियतनामा लिखिया दिया
मृत्यु ह्य। कियत् कालानन्तर मुतिचन्द्र ओ पुष्यपुत्र विवेचना
बिना मरे ओ मायाकोडर उत्तमचन्द्रलाहार श्री गोलाल चन्द्र
रेषानडेटके आपन पोष्यपुत्रताते ग्रहण करे। आपिलाएट ताहार
पिता मृत उत्तमचन्द्रेर पिता खडर्गसिंहेर विनामे लाट इयाङ्गव-
पुरदिगर छय लाट खरिद करा उल्लेखे ऐ लाटसकल दखल
पाओन दाविते मायाकोडरेर नामे नालिस करिया, डावरदिगर
दुइ लाट मुर्दायालेहार स्थाने लइया, मकईमा सोलहनामानुजाय
निष्पत्य कराइलेक, ओ फयशला जारिते दुइ वाटेर उपर दखल
ओ काबेज हइल। तत्पर गोलालचन्द्र रेषानडेट उत्तमचन्द्रेर
पोष्य पुत्रता ओ आपनि उत्तमचन्द्रेर पोष्यपुत्र ओ ताहार स्था-
नापन्न थाकने सोलह ओ विक्रय विषये मायाकोडरेर अक्षेमता
ऐ जाहाजे इयाङ्गवपुरदिगर चतुर्दश लाट दखल पाओन दाविते
आपिलाएट ओ लाट नारायणपुरप्रामेर खरिददार गोपीचरण-
घडाल मुईइर कबुल दावि ओ उभयेर सोलह सम्बलित दरखास्त
गुजराइलेन ये प्रविनसियान कोटेर हाकिमेर हजुर हइते
ताहादिगेर कबुल दावि ओ सोलहनामा, जाहा आपिलाएट ओ
मुशम्मात मायाकोडरेर मध्ये हइल, ताहा नामञ्जूर; ओ अन्यथा
हइया मुहयेर हक्के डिगिरि ओ आपिलाएटके ताहार सावेक नालिश
जारिकरण कारण अनुमति हइल इति। यथा कागजात् अनुमो-
दन ओ मकईमार समस्त घृत्तन्त दृष्टे रेषानडेएटेर पोष्यपुत्रता
साक्षीगणेर द्वाराय साब्यस्थ, ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यव-

स्था हइते ओ अनुभव हइतेछे-ये उत्तमचन्द्रेर स्त्री मायाकोडर स्वामिर अनुमति थाकु क वा ना थाकु क उत्तमचन्द्रेर धसेर व्यव-
हाय्य जयनि शाखानुजाय पोप्यपुत्र राखन ओ तत्परिवर्त्तन
क्षमता राखे । ए कारण आमार समीपे गोलालचन्द्र रेप्पाण्डे-
एटेर पोप्यपुत्रता ओ जयनि शाखप्रमाण । ताहार सिद्धताते कोन
सन्देह नाइ । किवल एइ सन्देह हइतेछे ये पोप्यपुत्र थाकिते मुस-
म्मात मायाकोडर स्वामीर त्यक्त धन स्वामीर असियतनामा
लिखित नियमेर अन्यथाय जयनि शाखानुसारे हस्तान्तरेर क्षमता
राखे कि ना; ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखित एवा-
रते-ये जयनि शाखानुसारे स्वामीर मृत्युरपर, यदि मृतव्यक्तिर
स्त्री पुत्रवति थाके, तथा च ये प्रकार ताहार स्वामीर क्षमता छिल,
तदनु रूप स्त्रीर प्रत्येक विषये क्षमता याछे-यपट्टता ओ बोधे सिद्ध
आइसे ना, ये ताहार अभिप्राय कि कि स्वामी आपन जीवताव-
स्थाय ये प्रकार स्थावर विषय सोले किन्वा विक्री अथवा दाने
हस्तान्तर कारण^१ क्षमता राखित सेइमन उहार स्त्री स्वामी मर-
णान्ते पुत्र सन्तान थाकिते क्षमता राखे । अतएव एइ विषय ए
आदालतेर पण्डितेर स्थाने जयनि शाखेर प्रकृतानुमति बोधकरण
मनासिय बोध हैया हुकुम हइल ये एइ रुव कारिर नकल व्यवस्था
सहित एइ हुकुमे ये व्यवस्था लिखित एवारतेर^२ अर्थ ओ तात-
पर्येर विस्तारित, ओ एइ प्रणेर प्रत्युत्तर ये मायाकोडर उत्तम
चन्द्रेर कायेम मोक्षम ओ पोपरपुत्र गोपालचन्द्र थाकने. ओ उक्त
मजमुने उत्तमचन्द्र असियतनामा लिखिया देओने ओ जयनि
शाखानुसारे सोलह रुपे दाविर वस्तुर मध्ये घोडा मान्दा ओ
डावरा दुइ लाट आपीलाएट सावेक मुर्दईके छाडिया देओन क्षमता
राखित किता-एक मासेर मध्ये लेखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर
हाओला करा जाय, ओ ए रुवकारिर द्वितीय नकल व्यवस्था
नकल सहित सहर मुरसिदावादेर जज साइवेर निकट एक मास

१. कस्य इति सानेभन् पाठः ।

२. बातेर-दांत सानेपान् पाठः ।

मेयादे पृसेष्ट सम्बलित एइ हुकुमे पाठान जाय ये रे एवारतेर अर्थ
ओ रे प्रस्तेर^१ प्रत्युत्तर जति अर्यात् जयनि शाखेर पण्डितेर स्थाने,
ये उभयेर सहित सम्पर्क ओ प्रयोजन नाराखे, लेखाइया आदालते
प्रेरण करेण इति ।—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतिरिचार्डश्रीयालपोलसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयफेवररीमासीयप्रयोविंशतिदिवसीयवि चारपत्रान्तर्गतप्रश्न-
प्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्धर्माधिकरणोयव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयापरेल-
मासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे एवं तत्समर्पितमासीयत्रामाख्यपत्र
प्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रमुसमर्पितव्यवस्थालिखितस्य जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरस्थानन्तरं
पुत्रवत्या अपि पत्न्याः पतिवत्कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येनेति अस्यायमर्थः—
पुत्रे विद्यमाने पितुर्यादृशायादृशकार्य्यकरणे, अर्यात् स्यावरस्य दानविक्रय-
सन्धिप्रभृतिकार्य्यकरणे, जैनशास्त्रानुसारेणाधिकारः तथा पतिमरस्थानन्तरं
स्वेच्छाकृतपोष्यपुत्रे^२ विद्यमाने मातुरपि तादृशतादृशकार्य्यकरणे अधिकारः ।
एवं च सति मायाकोमराख्या प्रत्यर्थिनो गुलालचन्द्रस्य प्रमुसमर्पितप्रश्न-
पत्रे उत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रत्वेन प्रतिनिधित्वेन च मन्यमानस्य विद्यमान-
सायामपि उत्तमचन्द्रलिखिते प्रमुसमर्पितविचारपत्रलिखितार्थप्रतिपादके-
ष्वासीयत्रामाख्ये पत्रे सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण सन्धिरूपेणाभियोग-
विषयीभूतानां स्थावरद्रव्याणां मध्ये घोडामान्दा डारैति च भाषायां
द्विलाटशब्दप्रतिपादस्यावरस्यैतदूर्ध्वधर्माधिकरणस्यावान्तरधर्माधिकरणस्य
चाधिने त्यागपूर्वकसमर्पणस्य क्षमतामरह्यदेव । यतः प्रमुसमर्पितासी-
यत्रामाख्ये पत्रे मतिचन्द्रं प्रत्युत्तमचन्द्रेण लिखितमस्ति—मम नाम रत्न-
शार्थमेकं बालकं स्वमतसिद्धं पोष्यपुत्रं रक्षित्वा तं शिद्धितं कृत्वा

ज्ञानापन्नं तं वाणिज्ये सराजकरस्थावरे चाभिपिक्तं त्वं करिष्यसीति ।
 अनेनोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः पोष्यपुत्रमह्यानुमते
 स्तत्पत्न्युरनवगमात् पुनरप्युत्तमचन्द्रेण मतिचन्द्रं प्रति तस्मिन्नेवासीयन्ना-
 माख्ये पत्रे लिखितमस्ति मम स्त्री यदि वाणिज्ये व्यापारमुत्थापयितुमिच्छति,
 अथ च सराजकरस्थावरमस्मत्स्वत्वात्पदीभूतं भवदभिप्रायं विना कस्मैचि-
 ह्ददाति विक्रीणीते वा तत्रास्मत्सम्मतम्, त्वं तत्र प्रतिबन्धकतामास्थाय
 दानं विक्रयं वा मा कारयेति । अनेन मतिचन्द्रस्यासीशब्दप्रतिपाद्यस्य
 जीवनावस्थायां तदनुमतिमन्तरेणोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः
 स्तद्धने दानविक्रयादिज्ञमता नास्ति । किन्तुत्तमचन्द्रस्याज्ञानुसारेण
 मतिचन्द्रकृतस्योत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रस्य विद्यमानतायामपि असी(यत्)-
 प्रतिपाद्यस्य मतिचन्द्रस्यानुमती यस्यां मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्र-
 यादिज्ञमता असीयज्ञमाख्यपत्रानुसारेणाप्यस्त्येव । असीशब्दप्रतिपाद्यस्य
 मतिचन्द्रस्यासीयन्नामाख्यपत्रलिखितनियमसहितस्य मरणानन्तरं तदनुम-
 तेरसम्भावितत्वेन मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्रयादिज्ञमतायामपि
 चाधकाभावः, असीयन्नामाख्ये पत्रे उत्तमचन्द्रस्याज्ञानातस्यासीशब्दप्रति-
 पाद्यमतिचन्द्रं प्रत्येव लिखितत्वेनान्यं प्रति अलिखितत्वात् । एवं च सत्ये-
 तद्विवादे जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पत्यनुमतिमन्तरेणापि पोष्य-
 पुत्रमहशाधिकारिण्यास्तस्यागकरशुद्धमतापन्नायाः पतिमरणानन्तरं पति-
 वत् स्वाच्छन्द्येन कार्यमात्राधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिकृतासीय-
 न्नामाख्यपत्रलिखिताज्ञानुसारेणाकृतपोष्यपुत्रस्य पतिकृतस्यासीशब्दप्रति-
 पाद्यस्य मरणेन निस्तन्देहेन पतित्यक्तमुदायधनत्वामिन्यारचोत्तम
 चन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः अर्थिनोऽभियोगविपर्ययभूतधन-
 विपर्ययभियोगेनाभियुक्ताया मायायां षडलाटशब्दप्रतिपाद्यान्तर्गतद्विलाट-
 शब्दप्रतिपाद्यस्य पतित्यक्तधनानां मध्ये अत्यल्पस्य त्यागपूर्वकसमर्पण-
 त्याधिना सह विवाहनिवारणफलकस्यावशिष्टलाटचतुष्टयशब्दप्रतिपाद्य-
 संरक्षणफलकस्य च ज्ञमताया निष्प्रत्यूहत्वात्—इति गौतमप्रश्नीयादिजै-
 नशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था । अत्र प्रमाणानि अस्मद्त्तप्राचीनव्यवस्था-
 लिखितानि सर्वान्येवेति ।

एतदब्दीयजूनमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवाधरे भयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२—रोवकारि मिडिल शदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्स पीयेर शाहेवेर वैठके ओयाक्के तारिख १६ माह आपरेल इंशन १८३२ साल मोतावक ८ वैशाख वाङ्गला सन १२३६ साल रोज वृहस्पतिवार ।—

राधाचरणवर्णिक

छापल

१० छापल हाजीर आदल । छापलेर सओयाल इंसन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित । एलाका जाहागिर नगरेर कोर्ट आपलेर हाकिम फेरिकेरापट् साहेवेर हुकुम । जाहाते छापलेर दावि डिसमिश हइयाछे । आ ऐ सनेर ७ दिजेम्बर तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम जाहा मोफशीरतरत् सदर आपीलेर दरखास्त नामञ्जूर हय, ताहार एवं अन्य अन्य मरातवेर नाराजीते छापलेर सओयालेर सामील व्यवस्थाजातेर अनुमोदने ओ धाविश्वक मते एइ आदालतेर पण्डीतेर व्यवस्था तलवे सावेक नामञ्जूर हओया सओयालेर छानि तजविजेर प्रार्थनाय एलाका जाहागिर नगरेर कोर्ट आपलेर दस्तखत ओ मोहरे वाङ्गला एवारतेर चारि केता नकल व्यवस्था ओ सन १८३१ साल ५ शेतम्बर तारिकेर लिखित कोर्ट मजकुरेर एक वेता फयदला सम्बलित, जाहा एइ मासेर १२ तारिखे दखिल हइयाछिल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये सन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित कोर्ट मजकुरेर फयदला माय नकल व्यवस्था, ये कोर्टेर फयदला ताहार बुनि-

यादे हृदयाद्ये, एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-जे पण्डित मौसुक एइ विशयेर जवाव एक सप्ताह मध्ये लिखेन—ये व्यवस्था मजकुर दोरस्त बटे कि ना इति ।—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसूपीयरसाहेवधर्माधिकरण - लिखितैतदब्दीयापरेलमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र - तिरूपपत्रमेवं तत्समर्पिताजाहाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोटोपीलाख्यधर्माधिकरणीय- जयपत्रं व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसहितञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिरानिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

अर्थिनो मातामही यदि स्वसंक्रान्तपतिस्यावरादिघनस्य स्वभरणपोषणार्थं पतिकृतर्णापाकरणार्थं वा पत्सुरौर्ध्वदैहिकक्रियाद्यावश्यककार्यार्थं वा हस्तान्तरं कृतवती स्यात्तदा प्रभुसमर्पितव्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति नोचे दर्थिनोऽप्राप्तव्यवहारतायां हस्तान्तरपत्रे साक्षित्वेन पितृकर्तृकृतग्रामलिखनेन प्रतिनिधित्वेन पितृकर्तृकस्वनामलिखनमात्रेण च शास्त्रसम्मता न भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य घने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तस्याश्च वर्तनाद्यसत्तादुपरिलिखितावश्यककार्यार्थं तत्तत्कार्योपयुक्तस्य पतिघनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वात् तदव्यतिरेकेण हस्तान्तरकरणक्षमताया अशास्त्रीयत्वाच्च—इति बङ्गदेशचलितशयभागदायतत्त्व दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्यवसेतुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभृतयाश्वल्क्यवचनम् ॥१॥

वर्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतं तत्राप्यशक्ती विकरणमपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मर्तुकामेन वा मर्त्री उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपत्नापि सा दाप्या घनं यद्यश्रितं सियाः ॥—इति विवादार्यव-
सेतुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थधृतकाल्यायनवचनम् ॥३॥

रिक्त्यग्राही ऋणं दाप्यः—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाशवल्यवचनम् ॥४॥

एवञ्च मर्तुरीर्षद्वैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति
दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा उद्धर्षमाणुयुः ॥—इति दायभाग-
दिग्रन्थधृतकाल्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

एतदन्वयजूनमासीयाशविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाचरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—रोषकारि मिथिल सदर देओयानि आदालत मो०
फलिफाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस
पीयर साहेबेर बैठके ओयाके तारिक ६ माह माइ इं सन १८३२
साल मोतावक २८ वैशाख पाद्मला सन १२३६ साल रोज
बुधवार ॥

आनन्दमोहनघोष—

मोशम्माद हरिमिया—

आपीलाएट

रप्पाएट

आपिलाएटेर सकिता सदासुख परिडत हाजिर आइल । इं
सन १८२६ सालेर ६ शेतम्बर तारिखेर लिखित एलाका मुरसि-
दायादेर प्राबिणसियान कोर्टेर फयसलार नाराजी ओजुहात
सम्बलित आपीलाएटेर सओयाल सन हालेर १६ आपरेल

तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मतावक जाहा कोर्ट मजकुरेर सारटफिकिट माय आपीलाएटेर सदर आपिलेर सओयाल अनु-मोदनानुसारे आपीलाएटेर खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर आइशन, ओ ओजुहात दाखिलकरण जन्य आपीलाएटेर नामे एतलानामा जारिर हुकुम छाने हइयाछिल । उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ एइ आदालतेर तहबिलदारेर दस्तखति उकिल मजकुरेर मेहन्यतआनार वावत मबलगे ३२५६ टाकार एक केता रशीद सम्बलित, जाहा ऐ माइ माहार २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, सन हालेर १९ आपरेलेर अनु-मोदन हओया माय शारटफिकिट ओ गयरह दरपेय हइल । ततपरे आपीलाएटेर उकिल एक केता हेवानामा धाङ्गला एवारतेर २ दुइ टाका किम्मेतेर फिरिस्ती सम्बलित दाखिल करिल । दरियात हइल ये आपीलाएट एइ मोकर्द्दमार जामिनि खरचा कालीकान्तराय जमिनदारेर नामे कोर्टे दाखिल करियाछे । एवं ताहा तथाकार नाजीरेर तहकीकाते मातबर आसियाछे । ए प्रयुक्त प्रकाप ये आपीलाएट आपीलेर सामुदाइक सरापत वजाय आनियाछे, एवं एइ मोकर्द्दमा प्रीविणसीयान कोटेर प्रथम तज-विज हओया सदर आपीलेर जोग्य । एजन्य हुकुम हइल ये एइ मोकर्द्दमार शदर आपील मज्जूर एवं लम्बले दाखिल हय । तत परे कोटेर फयछला ओ मौजेवान ओ आशल हेवानामा पडा-गेल । हुकुम हइल ये नकल फयछला ओजुहात सम्बलित ओ हे-वानामा एइ आदालतेर पण्डतेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डित मौछफ फयछलार लिखित हेवानामा मजकुरेर विषय सकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव लिखेन जे हेवा-नामा मजकुरेर मोतावक मुदंड या रेष्पाडएट आपन स्वामीर हियार हकदार हय कि, किम्वा नाकालगी हालते उहार स्वामीर मातार सादातकार उहार स्वामीर मृतु हओन सरवे आपी-लाएटेर ओजुहातेर लिखित ओजरातेर अनुमोदने लोप हइयाछे

किना इति । परिहृतेर अश्रोयाव पौद्धार पर इङ्गरेजी सन १८३१ सालेर ६ आइनेर २ दोशरा दफार मोतावक मोनछेय हुकुम धादेर हइवेक इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतद्देनरीसिकिसूपीदरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितैतद्वर्दीयमैमा सीयनवमदिबसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं
तत्समर्पितं मुरशीदाबादाख्यनगरसम्बन्धिकोर्टीनीलाख्यधर्माधिकरणीयज्ञ-
यपत्रप्रतिरूपपत्रमुज्जातसहकनिवेदनपत्रसहितं दानपत्रञ्च यत्तन्मासीरैकविंश-
तितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रमुसमर्पितदानपत्रानुसारेणार्थिनी अर्थादेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनी
स्वपतिपोग्नाशस्याधिकारिणी भवति । मातरि जीवन्त्यामप्राप्तव्यवहारता-
वस्थायां चैतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनी पतिमरणेनैतद्वर्माधिकरणायुज्जात-
सहकनिवेदनपत्रलिखितान्तदृष्ट्या चार्थिन्याः स्वत्वलोपो भवितु न
शक्नोति, यतो दानपत्रे दात्रा स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति स्वस्वत्वास्वदीभूत-
समुदायधनं पत्रजातसहितं स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण प्रसजतया स्वाभारिक-
बुद्ध्या रोगरहितेन स्वस्वत्वत्यागपूर्वकं दानं कृत्वा दानपत्रं लिखित्वा
युवाभ्यां मया दत्तम्, युवां सराजकरस्थावरस्थावरात्मकमत्सोपार्जित-
समुदायधनमायत्तीकृत्य तुल्याशित्वेन भोगं कुरुताम्, तत्र मया सह ममान्यै-
श्चोत्तराधिकारिभिः सह वा किञ्चित् सम्बन्धो नास्तीति । अनेनैव दानस्य
सर्वतोभावेन शास्त्रानुसारेण निष्पन्नत्वेनैतादृशदानोत्तरक्षणमेव दानग्रही-
त्रोरानन्दमोहनयोदश्याममोहनयोराख्ययोर्दातृपुत्रयोर्दानकृत्तघने समस्था-
पित्वस्योत्तरादेन तयोर्दानग्रहीत्रोर्मध्ये श्याममोहनयोपस्य मरणेन तद्व्यो-
ग्यांशे तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः । तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य
पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या अर्थादेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिन्याः प्रवर्णा-
धिकारित्वात् । मृते पितरि जीवन्त्यां च मातर्यप्राप्तव्यवहारतावस्थायाञ्च
कश्चिन्मरणेन तदुत्तराधिकारिणा तत्पत्न्येन स्वत्वलोपो भवति इत्येत-

द्विधापकशास्त्राभावाच्च । अथपि दानपत्रे स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति दात्रा युवामप्राप्तव्यवहारौ इदानीं सराजकरस्थावरास्थावरघने आयेतत्वं संपाद्य रक्षणावेक्षणकरणस्य योग्यौ न जातौ, अतः कारणात्मम पत्नी युवयो-र्माता श्रीमतीसरस्वतीदासी सराजकरस्थावरास्थावरादिधनस्य रक्षणावे-क्षणदिकरणपूर्वकं युवयोः प्रतिपालनार्थं मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्यं नि-युक्ता मया । युवयोः प्राप्तव्यवहारतापय्यन्तं सराजकरस्थावरे मोक्त्यारीशब्द-प्रतिपाद्यत्वेन सा मम पत्नी स्वनाम निवेश्य राजकरं दत्त्वा तदुपस्वत्वे जङ्गम-घने च मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यं कार्यं कृत्वा युवयोः प्रतिपालनं रक्षणावे-क्षणदितरवीयतशब्दप्रतिपाद्यं कार्यं करिष्यति । युवां प्राप्तव्यवहारत्वेन निपन्नी सराजकरस्थावरसमुदाये स्वस्वनाम निवेश्यैवं जङ्गमघने चायत्तत्वं संपाद्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण परमसुखेन भोगं कुर्वताम्, दानधिकययोः स्वत्वा-धिकारो युवयोः । मया सह तत्र कश्चित् सम्बन्धो नास्तीति लिखनेन मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्यंनियुक्तत्वेन ज्ञातायामेतद्धर्माधिकरणार्थंजुहातसं-ज्ञकनिवेदनपत्रेण प्रमुसमर्पितजयपत्रलिखितैतद्धर्माधिकरणार्थ्युत्तरपत्रेण चासीशब्दप्रतिपाद्यकार्यंनियुक्तत्वेन च ज्ञातायां मातरि जीवन्त्या मृतस्था-प्राप्तव्यवहारपुत्रस्य तादृशोपरिलिखितप्रकारकदानानुसारेण मृते पितरि जीवतः पुत्रत्वेन चोत्पन्नस्वत्वस्योत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्तरत्तेरप्रतिबन्धकत्वा-त्तल्लिखनस्य इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागशुद्धितत्त्वदायत्वदायभाग-टाकाविवादास्यैतदुविवादभङ्गाद्यैवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थदृष्टयाह-लम्बवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्— इति मनुवचनम् ॥२॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमिति मनूस्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदानस्य तद्विषयकज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमात्तद्धनं गर्भस्वरथेव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पूर्वस्वामिस्वत्तनिवृत्तिरेस्वामिस्वत्तोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण
त्यागशक्तस्य दाघातोः—इत्यादि दाघभागटीकालिखनम् ॥५॥

प्रथम पुत्रस्तदभावे पीत्रस्तदभावे प्रपीत्रः—इति दाघभागटीका-
लिखनञ्चेति ॥६॥

एतदन्वीयजुलाइमासीयपञ्चमदिनतन्मन्विबृहस्पतिवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवेद्यनाथपिश्रेण

३११८ लं—

४—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
कलिकाता तारिख २१ जुन सन १८३२ साल मोवावके वाहला
६ आपाढ सन १२३६ साल दिवस वृहस्पतिवार श्रीयुत रिचार्ड
ओयालपोल साहेवेर बैठके ॥

पञ्चमलालसिंह धोगयरह
शिवरामसिंह

आपीलाएटान्
रेप्पाडेएट

आपीलाएटानेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ रेप्पाडेएटर
उकिल मुनसि गोनाम वतुल ओ सदासुख पण्डित ओ इन्द्र-
कुमारिर उकिल मुनशि वु आलि हाजिर हइल । तवतिव मते
एइ मकईमा गतो माइ मासेर ३१ तारिखे ओ गतो दिवसे
आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसेर आरजि प्रभृति प्रबिन्-
सीयान मोटेर कागच पत्रादि एवं तथाकार फयेसला पर्यन्त
पडा हइया दिवसावसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अय पुनराय
उपस्थित हइया ए आदालतेर दाखिल हओया अजुहात ओ
जओयाव आर इन्द्रकुमारिर दरखास्त प्रभृति कागज पत्र
पडागेल । तत्परे रेप्पाडेएटर उकिलगण सन १८१४ सालेर
दिजम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित ए आदालतेर डिगिरि

एक केता ओ सन १८१३ सालेर आगष्ट मासेर १४ तारिखेर कालेकट्टरि परओयानार नकल २ टाका दामेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करिलेक, पडागेल । ताहार पर उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल ये सन १२१८ साले जयरामसिंहेर मृत्यु हय, तखन ताहार कि वयेस छिल । रेप्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिल ये उक्त जयरामेर वयेस २५ बत्सर, आर आपिलाण्टगणेर उकिल आर आपिलाण्ट पञ्चमलालसिंह, (ये) हजुरे हाजिर छिल, जओयाव दिलेक ये ४०।४५ बत्सर वयक्रमे मृत्यु हय । पुनुराय उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल जे पक्षणे रेप्पाडेण्टर वयेस कतो बत्सर । रेप्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिलेक ये रेप्पाडेण्टर वयेस एद्यने आन्दाजि ४२ बत्सर ओ आपिलाण्ट जओयाव दिल ये प्राय ५० बत्सर हइवेक । पुनुराय आपिलाण्टके जिज्ञासा गेल ये जयरामसिंह हइते रेप्पाडेण्ट कतो बत्सरेर छोट हइवेक । जओयाव दिल ये ५।६ बत्सरेर इति । कागज पत्रे द्वाराय बोध हइल ये रेप्पाडेण्ट विरधीय वस्तु दखल पाओनेर दुइ प्रकार दाखि राखे :—प्रथम एइये खोसालसिंहेर सूपार्जित विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर नामे लेखाजाय । खोसालसिंह ताहार कर्ता ओ दखलिकार छिल । खोसालसिंहेर मृत्युर पर जयरामसिंहेर सहदर भाइ शिवरामसिंह रेप्पाडेण्टर दखले आछे, द्वितीय एइये यद्यपि विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर त्यक्त हय, तवे जयरामसिंहेर मृत्युर पर आर ताहार बनिता मानकुडारि, ये ताहार एक कन्या, ऐ मानकुडारि ओ खोसालसिंहेर सच्याते, ओ जयरामसिंहेर द्वितीय कन्या खोसालसिंहेर साच्याते पुत्र सन्तान ना राखिया मृत्यु हय, शिवरामसिंहके अर्शे । एगते ए मकईमाय खोसालसिंहेर जयरामसिंह ओ रेप्पाडेण्टके हेवानामा लिखिया देओयार प्रति दृष्टि ना करिया एइ कथा जिज्ञासा करा ए आदालतेर पण्डितेर निकट उचित हइल-ये जयरामसिंहेर त्यक्त

वस्तु मानकुडारिर मृत्युर पर रेप्पाडेण्डर पिता खोसालसिंह ओ रेप्पाडेण्टके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुडारिके, ये आपन माता मानकुडारिर साक्ष्याते मृत्यु ह्य, ताहाके अशिबेक । आर यदि स्यान् मसम्मात मानकुडारिर लिखिया देओया हेवानामा आदालतेर प्रासस्नानुसारे ताहा प्रमाण ना ह्योन प्रयुक्त ग्राह्य ह्य ना, किन्तु मृत दयामयीर स्वामी आपीलाण्ट पञ्चमलालसिंहेर ओजर मिटाइवार कारण, ए-मत हेवानामा यथार्थेर विशये शाखेरे आशा मते जिज्ञासा करा आविश्वक हृदया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव रोवकारि सोपर्द ह्योनेर तारिख हइते दुइ दिवसेर मध्ये लेखेन-ए आदालतेर परिडतेर हाओला कराजाय ।

प्रथम सओयाल—एइये विवादि ओ जमिदारिर कर्त्ता जयरामसिंह एक बनिता मानकुमारी ओ दुइ कन्या दयामयी ओ पार्वती ओ पिता खोसालसिंह ओ एक भाइ रेप्पाडेण्ट शिवरामसिंह (के) राखिया मृत्यु ह्य । तत्परे दयामयी एक कन्या इन्द्रकुडारि नामे राखिया मृत्यु ह्य । ओ दयामयीर मृत्युर पर मानकुडारि आर मानकुडारिर मृत्युर पर पार्वती निःसन्ताना मृत्यु ह्य, ओ पार्वतीर पर खोसालसिंहेर मृत्यु ह्य । अतएव उक्त जमिदारि वाङ्मला मुलकेर चलित शास्त्रानुसारे शिवरामसिंहके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुमारि, ये मानकुडारिर-साक्ष्याते मरियाछे, ताहार कन्या इन्द्रकुमारिके पाँछे । आर यदि स्यात् मसुम्मात पार्वती एक कन्या राखिया मरिया थाके, से कन्यार ओ खोसालसिंहेर मृत्युर पर मृत्यु ह्य, इहाते विशेषत किछु प्रभेद आछे कि ना ।

२—सओयाल—एइये खोसालसिंहेर ओ शिवरामसिंहेर वर्त्तमाने जयरामसिंहेर त्यक्त वस्तुर दान ओ हेवार अधिकार मुसम्मात मानकुडारिके आछे कि ना इति ।

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओश्रालपोलसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयजूनमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-
रूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य स्वामी जयरामसिंहो यदि मानकुमा-
रीनाम्नी पत्नीमेकां दयामयीपार्व्वतीनाम्न्यौ द्वे कन्ये खोसालसिंहनामानं पितरं
भ्रातरं चैकं शिवरामसिंहनामानमेतद्धर्माधिकरणप्रत्ययिनं संरक्ष्य मृतः
स्यात्, तदनन्तरं दयामयीनाम्नो जयरामसिंहस्य कन्यापोन्द्रकुमारीनाम्नो
कन्यामेकां संरक्ष्य मृता स्यात्, एवं दयामयीमरणानन्तरं मानकुमारी मान-
कुम(१)रीमरणानन्तरं निःसन्ताना पार्व्वती मृता स्यात्, एवं पार्व्वतीमरणा-
नन्तरं खोसालसिंहोऽपि मृतः स्यात् तदा जयरामसिंहस्यसराजकरस्थावरे
तद्भ्रातुः शिवरामसिंहस्याधिकारः, एवं यदि पार्व्वती एकां कन्यां संरक्ष्य
मृता स्यात् चापि कन्या खोसालसिंहस्य मरणानन्तरं मृता स्यात्तदात्र
शास्त्रानुकायाः कश्चिद् विशेषो नास्तीति ।

अत्र प्रमाणात्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तरसुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

खोसालसिंहस्य शिवरामसिंहस्य च विद्यमानतायां जयरामसिंहस्य पत्न्या
मानकुमार्याः स्वसंक्रान्तपतित्यक्तधनानाम्मध्ये पत्युः स्वगार्थं किञ्चिद्धन-
स्यापन्निकारणार्थं तदुपयुक्तस्य च दानाधिकारितारितं, तद्व्यतिरेकेण
स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानाधिकारिता नास्ति-इति वङ्गदेशचलितदाय-
भागदायतत्त्वदायभागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-
स्थाएवविवादाद्यवसैतुविवादमङ्गार्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रधने पौत्रप्रतीनाभावे साध्याः पत्न्या अधिकारस्तत्रापि भर्तृ-
स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्चरीररक्षार्थं भक्षणे चाधिकारः । एतदति-
रिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थाव-
ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्त्रीतान्यप्रमाणानि कार्याख्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दायरहस्यनारदस्मृत्या-
दिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥३॥

एतदन्दीयजुलाहमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेय व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

५—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
कलिकाता तारिख १६ जुन सन १८३२ साल मोतावके वाहला
तारिख ७ आषाढ १२३६ साल दिचस मङ्गलवार श्रीयुत रिचार्ड
ओयालपोल साहेवेर बैठके—

मृत दुर्गादासेर स्त्री मसम्मात प्रलमयिदेव्या साएला—

गतो माइ मासेर १७ तारिखेर लिखित सहर कलिकातार
हाओयालि जेलार एक केता रिटरनेर सम्बलित तथाकार
रोवकारि एक केता ओ असियतनामा पीडिवाय । अद्य साएलेर
दरखास्त ओ ईशानचन्द्र ओ गयरहर दरखास्त ओ हरिप्रियार
उकिल सदानुखपरिडत ओ राजचन्द्रेर उकिल मुनसि होसन
आलिर हाजिरिते पडागेल । तत्परे राजचन्द्रेर उकिल सादा

कागजे याजे परिडतेर एक केता व्यवस्था गोजराइल, पढागेत । वोध हइलो ये त्यक्त वस्तुर कर्ता गकुलचन्द्रयोसालेर दुइ वनिता छिल । ताहार षड तारिणी, छोट राजेश्वरी । तारिणीर गर्भे दुइ पुत्र, हरिनारायण ओ लक्ष्मीनारायण, ओ एक कन्या आनन्दमयी, आर राजेश्वरीर गर्भे दुइ पुत्र रामनारायण ओ गङ्गानारायण, ओ तीन कन्या कुडारिदेव्या ओ गङ्गादेव्या ओ दयामयि । मसम्मात तारिणी सन ११८० साले, आर हरिनारायण सन ११९७ साले आपन स्त्री मसम्मात पार्वतीके राखिया, ओ लक्ष्मीनारायण सन १२०४ साले आपन स्त्री मसम्मात हेमलताके राखिया, ओ रामनारायण सन १२०१ साले आपन स्त्री मसम्मात हरिप्रियाके राखिया, ओ गङ्गानारायण अप्राप्त वयेसे, ओ अविभाहे, ओ दयामयि निःसन्ताना मृत्यु हइल । हेमलतार दौहित्र नवचन्द्रचादुप्ये लक्ष्मीनारायणेर हिस्वार पर ओ हरिनारायणेर स्त्री पार्वतीर मृत्युर पर गोकुलचन्द्रेर दौहित्रगण आनन्दमयीर पुत्र ईशानचन्द्र प्रभृति, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र दुर्गादास हरिनारायणेर हिस्वार पर, ओ हरिप्रिया रामनारायणेर हिस्वार पर दखलिकार आछेन । आर गङ्गानारायणेर हिस्वा उर्द्ध्वगामि हइया राजेश्वरीर दखले हइल । एदयने राजेश्वरी ओ कन्या कुडारिदेव्यार सादयाते रामनारायणेर स्त्री हरिप्रियार सादयाते, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र मृत दुर्गादासेर स्त्री ब्रह्ममयी, ये सन्तानादी किछु राखे ना, ताहार सादयाते, ओ आनन्दमयीर पुत्रगण ईशानचन्द्रदिगरेर सादयाते मृत्यु हइयाछे । ये हेतु चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व उत्तराधिकारि प्रकारे उक्त व्यक्तिगणेर सत्वे शाखेर आहा हातो हओन उचित हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये एइ विपदेर जओयाव, ये उक्त व्यक्तिगणेर मध्ये गङ्गानारायणेर त्यक्त वस्तु, याहा उर्द्ध्वगामि हइया ताहार माता मसम्मात राजेश्व-

रीते अशियाछे, उत्तराधिकारि ओ सत्त्वाधिकारि के बटे, आर ^५ गोकुलचन्द्रेर ओ मसम्मात राजेश्वरि पार्वणेर आद्रे ओ पियडदान करणे फाहार जमतता आछे, सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर परिडतेर हाओला करा जाय—

श्रीज्जयतितराम्

एतदग्नाधिकारणाधिपतिभ्योपुतरिवाङ्मोत्रालपोलसाहेवधर्माधिकर-
णुलिखितैतदब्दीयञ्जुनमासीयोनविशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
तिरूपपत्रं यदैतदब्दीयञ्जुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रमुखमर्षितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य ^१ गङ्गानारायणत्वयस-
धनस्योत्तराधिकारित्वेन सन्मातृराजेश्वरीसकान्तस्याधिकारिणस्तद्विचारपत्र-
लिखितानां मध्ये ईशानचन्द्रप्रभृतयस्तत्रितृदौहित्रा एव भवन्ति । एवं
विवादासरदोभूतधनाधिकारप्रयोञ्जकगोकुलचन्द्रसम्प्रदानकरावर्षणआदपिएड-
दानाधिकारितापीशानचन्द्रप्रभृतीनां तद्दौहित्राणामेवास्ति । राजे-
श्वर्याः पृथक्पूर्वणआदपिएडदानाधिकारिता तद्विचारपत्रलिखितानां
मध्ये कदापि नास्ति, उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तधनायाः जित्वा मरणानन्तरं
तदनेतराधिकार्यधिकारप्रयोञ्जकस्रीसम्प्रदानकपृथक्पूर्वणआदपिएडदान-
स्याभावात्—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागदायभागदीकादायतत्त्वदाय-
क्रमसप्रदायनिर्णयदायरहस्यशुद्धितत्त्वआदतत्त्वव्यवस्थापर्यायविवादाणवसेतु-
विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपोत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो चाद्वयो घनिदौहि-
त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

प्रयाणामुदकं कार्यं त्रिपु पियडः प्रवर्तते—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥

न योपिद्म्यः पृथग्दद्यादवसानदिनादते—इति आदतत्त्वादिग्रन्थ-
धृतमुनिवचन चेति ॥ ३ ॥

एतद्बन्दीपत्रजाईमासीपैकविंशतितमदिनसम्बन्धिनिवासरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नपत्र—

६—यद्यपि कोनो व्यक्तिर सन्तान सन्तति ना थाकाय आपन परकालेर निमित्तक अन्तिमकाले दुइ भग्नि ओ भागिना थाकिले ओ आपन पैतृक समुदय वस्तु आपन शुरुके वाचनिक दान करे, आर ऐ व्यक्तिर मृत्युर परे ताहार अचिरा ओ स्वामीर अनुमतिक्रमे ऐ स्वामीर मृत्युर ११ एगार बत्सर गते दानपत्र लिखिया देय—ए प्रकार दान शास्त्र सम्मत सिद्ध घटे कि ना, आर ऐ मृत व्यक्तिर वस्तुते भग्निरा उत्तराधिकारिणो ओ हकदार हइते पारे कि ना, एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्र दानपत्र दृष्ट करिया लिखिबेन—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिशदधिक-
काष्टादशशताब्दीयापरेलमासीपतृतीयदिनसम्बन्धिपद्मलवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशभोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सन्तानाभावेन स्वकीयपरकालार्थं स्वा-
-यानधमये विद्यमानशोर्द्धपोर्भगिन्योर्विद्यमाने च भागिनेये स्वपैतृकसमुदायघनं
स्वगुरवे वाचा दत्तं स्यादेवं तस्यैव निःसन्तानव्यक्तिविशेषस्य परग्यानन्तरं
तस्यावीरया पत्न्या स्वपत्यनुमत्यनुसारेण स्वपतिमरणदिवसादारभ्यैकादश-
-संवत्सरे गते एति दानपत्रं लिखित्वा दत्त स्यात्तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण
सिद्धयति, स्वाम्यनुमत्या अस्वामिकृतस्यापि दानादेः सम्प्रदानादिस्वत्वोत्पत्ति-
-हेतुभूतस्य सिद्धेः शास्त्रोपत्त्वेन घनस्वामिपत्यनुमत्यानपत्यपतिमरणानन्तरं

प्रधानोत्तराधिकार्यवीरपत्नीलिखितदानपत्रप्रमाणस्य पतिवृत्तधर्मार्थदानस्य सिद्धौ बाधकसामान्याभावात्, धर्मार्थदानं यदि केनचित् स्वस्थेनात्तैर्न वा कृतं श्रावितं वा, अदत्त्वेव मृतश्चेत्तथापि तद्धनं तदुत्तराधिकारिणो राजादापनीया इति विशेषतो लिखितत्वाच्च । एवं दानसिद्धौ सत्यां तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य भगिन्यस्तद्धने उत्तराधिकारिण्यो भवितुं न शक्नुवन्ति, तद्दानोत्तरक्षणमेव धनिनो दातुस्तद्धने स्वत्वविच्छेदेन सम्प्रदानस्य स्वत्वोत्पादेन च धनिन उत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्तरसम्भवात्—इति वङ्गदेशचलितमनुस्मृतिशास्त्रवल्क्यस्मृतिदायभागदायभागदोकादायतत्त्वशुद्धितत्त्वदाय-क्रमसंप्रहविवादार्यावसेतुविवादभङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुप्यु र्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-

धृतनारदवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

स्वस्थेनात्तैर्न वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति विवादभङ्गार्या-
वादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिस्तत्रे तु अस्थामिकृतविक्रयोपि सिद्धवति
व्यवहारस्तथा—इति विवादभङ्गार्यावग्रन्थलिलनम् ॥४॥

प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम्—इति याज्ञवल्क्य-
स्मृत्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥६॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमिति मनुवतेर्दानमात्रात् सम्प्रदा-
नस्य तद्विषयकज्ञानभावदशायामपि स्वत्वमूत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमा-
त्तद्धने गर्भस्थस्यैव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिलनम् ॥७॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिलनम् ॥८॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागराक्तस्य दाघातोः—इत्यादि दायभागटीकालिखनञ्चेति ॥३॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीऋषयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर निकट सओयाल ।
३ आगस्त १८३२ साल ।

१—यद्यपि स्यात् कोन ब्राह्मण जाति उदासीन अर्थात् वैरागी संसारत्यागी ह्य, बिमहठाकुर स्थापन करिया थाके, ओ आपन उदासीन अर्थात् संसारत्यागी वैरागी शिष्यगण वर्तमान थाकिते, ओ आपन समुदय वस्तु रजपुत जाति एक व्यक्ति, ये स्त्री पुत्र राखे, ओ संसारि ह्य, ओ ऐ उदासीनेर शिष्य ह्य, ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे । एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना ।—

२—स्थावरास्थावर वस्तुर विषये खयरात् अर्थात् उदासीन व्यक्ति दान संसारि कोन नाच जातीर हस्ते शास्त्रानुसारे सिद्ध-वेटे कि ना ?—

३—कोन उदासीन वैरागी, अर्थात् संसारत्यागी हइया विग्रह स्थापन करिया आखाडाधारी हइया थाके, ओ उदासीन संसारत्यागी चेला, अर्थात् शिष्यगण थाकनेओ यदि आपन स्थावरास्थावर समस्त विषय रजपूत जाति व्यक्तिके, ये से संसारि ओ स्त्री पुत्र राखे, एवं ऐ उदासीनेर शिष्य ह्य, एमते ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे, तवे ताहा शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना ।—

४—यदि कोन व्यक्ति सक्त पीडित हइया सुन्दर ज्ञान चैतन्य

ना थाके एतत् समये आपन सम्यक् स्थावरास्थावर वस्तु अन्य-
कोन व्यक्तिके हेवा अर्थात् दान करे ताहा शास्त्र सिद्ध वटे कि ना ?-

५—वैरागी उदासीन अर्थात् संसारत्यागी ओ ब्रजभूमि
निवाशी ओ अवरय ब्राह्मण जाति हइवेक । ओ आखाडाते
विग्रह स्थापन थाके कोन रजपूत, जाति ये से स्त्री पुत्र राखे, एवं
संसारि हय, से व्यक्ति हइते शास्त्रानुसारे विग्रहठाकुरेर पूजा
सेवा हइते पारे कि ना ?—

६—रजपूतजाति विग्रहठाकुर स्पर्श ओ पूजा करिते पारे
कि ना ?—

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुममर्षिताङ्गेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्ति-
मासीयतृतीयदिनलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयचतुर्थदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिद् ब्राह्मणजातीयेनोदासीनेनाथाद्वैराग्यधर्माचरणेन संसा-
रस्थागिना देवप्रतिमां सत्थाप्योदासीनेष्वर्थात् संसारत्यागिषु वैरागिषु स्वकी-
यशिष्येषु विद्यमानेष्वपि स्वस्वत्वात्सदीभूतसमुदायधनं रजपूतजातीयै-
कस्मै करमैचित् स्त्रीपुत्रवते संसारिणे स्वकीयशिष्याय च दत्त स्यात्तदैतादृश-
दान शास्त्रानुसारेण सिद्धपतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्व्युस्ते विक्रीणीयुरयापि वा ।

कुर्युर्थ्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥२॥

दाने हि चेतनोदेशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् —

स्थावरास्यावरधनस्वाम्युदासीनव्यक्तिविशेषकृतं कसंघारिणी च नातिसम्प्रदानकदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति शास्त्रे नोचजातिसम्प्रदानकदानस्य निषेधाभावात्—इति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमपि प्रथमप्रश्नोत्तरेणैव पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति—

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि त्रीण्येवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिदतिपीडितेन सम्यग्ज्ञानचैतन्याभावदशायां स्वस्वत्वासादीभूतसमस्तस्थावरास्थावरधनमन्यसौ कस्यचिदत्तं स्यात्तत्र तद्दानं यदि धर्मार्थं कृतं स्यात्तदा सिद्ध्यति, तद्व्यतिरेकेण शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वस्थेनात्तेन वा दत्तं धावितं धर्मकारणात् ॥

अदत्त्वा तु मृते दान्यस्तत्सुतो गात्र संशयः ॥—इति विवादभङ्गा-
र्थादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकहृगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकहृगन्वितैः इत्यत्र भयाद्याः पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनी द्रष्टव्याः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्रजभूमिनिवासी ब्राह्मणजातीयो वैराग्यधर्माचरणेनोदासीनो भवति अर्थात् संसारस्थानी भवति । तस्याखाडासंनकस्थाने देवप्रतिमायाः स्थापनं भवति । केनचित्संघारिणा स्त्रीपुत्रमता रजपूतजातीयेन शास्त्रानुसारेण देवप्रतिमायाः (सेवा पूजा च भवितुं न शक्नोति), ब्राह्मणद्वारा देवप्रतिमायाः पूजा सेवा च भवितुं शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते ।

स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा ॥—इति विष्णुपुराण-
वचनम् ॥१॥

सर्व्ववर्णैस्तु संपूज्याः प्रतिमाः सर्व्वदेवताः—इति बरहस्पृशण-
वचनम् ॥२॥

स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च जनेश्वर ।

स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च—इति स्कन्दपुराण-
वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

रक्षपूतजातीयेन देवप्रतिमास्पर्शः कर्त्तुं न शक्यते । देवप्रतिमापूजा
तु स्वयं कर्त्तुं न शक्यते । किन्तु ब्राह्मणद्वारा पूजां कारयितुं शक्यते—
इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाण्यानि पञ्चमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि श्रीश्रेयेवेति ।

एतदन्दीयागस्तिमासोपबोद्धशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यव-
स्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२१८ ल०

८—रोवकारि मिछिल सदर देओयाणि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्स-
पीयेर साहेवेर बैठके । ओयाक्के तारिख ३० जुलाई इङ्गरेजी
सन १८३२ साल मोतावक बाङ्गला सन १२३९ साल १६ श्रावण
रोज सोमवार ।—

पञ्चमलालसिंह ओ गन्धर्व्वेलाज्ञ

आपीलाएटान

शिवरामसिंह

रेष्पाडस्ट

आपीलाएटानेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रेष्पाडस्टेर
उकिलान् मदासुख पण्डित ओ मुनशी मोलाम वतुज, इन्दर-

१ पूजा वर्त्तुं न—न्यय.

कोडारि उक्त मुनशी वु आलि हाजिर आइल । एइ मोकद्मा एइ मासेर २३२४ तारिखे आमार वैठके दरपेप, आर तारिख मजकुराणे रोवकारि लिखित मत प्रथम आदालतेर कागजात पढा हइया, मुलतवि छिल, अथ पुनराय रोवकार आपीनेर मौजेवात ओ ताहार जओयाव एवं तत् समिभ्यारि अन्य २ कागजात एइ आदालतेर दाखिल हओया दुइ मांफद्मार वावत अर्थात् एइ लम्बर ओ ३२२४ लम्बर, जाहाते एइ मोकद्मा रेणाडण्ट आपीलाण्ट ओ एइ मोकद्मार आपीलाण्टान् रेणाडण्टान् आछे, एइ मासेर १८ तारिखेर रोवकारि लिखित एइ आदालतेर हाकिम श्रोयुत रिचार्ड श्रोचालपुल साहेबेर राय सम्बलित अनुमोदने आइल । ये हेतुक एइ मोकद्मार आपीलाण्टानेर ओजरात् निष्पत्येर जन्य आमार निकट एइ आदालतेर पण्डितेर पर छओयाल करा उचित हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल निचेर तफशीलेर लिखित छओयाल सम्बलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये ऐ पण्डित ताहार विस्वारित जओयाव लिखेन । यद्यपि स्यात् खोसालसिंह परिवर्त्तीय दान, ये मत आपीलाण्टान् जाहेर करितेछे, ताहा वाङ्गला सन १२१० साले आपन पुत्रगण जयराम ओ शिवराम दिगेर नामे लिखिया दिया थाके, आर तदनुजाइ जयराम आपन मृत्यु समय वाङ्गला सन १२१८ साल पर्यन्त हेवार वस्तु पर दखिलकार थाके, एवं तस्य छो मानकोडारि ताहार मृत्यु पर ऐ वस्तुते उत्तराधिकारि सुरते दखिलकार हय । एमते मानकोडारि जेमत स्वामीर वस्तु हस्तान्तर करणेर विशये पूर्व व्यवस्थाते ये प्रकार लेखा गियाछे ताहार किछु परिवर्त्त ओ मुधरण हइते पारे कि ना इति ॥

श्रीज्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रोयुत हेनरीविकिसपीयसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेदन्द्रीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

पत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यद्यपि खोसालसिंहेन वङ्गालाख्यदशधिकद्वादशशताब्दे जयराम-शिवरामाख्यस्वपुत्रद्वयसम्प्रदानकमेतद्वर्माधिकरणाधिभिर्निर्दिष्टं विनिमय-दानं कृतं स्यात्तदनुसारेण जयरामः स्वजीवनपर्यन्तमर्थाद्वङ्गालाख्याष्टादशा-धिकद्वादशशताब्दपर्यन्तं दानकृतघने आयत्तत्वं सम्गादितवान् स्यादेवं तस्य पत्नी मानकुमारी स्वरतिमरणानन्तरं पतित्यक्तघने उत्तराधिकारित्वेना-यत्तत्वं सम्पादितवती स्यात्तदा मानकुमार्याः पतित्यक्तघनस्य हस्तान्तर-करणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितमस्ति, तस्य किञ्चिदपि परावर्त्तनमन्यथा च न भविष्यति, यतो मानकुमार्याः पतित्यक्तघनस्य हस्ता-न्तरकरणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितं तन्नैतद्व्यर्त्नलिखितपूर्वा-न्ते सत्यपि शास्त्रानुसारेण कश्चिद्विशेषो नास्ति इति वङ्गदेशचलितदाय-भागदायतत्त्वदायमागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-स्थार्थवविवादार्यावसेनुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणीव्यवस्था । अत्र प्र-माणान्येतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थालिखितानि सर्वाण्येवेति ॥—

एतदब्दीयागस्तिमासीयसप्तविंशतितमदिनसम्बन्धि सोमवासरे मयेयं व्यवस्था इति ।—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६—गोवकारि मिश्रिल सदर दैश्रोयानि आदात्त मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्स पीयेर साहेबेर बैठके, श्रोयाकके तारिख २७ माह जून ६० सन १२३२ साल, मोतावक बाङ्गला १५ आपाड सन १२३६ साल रोज बुधवार ॥—

दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह— आपीलाष्टान्
 राउत गिरिधरसिंह ओ घनस्यामसिंह—
 ओ वन्दरसिंह— रेण्णाड्यष्टान्

आपीलाष्टानेर उकिलान मुनशी होसन आलि ओ सदामुख पण्डित हाजिर आइल । जेला कानपुरेर मोतालक उभयेर मीरुशी बाइष देहार मध्ये मौजे वाठवपुर ओ गयरह एगारो मौजे हिस्त्या करिया पाओनेर मोकर्द्दमार वावते अन्य २ विषय सम्बलित ३५० टाका किर्मतेर दुइ वन्ध कागजे आपीलाष्टानेर सदर आपीलेर छथोयाल वत् समिभ्यारि कागजात ओ शारटफिकिट सम्बलित अनुमोधन मते ३० सन १८३२ सालेर ५ जानेर तारिखे आपीलाष्टानेर नामे एतलानामा जारिर हुकुम ये एइ मोकर्द्दमार तजविज एलाह्वादेर सदर आदालते, चाहे आर यद्यपि स्यात् आदालत मजकुरे तजविज ना चाहे, तिन मास मध्ये मौजेवात दाखिल करण जन्य वेरेलिर क्रोटेर हाकिमानेर नामे छादेर ह्य । ताहार जथो-यावे क्रोट मजकुरेर पे सनेर ५ आपरेलेर लिखित रिटरग्य ओ रोवकारि एतलानामा जारि हथोन ओ ताहा आपीलाष्टानेर हातोर रशीद् लिखिया देथोन ओ हाजिर इइया नाराजीर मौजेवात दाखिल करणेर ओयादा सम्बलित माइ आपरेल मजकुरेर २६ तारिखे अनुमोधन हइया, तारिख मजकुरेर रोव-कारिर लिखित मत अन्य २ विषय सम्बलित शारटफिकिट ओ गयरह सेरेस्थाय राखनेर हुकुम छादेर हइया, तत्परे एइ मोकर्द्दमार तजविज एइ आदालते चाहनेर दुर्जनसिंहेर छथोयाल दरपेस मते दुर्जन सिंह मजकुरेर गयेरहाजिरि सरवे उक्त सनेर ३० माइ तारिखे हुकुम ह्य ये मुलतवि थाके । ३० सन १८३१ सालेर २७ जुनेर लिखित एलाका वेरेलिर प्रीबिनसीधान क्रोटेर फयल्ला आपीलाष्टानेर नाराजिर मौजेवात ओ उकीलान् मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ

उकीलान् मजकुरानेर मेहन्यत्थानार वावत भवलगे ४०७।३) टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल खरचार रशीद ओ कुडि टाका किर्मतेर फिरिस्ति, फिरिस्तीर लिखित दश केता दस्तावेज सम्बलित यावा' एइ माह जुनेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य अनुमोधने आइल। तत परे आपीलाएटानेर उकिलानेर मध्ये सदासुखपरिडत एइ मोकईमार वावतेर कोटेर फयदला दुइ टाका किर्मतेर फिरिस्ति सम्बलित अद्य दाखिल करिलेक। झातो हइया बोध हइल ये एइ मोकईमा प्रीबिनसीयान् कोटेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर योग्य, एवं खरचार जाभिनदारेर दस्तखतेर एकरार ओ ताहार मातवरिर तहकीकात जेला कानपुरेर जज साहेबेर द्वाराय जेला मजकुरेर नाजीरेर मारफत आमले आसियाछे, एवं उकिलेर मेहन्यतथाना एइ आदालतेर तइविले दाखिल हइयाछे। एजन्य प्रकाश ये आपीलाएटान् सदर आपीलेर शाम्बकू शराएत वजाय आनियाछे। ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर सदर आपील मजूर एवं लम्बरे दाखिल हय। प्रबिनशीयान कोटेर फयदलाते प्रकाश, ये जेला ओ कोटेर परिडतगण ये उहारदिनेर स्थाने व्यवस्था तलब हइया पितार जीवईशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर दाबिर पुत्रेर क्षेमतार विशय विभिन्नता वाक्यसकल आछे। एजन्य हुकुम हइल ये कोटेर फयदला मौजेवात सम्बलित एइ आदालतेर परिडतेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये ऐ परिडत जेला कानपुरेर प्रचलित शाखेर आज्ञासकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव व्यवस्था ये पितार जीवईशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर अंश करिया लओनेर हकदार पुत्र हइते पारे कि ना एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

पतद्रम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतैरैनीठिकिसपीयरसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितैतदब्दीयजुनमासीयसप्तविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरू-
पपत्रमेवं तत्संमर्पितैतद्विवादविषयनिविष्ट-श्रोत्रुदःतसंज्ञकनिवेदनपत्रं कोटा-
पोलाख्यधर्माधिकरणीयजयपत्रञ्च यदेतदब्दीयजुत्ताहमासीयसप्तदशदिनस-
म्बन्धिसोमवासरे^१ मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते ॥—

जीवति पितरि पैतामहस्थावरधनस्यांशं कृत्वा ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो
भवितुं न शक्नोति, जीवति पितरि पुत्राणां विभागकर्तृत्वाभावात् । यदि
पिता स्वपैतृकधनस्य विभाग कृत्वा पुत्रेभ्यो ददाति तदा तद्ग्रहणस्याधिकारी
पुत्रो भवितुं शक्नोति, जीवति पितरि पितुरेव विभागकर्तृत्वात्—इति कान-
पुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौतुमव्य-
वहारमयूखमित्ताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऊर्द्ध्वं पितुश्च मानुर्यच समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पैतृकमृक्यमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति मनुवच-
नम् ॥१॥

विभजेरन् सुताः पित्रोस्ऊर्द्ध्वमृक्यमृणं समम्—इति मित्ताक्षरा-
वीरमित्रोदयादिग्रन्थभृतयाशवलक्यवचनम् ॥२॥

स्वातन्त्र्याहं पितरि जीवति तदिच्छे(ये)त्र विभागमिति तु^२पातिरवपारिभ्र-
ज्यादिभिस्तदनहं पुत्रेच्छा(या)पि । तदुपरमे तु स्वेच्छाया निमित्तत्वमर्थसिद्ध-
मिति कालत्रयमेवानेन प्रकारेण—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भ्रातृणां जीवतोः पित्रोः सहवासो विधीयते—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थभृतव्यासवचनम् ॥४॥

जीवति पितरि पुत्राणामर्थादानविसर्गाक्षेपेषु न स्वातन्त्र्यम्—इति
वीरमित्रोदयादिग्रन्थभृतहारीतवचनम् ॥५॥

जीवद्विभागे पितुः स्वातन्त्र्याद् अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यात्—इति वीरमित्रोदयमन्यलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदन्वीयागस्तिमासीद्योनश्चत्तमदिनसम्बन्धिषुषवाचरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०—रोवकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देशोयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दरराछसाहेवेर वैठके हओर तारिख सन १८३२ सालेर ३ सेतम्बर मोताचेक सन १२३६ सालेर २० भाद्र सोमवार ।

महाराजा गोविन्दचन्द्रराय
महाराणी कृष्णमणिदेव्या

आपीलाष्ट
रेष्पाडेष्ट

आपीलाष्टेर उकिल सदासुकपरिडित हाजिर आइल । आपीलाष्टेर छओल एक हाजार टाका मूल्लयेर कागजेर पर सदर आपील मञ्जुरि प्रार्थनाय डिहिगञ्ज नाटोर ओ गायरह दखल पाइयार मोकहंमाय सुयलगे आटानःवै हाजार पाच शत एक टाका आट आना पाँच कडा टाकार तायदादे उकिल मज्जुर ओ गुनशी होछेन आलीर नामेर एक केता ओकालतनामा सहित ओ ए आदालतेर तहबिलदारेर दस्तखते उकिलेर मेहनतआनार वांघत एक हाजार टाकार रशीद एक केता ओ ए आदालतेर खरचार जेता हाओली सहर कलिकातार मोतालक एचयने काशीपुर निवाशी जगमोहनमल्लिक ओ रामकुमार पालेर नामेर जामिनि एक केता ओ सन हालेर २७ जुलाइ तारिखेर प्रविनशील फोट मुरशीदावादेर फयसलार नकल

एक केता सन हालेर २६ आगष्ट तारिखे दुइ टाका मूलत्येर कागजेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अथ दरपेय हइया पाठ करागेल । ताहार पर गोविन्दचन्द्ररायेर उकिल सन १२२० सालेर १६ अम्रहायनेर राणी कृष्णमणि रेण्पाडण्टेर नामेर महाराजा विश्वनाथराय मोतश्रोपकार लिखिया देओ अनुमतिपत्रेर नकल एक केता ये ताहार निचे राणि कृष्णमणिर जओव जोडा देओ आछे लम्बरे दाखिल करिलेक । दृष्टे आइल । यद्यपि आपीलाण्टेर सदर आपीलेर दरखास्ते हुकुम प्रकाश हओनेर पूव्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओ उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ मोकर्दमा लम्बेर दाखिल हइया एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर फयछला हओ १७४८ लम्बरेर मोकर्दमाय दाखिल हओ अनुमतिपत्र सहित ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय एइ हुकुमे ये एइ रोवकारि पाओर दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये अनुमतिपत्रेर लिखित सरतसकल ओ मजमुन दृष्टे निचेर लिखित हओलसकलेर जओव दाखिल करे इति ।

प्रथम—एइ ये राणि कृष्णमणि आपन स्वामी महाराजा विश्वनाथराय मोतश्रोपकार लिखिया देया अनुमतिपत्रानुसारे गोविन्दचन्द्ररायके आपन पुण्यपुत्रत्ते आनिया गोविन्दचन्द्रराय प्राप्त्यवहारे पहुछते ओ ताहार राजि व्यतित आपन जीवदशा पच्यन्त स्वामीर तेज्य विषयेर पर दखिलकार थाकितेः पारे कि ना ।

द्वितीय—एइ ये ए अनुमतिपत्रानुसारे महाराजा गोविन्दचन्द्ररायके पुण्यपुत्र लओर पर राणि कृष्णमणिके पद्यये एइ विषयेर ये कोन हेतु द्वाराय गोविन्दचन्द्ररायके त्याग करिया दोशरा व्यक्तिके पुण्यपुत्र करणेर क्षमता आछे किना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरण्याधिपतिश्रीयुतअलकमुन्दरराससाहेवधम्माधिकरणलि-
खितैवदन्दीयनृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तार्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्प्रम-
रितैतद्दम्माधिकरणनिष्पन्नाष्टचत्वारिंशदधिकसप्तदशशताङ्काङ्कितविवादविप-
यनिविशानुमतिपत्रञ्च यत्तदन्दीयतन्मासीयचतुर्यंदिनसम्बन्धिषमङ्गलवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशज्ञोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञी कृष्णमणो मृतमहायज्ञविश्वनाथरायाभिवेयस्वपतिलिखितानुम-
तिपत्रानुसारेण गोविन्दचन्द्ररायामिधेयं स्वकीयदत्तकपुत्रजामानीय गोविन्द-
चन्द्ररायस्य प्राप्तव्यवहारतायामपि तदनुमतिमन्तरेण स्वबोवनपर्यन्तं
स्वपतित्यक्तधने श्रायत्तत्वं शास्त्रानुसारेण स्वामित्वेन सम्पादयितुं न शक्नोति
पतिकृतदत्तकपुत्रग्रहणानुमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्यैव तत्-
पतित्यक्तसमुदायधने शास्त्रानुसारेण पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादेन रास्याः कृष्ण-
मणमभिधानायाः पतित्यक्तधने पत्नीत्वेन स्वत्वोत्पत्तेः प्रतिबद्धत्वात् । यद्य-
प्यनुमतिपत्रे महायज्ञविश्वनाथरायेण स्वपत्नी राज्ञी कृष्णमणी प्रति
लिखितमस्ति “असमन्मरणानन्तरं त्वं दत्तकपुत्रं रक्षित्वा सकलविषयस्य
कर्त्री भूत्वास्मत्कृते ईश्वरविग्रहाणां सेवां कृत्वावशिष्टे ये द्वे मम पत्नौ”
तयोर्बोवनावधि प्राप्तञ्छ्राद्धं त्वया देयमिति” तथाप्यनेन पत्रानुमत्या
पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्य शास्त्रानुसारेण पितृत्यक्तसमुदायधनस्वा-
मिनः प्राप्तव्यवहारतायामपि तद्विमत्यापि स्वामित्वेन राज्ञी कृष्णमणी स्वबो-
वनपर्यन्तं पतित्यक्तधने भोगवती स्यात्पत्नीत्ववगमादिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि दाय-
भागादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः इति प्रपौत्रपर्यन्ताभावे
पत्नीति च तदभावे दुहिता—इति च दायभागटोकादायकमसंग्रहादिग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

सर्वे ह्यनौरास्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतदेवलयचनञ्चेति ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रमुसमर्पितानुमतिपत्रानुसारेण महाराजगोविन्दचन्द्ररायस्य दत्तक-
पुत्रत्वेन ग्रहणानन्तरं राश्याः कृष्णामण्यभिधानाया इदानीं केनचिद्धेतुना
गोविन्दचन्द्ररायस्य त्यागं कृत्वा द्वितीयस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणस्य क्षमता
नारित, शास्त्रानुसारेण गृहीतकदत्तकपुत्रस्य पितृत्यक्तसमुदायघने पुत्रत्वेन
स्वत्वोत्पादात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नी राशो
कृष्णामणीं प्रति लिखितमस्ति “अस्मन्ग्रहणानन्तरं त्वमेकस्याधिकस्य वा
सत्सन्तानस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं करिष्यसीति”—अनेन राश्याः कृष्णामण्य-
भिधानायाः दत्तकपुत्रैकग्रहणानन्तरं तस्मिन् विद्यमाने सति तस्यागं कृत्वा
द्वितीयदत्तकपुत्रग्रहणक्षमताया अनवगमात्—इति बह्वदेशचलितदाय-
भागदायतत्त्वदायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाण्यवसैतुविवादभङ्गार्थवादिग्र-
न्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानि श्रीयेवेति ॥ ३ ॥

एतदम्भीयसितम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिषोषवाचरे मयैयं व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

११—सवंगुण उपमायोग्य श्रीयुत राजनारायण विद्याभूषण
परिहित आदालते दे श्चोनि जेला हुगलि अवगतेषु ॥—

सन १८३२ साल तारिख ७ आपरेल ।—

१३ लम्बरेर कैः कालिदासगङ्गोपाध्याय दीः—

छानि तजविज आः प्रेमचन्द्रचौधारी दीः—

सश्रीयाल घर्मदासचौधुरि ओ गुरुदासचौधुरि-दुइ सहो-
 दर एकात्र वर्तिते थाकिया, पैतृक स्थावर वस्तु प्रभृति भोग
 करिया, ताहार मध्ये ज्येष्ठ, ऐ घर्मदास आपनार दुइ पुत्र, वदन
 चन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधुरि, आर आता ऐ गुरुदासचौधुरि ओ
 आपन माता सुन्दरिदेव्यार समिचे लोकान्त ह्य । तदन्तरे ऐ
 गुरुदास मजकुर आपनार ऐ भातपुत्रदिगेर सहित ऐ व दस्तुरे
 एकात्रवर्ति थाकिया किछु काल परे आपनार माता आर ऐ दुइ
 आतपुत्र ओ आपन प्रथम संसारेर वनितार गर्भजात वैकुण्ठनाथ
 नामे एक पुत्र ओ अदत्ता तिन कन्या ओ द्वितीय संसारेर सन्तान
 सन्तति विहिन वनिता गोविन्दमणिदेवीके राखिया लोकान्त
 हइले । ऐ गुरुदासेर पुत्र वैकुण्ठनाथ आपनार ज्येष्ठतात-पुत्र ऐ
 वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधुरि सहित एकात्रवर्ति एजमाले
 थाकिया आन्दाज ७ बत्सर वयक्रमे आपनार पितामहि ऐ सुन्दरि
 देव्या आर अदत्ता तिन भग्नि ओ अवीरा विमातार समिचे मृत्यु-
 ह्य । परे ऐ वैकुण्ठनाथेर अविरा विमाता ओ तिन अदत्ता भग्नि
 ओ पितमही सन्दरीदेव्या ओ ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ
 प्रेमचन्द्र सहित एकात्रमुक्त थाकिया वैकुण्ठनाथेर तिन भग्निर
 विवाह हइया, दुइ भग्निर पुत्र हइले ओ एक भग्नि पुत्रसम्भा-
 विता राखिया, वैकुण्ठनाथेर पितामहीर मृत्यु ह्य । तदन्तरे
 किछु काल बादे वैकुण्ठनाथेर विमाता गोविन्दमणीर मृत्यु ह्य ।
 ऐ वैकुण्ठनाथेर दुइ भग्नि, ओ ताहार पुत्रगण ओ एक भग्नि पुत्र-
 सम्भाविता ओ वैकुण्ठनाथेर ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ
 प्रेमचन्द्र चौधुरि वर्त्तमान आछे । अतएव वङ्गदेश चलित शास्त्रा-
 नुसारे ऐ गुरुदासेर वस्तुर योग्य अंश गुरुदास मृत्यु परे ताहार पुत्र
 वैकुण्ठनाथके पौडछिया छिल कि ना । यदि पौडछिया थाके तवे
 वैकुण्ठनाथेर मृत्यु हइले ऐ वस्तु वैकुण्ठनाथेर पितामहीके पौड-
 छिया छिल कि ना । यदि पौडछिया थाके तवे पितामही सुन्दरी
 देवी मृत्यु हइले उपरेर लिखित व्यक्तिदिगेर मध्ये के पाइते पारे-

इहार व्यवस्था एद सञ्चोलेर पासे लिखिया ५ रोज मध्ये पाठाइवेन ॥—

एतत्प्रश्नानुसारेण मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशप्राप्तघने वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूत् । पितामहपर्यन्तरहिते तस्मिन् मृते पितामही सुन्दरीदेव्यधिकारियभूत् । तस्यां मृतायां वैकुण्ठनाथस्य पितृभानृपुत्रौ वदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति विदुषां परामर्शः ॥—

एइ सञ्चोयाल अनुसारेते गुरुदास मरिले ताहार योग्यांश वस्तुते वैकुण्ठनाथ अधिकारी हइया छिलो । पितामह पर्यन्तरहित सेइ वैकुण्ठनाथ मरिले पितामही सुन्दरीदेवी अधिकारिणी हइयाछिलो । सुन्दरीदेवी मरिले पर वैकुण्ठनाथेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र पाइते पारे ना, किन्तु वैकुण्ठनाथेर पितृदौहित्रेरा पाइते पारे—एइ पण्डितदेर युक्ति ॥—

धर्मरत्नदायभागादिषु ग्रन्थेष्वत्र प्रमाणम्

यथा गौतमः—स्वामी ऋक्षकथविक्रयसंविभागपरिमहाधिगमेषु— इत्यादि ॥

यथा मनुः—ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पितृकर्मक्षमनीशास्ते हि जीवतोः—इत्यादि ॥

यथा मनुः—अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् ।

मातर्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्धनम् ॥

यथा याज्ञवल्क्यः—पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुता गोत्रजः—इत्यादि ॥

धर्मरत्ने यथा—दौहित्रोऽपि ह्यमुत्रैतं सन्तारयति पौत्रवत्—इत्यादि ।

सन १८३२ साल ता० २० आपरेल ।

श्रीराजनारायणविद्याभूषणपण्डित ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रमुखमपितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रं विचारपत्रञ्च यदेतदन्दीयसित-
म्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृ-
शबोधो ज्ञातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ॥—

प्रमुखमपितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति तत्प्रश्नोत्तरव्यवस्थायां मृत-
स्य गुहदासस्य योग्यांशे तत्पुत्रो वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूदिति हुगलोजिला-
ख्यधर्माधिकरणनियुक्तविद्यमानपरिद्वयेन यल्लिखितं तत्सत्यमेव, किन्तु
पितामहपर्यन्तरहिते तस्मिन् मृते तत्पितामहो सुन्दरीदेव्याधिकारियभूदिति
यल्लिखितं तदव्यवस्थायां तत्र सत्यम्, वैकुण्ठनाथस्य भगिनीपुत्रं विद्यमानाम्
तासां पुत्रसम्भावनायां सत्यां वैकुण्ठनाथस्य पितामहाः सुन्दरीदेव्यास्तत्पि-
तृदौहित्रानन्तरमधिकारिणस्तत्पितामहादप्यनन्तरमधिकारिण्या वास्तवः-
धिकारस्यै अशास्त्रोक्तत्वात्, एवं वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रौ वदन-
चन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः
प्राप्तुं शक्नुयुरिति यल्लिखितं तदव्यवस्थायां तत् सत्यमेव । गुहदासस्य
मरणानन्तरं तदयोग्यांशे तत्पुत्रस्य वैकुण्ठनाथस्याधिकारे ज्ञाते सति तद्धनं
वैकुण्ठनाथस्यैव ज्ञातम् । अतस्तस्मिन् पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्र-
पितृमातृभ्रातृभ्रातृपुत्रभ्रातृपौत्रपर्यन्तरहिते मृते सति तत्सत्यमेव विद्य-
मानेषु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्रेषु सत्पितृव्यपुत्राणामधिकारस्याशास्त्रीय-
त्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवा-
दार्यवत्सेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारेण निवेदनमिति ॥—

एतदन्दीयनवम्बरमासीयवृहस्पतित्रयोदशदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदं निवेदनं
कृतमिति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२—रोयकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत मो०
कलिकाता ई० सन० १८३२ साल तारिख १३ शेतम्बर मोतावेक

३० भाद्र सन १२३६ साल रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत नाशानापल जान हालहेड साहेबेर बैठके ॥—

अनङ्गमञ्जरि—

आपीलाष्ट

फकिरचन्द्रसरकार—

रेष्पाडष्ट

एइ मोकदमा वर्त्तमानभासेर १० तारिखे उभयेर उकिलेर मोका-
विलाय रोवकार हइया चाजे २ कागजात सुनानि हइया दिवायसान
प्रयुक्त स्थकित छिल, अथ पुनराय आपीलाष्टेर उकिल मुनशीदादार
यकस ओ रेष्पाडष्टेर उकिल सदासुखपण्डितेर मोकाविलाय
दरपेण हइया जिला आदालतेर ओ एइ आदालतेर कागजात
मोनाहेजाय आशील । हुकुम हइल-ये एइ आदालतेर पण्डितेर
स्थाने एइ विषयेर व्यवस्था तलव करा जाय-ये यदि कोनो व्यक्ति
पोष्यपुत्र लय तवे ऐ पोष्यपुत्र राखन विषये शास्त्रानुसारे आपन
खीर स्वीकार आवरयक वटे कि ना, ओ पोष्यपुत्र लओनेर विषय
तिन नियम आचरण आवश्यक । प्रथम—एइ ये सपण्डक अर्थात्
ज्ञातिवर्गके सभाचार दिया एकत्र करा आवश्यक ॥ द्वितीय—
राजाके ज्ञात करा ॥ तृतीय—यज्ञ करा ॥ ए मकईमार भावे
बोध हइल ये पोष्यपुत्र लओन फालिन कियल यज्ञ हइयाछे ।
प्रथम ओ द्वितीय नियम आमले आइशे नाइ । अतएव एइ
विशये एइ मत पोष्यपुत्रता सिद्ध हय कि ना इति ॥—

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतनाशानापलजानहालहेडसाहेबधर्मा-
धिकरणातिवितैतदन्दीयसितम्बरमासीपत्रयोदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्र-
श्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिवशनिवाडरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशशेषो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पोष्यपुत्रं गृह्णाति तदा तत्पोष्यपुत्र-
ग्रहणविषये स्वपत्न्याः स्वीकारः शास्त्रानुसारेण वास्तवमावश्यको न
भवति, ज्ञाप्यपत्योर्मध्ये प्रधानीभूतेन पत्या पोष्यपुत्रग्रहणेनैव पतिपरत-
न्त्राया ज्ञाप्याया अपि तस्मिन् पोष्यपुत्रत्वोत्पत्तेः शास्त्रीयत्वात्, पत्नीस्वीकारं
विना पत्युः पोष्यपुत्रग्रहणस्य शास्त्रनिषिद्धत्वाभावाच्च । एवं पोष्यपुत्रग्रहण-

विषये ये त्रयो नियमाः प्रश्नपत्रे आवश्यकत्वेन लिखिताः स्यात् सपिरडा-
हान-राजनिवेदन-यज्ञास्तेषाम्मध्ये एतद्विवादे यदि पोष्यपुत्रग्रहणसमये
केवल यज्ञमवनमेवावगम्यमानं स्यात्तदा प्रथमद्वितीयनियमयोरर्थात् सपि-
रडाहान-राजनिवेदनयोरनिष्पन्नत्वेऽप्येतादृशं पोष्यपुत्रत्वं सिद्ध्यति, पोष्य-
पुत्रग्रहणविषये सपिरडाहान-राजनिवेदनयोः केवल दृढतरसाक्षित्वेनोपयो-
गित्वेन प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितेनैतद्विवादे पोष्यपुत्रग्रहणसमये
केवलं यज्ञ एव ज्ञात इत्यनेन यज्ञकरणपूर्वकपोष्यपुत्रग्रहणस्य निश्चितत्वेन
सपिरडाहानराजनिवेदनयोः प्रयोजनस्यार्थसिद्धत्वात्—इति दत्तकमीमांसा-
दत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयदत्तकदर्पणविवादार्यावसेतुविवादमङ्गा-
र्यावादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रेण सुतः कस्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिरडोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्तनस्य च ॥—इति दत्तकमीमांसा-
दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थभृतमनुबचनम् ॥१॥

भर्तुः प्राधान्यात्तत्परिग्रहेणैव स्त्रिया अपि तस्मिन् पुत्रत्वसिद्धिः
भर्तृपरिग्रहीतवस्त्वन्तरस्त्ववत्—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मधुरकंण सपूज्य राजानञ्च द्विजान् शुचीन् ।

राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाहूय सर्वान्तु ग्रामस्वामिनमेव चेति वृद्ध-
नीतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी०पृ० ६६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बान्धवाद्याहानं दृष्ट्यं राजाहानवत्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी०
पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् इत्यादेः स्वबन्धूनाहूय इत्यर्थः । एतेन स्वबन्धु-
भिर्ज्ञातः पुत्रो दायं ग्रहीष्यति, आद्यादिकञ्च करिष्यति, बान्धवाश्च तं न
विवारयिष्यन्तीति सूचनार्थम् । राजनिवेदनं चाप्येतदर्थमेव—इति विवाद-
मङ्गार्याव(२ विवा० १७३ ख) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

१. शो२०—न्य० ।

२. तादृक्—न्य० ।

३. वृद्धनीतम इति दमी० पुष्पके पाठः ।

एतदन्दीयनवम्बरमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



१३—रोवकारि मिद्धिज सदर देओयानी आदालत नोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस् पीयेर साहेवेर बैठकं ओयांककै तारिख ५ सेतम्बर इ० सन १८३२ साल मोतावक वाङ्गला सन १२३६ साल तारिख २२ भाद्र रोज बुधवार ॥ —

मोहम्मामत वेचुधामन—

छाएला—

छाएलार उकिल मुनशी अलिबल्ला हाजिर आइल । छायेलार छओयाल सन हालेर २१ जुलाइ तारिखेर जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुमेर नाराजीते ये आपन मातार वर्तमाने उहार स्वामीर अपुत्रक मृत्यु हओोन सरवे मोहम्मामत मुहा मोतओर्फार दीहित्रगण राधा ओ गोवर्द्धनेर मोतओर्फी मजकुरार सहित ओयारिप सानुद हओोया ओ छायेलार ओयारिप साब्द ना हओोयार विशये छादेर हइयाछे । शाखानुजाइ मोतओर्फी मजकुरार सहित आपन ओयारिप शाछादर हुकुम छादेर हओोनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ लाला सुवंशलाल मोक्कारकारेर नामेर मोक्कारनामा ओ तारिख मजकुरेर जेला मजकुरेर आदालतेर रोवकारिर नकल एक केता ओ इ० सन १८०३ साले १६ अक्तुबरेर लिखित पत्राका आजिमाघादेर आपीलेर रोवकारिर नकल एक केता, ओ इ० सन १८१६ सालेर १५ अक्तुबर तारिखेर जेला मजकुरेर डिगरिर नकल सम्बलित जाहा सन हालेर २७ अगष्ट तारिखे दाखिल हइयाछिल, अय

-अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एवं
-छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात सम्बलित एइ हुकुमे एइ
आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये कागजात अनुमोदन
परे एइ विपयेर जओयाव ये जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुम
तदेशीय प्रचलित शाखानुजाइ वटे कि ना लिखेन इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसूरीयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीयसितम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यत्तदन्दीयतन्मासीयो-
विंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणात्तरं लिख्यते ॥—

बेहारदेशीयजिलाख्याबान्तरधर्माधिकरणाधिपतिविकृतान्ना तद्देशप्रच-
लितशाखानुसारिणी न जातास्ति । प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विशेषतोऽङ्गरेजी-
शब्दप्रतिपाद्यपोडशाधिकाष्टा दशशताब्दीयाकृत्वरमासीयद्वादशदिवसीयवे-
हारदेशीयजिलाख्याबान्तरधर्माधिकरणोपपन्नप्रतिरूपपत्रेण तल्लिखितध-
र्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां विवादात्पदीभूतधनमेतद्ध-
र्माधिकरणार्थिन्यां वेचूघामिन्याः श्वशुरस्य फतेहघामिन आसीत्, तन्म-
रणानन्तरं तत्पुत्रेण फेकूघामिना अर्थादर्थिन्यां वेचूघामिन्याः पत्या पुत्रत्वेन
प्राप्तमिति ज्ञातम् । अतस्तद्धनं फतेहघामिनः पुत्रस्य फेकूघामिन एव
जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः । तदुत्तराधिका-
रिणाम्मप्ये तस्य पुत्रपौत्रपौत्राभावे तत्तल्या अर्थिन्यां वेचूघामिन्या एव
प्रधानाधिकारित्वात्, वेचूघामिन्यामर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषामाधिकारः,
मातरि विद्यमानायामनपत्यस्य कस्यचिन्मरणेन तत्तल्याः पुत्रपौत्रपौत्रा-
भावे नति प्रधानाधिकारिण्या अधिकारो न भवतीत्येतद्विधायकशाखामा-
यात्-इति बेहारदेशप्रचलितमिताद्वारावीरमित्रोदयन्यवहारमयूखन्यवहार-
माधयव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरावीरमिश्रोदयादिग्रन्थ—

धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पुत्राः पौत्राश्च दायं गृह्णन्ति तदभावे पत्न्यादयः—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयनवम्बरमासीदैकविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयवितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ लं—

१४—रोवकारि मिडिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कोलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्किशं-
पियेर साहेबेर बैठके ओयार्के तारिख १० शेतम्बर ३० सन १८३२
साल मोताबक २७ भाद्र सन १२३६ साल बाङ्गला रोज सोमवार ॥

गोसाबीचन्द्रकविराज

आपीलाष्ट

मोल्हर्मात जयमनि ओ कृष्णमणि मोतओफार्—रेष्याडयटान

आपीलाष्टेर डकिल मुनसि हयदर आलि ओ रेष्याडयटानेर
मध्ये जयमनीर डकिल मुनसि गोलाम बतुल हाजिर आइल, एवं
इस्तहारनामा जारि हओयाते ओ कृष्णमनीर मोतओफार् तरफेर
कोन ओयारिष ए आदालते हाजिर आइल ना । एइ मोकदमा
सेरेस्तादारेर कैफियत मते आमार बैठके दरपेप हइया प्रथम
आदालत जेला चिरभूमेर कागजात ओ द्वितीय आदालत मु-
शिदावादेर कोटेर कागजात एवं ए आदालते दाखिल हओया
खाय आपीलेर छओयाल जाहा, आपिलाष्ट मौजेवात करार देय,

श्री ताहार जओयाव सेओ चाय सात्तिदिगेर जोवानवन्दि अनु-
 मोधने आइल । जयमनीर उकील मुनसि गोलाम यतुलेर प्रति
 छओयाल-ये तुमि एइ आदालतेर दाखिल करा आपन जओ-
 यावे लिखियाछन्ये कृष्णमनी आपन मृत्तुकालिन मातवर,
 मनिप्यदिगेर सात्ताते आपन हिस्वार वस्तुते उहाके हकदार करि-
 आछे, ए प्रयुक्त जिज्ञासा करा जाइतेछे-ये लिखित पठितेर द्वाराय
 कि अन्य कोन प्रकारे । आरज करिलेक-ये आमार मौकेलेर
 जओयावेते ए विषय पष्ट प्रकाश नाइ । ये हेतुक एइ मोकईमार
 आपील शास्त्रेर विशयसकल अधिक तहकिकातेर दृष्टे मञ्जुर
 हइयाछे ताहार दृष्टे हुकुम हइल जे एइ मोकईमार कागजसकल
 एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हेतुते पाठान जाय ये उभयेर
 दाखिल करा कुरशानामासकल ओ जेलार आदालतेर पण्डितेर
 व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितगणेर खाप आपील मञ्जुर
 कालिन दाखिलकरा व्यवस्था अनुमोघने निचेर लिखित छओ-
 यालसकलेर जओयाव लिखेन ॥

१—प्रथम—एइ ये १८१६ भास वयक्रमेर समय मृत्तुर एक-
 दिवस पूर्व भैरवेर जोवानि क्रत हेवा प्रामाण्य हय कि ना ॥

२—द्वितीय—यद्यपि स्यात् ताहार प्रामाण ना हय, तवे,
 उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति भैरवेर उत्तराधिकारि मते हक
 राखे ।

३—तृतीय—यद्यपि स्यात् खास आपील मञ्जुरिर समये एइ
 आदालतेर दाखिल हओया व्यवस्थार द्वाराय प्रकाश ये सायेक
 मुईइआनेर मध्ये एक जन कृष्णमनी पुत्रवती हओनेर उहेखेर
 पीतार हिस्साय हकदार छिल । एइ चने प्रकाश ये कृष्णमनि ओ
 ताहार स्वामि दुयेरि मृत्यु हइयाछे । ए प्रयुक्त कृष्णमनी मजकुरार
 जेमता छिल कि ना-ये आपन हिस्सा जयमनीके ये प्रकार एइ आदा-
 लतेर जओयावे लेखे समर्पन करे, आर ताहार अन्यथाय मोछ-
 र्मात मजकुरार ओयारिप कोन व्यक्ति हइवेक, एवं सेरेस्तादार

एइ विशयेर कैफियत ये एइ मोकद्दमा इ० सन १८२२ साले मञ्जूर हय, परे कि जन्य मुद्दत दश वत्सर पर्यन्त गुलतबि थाकिल-दाखिल कारण इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्तहेनरीसिक्रिस्चोपरीरसाहेवधम्माधिकरण-
लिखितैतदब्दीयवितम्भरमासीयदरामदिवतीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादाविषयनिविष्टपत्रज्ञातमर्थिनिविष्टानि प्रत्यर्थिनिवि-
ष्टानि च वंशावलीपत्राण्येवं जिलाख्यावान्तरधम्माधिकरणनियुक्तपरिष्ठत-
लिखितव्यवस्थापत्रमेतद्दम्माधिकरणनियुक्तपरिष्ठताभ्यां लिखितमेतद्विवा-
दस्यैतद्दम्माधिकरणविवेचनायोग्यत्वनिश्चयकालिकमर्थदुभाषायां खास-
अपीलमञ्जूरशब्दप्रतिपाद्यकालिकव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयाकृतवर्मा-
सीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

पण्मासाधिकाष्टादशवर्षवयस्केन^१ भैरवेण स्वमृत्योरेकदिवसपूर्वं बहानं
वाचा कृतं तत् सिद्धयति प्रमुसमर्पितपत्रज्ञातैविशेषतो वीरभूमिप्रदेशीयजिला-
ख्यावान्तरधम्माधिकरणनियुक्तपरिष्ठतसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां प्राप्तव्यवहारेण
प्रकृतिर्येन च भैरवेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृतमित्यवगमेनै-
तादृशदानविद्धौ बाधकसामान्याभावादिति ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यथादत्रैव पर्येषन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अदत्तं तु मयन्कोषकामशोकरुगन्धितैः—इत्यादि विवादाख्यवसेतुविवाद्-
भङ्गार्थादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

मयादिरुगन्ताः^१ पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिना द्रष्टव्याः— इति विवाद-
मङ्गलार्थादिग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनीनामर्थादेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनीनां मध्ये कृष्णमण्याः
पुत्रसम्भावनायां सत्यो पितृत्वकथनस्योत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति
कृष्णमण्याः स्वसंक्रान्तपितृत्वकथनस्य जयमणीमुद्दिश्य यथैतद्वर्माधिकरणो-
त्तरपत्रे जयमण्या लिखित तादृशसमर्पणस्य क्षमता पितृकृतार्थापाकरणाद्या-
वश्यककार्यार्थं तत्तत्कार्यैः प्रयुक्तस्यासीत्, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया
स्वाभिप्रायेण च नासीत् । यदि च कृष्णमण्या तद्धनं दानानुसारेण प्राप्तं
यद् धीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपरिडतसंबन्धितृती-
यप्रश्नोत्तरार्थां कृष्णमणीजयमण्युभयोपस्थापितयवाव-उल-यवावसंज्ञ-
कपत्रेण चावगम्यते तदा तद्धनस्य कृष्णमण्याः सौदायिकस्त्रीधनत्वेन
तत्रोपरिलिखितपितृकृतार्थापाकरणा^२ तद्विनापि च स्वाच्छन्देन समर्पणस्य
क्षमता आसीत् । एवं सति कृष्णमण्याः जयमणीमुद्दिश्य तद्धनसमर्पण-
क्षमताया अस्तत्पक्षे कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वकथनस्य
यदि कृष्णमणीमरणोत्तरमेतद्वर्माधिकरणार्थिनी गोसाइचन्द्रकविराजस्य
पिता वैद्यनाथकविराजो विद्यमान आसीत्, तदा तस्य कृष्णमण्याः पितुर्ग-
हानारायणस्य पितामहदौहित्रत्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तत्पुत्रो
गोसाइचन्द्रकविराजोऽधिकारी भवितुमर्हति, यदि च कृष्णमणीमरणात्
पूर्वमेव गोसाइचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो मृतः स्यात्तदा
गोसाइचन्द्रकविराजस्य कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वक-
थने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, पितामहदौहित्रपुत्रस्य शास्त्रानुसारे-
णानधिकारात्, वैद्यनाथकविराजकृष्णमणयोर्मध्ये पूर्वं वैद्यनाथकविराजस्य
मरणं कृष्णमण्या वा मरणं जातमित्यस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्हानुमश-
क्यत्वात् । एवं प्रभुसमर्पितार्थिप्रत्यर्थिसमुपस्थापितवंशावलीपत्रलिखितानां^३
मध्ये केवलं जयमण्या एव विद्यमानत्वेन, तस्याश्च कृष्णमणीमरणा-
नन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वकथने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, अतदुद्धितः

१. गोषादीतिपाठः विम० । २. स्तुस्थायित—ध्वन० ।

पितृव्यधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात् । किन्तु कृष्णमशीमरणोत्तरं तत्-
संकान्ततरिपितृव्यकंधने शास्त्रानुसारेण ये अधिकारिणोऽधिकारिशृङ्खलायां
निविष्टाः तेषां मध्ये कश्चिच्चेद्विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवितुं
शक्नोति । परन्तु स च क इति प्रभुत्वमर्पितपत्रजातैर्गतिमशक्य एव इति
वद्भदेशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायत्वदायकमसंग्रहशुद्धितत्त्वदा-
यरहस्यविवादागर्वसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरी स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा जर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, सीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्यहुरनापदि ॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥३॥

ऋकूथग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृत-
याशवलक्यवचनम् ॥४॥

जडया कन्यया च पि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिएडप्रत्यासत्ति-
क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दौहित्रश्च पिएडदाता न च तत्पुत्रः—इति दायभागग्रन्थ-
लिखनम् ॥८॥

न दायं निरिन्द्रिया अदायाश्च स्त्रियो मताः-इति श्रुतेः न दायमर्हति स्त्रीत्यन्वयः, पत्न्यादीनाम् त्वधिकारो विशेषवचनादविरुद्धः-इति दाय-भागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदम्बदीयदिशम्बरमाषोयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१५-मोकाम कलिकावार सदर देशोयानि पण्डित प्रिति सञ्चोयाल ।

यद्यपि मोझलमान जातीय कोनो वेक्ति हिन्दु जातीय कोनो वेक्तिर स्त्रीके बुम्हाइया ताहार पतिर असन्मविते मोझलमान धर्म आनिवार मानस करे, अथवा हिन्दुजातीय कोन वेक्तिर स्त्री आपनार जातीय धर्मत्याग करिया मोझलमानेर धर्म स्वीकार करिते इत्सा करे, तवे पतिर नालिस मते हाकिम वेक्तिके मोझ-मर्मांत मजकुरा ओ मोझलमान वेक्तिदिगेर प्रार्थना हइते वारण राखा पौछे कि ना । यद्यपि पौछे, तवे कि प्रकार, ओ यदि स्यात् पे स्त्री मोझलमान हइया थाके, तवे ताहार पतीर जातीर किछु-हानि हय कि ना । इति सन १८३२ साल तारिख १० दिसम्बर ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदम्बदीयदिशम्बरमाषीयत्रयोदशदिन-सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसा-रेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि यवनजातीयः कश्चिद्बुद्धयक्तिविशेषो हिन्दुजातीयस्य कस्यचिद् व्य-क्तिविशेषस्य स्त्रियं बोधयित्वा तस्याः स्त्रियाः पत्नुरननुमत्सा च यवनजातीय-धर्मैभ्वानेतुमिच्छति, अथवा हिन्दुजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्री स्वजातीयधर्मस्य त्यागं कृत्वा यवनजातीयधर्मस्य स्वीकारं कर्तुमिच्छति

तदा तस्याः स्त्रियाः पत्युस्तद्विषयकाभियोगे सति राज्ञस्तस्याः स्त्रियाः यवन-
जातीयस्य तद्व्यक्तिविशेषस्य च तत्तद्विच्छाविषयीभूताद्वारणकरणमुचितं
भवति । एवं च सति राज्ञस्तयोरुपयुक्तदण्डादिकरणक्षमताप्यस्त्येव । यदि
च सा स्त्री यवनजाती प्रविष्टाऽभूत्तदा तस्याः पतिर्यदि तस्या यवनजातिभव-
नानन्तरमपि तथा सह स्त्रीपुंभर्गाचरणादिकार्यं कृतवान् स्यात्तदा तत्संतर्गा-
जन्यपातकापनोदकयथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणं विना स्वजातावाचरणीयो
व्यवहार्यश्च भवितुं शास्त्रानुसारेण न शक्नोतीति, एवं तस्याः स्त्रियाः पत्युः
स्वजातेर्हानिर्जाता । यदि च तस्याः स्त्रियाः यवनजातिभवनानन्तरं तत्पति-
स्तथा सह स्त्रीपुंभर्गाचरणादिकार्यं न कृतवान् स्यात्तदा तत्पत्युस्तत्-
संतर्गाभावेन संतर्गजन्यप्रत्यन्तायापनोदकप्रायश्चित्तं विनापि स्वजातेः कापि
हानिर्भवितुं न शक्नोतीति मनुमिताद्वाराप्रभृतिधर्मशास्त्रानुसारिणी
व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वतन्त्राः स्त्रियः कन्याः पुरुषैः स्वैर्दिवानिराम् ।

विषयेषु च संजन्त्यः संस्थाप्या ह्यात्मनो वशे ॥ इति मनु (६।२)

यचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्मव्यतिक्रमे सति अन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्व-
धर्मव्यवस्थापनं राज्ञा कर्तव्यम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां (पृ० ३४५-३४६)
कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥२॥

यद्यपि स्त्रीपुरुषयोः परस्परमर्थिप्रत्यर्थितया नृपसमक्षं व्यवहारो नि-
षिद्धस्तथापि प्रत्यक्षेण कर्णपरम्परया विदिते तयोः परस्परामिचारे
दण्डादिना दम्पती निजधर्ममार्गे राज्ञा स्थापनीयौ—इति मिताक्षरा-
(पृ० २८८) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एतद्वरीयदिशम्बरमासीमाष्टादरादिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जप्रतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१६—रोवकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम-
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर
साहेबेर बैठके ओयाकके तारिख १६ माह शैतम्बर इ० सन १८३२
साल मोतावरु ५ आशिवन चाङ्गला सन १२३६ रोज बुधवार-

दुर्जनसिंह ओ अर्जनसिंह
वाउत गिरिधरसिंह ओ गयरह—

आपीलाएटान्
रेण्पाडगटान्

आपीलाएटानेर उकिलान् मुनशी होशेन आलि ओ सदा-
सुखपण्डित हाजिर आइल । आपीलाएटानेर छओयाल एइ
मासेर ६ तारिखेर अनुमोदन हओया एइ आदालतेर पण्डितेर
व्यवस्थार प्रति ओजरात एवं अन्य अन्य विशय सम्बलित
सादा कागजेर पर एक केता व्यवस्थार नकल दुइ टाका किर्म्मतेर
एक केता फेरस्त समेत, जाहा एइ मासेर ८ तारिखे दाखिल
हइया छिल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर
छओयाल एइ रोवकारिर नकल ओ एइ मासेर ६ तारिखेर
रोवकारिर नकल सम्बलित ओ एइ मोकदमार मोतालक साम्यक
कागजात एइ हुकुमे ये पण्डित सावेक व्यवस्था ओ आपीलाएटा-
नेर ओजरात ओ एइ मासेर ६ तारिखेर हओया एइ आदालतेर
रोवकारिर प्रति अनुमोदन करिया जओयाव लिखेन-ये तत्
दृष्टे सावेक व्यवस्थार किछु तवदिल जरुर आछे कि ना, आर
यद्यपि स्यात् ताहा धोके, ताहार सरेओयार कैफियत लिखेन-एइ
आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्गन्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेबगन्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीपचितम्बरमासीयोनिविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्न-

प्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पिते तद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातमेतद्वर्माधिकरण्या-
र्थिनां निवेदनपत्रमेतदब्दीयस्मितम्बरमासीयपशुदिवसीयैतद्वर्माधिकरणीयवि-
चारपत्रं च यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयपशुदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।—

प्रमुसमर्पितोपरिलिखितपत्रज्ञातदृष्ट्या अस्मद्दृष्टैतद्विवादविषयनिविष्टपूर्व-
व्यवस्थायाः किञ्चिदपि परावर्त्तनस्यावश्यकता नास्ति, धर्मशास्त्रे केनापि मु-
निना ग्रन्थकारेण वा जीवति घनस्यामिनि पितरि तत्स्वत्वास्पदीभूतं घनं यत्
स्वपित्रादिमरणानन्तरं उत्तराधिकारित्वेन पित्रा प्राप्तं तद्धनं तत्पुत्रैर्विभज्य
ग्रहीतव्यमित्यस्यालिखितत्वात्, कस्मिंश्चिदपि देशे तादृशव्यवहाराभावात् ।
यच्च एताद्वर्माधिकरणार्थिभिः स्वकीयनिवेदनपत्रे अस्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थायां
पैतामहधनं लिखितं तत्प्रमाणेषु पैतृकं धनं लिखितमिति विरोधो लिखित
स्मन् (?) सम्यक्तदव्यवस्थालिखितानां पण्यं प्रमाणानां मध्ये केवलं
प्रथमप्रमाणे मनुवचने एव पैतृकं घनमिति लिखितमस्ति । तत्र पैतृकं घन-
मित्यस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतं घनमित्याशयः । तत्र पितृस्वत्वास्पदीभूतं घनं
यद्धनं पित्रा स्वैनैवोपाजितं तदापि भवति । यद्धनं पित्रा स्वपित्रादिमरणानन्तरं
स्वमात्रादिमरणानन्तरं योत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तदापि भवत्येव, पितृस्वत्व-
स्य तत्राप्यक्षतत्वात् । यथैतद्वर्माधिकरणार्थिभिर्विवादास्पदीभूतं घनं
स्वपैतामहमिति लिखितं तत्रापि तद्धनमर्थिनां पितामहस्य स्वोपाजितं न
भवति, किन्त्वर्थिनामेतद्वर्माधिकरणीयनिवेदनपत्रेणैव विवादास्पदीभूतं
घनं तत्पितामहेनाप्युत्तराधिकारित्वेनैव प्राप्तमित्यस्य स्पष्टीकृतत्वेन, अतएव
यद्धनमर्थिनां पितामहेनार्थात् कीर्त्तित्वेन मूलभूतधनस्यामिनो विक्रमादित्य-
रायात् सप्तमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनं यद्यर्थिना पैतामहं
भवति तदा तद्धनमर्थिनां पित्रा अर्थाद्गृहधनसिंहेन मूलभूतधनस्यामिनो
विक्रमादित्यरायादष्टमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनमप्यर्थिनां पैतृक-
मपि भवितुं शक्नोत्येव । इतरेषु तदव्यवस्थालिखितेषु पत्रेषु प्रमाणेषु सामा-
न्यतो घनमित्यस्य लिखितत्वेन पितुः स्वोपाजिते क्रमागते च घनशब्दस्या-
विशेषात्—इति कानपुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षराधीरमिश्रोदयव्यवहारमाधय-
व्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारेणोत्तरमिति ॥

एतदन्दीयदिशम्बरमासीयोनविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ।।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१७—रोयकारी मिछिल मोकाम कलिकांतार सदर दैओयानि
आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकमुन्दर रास साहेवेर बैठके
हओयार तारिख इङ्गरेजी सन १८३२ सालेर ४ द्विजम्बर मोता-
वेक सन १२३६ वाङ्गलार २० अग्रहायन मङ्गलवार--

आनन्दकिशोर गुप्त थनाम श्रीमती जेमङ्करीदासी

छायलेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजीर आइल। छायलेर
दुओयाल ३२ टाका मूल्ल्येर इष्टाम्प कागजेर पर ब्रासाच्छादन
प्रभृति विशये मुः ५०० पाच शत कुडी टाकार मोकदमार खास
आपील मञ्जुरेर शार्थनाथ उकिल गजकुरेर नामेर एक केता
ओका ततनामा ओ इं० सन १८३० सालेर २१ अक्तुबर तारिखेर
हओया नदिया जेलार आदालतेर एक केता फयसलार नकल
ओ इं० सन १८३२ सालेर १५ फिबरेल ओ सन १८२७ सालेर
१८ आपरेत तारिखेर हओया कलिकातार फोट आपीलेर दुइ
केता फयसलार नकल ओ एक केता वेवस्था सहित, ये सन हालेर
८ शेतम्बर तारिखे दाखिल हइयादिल, अत्र दृष्टे आइल। येहेतु
हुकुम हओनेर पूंज शास्त्रेर विवरणं ज्ञात हओया उचित बोध
हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एह रोयकारि न हल एइ हुकुमे ए
आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नोत्तर
साहार पाइवार दिवसानधि एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

प्रश्न — खोशालचन्द्रराय तालुकात प्रभृति ओ करुणामयी
वनिता ओ करुणामयीर गर्भजात दुहिता श्रीमति चित्रादासीके
उत्तराधिकारिणके राखिमा लोकान्तर्गामी हय, तत्परे लिखित
श्रीमती करुणामयी स्वामीर तेज्य वस्तुर पर ओ ताहार मृत्युर
पर तत्तय कन्या श्रीमती चित्रादासी उक्त खोशालचन्द्रेर तेज्य
वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन। तदपर उक्त श्रीमती चित्रादासी
दुइ पुत्र अर्थान् भैवचन्द्रगुप्त ओ आनन्दकिशोरगुप्तेर मध्ये

ज्येष्ठ भैरवचन्द्र गुप्त श्रीमती ज्ञेमङ्करीदासी वनिता ओ हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति चारि कन्याके राखिया आपन माता श्रीमती चित्रादासीर समझे लोकान्तर ह्य, एवं उक्त श्रीमती चित्रादासीर द्वितीय पुत्र आनन्दकिशोर गुप्त उक्त खोशालचन्द्रेर तावत तेज्य वस्तु उपर दखिलकार ह्य । अतः पर जिज्ञाशा करा जाइतेछे ये यदि उक्त आनन्दकिशोर आपन ज्येष्ठ भ्राता भैरवचन्द्रेर स्त्री श्रीमती ज्ञेमङ्करी दासीके, ओ ऐ श्रीमती ज्ञेमङ्करीदासीर मृत्यु पर ताहार कन्यागण हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृतिके ताहार दिगेर आविश्क अनुसारे मासाच्छादन ना देय, तबे बङ्गदेशीय चलित शाखानुसारे लिखित श्रीमती ज्ञेमङ्करीदासी ओ तत् पर-लोकान्तर तस्य कन्यागण श्रीमती हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति द्याएल आनन्दकीशोर गुप्तेर स्थाने मासाच्छादन पाइवार ज्ञेमता राखे कि ना—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रलकसुन्दरराससाहेबधर्माधिकरणलिखित-
ताङ्करेजोशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयचतु-
र्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपरत्र यत्तदन्दीयतन्मासीयत्र्यदशदिन-
सम्बन्धिनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यःष्टशोघो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सत्यानन्दकिशोरगुप्तो यद्युत्तरा-
धिकारित्वेन प्राप्तवितृथनायां स्वमातरि जीवन्त्यां मातामहधने अतुल्य-
स्वत्वस्य मृतस्य भैरवचन्द्रस्य स्वकीयज्येष्ठभ्रातुः पत्न्याः श्रीमत्याः ज्ञेमङ्करी-
दास्याः; तन्मरणोत्तरं तत्कन्यानां हरसुन्दरीदयामयीप्रभृतीनामावश्यक-
मासाच्छादनं न ददाति तदा सा एव श्रीमतीज्ञेमङ्करीदासी मासाच्छादनो-
पयुत्तरपरतिरूपरूपनामाये स्वजीवनपर्यन्तमानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वकीय-
देवरस्य स्थाने मासाच्छादनप्रदणस्य ज्ञमतां रक्षत्येव, एव तन्मरणोत्तरं
तत्कन्यकानां यदि विवाहो नाभूत्तदा तासां मध्ये अविवादितास्त्वा एव

विवाहपर्यन्तं ग्रासाच्छादनोपयुक्तस्वपितृत्वकथनाभावे सति विवाहपर्यन्तं ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यदि न भैरवचन्द्रस्य कन्यानां सर्वाणामेव विवाहो जातः स्यात् तदा तासां विवाहितानां कन्यकानां मध्ये यासां ग्रासाच्छादनं स्वभर्तृकुलात् स्वभर्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्वकथनाद्वा भवितुं न शक्नोति तदा ता अपि यावज्जीवं स्वकुलोचितग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वपितृत्वस्य स्थाने रक्षन्त्येव । याणञ्च विवाहितानां ग्रासाच्छादनं स्वभर्तृकुलात् स्वभर्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्वकथनाद् वा भवितुं शक्नोति ताश्च ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने न रक्षन्ति, तासामायश्यकग्रासाच्छादनस्य स्वभर्तृकुलादेरुपपत्तेः—इति बङ्गदेशचलितदायभाग-दायतत्त्वदायभागटीका-दायकमसग्रह-विवादार्यवसेतु-विवादभङ्गार्थ-वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सुतारचैपाञ्च भर्तव्या यावद्वै भर्तृसात्कृताः ।

अपुत्रा योपितरचैपां भर्तव्याः साधुवृत्तयः ॥ इति दायभागादि (दाभा० पृ० १०४) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (पृ० २२७ २।१४१) वचनम् ॥१॥

मृते भर्तार्यपुत्रायाः पतिपत्नः प्रमुः स्त्रियाः ।

विनियोगार्थरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिच्छीणे पतिकुले निर्मानुष्ये निराश्रये ।

तत्र सपितृषु चास्तसु पितृपत्नः प्रमुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि (दाभा० पृ० १७३) ग्रन्थधृतनारद (नास्मृ० १३।२८-२९) वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानवरीमासीत्याद्यमदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीःर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

४७०२ ल० ।

१८ फेरादि—गोलकमणीदासी सा० वेहाला परगणे बलिया
आसामी—पीताम्बरहालदार १स्वय्य चेश्रोया १सा० वेहाला
परगणे बलिया, निमचाँद राय, १सा० मोदि परगणे भागुरा ।

मालिके जमीन साबेक रामचन्द्रहालदारेर ओयारिस
श्रीनाथहालदारभट्टाचार्य । इहार हाल खरिदार हरचन्द्र
हालदार सा० वेहाला परगणे बलिया १, दोसरा मालिके
जमिन महाराजा नवकृष्णवाहादुरेर ओयारिस लाबेक शिव-
कृष्णवाहादुर ओ कालीकृष्णवाहादुर सा० सहर कलिकातार
सवाबाजार २ ।

दावि मौरसि जमिर लाखेराजी जमीर ओयारिसिते दखल
कपेम हइवार प्रार्थनाय किर्मत तायदाद १५० टाका । एक
वेक्ति गङ्गारामराय जानि छत्रि आपन सजातीते विवाह करे ।
विवाहिता खीर पत्ते एक पुत्र मदनराय । ऐ गङ्गारामराय एक-
कपालिर कन्याके आसना करे । ताहार उदरे एक कन्या ह्य ।
ताहार नाम गोलकमणि । ताहाके छत्रि संगे विवाह देय ।
गङ्गारामराय लोकान्त हइवाते ऐ मदनराय आपन पितार
स्थावर ओ अस्थावर विषय दखलिकार थाकिया सजातीते
विवाह करे, एक कन्या ह्य । तस्य नाम वरदामणि । ऐ मदन-
राय आपन पैतृक जे किछु तावत आपन कन्या वरदामणिके
दान करे, सरत् एइ जे पर्यन्त वरदामणिर विमाता जीवितमान
थाकियेक ऐ विषयेर ॥^२) आना रकम उपस्वत्व हइते स्तोरोप
करियेक, वरदार ॥^२) आना थाकियेक, वरदार विमातार लोकान्त
हइले सोलो आना उपस्वत्त वरदार थाकियेक । ऐ वरदार विमाता
ऐ प्रकार दखलिकारि थाकिया आपन सपतिनि-पुत्री वरदामनिके
सजातीते विवाह दिया फौत करे । वरदामनि आपन विमातार
श्राद्ध आदि करिया ऐ दानेर विशयेते दखलिकारि थाकिया
किछु काल परे वरदामनि आपन स्वामिके राखिया लोकान्त

हृद्याद्ये । एतन्न ऐ गोलकमनि आपन पितार गङ्गारामरायेर
श्रोयारिस जानाइया नालिस करे । अतएव धर्मशास्त्र अनुसारे
ए विषय काहारे घटीवेक इति—

श्रीज्जयतितराम्

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रं यदङ्कुरेजीशब्दप्रतिपायद्वात्रिसदधिकाष्टादशशता-
ब्दीयागस्तिमासीपत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं
सदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अत्र यद्यपि प्रश्नपत्रे लिखितमस्ति मदनरायस्य कन्या वरदामणी
स्वविमातुः श्राद्धादिकं कृत्वा तद्दानकृतघने श्रायत्तत्वं सम्पाद्य किञ्चित्
कालानन्तरं स्वपति रक्षित्वा मृतेति, परन्तु वरदामण्या विमाता प्रश्नपत्र-
लिखितानां स्वोणां मध्ये का भवतीति प्रश्नपत्रेण ज्ञातुं न शक्यते; तथापि
प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत् तदा वरदामण्याः यदि कन्यापुत्र-
दौहित्रपौत्रप्रपौत्रसन्तोपुत्रपौत्रप्रपौत्रभ्रातृमातृपितृपर्यन्तानां मध्ये कश्चिन्ना-
स्ति चेत्तदा तत्तत्पुरेयाधिकारः । प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्य-
दीभूतघनस्य वरदामण्याः कन्यावस्थायां पितृदत्तत्वेन सौदायिकलोघनत्वात्
कन्यावस्थायां पितृदत्तपौदायिकलोघने च कन्यामारम्य पितृपर्यन्तानामुपरि-
लिखितानामभावे पत्युरधिकारस्यार्थविद्वत्त्वात्—इति वङ्गदेशचलितदाय-
भागदायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह विवादार्यावसेतु-विवादमङ्गार्यावादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-
गादि(दाभा० पृ० ७६)अन्धधृतकात्यायन(काट्म० ६०१ । पृ० १०६)
वचनम् ॥१॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा सिये यद्गनं पित्रा दत्तं तत्र तु घने
प्रथमं कुमार्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं च
वृन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः । सर्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्योनुकथनवत् क्रमेशा-

धिकारः—इति दायक्रमसंग्रहः (पृ० २३) विवादाद्यवसेत्वादि (पृ० ५७)
ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तत्र यौतुकघने इति प्रस्तुत्य सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकार इति ।
पुत्राभावे दोहित्रोऽधिकारीति । दोहित्राभावे पीत्रस्तदभावे प्रपीत्र इति ।
तदभावे सपत्नीपुत्र इति । तदभावे सपत्नीपीत्रस्तदभावे सपत्नीप्रपीत्र इति ।
एतत्सर्व्व्यन्ताभावे ब्राह्मदेवार्पगान्धर्वप्राजापत्यारन्यविवाहपञ्चकलभ्ययौतुक-
घने भर्तृरधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहः (पृ० १६।२०) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥
बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च ।

अप्रजायामतीतायां बान्धवास्तदद्यान्पुत्रुः ॥—इति दायभाग-
(पृ० ६२) दायक्रमसंग्रहः (पृ० २०) विवादाद्यवसेतु (पृ० ६०) विवादभङ्गा-
र्णवादि (२ विवा० ४१५ क) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१।४५) वचनम् ॥४॥
बन्धुदत्तमिति मातापितृभ्यां यदत्तम्, अतएव तत्पुत्राश्च आतर एव
बान्धवाः तदाह वृद्धकात्यायनः—

पितृभ्याञ्चैव यदत्तं दुहितुः स्थावरं धनम् ।

अप्रजायामतीताया आतृगामि तु सर्वदा ॥ इति

सर्व्वदापदेन ब्राह्मादिपैशाघान्तविनाहिताया अप्रजाया धनं आतृ-
गान्येव भवतीति । स्थावरपदाद् दण्डापूषन्वायादेवापरस्य धनस्य सिद्धिः ।
बन्धुदत्तपदेन कन्यादस्यां यत् पितृभ्यां दत्तं तदुच्यते—इति दायभाग-
(पृ० ६२) ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

प्रथमं सोदराणां तदभावे मातुः मातुरभावे पितुः एषां पुनरभावे
तस्मिन् भर्तुः—इति दायभागः (पृ० ६५) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

अङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशस्यताब्दीयज्ञानवरीयमासी-
यचतुर्दशदिनसम्बन्धिषोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतित्राम्

श्रीर्वचनायमिश्रेण

३३४१ लं .

१६—रोवकारी मिछिल शहर देओयानि आदालत सो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुतरिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके । तारिक ६ माह जानेर ई सन १८३३ साल मोतावके वाङ्गला २७ माह पौष १२३६ साल दिवस बुधवार—

मोहम्मद लक्ष्मीप्रिया आपीलएट

भैगवचन्द्रचौधुरि ओ जयचन्द्रचौधुरि, रेप्पाडेष्टान

आपिलएटेर उकिल मनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेष्टर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल, आर द्वितीय रेप्पाडेष्ट जयचन्द्रगय इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारिते ओ खोद किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकद्दमा गते नवम्बर मासेर २६ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया नालिसि आरजि प्रभृति कागजात नां प्रिविन्सियाल कोटेर फयदला पर्यन्त ओ ए आदालतेर कागजपत्र पडा हइया आपीलएटेर उकिलेर उक्त उदाहरण सेरेस्ता हइते बाहिर करनेर हुकुम छादेर हइया मुलतवि छिल, अद्य करणामयी ओ गएरह आपीलएटान ओ जयचन्द्रघोष ओ गएरह रेप्पाडेष्टान ३०२६ तम्बरेर मोकद्दमार कागजपत्र आर कमलाकान्त राय ओ गएरह वनाम गङ्गाचरणसेन खास आपीलेर दरखास्त ओ ताहार सम्पर्कीय कागजपत्रेर सहित आमार बैठके दरपेप इइया एइ दुइ मकद्दमार कोन-कोन कागज विशेषत एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था सकल प्रगाड दृष्टे दृष्टी करा ओ पडा गेल । एवं एइ आदालतेर सन १८२७ सालेर २० ओ २८ नवम्बर तारिखेर लिखित दुइ केता रोशकारि ओ व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डितेर कालीप्रसादराय छाएलेर मोकद्दमार ओ जे रेप्पाडेष्टर उकिल दुइ २ टाका किम्बतेर फेरस्त तिन केतार द्वाराय दाखिल करिलेक, ताहा पडा गेल । तत्परे आपिलएटेर उकिलके जिज्ञाशा गेल ये पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथ कोन वतसरे, कि जयदुर्गार वर्तमाने, कि ताहार

मृत्यु पर जन्म हय । जश्रोयाव दिलेरु ये सन १२०६ साले जय-
दुर्गार मृत्यु हय । ताहार मृत्यु पर सन १२३० साले पूर्णिमार
पुत्र व्रजनाथेर जन्म हय । योध हइल ये आपीलाष्ट जेला रङ्गपुर
ओ दिनाजपुरर संक्रान्तेर परगणे वयनपुर ओ गणरहर ग्राममकल
दाविर वस्तुग हिस्या चारि आना पाच गण्डार दखल पाओनेर
दाविते एइ एजेदारे नालिस करे ये मुदाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र-
चौधुरिर पितामह सदाशिवचौधुरिर दुइ पुत्र; प्रथम मुदाइयार
स्वामिर पिता रामचन्द्र, द्वितीय रामानन्द, सदाशिवेर मृत्यु पर
ताहार जमिदारि ओ गणरह ताहार दुइ पुत्र उभये विभाग पाइया
रामचन्द्र ज्येष्ठप्रयुक्त रकम नय आना, आर रकम मात आना
रामानन्देर हिस्या निर्धारित हय । रामचन्द्र तिन पुत्र कृष्णचन्द्र
ओ हरिश्चन्द्र ओ कृष्णानन्दके ओयारिप आर ऐ नय आनार
कम त्यक्त वस्तु राखिया मृत्यु हय । आर उभयेर विभागानुसारे
मुदाइयार स्वामी कृष्णचन्द्रके रकम चारि आना पाच गण्डा
आर कृष्णानन्द ओ हरिश्चन्द्रके रकम चारि आना पनरो गण्डा
पीछिल । एवं प्रत्येक आपन २ हिस्यार पर दखिलकार हइल ।
मुदाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र दुइ छि, मुदाइया ओ जयदुर्गा एवं
मुदाइयार गर्भजात कन्या पूर्णिमा आर जयदुर्गार गर्भजात नाया-
लक पुत्र कीर्त्तिचन्द्रके राखिया सन १२१२ साले मृत्यु हइले
कीर्त्तिचन्द्रेर नाम जारि हइले सन १२२० साले कीर्त्तिचन्द्रेर मृत्यु
हय । ताहार पर जयदुर्गार नाम जमिदारिर ताहुते लेखा जाय ।
किन्तु मुदाइया ओ जयदुर्गा दुइ जनेइ एक अक्के जमिदारिर
पर दखिलकार एवं उमुल तहसिलेर कर्मकर्ता छिल । परे सन
१२२६ सालेर पीप माहाते जयदुर्गारो मृत्यु हय । आर शास्त्रा-
नुसारे विरधीय जमिदारी मुदाइयार एवं ताहार दौहित्रेर सत्त
आछे । भैरवचन्द्र मुदाआलेहे जश्रोयाव देय ये शास्त्रानुसारे
जयदुर्गार ओ कीर्त्तिचन्द्रेर पिण्डाधिकारि एवं बलवर्त्त ओयारिस
आमि इति ।

ब्रजनाथ राखे, कि कृष्णचन्द्रे वैमात्रेय भ्राता हरिश्चन्द्रे पुत्र
भैरवचन्द्र राखे । धार कृष्णचन्द्रे त्याग्य वस्तु इहारदिगेर मद्धे
कोन व्यक्तिके पीछे—जओयाव दुइ समाह मद्धे लेखेन—एइ
आदालतेर पण्डितके हाओला करा जाय—इति ।

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतिचाडंश्रोआलपोलसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयज्ञानवरीमासीयतवमदिवमीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरू-
पपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य माहशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य पार्ष्वणश्राद्धगण्ड-
दानादिक्रियाकरणक्षमतां मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य दौहित्रोऽर्थात् पूणिमापुत्रो
ब्रजनाथ एव रक्षति, न तु कृष्णचन्द्रस्य वैमात्रेयभ्रातुर्हरिश्चन्द्रस्य पुत्रो
भैरवचन्द्रः, एवं कृष्णचन्द्रस्य त्यक्तधनम्, यत्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रेण कीर्ति-
चन्द्रेण कीर्त्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं तन्मात्रा अयदुर्गया च प्राप्तम्, तद्धने
यदि कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जयदुर्गया मरणसमये कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः
पूणिमायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् ब्रजनाथोऽन्यः कश्चिद् वा गर्भे व्यवस्थितो
भूमिष्ठो वा आसीत् तदा तस्याधिकारः । जाते च तस्याधिकारे पुनस्तस्य-
मानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थात् कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधि-
कारः समान एव भविष्यति । कृष्णचन्द्रस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनमुत्तरा-
धिकारित्वेन तत्पुत्रेण कीर्त्तिचन्द्रेण प्राप्तम्, अतस्तद्धनंकीर्त्तिचन्द्रस्यैव जातम् ।
अतस्तस्मिन्नप्राप्तव्यवहारे अकृतविवाहे च मृते सति तस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्ताभावेन तत्त्यक्तधनं तन्मात्रा अयदुर्गया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्त-
मपि अयदुर्गामरणोत्तरं कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनं कीर्त्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं^१ ये
कीर्त्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, यथा पुत्रपौत्रपौत्ररहितस्य मृत-
स्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं
पत्यनन्तरं पत्युयै उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति, तथा पुत्रमारभ्य

पितृपर्यन्तरहितस्य मृतस्य घने मातुश्चत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि मातुर्म्मरणाद्योत्तरं मात्रनन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिण्यस्तेषामेव तद्धनं भवति ।

प्रकृते तु कीर्त्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणां मध्ये कीर्त्तिचन्द्रस्य पुत्रमारभ्य तत्पितुः कृष्णचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्यन्तानां कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रादर्थाद् प्रजनायात् पूर्व्यं कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनाधिकारिणां मध्ये इदानीं कश्चिन्नास्तीति प्रमुखमपि तत्र प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयाऽवगमेन कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्राधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्, सति च कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रे कीर्त्तिचन्द्रपितृव्यपुत्रस्य भैरवचन्द्रस्य नाधिकारः । यदि च कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जपतुर्गाया मरणसमये कीर्त्तिचन्द्रस्यैकोऽपि पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्राणां स्वात्मान्ययानुवपस्या कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृद्वन्द्वे दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्ष्णश्राद्धपिएडदातरि स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्ष्णश्राद्धपिएडदानानधिकारिण्याः कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमाया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां योपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः— इति बङ्गदेशचलितमनुदायभाग-दायतत्त्व दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-श्राद्धतत्त्व-शुद्धितत्त्वनिवादाचार्यसेतु-विवादमङ्गार्यादिग्रन्थानुसारेण व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिएडः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यः मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः वृद्धप्रमातामहेभ्यः सप्तोच्यताम्—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थे (अत० पृ० २४३) भृतगोमिलवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो योद्व्यो धनिदौहित्रस्यैव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ ३॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाशवलम्बयवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थधृतयाशवलम्ब-
यवचनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुञ्जीतामरण्यात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुनःपितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितृवैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्र (स्तदभावे)
पितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥८॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्यैव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्त-
थापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्ष्ण्यापण्डदातृत्वाभावात्प्राधिकारः, दुहितुस्तु
दौहित्रात् पूर्वमह्नादह्नात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति-
भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥९॥

एतदन्दीयफेवरखरीमासीथपोडशादिनसम्बन्धिशानिवाशरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जपतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२०—रोयकारि मिट्टील शदर देओयानी आदालत मो० फलि-
काता आदालत मजकुरेर हाकीम श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयेर
साहेबेर बैठके । तारिख १० जानेर इं सन १८३३ साल मोतावेक
वाङ्गला सन १२३६साल १६ माघ दिवस बुधवार—

शामरामदासवनाम वेहालचन्द्र मोतधोर्कार छि, राधा-
चरण नावालगेर माता सुन्दरीदासी—

मोफत्तेप—

छापल हाजीर आइल । छापनेर छत्रोयाल इं० सन १८३१
सालेर २० दिजम्बरेर लिखित, जेला छिलहट्टेर एकटी जज-
साहेबेर फयल्लार नाराजीर मोजेवातेर न्याय एइ मासेर १७
तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मोतावक जेला मजकुरेर तारिख
मजकुरेर फयल्लार आर सादा कागजेर उपर एक केता व्यवस्था
सम्बलित, जाहा एइ मासेर २३ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनु-
मोवने आइल । यद्यपि स्यात् तारिख मजकुरेर जजसाहेब मौछा-
फर फयल्लार लेखा आछे जे काजीयार वस्तु दोकान मजकुर
गुर्दाआलेहेर स्वामीर स्वकृत थाकाते गुर्दाइ अर्थात् छापल
ताहार हकदार शाखामुजाइ हइते पारे ना । ए प्रयुक्त मोफनेशी
आपील मजुरि अथवा नामजुरिर विषये चुडान्त हुकुम छादेर
हओनेर पूर्व हुकुम हईल जे छापलेर छत्रोयाल एइ मोकदमार
फयल्लार सम्बलित एइ आदालतेर परिणतेर निकट पाठान जाय
एइ हुकुमे जे जदि स्यात् दुइ भ्राता, एक जन प्राप्तव्यवहार, द्वितीय,
अप्राप्तव्यवहार, एकत्र थाके, आर भ्राता प्राप्तव्यवहार आपन
सोपार्जित हइते दोकान कारवार जारि करे । ए प्रकारे छोट भ्राता
एमत दोकानेर किछु हिस्वार हकदार, एवं कि आन्दाज हइते
पारे कि ना-ताहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेख-
इति व्यवस्था दाखिल हओनेर परे कागजेर सामिल दरपेप हय—

श्रीर्जयतितराय

एतद्घमर्माधिकरणधिपतिश्रीयुतदेनरीधिकिसपोयखाहेवघमर्माधिकरण-
लिखितैवदन्दीयजानवरीमाधीयत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-
रूपपत्रमेवं तत्त्वमर्पितैतद्घमर्माधिकरणधिनियेदनपत्रमेतद्विब.द्विपत्र-

निविष्टजपपत्रञ्च यत्तदन्दीयफेवरवरोमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवा-
सरे मया प्राप्त तदवलोक्य यदृशबोधो आतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि द्वयोर्भ्रात्रोरेकत्रवाकिनोर्मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वितीयथाप्राप्त-
व्यवहारो भवति, एतञ्च प्राप्तव्यवहारो भ्रात्रा स्वोपाज्जितघनात् इहे
वाणिज्यव्यापारं करोति, तत्र यदि प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्य-
व्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जितघनं पैतृकादिसाधारणघनाद्युपघातेनोपाज्जितं
स्यात्, तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे कनिष्ठभ्रातुरपि शरी-
रायासश्चेद्यदेतत्तद्वर्माधिकरणाधिनिवेदनपत्रेणैवं प्रभुधमपितत्रयपत्रलि-
खितेन यद्यप्यर्था कदाचिद् विवादास्पदीभूतवाणिज्यविषये कर्म कृतवान्
इत्यधिप्रत्यर्थिनोर्द्वयोरेव साध्युपस्थापितवृत्तान्तेन ज्ञातमित्यनेन वावगम्यते
तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्यं पञ्चधा विभज्य तत्र भागद्वयं कनिष्ठ-
भ्रातुर्भञ्जितुमर्हति, साधारणपैतृकादिघनाद्युपघातेन स्वशरीरायासेन च
प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुस्तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जितघने अंश-
द्वयाधिकारित्वेन कनिष्ठभ्रातुरेकांशाधिकारित्वात् । अतएवैतादृशसाधारण-
घनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे द्वयोर्भ्रात्रोः शरीरायासत्त्वेन
पञ्चधाविभक्ततद्व्यापारोत्पन्नघने कनिष्ठभ्रातुरंशद्वयाधिकारित्वस्य शास्त्री-
यत्वात् । यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपा-
ज्जितघनं साधारणपैतृकादिघनाद्युपघातेन नाज्जितं स्यात् तदा साधा-
रणपैतृकादिघनाद्युपघाताज्जितं घनं ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणं ज्ञातम् ।
अतस्तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे यदि भ्रातृत्वेनाधि-
त्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासस्तदा
तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुस्त्वृत्तीयांशधिकारः, ज्येष्ठभ्रातुरसा-
धारणघनशरीरायासाभ्यां तद्धनोपाज्जितत्वेनांशद्वयाधिकारित्वेनशरीराया-
समानकर्तुः कनिष्ठभ्रातुस्त्वृत्तीयायाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात् ।
यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जित-
घनं साधारणपैतृकादिघनाद्युपघातेन नाज्जितं स्यादेव तद्धनेन कृतो यो
वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारेऽपि भ्रातृत्वेनाधिचित्वेनार्थात् साधारणप्रति-
योगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासोऽपि नाधीत्, यदि चेत् शरीरायासस्तदा

सोऽपि भृत्यत्वेनार्थाद् घेतनप्रादित्वेन, यत्प्रभुसमर्पिततत्रयपत्रलिखित-
सिद्धीदासोप्रत्ययिनीनिर्दिष्टोत्तरपत्रलिखिततात्पर्यार्थेनार्थाद् अर्थी तद्वा-
णिय्यव्यापारे भृत्यत्वेनार्थाद्वेतनं गृह्यत्वा गुमास्ताशब्दप्रतिपाद्यत्वेन स्थित
इत्यनेनावगम्यते तदा तद्वाणिय्यव्यापारोत्तरत्रद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुरंशित्वेन
किञ्चिदपि ग्रहणाधिकारिता नास्ति, साधारणपैतृकादिधनाद्यनुपघातेन
स्थोपार्जितधनस्य ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनत्वेनासाधारणस्वत्वात्पदीभूतेन
तेन धनेन कनिष्ठभ्रातुर्भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन
शरीरायासमन्तरेण ज्येष्ठभ्रातुकृततद्वाणिय्यव्यापारोत्तरत्रद्रव्ये ज्येष्ठभ्रातु-
रेवासाधारण्यसत्त्वेन, तत्र कनिष्ठभ्रातुस्साधारण्याप्रतियोगिनः किञ्चिदपि स्व-
त्वाभावात्—इति चन्द्रदेशान्तर्गतश्रीदृष्टप्रदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्व-
दायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाशुं वसेतुविवादभङ्गाख्येवादिग्रन्थानुसारीणो
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

साधारण्य समाप्तस्य यत्किञ्चिद्वाहनायुधम् ।

शौर्यादिनाप्नोति धनं भ्रातरस्तत्र भागिनः ॥

तस्य भागद्वयं देयं शंपास्तु समभागिनः—इति दायमागादिग्रन्थ-
भृत(दामा० पृ० १०७)व्याख्यचनम् ॥ १ ॥

यत्र पुनः साधारण्यधनमात्रेणैकस्य व्यापारोऽपरस्य धनशरीरायासा-
भ्यां तत्रैकस्यैको भागोऽपरस्य भागद्वयं न्यायावगतमेव निवद्धम् । एतेन
चेतदपि सिद्धचति यत् साधारण्यधनोपघाते सति यस्य यावतोऽशस्य
स्वल्पस्य महतो वीपघातस्तस्य तदनुसारेण भागकल्पना कार्या—इति
दायभाग(पृ० १०६।११०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तस्मात्साधारण्यधनोपघाताज्जिते धनं विभजेदिति विधिः—इति दाय-
भाग(पृ० ११५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तस्मादनुपघाताज्जितमर्जकस्यैव, नेतरेपामिति सिद्धम्—इति दाय-
भागग्रन्थलिखनम् (पृ० ११२) ॥ ४ ॥

एवं यत्रैकेन शरीरव्यापारमात्रेणापरेण च स्वधनशरीरायासाभ्याम-

जितं तत्र शरीरायासमाश्रयाज्जंकत्यैकांशित्वं घनशरीरायासान्यामुज्ज-
कस्य द्वयंशित्वं न्यायसाम्यात्—इति दायक्रमसमग्र (पृ० २८) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥५॥

विभक्तेनाधिभक्तेन वा साधारणधनानुपघातेनापरव्यापारनगरपेक्ष्येण
च यदजित तदज्जंकत्यैव तद्विभाज्यमितरेः—इति दायक्रमसमग्रग्रन्थ-
(पृ० २२) लिखनम् ॥ ६ ॥

एतद्विद्यमानार्चमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ लं—

२१—रोवकारी मिडिल सदर देघोयानि आदालत मजकुरेर
हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर साहेबेर बैठके, तारिख ५
फिब्ररेल ई सन १८३३ साल गोतायेक घाङ्गला सन १२२९ साल
तारिख २५ माघ दिवस मङ्गलवार—

गोशास्त्रीचन्द्रकविराज

आपीलाएट

मोद्धर्मांत जयमनी जीवतमान

श्री कृष्णमणि मोतधोफात

रेण्पाडएटाने

आपीलाएटेर उकिल मुनशी हयदर आलि श्री रेण्पाडएटानेर
मध्ये जीवतमान एक जन मोद्धर्मांत जयमणिर उकिल मुनशी
गोलाम यतुल हाजिर आइल । एवं इस्तहारनामा जारि हथोधाते
श्री कृष्णमणां मोतधोफांत रेण्पाडएडेर कोनो थोयारिश ए
आदालते हाजीर आइल ना । एइ मोद्धर्मा इत पूर्व ई० सन
१८३२ सालेर शेतम्बर माहार ० तारिखे धामार बैठके रोव-
कार एवं साम्यक कागजात पढा हइया तारिख मजकुरेर
रोवकारि लिखित मते एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था

तलब हइया आर व्यवस्था पौछिले पर गतो कल्य दरपेप हइया ताहार अनुमोपनान्ते दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल, अद्य मुनराय दरपेप हइल । एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित यओयावेर द्वाराय एइ मोकद्दमार आशाल मुर्दाइयान मोळ्मर्मात कृष्णमणी थो जयमनीके भैरवकविराजेर तरफेर जोवानि हेवार सत्वतार विषये जेलार आदालतेर व्यवस्था बहाल हइते छे । किन्तु जेलार फयल्लार द्वाराते, याहा प्रविनशीयान कोटेर तजविज कालिन बहाल हइयाछे, प्रकाश ह्य ना ये कृष्णमणीर हक भैरवेर हेवार बुनियादे किम्बा आपन पिता गङ्गानारायणेर उत्राधिकारि हकेर बुनियादे डिगरि हइयाछे । ये कारख फयल्लला मजकुरेते उहार हक दुइ प्रकारेइ जन् (?) हइयाछे, आर एइ ज्ञये एइ विशय मोकद्दमार तजविजे मातवर हइयाछे ये हेतुक मोळ्मर्मात कृष्णमणीर प्रविनशीयान कोटेर फयल्लार पर मृत्यु हइयाछे, परे एइ विशयेर तलास आर तजविज उचित ये कृष्णमनीर हिस्वार पर उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति हकदार हइते पारे । आर पण्डितेर व्यवस्थार द्वाराते प्रकाश ये यद्यपिस्यात् मोळ्मर्मात कृष्णमणी विवादीय वस्तु हेवार द्वाराय पाइया थाके, वस्तु मजकुरा ताहार स्त्रीधन हइवेक, आर उहाके क्षेमता आछे ये आपन इतसा मते हस्तान्तर करिते पारे, ये प्रकार जयमनी रेष्पाडण्ट एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर जओयावे ताहा उहाके हेवाकरण प्रकाश करियाछे । आर यदि स्यात् विवादीय वस्तु मोळ्मर्मात मजकुराके पितृ उत्राधिकारि सुरते पौछियाछे, आर आपीलाण्टेर पिता वैद्यनाथेर परे, ये प्रकारमोकद्दमार कागजातेते प्रकाश, मोळ्मर्मात मजकुरार मृत्यु हइयाछे, तवे ए प्रकारे पण्डितेर व्यवस्था मते मोळ्मर्मात कृष्णमणीर हकीयतेर हकदार ना आपीलाण्ट ना रेष्पाडण्ट हइते पारे । यदि गङ्गानारायणेर ओयारिप, ये केहो थाके, उहार हक राखिवेक । एइ सकल विशयेर प्रति

दृष्टि हुकुम हईल, ये जयमणीर प्रकाश करा मोदग्मर्मांत कृष्णमणोर हेवार विपये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर यत्रोयावे लिखियाछे, रेण्पाड्येदेर स्थाने सायुद तलवेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाशा कराजाय ये यदि स्यात् कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ युनियादे दरपेप करे, आर दुइ मतेइ डिगिरि हासिल करे, आर तद्वरे आपन हकीयत दोशराके हेवा करिया मृत्यु करे-ए प्रकारे एमत हेवा सिद्ध हईते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम

एतद्घर्माधिकरणाधिपतिभोयुनहेनरीविकिसरीयरसाहेवघर्माधिकरणा लिखितैतदन्दीयफेवरवरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चदशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवशोक्य यादृशबोधो सातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचित् स्त्री घनस्य प्राप्तीञ्छ्वापूर्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदानाम्भ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाम्भ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां घर्माधिकरणात्तो जपरत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं घर्माधिकरणीयजयरत्रानुसारेण स्वस्वत्वास्तदीभूतघनमन्यस्मै दत्त्वा मृता स्थात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तराधिकारित्वदानाम्भ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्तददने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये दानस्यापि तत्त्वत्वोत्पादकस्य सत्त्वात् । एतद्विवादविषयनिर्णयसमद्वयप्राचोनाव्यवस्थालिखितप्रकारकतदानानुसारेण तस्यास्तस्मिन् सीदायिकस्त्रीघने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निश्चयः स्यात्—इति बङ्गदेशचलितोपनि-लिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितव्यवस्थाप्रमाणं पठप्रमाणञ्चेति । एतदन्दीयमन्व-मासीवाशादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर द्दश्रोयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड श्रोयालपोल साहेबेर बैठके । तारिख २० फिबरेल इं सन १८३३ साल मों वाङ्गला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोछुर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाएट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेएटान्

आपीलाएटेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल । आर द्वितीय रेप्पाडेएट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्वाहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकईमा गतो जानेर माहार ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार एवं एइ मकईमार साम्यक कागजात आर ३०२६ लम्बरेर मकईमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाधरणसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारि लिखित छओयालेर जओयाव एइ पण्डितेर स्थाने तलव हइया मुलतवि छिल, अथ एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनुराय रोवकार आर गतो जानेर माहार २६ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेप्पाडेएटर छओयाल अनुमोधने आइल । तत्परे हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित कोट आपिलेर दाखिल करा रेप्पाडेएटर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्भतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पडागेल । यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किञ्चिचन्द्रेर त्यार्य्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किञ्चिचन्द्रेर भग्नी पूणिंमार पुत्र व्रजनाथके अर्शे । किन्तु रेप्पाडेएटर उकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे । एवं एखन

दृष्टि हुकुम हइल, ये जयमणीर प्रकारा करा मोड्ममांत कृष्णमणीर हेवार विपये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मीजेवातेर यओयावे लिखियाछे, रेप्पाडण्टेर स्थाने साबुद तलवेर पूज्वं एइ आदालतेर' पण्डितेर स्थाने जिज्ञाशा कराराजाय ये यदि स्यात् फोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेप करे, आर दुइ मतेइ डिगारि हासिल करे, आर तत्परे आपन हकीयत दोशराके हेवा करिया मृत्यु करे-ए प्रकारे एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्घर्माधिकरणाधिपतिभूयुत्तहेनरीतिकसमीपरसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयफेवरयरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतमश्नप्रतिरू-
पपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचित् स्त्री घनस्य प्राप्तीन्द्वापूर्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदाना-
भ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां घर्माधिकर-
णतो जयपत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं घर्माधिकरणोयजयत्रानुसारेण स्वस्व-
त्वात्तदीभूतघनमन्यसौ दत्त्वा मृता स्थात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तरा-
धिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्य तद्धने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये
दानस्थानि तदस्वत्वोत्पादकस्य सत्त्वात् । एतद्विधादधिपयनिविष्टारमहत्त-
प्राचोनव्यवस्थालिखितप्रकारकतदानानुसारेण तस्यास्मिन् सोदायिकस्त्री-
घने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितोपरि-
लिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितपञ्चमप्रमाणं पठप्रमाणञ्चेति । एतदन्दीयमान्च-
मासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीचिन्नाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबे वेंठके । तारिख २० फिवरेल इंसन १८३३ साल मों वाङ्गला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोछर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाएट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेएटान्

आपीलाएटेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल । आर द्वितीय रेप्पाडेएट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्ताहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्वा उकिलेरे द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकहमा गतो जानेर माहार ६ तारिखे आमार वेंठके रोवकार एवं एइ मकहमार साम्यक कागजात आर ३०२६ लम्बरेर मकहमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाचरणसेनेर खास आपिलेरे छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पढा हइया तारिख मजकुरे रोवकारि लिखित छओयालेर जओयाय एइ पण्डितेरे स्थाने तलव हइया मुलतवि छिल, अथ एइ आदालतेर पण्डितेरे जओयाव दाखिल हओने पुनुराय रोवकार आर गतो जानेर माहार २६ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेप्पाडेएटर छओयाल अनुमोधने आइल । तत्परे हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित क्रोट आपिलेरे दाखिल करा रेप्पाडेएटर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्मतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पढागेल । यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेरे जओयाय हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्यार्च्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र धननाथके अशे । किन्तु रेप्पाडेएटर उकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे । एवं एखन

पर्यन्त ताहार दखले आछे, आर पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथेर मृत्यु हइयाछे । आर मोछ्मात, पूर्णिमार सेत्री रोगि आछे, शास्त्रानुसारे वैमात्रेय भ्रातार किम्या ताहार पुत्रेर त्याग्य वस्तु अधिकारित्व राखे ना । एतदभिन्न मोछ्मात पूर्णिमार विवाह, जाहार सहित निःश्राय्य हइयाछिल परे ताहार सहित ना हइया अन्य व्यक्ति सहित विवाह हइया पुत्र उत्पत्ति हय, आर ए प्रकार स्त्री एवं पुत्र पार्वण्ये आद्वे ओ पूर्वपुरुषेर त्याग्य वस्तु अधिकारि हय ना, आर जखन मुहाइआनेर दायि कोटेर पण्डितेर व्यवस्था लिखित, ये लक्ष्मीप्रियार विवादीय जायगार अधिकारित्व नाइ, दृष्टे डिसमिस हय तखन रेफाडेण्टर ओजरेर तत्त ओ तदान्त करणेर आविश्यक थाकिल ना । जे प्रकार प्रिविनसियान कोटेर फयदला ताहार दृष्टान्त आछे । आर आपीलायटेर उकिल जिज्ञासा मते जाद्वेरे करे ये पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथेर एइ दयणे मृत्यु हइयाछे, आर एखन पर्यन्त ताहार पुत्र हओनेर सम्भावना आछे, आर मोछ्मात मजकुरार विवाह दुइ वार हय नाइ, एवं ताहार सेत्रि रोग नाइ इति । यद्यपि स्यात् मोछ्मा निष्पत्त्य हओनेर पूर्वे विचार अनुसारे उभय विवादीर ओजर निष्पत्त्य करा उचित । ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोबकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित छओयालेर जओयाव आगतो मिछिले लेखेन एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन करा जाय ।

१ प्रथम—एइ ये यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइया थाके, तवे किञ्चिन्ट्रेर त्याग्य वस्तु, याहा ब्रजनाथके आसियाछिल, ताहा ताहार माताके अर्शे कि ना ।

२ द्वितीय—एइ ये पूर्वपुरुषेर वस्तुते उत्तराधिकारि वेक्ति सेत्रि रोग जन्य ताहार अधिकारित्वते प्रतिबन्धक हय कि ना । यद्यपि स्यात् उक्त सेत्रिरोग अधिकारित्वर प्रतिबन्धक हय, तवे

व्रजनाथेन^१ त्याज्य वस्तु ताहार मातामहि मोद्धर्मात् लक्ष्मी-
प्रियाके अशिवेक किं ना ।

३ तृतीय—एइ ये मोद्धर्मात् पूर्णिमार विवाह कोन व्यक्ति
सहित निःधार्य हइया पूर्व कथकथनेर बहिर्भूत हइया अन्य-
कोन व्यक्ति सहित विवाह हय आर ताहा हँते ताहार पुत्र
सन्तान जन्मिया थाके । ए मते मोद्धर्मात् पूर्णिमा किम्वा ताहार
पुत्र कीर्त्तिचन्द्रे त्याज्य वस्तु अधिकारि हइवेक कि, पूर्णिमार
माता लक्ष्मीप्रिया इति ।

श्रीज्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचाठश्रोआलपोलसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयफेयरवरीमासीयविंशतितमदिवसीयविनारपत्रान्तर्गतप्रश्न-
प्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमाच्चमासीयषोडशदिनसम्बन्धिषण्निवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूर्णिमापुत्रो व्रजनाथ उत्पन्नो भूत्वा मृतः स्यात् तदा कीर्त्तिचन्द्र-
स्य त्यक्तघनं यदुत्तराधिकारित्वेन व्रजनाथेन प्राप्तम्, तदने यदि व्रजनाथस्य
पुत्रमारभ्य पितृपर्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तन्मातुरेवाधिकारदति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी आतरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्युत्तराधि(कारि)व्यक्तेः श्वेतरोगस्तदा यथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरस्यं
विना पूर्वाधिकारित्यक्तघने अधिकारस्य प्रतिरोधो भवत्येव, यथाशास्त्र-
प्रायश्चित्ताचरणे सत्यधिकारस्य प्रतिरोधो न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

मृते पितरि न क्लीबः कुष्ठयुग्मत्तज्जडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशमाग्निः ॥—इति दायभागादि-

ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

कुष्ठी अहतप्रायश्चित्तः । कृतप्रायश्चित्तस्य पापमावादंशित्वम्,
पापस्यैवानंशितामूलत्वादिति साम्प्रतम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ-
(पृ० २१२ क)लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूणिमाया विवाहः केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सह निर्द्धारितोऽपि
पूर्वक्यावहिर्भाषेणान्येन केनचित् सह विवाहो जातः स्यादेवं तेन पुरुषेण
पूणिमायाः पुत्रो जनितश्चेत्तदा तस्याः पूणिमायाः किंवा तत्पुत्रस्य कीर्त्ति-
चन्द्रत्यक्तधने एतद्विद्याद्विषयनिविष्टास्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थालिखितप्रकारेणाः
धिकारो भवत्येव—इति बङ्गदेशचलितोपरिलिखितव्यवस्थालिखितग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था—

एतदन्वीयमास्यमासीयद्बिंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मयेयं-
व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२१—रोवकारि मिडिल सदर देशोयानि आदालत मोकाम ।
कलि काता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपूल
साहेबेर बैठके, तारिक २० फिवरेल ई सन १८३३ साल मोतावेक
थाङ्गला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

दुलारसिंह ओ गयरह

आपीलाएडान्

राणी पद्मावती ओ गयरह

रेण्वाहएडान्

आपीलाण्टानेर उकिलान् मुनशी होशन आलि थो मुनशी आन्वांज आलि आर राणी पद्मावती रेप्पाडण्टेर उकिलान् सदासुखपण्डित लाला वस्तिलाल हाजिर आइल ओ आपीलाण्टानेर उकिल मुनशी दादार वकस ओ रेप्पाडण्टेर उकिल मुनसी गोलाम वतुल वेयारामी ओजरे हाजिर नाइ । एइ मोरुईमा एइ मासेर १४ तारिले आमार वैठके रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर नालिसि आरजि ओ गयरह कागजात लम्बर पर्यन्त पडा हइया मुलतवि छिल, अथ पुनराय रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर वाकि कागजात फयल्लता पर्यन्त एयं एइ आदालतेर कागजात अनुमोधने आइल । बोध हइल ये आपीलाण्टान् सावेक मुर्दाइयान परगणे पौयाखालि थो गयरह महालते खेराजी ओ नाखेराजी दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे नालिस करे ये परगणे पौयाखालि ओ गयरह मुर्दाइआनेर पितामह गरिवदासेर हासिल करा, उक्त गरिवदाप ताहाते जिवईशा पर्यन्त दखलिकार थाकिया पाच पुत्र हरिसिंह ओ जयसिंह ओ रत्नसिंह ओ भातुसिंह ओ अचलसिंह मुर्दाइआनेर पिताके राखिया मृत्यु ह्य । हरिसिंह ओ ताहार मृत्युर पर शुभकरणसिंह तस्य पुत्र आर शुभकरणसिंहेर मृत्यु, ये सन १२१६ सालेर फाल्गुन माहाते हइयाळे, ताहार पर पहुपतसिंह आर पहुपतसिंहेर मृत्युर पर रङ्गलालसिंह भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर अनुमति ओ एतर्फीके पितृ-पितामह त्याचर्य वस्तुर पर एवं चकईनाओरि ओ गयरहर उपर, याहा ताहार मुनाफा हइते खरिद ह्य, कावेज ओ दखलिकार एवं उमुल तहशीलेर कर्मकर्ता थाकिया, भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर एवं मुर्दाइआनेर प्रतिपालन करिते छिल । रङ्गलालसिंहेरओ सन १२३२ साले निःसन्तान ओ अविवाहित धिणा ओछी भोकरार मृत्यु हइल, आर मुर्दाइआन व्यतिरेक उहारदिगेर उत्तराधिकारि ओ पिण्डाधिकारि द्वितीय वेह नाइ, एवं शाखानुसारे मृत रङ्गलालसिंहेर श्राद्ध ओ क्रिया-

कम्मे दुलारसिंह मुर्दाहर हस्तेते हइयाछे, इति । राणी पद्मावती मुर्दाआलेहे जओयाव देय ये परगणे पौयाखालि हरिसिंहेर हासील करा, आर चकदेनाओरि ओ गयरह मुर्दाआलेहेर स्वामी पहुपतसिंहेर पिता शुभकरणसिंहेर खरिदा । मुर्दाआलेहेर स्वामी पुण्यपुत्र राखनेर विषये उहाके अनुमति देय आर रङ्गलालसिंह कर्त्तापुत्र राखनेर भार उहार प्रति अर्पन करिया एक केता ओछीयतनामा ऐ विषयेर लिखिया मृत्यु हय । आर पूर्व पुरुषेर श्राद्ध ओ क्रियाकर्मते आपनि अशक्त थाकन प्रयुक्त स्यार्य वस्तुर कर्त्ता उत्तराधिकारि ताहार त्यार्य वस्तु हइते नैरास हइते पारे ना । आर अमृतलाल ओ चरओलाल ओ काली-प्रसाद ओ विशनलाल मुर्दाआलेहेर जओयावेर मजमुन कछल करिया जओयाव गुजराय । आर प्रीविनसियान कोटेर तज-विज कालिन मुर्दाइआनेर दावि डिसमिस हय । यदि स्यात् कागजात हइते प्रकाश ये मुर्दाइआनेर आशल दावि रङ्गलालेर त्यार्य वस्तुर वावत, आर गरिवदास ओ गयरहेर त्यार्य वस्तुर उल्लिक करार कारण किरल (?) पूर्व पुरुषेर परस्पर मृत्युर विवरण प्रकाश जन्य लेखा गिखा छे । आर आपीलाएटानेर एजहार एइ ये उहारदिगेर वंशे मैथिलि शाख चलन आछे—उचित बोध हय । एवं रेणाहस्टओ ताहाते अस्वीकार नहे । ए प्रयुक्त एइ मोकईमार एइ तजविज ओ रोधकरण ये रङ्गलालसिंह, ये अविवाहित ओ निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, ताहार त्यार्य वस्तुर उत्तराधिकारिस्व उभय विवादि ओ तृतीय व्यक्ति मध्ये कोन व्यक्ति मैथिलि देशेर प्रचलित शाखानुजाइक राखे । परे हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये छओपालेर यओयाव ये विवादीय जमीदारी हरिसिंह हइते हरिसिंहेर पुत्र शुभकरणसिंहे आर शुभकरणसिंहेर मृत्युर पर शुभकरणसिंहेर ज्येष्ठ पुत्र पहुपतसिंहे, आर पहुपतसिंहे मृत्युर पर शुभकरणसिंहेर फनिष्ठ पुत्र रङ्गलालसिंहे विणा विभागे अशिल । तत्परे

रङ्गलाल निःसन्तान ओ अविवाहित मृत्यु ह्य, राखिल मुर्दाइयान
अचलसिंहेर पुत्रगण आर अर्जुनसिंह रणसिंहेर पुत्र आर
तुलसीसिंह भातुसिंहेर पुत्र गरिवदासेर पुत्रगण हरिसिंहेर आठ-
वर्ग आर मोक्षमार्त पद्मावती मुर्दाआलेहे पद्मपतिसिंहेर स्त्री आर
शुभकरणसिंहेर दौहित्र उपेन्द्रलाल ओ दयालाल ओ गिरिधारि-
लाल ओ प्रेमलाल ओ जनकलालके परे । मैथिलि देशेर प्रचलित-
शास्त्र अनुजाइक रङ्गलाल मजकुरेर तयार्य्य वस्तु इहारदिगेर कोन
व्यक्तिके अर्शिवेक-एक सप्ताह मध्ये बचन दृष्टान्त सम्बलित
लिखेन एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन कराजाय-इति ।—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयफेवरवरीमासीयविशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
तिरूपपत्रं यत्तदन्दीयमाच्चमासीयपोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं
तदयलोक्य यादृशबोधो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

यदि विवादास्पदोभूत्सर्राजकरस्थावरं (धनं) हरिसिंहस्य मरणान-
न्तरं तत्पुत्रेण शुभकरणसिंहेन प्राप्तम्, शुभकरणसिंहस्य मरणानन्तरं
तद्व्येष्टपुत्रेण पुहपतिसिंहेन प्राप्तम्, तन्मरणानन्तरं तदभ्राभा रङ्गलाल-
सिंहेनाथात् शुभकरणसिंहस्य कनिष्ठपुत्रेणाधिभक्तत्वेन प्राप्तम्, तदनन्तरं
रङ्गलालसिंहोऽविवाहितो निरसन्तान एवाचलसिंहस्य पुत्रान्धिनः एवं रण-
सिंहस्य पुत्रमर्जुनसिंहं भातुसिंहस्य पुत्रं तुलसीसिंहं चैवं पुहपतिसिंहस्य
पत्नी पद्मावतीनाम्नी प्रत्यर्धिनीं चैवं शुभकरणसिंहस्य दौहित्रानुपेन्द्रलाल-
दयालालगिरिधारीलालप्रेमलालजनकलालान् सरदय मृतः स्थात्तदा
रङ्गलालत्यक्तधने रङ्गलालस्य पुत्रमारभ्य तत्प्रपितामहपुत्रपर्यन्तानामर्थाद्
गरिवदासस्य पुत्रपर्यन्तानाममध्ये यदि कश्चिन्नास्ति तदा रङ्गलालप्रपितामह-
गरिवदासपौत्राणामर्थादधिप्रभृतीनां प्रभुकृतप्रश्नलिखितानामधिकारो रङ्ग-
लालभ्रातृपत्नी पद्मावती यावज्जीवं स्वभक्तुं कुलोपयुक्तमासाञ्छादनस्यावश्यक-

विधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तस्य चाधिकारिणी भवति—इति मिथिलादेश-
चलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतयाञ्च-
यत्क्य वचनम् ॥१॥

वहयो ज्ञातयो यत्र सकुल्या धान्यवास्तथा ।

यस्त्वासवतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥—इति विवादचन्द्रविवाद-
रत्नाकरादि (वि० पृ० ५६६) ग्रन्थवृत्तस्वति (पृ० २१६) वचनम् ॥२॥

अनन्तरः सपिएडाघस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।—इति मनु-
वचनम् ॥३॥

अनस्त्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि
तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥४॥

बन्धुरत्र सपिएडः सकुल्यः सगोत्रः—इति विवादचिन्तामणि(पृ०-
२३६) ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

सपिएडता तु पुरुषे सप्तमे विनियत्तते—इत्यादि विवादचिन्तामण्या-
दिग्रन्थधृतवृत्तस्वतिवचनम् ॥६॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति विवादचिन्ता
मण्यादि (पृ० २५०) ग्रन्थधृतशाङ्खवचनञ्चेति ॥७॥

एतदन्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिषुषवासरे मयेयं व्यवस्था
दचेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२४—रोवकारि मिसिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड थोवाल-पोल साहेबेर बैठके । तारिख २५ आपरेल इं सन १८३३ साल मोलावके बाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस घृहस्पतिवार—

मोसर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाण्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेण्डान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि होसन थालि थो हाजिर रेप्पा-डेण्ड भैरवचन्द्रचौधुरि उकिल सदासुखपरिडत हाजिर आइ-लेन, आर द्वितीय रेप्पाडेण्ड जयचन्द्रचौधुरि इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारि हेतु आपनि किम्बा उकिलेर द्वाराय ए आदालते हाजिर नाइ । एइ मोकदमा भिन्न २ दिवसे आमार बैठके रोवकार हइया एइ आदालतेर परिडतेर व्यवस्था ओ कागजात आर उभयेर दाखिल करा दरखास्तादी पढा हइया ब्रजनाथेर पिताके दरखास्त दाखिल करण हुकुम हइया मुलतवि छिल, अद्य पुनुराय रोवकार आर ब्रजनाथेर पिता गौरमोहनचट्टोपाध्याय दरखास्त ओ ब्रजनाथेर माता मोसर्मात पूर्णिमार दरखास्त पढा गेल । यदि स्यात् एइ आदालतेर परिडतेर पूर्व्वेर ओ एइ जनेर व्यवस्थासकलेर द्वाराय प्रकाश आछे ये कीर्त्तिचन्द्रेर त्याग्य वस्तु ब्रजनाथके, आर यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइयाथाके, तवे कीर्त्तिचन्द्रेर त्याग्य वस्तु, याहा उत्तराधि-कारि हेतुते ब्रजनाथके अर्शियाछिल, यदि ब्रजनाथेर इस्तक पुत्र ना(?)पिता केह ना थाके, तवे ताहार माताके अर्शे, आर शेत्रि-रोगेर प्रायश्चित्त करणेते सेत्रो रोगी व्यक्ति उत्तराधिकारि बाधि-त्य(?)पूर्व्वपुरुसेर विशयेते ह्य ना । किन्तु ब्रजनाथेर पिता गौर-मोहनचट्टोपाध्याय वर्त्तमान आछे । आर मोसर्मात पूर्णिमा जाहेर करे ये विवादीय वस्तु आमार पितार त्याग्य वस्तु, ओ ताहार विज पुरुसेर, एवं उक्त मोसर्मात सन्तान हओनेर आ-

२५ अपरेल ई सन १८३३ साल मोतावक चाङ्गला सन १२४०
साल तारिख १४ वैशाख दिवस बृहस्पतिवार—

गोपालस्यहायेर अलि नओयोवावराय आपीलाएट
मोद्धर्मांत भ गवती कोडर ओ गयरह रेप्पाडएटान्

आपिलाएटेर उकिल सदासुखपरिहृत ओ निलवेश्चमेन
एडमेनष्टोन वेलि साहेव, मोद्धर्मांत भगवतीकोडर रेप्पाडएटेर
तरफ हइते आपन नामेर एक केता ओकालतनामा ओ मेहनत-
आनार वावत एक केता रसिद २५० टाकार एइ आदालतेर
तहविलदारेर दस्तखति सम्बलित दाखिल करिया, ओ जितु-
लाल रेप्पाडएटेर उकिल मुनशी फकिर महम्मद हाजिर
आइलेन । एइ मासेर १० तारिखे एइ मोकईमा आमार वैठके
रोबकार हइया नालिसि आरजि ओ गयरह प्रबिनशीयान
कोटेर कागजात १७४ लम्बर पर्यन्त पडा हइया दिवावसान
प्रयुक्त मुलतवि छिल । अद्य पुनुराय रोबकार एवं प्रबिनशीयान
कोटेर वाकी कागजात फयदला पर्यन्त ओ एइ आदालतेर
कागजात दृष्टे आइल बोध हइल ये आपीलाएट सावेक मुर्दाइ
बिवादीय ग्रामसकलेर दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे
नालिश करे ये बायबायान छलतुण्डसिंह, ये सन्तानादि
शस्त्रितो ना, आपन सहोदर आता बाय छलतुण्डसिंहेर कन्या
मोद्धर्मांत राधामोहनकोडरके छलतुण्डसिंहेर अनुमतिमते
आपन सन्ताने आनिया प्रतिगालन करिया, छलतुण्डसिंह
मजकुरके कहिलेक ये आमि राधामोहनकोडरेर बिवाह ओ
कन्यादान करिवो, कन्या मजकुरेर गर्भे प्रथम ये पुत्र सन्तान
हइवेक आमार बिपयेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक ।
ताहार जओयोवे छलतुण्डसिंह एकरार करिल आर उहाके
अनुमति दिल ये कन्या मजकुरेर बिवाह ओ कन्यादान करे;
कन्या मजकुरेर प्रथम सन्तान आमार ओ तोमार बिपयेर ओ
मालामालेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक । तदनुसारे

कन्यादान करिल । नश्रोयावरायेर पिता पेयारिलालेर अनुमति श्रो अभिषाय मते उपरेर लिखित विषये कन्यार विवाह नश्रोयावरायेर सहित देश्रो याइया पुरोहित श्रो गयरहर मन्मुखे कुशो आर गङ्गाजंलेर सहित कन्यादान एवं पुत्रिकापुत्रे वचने संकल्प करिज । ये प्रकार राधामोहनकोडरेर पुत्र गोपालस्यहायेर जन्म हश्रोनेर पर चूडाकरण श्रो कर्माभेद श्रो गगरह दाँडासकल आमले आनिया मृत्यु हइल । मोद्धर्मात भगवतीकोडर आमामी फेरादिर दावि श्रो एजहार अस्वीकार एवं कलतुण्डसिंहेर रायत्रजराजसिंहके पुण्यपुत्र श्रो कर्त्तापुत्र करण एवं ताहार दस्तावेज उदाके लिखिया देश्रोने आर ब्रजराजसिंह मजकुपेर शाखानुसारे कलतुण्ड सिंह मोतश्रोफोर क्रिया श्रो कम्मं करण सम्बलित जश्रोयाव दैय । विचारकालिन मुर्दाशर दावि डिशमिप हय इति ॥ यदि स्यात् चूटान्त हुकुम हश्रोनेर पूर्व शाखेर आज्ञा कलतुण्डसिंहेर गोपालस्यहार पुत्रिकापुत्र श्रो ब्रजराजसिंह पुण्यपुत्र श्रो कर्त्तापुत्र हश्रोनेर विषये बोध करण उचित हइल । एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल श्रो थापीलाएटेर साक्षीगणेर एजहार श्रो ब्रजराजसिंहेर कर्त्तापुत्रे श्रो सन्तानेर दस्तावेज सम्बलित एइ हुकुमे एइ आशालतेर पण्डितके समापन करा जाय ये निचेर लिखित छश्रोयाल सकलेर जश्रोयाव पश्चिम देश प्रचलित शाखानुसारे एक सप्ताह मध्ये, चत्तो शीघ्र हइते पारे, लिखेन ।

१—प्रथम—एइ ये एइ क्षणकार समय अर्थात् कलियुगे निःसन्तान व्यक्तिर आपन सहोदर भ्रातार कन्याके सन्तानत्वेते लश्रोने यथार्थ हय कि ना ।

२—द्वितीय—एइ ये यदि स्वात् थापीलाएट श्रो उदार साक्षीगणेर एजहार कलतुण्डसिंहेर कन्या राधामोहनकोडरके कलतुण्डसिंह आपन सन्तानत्वेते लश्रोनेर विषये श्रो कन्यादान श्रो पुत्रिकापुत्रे कथा, उभयत कलतुण्डसिंह श्रो कलतुण्डसिंह

ओ नओयावराचैर पिता पेयारिलालेर सहित स्थिर हओने ताहार दांडासकले आमले आना, याहा मुर्दाआलेहेर अन्य २ साक्षीगण हइते ओ मुर्दाहेर साक्षीगणेर एजहारे ऐ विषये सत्वता करे, कलतुण्डसिंहेर पुत्रिकापुत्र गोपालस्यहाय हइल कि ना ।

३—तृतीय—एइ ये यदि स्यात् गोपालस्यहाय पुत्रिकापुत्र हओने उक्त व्यक्ति कलतुण्डसिंहेर त्याज्य वस्तु मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक कि उहार श्री भगवतीकोडर ।

४—चतुर्थ—एइ ये घजराजसिंहके कर्ता पुत्र करण ओ सन्तानेते लओने, ये से आपन पितार ज्येष्ठ पुत्र ओ ताहार वयक्रम ३० वत्सरेर अधिक एव कयेक सन्तान आछे, उचित किम्बा ताहार सत्वताते उक्त व्यक्तिर पिता मातार अनुमति ओ वयक्रमेर निर्धार्य एवं आत्मवर्गेर ओ हाकिमेर गोचरेर नियम आछे ।

५—पञ्चम—एइ ये यद्यपि घजराजसिंह कर्तापुत्रेर पर आपन आसल पिता ओ मातार आद्ध ओ क्रियाकर्म करिया ताहारदिगेर त्यार्य वस्तु दखलिकार हइया धाके, तबे ताहार कर्तापुत्रता यथार्थ ओ वहाल थाकिवेक कि ना ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्दओआलपोत्रसाहेवधर्माधिकर-
णुलिखितैतदन्दीयापरेलमाधीयरअविशतितमदिवसीयत्रिचारपत्रान्तर्गतप्रभ-
प्रतिरूपपत्रमेकं तत्प्रमर्शिताधिकद्विपुरपरमारितवृत्तान्तपत्राणि घजराजसिंहस्य
कृत्रिमपुत्रविषयकपत्रम् । यदेतदन्दीयमैमाणीपैकादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो अतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

अलियुगे निस्सन्तानेन व्यक्तिविशेषेण स्वकीयसहोदरभ्रातृकन्यायाः
सन्तानत्वेनार्थात् कन्यात्वेन ग्रहणं धर्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, धर्मः

शास्त्रे तादृशविध्वभावात्, अपुत्रेण सुतः काप्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः—
इति विधेरेव धर्म्मशास्त्रीयत्वादिति—

तत्र प्रमाणम् ।

अपुत्रेण सुतः काप्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसकीर्तनाय च ॥ इति दत्तकमीमासादत्तक-
चन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यथिनस्तत्रिहिंष्टषाद्व्युपस्थापितवृत्तान्तेन च विलमन्तसिंहस्य
कन्याया राधामोहनकोमराख्याया कुलमन्तसिंहेन स्वसन्तानत्पानयन-
विषये कन्यादानपुत्रिणापुनविषये चोभयोः कुलमन्तसिंहविलमन्तसिंहयो-
र्भवावसायविना प्यारोलालेन सह स्विपरीकरणा तस्य रीतिसमुदायस्य भवन
यत्प्रत्यर्थिनोऽन्यमात्रिगणैरर्थिभान्निषाद्द्वेषेण च सत्यत्वमाप्नोति तथापि
गोपालसहायः कुलमन्तसिंहस्य पुत्रिकापुत्रो न जात एतादृशपुत्रिकापुनस्य
शास्त्रालिखितत्वात्, औरसदत्तकृन्मपुनातिरिक्तपुत्राणा कलियुगे विशेष-
पतः शास्त्रनिषिद्धत्वात् । एवञ्च सति कुलमन्तसिंहस्य पत्नी भगवती
कोमराख्या एव तत्प्रकथने अधिकारिणी भवतीति तृतीयप्रश्नस्योत्तर
मप्यर्थादत्रैव पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनेरुधाहताः पुत्रा ऋपिभिर्यैः पुरातनैः ।

न शक्यास्तेऽधुना कर्तुं शक्तिहीनतया नरे ॥ इति दत्तकमीमासादरा-
कचन्द्रिकादिग्रन्थधृतदृष्टसति(पृ० २०७, वचनम् ॥१॥

दत्तोरसेतरेपान्तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान् धर्म्मान् कलियुगे वज्ज्यानाहुर्म्मनीषिणः ॥ इति दत्तकमीमासा
दत्तकचन्द्रकाव्यनन्दारमयूषमिनाक्षराटीकादिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥२॥

दत्तोरसेतरेपान्तु पुत्रत्वेन परिग्रह इति च शौनकेन पुत्रान्तरनिषे-

धाद् दत्तोरसावेवाभ्यनुज्ञायेते । दत्तदं कृत्रिमस्याप्युपलक्षणम्—इति दत्त-
कमीमांसा (पृ० ३०) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पंली दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाश्वत्थयवचनम् ॥४॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि ब्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रीकरणमेवं सन्तानत्वे आनयनं यो ब्रज-
राजविहः स्वमितुज्येष्ठपुत्र एवं त्रिशद्वर्षाधिकवयस्कः, कतिपयसन्ताना अपि
तस्य सन्ति, तदा मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभाद्यनेक-
ग्रन्थमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं न सिद्ध्यति । दत्तकपुत्रग्रहणविषये ये ये
नियमाः मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखितास्ते सर्वे नियमाः कृत्रिमपुत्रविषयेऽपि
मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखिताश्च । एवमात्मीयवर्गस्य राज्ञश्च विज्ञापनमन्तरा
प्रकारान्तरेण तस्य कृत्रिमपुत्रतायाः सत्यत्वनिश्चये सति मनुमते तस्य कृत्रि-
मपुत्रत्वं सिद्ध्यति । मनुवचने केवलं सजातीयत्वकृत्रिमपुत्रीकरणयोर्द्वयोरेव
कृत्रिमपुत्रकरणे प्रयोजकत्वमिति—

अत्र प्रमाणम्—

एव क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि योज्यं समानन्यायत्वात्—इति मिता-
क्षरा (पृ० २२४) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि समानन्यायत्वादेकपुत्रज्येष्ठपुत्रयोर्विषेधः—
इति वीरमित्रोदय (पृ० ६१०) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सदृशं यं प्रकुर्वीत गुणदोषविचक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनु (६।१६६)
वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि ब्रजराजसिंहः कृत्रिमपुत्रभवनात्नन्तरं स्वकीयजनकपितुः स्वज-
नन्या मातुश्च धादादिक्रियाः कृत्वा तयोस्त्यक्तधने आयत्तत्वं संपादितवान्
स्यात्तदा तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं मिताक्षराद्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेण न
सिद्ध्यति, मनुशुद्धिविवेकग्रन्थानुसारेण सिद्धमपरावर्त्यं च भविष्युं शक्नोति-
इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमा-

घनव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाशुद्धिविवेकादिग्रन्थातुसारिणी
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गोत्रच्छ्रवणे जनयितुर्न भजेदत्रिमः सुतः ।

गोत्रच्छ्रवथानुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा ॥ इत्यत्र दत्रिमग्रह-
एस्य पुत्रप्रतिनिधिप्रदर्शनार्थत्वात्— इति मिताक्षरा (पृ० २१५) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥१॥

स च पुत्रत्वकररय पिण्डप्रदः । निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव— इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (पृ० ३१ ख पं० ६) लिखनञ्चेति ॥२॥

एतदब्दीयजुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सञ्चाल—

२६— एक स्त्रीलोक पतिर मरणान्तर आपन पिता माता
स्थावर अस्थावर किञ्चित् विषय पाइया पित्रालय वास करिया
भोगवाना थाकिया लोकान्तर हइले ऐ स्त्रीलोकेर पतिर सहोदर
भ्रातार पौत्र ओ भर्तार भग्नीर पुत्र वर्त्तमान थाकाते ऐ अविरा
स्त्रीलोकेर मातृ पितृ संक्रान्त प्राप्त स्थावर अस्थावर विषय ऐ
दुइ जनार मध्ये फाहाफे अशिते पारे, यथाशास्त्र सञ्चालेर
पाशे शाखेर निदर्शने उत्तर लिखिया पाठाइवा इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रसुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—
यदि काचित् स्त्री पतिमरणानन्तरं स्वपैतृकं मातृकञ्च स्थावरस्थावरकिञ्चिद्धनं

प्राप्य स्वपित्रालये वासं कृत्वा तद्वने भोगवती भूत्वा मृता स्यादत्र विवादा-
 स्वदीभूतं धनं तथा उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमिति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतया
 श्रवणमात्तन्मरणोत्तरं तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य वङ्गदेशी-
 याक्षरलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा पारसी-
 कलिपिलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य च तत्संक्रान्ततरि-
 नृत्यकधने तत्संक्रान्ततन्मातृपक्षधने च नाधिकारः । यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
 रहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या
 मरणोत्तरं तद्वनं तत्पत्युत्तराधिकारिणामेव भवति तथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्त-
 रहितस्य मृतस्य धने दुहितुश्च उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि दुहितु-
 र्भ्रमरणोत्तरं तत्पितुर्वै उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्वनं भवति, प्रकृते तु
 तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौ-
 हित्रस्य वा तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य वा तस्याः पितुर्भ्रातुश्चोत्तराधिकारित्वा-
 भावात्-इति वङ्गदेशचलित-दायभागदायतत्त्व-दायभागटीका दायक्रमसम-
 विवादार्यवसेतु-विवादभङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाशबलव्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरो स्त्विता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा उर्ध्वमाप्नुयुः ॥-इति दायभागादि-
 ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
 दायभागग्रन्थलक्षणञ्चेति । ३॥

इद्वरेजोशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशद्विकाष्टादशशताब्दीयशुलाहमासीयप्र-
 थमदिनसम्बन्धिषोडशसरे मयेय व्यवस्था इति ।

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

छुओल—

२७—रामचन्द्रसरकार नामे एक व्यक्ति आपन एक जोत-जमा ओ वैद्यनाथ नामक एक पुत्र राखिया लोकान्तर ह्य । परे वैद्यनाथ ऐ जमाय दखिलकार थाके । वैद्यनाथ मजकुरेरे दुइ स्त्री, तारामणि ओ राधामणि । तारामणि मजकुरार गर्भजात दुइ पुत्र गङ्गाधर ओ राजकुमार । राधामणि मजकुरार गर्भजात एक पुत्र, आनन्दकुमार^१ एवं एक कन्या आदरमणि । ताहार मध्ये आनन्दकुमारेर मृत्यु आपन पिता वैद्यनाथेर समझे ह्य । परे दुइ पुत्र, अर्थात् गङ्गाधर ओ राजकुमार ओ अदत्ता कन्या अर्थात् आदरमणी ओ आपन दुइ स्त्रीके वर्तमान राखिया वैद्यनाथ मजकुर परलोक प्राप्त ह्य । कियत्कालान्तर गङ्गाधर ओ राजकुमार आपन वैमात्रीय अदत्ता भग्नी आदरमणी ओ माता ओ विमाताके वर्तमान राखिया लोकान्तर ह्य । परे तारामणी मजकुरार मृत्यु हइले राधामणी मजकुरा ताहार श्राद्ध आदि करिया आपन गर्भजात ऐ अदत्ता कन्या आदरमणीर विवाह दिया लोकान्तर ह्य । एइ क्षण ऐ वैद्यनाथ सरकारेरे पुत्रसम्भाविता कन्या आदरमणी ओ वैद्यनाथ मजकुरेरेर पितृदोहिन, अर्थात् रामचन्द्रसरकारेरे कन्यार पुत्र, श्री ईश्वरचन्द्रवसु वर्तमान । अतएव शास्त्र सम्मत वैद्यनाथ मजकुरेरेर पैतृक स्थावरादि धनेर, अर्थात् जोतजमा मजकुरार, सत्ताधिकारिणी वैद्यनाथेर पुत्रसम्भाविता कन्या श्रीमती आदरमणी किम्वा ताहार पितृदोहिन ईश्वरचन्द्रवसु अधिकारि हइवेक-इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था ह्य लिखिवेन इति—

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुनमासीयपत्रदिनसम्बन्धिवृहस्पति-
वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नत्रलिखितवृत्तान्ते सति मूलभूतधनस्वामिनो रामचन्द्रसरकारस्य मरणानन्तरं तत्पुत्रघने तत्पुत्रस्य वैधनायस्याधिकारे जाते सति तद्धनं वैधनायस्यैव जातम् । अतस्तस्मिन् मृते तत्पुत्रघने तन्मरणोत्तरं विद्यमानयोर्गङ्गाधरराजकुमारयोर्वैधनायपुत्रयोरधिकारे जाते सति तद्धनं तयोरेव जातम् । अतस्तयोर्मरणोत्तरं तयोः पुत्रमारभ्य पितृपर्यन्तरहितयोस्त्यक्तघने तयोर्मातुस्तारामया अधिकारे जाते सति तारामया मरणोत्तरं तत्संकान्तस्वपुत्रघनं तत्पुत्रयोर् उत्तराधिकारिण्यस्तेषामेव भवति । तत्र च तत्पुत्रयोश्चत्तराधिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य पितृप्रयौत्रपर्यन्तानामध्ये कश्चिद्घास्तीति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयावगमेनेदानीं गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्राधिकारस्य शास्त्रीयत्वेन गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्तरत्तिसम्भावनायां सत्यां तत्त्वत्वान्वयानुपपत्त्या तयोर्भगिन्या आदरमयास्तयोः पितृदौहित्रोत्तरत्तिसम्भावनायाश्च स्वपुत्रोत्तरत्तेः प्राक्कालपर्यन्तम् (अधिकारः) । यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृघने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृघनेऽपि (भगिन्या) अधिकारः । गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्तरत्तिसम्भावनायां सत्यां तयोः पितामहदौहित्रस्येश्वरचन्द्रस्य नाधिकारः । सति च गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रे स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणभाद्रपिण्डदातरि स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणभाद्रपिण्डदानानधिकारिण्यास्तयोर्भगिन्या आदरमया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वा अधिकारः—इति बङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीका दायक्रमसंग्रह विवादाण्यवसेतुविवादमङ्गाण्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थवृत्त्यास्रवल्क्ष्यवचनम् ॥१॥

पितुरपि अपोत्रपर्यन्तभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो, धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिलनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदात्याभ्यावाद्याधिकारः, दुहितुस्त दौहित्रात्

पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति-
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृ-
वैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्राणां पितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः
तदभावे पितामहदौहित्र०—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-
टीकालिखनञ्चेति ॥४॥

इद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यधयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्र-
थमदिनसम्पन्नविषोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

२२ प्रथम प्रश्नः—

यद्यपि कोन व्यक्तिरा दुइ सहोदर, अर्थात् मध्यम ओ
कनिष्ठ भ्राता, आपनार्हेर ज्येष्ठ ओ तृतीय भ्रातार सहित
प्रार्थक्य हइया, आपनारा दुइ सहोदरे एकान्वयचित्ते स्थावर
अस्थावर वस्तु उपार्जन करिआ, मध्यम भ्राता एक पुत्र राखिया
लोकान्त हय । ताहार पर क्रमे एकान्वयचित्ते थाकिया ऐ मध्यमेर
पुत्र एक छी, ओ कनिष्ठ भ्राता एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया
मृत्यु हय । एगत् स्थले ऐ कनिष्ठेर पुत्र पीडित जीवनासंशय
हइया ऐ समुदय साधारणेर स्थावर अस्थावर वस्तु आपन
सम्भाविता पुत्रिनी भग्नीके दान करिते पारे कि ना—यथाशास्त्र
एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर लिखिवेन इति—

द्वितीय प्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जीवनासंशय हृदया साधारणेर कोन स्थावर अस्थावर वस्तु आपन भग्निके दान करिया ऐ दानपत्रे एमत नियम राखे ये यदि स्यान् आमि ए यात्रा रक्षा पाइ, एइ दानपत्र अकर्मण्य हृदयेक; अतएव शास्त्रागुप्तारे एमत नियमित दान सिद्ध वटे कि ना—

प्रथमप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदेतदन्दीयमैमासीयषोडशदिनमम्ब-
न्धिवृहस्पतिवासरे मया प्र.प्तं तदंबलोस्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिखते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि चतुर्णां सोदरभ्रातृणां मध्ये द्वौ भ्रातराभ्यान्मध्यमकनिष्ठौ स्वकीयज्येष्ठतृतीयभ्रातृभ्यां सह पृथगतौ, तावेव द्वावेकादौ स्थावराःस्थावर-
घनमुपाज्जयतः तयोर्मध्ये मध्यमो भ्राता एकं पुत्रं सरद्वर मृतः स्यात्, तद-
नन्तरं क्रमेशैकान्ते स्थित्वा तस्यैव मध्यमस्य पुत्र एकां पत्नीं संरद्वर
मृतः, एव कनिष्ठो भ्राता एकं पुत्रं कन्याञ्चैकां रक्षित्वा मृतः स्यात् एवञ्च
सति तस्यैव कनिष्ठस्य पुत्रः पीडितो जीवनासंशयमापन्नः सन् तदेव साधारण-
स्थावरास्थावरसमुदायघनं सम्भावितपुत्राद्यै स्वभग्निस्यै दत्तवान् स्यात्तदा
तद्दानं दातुः स्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति, तद्व्यतिरिक्ते सिद्धं भवितुं
न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्व्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्व्यथेष्टं तत्सर्व्यमीशास्ते स्वघनस्य वे ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्ध्यत्येव अक्ष-
पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
दायभागाटीकालिखनम् ॥३॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः
स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः-इत्यादि विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१. विवा० ३०५ क)
लिखनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषो जीवनतंशयमापन्नस्सन्नसाधारणस्थानरा-
स्थावरवस्तु स्वभगिन्यै दत्त्वा तद्दानपत्रे एषं (तेन नियमो लिखितः यद्यहमेत-
द्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदैतद्दानपत्रमकर्मण्यं भविष्यति । अत एवैतादृशं
सोराधिदानं तद्दानकर्तृयोग्यांशेऽपि तद्दानकर्तृस्तद्रोगविमुक्तत्वेन वर्त्तमान-
तायां सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतस्तद्दानपत्रे दात्रा लिखितमस्ति यद्यहमे-
तद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदा अहमवर्त्तमानतायामेतद्दानपत्रमकर्म-
ण्यं भविष्यति, न तु या सर्व्यं तथैव जातमिति । एवञ्च सति दानुस्तद्रोगा-
न्मरणे सति तद्दानं दातुः स्वांशयोग्यं सिद्धं भवितुमर्हति । सोराधिदानमुरा-
धिसिद्धौ सिद्धं भवति उपाध्यसिद्धानसिद्धं भवति-इति बङ्गदेशचलितमनुदा-
यभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था —

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि चत्वारि ॥४॥

सांपाधिदानमुपाध्यसिद्धानसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखन-
ञ्चेति ॥५॥

इद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यवत्त्विकशब्दिकाष्टादशशतान्दीयतुना इमासीयप-
ञ्चगदिनसम्बन्धिगुणकवाक्ये मयैवं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२६—त० ३१ खास आशील—

ई १८०४ साल—

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न —

यद्यपि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्रेर मध्ये ज्येष्ठ पुत्र एक

कन्या राखिया पिता वर्त्तमाने मरे, धार कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र राखिया लोकांतर करे—एमत स्यले ऐ कन्या ओ पुत्रे मध्ये के घनाधिकारी हवेक—यथाशास्त्र प्रश्नेर उत्तर लिखिवा इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातश्च यदङ्गरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकशताष्टादशशताब्दीयनुनाइमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिषो-
मवासरे मया प्राप्त, तद्वलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर
लिख्यते—

यदि कस्यचिद्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः कन्यामेकां रक्षित्वा
जीवति स्वपितरि मृतः स्यादेवं कनिष्ठपुत्रः स्वपितुर्मरणोत्तरमेकं पुत्रं
रक्षित्वा मृतः स्यात्तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वात्पदीभूतं धनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां
दत्तं स्याद् यत् प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतद्वादशाङ्कविक्रालाख्याष्टादशाधि-
कद्वादशशताब्दीयफाल्गुनमासीयषड्दशदिनलिखितएकरारनामासंज्ञकपत्रे -
शावगम्यते तदा तदानानुसारेण तद्वने द्वयोः पुत्रयोः स्वत्वे जाते सति
द्वयोः पुत्रयोर्मरणानन्तरं तयोर्धे उतराधिकारिणस्तेषामेव तद्वनं भवति ।
तत्र द्वयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः पत्नीमेकां कन्यां चैकामेकं पुत्रं च विश्वनाथ-
नामानं सङ्घ्य जीवति पितरि मृत इति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्जातम् । एवं
च सति तदानानुसारेण ज्येष्ठपुत्रयोग्यांशे तत्पुत्रस्य विश्वनाथस्याधिकारे
जाते सति तद्वनं विश्वनाथस्यैव जातमतस्तन्मरणानन्तरं तस्यैकधने
तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारस्तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्ताभावेन तन्मातुः कस्याया अधिकारे जाते सति कवणामरणो-
त्तरं विश्वनाथस्य पितृ रामलोचननस्करस्य प्रपौत्रपर्यन्ताभावेन तत्पितु-
र्दोहित्रस्य भागवतमण्डलस्याधिकारः । पितरि मृते पुत्रं रक्षित्वा मृतस्य
कनिष्ठपुत्रस्यांशे तत्पुत्रस्याधिकारः । यदि च पित्रा स्वस्वत्वात्पदीभूतधनं
विभज्य स्वपुत्राभ्यां न दत्तं स्यात्तदा तद्वने पितुरेव स्वतःमस्ति । अत एव
जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य पैतृकधने स्वत्वानुत्पादाद् जीवति पिता-

महे मृतस्य पौत्रस्य च विश्वनाथस्थानपत्यस्य पैतामहधने स्वत्वानुत्पादाच्च तत्तदुचराधिकारिणां तद्धने नाधिकारः । किन्तु पितृमरणोत्तरं मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्य पैतृकसमुदायधने स्वत्वोत्पादेन पैतृकसमुदायधनं तस्यैव जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः । तदुत्तराधिकारिणांमध्ये तत्पुत्रस्यैव प्राधान्येनाधिकारः—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाचार्यवपेतुविवादभट्टाचार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूतशाश्वत्क्यवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्यैव—इति दायभागप्रथलिखनम् ॥३॥

पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्द्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागादिग्रन्थभूतदेवलवचनम् ॥४॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तद्भावे पौत्रस्तद्भावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारश्रुतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥५॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकशतादशशतान्द्वीयागस्तिनाथोपपञ्चमदिनसम्बन्धिषोमवासरे मयेव व्यख्या दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३०—गोकाम कलिकात्तार सदर देओयानी आदालतेर पण्डित हड्डे सदर ब्रडेर प्रश्न :—

यदि स्यात् जेला सारङ्गबाशो छेत्रीय जातो राजा हरकुमारदत्त मीरुशी जमिदारिर पर दखिल काविज थाकिया दुइ विवाहिता खीरगर्भजातक दुइ पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया लोकान्तरहइल ।

परे ताहार ज्येष्ठ पुत्र राजा तेजप्रताप नामिक कुजा चार मते समुदय अवष्टक जमिदारि पर सम्भोगी थाकिया आपन मृत्युर पूर्व वैमात्रेय भ्राता थाकितेश्रो अवष्टक जमिदारि मजकुर हइते २१ मौजा तिन स्त्रीर मध्ये एक स्त्री महाराणी तिलत्तमादेव्यार नामे दान करिया दानपत्रेर निचे एइ विवरण लेखे ये आमार परे महाराणी मौख्युफ समुदय देहात जमिदारि मजकुर दान करा ग्रामसकल सम्बलित आपण एकत्तारे राखिया आपन कवज तद्धरूपे आणीवेक, आर समयेर हाकिमेर सरकारे मालगुजारि आदाय करिते थाकिवेन इति । ताहार दुइ वत्सर परे उक्त राजा निःसन्तान ऐ वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतापसेन ओ तिन स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ऐ तिन स्त्रीर मध्ये दानग्रहिता महाराणी उत्तराधिकारित्व एवं दानपत्र मजकुरेर द्वाराय समुदय जमिदारि पर दावि करितेछे । ओ मृत राजार वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतापसेन ताहार आपनार एकान्नवर्त्ती एवं अंशी थाकार दाविते एइ विवरणे ये पैतृक जमीदारी हथोन कारण एवं अवष्टक ओ मृत राजार कुष्ठज्यामहकालिन दानपत्र लेखा हओने दान अस्तिद्ध, ओ महाराणीर खोरपोप भिन्न अन्य कोन स्वत्व ना थाकीवाते उत्तराधिकारि दावि करिया आपनाके समुदय जमिदारीर सत्वाधिकारि ओ कर्त्ता करार दितेछे । अतएव शास्त्रानुसारे ऐ दुइ दाविदार मजकुरानेर मध्ये कोन व्यक्ति सकल जमीदारी मजकुरेर पर दखल पाइवार स्वत्व राखे ताहार व्यवस्था चलित शास्त्रसम्बलित रित्तमते लेखेन इति—

श्रीर्जयनितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्कुरेजीशब्दप्रतिपाद्यवस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयकितम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रातः तदधलोक्य यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि सारनदेशीयः क्षत्रियजातीयः कश्चिद्राजा हरकुमारदत्तनामा
व्यक्तिविरोधः क्रमागतसराजकरस्थावरादिघने श्रायत्तत्वं संराज द्वयोः पत्न्यो-
र्गर्भजातौ द्वौ पुत्राद्युत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं तस्य
ष्येष्टपुत्रो राजा तेजःप्रतापसेनः स्वकुलोच्चिताचारानुसारेण समुदायसाधारण-
सराजकरस्थावरादिघने श्रायत्तत्वं संपादितवान् स्यात्तदा तन्मरणानन्तरं तस्य
पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावेन तस्यकाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायघने
तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजोऽभ्रप्रतापस्यैवाधिकारः, साधारणसराजकरस्थावरादि-
घने अंश्यन्तरानुमतिमन्तरेणैकस्य स्वांशयोग्येऽपि दानाद्यनधिकारित्वेन
साधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायघने दानाद्यनधिकारित्वस्यार्थसिद्धत्वात्
पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यप्रतियोगिनि वैमात्रेयभ्रातरि
वियमाने सस्यस्यविभक्तघने पत्न्या अन्नधिकाराच्च । एवं राजस्तेजःप्रताप-
सेनस्य पत्नीनां यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोच्चितासाच्छादनोपयुक्तघने श्रावश्यक-
विधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तघने चाधिकारः-इति सारनदेशचलितमनुमि-
ताक्षरावीरभिप्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारधीस्तुभादिग्रन्थानुसा-
रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तरसुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्घनजातं विभक्तप्रातृस्त्रीविपयम्—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सोदराणामभावे भिन्नोदरा घनभाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तरमादपुत्रस्य स्वर्प्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो घनं परिणीता स्त्री
संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षराग्रन्थ, पृ० २२१)
लिखनम् ॥४॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्यादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्वोभ्यनुज्ञाऽव-
श्यं कार्या । विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिनन्तरेणापि व्यवहारः सिद्धय-
त्येव— इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

स्थावरस्य समन्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।

नैकः कुर्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थ-
धृतव्यासवचनम् ॥६॥

स्वर्ष्यति स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभवते घनांशे तु प्राप्नोत्यामरणागतिकम् ॥—इति वीरमित्रोदय-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकषष्टादशशताब्दीयाकतूवरमासीय-
नवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३१—रोवकारि मिछिज सदर देओयानि आदालत मो०
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरी सिक्स-
पीयेर साहेवेर बैठके । तारिख २४ जुलाइ ईं सन १२३१ मोतावके
वाङ्गला १० श्रावण सन १२४० साल दिवस बुधवार—

कृष्णकान्त पोर्दार—छापल

सन हालेर १७ जुन तारिखेर हओयो एइ आदालतेर
हाकिम रिचार्ड ओयालपुल साहेवेर हुकुम मोतावक जेला जङ्गल
महालेर जज साहेवेर रिटरण सन्वलित ओ ऐ सनेर २१ मार्च
लिखित तथाकार रोवकारि सहित एवं छापलेर छओयालेर
नकल, जादा जज साहेवेर मौछाफर रिटरणेर सामील एइ
आदालते पौछियाडिल, हाकिम रोवकारि ओ राजचन्द्राय
छापलेर मोकईमर फागजात सन्वलित अथ आमार बैठके
दरपेय हइल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये सावेक व्यवस्था
ओ सन हालेर २१ मार्च तारिखेर हओयो जेला जङ्गल महालेर
जज साहेवेर हालेर रोवकारि एइ आदालते पण्डितेर निकट

एइ हुकुमे पाठान जाय थे परिद्धत मजकुर ऐ सकल अनुमोदन परे एइ विषयेर व्यवस्था थे उपरेर लिखित जेलार जजसाहेबेर रोवकारिर लिखित सुरत देवसेवार खरच ओ सेवाइतेर ओयाजिवि खरच मिनाह वादे धाकी उपसत्य डिकरिर टाका आदायेर जन्म जाहा सेवाइतेर नामे हइयाछे खरच हइते पारे कि ना—एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिरनिधीयुतहेनरीसिकिसपीयसाहेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिशदधिकाष्टादशराताब्दीयनुजाइमासीय-
चतुर्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितपूर्व-
व्यवस्थापत्रमेतदब्दीयमार्चनमासीयैरुविद्यतितमदिवसीयवङ्गलमहालजिला-
ख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रत्रयदेतदब्दीयागस्तिमासीय-
द्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य पाटशचोषो जातस्त-
दनुगारेणोत्तरं लिख्यते—

जङ्गलमहालजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रलिखित-
तद्वृत्तान्ते सत्यपि देवसेवार्थं व्ययातिरिक्तस्य सेवाइतशब्दाच्चव्यवस्थावश्यकव्य-
यातिरिक्तस्य देवत्रभूम्युपस्वत्वस्य व्ययो जयत्रलिखितराजतमुद्रापरिशोधना-
र्थम्, यज्जयपत्रं सेवाइतशब्दाच्चव्यस्य नाम्ना जातम्, भवितुं न शक्नोति,
देवत्रभूमौ तदुपसत्त्वे च देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्यत्वाभावात् । यश्च देवत्र-
भूम्युपस्वत्त्वादावश्यकदेवसेवार्थं किञ्चिन्नियोग्वावशिष्टस्य स्वमन्त्रणार्थं
व्यवहारो देवनिवेदनं विनारि पापिगताम् स च शास्त्रनिषिद्धत्वेन शास्त्रा-
नुसारेण यथार्थं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रनिषिद्धव्यवहारस्य शास्त्रानुसारे-
णाप्रामाणिकत्वात्, विशेषतश्चलितशास्त्रानुज्ञायामसत्यामेव लोकव्यवहा-
रस्य शास्त्रं प्रमाणत्वेनोपन्यासाच्च, देवत्रविषये विशेषतश्चलितशास्त्रानुज्ञायाः
प्राचीनव्यवस्थाया एतद्व्यवस्थायाश्च प्रथमप्रमाणे मनुवचनेन एव स्पष्टी-
कृतत्वान्च—इति वङ्गदेशचलितमनुशासनाभागादायतत्वदायभागीकादाय-
कनसप्रहविवादासुतेनुविवादमङ्गलार्थंवादिगन्धानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके गृभ्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्पां
कुल्लूकमट्टव्याख्यानम् ॥२॥

तस्माच्छ्वास्त्रानुसारेण राजा कार्याणि साधयेत् ।

वाक्याभावे तु सर्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति सर्वसर्वचनञ्चेति ॥३॥०॥

इद्वारेभीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासोपर-
श्चविंशतितमदिनसम्बन्धिषोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२—रोवकारि मिडिल सदर देओयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्स-
पीएर साहेबेर घेंठके । तारिख २ अक्तुबर ई सन १८३३साल
मातावेक बाह्ला १७आरिबन सन १२४०साल दिवस बुधवार—

कालीकिशोररायचौधुरि

छापल

छापलेर डकिलान मुनशी हुसुन आलि ओ मुनशा शुआलि आर
सदामुखपरिडित द्वितीय पक्ष रामवकसेर पक्ष इइते आपन नानेर
एक फेता थोकालतनामा भैरवचन्द्रचक्रवर्तिर नामेर एक फेता
मोकारनामा सम्बलित दाखिल करिया हाजिर आइले । छापलेर
दुओयाल कोट मुरशीदाबादेर हाकिम चारणर्प उलिपम इष्टीएर
साहेब ओ कोट जाँहगीरनगरेर हाकिम केरिकेरापट साहेबेर
सन हालेर -६ जुन ओ २२ मार्च तारिखेर लिखिड हुकुमेर
नाराजिते जाहा देनदार जगदीश्वरीर हिस्वार निलामेर विशये

छादेर हय । छाएलेर माता मोछर्मात मजकुरार जीवहशा पर्यन्त
 दखलि कावेजी जमिदारि निलाम नाहओयार प्रार्थनाय छाएलेर
 उकिलानेर नामेर ओकालतनामा ओ रामजयसागड्यालेर नामेर
 मोक्कारनामा ओ क्रोट मुरशीदायाद ओ क्रोट जाहागेरनगरेर
 सन हालेर २६ जुन ओ २२ मार्च ओ इङ्गराजी सन १८३१
 सालेर १६ मार्च तारिखेर लिखित तिन केता रोवकारी ओ
 इंसन १८२६ सालेर ६ एपरेलेर लिखित जेला मयमनसिंहेर
 देशोयानि आदालतेर फयदलार नकल तिन केता ओ वाङ्गला
 ए वारतेर च्छोलेनामार नकल एक केता आर जेलार गुजाराण
 जगदीश्वरीर दरखास्तेर नकल एक केता ओ इंसन १८३२
 सालेर २५ एपरेल ओ इंसन १८२६ सालेर ५ जुलाइ ओ २६
 एपरेलेर लिखित एइ आदालतेर नकल तिन केता ओ इंसन
 १८२६ सालेर ३ दिजेन्वरेर लिखित जेला मजकुरेर देशोयानि
 आदालतेर एक केता रोवकारि नकल सम्बलित, जाहा अय
 मुनशी होशान आलि वकिल आर द्वितीय पद रामवक्सेर पत्तेर
 एक केता छओयाल, जाहा सदामुखपण्डित दाखिल करिलोक, तिन
 केता सेओयाय तिन केता नकल फयदला पढागेल । यदि
 स्यात् मजुद कागजातेर द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये छाएल
 ओ मोछर्मात नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार हकुफ
 छोलेनामार द्वाराय रफा हइयाछे, आर ऐ छोलेनामा जेलार
 आदालते मजुर ओ मातवर हइयाछे आर ताहार द्वाराय
 प्रकाश ये मोछर्मात जगदीश्वरीर मुत्युर पर ताहार हिस्वा
 छाएलके आर्शाविक । ए प्रकारे मोछर्मात मजकुरार देना आदायेर
 जन्ये ताहार हिस्वा विकएर उपयुक्त हइते पारे कि ना—आमार
 निक्कट ए विषय शाखेर एलाका राखे । ए जन्ये चूडान्त हुकुम
 छादेर हओयार पूर्व हुकुम हइल ये छाएलेर छओयाल एवं उदार
 दाखिल करा कागजात ओ द्वितीय पत्तेर छओयाल सम्बलित एइ
 आदालतेर पण्डितेर अमे पाठान जाय—ये पण्डित मजकुर

द्योलेनामार लिखित सरतसकलेर अनुबोधने उपरेर लिखित
छत्रोयालेर जत्रोयाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेनीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिरादधिकाष्टादशशताब्दीयाकनूवरमासीय-
द्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवाद-
विषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिषोम-
वासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यैतद्धर्माधिकरणार्थिनः पितु-
स्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्धर्माधिकरणार्थिनो नारायणोदेव्याश्च जग-
दीश्वरीदेव्याश्च स्वयं निश्चितं स्याद्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तर-
धर्माधिकरणे सत्यं जातं स्याद्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरोदेवी-
मरणोत्तरं तदायत्तीभूतोऽश्च एतद्धर्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं
स्नात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेवश्रृणुपरिशोधनायं तज्जीवनपर्यन्तमुपस्वत्व-
भोगायं तत्पुत्रस्वल्पास्पदोभूततदायत्तीभूतोऽशो^१ विक्रययोग्यो भवितुं न
शक्नोति सन्धिपत्रतात्पर्यार्थधर्मशास्त्रान्या तथैव पर्यवसानात्—इति वङ्ग-
देशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसमहविवादारणवसेतुविवादभङ्गार्णवादि-
ग्रन्थानुकारिणो व्यवस्था—

सर्वे हषनीरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादि-
ग्रन्थभूतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादारणवसेतु(पृ० २६)
विवादमहार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० २०८ ख)भूतविष्णुवचनञ्चेति
॥२॥०॥०॥०॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपात्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयो-
नविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३—रोवकारि भिङ्गिले सदर देओयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुतहेनरीसिकिसपीयेर
साहेबेर बैठके । ८ तारिख अक्तुबर ई० १८३३ साल मोतावेक
वाङ्गला २३ आश्विन सन १२४० साल दिवस मङ्गलवार—

मोछर्मात भवानीदेव्या—

छाएला—

छाएलार उकिल मुनशी माहाम्मद हानीफ ओ सदासुक-
पण्डित ओ द्वितीय पचेर उकिल मौलुवि करम होशेन हाजीर
आइल । गतो कल्य छाएलेर छओयाल दरपेप हइया गौरेर
प्रति मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल । यदि स्यात्
एइ मोकद्दमार हुकुम छादेर हओनेर पूर्व एइ विषयेर तहफिक
आविश्यक ये मोछर्मात ब्रह्ममयी ताहार स्वामी गोपीनाथ
बन्धोपाध्याय ओझीनामा मोतावेक आपनी ओछी सरवराहकार
मकरर करणेर चेमता राखे कि ना । ए जन्य हुकुम हइल
ये एइ मोकद्दमार कागजात एइ विशयेर जओयाव तलघेर
जन्ये एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयेरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपात्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाकनूबरमासीया-
ष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषय-
निविष्टपत्रजातश्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशमोक्षो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ब्रह्ममयी स्वपतिगोपीनाथबन्धोपाध्यायकृतासीयन्नामाख्यपत्रानुसारेण स्वयं धनरक्षकस्थार्थादसीशब्दप्रतिपाद्यस्य सरवररहकारशब्दवाच्यस्य च नियोगकरणक्षमतां रक्षत्येव, मृते पितरि जीवत्यां च मातर्यप्राप्तव्यवहाराणां पुत्राणां धनरक्षणोपायकरणे मात्रपेक्षया अन्येषां मुहूर्त्तरत्वाभावात्—इति यद्देश-चलितदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादाद्यैवसेतुविर्वादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ(दात० पृ० १८) (दामा० पृ० ६२) धृतकात्यायन(कास्मृ० ८४५, पृ० १०२) वचनम् ॥ १॥

रक्ष्यं बालधनमाव्यवहारप्राप्तेः—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(दामा० पृ० ६३) धृतमुनिवचनम् ॥ २॥

तयोरपि पिता श्रेयान् बीजप्राधान्यदर्शनात् ।

अभावे बीजिनो माता तदभावे च पूर्वजः ॥—इति व्यवहारतत्त्वादि-
(व्यत० पृ० ६४।६५) ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० पृ० ५८) वचनञ्चेति ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकंषष्टादशशताब्दीयजानवरोमासी-
यपोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३४—रोवकारि मिडिल सदर देओनि आदालत मोकाम फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम हैनरि सिक्सपीयेर साहेबेर बैठके । इं १८३३ साल थोके तारिख २१ नवम्बर मोतावक बाद्गला १२४० साल ७ अग्रहायन रोज वृहस्पतिवार लोकनाथदत्त—

श्री जगन्नाथदत्त—

घनाम

कुविर भाण्डारि

साएलानेर उकिल मुनशी हयदर आली हाजिर आइल । सन हालेर ३० जुलाएर हओओ जेला मेमनसिंहेर जज साहेवेर फयशला, जाहा सन १८३२ सालेर २७ आगष्ट तारिखे सदर आमिन आलार फयशलार तरदिदे सादेर हय, ताहार असम्मतिर सायलानेर सओओल एक टाका मूल्ल्येर कागजे उपरेर तारिखेर लिखित^१ जेला मजकुरेर जज साहेवेर ओ सदर आमिन आलार दुइ केता फयसला ओ उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा सम्बलित, जाहा सन हालेर ६ आक्टोबर तारिखे दाखिल हइयाछिल, पडागेल । साएलानेर सओओलेर खास आपिल प्राह्य अथवा अप्राह्य विशय हुकुम छादेर हओओर पूर्व हुकुम हइल ये सओओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुमे देओओ जाय—ये कागजात दृष्टे ए विशयेर व्यवस्था यद्यपि ये रूप सदर आमिन आलार फयशलाय मुदइ साएलानेर तरफ हइते प्रमाण हेतु लेखा आछे गुजरिया थाके, दासत्त साव्यस्थ निमित्थे एमत प्रमाण हेतु जथार्थ गणा जाइवेक कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्माधिकरणा-
लिखिताङ्गरेनीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयनवम्बरमासीवै-
कविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समपितैतद्विंश-
दपिपयनिविष्टपत्रजातञ्च पत्तदन्दीयदशम्बरमासीवैकविंशतितमदिनसम्बन्धि-
शानिवाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य बाह्यशब्दोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

सदर-आमीनि—आलालसंशकस्य जयपत्रे अर्थिनां पद्धतो यथा हेतुर्हा-
सत्वस्थिरीकरणाथं लिखितः स च दासत्वस्थिरीकरणाथं याथावय्येन प्रमाणं

भवत्येव, तज्जयपत्रैरेतेषां दास्यदीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासन्तर्गतदाया-
द्युपागतत्वेनावगमात्—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायकम-
सग्रहविवादार्यावसेतुविवादभङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि दायकमसंग्रह-
विवादार्यावसेतुविवादभङ्गार्यावादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

अद्भरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टदशशताब्दीयजानवरीमासी-
यपोडशदिनसम्बन्धिषट्पत्तिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा

प्रथम छओल

३५—यदि स्यात् हिन्दुवर्गेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्विष ह्य ओ ताहार निदर्शन
ना पाओ जाय, तवे ताहार मृत्युर अवधारित कोन पय्यन्त
गणना हइवेक, एवं ताहार मृत्युर अवधारित गणनार समय कि
प्रकार व्यवहार तस्य मृते उचित हइवेक, एवं ताहार निज विशय
कोन अधि मृत व्यक्तिर धन बला जाइवेक, आर ए विशये कत
दिवस नियम अवधारित आछे-ताहार व्यवस्था एतदेशीय चलित
शास्त्रानुजाइ श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित बाङ्गला
भाशाय ।

द्वितीय छओल

यदि स्यात् हिन्दु वर्णेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्वीस ह्य ओ ताहार निदर्शन
ना पाओ जाय, एवं ताहार निज विशय अन्य कोन व्यक्ति
अतिक्रम आक्रम करिया ग्रहण करे, तवे १२ वत्सर मध्ये

केह उत्राधिकारित्वभावे ऐ व्यक्ति निज विशये दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था एतदेशीय चलित शाखानुसारे श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित वाङ्मला भाशाय इति ।

तृतीय छओल

उपरेर लिखितव्य विशये ऐ अनुदेशी व्यक्ति स्त्री वर्त्तमान शक्ति ताहार अन्य कोन सरिक व्यक्ति ऐ अनुदेश व्यक्ति स्त्रीके अविरा स्त्रीलोक एवं एक-अन्न-भुक्त ओ गृहवाशी ओ निज प्रतिपाल्य कहिया उत्राधिकारित्त भावे ताहार विशयेर पर दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था श्लोक वचन द्वाराय तरजमा सम्बलित वाङ्मला भाशाय—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादश-
शताब्दीयनयम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिशुकवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि हिन्दुजातीयानाम्मध्ये कश्चिद् ब्राह्मणः स्वकीयनिकेतनाभिर्गत्यानु-
द्विष्टः स्यात्, तस्यैव निर्गतस्य धार्ता न प्राप्यते चेत् तदा तस्य मरणावधारणं
प्रस्थानदिनमारभ्य द्वादशसंवत्सरानन्तरं भविष्यति, एवं तस्य मृत्योरवधार-
णसमये चायं व्यवहारः कर्त्तुमुचितो भविष्यति—शास्त्रानुसारेणाधिकारिणा
पर्यानरं दग्ध्वा त्र्यहाशौचं विधाय आद्यश्राद्धादिकं कर्त्तव्यम् । एवं तत्त्वत्या-
स्यदीभूतधनं तन्मरणावधारणानन्तरक्षणमारभ्यैव तस्यैव धनमिदमिति
व्यवहर्त्तव्यमिति । एवमेतद्विषये गमनदिनमारभ्य दशवर्षसमाप्तिसमय
एवावधारित इति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद्दार्ता यावद् द्वादशवर्षिकी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्त्तव्यं सुतवान्धवैः ॥—इति शुद्धितत्त्वादि-

(शुत० पृ० २५६) ग्रन्थभूतनारदवचनम् ॥१॥

एवं पर्यानरं दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्—इति तत्तद्ग्रन्थभूतादिपुराण-

(शुत० पृ० ३१०) वचनञ्चेति ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्ब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वनिकेतनाभिर्गत्यानुदितः स्यात्तस्य वार्ता न प्राप्यते चेत्, एवं तत्स्वत्वास्पदोभूतधने उदासीनैर्बलाद् गृह्यमाणे^१ सति शान्दानुसारेणोत्तराधिकारिणः पत्न्यादयः मुह्यन्तमत्वेन प्रोपितधनरक्षाकरणाय^२ एव तत्र विषये जन्मरणावधारणानन्तरं स्वत्वमूलकोऽधिकारोऽव्याहतो न भविष्यति^३ इति स्वाधिकाराय च द्वादशवर्षमध्येऽपि तत्राधिकतु^४मभियोज्युमहन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्वन्धुमित्रेषु प्रोपितानां तथैव च ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्यानुदितस्य पत्न्यां वर्तमानायामश्रयन्तरेण केनचित् कश्चिदप्यनुदितधनेऽधिकतु^५ न शक्यते—इति च बङ्गदेशचलित-दायभागादिग्रन्थसम्मता व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥१॥

अङ्कुरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानवरीमासीय-सप्तविंशतितमदिनसम्बन्धोपस्रोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

१. गृह्यमाणे—व्यप० ।

२. प्रोपितधनरक्षाकारा०—व्यप० ।

३. स्वत्वमूलको व्याहत भविष्यति—व्यप० ।

प्रथम लेखार भाषा—

हुजुरेर सुपुर्द करा सओयाल, जाहा इरेजी सन १८३३ साले २६ नवम्बर मासे शुक्रवारे आमि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे येमत बोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि ।

प्रथम प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि हिन्दु जातिर मध्ये कोनो ब्राह्मण वाटी हइते प्रस्थान करिया अनुदेश हइया थाकेन, ताहार कोनो समाचार ना पाओया जाय, त तवे ताहार मरण निश्चय १२ वत्सरेर पर हइवेक, आर ताहार मरण निश्चय हइले एइ प्रकार व्यवहार उचित हइवेक ये शास्त्रानुसारे ये अधिकारी हइवेक से पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्मित नराकार दाह करिया ३ दिवस अशीच ग्रहण करिया आच श्राद्ध प्रभृति कर्म करिवेक, आर ऐ अनुदेश व्यक्तिर धन ताहार मरण निश्चय यत्न हइवेक, ताहार पर क्षण अवधि ऐ धनके मृत व्यक्तिर त्यक्त धन वलिया व्यवहार हइवेक, आर ए विषये गमन दिन अवधि १२ वत्सर पर्यन्त नियम आछे ।

इहार प्रथम प्रमाण—

शुद्धितत्वप्रभृति ग्रन्थ धृतचारदमुनिवचनेर भाषा—

वाटी हइते प्रस्थान करिले ऐ व्यक्तिर १२ वत्सर पर्यन्त यदि कोन समाचार ना पाओया जाय तवे ताहार पुत्र ओ ज्ञातिरा मरण निश्चय बोध करिवेक इति—

ओ द्वितीय प्रमाण—

शुद्धितत्वादि ग्रन्थ धृतआदिपुराणवचनेर भाषा—

ऐ प्रकार पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्मित नराकार दाह करिया त्रिरात्र अशीच व्यवहार करिवेक इति—

द्वितीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि कोन ब्राह्मण व्यक्ति आपन वाटी हइते गमन करिया अनुदेश हइया थाकेन, ताहार कोन समाचार ना पाओया जाय,

आर ताहार धन अन्य कोन व्यक्ति आक्रमन करिया ग्रहण करे, तवे शास्त्रानुसारे ताहार ओयारिश, ये पत्नी प्रभृति ताहांग ऐ प्रवासि व्यक्ति अति अन्तरङ्ग—ए प्रयुक्त ऐ प्रवासि व्यक्ति धनरत्नार एक्तियार करण जन्य आर ऐ विषये प्रवासि व्यक्ति मरण निश्चय हइले, ऐ पत्नी प्रभृतिर भावि हकीयतेर को- लोकसान ना हइवार कारन १२ वत्सरेर मध्ये ऐ पत्नी प्रभृति ओयारिश लोक ऐ वस्तु ते आपन अधिकार करिवार निमित्त दावी करिते पारे इति—

इहार प्रथम प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत कात्यायनमुनि वचनेर भाषा—

नावालगेर धन अयथार्थे व्यय ना करिया नावालगेर अन्तरङ्ग लोकेर स्थाने गर्च्छित रखिवेक, आर प्रवासि व्यक्ति धनओ ऐ प्रकारे रत्ना करिवेक—इति ॥

द्वितीय प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत याज्ञवल्क्यमुनि वचनेर भाषा—

पुत्र ओ पौत्र ओ प्रपौत्र ना थाकिले मृत व्यक्ति धन प्रथमे पत्नी पाय, परे दुहिता पाय, तत्परे दौहित्र पाय इत्यादि ।

तृतीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

अनुदेश व्यक्ति पुत्र पौत्र प्रपौत्र ना थाकिले पत्नी थाकिते अन्य शरीके कोन क्रमे अनुदेश व्यक्ति धने अधिकार करिते पारे ना । एइ सकल व्यवस्था याज्ञलार चलित दायभागादि-ग्रन्थानुसारिणी ।

इहार प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत याज्ञवल्क्यमुनि वचनेर भाषा—

पुत्र ओ पौत्र ओ प्रपौत्र ना थाकिले मृत व्यक्ति धन प्रथमे पत्नी पाय, परे दुहिता पाय, तत्परे दौहित्र पाय, तत्परे पिता, तत्परे माता, तत्परे भ्राता पाय—इत्यादि ॥

अङ्गरेजी सन् १९३४ साल तारिख सातइसा माह जानवरी रोज सोमवार एइ व्यवस्था आमी दाखिल करिलाम इति ।

३६—रामदास शर्मा मुफलेछ

मुद्दाइ

राधाचरण शर्मा ओ गयरह

मुद्दाआलेहे

सञ्चालेर फर्द शदर देओनी आदालतेर पण्डितेर निकट—

सञ्चालेर तपसि—

प्रथम सञ्चाल—

यदि नान्दिमुखेर श्राद्ध स्वामी ओ ओर पत्ते हइते ना हइया थाके तवे एइ प्रकार विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

द्वितीय सञ्चाल—

भ्राता ना थाकाते ओ ज्ञाति सपिण्ड थाकिते यदि नान्दिमुख ना हइयाथाके तवे विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

तृतीय सञ्चाल—

एइ सरते—ये एक व्यक्ति, श्रात्रिजाति ब्राह्मण, आपन कन्यार विवाह कोन व्यक्तिर सहित स्थिर करिया, दाकदान करिया ताहार मृत्यु हय । परे ऐ कन्यार वियाइ अन्य व्यक्तिर सहित हइते पारे कि ना । आर यदि एक व्यक्ति, ये ताहार सहित विवाहेर कथोपकथन छिलो ना, विवाह करे—ताहा सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

चतुर्थ सञ्चाल—

ऐ कन्यार विवाहेर समय ऐ कन्यार सपिण्डन ज्ञाति थाकिते सम्प्रदानेर क्रिया पुरोहित करिते पारे कि ना—यदि करिया थाके प्रामाण्य हइते पारे कि ना इति ।

सञ्चम^१ सञ्चाल—

यदि एक व्यक्ति एक जन छीलोकके, ये ऐ छीलोक ताहार खुडार भग्नीर कन्या हय, एवं ऐ दुइ जने ज्ञातत्त खुडततो भ्राता

७।= पुरुष सफात हइया थाके, विवाहेर कथा कहे, एवं कन्यार मातार सपिण्ड करणेर दिवस विवाह हइया थाके, तवे ए प्रकार विवाह सत्य घटे कि ना इति ।

षष्ठ सञ्चोाल—

यदि एक व्यक्ति एक स्त्री जयकाली नामक ओ एक पुत्र, द्वितीय स्त्रीर गर्भजात राखिया फौत करे; परे ऐ पुत्र आपन पितार तेज्य वस्तु पर दखिलकार हइया एक अविवाहिता कन्या राखिया फौत करे, परे ऐ कन्या आपन पितार तेज्य वस्तु पर दखिलकार हय; परे एक व्यक्ति कहे—ये आमी सन १२२७ साले ऐ कन्याके विवाह करिया छि, ओ द्वितीय व्यक्ति कहे—जे आमी ऐ कन्याके सन १२२६ साले ओहार पितार चाक-दानानुसारे विवाह करियाछि, एवं आमार एक पुत्र ऐ कन्यार गर्भे जन्मियाछिल, ताहाते ए कन्यार मृत्यु हय, एवं ताहार श्राद्धेर दिवस ऐ पुत्र आपन पिता अर्थात् ऐ द्वितीय व्यक्तीर समीचे मृत्यु हय, ए विषये यदि मोतओफफात मजकुरार विवाह करा सत्य हय तवे जयकाली मजकुरा सत्राधिकारिणी हय, कि ना । यदि विवाह सत्य ना हय । तवे कि आन्दाज उहाके अशे इति ।

सप्तम सञ्चोाल—

यदि एकजन स्त्री आपन स्वामी ओ नाबालग पुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ मोतओफफा मजकुरेर पितामहेर एक स्त्री मर्तमान थाके, परे ऐ नाबालग पुत्रेर आपन पिता मोछ्ममात मजकुरार स्वामीर समीचे मृत्यु हय, तवे एइ दुइ जना, अर्थात् मेत-ओफफात मजकुरार स्वामी ओ पितामहेर थाकेन, इहार कोन व्यक्ति ओयारिश हइवेक इति ।

श्रीज्जयतितराम्

ताब्दीयजुलाहमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

घरस्य कन्यायाश्च पक्षतो विवाहकर्माङ्गीभूतनान्दीमुखश्राद्धं यदि न जातं स्यात्तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोति, अङ्गभूतकर्मणोऽकरणेऽपि प्रधानसिद्धेः शास्त्रीयत्वादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रधानस्याक्रिया यत्र साङ्गं तत्कियते पुनः ।

तदङ्गस्याक्रियायान्तु नावृत्तिर्न च तत्क्रिया ॥—इति तिथितत्त्वादि-
(वित० पृ० ११)अन्धधृतछन्दोगपरिशिष्टवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि भ्रात्रसत्त्वे सपिरिटसत्त्वेऽपि नान्दीमुखश्राद्धं न जातं स्यात् तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणमेवेति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चित् श्रोत्रियब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयकन्याविवाह-
कथोपकथनं केनचित्सह स्थिरीकृत्य वाग्दानं कृत्वा भृतः स्यात्, पश्चात्तस्याः
कन्याया विवाहोऽन्येन केनचित्सह कलौ भावितुं न शक्नोति, एवं
येन सह विवाहकथोपकथनं न स्थितं स यस्मै वाग्दत्ता कन्या तस्मिन्
विद्यमाने सति यदि विवाहं करोति तदा स विवाहः शास्त्रानुसारेण कलौ
न सिद्ध्यतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

दत्तायाश्चैव कन्यायाः पुनर्दानं परस्य च—इति कलिवर्णप्रकरणे
उद्धाहृतत्वादि(पृ० ११२)अन्धधृतनुनिवचनम् ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्याः कन्याया विवाहसमये तस्याः सपिरिटसत्त्वे सम्प्रदान-
क्रियाकरणे कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिस्तदा पुरोहितेनापि सम्प्रदानक्रिया

कर्तुं शक्यते, नान्यथा । यदि च पुरोहितेन कन्यासम्प्रदानं कृतं स्यात्तत्र कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिश्चेत्तदा प्रमाणं भवति नोचेन्न भवतीति !

अत्र प्रमाणम्—

पिता पितामहो आता सकुल्यो जननी तथा ।

कन्याप्रदः पूर्वनाशो प्रकृतिस्थ परः परः ॥—इत्युद्गाहत्त्व(पृ० १२६)

धृतमुनिवचनम् ॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादमङ्गार्यवादिमन्य(१ विवा ३०३)लिखनम् ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि सप्तमपुरुषबहिर्भूतपितृव्यसम्बन्धसंनिगडभगिनीकन्यया सह विवाहकथोपकथनं कृतम्, एवं कन्यामातृसपिण्डीकरणदिने विवाहो जातः स्यात्तदा तादृशविवाहः सिद्ध्यति । तत्र तस्याः कन्यायाः मातुः पतिविहीनायाः सपिण्डीकरणं वस्तुतः शास्त्रतो यद्यपि नायाति, तथापि प्रश्नपत्रे लिखितमस्त्योति कृत्वा मयोत्तरं लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

मातृतः पञ्चमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी त्यजेत्—इत्युद्गाहत्त्वादि-
(पृ० १०६)धृतमुनिवचनम् ॥१॥

पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रिया नास्ति सपिण्डनम्—इति वत्तग्रन्थधृत-
मुनिवचनम् ॥२॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो जयकलीनाम्नीपत्नीमेका पत्न्यन्तरगर्भ-
जातमेक पुत्रश्च सरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं स एव पुत्रः स्वपितृव्य (१)
त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्प्राद्याविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतः स्यात्तदनन्तरं
सा कन्यारि स्वपितृव्यत्यक्तधने आयत्तत्वं सम्प्रादितपती स्यात्, तदनन्तरं
कश्चिद् वदति “वङ्गालारूपसप्तविंशत्यधिकद्वादशशतान्दे मयेयं विवाहिता”
इति, द्वितीयः कश्चिद् वदति वङ्गालारूपोनत्रिंशदधिकद्वादशशतान्दे तत्कन्या-
पितृकृतसम्प्रादानानुसारेण मयेयं विवाहितेति, एव तस्याः गर्भे मया एकः

पुत्रः जनित इति च, ततः सा मृता, एवं तस्याः श्राद्धदिने सोऽपि पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यादेवंविधविषये मृतायास्तस्याः विवाहस्य सत्यतायामसत्यतायां बोधयथैव जयकाली उत्तराधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, सपत्नी पुत्रदोहित्रत्यक्तधने मातामहविमातुः, सपत्नीपुत्रत्यक्तधने विमातुश्चेदानीं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणाधिकाराभावात् । किन्तु मूलभूतधनस्वामिपत्नीत्वेन यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोचितप्रासाञ्छादनस्यावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य चाधिकारिणी भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

सर्वेषामपि तु न्याय्यं दातुं शक्त्या मनीषिणा ।

प्रासाञ्छादनमत्यन्तं पतितो ह्यददद्भवेत् ॥—इति मनु (६।२०२)-

वचनम् ॥१॥

सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येका काचित् स्त्री स्वपतिमप्राप्तव्यवहारं पुत्रश्च संरक्ष्य मृता स्यादेवं तस्याः स्त्रियाः पितामहस्यैका पत्नी च वर्तमाना स्यात्, पश्चात्सोऽपि अप्राप्तव्यवहारः पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यात्, तदा पतिपितामहपत्न्योर्वर्तमानयोर्मध्ये पतिरेवाधिकारी भवति । तस्याः स्त्रियाः मरणानन्तरं विवादात्स्यदोभूततद्धनेऽप्राप्तव्यवहारपुत्रस्वत्वस्योत्तराधिकारित्वेन जातत्वेन तद्धनं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तस्याप्राप्तव्यवहारस्योत्तराधिकारिणां मध्ये तत्पुत्रमारभ्य दोहित्रपर्यन्ताभावेन तत्पितुरेवाधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वात् । जयकाल्याश्च धनिनोऽप्राप्तव्यवहारस्य मातामहविमातुः सपत्नीपुत्रदोहित्रस्य तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य त्यक्तधनेऽधिकाराभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीका-उद्धाहृतत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्यन्यधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमास्य
सोयदशमदिनसम्बन्धिषोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३७—रुवकारि मेडेल सदर देखोनी आदालते मोकाम
कलिकाता आदालते मजकुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर छाहे-
वेर बैठके । सन १८३३ ईं २८ माहे नवम्बर मोतावेक सन १२४०
वाङ्गला १४ माहे अग्रहायन दिवस गृहस्पतिवार—

रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र

छापलान्

छापेलानेर उकिल लालावस्तिलाल हाजिर आसिलेक ।
छापेलानेर छओल सन हालेर २४ जुलाइर हओो क्रोट आजि-
मावादेर हाकिम जेमछ हारिङ्गटोन छाहेवेर हुकुमेर नाराजिते
जाहा तामछ कटवरद छाहेवेर अभिप्रायेर ऐक्यताय कोन व्यक्ति
अंशेर विना नामकरणे जायदाद निलामेर बावन छादर हय ।
हुकुम मजकुरेर तरदिद ओ छापेलानेर दाखिल करा आमामत
टाका । फेरत हओोनेर प्रार्थनाय सन १८२६ ईं ११ शेतम्बरेर
लिखित हुकुम गोपालचन्द्र ओ प्यारिलालेर एक किता छओल
आर २६ जुलाइर मस्तवार लिखित क्रोट मजकुरेर हाकिमेर
रुवकारिर नकल एक किता सम्बलित, जाहा एइ मासेर १५
तारिखे दाखिल हइया छिल, पढागेल । प्रकाश हइतेछे ये
आदालतेर कायदा ओ जावेता ओ प्रकार नहे ये एजमालिर डिग-
रिर हालते रशदि अंश सुरतेर कएक व्यक्ति मुदाआलेहेमेर पर
डिगरि जारी आमले आइशे । अतएव ए विषय उपरेर लिखित
प्रेवणशीयान क्रोटेर हुकुम जावेता ओ हस्तुरेर अन्यथा नहिवेक ।
- किन्तु जखन एजमालि डिगरि जारि जन्ये हुकुम हइल, उचित

द्विल जे डिगरिर टाका जे अन्दाज अंश किरतनचन्द्र अथवा गोपालचन्द्र, अथवा किरतचन्द्र हइते दाखिल हइया थाके ताहा फेरत दिया अंशेर विना निर्दिष्टे ते सुमुदय पैतृक विषयेर निला- मेर हुकुम छादर करेण । किन्तु चुडन्त हुकुमे छादरेर पूर्व हुकुम हइल जे एइ विशयेर व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डित हइते तलव हय ये पैतृक कर्जेर बाबत डिगरिर जारि हालते यद्यपि सन्तानेरा पितार लोकान्तरे पैतृक त्यज्य वस्तु पर अंश स्तरते दाखिलकार हइया थाकेन तवे डिगरिर टाका सन्तानदिगेर अंश हइते लओो जाइवेक, कि अंशेर विना निर्णय पितार त्यज्य वस्तु हइते उमुल हइवेक । आर छेरेस्तादार, यदि स्यात्, एइ मकईमार प्रमान एइ आदालतेर सेरेस्ताय थाके गुजरायेन । इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीतिक्सनीपरसाहेबधर्माधिकरण- लिखिताज्ञेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयलिखदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीमा- षाविशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रतिरूपपत्रं यत्तद्वरीयदिशम्बरमा- सीयाष्टाविशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य पादश- बोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि पैतृकर्णपरिशोधनार्थं धर्माधिकरणतो जयपत्रे प्रकाशिते सति पुत्राः स्वपितृमरणोत्तरं तस्यकधने अंशित्वेन आयत्तत्वं सम्नादितवन्तः स्यु- स्तदा जयपत्रविषयीभूतपैतृकमृणं पुत्राः स्वस्वामानुसारेण स्वस्वांशत एव दद्युः, यतः पितृपरमानन्तरं तस्यकधने पुत्राणां यया अधिकारस्तथैव पैतृ- कर्णपरिशोधनेष्वधिकारः । अतएव पितृमरणोत्तरमंशानुसारेण गृहीत- पैतृकधनानां पुत्राणामंशानुसारेणैव पैतृकर्णपरिशोधनाधिकारस्य शास्त्रानुसारेण न्याय्यत्वात्—इति पाटलिपुत्रप्रभृतिदेशचलितमितात्- शावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखन्वहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

रिक्थग्राह' ऋणं दाप्यः-इति उपरिलिखितग्रन्थधृतयाश्वत्थ-
वचनम् ॥१॥

पितृप्युपरते पुत्रा ऋणं दद्यु र्यथांशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो वां तामुद्दहेद्दधुरम् ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विमजेरन्मुताः पित्रोरूद्ध्वं रिक्थमृणं समम्-इति तत्तद्ग्रन्थधृतया-
श्वत्थवचनमिति ॥३॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकषष्टादशशताब्दीयकिवरवरीमासी-
याष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

ल० ३४५५

३८—स्वकारि मिछिल आदालते सदर देओनि मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम हेनरि सिक्सपीयर
छाहेवेर वैठके । सन १८३३ ई इओो तारिल २६ नवम्बर
मोतावेक सन १२४० बाङ्गला १२ अग्रहायन दिवस मङ्गलवार—

राजा पटनीमन ओ राय वनशीधन आपिलाएटान् ।

राय मनोहरलाल स्वयं ओ अलि स्वरूप

जानिवे आनन्दिदलाल ओ हरजयलाल ओ

मुकुन्दलाल ओ हरवनशीलाल नायालगान् रेछपाडएटान् ।

आपिलाएटानेर डकिलान मुनशी होछन आलि ओ मुनशी
दादार चखश ओ रेछपाडएटानेर डकिलान् मुनशी अलिउल्ला
ओ मुनशी गोलाम आहमद हाजिर आसिलेक ओ रेछपाड-
एटानेर तृतीय डकिल सदासुखपण्डित पिडित विधाय हाजिर

नाह । एइ मकदमा गत कल्य आमार बैठके उपस्थित आर गत कल्येर रुवकारिर लिखित उजुहाते अनेक कागजात पडा हइया दिवा अवसान जन्ये मलतवि रहिल । अद्य पुनराय उपस्थित । ओ उभय विवादिर विवाद वावत एइ आदालतेर मतफरकार रुवकारिसकल ओ एइ आदालत ओ क्रोटेर मिडिलेरेर गाँथा उभयेर दस्तावेज पडा गेल । यद्यपि चुडन्त हुकुम हओर पूर्वे कयेक विषयेर जिज्ञाशा एइ आदालतेर परिडत हइते आवश्यक बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये ऐ रुवकारिर नकल सम्बलित एइ आदालतेर ओ क्रोटेर सकल कागजात एक सप्ताह मियादे ऐ परिडतेर निकट पाठान जाय ये वारानशेर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीम क्रोट ओ अन्य अन्य परिडतेर दस्तखति व्यवस्था दृष्टान्तरे एइ विशयेर जओव लेखेन । जे ओजएम वेवाडिन छाहेव हाकिमेर हुजुरेर वावत ऐ परिडतेर जोवानि जओव-सकलेर सुधरान अथवा बदलानु हेतु, जहार जेकेर ऐ हाकिमेर रुवकारिते लिखित आछे, किछु आवश्यक हय कि ना । आर यद्यपि ऐ परिडतेर पूर्वेर राय वर्तमान थाके, तबे लेखेन ये उपरेर व्यवस्थाहाय मजकुरेर लिखित वचनसकल कोन विचारे अशुद्ध गणा जाइतेछे, आर आपन व्यवस्थार वुनयाद ओ कोन वचनसकलेर पर भवतनी आछे, सरेओर लेखेन । ओ यद्यपि आपिलाण्टानेर उकिल रेछपाण्टानेर दाखिल करा व्यवस्था वावते मकदमा नेहालसिंह आपिलाण्ट ओ चेत्तू रेछपाण्टेरेर पत्ते विशेषत एइ विशयेर पर ओजरदार आछे ये ऐ मकदमार उभय विवादीय ब्राह्मण जाति छिलेन, आर ऐ मकदमार उभय आगरओला वंशव जाति हयेन । अतएव उचित ये ऐ परिडत ताहार पर दृष्ट करिया ऐ विशयेर जओव, जे आगरओला जातिर मर्यादा निमित्ते व्यवस्था मककुरेर किछु तफात आविश्यक आइसे, कि ना लेखेन । आर क्रोटेर मिडिलेरेर ६४ लम्बरेर दाखिल करा एइ आदालतेर साबेक परिडत-

सकलैर व्यवस्था, जाहा मतफरकार मुकद्दमार विचारे एइ आदा-
लते लओो गीयाछे, ऐ पण्डित ताहार पर ओ गौर ओ ताम्बुल
करिया जओोव लेखेन—ये तदनुसारे ओ तदान्तर ये सकल
तहकीकात आमले आशीयाछे, तद्दृष्टे व्यवहार किछु तवदिल
हेतु आवश्यक हइवेक, कि ना। ओ यदि स्यात् आवश्यक हय
ताहार जेकेर लेखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसरीयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीय-
पञ्चविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समपितैतद्वि-
धाद्विषयनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्ब-
न्धिशनियामरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशभोचो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रस्य सुप्रीम-
कोटारूपधर्माधिकरणनियुक्तपण्डिततदितरपण्डितसम्मतव्यवस्थापत्रस्य चा-
बलोकनेन श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेवामिधानैतद्दम्माधिकरणाधिपति-
कृतास्मत्संबन्धिप्रश्नस्यास्मद्दत्तयाचनिकोत्तरस्य परावर्तनस्य शुद्धकरणस्य
चावश्यकता काचिदपि नास्ति । तथाहि श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेवा-
भिधानैस्तद्दम्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्संबन्धिप्रश्नश्चायमेव । यद्यपि हिन्दू-
जातीयः कश्चित् पत्नीमेका पञ्च दौहित्रान्, येषां दौहित्राणां माता विद्यमाने
स्वपितरि मृता स्यात्, द्वौ भ्रातृपुत्रौ च सन्त्य मृतः स्याद्, एवं क्रमागतधनं
भ्रातृयोर्मध्ये विभक्तं स्यात्तदा तस्य मृतस्य स्वसंघः कस्य भवतीत्येकः ।
तदुत्तरं मया दत्तं 'तत्पत्नी प्राप्नुयात् ।' पुनः प्रश्नान्तरम्—'तत्पत्नीमरणोत्तरं
कस्य भवतीति । तदुत्तरं मया दत्तम्—'दुहिता यदि नास्ति तदा दौहित्राः
प्राप्नुयुः' इति । अत एवैतयोर्द्वयोः प्रश्नयोर्मध्ये प्रथमप्रश्नस्य यदुत्तरं
मया दत्तं तदेवोत्तरं तत्प्रश्नविषये वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थ-
पण्डितैः सुप्रीमकोटारूपधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितैरन्यैरपि पण्डितैर्लि-

खितम् । तत्र कश्चिद्विशेषो नास्ति, तद्व्यवस्थाद्वयोर्मध्ये विभक्तकृत्स्न पतिधने' तु पूर्वं पत्न्या पञ्चाधिकारः, इत्यस्य लिखितत्वात् ।

द्वितीयः प्रश्नो यस्तदधिपतिना मां प्रति कृतस्य च प्रश्नो वाराणस्य-
धिकरणकपाठशालास्थपण्डितान् प्रति गुप्तीमकोट्याख्यधर्माधिकरणनि-
युक्तपण्डितान् प्रति तदितरपण्डितान् प्रति वा तत्प्रश्नकर्तृभिर्व्यद्यपि न
कृतस्तथापि तैः पण्डितैरेकानुपूर्व्याकसंस्कृतव्यवस्थाद्वयोरधोभागे कात्यायन-
मुनिवचनं वीरमित्रोदयग्रन्थलिखिततद्वचनव्याख्यानञ्च प्रमाणं लिखित्वा
यल्लिखितं यत्तत्पारसीकतत्परिरूपेणैक्यं नालम्बते । तस्यायं पर्यवसितार्थः ।
यद्विभक्तं पतिधनं पतिमरणोत्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिका-
रित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्, पत्नीमरणोत्तरं तद्वचनं पतिभ्रातृपुत्रदौहित्रयोः
समवाये पतिभ्रातृपुत्रा एव प्राप्नुयुर्न दौहित्रा इति । तत्र वीरमित्रोदय-
ग्रन्थलिखितस्य कात्यायनवचनस्य तद्वचनव्याख्यानस्य चायमेवाभिप्रायः ।
यदि विभक्तं पतिधनं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं
स्थात्तदा पत्नीमरणोत्तरं तत्संक्रान्तपतिधनं पत्युष्ये उत्तराधिकारिणस्त एव
गृह्णीयुः, न तु पत्युत्तराधिकारिण इति । तत्र च पत्युत्तराधिकारिणां मध्ये
“पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तस्मृतः” — इत्यादि याशुवल्क्यादि-
वचनोक्तस्त्युत्तराधिकारिणां दुहित्रादीनामेवाधिकारः । तत्रापि प्रथमं दुहि-
तुस्तदभावे दौहित्राणां तदभावे मातुस्तदभावे पितुस्तदभावे भ्रातृणां तदभावे
भ्रातृपुत्राणां तदभावे गोत्रजादीनां पाठकमेषाधिकारः । तत्र च पत्नी-
मरणोत्तरं विद्यमानायां दुहितरि विद्यमानेषु दौहित्रेषु विद्यमानायां मातरि
विद्यमाने च पितरि विद्यमानेषु च भ्रातृषु पतिभ्रातृपुत्रात् पूर्वं पत्युत्तरा-
धिकारिषु एतान् विहाय पतिभ्रातृपुत्राणामधिकारो भवति — एतद्विधायकः
पश्चिमदेशचलितधर्मशास्त्रान्तर्गतस्य कस्यापि ग्रन्थस्याभिप्रायो नास्ति ।
अतएव तत्तद्व्यवस्थालिखितपण्डितानां मतं पश्चिमदेशचलितशास्त्रबहिर्भू-
तमेव, तत्तत्पण्डितैः स्वस्वव्यवस्थालिखितवचनानां वीरमित्रोदयादिग्रन्थानां
चाशयानुबुद्धैव लिखितत्वात् । अतएव वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखित-

कार्यायनवचनं तद्व्याख्यानञ्च यत्तत्परिहृतलिखितव्यवस्थामुक्तभूतप्रमाणमस्ति तदेतद्व्यवस्थाया अघोभागे प्रमाणत्वेन, एवं सर्वत्रैव वीरमित्रोदयादिग्रन्थे यत्तत्तिष्यन् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं तद्धने पत्नीमन्व्योत्तरं प्रथमं दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य बहुशो लिखितत्वात्, तद्विषयकवीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखितप्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अघोभागे प्रमाणत्वेन मया लिखितानि सन्ति । तैरेवेतत्सर्वं स्पष्टमिति ।

एवञ्च सति अस्मद्दत्तश्रीयुक्तोऽलियमवेराडोन साहेवाभिधानैतद्वर्माधिकरणाधिपतिस्मौषे वाचनिकोत्तरस्य प्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अघोभागे लिखितानि सन्त्येवेति । एवं यानसिद्धानाम्नोऽर्थिनः जितुनाम्न्याः प्रत्यर्थिन्या विवादसम्बन्धिन्या व्यवस्थाया अग्रवालारुग्धेश्यजातीयस्य मर्यादायमेतद्विषये कस्यचिद्विशेषस्यावश्यकता नास्ति । याज्ञवल्क्यीयापुत्रधनाधिकारप्रकरणवचने सर्व्वबख्शेष्यं विधिः' इति । अस्य विशेषतो लिखितत्वात् । एवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुःपष्टयङ्काङ्कितव्यवस्था चैतद्वर्माधिकरणे विवादास्वदीभूतघनजाते श्रायत्त्वसम्पादकाज्ञाभवनकाले गृहीता, तदनुसारेण तदनन्तरं यद्यदनुसन्धानं धर्माधिकरणतो जातं तद्दृष्टयानि श्रीयुक्तोऽलियमवेराडोन साहेवाभिधानैस्तद्वर्माधिकरणाधिपतिवृत्तास्मत्सम्बन्धिप्रश्नस्यास्मद्दत्तवाचनिकोत्तरव्यवस्थायाः काचिदपि परावर्तनस्यावश्यकता नास्ति, तद्व्यवस्थायामपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य स्पष्टोक्तत्वात्-इति पश्चिमदेशान्तर्गतागाराप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायन रचनम् ॥१॥

अथञ्च वचनार्थः-दायादा इत्यत्र कस्येत्यपेक्षायां शयनान्वितभर्तु-
रित्येवोपस्थितत्वादनुपगम्यते-इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सगणपारिणः ॥

एषामभावे पूर्व्वस्य घनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्षोष्यथं विधिः ॥-इति मिताक्षरावीर-
मित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमूलव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥३॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्-इति मिता-
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥४॥

तस्माद्दिभक्ता संसृष्ट्यन्यपुत्रं स्वर्याते पत्नी घनं प्रथमं गृह्णात्यथमर्थः
शिद्धो भवति-इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो घनं परिणीता स्त्री
संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितं, तदभावे दुहितरः--इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

दुहित्रभावे दौहित्रो घनभाक्--इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्तासंसृष्टघनभाजः--इति वीरमित्रोदय-
ग्रन्थलिखनम् ॥८॥

यथा पितृघने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।

तथैव तत्सुतोऽपीप्ते मातृमातामहे घने ॥-इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥९॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्वं त्रिंशदधि क्वाष्टादशराताब्दीयफिपरवरीमासी-
याष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३४ लम्बर आपील—

इ० १८३१ साल

३६—सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति अपुत्रक एक विधवा कन्या आर ऐ कन्यार एक पुत्र एवं एक कन्या ऐ व्यक्ति वत्तमाने मरे । ताहार एक पुत्र आर सहोदर भ्रातार एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे । आर ऐ व्यक्ति मरणान्ते ऐ वत्तमाना कन्यार पुत्रेर मृत्यु हय— एमत स्थले ऐ व्यक्ति स्थावरादिधने काहार अधिकार हय । आर पूर्वोक्त कन्या ओ दौहित्रगण वत्तमान याकिते ऐ व्यक्ति उदरामय ओ ज्वररोगावस्थाय आपन स्थावरादि धन सहोदर भ्रातार पुत्रके दान करिया ऐ दानपत्रे दौहित्रगणेर मोशाहेरा निर्णय करिया ऐ दानेर वस्तु र उपस्वत्व हइते दिवार विषये दानगृहीता व्यक्ति प्रति अनुमति लिखिया देय, तवे एमत दान-शाखानुमारे सिद्ध वटे, कि ना—इहार यथाशास्त्र प्रत्युत्तर लिखिया—इति ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदङ्करेजोशब्दप्र-
तिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयनवम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्ब-
न्धिशुकवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

यदि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितः कश्चिद्व्यक्तिविशेष एकां विषवां दुहितरं
तत्पुत्रञ्चैकं स्वब्रीचनावरयायां मृताया एवस्था दुहितुरेक पुत्र सहोदर-
भ्रातृपुत्रञ्चैकं संरक्ष्य मृतः स्यात् तन्मरणानन्तरञ्च विद्यमानायास्तत्क-
न्यायाः पुत्रस्य मरण जातं चेदपि घनिनो मृतस्य त्यक्तधने तन्मरणका-
लोनविद्यमानपुत्रयोः सम्प्रति च वत्तमानाया दुहितुरेवाधिकारः । यतः
पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्व मृतस्य त्यक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुरधि-
कारः, दुहितुश्चपि प्रथमं कुमार्ग्यास्तदभावे चोदायाः पुत्रवत्याः सम्भावित-

पुत्रायाश्चाधिकारः अत एव पितृमरणोत्तरं या कन्या पुत्रवती स्थिता तस्या अधिकारस्य धनिनो मृतस्य पुत्रमारम्य कुमारीपर्यन्तरहितस्य त्यक्तधने निष्पत्स्युदतया जातत्वेन जाताधिकारायां तस्यां विद्यमानायां तत्पुत्रस्य मरणोऽपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तस्य अधिकारो नैव विनश्यति । अतस्तस्यां विद्यमानायां तत्संक्रान्तपितृधने तत्पितृदौहित्रस्यार्थात्तद्भगिनी-पुत्रस्य विद्यमानस्य तत्पितृभ्रातृपुत्रस्य च नाधिकारः । एवं पूर्वोक्तकन्या-दौहित्राणां विद्यमानतायामुदरामयज्वररोगावस्थायां स्वस्वत्वात्प्रदीभूतस्थाव-रादिधनस्य भ्रातृपुत्रसम्प्रदानकं यद्दानं तेन कृतं तद्दानपत्रे दानविषयीभूत-स्थावरादिधनोपस्वत्वात् स्वदौहित्राणां प्रासाञ्छादनदानार्थमनुमतिर्दानग्रही-तारं स्वभ्रातृपुत्रं प्रति लिखिता स्यात्तदान(१)मेतद्विवादविषयनिविष्टप्रभुसम्पित-पत्रजाततात्पर्यार्थविवेचनया पश्मशास्त्रानुसारेण न सिद्धयति । कथञ्चिद्दानं जातं चेदपि दातृत्वेन मन्यमानस्य रोगार्क्षतावस्थायामेतद्दानस्य जातत्वेनै-तादृशदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदाय-तत्त्वदायभागदोकादायक्रमसंग्रहविवादाख्यवसेतुविवादमङ्गलार्णवादिग्रन्थानुसा-रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिवधं' गृहीयात्तदभावे चोढा—इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम् ॥

पुत्रवती सम्भावितपुत्रा चाधिकारिणी—इति दायभागग्रन्थ-लिखनम् ॥ ३ ॥

कुमार्थभावे चोढाया पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च तुल्योऽपिका-रस्तयोरेकतरामावे एकतराधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः— इत्यादि विवादार्यवसेतु
विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ५ ॥

तत्र भयादिरुगन्वितान्ताः पञ्चप्रकृतिस्थितिविरोधिनी द्रष्टव्याः—
इति विवादार्यवसेतु(पृ० १५३)विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा०४८६ख)
लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतवन्दीयमैनासीयनवम-
दिनसम्बन्धिगुक्वासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

४० रोवकारि मिछिल आदालते देआयानि सदर मोकाम
कलिकात्ता इङ्गरेजी सन १८३४साल तारिख ६ माह माइ मोता-
यक धाङ्गला सन १२४१साल तारिख २५ माह बैशाख रोज
मङ्गलवार आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रावट हालडन
राटरि साहेवेर बैठके—

रामगोपालदेश्रो	बनाम	मङ्गलचन्द्रतहविलदार
		ओ कृष्णगोविन्दतन्तर
		ओ जुगलकिशोरतन्तर
		ओ हरेकृष्णतन्तर
		ओ राजकिशोरतन्तर

छापल हाजीर हइल । छापलेग सञ्चाल एक टाका मुन्घेर
इष्टाम्प कागजेर पर दासत्वैर मकईमाय दासत्व ओ कार्येर
खेसारतत्त्वावत मवलगे १५ टाकार परिमाणे खास आपिल
माह हञ्चोनेर प्रार्थनाय एक केता जेला मयमनसिहेर काजी

सदर आमिनेर फयसलार नकल ई सन १८२८ सालेर ३०माह दिजम्बरेर लिखित ओ एक फेता जेला मजकुरेर जजसाहेबेर फयसलार नकल ई सन १८३३ सालेर १७ दिजम्बरेर लिखित सम्बलित, जाहा सन हालेर १३माह मार्च तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य उपस्थित ओ दृष्ट हइल । जे हेतुक ए मकदमार उभये हिन्दुजाति हयेन, अतएव ए मकदमार फयसलासकलेर यथार्थ ओ अयथार्थर प्रति व्यवस्था लखोन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे समुदय कागजाते ए आदालतेर पण्डितके मर्मर्पण करा जाय । उचित ये पण्डित कागजात अनुमोदन ओ दृष्ट पूर्वक ए विशयेर व्यवस्था ये ए मकदमार फयसलासकल वाङ्गला देश चलित शास्त्रमते यथार्थ वटे, कि ना—लिखिया महरमेर बन्देर पूर्व दाखिल करेख इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिभतिश्रीयुगवटहालडनराटरीसाहेवधर्माधिकरणलिखितैतदन्दीयभेइमाषीयपठ्ठादिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजात य यदेतदन्दीयभेइमाषीयसतमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जावस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतद्विवादविषयनिविष्टमयमनसिंहजिशाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तसदरध्यामीनपदामिषिककाजीशब्दप्रतिपाद्यकृताङ्करेमीशब्दप्रतिपाद्याष्टाविंशत्यधिकषष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमाषीयत्रिंशत्तमदिवसीयत्रयपत्रं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति बङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

यत्रापि चैक दासीगवादिकं बहुसाधारणं तत्रापि ततःकालविशेषे वहनदोहनफलेन स्वत्वं व्यज्यते । तदाह बृहस्पतिः—

“एकां स्त्रीं कारयेत् कर्म ययाशेन गृहे गृहे” इति युक्त्या विभजनीयम्, तदन्यथानर्थकं भवेत्—इति च दायभाग (पृ० ६) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥१॥

अङ्कुरेजीशन्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयमेदमासीयसप्त-
विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मयेयं व्यवस्था इत्येति—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४१)—मोकाम कलिकातार सदर देख्योनि आदालतेर इरैजि
सन १८३४ सालेर १८ जानेर मोतावक बाङ्गला सन १९००
सालेर ६ भाष रानिवार तारिखेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेब
ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठकेर रोवकारि—

७५ लं:—

सन १८३२ साल

राधानाथचौधुरि

आपीलाएट

श्रीमति कृष्णरमनिदास्या, कृष्णनाथ मोतओफार कन्या ओ
परानचन्द्रनेउगी ओ राधाचन्द्रनेउगी नावालगदिगेर माता—

रेप्पाडएट

आपीलाएटेर उकिल सदासुखपरिडत हाजिर आइल । एइ
मोकर्दमा फल्य ओ अद्य आमार बैठके रोवकार हइया जेलार
तावत कागज ओ क्रोट आपिलेर कागजसकल ओ ए आदालतेर
कागजसकल पाठ करा गेल । चुडन्त हुकुम प्रकाश हओनेर
पूर्वे निचेर लिखित प्ररनसकलेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर परिडतेर
स्थाने सओओ उचित घोष हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि
नकल मोकर्दमार कागज समेत ए आदालतेर परिडतके एइ
हुकुमे समर्पन करा जाय ये निचेर लिखित प्ररनसकलेर प्रत्युत्तर
एइ हुकुम प्राप्तेर दिवसावधि तिन सप्ताह मध्ये दाखिल करेन ।

प्रथम प्रश्न—कोन व्यक्ति हिन्दुर एक पुत्र तिन कन्या ओ एक सहोदर भ्राता ओ पैतृक वस्तु राखिया मृत्यु ह्य। ताहार पर ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र अविवाहित समय उहार तिन सहोदरा भग्नी, ताहार मध्ये एक जनार दुइ पुत्र, ओ स्वामि आछे, आर दुइ जना पुत्रसन्तान राखे ना, वर्त्तमान थाकितेओ पैतृक विषय आपन पितृसहोदरके हेवा करे। तवे ए प्रकार पैतृक विषयेर हेवादातार पितार दीहिन्नगण थाकितेओ वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथाथं वटे कि ना इति—

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि स्यात् वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे एइ हेवानामा सिद्ध बोध ह्य, तवे साक्षीदिनेर जवानवन्दि प्रभृति मोर्कईमार कागजसफलेर द्वाराय कोन एक द्वितीय हेतु ऐ हेवानामा अयथाथं विषये पाओ। जाय-वाहा विस्तारित लेखेन इति—

श्रीज्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडिनगछेयवर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तरसमपितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजानवरीमासीयद्वाधिशतितमदिनसम्बन्धितुघवाधरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशचोपो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि हिन्दुजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रमेकं कन्यात्रय सहोदरभ्रातरं चैकं पैतृकं धनं च संरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं तस्य पुत्रोऽप्यविवाहित एव पुत्रद्वयवत्या एक स्याः सधयाया भगिन्या अग्रयोः पुत्ररहितयोर्दशोर्भगिन्योश्च विद्यमानतायामपि स्वपैतृकधनस्य दानं स्वपितृव्यमुद्दिश्य कृतवान् स्यात्तदोपरिलिखितानां भगिन्यादोनां मध्ये ये केचित्तद्धनमात्रोपजीविनस्तेषां यावज्जीवं स्वपितृकुलोचितग्राह्यान्त्यादनोपयुक्तादावश्यकधर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च धनायद्वशिष्टं धनं तद्विषये तद्दानं सिद्धं भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बमङ्गलवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादार्यवसेतुविवादभङ्गा-
र्यवादिग्रन्थधृतबृहस्पतवचनम् ॥२॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरयापि वा ।

कूर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधन(स्य) वै ॥—इति दायभागा
दिग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

(ए)तद्विवादाविषयनिश्चितपत्रजातैरेतद्दानस्यायपार्थताबोधकः कश्चिद्दे-
हुरयापि न प्राप्तः । यद्यप्यधिप्रत्यर्थिनोः प्रश्नोत्तरभ्यां दानसमये दातु-
राज्यक्षमरोगप्रस्तताऽवगम्यते, परन्तु तत्रत्रजातैर्दानपितृपरमसमये दातु-
स्तद्रोगप्रस्तताया अन्वगमेन दातुः स्वपितृपरमानन्तरं तस्यक्षधने स्वत्वो-
त्पत्तिरिचितत्वेन कैश्चित् तस्यत्रजातैर्दानसमयात् पूर्वं प्रायश्चित्तकरण-
स्याप्यवगमेन तद्दानसमयात्पूर्वं कृतप्रायश्चित्तस्य स्वपितृपरमसमये अजा-
ततद्रोगस्य पितृत्वक्षधने जातस्वत्वस्य तद्रोगप्रस्ततायास्तत्कृतदानस्याशास्त्री-
यवसम्पादकत्वाभावान्—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभाग-
टीकादायक्रमसंग्रहविवादार्यवसेतुविवादभङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था-

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥३॥

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्वेन सत्त्वनाशः प्रायश्चि-
त्तत्रैमूस्ये बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६१)दायभागटीका(पृ० १६)विवाद-
भङ्गार्यवादि(२ विवा १४ ख १५ क)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

अङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकशतशतान्दोषजूनमान(१)मा-
सीयद्वादशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मथेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीविघ्ननाथमिश्रेण

प्रकार अकथता राखे । एइ जे शाखानुसारे जे हेतुते हिस्सादार आपन हिस्सा ना पाय । यद्यपि हिस्सादार से हेतु हइते सुध्य थाके, ओ द्वितीय अंशीयरा ताहार अंश जवरदस्ती मते ना देय । हाकिम विचार कालिन ताहार हिस्सा देओन, ओ यदि ऐ व्यक्ति आपन हिस्सा अन्य काहार नामे लिखिया दिया मृत्यु हइया थाके, हाकिम सेस विरोध निवारण कारण दस्तावेज मत आमले आनेन, ओ आपन हिस्सा ऐ व्यक्ति जाहाके दियाछे, ताहाके देन । कारण एइ—यद्यपि केह कोन दस्तावेज लिखे आर दस्तावेज मत आमले ना आनिया थाके, किम्वा अन्य केह दस्तावेजेर मजमुने विरोधीय हय, हाकिम ओहार दास्तावेज मत आमले आनान, ओ विरोधीय व्यक्ति हइते जरिमाना लपन । यदि स्यात् स्वयं हाकिम ओहार दस्तावेज मत अवलम्बन ना करेण, तवे हाकिम आपन खाजना हइते दस्तावेजेर लिखित मत आमले आनेन । ओ ए आदालते जे एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ए आदालतेर छओतेर जओवे दाखिल हइल ताहार खोलासा । एइ जे ए प्रकार अवष्टक विशयेर तमलिक ओ हेवा ए मलुकेर दस्तुर मत मितान्तरा ओ गयरह पुस्तक अनुसारे सिद्ध हइते पारे ना । ए प्रयुक्त जे पाटसालार पण्डितदिगेर दुइ व्यवस्था ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था अनक्य हओने सब्ब प्रकारे प्रत्यय हय ना । ए विशयेर सन्देह दुर करणार्थ कलिकातार सदर देओनि आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ज्ञात हओओ आविरयक आछे जे एइ मोकदमार आसल दाबिदार माधोजी, जेसकल तदविर हिस्सा तकसिमेर कारण ओ हक ओसुलेर कारण, जाहा चाइ ताहा आमले आनियाछे, अर्थात् आपन वर्त्तमाने ए नालिस आदालतेर स्थापन करियाछिल, ए कारण ए मोकदमा स्थापन हओनेते माधोजि आसल दाबिदार तरफ हइते जे आपन हिस्सा पाओनेर कारण ओ ताहार हिस्सार, जाहा हस्तान्तर हइया थाके, ताहा यथार्थ आछे—कि ना । ए कारण हुकुम हइल जे मोक-

हमा मलतवि रद्दे, आर आसल तिन किता व्यवस्था आर तम-
लिकनामार नकल राखिया आसल तमलिकनामा एइ रुवकारिर
नकलेर सम्बलित एइ आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर इराजि चिठी
द्वाराय कलिकावार सदर देश्रोनि आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर
नामे सेखानकार पण्डितेर निरुट व्यवस्था लओनेर कारण उक्त
आदालते पाठानो जाय । एइ प्रार्थना जे रेजेष्टर साहेब से आदा-
लतेर हाकिमदिगेर ज्ञातसारे तिन केता व्यवस्था आर तमलिक-
नामा आर एइ रुवकार सेखानकार पण्डितके समार्पन करिया
वानारस देशेर प्रचलित पुस्तकसकल अनुसारे इहार जवाब
सप्ताहेर मध्ये उक्त पण्डितेर निरुट इइते लइया, आर एइ मक-
ईमार तत तुल्य दृष्टान्त वानारस देशेर इहार पूर्व्ये यदि कोन
मकईमा सेखाने निष्पत्त्य इइयाथाके, तवे ऐ मकईमार फयसलार
नकल ए आदालते पाठान आर उपरेर लिखित विपयेर तर्त्त-वदन्त
हओनेर परे ओछितेर विपये किम्वा रघुनाथराओ मोतीफा
रेण्गस्टेर फेरादतेर विपये उचित हुकुम प्रकाश हइवेक इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्र तमलिकनामाख्य पत्र व्यवस्थापत्रनयं च यद्-
ङ्करेचीशन्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकान्दशशतान्दीयब्रानवरीमासीयचतुर्विं-
शतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवचोभ्य यादृशबोधो जात
स्तदनुसारेण्योचर लिख्यते—

मूलभूतैतद्विवादाभिधोता माधवबोनामक कश्चित्पुरुषविशेषो यद्य-
दनुसन्धान स्वकीयभागस्य विभज्य प्रदृशार्थं स्वकीयासाधारणस्वत्वसम्याद-
नार्यमुचित भवति तथा कृतवानर्थात् स्वस्य वर्त्तमानताया धर्माधिकरणे
अयमभियोगस्तेनैवोत्थापित एषान्, अतएवेतद्विवादस्योत्थापने सति अकू-
तैतद्विवादगिर्यपर्याधाधर्माधिकरणतोऽदृष्टैतद्विवादपरिच्छेदस्य मूलभू-
तैतद्विवादाभिधोक्तुर्माधवबोनाम सक्तायात् स्वकीयाशस्य धर्माधिकरणतो
विभक्तस्य मापणार्थं तदीयायो यो इत्यन्तर गत एषात्तद्विवादा-उत्तरकाश

तस्यात् विभक्तधनदानसिद्धिमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण निष्पत्तूहत्वाच्च ।
एवं स्वस्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनं च दानं च परो यदि स्वीकरोति
तदा सम्पद्यते, नान्यथा इत्यादि मित्वाक्षपत्रग्रन्थे (पृ० १४१) वीरमित्रोदय-
ग्रन्थे च भोगप्रकरणे स्पष्टतरतया लिखितमस्ति । तत्र दानस्योभयदलयेः
स्वस्वत्वनिवृत्तिरूपप्रथमदलस्यैतावता दातृव्यापारेण निष्पन्नत्वेऽपि संप्रदान
स्वत्वोत्पत्तिरूपस्य द्वितीयदलस्य धर्माधिकरणतो विभक्तो दातुरशे संप्रदान
भूतव्यक्तिविशेषभ्यायत्तत्वं विना अनिष्पाद्यत्वेन धर्माधिकरणतो विभक्तो
स्वशे संप्रदानायत्तो भवनात्मकस्य संप्रदानस्वत्वोत्पत्तिरूपद्वितीयदलहेतुभूतस्य
बहुकालसाध्यस्य राजधानीतया दुष्करत्वेन मन्यमानस्य च कस्यचिद्
व्यक्तिविशेषस्थाश्रीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणं विना अनिष्पाद्यत्वेन
मन्यमानस्य च दात्रा स्वकृत्तव्यस्य स्वदत्तस्वाशे संप्रदानायत्तो भवनात्मकस्य
संप्रदानस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य संप्रदानार्थं संप्रदानभूतव्यक्तिविशेषस्थाश्री
शब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणस्यापि शास्त्रीयत्वात्, पतोऽविभक्तोऽपि स्वशे
श्रीशब्दप्रतिपाद्यस्य नियोगकरणे शास्त्रविरोधो नास्ति । अथ च वीर-
मित्रोदयग्रन्थे यदि केनचित् स्वस्वत्वास्पदोभूतधनस्य दानं कृत्वा संप्रदान-
स्यायत्तत्वमसंपाद्यैव मृतं स्यात्तथापि राजा प्रतिग्रहीतुरायत्तत्वं दानसम्पादक
सम्पाद्यमित्यस्यापि विशेषतो लिखितत्वाच्च । एवं लक्ष्मीकान्तस्य कृनिम
पुत्रत्वपक्षे दानादिकं विनापि विवादास्पदीभूतधने तस्य स्वामित्वमव्याहृतमेव
पुत्रत्वात्— इति वाराणसीप्रभृतिदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यव-
हारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभव्यवहारचिन्तामण्यविवादचिन्ताम-
ण्यविवादरत्नाकराववादचन्द्रकल्पतरुपारिजातादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बमङ्गलवसनाद्देयं यदतिरिच्यते— इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थभूत-
वृत्तस्वभावचनम् ॥१॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्यादेयं वैवाहिकं वसु— इति तत्तद्ग्रन्थभूतदेवल
वचनम् ॥२॥

यत्र नो । चलभूर्णता । नारदः । 'विद्यमानेऽपि लिखिते जीवत्त्वपि हि साक्षिणु । विशेषतः स्थावराणां यत्र मुक्तं न तत्स्थिरम्' ॥ दानत्रिकशादेरु-
पभोगनिरपेक्षस्यैव स्तत्रोत्पादकत्वात् । किमिति । भोगलयोप्यवश्य तत्रा-
पेक्ष्यत इत्याशङ्क्यामुपपत्तिरुक्ता विज्ञानेश्वराचार्यैः । दानादेः परस्वत्वा-
पादनत्वात् परकर्तृकस्वीकारापेक्षाऽवश्यं भावनीया । स्वीकारश्च
त्रिविधो मानसो वाचिकः कायिकः । ममेदमित्यभ्यवसायो मानसः ।
ममेदमित्याद्यभिलापो वाचिकः । उपादानाभिभर्शनादिरूपेणानेकप्रकारकः
कायिकः । तत्र मानसं विना स्वत्वासम्भवात्स तावदावश्यक एव ।
दानविशेषपुरस्कारेण शब्दप्रयोगविशेषनियमपाददर्शनादिचेष्टाविशेषनिय-
माच्च वाचिककायिकावप्यावश्यकवित्यवसीयते । तत्र हिरण्यरत्नादी
दातृकर्तृकत्रलत्यागादनन्तरमेव प्रतिग्रहीतुरुपादानादिसम्भवान् त्रिविधो-
ऽपि व्यापारः सम्पद्यते । क्षेत्रादौ तु फलोपभोग विना कायिकस्वीकारा-
सम्भवादल्पेनाप्युपभोगेनावश्यं भवितव्यमन्यथा दानक्रयादेः सम्पूर्णता न
भवत्युत्तरकालिकव्यापाराभावात् । तेन तत्सहितादागमान्तराद्विकल
आगमो दुर्बलो भवति । एतच्च द्वयोरगमयोः पूर्वोपरभावानवगमे ।
तदवगमे तु स्वल्पभोगविकलोऽपि प्राक्तन एवागमो बलवान्, पूर्वेषु
दानादिना स्वत्वापगमे दानाद्यनन्तरासम्भवात् । न चैवं तस्य क्षेत्रादेर्मध्य-
गतत्वापत्तिः । पूर्वस्वाम्यापगमादुत्तरस्वाम्यानुत्पत्तेश्चेति वाच्यम्, प्रति-
श्रुतम्यायेनावेक्षणीयस्वत्वस्यसत्त्वात् पूर्वस्वाम्यसत्त्वेऽपि राज्ञैव प्रतिग्रही-
त्वादेः कायिकस्वीकारस्थानिःप्रतिपक्षस्य सन्पादनीयत्वात्—इति वीर-
मित्रोदय (१० २०७।२०८) प्र-थलिखनम् ॥॥

यात्रवल्क्यः । 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो' ।
आगमे विद्यमानेऽपि भोगविरहात् तावत्काल स्वत्वार्थवृत्तिधीव
भवतीत्यर्थः - इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥६॥

१. ०पारान०—व्यप० ।

२. उत्तरागमोदिनिर्माणं—व्यप० ।

५. पूर्वस्वाम्यापगमाद्—वीमि० ।

२. भावनीय —व्यप० ।

५. सत्त्वावरयक एव—विमि० ।

याज्ञवल्क्यः । 'आगमेऽपि वलं नैव मुक्तिः स्तोत्रापि यत्र नो' ।
आगमे विद्यमानेऽपि मुक्तिविरहात् तावत्कालं स्वत्वं न सिद्ध्यतीत्यर्थः ।
अत्र यत्रान्यमुद्दिश्य केनचित् किञ्चिदत्तं तत्रोद्देश्यस्य स्वीकारव्यञ्जकभोगा-
भावात् स्वत्वं न निश्चीयत इति न्याय एव मूलम्—इति च व्यवहार-
चिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१०॥

अतस्तत्र जलप्रक्षेपरूपः पात्रोद्देश्यक उत्सर्ग एव ददाति नाविव-
क्षितः । दानत्वनिष्पत्तिस्तु तस्य सम्प्रदानकर्तृकस्वीकारे सत्येवेति
परमार्थः—इति वीरमित्रोदय (पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥११॥

न्यायाधिगमे तर्कोऽभ्युपायस्तेनाभ्यूह्य यथास्थानं गमयेत् । तस्मा-
द्राजाचार्यावनिन्दौ—इति मिताचरा (पृ० १३०।१३१)ग्रन्थभृतगौतम-
वचनम् ॥१२॥

यथा नयत्यसूक्तातेर्षुगस्य मृगयुः पदम् ।

नयेत्तथानुमानेन धर्मस्थ नृपतिः पदम् ॥ इति मनु (६।४४)

वचनम् ॥१३॥

यः स्वामिना नियुक्तस्तु दानायव्ययपालने ।

कुसीदकृषिवाणिज्ये निस्तृष्टार्थस्तु सः स्मृतः ॥

प्रमाणं तत्कृतं सर्वं लाभालाभव्ययोदयम् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा स्वामी तत्र विसंवदेत् ॥ इति वीरमित्रोदय-

व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्र (पृ० १५०)विवादरत्नाकरकल्पतरुप्रभृति-
ग्रन्थभृतबृहस्पति (वृस्मृ० ६।२६।पृ० ६८)वचनम् ॥१४॥

निस्तृष्टार्थस्तु यो यस्मिस्तस्मिन्नर्थे प्रभुस्तु सः ।

तद्भर्ता तत्कृतं कार्यं नायथा कर्तुमर्हति ॥ इति वीरमित्रोदय-

व्यवहारचिन्तामणिकृतातरुप्रभृतिग्रन्थभृताकाश्यायन (कास्मृ० ४७०।पृ० ५६)
वचनम् ॥१५॥

पितृधनहारित्वं तु पूर्वस्य पूर्वस्याभावे सर्वेषामविशिष्टम् ।

न आतरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः । इत्योरस्वव्यतिरिक्तानां'

पुत्रप्रतिनिधीनां सर्वेषां रिक्थहारित्वाप्रतिपादनपरत्वात्-औरतस्य तु, एक एवीरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः-इत्यनेन रिक्थभाक्त्वं-स्योक्तत्वात्—इति मिताक्षरा, पृ० २१५)दिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥१६॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलादमासीय-द्वादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेय व्यवस्था र्चति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४३)—रोवकारि मिडिल आदालत देओयाणि सदर मोकाम कलिकाता तारिख ३ माह जुन सन १२३४ इङ्गरेजी मतावक २२ माह ज्यैष्ठ सन १२४१ वाङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत रावरट हालडन राटरि साहेबेर वैठके—

रामगोपालदेशो वनाम गोकुलचन्द्र तहविलदार ओ गैरह । छापल हाजिर हइल । गत मासेर ६ तारिखेर हुकुम मते ऐ आदाल-तेर पण्डित ये व्यवस्था दाखिल करिलेन ताहा तारिख मजकुरेर दृष्टी हओओ छापलेर खास आपीलेर सओयाल एवं तत्सम्पर्काय अन्य कागजातेर सहित पढागिया बोध हइल ये पण्डितेर लिखित व्यवस्था तारीख मजकुरेर रोवकारिर लिखत सओयाल मतावक नहे । कारण एइ ये सओलेर मम्म पइ-महइयान अर्थात्तरफदानी ये गोपालभाण्डारि ओ गयरह उहार-दिगेर पूर्वपुरुषेर दास-दासी छिल, आथ प(र्ष्य,न्त हइते सेवा ओ कार्प्य नियुक्त ओ प्रवत्त छिल । ए दधने उहारा सेवा ओ कार्प्य हइते गरहाजीर हइयाछे—नालिस करे । सदर आमोन ओ जज साहेब आपनारदिगेर फयसलार विस्तारित बिबरणसकलेर

द्वाराय छाएल ओ गयरहेर पूर्व पुरुस मसर्मा हाडो फारिक्-
छानिर खरिदा गोलाम, साव्यस्थानुसारे उहारदिगेर दावि, एइ
हुकुमे ये छाएल ओ गयरह दास्यत्वेर सेवा ओ कार्य्य करे
डिगरि करिलेन । ये हेतुक प्रकार्य बोध हइतेछे ये किवल हाडो
मजकुर दासत्वताय खरिद हइयाछिल ना, ताहार पुत्र-पौत्रादी
इहाते छाएल ओ गयरहेर दासत्व सिद्ध हओन विषये ये से
'फयसलासकल हइयाछे, एमत फयसलासकल शास्त्र-सम्मत
यथार्थ वटे कि ना । अतएव हुकुम हइल ये पुतराय कागज-
सकल पण्डितेर हाओला करा जाय । उचित से पण्डित उपरेर
लिखित विचरणे ज्ञात हओनान्तर ताहार जओव दुइ रोजेर
मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

श्रीज्जेयनितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावटंडालडनराटरीसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयजुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपप-
त्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजुनमासीय-
द्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥

एतत्प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति हाडोनाम्नः क्रयपत्रे केवलहाडोसंशुको
दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो यदि लिखितः स्यात्तदा
दासत्वेन हाडोमात्रस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानन्त-
र्गतत्वेनाशास्त्रीयबलात्कारकृतदासभावान्तर्गतत्वेन च तेषां दास्यविषये
जातं यज्यपत्रजातं तच्छास्त्रसिद्धं न भविष्यति, अशास्त्रीयबलात्कारकृतदास-
मोचनस्य शास्त्रानुसारेण कर्तुंमुचितत्वात् । यदि च तस्मिन् क्रयपत्रे केवल-
हाडोसंशुको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो न लिखितः
स्यात्तदा दासत्वेन हाडोसंशुकस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनामपि शास्त्रोक्तपञ्च-
दशदासान्तर्गतत्वेन तेषां दास्यविषये जातं यज्यपत्रजातं तच्छास्त्रसम्मतं
भविष्यत्येव, क्रीतद्रव्यमात्रोत्पन्नद्रव्यजातमात्र एव क्रयकर्तुः स्वत्वस्य शास्त्र-

व्यवहारोभयसिद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वदायभागटीकादान
क्रमसमग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।

अनाकालभृतस्तद्गदाहितः स्वामिना च यः ॥

मोक्षितो महतरचर्णाद् युद्धे प्राप्तः पण्ये जितः ।

तवाहमित्युपागतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः ।

विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥—इति दायनम

समग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

चौरापहृतविक्रीता ये च दासीकृता बलात् ।

राज्ञा मोचयितव्यास्ते दासत्वं तेषु नेप्यते ॥—इति विवादार्णवसेतु(पृ०
१६३)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारद नास० पृ०६८ वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेओशब्दप्रतिपाद्यचतुर्दशदशिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीर-
पञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिशुकवासरे मयेव व्यवस्था दसेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—

(४४)—रोवकारि मिखिल आदालत देओनि सदर मोकाम
कलिकाता अदालत मजफुरार फायस मोकाम हाकिम धीयुत
तामस किमल रावटसन साहेबेर बैठके । ओके तारिख ४ माहे
जुन सन १९३४ साल ई मोतवेक २३ ज्यैष्ठ सन १२४१ बाङ्गला
दिवस बुधवार—

मुहम्मताव विश्वेश्वरिदेव्या मफलछा

आपिलाएट

ताराचान्दचट्टोपाध्याय ओ गयरह

रेष्पाडएटान

आपीलाएटेर उकिल मुनसी हयइर आली ओ रेष्पाडएटानेर
मध्ये ताराचान्दचट्टोपाध्याय हाजिर आइल । ए मोकर्द्दमा

सिरस्तादारेर कैफियत सम्बलित गत मेइ मासेर ३० तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया आपीलाएटेर उकिलेर स्थाने आपीलेर सश्रोलेर नकल तलब हइया स्थकित जिल, अद्य आपीलेर सश्रोलेर नकल दाखिल कराते पुनराय रोवकार हइल, ओ फयसला ओ आपीलेर छश्रोला ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ सदर आपीलेर नञ्जुरिर सरब सम्बलित रोवकारि हटे आइल । जे हेतुक चुडन्त हुकुम सादर हओर पूर्व आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था तलब करा मोकईमार विस्तारित सहिव उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित समुदाय छश्रोलेर जओव वाङ्गला मुलुकेर चलिखत शाखानुसारे ओहार वचन प्रमाण सहित आगत बुधवार दिवसे दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला कराजाय ।

प्रथम सश्रोला —

सरूपचन्द्र त्रित्तवेगागी वेकि एक पुत्र दिपचन्द्र ओ पद्ममणी ओ दुर्गामणी दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय । ओहार समुदाय तेर्य वस्तु ओहार पुत्र दिपचन्द्रके पौडिल । ओ दिपचन्द्र आपन जीवदशा पर्यन्त अन्येर अंश वेतेरेक दखिलकार थाकिया सन १२०४ साले तस्य स्त्री वेदवति ओ वस्य कन्या दासमनीके राखिया मृत्यु हय । वेदवति ताहार तेर्य विषये दखिलकार हइया मुछ्मर्माव दासमनिर विवाह देय, जे दासमनीर पुत्र सर्वचन्द्र जन्मे । १२०६ साले दासमनी आपन मातामही वेदवति ओ सर्वचन्द्र पुत्र, ओ सन १२२४ साले सर्वचन्द्र आपन मातामही वेदवति ओ आपन स्त्री विशवेश्वरिर सनमुखे मृत्यु हय । तपरे सन १२२८ साले मुछ्मर्माव वेदवति मृत्यु हय । अतएव दिपचन्द्रेर तेर्य वस्तु दिपचन्द्रेर दौहित्र

सर्वेचन्द्रेर स्त्रीके असिंवेक, कि दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तान-
दिगेके इति—

द्वितीय सञ्चाल—

यद्यपि दासमनि दीपचन्द्रेर वर्त्तमाने किम्वा ताहार मृत्युर
पर दीपचन्द्रेर स्त्री वेदवति वर्त्तमाने जमिदारिर मजकुरार उपर
दखल पाइया थाके, ऐ प्रयुक्त ओ दरल ना पाओ प्रयुक्त ये
प्रकार प्रथम सञ्चाल लेखा गेल ओहार तेर्य वस्तुवे दीपचन्द्रेर
दौहित्रेर स्त्री विरवेश्वरि सत्वाधिकारि ह्योने ओ ना ह्योने
किम्वा दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तानेरा सत्वाधिकारि ह्योने ओ
ना ह्योने शास्त्र अनुसारे व्यक्तिक्रम आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्मापिनरणापिवतिस्थानाभिषिक्त श्रीसुततामसकि मिलरावटसन्-
सा देवधर्माधिकरणलिखितैवन्दीयजुनमासोयञ्चतुर्धद्विषयीवधिचारपनान्तर्ग-
तप्रश्नपत्रप्रतिरूपपत्र यदेतदन्दीयजुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृद्धसतिवासरे
मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्याुत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दीपचन्द्ररूपकभने यदि तस्य पुत्रमारभ्य
तलितु स्वरूपचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्यन्ताना नभे कश्चिदास्ति तदा दीपचन्द्र-
स्य पितु स्वरूपचन्द्रस्य दौहित्राणामर्थात् दीपचन्द्रभगिनीपुत्राणामेवा-
पिनार इति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-
दौहित्रस्यैव—इति दायभागप्रमाणसूत्रम् ॥१॥०॥०॥०॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दासमनी दापचन्द्रे स्वपतिरि विद्यमाने मृते वा दीपचन्द्रपत्न्या
वेदवत्या विद्यमाना वा वधकरस्थावरात्मकतद्धने आयत्तस्य सम्पादितवती

स्यात्तत्र तस्या आयत्तत्वं यदि तत्पितृकृतदानानुसारेणाभूत्तदा तद्धनस्य दासमन्याः पितृदत्तसीदायिकस्त्रीधनत्वेन दासमन्याः मरणोत्तरं तत्पितृकृत-
दत्तसीदायिकस्त्रीधने तद्दुहितृभावे तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्रस्य अधिकारे जाते
सति तन्मरणोत्तरं तत्पितृकृतत्वे सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रपौत्ररहितस्य पत्न्या
विश्वेश्वरीदेव्या एयाधिकारः । सर्वचन्द्रपत्न्यां विश्वेश्वरीदेव्यां विद्यमा-
नायां सर्वचन्द्रप्रमातामहस्वरूपचन्द्रदीहिजायां नाधिकारः । एवञ्च सति
विश्वेश्वरीदेव्या दीपचन्द्रदीहिपत्न्यास्तदनाधिकारित्वे दीपचन्द्रभागिनी-
पुत्राणां चानधिकारित्वे दीपचन्द्रस्य कर्तव्येन श्रयमेव व्यतिक्रमो जातः । दीप-
चन्द्रस्य धनं तत्कृतस्वकुल्योद्देश्यकदानानुसारेण तत्कन्यात्वत्वात्पञ्च-
त्तमरणोत्तरं तस्यास्त्यक्त धनमिति । तत्र च धने तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्र-
स्याधिकारित्वेन तन्मरणोत्तरं तदेव धनं सर्वचन्द्रस्य कर्तव्येन च । यदि च
सराक्षरस्थावरात्कृतधने दासमन्या आयत्तत्वं मुपरिलिखिततत्पितृकृत-
दानानुसारेण नाभूद्यथा प्रथमप्रश्नलिखितरीत्या आयत्तत्वं नाभूत्तदा
प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण दीपचन्द्रभागिनीपुत्राणामधिकारित्वे दीप-
चन्द्रदीहिपत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या अनधिकारित्वे च दीपचन्द्रस्य कर्तव्येन
कश्चिद् व्यतिक्रमो नास्ति-इति वदन्नेव शक्यं तन्नुदायभागदायतत्त्वव्यवहार-
तत्त्वव्यवहारमातृकादायभागटीकादायक्रमसंग्रहविद्यादार्णवधेतुविनादमङ्गल्य-
वादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम् —

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृष्टहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सीदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागः-

दिग्रन्थभूत कात्यायनवचनम् ॥२॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा श्रिये यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने
प्रथमं कुमार्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भाषितं पुत्रयोस्तदनन्तरं वन्वा-
पिधययोश्चाधिकारः । सर्वदुहितृभावे पुत्रादेर्योनुरूपधनवत् क्रमेण-
धिकारः—इति दायकमग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिमन्थ-
धृतपाशवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्गरेवीशन्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकशतशताब्दीयग्रगस्त्यमासीदे-
कादशदिनसम्बन्धिषोडशवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४५)—इ सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(१)मवार एइ
आदालत अर्थात् जेला तिरहतेर देखोनि आदालतेर रोयकारि
द्वाराय मोकाम कलिकातार सदर देखोनि आदालते परिडतेर
पर सञ्चाल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय
मुर्दइयान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुखम्मात छोलङ्गनचौधुरायन
ओ परमेस्वरिदत्त मुदाहालेहेम

मोर्दइमा कालेट्टरि सेरेस्ताय नाम लिरा ओ जेला तिहोतेर
आदालतेर मोतालके देहा निजामत हादि परगनार मोजे यल्लुल-
पुर ओ गयरहते दरल पाञ्चोर प्रार्थनाय मवलगे ८७३५ तृगुन
मालगुजारि देहा निजामतेर तायदादे ॥

प्रथम प्रश्नः—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्र ह्मण । एहार चारि पुत्र । प्रथम
धिरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तरायनामे छिल । ताहार वनिता
मुखम्मात छोलङ्गन, ओ धिरसिंहेर कन्या मुखम्मात चान्द्रावति
चण्डीदत्तेर सहोदरा भनि छिल, ओ चन्द्रावति मज्जुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह, तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्णदत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्मुदत्तराय, तस्य पुत्र भोलानाथराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थं पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु ह्य । अतएव त्रिंशशा कराराय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मण जाति आपन भग्निर सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना ॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध ह्य, तवे हेवानामार लिखित धन ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शास्त्र मत सिद्ध हइवेक कि, ना, ओ एइ सओलेर सम्बलित हेवानामा ओ एकरारनामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शास्त्रानुसारे प्रति उत्तर लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं तत्संबलितं दानपत्रं संवित्पत्रं वंशावलीपत्रं च यदङ्कुरे जीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिमद्गजवासरे मया प्राप्तं तदवलीक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहसौत्रादौ विद्यमाने सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातीयचण्डीदत्तमैथिलेन सौदरभगिनोपुत्रः परमेश्वरोदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिजादेशोवशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति । यद्यपि दत्तकमोमांसाग्रन्थे ब्राह्मणाना मागिनेयस्य पुत्रता-

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा— इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्करेबीशन्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशदधिकषाडशशतान्दीयद्वयगत्यमासीत्-
कादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्वैधनाथमिश्रेण

(४५)—इ सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(०)मवार एइ
आदालत अर्थात् जैला तिरहतेर देशोनि आदालतेर रोवकारि
द्वाराय मोकाम कलिकातार सदर देशोनि आदालते परिडतेर
पर सञ्चाल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय
मुईश्यान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुछम्मात छोलछनचौधुरायन
ओ परनेस्वरिदत्त मुदाहालेहेम

मोर्द्धमा कालेदृरि सेरेस्ताय नाम लिखा ओ जैला तिहोतेर
आदालतेर मोतालके देहा निजामत हादि परगनार मीजे वल्लुल-
पुर ओ गयरहते दरल पाओर प्रार्थनाय मवलगे ८७१५ तृगुन
मालगुजारि देहा निजामतेर वायदादे ॥

प्रथम प्रश्नः—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्राह्मण । एहार चारि पुत्र । प्रथम
विरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तरायनामे छिल । ताहार वनीता
नछम्मात छोलछन, ओ विरसिंहेर कन्या मुछम्मात चान्द्रावति
चण्डीदत्तेर सहोदरा भग्नि छिल, ओ चन्द्रावति मजकुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह,
तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्ण-
दत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र
हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुद्दइ
वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्मुदत्तराय, तस्य पुत्र
भोलानाथराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थे
पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय । अतएव त्रिज्ञाशा
कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मण जाति आपन भग्निर-
सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शाखानुसारे सिद्ध
वटे कि ना ॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तवे हेवानामार लिखित धन
ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शाख मत सिद्ध हइवेक
कि, ना, ओ एइ सओलेर सम्बलीत हेवानामा ओ एकरार-
नामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शाखानुसारे प्रति
उत्तर लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं तत्सवलितं दानपत्रं संवितानं वंशावलीपत्रं च
यद्गङ्गेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयापरेलमातीयद्वाविंश-
तितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते एति अर्थात् पितामहश्रीचादौ विद्यमाने एति
पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातीयचण्डोदत्तमैथिलेन सांदरभगिनीपुत्रः पर-
मेश्वरोदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशीयशाखानु-
सारेण सिद्धयति । यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणानां भागिनेयस्य पुत्रता-

निषेधकं वचनं लिखितमस्ति, परन्तु तद्वचनं यास्तवं दत्तकपुत्रविषयकमेव,
 न तु कृत्रिमपुत्रविषयम्, अथ च सर्वस्मृतिप्रधानमनुस्मृती कृत्रिमपुत्रता-
 विषये मनुवचनोक्तसजातीयत्वादेरेवाप्रयोजकता दृष्ट्वा सर्व्वरिणं प्राचीना-
 र्व्वाचनैर्मैथिलनिबन्धकारैः स्वस्वग्रन्थेषु स्वसजातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्र-
 कर्त्तव्य इत्येव लिखितः, भागिनेयः कृत्रिमपुत्रो न कर्त्तव्य इति निषेधकः
 केनारि न लिखितः, वर मैथिलैर्महामहोपाध्यायधर्मशास्त्रव्यवस्थापककेशव
 मिश्रैर्यत्र पितेन भ्रात्रादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्देशो न
 पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन — इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थे लिखितमस्ति । एवञ्च सति पितृ-
 पेतृया भ्रात्रपेतृया च भागिनेयस्य दत्तकमोमासाग्रन्थलिखितपुत्रतानिषेध-
 प्रयोजकविरुद्धसम्बन्धस्याधिष्य नास्ति । एव दत्तकपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीना
 पिरुद्धात्त्व निषिद्धमिति सर्वेषां निबन्धकाराणां सम्मतम् । मैथिलग्रन्थ-
 काराणां मते कृत्रिमपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पिरुद्धात्कृतमप्यस्त्येव—इति
 शुद्धिविवेके रुद्रधरोपाध्यायैर्मैथिलैर्लिखितमस्ति । अतो मैथिलग्रन्थकार
 णां मते दत्तकपुत्रकृत्रिमपुत्रयोर्विषयमात्र एव महान् भेदोऽस्ति । अतएव मि-
 थिलादेशे सजातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्रः निरस्ते, तत्रापि पितामह
 पौत्राद्यपेक्षया स्नेहातिशयात् पुत्रगुणाधिक्यदर्शनाच्च प्रायशो मैथिलैः
 प्राग्बलिण्यैर्विशेषतो भागिनेयः कृत्रिमपुत्रः क्रियते इति सर्व्वदेव तद्देश-
 व्यचहारः । एवञ्च सति मनुस्मृतिव्यवस्थाया मिथिलादेशीयग्रन्थानुसारेण
 तद्देशव्यवहृताया ब्राह्मणानां भागिनेयस्य कृत्रिमपुत्रताया मैथिलनिबन्ध
 कारप्रणीतदत्तकमोमासाग्रन्थलिखितवचनबाध्यता नास्ति, यतस्तद्देशाचार-
 चात्याचारकुलाचारादिसिद्धस्य कश्चिदपि कर्मणो बाधस्तदन्यदेशीय-
 ग्रन्थानुसारेण तदितरजातिप्रचलितग्रन्थानुसारेण तदन्यकुलप्रचलितग्रन्था-
 नुसारेण वा भवितुं न शक्नोति, देशाचारजात्याचारकुलाचारादिरभि-
 मन्वादिधर्मशास्त्रे प्रबलप्रमणत्वेनोपन्यासात् । यत्र विषयविशेषे स्वदेशीय-
 परदेशीयग्रन्थोर्विशेषस्तत्र विषये स्वदेशीयग्रन्थैव प्राबल्येण प्रच-
 रस्य भवितुं युक्तत्वान्चेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

सदृशं यं प्रकुर्वीत गुणदोषविचक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अपुत्रेण सुतः काय्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिरुडोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्तनस्य च ॥ इति कल्यतखविवाहरत्ना-
करप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सद्गिराचरितं यत् स्याद्दाम्मिकैश्च द्विजातिभिः ।

तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् ॥ इति मनु(८।४६)-
वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनु-
वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवृत्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजाः प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पति-
वचनम् ॥५॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥६॥

मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ।

वेदार्थोपनिबन्धत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम् ॥—इति बृहस्पति-
(वृ० २३३)वचनम् ॥७॥

यत्र पितैव आद्यादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्देशो
न तु पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन । इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थलिखनम् ॥८॥

स च पुत्रत्वकरणस्य पिरुडप्रदः निजपित्रादीनां पिरुडप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव— इति शुद्धिविवेकग्रन्थलिखनम् ॥९॥

केवल शास्त्रमाश्रित्य न कृतव्यो विनिर्यायः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्माहानिः प्रजायते ॥—इति विवादचिन्ता-
मण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१०॥,

स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः ।—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥११॥,

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितरीत्या मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण कृत्रिमपुत्र-
तायाः सिद्धौ सत्या द्वितीयप्रश्नलिखितरीत्या कृत्रिमपुत्रतायामसिद्धत्वेनाव-
गम्यमानायामप्युभययैव परमेश्वरीदत्तोद्देश्यकदानपत्र सवित्पत्रं च चण्डी-
दत्तस्य महावशिष्टे तत्पत्न्याश्च यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाञ्छ्यादनोप-
युक्तादावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे चण्डीदत्त-
नाम्नः कन्यकार्पेत् कुमार्प्यस्तासां विवाहोपयुक्तात्तासां च स्वपितृकुलोचि-
तप्रासाञ्छ्यादनोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे श्रन्देया तद्धनमात्रोपजीविनामपि
यावज्जीवं चण्डीदत्तनाम्नो जीवनावस्थासदृशप्रासाञ्छ्यादनोपयुक्तादावश्यक-
धर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे च सवित्पत्रलिखितत्रिमुलाख्यघट्ट-
सम्बन्धिशिवालयवन्दनयोर्द्वीकरस्यपरिष्कारोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे महि-
निनप्रामान्यगततडागतगोत्वगोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे च घने सिद्धयति ।
दानपत्रसवित्पत्राम्बा विवादास्पदीभूतघने चण्डीदत्तनाम्नः पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहितस्य केनाचित् सद् साधारण्यस्यानवगमेन तयोः पत्रयोर्विवेचनया
शास्त्रानुसारेण देवद्वयस्य तस्मै कृत्रिमपुत्राय स्वशिष्यत्वेन भागिनेयत्वेन च
प्रीतिपूर्वकदानस्यावगमेन नैतादृशदानसिद्धौ बाधकसामान्याभावात्—इति
मिथिलादेश्यनलितमनुस्मृतिबाणवल्क्यस्मृतिबृहस्पतिस्मृतिविवादचिन्तामणि-
विवादशुभाकरविवादबन्दकहस्तव्यारिजातद्वैतनिर्यायद्वैतपरिशिष्टशुद्धिविवेक-
शुद्धिचिन्तामणिस्मृतेसारप्रभृतिसंयानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सर्वस्वं गृहवर्जन्तु कुटुम्बमस्याधिकम् ।

यद्द्रव्यं तत् स्वकं देयमदेयं स्यादतोऽन्यथा—इति तत्तद्ग्रन्थधृतका-
त्यायन(६४० १ पृ० ७६)वचनम् ॥३॥

मृतिस्तुष्टया परममूल्यं स्त्रीशुल्कमुपकारिणे ।

श्रदानुग्रहसंप्रीत्या दत्तमष्टविधं स्मृतम् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृह-
स्पति(पृ० १३८)वचनम् ॥४॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु । इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवल-
वचनम् ॥५॥

अनूढानान्तु कन्यानां वित्तानुरूपेण संस्कारं कुर्युः—इति तत्तद्ग्रन्थ-
(विधि० पृ० २१०)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥६॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दोयसितम्बरमासीयप्रथमदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपत्रदानपत्रसंवित्पत्रवंशावलीपत्रैः
सहितैर्यं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्न :—

(४६)—यद्यपि कोन व्यक्तिर दुइ सन्तान धाके, आर ज्येष्ठ
सन्तान आपन पिता वर्त्तमाने ऐ पिता ओ भ्रातार एकात्रवर्तिते-
कोन स्थावर वस्तु आपन परिश्रम ओ क्षमतार द्वाराय उपाज्जन
करे, आर पितार जीवइशा पच्यन्त ऐ वस्तुर उभस्वर्त्त साधारणेर
खरचे आसियाथाके, एमत स्थले पितार लोकन्तपरे ऐ वस्तु
उभये दुइ भ्राताय अंश इइते पारे कि सोपार्जित सरवे ऐ ज्येष्ठ
भ्राता समुदय ऐ वस्तु पाइवेक, आर यद्यपि कनिष्ठ भ्राता ऐ वस्तुर
अंशेर हकदार हय, तचे कि आन्दाज पाइवेक—एइ प्रश्नेर
अत्युत्तर यथाशास्त्रे लिखिवेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र यदीश्वरीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीप
जानवरीमासामसप्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य
यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥

कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रेण जीवति पितरि
तेन सह भ्रात्रा च सहाविभक्ततादशायामव किञ्चित् स्थावर धन स्वशक्त्या
स्वायासेन चोपाजितं स्यात् अथ च पितुर्जीवनदश्यापर्यन्तं तदुपस्वत्व
साधारण्येन व्यायतं स्थातत्र साधारण्यद्रव्यापघातेन तद्वनमजितं चेत्तदा
पितुर्निर्धनानन्तरं तद्द्रव्यं त्रिधा विभज्य भागद्वयमुपाज्जकस्य ज्येष्ठस्यैका
भागं कनिष्ठस्य, ज्येष्ठस्य तद्वनं त्रिधाधनं चेत्, अथ च कनिष्ठोर्ध्वं
तत्समविचरन्तदावकविद्या वा भवत्, तदापि ज्येष्ठोपाजितविद्याधने तादृशस्य
कनिष्ठस्यापारलिखितप्रकारेण तृतायाथाधिकारः, यदि च तद्वनं साधारण्य
द्रव्यानुपघातेन ज्येष्ठेन अर्जितमभूत्तदा तत्र धने स्वोपाजितत्वमात्रेशो
पाज्जकस्य ज्येष्ठमात्रस्यैवाधिकारो न त्वेकान्नवचित्तया कनिष्ठभ्रातुः स्वामित्वे
नाधिकारः । किन्तु भ्रातृत्वेन पौरुषबुद्ध्या वा यदि ज्येष्ठो भ्राता कनिष्ठ
भ्रात्रे किञ्चिद्ददाति तदा तदनुसारेणोपाज्जकज्येष्ठदत्तपरिमितधने कनिष्ठस्या
धिकारः—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायकम
सग्रहविद्यादार्यावसेनुविवादमङ्गार्यावादिभ्रंशानुसारिणी व्यवस्था ॥

इश्वरीशब्दप्रतिपालनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीपसितम्बरमासीयगजेन्दु
मितादनसम्बन्धिगुरुवासरे मयेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रापैद्यनाथमिश्रेण

(४७)--प्रश्न —

शुद्धादिर दत्तकपुत्रग्रहणकालीनं तन्निमित्तं शास्त्रसम्मतं किं
किं धर्मं कर्तव्यं रचितं, अथ यदि स्यात् ग्रहणकालीनं तादात्म्यं

कर्त्तव्य कर्म सकल हृदयाधाके, एवं तस्य पर दत्तक पुत्र ग्रहीतार मृत्यु हइले कोनो ज्ञाति द्वारा ऐ दत्तक पुत्रे चूडाकरण इत्यादि हइले ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ऐ ग्रहीतार स्वत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेत्रीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्दशदशिकाष्टादश-
शताब्दीयापरेलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

शुद्धादीनां दत्तकपुत्रग्रहणसमये एतानि कर्माणि शास्त्रतः कर्त्तुमुचि-
तानि भवन्ति । प्रथमतः पुत्रदानं तत्पितृकृतम्, तत्पित्रनुत्तया तन्मातृकृतं वा,
तदनन्तरं व्याहृतिहोमादिकं विधाय ग्रहणं ग्रहीतृकृतम्, तदनुत्तया तत्प-
त्नोक्तृकं वेति । यद्यपि दत्तकपुत्रग्रहणसमये पुत्रग्रहणाङ्गभूतानि सर्वाण्येव
कर्माणि जातानि स्युः, तस्मात् परं दत्तकपुत्रग्रहीतुर्म्मरणं जातं चेद्, अपि
केनचित् तज्ज्ञातिना तस्यैव दत्तकपुत्रस्य चूडाकरणादिसंस्कारा ग्रहीतृगोत्रे-
णार्थात्ग्रहीतृपुरुषस्य नामगोत्रे समुच्चार्यं जाताश्चेत्, तदा स एव दत्तकः
पुत्रो ग्रहीतुः पुत्रो भूत्वा ग्रहीतृत्यक्तधने स्वत्वाधिकारी भवत्येव—इति वङ्ग-
देशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाख्यसेतु-
विवादमङ्गलार्णवदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीपित्तिदत्तकनिर्णयादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमङ्गिः पुत्रमापदि ।

सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः - इति मनुवचनम् ॥१॥

नत्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्धान्यत्रानुज्ञानाङ्कर्तुः । पुत्रं प्रतिग्रही-
ध्वन् बन्धूनाह्वय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिभिर्हुत्वा ।
अदूरवान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृहीयाद्—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० १०१।१०२)ग्रन्थधृतवशिष्टवचनानि ॥२॥

राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाह्वय सर्वास्तु ग्रामस्वामिनमेवेति वृद्ध-
गीतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ६६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धूनात्मपितृनातृबन्धून् ज्ञातीन् सपिरुडान् । बन्धवाद्याह्वानं
दृष्टार्थं राजाह्वानरत्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

चूडाद्या यदि सस्कारा निजगोत्रेण वे इताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० ७४) ग्रन्थश्रुतकालिकापुराणवचनम् ॥५॥

दत्ताद्या अपि तनया निजगोत्रेण ससृताः ।

आयान्ति पुत्रतां सम्यगन्यबीजसमुद्भवा ॥—इति दत्तकग्रन्थश्रुत-
(पृ० ७४) कालिकापुराणवचनम् ॥६॥

तस्मादेषां पञ्चाना पुत्राणां शौनकवशिष्टान्यतमविधिपरिमहेष्वैव
पुत्रत्व नान्यथा—इति दत्तकमीमांसा, पृ १०६) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तस्माद्दत्तकादिषु सस्कारनिमित्तमेव पुत्रत्वमिति सिद्धम् । दानप्रदण्डो-
पाद्यन्यतमाभावे पुत्रत्वाभाव एव—इति दत्तकमीमांसा (पृ० १११) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ ८ ॥

सर्वे ह्यनौरत्स्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागदिग्रन्थ
श्रुतदेवत्ववचनञ्चेति ॥ ९ ॥

इत्युच्यते इति पाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितादीयसितम्बरमासावगजेन्दु-
मितदिनसम्बन्धिगुणवासरे मयेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार सरजमा वाङ्मत्ता भाषाय--

हजुरेर समाप्त करा सवाल, जाहा अहरेजी सन १८३४
साले अपरैल मासेर १५ तारिले दिवस मङ्गलवारे आमि पाइ-
याळिलाम, ताहार दृष्टे ये मत बोध ह्मल तदनुसारे उत्तर
लिखितेछि—

प्रश्नोत्तरेर भाषा—

शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन शास्त्रानुसारे एइ सकल कर्म कर्तव्य उचित । प्रथमतः जनक पिता किन्वा तदनुमतिक्रमे जननी माता पुत्र दान करिवेक । ताहार पर ग्रहीता व्यक्ति किन्वा तदनुमतिक्रमे ताहार पत्नी व्याहृति होम प्रभृति शास्त्रानुसारे करिया पुत्र ग्रहण करिवेक । आर यद्यपि दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन पुत्र-ग्रहणैर अङ्ग ये सकल कर्म ताहा हइया थाके, ताहार पर दत्तक पुत्र ग्रहीता व्यक्ति मृत्यु हयोयाते ताहार कोन ज्ञातिर द्वाराय ऐ दत्तक पुत्रे चूडाकरण प्रभृति संस्कार ग्रहीता पितार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइयाथाके, तवे ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ग्रहीतार त्यक्त धने स्वत्वाधिकारी हइवेक । एइ व्यवस्था वङ्गदेश चलित मनु ओ दायभाग ओ दायतत्व ओ दायभागदीका ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव ओ दत्तक-मीमांसा ओ दत्तकचन्द्रिका ओ दत्तकदीधिति ओ दत्तकनिर्णय ओ गयरह ग्रन्थ सम्मत वटे इति ।

प्रथम प्रमाण मनुवचन । ताहार भाषा—माता किन्वा पिता किन्वा उभये ग्रहीता व्यक्ति पुत्र ना थाका प्रयुक्त प्रीति पूर्वक आपन पुत्रके सजातीय ग्रहीता व्यक्तिके दान करे, ऐ पुत्र ग्रहीता व्यक्ति दत्तक पुत्र जाना जाइवेक । इति ॥ १ ॥

द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिर वचन सकल, दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा—ये व्यक्ति केवल एक पुत्र थाकिवेक से व्यक्ति ऐ पुत्रके काहाकेओ दिवेक ना । एवं ग्रहीता व्यक्ति ओ ग्रहण करिवेक ना । कारण एइ ये ऐ पुत्र ऐ जनकेर पूर्व पुरुषेर सन्तानेर निमित्त थाकिवेक । एवं छीलोके पतिर अनुमति व्यतिरेक पुत्र दिवेक ना, ओ जइवेक ना । एवं पुत्रग्रहण ये करिवेक से बन्धुलोकेर आह्वान एवं राजार निकट निवेदन ओ व्याहृति होम प्रभृति करिया बन्धुलोकेर साक्षात् ग्रहण करिवेक इति ॥ २ ॥

तृतीय प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिरवचन । ताहाते लेखा आछे ये राजार निकट निवेदन करिया पुत्र ग्रहण करिवेक । ए स्थले राजा शब्दे ग्रामस्वामी, अर्थात् जमिदार, जाना जाइवेक । कारण एइ ये वृद्ध गौतम मुनि कहियाछेन ये वन्धुसकलेर एवं ग्रामस्वामी अर्थात् जमिदारेर आह्वान करिवेक । अर्थात् चहार-दिगके ज्ञातो कराइवेक इति ॥ ३ ॥

चतुर्थ प्रमाण दत्तकमीमांसा ग्रन्थलिखित । ताहार भाषा—वन्धुलोक ओ ज्ञातिलोकेर आह्वान यन्नपूर्वेक करिवेक । ए स्थले वन्धु शब्दे आत्मवन्धु ओ पितृवन्धु आ मातृवन्धु ओ-ज्ञातिशब्दे सपिण्ड जाना जाइवेक; ओ वन्धु ओ सपिण्डेर आह्वानेर प्रयोजन एइ ये इहारदिगेर ज्ञातसारे ये दत्तक पुत्र ग्रहण करिवेक से दत्तक पुत्र लोकेते प्रकाश हइवेक । येमत राज निवेदनेर प्रयोजन अर्थात् इहारदिगेर ज्ञातसारे ग्रहीत दत्तक पुत्रके वेइ मिथ्या करिते पारिवेक ना ॥ ४ ॥

पञ्चम प्रमाण—दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थ धृत कालिकापुराण-वचन । ताहार भाषा—वालकेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइया थाके तवे दत्तक प्रभृति पुत्रेरा ग्रहीतार पुत्र हयेन । न तु वा दास बला जाइवेक इति ॥ ५ ॥

षष्ठ प्रमाण—ऐ सकल ग्रन्थ धृत कालिकापुराणवचन । ताहार भाषा—दत्तक प्रभृति पुत्र यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया सस्कृत हइया थाकेन तवे ऐ पुत्रेरा अन्येर औरत जात हइलेओ महीवा व्यक्तिर पुत्रता सम्यक् प्रकारे प्राप्त हयेन इति ॥ ६ ॥

सप्तम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—दत्तक प्रभृति पाच प्रकार पुत्रेर प्रति शौनकमुनिर कथित किन्वा

वशिष्टमुनिर कथित ये प्रकार पुत्र ग्रहणेर विधान आछे ताहार मध्ये कोनो एक प्रकार विधान करित्ते ग्रहीतार पुत्रता सिद्ध हय । न तु वा हय ना इति ॥ ७ ॥

अष्टम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—ये हेतुक दत्तक प्रभृति पुत्रेर संस्कार करातेइ पुत्रता हय—एइ कथा स्थिर । अतएव दान किम्वा ग्रहण किम्वा व्याहृति होम प्रभृति, ये विधान नियमित आछे, ताहार मध्ये यदि कोनो एक कम्मो ना हय तवे उहार पुत्रता सिद्ध हय ना इति ॥ ८ ॥

नवम प्रमाण—दायभाग प्रभृति ग्रन्थ घृत देवलमुनिवचन । ताहार भाषा—ये व्यक्तिर औरस पुत्र ना थाके, ताहार दत्तक प्रभृति पुत्रेरा घनाधिकारि हयेन इति ॥ ९ ॥

अङ्गरेजी सन १८३४ साले । सेतम्बरमासेर १८ तारिके दिवस वृहस्पतिवारे एइ व्यवस्था दाखिल करा गेल ॥—

(४८)—लं० ६ आपिल सन १८३४ साल—

रुवकारि आदालते देओनि मों० ताजपुर परगने खोरद नागपुरेर एजेण्ट गवरनर' जानेरेल शाहेव वाहादुरेर मोहकमा कापतान तामश डिनगेष एजेण्ट साहेवेर बैठके सन १८३४ सालेर २६ मार्च मोतावक सन १२४० साल १७ चैत्र मओफके सन १२४१ सालेर ५ चैत्र दिवस शनिवार—

चेतरामतेओरि—

आपिलाण्ट

सावेक मुद्दइ—

आशानाथतेओरि—

रेण्पाडण्ट

सावेक मुद्दाआलेहे

मोकदना मोजे खटका ओ मोजे देशरत परगने खोफरा माद्यने परगने खोरदनागपुरेर मोहकमात सुमित्रातेओरिनेर

अर्द्धक हिस्साय दखल पाइवार बाबद एशिष्टण्ट कमिशनर साहेबेर फयरालार नाराजी ॥—

इहार पूर्व शन हालेर २८ फिवरेल ओ एइ मासेर १४ ओ २१ ओ २८ तारिखे एइ मोरुइमा हजुरे रुवकार हइया मुलतनि छिल । अद्य एइ मोरुइमा पुनराय उभयेर मोकाविलाय रुवकार हइल । गोविन्दनारायणतेओरि उभये सरिकानेर १ जना हजुरे हाजीर हइल । मिछिलेर समुदय कागनात ओ उभयेर कुरशनामा मोलाहेना हइया एइ बोध ह्य जे वासुदेवतेओरि उभयेर मुरस छिलेन । ताहार दुइ पुत्र । ज्येष्ठ जगतमन तेओरि, कनिष्ठ कृष्णमन तेओरि । वासुदेवतेओरिर सन्तान हइते आपिलाण्ट चेतारामतेओरि अष्टम पुरुष ओ रेष्पाडण्ट आशानानतेओरि ओ गोविन्दनारायणतेओरि सष्ठ पुरुष छिल, आर कृष्ण मनतेओरि सन्तान हइते गोदलरामतेओरि पञ्चम पुरुस^१ थाकिया, एक कन्या ओ सुमित्रातेओरिनि आपन छीके राखिया अपुत्रक मृत्यु ह्य । ओ ताहार कन्या सुमित्रा वर्त्तमाने आपन एक पुत्र सन्तान राखिया मृत्यु ह्य । ओ ताहार कन्यार सन्तान आपन वनिताके राखिया मृत्यु ह्य । आर जगतमनतेओरि ओ कृष्णमनतेओरि उभये पितार स्थावर अस्थावर सकल विसय अर्द्धादू अश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हइले । ताहारदिगेर उत्तराधिकारिरा पैतृक त्यक्त धने आपन २ हिस्सा मते दखिलकार थाकिया, इहार मध्ये आपिलाण्ट चेतारामतेओरि रेष्पाडण्ट आशानानतेओरि ओ गवरह गोदलरामतेओरि मजकुरेर वनिता सुमित्राके ताहार स्वामिर ओ स्वामिर भातार हिस्सार विषय मौजे खटगा ओ मौजे देसवतेर अर्द्धक हइते वेदखल करिले । मोरुइमात मजकुरार नालिस मते सन १८१८ सालेर ६ जुन तारिखे नेला रामगढा हइते मौजे खटगा ओ मौजे देशलठ आमेर चारि आना रकम अर्थात अर्द्धक ४ मोरुइमात

सुमित्रार स्वामिर, अर्द्धक, ओ स्वामिर भ्रातार अर्द्धक विषये दखल पाइया दखिलकार छिल । परे सुमित्रा मजकुरा आपन दखलि ऐ दुइ मौजार समुदय हिस्सा मोचलगे ७५१ टाका पने रेष्पाडण्ट आशानाथतेओरिर निकट विक्रय करिया कोवाला ओ पनेर टाकार रशीद सन १८२१ सालेर २३ आपरेल मोतावक फसलि सन १२२८ सालेर ९ वैशाख तारिखे लिखिया दिया सन १८२१ सालेर २८ आपरेल तारिखे आपन स्वेच्छापूर्वक मौ शहरघाटीर काजिर मोहर ओ सन १८३१ सालेर ३० आपरेल तारिखे रेजष्टरि कराइया देय । तद्वधि आशानाथ-तेओरि विक्रीत विषयेर पर दखलिकार आछे । सुमित्रातेओरिनि फसलि सन १२४० सालेर भाद्र माहाते फौत करे । ताहाते चेतारामतेओरि सुमित्रार स्वामिर सगौत्र प्रयुक्त ओ अपुत्रक फौत करणे आपनाके ताहार हिस्सार हिस्सादार करार दिया एइ नालिप करिवार खोरद नागपुरेर परगना हरेर एशिष्टण्ट कमिसनर साहेवेर सुमित्रार दखलि विषय आशा-नाथतेओरिर निकट विक्रय एव ताहाते ताहार दखिलकार थाकार शाहदेते सन १८३३ सालेर २८ मे तारिखे मोकदमा डिपमिष करियाछेन । आपिलाण्ट ऐ फयसलाय नाराज हइया सन १८३३ सालेर ११ सेतम्बर तारिखे परगना हावेर खोरद नागपुर ओ गयरहेर कमिसनरि मोहकमाय आपिलेर दरखास्त करे । परे कमिसनरि वरखास्त हइया आमार मोता-लुक हओर उमयेर मोकदमा एइ आदालते मोन्तजम हय इति । रेष्पाडण्ट आशानाथतेओरि जाहेर करे ये सुमित्रार स्वामिर हिस्सा छिल ओ से विना आखेज ओ आपत्य आपन स्वामिर विशवेर पर दखिलकार थाकिया आपन स्वेच्छा पूर्वक मौजे खटगा ओ मौजे देशओत ग्रामेर अर्द्धक मोचलगे ७५१ टाका पने आमार निकट विक्रय करिया, कोवालाय काजिर मोहर ओ रेजष्ट साहेवेर रेजष्टरि कराइया लिखियादेय । तद्वधि आभि

रेप्पाडण्ट आमार् दखले आछे । आर मुमित्रा आपन दरलि जमिर मध्ये एक नहरि जमि स्तारिटाम्भ ओ पावि दुइ गाल, काठाल १ ओ कदम्ब १ कयाल धरके दान करे । आपिलाण्ट ताहाते मोजाहेम ह्य ना इति । यदि स्यात् रेप्पाडण्ट आशानाथतेओरि जाहेर करितेछे जे मुमित्रातेओरिनेर विक्रयानुसारे विक्रित विशयेर पर दखिलकार आछे । आपिलाण्ट चेतारामेर सहित ताहार एलाका नाइ, ओ ताहार खरिद साधदेव करिया कोवाला ओ पनेर टाकार रशाद पेप करे । किन्तु प्रकाश हइते छे जे मुमित्रा बेओ ओ अचिरा थाकिया स्वामिर पैतृक विषय आशानाथ तेओरिर निकटे विक्रय करे । मितानरा ओ दाय भागेर तरजमार केताव मोलाहेजाय प्रकाश हइतेछे जे बेओ ओ अचिरा स्त्रिके स्वामिर पैतृक विषय दान विक्रयेर समता कदापि नाइ । ए कारण हिन्दुदिगेर शाखानुसारे ओ देशाचार मते मुमित्रा बेओ अचिरा रेप्पाडण्ट आशानाथ तेओरिर निकटे स्वामिर पैतृक विषय विक्रय करा ओ आशानाथ मजकुरेर ताहा खरिद करा ओ कोवाला माफिक एसिष्टण्ट कमिसनर साहेबेर हुकुमानुसारे ताहाते दखिलकार थाका सम्य(क) प्रकारे अयोग्य ओ धादालतेर माछेर योग्य नहे । एव शाख द्वारा ओ देशाचार मते बोध ह्य ये मृत गोदलरानेर त्यज्य वस्तु पर ताहार सगोत्र दखल पाइवार सत्व राखे किन्तु तरजमाय बहि दृष्टे अवगति ह्य जे पितार सप्त पुरुष पश्यन्त सपिएण्ट ओ हिस्साय इकदार । आर उभयेर कुरखिनामा हइते प्रकाश आछे जे वासुदेवतेओरि उभयेर मुवा । ताहार दुइ सन्तान । ज्येष्ठ जगतमनतेयारि उभयेर घरना ओ कनिष्ठ कुण्डमनतेओरि । मुमित्रातेओरिनेर स्वामि गोदलरामतेओरिर घरना छिल । दुइ भ्रातर आपन पितार विषय अर्द्धक अर्द्धक रकम अंश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु ह्य, ताहार-दिगेर ओयारिशाने आपनारदिगेर पैतृक हिस्सा माफिक

दखिलकार आछे, आर आपिलाएट चेताराम वासुदेवतेओरि हइते अष्टम पुरुष :ओ जगतमनतेओरि हइते सप्तम पुरुषेर तफात, एवं वासुदेव हइते आशानाथ पष्टम पुरुष, ओ जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात, आर सुमित्रार स्वामि गौदलराम वासुदेव हइते पञ्चम पुंरुप ओ कृष्णमनतेओरि हइते चतुर्थ पुरुष तफात आछे, ओ गोविन्द नारायणतेओरि आशानाथतेओरिर न्याय वासुदेव मजकुर हइते पष्टम पुरुष एवं जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात । अतएव तरजमार केताव दृष्टे सपिएडक अर्थात सप्तम पुरुष अष्टम पुरुषेर नाओयारिशी विषयेर हिस्साय कोनो स्वत्व राखे कि ना-सन्देह जन्मिल । एवं एतदेशे एइ मोकदमा न्याय जे अष्टम पुरुषेर केह सगोत्र नाओरिशि विशये दखल पाइयाछे कि ना तर्त करा गेल । ताहाते केह कहिते ओ कोनो लिखित पठित पेप करिते पारिवेक ना । अतएव ए विशयेर व्यवस्था ज्ञातो हओओ आविस्वक मते हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ उभयेर कुरछिनामा इङ्गरेजी ओ फारशी ए वातरे इङ्गरेजी चिठी द्वारा सदर दओओनि आदालतेर हाकिमानेर निकट एइ प्रार्थनाय प्रेरित हय जे साहेवान मौसुफिल मिताचरा हइते एइ विशयेर व्यवस्था जे गोदलरामतेओरि अपुत्रकेर विषये के २ हिस्सार हक राखे—आदालतेर पण्डितेर स्थाने तलब करिया अनुग्रह पूर्वक आसल व्यवस्था मौलाहेजार कारण पाठान जे मोकदमा फयसल हय, आर व्यवस्था पीछ पय्यन्त ए मोकदमा मुलतवि थाके इति—

प्रमुसमर्षितविचारपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपादनिगम-
गुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गोदलरामत्रिवेदित्यकधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रामावे सति तत्सल्या सुमित्रा-
देव्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र धने यदि गोदलरामत्रिवेदिदीहितस्तत्सली-
सुमित्रादेवीमरणोत्तरं विद्यमान आसीत्तदा तत्पाधिकारस्तस्मिन् पुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहिते मृते सति तत्पत्न्या एव वदनाधिकार । यदि च गोदलराम त्रिवेदिदौहिन स्वमातामहा विद्यमानायामेव मृत्युं स्वात्तदा तदौहिनस्य वदने स्व वानुत्वादेन तत्पत्न्या अपि वदने नाधिकारः, किन्तु प्रभुसमर्पित विचारपत्रवशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति गोदलरामत्रिवेदिद्वृद्ध प्रपतामहवासुदेवत्रिवेदिनोऽतिवृद्धप्रपौत्रयोराशानायत्रिवेदिगोविन्दनारायण त्रिवेदिनोरेव सन्निकृष्टसपिण्डत्वेन समानाधिकार, आशानायत्रिवेदि गोबन्धनारायणत्रिवेदिनो पूर्वं गोदलरामत्रिवेदित्युक्तघने ये उत्तराधिका रिण्यस्तेषां मध्ये कश्चिदिदानीं विद्यमानोऽस्ति न कस्यस्य प्रभुसमर्पितविचार पत्रवशावलीपत्रान्त्या स्पष्टतरतयाऽनवगमाद्, आशानायत्रिवेदिगोविन्द नारायणत्रिवेदिनोर्विद्यमानयोवासुदेवत्रिवेदिद्वृद्धातिवृद्धप्रपौत्रस्य कमलनाथ त्रिवेदिनो वामुदेवत्रिवेदिद्वृद्धातिवृद्धप्रपौत्राणां कलहारामत्रिवेदिहीरायणमत्रि वादभवनरामत्रिवेदिचेतरामत्रिवेदिना वामुदेवत्रिवेदिद्वृद्धातिवृद्धप्रपौत्रप्रपौ त्रस्य बचूरामत्रिवेदिनश्च नाधिकार, सन्निकृष्टसन्निकृष्टसपिण्डयोस्समानो दवानां च विद्यमानतायां सन्निकृष्टसपिण्डस्यैवाधिकारस्य मनुमिताक्षरादि ग्रंथसम्मतत्वात्—इति मनुमिताक्षरादिग्रंथानुसारिणी व्यवस्था ॥

इशवीशन्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगने दुमितान्दीयसितम्बरमासीयमुनि नेत्रमितदिनसम्बन्धिघणनिवासरे मया विचारपत्रवशावलीपत्रान्त्या साइतेय व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्विद्यनाथमिश्रेण

(४६)—मो० कलिकात्तार सदरदेओनि आदालतेर श्रीयुत ओलियमम्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठकेर सन १८३४ सालेर तारिख १२ माह जुन मोतावेक सन १२४१ सालेर ३१ ज्यैष्ठ वृहस्पति वारेर दिवसेर रोवकारि—

कार्गीच द्रमुस्तोफि

छापल

छापलेर उकिज मुनशी शिवनारायण चट्टोपाध्याय हात्तिर

आइल । छापलेर छयाल पइ जे श्रीमती कमलकुमारी छापलेर अप्राप्तावय कन्यार स्वामिर वाटीते ताहार सासुडि पदुकमलदासीर निकटे जाइवार विषयेर सन १२३४ सालेर ३ मे तारिखेर जेला हुगलिर जज साहेवेर हुकुमेर नाराजिते एवं श्रीमतीकमलकुमारी मजकुरार ऐ पदुकमलदासीर वाटीते जत्रोर हित हओनेर प्रार्थनाय ओ अन्य २ विशयसकलेर सहित उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ सन १८३४ सालेर ३मे तारिखेर जेला हुगलिर आदालतेर रोवकारिर नकल १ केता ओ सन १२३२ सालेर १७ मे तारिखेर लिखित जेला मजकुरेर केलकट्टरि फाचारिर रोवकारिर नकल १ केता पइ मासेर ५ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल । बोध हइल जे लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरहेर बालुकदार रमेशचन्द्रदत्त छापलेर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारिके विवाह करिया आठ मास जीवदशाय धाकिया श्रीमतिमजकुराके पुष्य पुत्र लओनेर अनुमति दिया उहाके उत्तराधिकारिणी ओ केशमत लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरह अनेक तालुक ओ जमीसकल ओ स्यावर ओ अस्थावर स्वनामी विनामी विशयसकल राखियो मृत्यु हय, ओ उहार मृत्युर पर श्रीमतीपदुकमलदासीर मृत रमेशचन्द्रेर माता मृत मजकुरेर त्यक्त अनेक जायदाद हस्तान्तर एवं कोनो जायदादे आपन नाम जारि करिया छापलेर कन्याके आपन आयत्तते आनिवार मानसे हुगली जेलार आदालतेर एक केता दरखास्त गुजराय, ओ जेलार जज साहेव व्यवस्था लइया छापलेर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारीदासीके उहार सासुडिर वाटीते पाठाइवार हुकुम प्रकाश करेण छापल ताहार असन्मतिते ए आदालते रुजु हय इति । जखन छापलेर उकिल प्रकाश करे जे श्रीमती पदुकमलदासी अप्राप्तावय श्रीमतीकमलकुमारीर ओछिर हेतुते मृत रमेशचन्द्रेर तावत त्यक्तविशये दखलिकार आछे । एवं छापलेर छओले प्रकाश आछे

ये मृत रमेशचन्द्रदत्तेर अप्राप्तावय स्त्री श्रीमतीकमलकुमारी उद्धार सासुडिर सहित शत्रुता थाकार दृष्टे आपन स्वामीर वाटीते जाइते असन्मत आछे। ए जन्य ए आदालतेर परिडतेर प्रति नीचेर लिखित प्रश्न करा उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे जे रोबकारिर नकल पाओर गारिख हइते एक सप्ताह मध्ये निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर लेखेन, ए आदालतेर परिडतके अर्पन करा जाय इति।

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्तिर अप्राप्तावय विधवा कन्या से ताहार स्वामी वर्त्तमान थाकिते कखन आपन स्वामीर वाटीते ना गिया थाके ओ उद्धार स्वामी उद्धारके पुष्यपुत्र लइवार अनुमति प्राप्तावय हइले पर थाके ओ आपन स्वामीर वाटीते जाओने ओ आपन सासुडि उद्धार जानत उद्धार शत्रु हय ताहार निकट वास करणे सम्मत ना हय, तवे बाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे श्रीमती मजकुरार आपन स्वामीर वाटीते जाओने उचित बटे कि ना इति—

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडोनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशचीशब्दप्रतिपाद्यनिगमयुग्यगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासायद्वादशदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यदेतदब्दीयजुलाइमासीपैकविंशतित-
मदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य पादशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्यप्राप्तव्यवहारया अवीरायाः पतिकुलानुया-
य्यंकारास्त्रोमयोदाधर्मादीना सरक्षण पतिपत्नीयेण देवरादिना भवितु
शक्यते चेत्तदा तस्याः पतिगृहगमनमेवोचित भवति, पतिपुत्र वहनया-
स्त्रियाः सरक्षणादौ शास्त्रानुसारेण पतिपत्नीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात् । यदि
च तस्याः पतिकुले तद्देवरादिः कश्चित् पुरुषस्तत्सरक्षणादिकर्त्ता न विद्यत
विद्यते वा तत्र तत्सरक्षणाद् भवितु न शक्यते चेत्तदा तस्याश्चावीराया

मर्यादाधर्मादीनां स्वपतिकुलोचितं संरक्षणं पितृपत्नीयेणार्थात् पित्रा भ्रात्रादिना वा भवितुं शक्यते । तदैतादृशं पित्रादिकमपहाय स्वपतिग्रहगमनं नावश्यकं भवति, पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रियाः संरक्षणादौ पतिपत्नीय-पुरुषाभावे पितृपत्नीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदाय-भागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयैकादश-दिनसम्बन्धिचन्द्रलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५०)—कलिकात्तार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

स्वरूपरामसेन जाति कायस्थ मृत्यु हृदयाद्धे । आपन भगिनीर कन्या सओयाय अन्य केह ओयारिप नाइ, एवं ऐ भगिनीर कन्यार एक पुत्र आछे । ए प्रकारे मृत स्वरूपरामसेनेर त्यक्त धन ताहार भगिनीर कन्या पाइते पारे फि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुण-गजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशाद्योघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि मृतस्य कायस्थजातोयस्य स्वरूपरामसेनस्य भगिनी पुत्र्यर्थिनी पुत्रवती स्यात्तदन्यः कश्चिदुत्तराधिकारी नास्ति तदा मृतस्य स्वरूपराम-सेनस्य त्यक्तधने तस्या अर्थिन्या अद्यप्यधिकारो न भवति, किन्तु प्रश्नलि-खितवृत्तान्ते सति धर्मशास्त्रार्थविवेचनया फलतस्तत्पुत्रस्याधिकारो भवितुं शक्नोति—इति मनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीय-

दिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपरामर्शां सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सवाल—

(५१)—यद्यपि कोनो व्यक्ति कोनो स्त्रीके विवाह करिया ऐ स्त्रीलोकेर सन्तान हइवार आसा व्यतीत हइले अन्य स्त्रीके सन्तान हइवार प्रार्थनाय विवाह करे, आर ऐ स्त्रीलोकेर वयस पन्द्रह बतसरहय, सेइ समय आसल स्याबरास्थावर समस्त धन, कि स्वोपाजित हय किम्बा ताहार पैतृक हय, आपनार भगिनीर पुत्रदिगेके दान करे, आर ऐ दानेर तीनि चारि बतसर पर सेइ द्वितीय स्त्रीर पुत्र सन्तान उत्पन्न हइया थाके, ए प्रकारे दानेर पर पुत्र हओयाते ऐ दान असिद्ध हइते पारे कि ना । आगत सोमवार दिवस पर्यन्त एहार जवाब लिखेन, ओ आसल हेवानामा ए आदालतेर पण्डितेरे निकट देवा जाय । इति सन १८३४ माल तारिख ११ दिजम्बर इति ॥ —

श्रीर्जयतितराम्

प्रश्नकृतप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दानपरत्रिवेचनया धर्मशास्त्रानुसारेणैतद-
दद्यादानं न सिद्ध्यति—इति वङ्गदेशचलितननुदायभागादिमन्थानुसारिणो
व्यवस्थेति ॥—

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमासोपपन्नदश-
दिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया दानपत्रप्रश्नपरामर्शां सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५२) सवाल पहिला—

कलकतेके सदर दीमानी अदालतके पण्डितसे सवालका बन्द लिखा,
६ दिसम्बर सन १८३४ ईशवी ।

अगर कोई करजके रूपसे इध्रा दुसरे तथोरसे देन्दार कितिका होने, अथोर सुदके बाबत कुछ कथोल करार नहि हुआ होवये - इस सुरतमें शास्त्रके मताविक किस तथोरसे अथोर किस अन्दाजसे उसका सुद मोकरर होये ॥—

सवाल दुसरा—

सुदके सुदके मकरमेमें शास्त्रके मताविक किस अन्दाजसे मकरर हये, इध्रावे जो रुपयाके सुदके बाबत असल देनके सेओधाय देन्दारके तै लाजिम होता हय, तो शास्त्रमें कुछ हद उसका मकरर हये इया नहि । अगर हय तो अन्दाज उसका केतना हये ।

प्रथम सओयालेर बाङ्गला भाषा—

कालिकावार सदर देशओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल सकल लेखा गेल । ६ दिसम्बर सन १८३४ ईशवी ।

यदि कोनो व्यक्ति काहारो टाका कर्जके रूपे किम्वा अन्य प्रकारे धारे, अथर सुदेर विषय कोनो करार किम्वा निर्धार्य ना हइया थाके । ए प्रकारे शास्त्रानुसारे कि प्रकारे ओ कि परिमाण सुद ये टाकार मकरर करा जाइवेक इति ॥—

द्वितीय सओयालेर बाङ्गला भाषा—

सुदेर सुदेर विषये—शास्त्रानुसारे कि परिमाण नियम आछे, अर्थात् ये टाका सुदेर बाबत आशाल टाका आदायेर सेओयाय देन्दारके दिते हय, शास्त्रे ओहार अवधि किछु नियमित आछे कि ना । यदि थाके, तवे कि परिमाण इति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीमत्प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्व्ययस्य प्रकारान्तरेण वा कस्यचिद्रजतसुवर्णादिघनं धारयति, एवं द्रव्योत्तममर्णाधममर्णयोर्वृद्धिसख्याया काचित् सविन्धैव जाता स्यात्, तत्र यद्यधममर्णादुत्तममर्णैर्बन्धकद्रव्यं लघुक वा अगृहीत्वैव तस्मै स्वघन दत्त स्यात्तदा ब्राह्मणादधममर्णात् द्विकशतपर्यन्तं क्षत्रियादधममर्णात् त्रिकशतपर्यन्तं वैश्यादधममर्णात् चतुष्कशतपर्यन्तं शूद्रादधममर्णात् पञ्चकशतपर्यन्तं मासि मासि वृद्धिर्ग्राह्या । किन्वेतावान् विशेषः यद्घनं वृद्धिसविद्वपतिरेकेण गृहीत्वा अधममर्णो देशान्तरं गतः तद्घनस्य सवत्सराद्दूर्ध्वमुपरिलिखिता वर्षक्रमेण वृद्धिर्भवति । यत्राधममर्णो उद्धारं गृहीत्वा उत्तममर्णेन याचितोऽपि याचितकमदत्त्वा देशान्तरं गतस्तत्र मासत्रयानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्षक्रमेण वृद्धिर्भवति । यत्राधममर्णो याचितकमादाय स्वदेशरिषत एव, याचितोऽपि याचितकं न ददाति, तत्र याचनकालमारभ्य सैवोपरिलिखिता वर्षक्रमेण वृद्धिर्भवति । यत्राधममर्णो मौल्याघनं गृह्णाति तत्र परमासानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्षक्रमेण वृद्धिर्भवति । तत्राय तात्पर्यार्थः—बन्धकलभकरहितेऽपि यत्र वर्णानां ब्राह्मणादीनां द्विकं त्रिकं चतुष्कं पञ्चकं वा शतं प्रति मासि मासि वृद्धिस्तत्रापि देशाचारसमयाचारयोर्द्विनिकाधममर्णिकयोः शिष्टतादुष्टतासघनतानिर्धनताना वृद्धेभ्य विवेचनया यथासम्भवं न्यूनतरा वृद्धिश्चेत् सापि शास्त्रोपमा भवति । किन्तु ब्राह्मणादधममर्णात् मासि मासि द्विकशतात् क्षत्रियादधममर्णात् मासि मासि त्रिकशतात् वैश्यादधममर्णात् मासि मासि चतुष्कशतात् शूद्रादधममर्णात् मासि मासि पञ्चकशतादधिका वृद्धिः कदाचिदपि शास्त्रानुसारेण भवितुं नैव शक्नोतीति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

गुणघनस्य वा वृद्धिस्तरया वृद्धिरुत्तममर्णाधममर्णयोः सविद विना नैव भवतीति शास्त्रे निषेधः । परन्तु यत्राधममर्णो वृद्धिरूपं घनं दातुमशक्तो भूत्वा वृद्धिरूपघनस्य वृद्धिं दातुमशक्तोति तदा वृद्धेरपि वृद्धिः शास्त्रानुसारेण भवितुं शक्नोति । तत्र यथा धनिकापमर्णिकयोः प्रतिष्ठा वृद्धिः सख्याया सैव प्रतिष्ठा वृद्धिसख्यानिर्णयमाका सख्यायामपतिष्ठाताया मधम-

प्रश्नोत्तरलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति—इति मन्वादिधर्मशास्त्रानु-
सारिणी व्यवस्थेति—

ईशशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमातीचत्रयो-
र्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५३)—रोव कारि मिड्डिल सदर देओयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरेर कायेम मेकाम हाकिम कृष्णाफर
ओएव इसमित साहेवेर बैठके । इं सन १८१५ सालेर १जानेर
मोतावेक वाङ्गला सन १२४१ सालेर २२पौष दिवस सोमवार ॥—

राधाचरणवर्णिक

आपीलाएट

लक्ष्मीसहार ओ गयेरह

रेष्पाडगटान्

आपीलाएटेर उकिल सदासुखपण्डित ओ रेष्पाडगटानेर
उकिल मुनशी हयदर आलि एनिएन वेञ्चमेन एडमेनेष्ट्रीन बेली
हाजीर आइलेन । इहार पूर्व्वे गतो २९ ओ३०दिशम्बर तारिख
सकले एइ मकईमा उत्थापन हइया तारिखसकलेर रोवकारिर
लिखित हेतु मते मुलतवि अर्थात् स्थापित रहियाछिल । अद्य
पुनराय उत्थापन हइया गुदइ अर्थात् वादीर इसादीर जवानवन्दि
ओ प्रतिवादिदिगेर इसादीसकलेर एजाहार पडा हइल । मोकह-
मार सामुदाइक हेतुसकले बोध हइया ए आदालतेर पण्डितेर
स्थाने कयेक विषय जिज्ञाश्य आविश्यक मते हुकुम हइल ये
रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर "प्रति-
उत्तर शीघ्र लिखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान
जाय इति ॥—

प्रश्न :—

पूर्व्व पुरुष लक्ष्मणवर्णिक राजुवनिक ओ जगमोहनवर्णिक

ओ रामकृष्णवर्निक तिन पुत्रके राखिया मृत्यु ह्य । परन्तु राजु-
वर्निक आपन वनिता श्रीमतीजगमोहिणीके राखिया अपुत्रक मृत्यु
ह्य । वाङ्गला सन १६२६ साले जगमोहिणी मजकुर परलोक
गतो ह्य, एवं जगमोहन अपुत्रक आपन स्त्री गङ्गामणीके राखिया
सन १२२६ सालेर पूर्वें मृत्यु ह्य । वाङ्गला सन १२२६ साले
ओ रामकृष्ण एक पुत्र गोपीकृष्ण ओ तारामणी स्त्रीके राखिया
मृत्यु ह्य । ओ तारामणीओ सन १२२६ सालेर पूर्वें परलोक
गत ह्य, ओ श्रीमतीमाङ्गलीर सहित गोपीकृष्णेर विवाह ह्य ।
ताहाते राममनी नाम्नी एक कन्या उत्पत्ति ह्य । ए ताहार एक
पुत्र अर्थात् मुद्दई ओ रामकृष्णेर पुत्र गोपीकृष्ण वाङ्गला १२२८
साले परलोक गत ह्य । ए ताहार वनिता श्रीमतीमाङ्गलीर सन
१२३७ साले मृत्यु ह्य, ओ ताहार कन्या राममनीर सन १२२६
सालेर पूर्वें मृत्यु ह्य । एवम्भूत व्यापारे वाङ्गला-देशेर चलित
शास्त्रानुसारे राधाचरण वर्निकेर मातामह गोपीकृष्णवर्निक ओ
गोपीकृष्णेर पिद्वय रामकृष्ण भ्राता राजुवर्निकेर स्त्री जगमोहिनीर
त्यक्त विपर्ये के हकदार हइते पारे, ओ सन्तति मजकुरार कोन
नैकट्य कि भिन्न ओयारिस ना थाके विधाये ताहार त्यक्त वस्तु
राधाचरण वर्निकके अर्शे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकृष्णिओएवइसमिट्सा-
देवधर्माधिकरणलिलितेशवीरान्द्रप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दोपबानवरी -
मासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयतन्मासीय-
नवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरै मया प्राप्त उदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुसरणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति राजुवर्णिकत्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रयौनाभावे
सति तत्त्वल्या जगमोहिन्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्त उन्नरणोत्तरं तत्र
धने राजुवर्णिभ्रातृपुत्रदौहित्रस्य राधाचरणवर्णिको धर्मशास्त्रानुसारे-

राधिकारो भवितुमर्हति । अत्र यद्यपि दायभागटोकादिग्रन्थलिखितापुत्रधनाधिकारिशृङ्खलायां भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य नामोल्लेखो विशेषतो नास्ति, किन्त्वेतत्प्रश्नलिखितावस्थायां मनुस्मृतिसम्मतो भ्रातृपुत्रदौहित्राधिकारो दायभागादिग्रन्थाभिप्रेतो भवत्येव, धनिभ्रातृपुत्रदौहित्रस्यापि धनिभोग्यधनिदेयधनिपितृपार्ष्णभाङ्गपिण्डदातृत्वेन धनिपारलौकिकोपकारकत्वात्, परम्परया धनिसपिण्डत्वाच्च—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते ।

चतुर्थः सम्प्रदातैषाम्—इत्यादि मनु(६।१८६)वचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यास्तस्य तस्य धनं भवेद्—इति च मनुवचनम् ॥२॥

तस्माद् यथा यथा मृतधनस्य तदुपयुक्तत्वं भवति तथा तथाधिकारक्रमोऽनुसरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

एवञ्च सर्व्वत्रोक्तरीत्या मृतधनस्य मृतार्थत्वमनुसन्धेयमुक्तकमेण—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

प्रतिसम्बन्धिनां चाधिकारार्थं वचनकल्पनागौरयात् तदर्चितधनस्य च तदुपकारतारतम्येन तादर्थ्यसम्पादनस्य न्याय्यत्वात्, उपकारकत्वेनेव धनसम्बन्धो न्यायप्राप्तो मन्वादीनामभिमत इति निरवद्यविद्याद्योतेन द्योतितोऽयमर्थो विद्वद्गिरादरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५ २१६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥—

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयवानवरीमासीयरत्नेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुकवासरे मयेयं व्यवस्था इत्तेति ॥—

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

यदि पञ्चमर्षाभ्यन्तरे पुत्रं गृहीत्वानन्तरं पिता मृतः चूडादेरुन्तु न
इत तत्र तस्य पुत्रत्व सिद्धयति, तथा न चाङ्गनाथे प्रधानस्य बाधः—
इति विवादभङ्गार्णवः (२ विवा पृ० १७६ ख) ॥३॥

कात्यायनः^१—स्वस्थेनात्तेन वा दत्तम्—इत्यादि(कास्मृ० ५६६) ॥४॥

पुत्रेष्टिमिति वर्षत्रयस्वाधिकारापत्तेर्न पुत्रेष्टिपूर्वकचूडादिभिः पुत्रत्वं
सम्पाद्यम् । शूद्रेण तदपि सस्कारमात्रादेवेति^२ सव्यमनवद्यम् ।

धन्यवर्चसकामस्य काम्यं विप्रस्य पञ्चमे, इति वचनेन तत्कामस्य
पञ्चवर्षस्यैव उपनयनमुख्यकालत्वेन मूलत्वात् तथा । शूद्रस्य तु विवाहा-
दिलाभः—इति दत्तकचन्द्रिका(पृ० २१।२२) ॥५॥

अत्रि —अपुत्रण सुतः काम्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिरडोदकक्रियाहेतोर्नामसस्तीर्तनाय च ॥—इति ॥६॥

मनु —न भ्रातरो न पितरः पुत्रा दायहराः पितुः ।

तथा पिरडदोऽशहरश्चेपा पूर्वाभावे परः परः ॥—इति ॥७॥

देवल —सर्वे ह्यनौरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः ॥ दायहराः

पूर्वाशदस्य —इति दायवत्त्वम् ॥८॥

मनु —उपपन्नो गुरौः सर्वैः पुत्रो यस्य तु दन्निमः ।

स हरेत्तव तद्रिन्ध सम्प्राप्तोऽप्यन्यगततः ॥—इति(६।१४१)

औरसाभावे सव्वरिव्यग्रहणमुक्तवान्, तद्द्युस्तमौरसे सत्यर्द्धा शहर
त्वम्—इति दत्तकमाताषा (पृ० १०६)चेति ॥९॥

शकाब्दा १७१४ ॥ सवत् १८८६ शीरचैत्रस्य नवमदिवसीय-
व्यवस्था ॥०॥०॥०॥—

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

मोकाम कलिकात्तार सदर देओनी आदालतेर इह
रेजी सन १८३४ सालेर २ दिसम्बर मोतावेक वाङ्गला सन

१२५१ सालेर १८ अग्रहायण मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुतउलियमवेराडिन साहेवेर बैठकेर रोवकारि—

वल्लवीकान्तचौधुरी वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्त चौधुरी ।

छापलेर उकिल मुनशी आव्याङ्ग आलि हाजिर आइल । ३२ टाका दामेर इष्टम्प कागजे छापलेर छओल गगरा परगनार तरफ मथुरापुरेर २॥ आडाइ मौजार देखल पाइवार, मोकईमार मः ३१७ टाकार दाखिते खास आपिल मञ्जुरिर प्रार्थनाय उकिल मजकुरार नामेर एक केता ओकालतनामा ओ गौरनारायण-शम्भार नामेर एक केता मोकारनामा ओ सन हालेर ३० जुलाइ तारिखेर जेला पूरनिया जज साहेबेर एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३३ सालेर ६ अपरेल तारिखेर जेला मजकुरेर सदर आमिन आलार एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३३ सालेर २२ मार्च तारिखेर व्यवस्था नकल एक केता ओ दोशरा तिन केता व्यवस्था सहित गतो ५ नवम्बर गुजराइयाखिल, अद्य दृष्टे आइल । कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व शाखेर प्रकरण ज्ञात हओओ उचित बोध हइल । ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ छापलेर दाखिल करा सन १८३३ सालेर २२ मार्च तारिखेर नकल व्यवस्था एइ हुकुमे ये व्यवस्था मजकुर दिष्ट करिया लेखेन ये व्यवस्था मजकुर बाङ्गलादेशीय चलित शाखानुसारे हइयाछे कि ना, यदि ना हइयाथाके, ऐ व्यवस्था मजकुरेर लिखित प्रमेर चवाध बाङ्गलादेशीय चलित शाखानुसारे एइ रोवकारिर प्राप्तेर दिवस हइते एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति—

श्रीर्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेवधर्माधिकरण-

लिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयद्विती-
यदिनसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यरीश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुण्य-
गजेन्दुमिताब्दीयज्ञानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो भ्रातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्था वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण जातास्ति । तद्-
व्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशां व्यवस्था वङ्गदेशचलित-
शास्त्रबहिर्भूतास्ति इत्युक्तानवगमादिति ॥—

ईश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयकिबरवरोमासीयसप्तमदिनस-
म्बन्धशनिवासरे मयेदमुत्तर दत्तमिति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्विद्यनाथमिश्रेण

(१५)—रुक्कारि मिद्धिल आदालते देओनि सदर मोकाम
फलिफाता वनेसत्त रावरट^१ हालडन राटरि साहेव हाकिम
आदालत मजकुरा ईसन १८३५ साल तारिख १६ जानवरि
मो० सन ११४१ साल ७ माघ सोमवार—

कमलाकान्तरायेर 'खी' रामदुर्गा ओ सम्भुचन्द्र वनाम
गङ्गाचरणसेन ।

सायलानेर उकिल मुनशी होसन आलि ओ में मारङ्ग
आगतवरकुलाल साहेव ओ फरिफसानिर उकिल श्रीरामराय
ओ तारकचन्द्रराय हाजिर हइल । एइ माहार १४ तारिखेर
हुकुमानुसारे सायलानेर उकिल श्रीमतीर पुत्र नृसिंहसेन अन्ध
थाकनेर ओजर उहादेर तरफ हइते पूर्व उपस्थित हओनेर विशये
एइ आदालतेर सावेरु हाकिम मे फटवरट धरनेल सिलि साहे-
वेर बैठकेर रुक्कारि निसान देओओ दृष्टी करा गेल । तत् द्वाराय
बोध हइल जे प्रकृत सायलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध

थाकनेर ओजर पूर्व उपस्थित हइयाछिल । प्रकाश हइल जे कृष्णकिङ्कररायेर चारि पुत्र । ज्येष्ठ लक्ष्मीकान्तराय, द्वितीय कमलाकान्तराय, तृतीय जगमोहनराय, चतुर्थ सम्भुचन्द्रराय । पितार मरणेर पर चारि पुत्र पितार त्यज्य वस्तुते भोगि ओ अधिकारि छिल ताहादेर मध्ये प्रथम लक्ष्मीकान्तरायेर निःसन्तान मृत्यु हय, परे जगमोहनराय महेशचन्द्रराय नामे एक पुत्र ओ श्रीमती नामे एक कन्या राखिया फौत करे । ओ ऐ महेशचन्द्ररायेर फौतेर पर ताहार भग्नि श्रीमतीर गर्भ हइते एक अन्ध पुत्र हय, आर सायलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध थाकनेर ओजर इहार पूर्व उपस्थित हइयाछिल, तथा च पण्डितेर पर ए विशयेर कोन प्रश्न हय नाइ-जे साखानुसारे जन्मअन्ध व्यक्ति पैतृक धनाधिकारि हइते पारे कि ना । ए प्रयुक्त ओ जे हेतुक बोध हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर तरफ हइते एइ मकदमार पूर्व जे व्यवस्था दाखिल हइयाछिल ताहाते एइ प्रश्न करा जाय-जे महेशचन्द्रराय आपन पितृ-अंशे अंशभोगि थाकिया आपन भग्नि श्रीमती ओ कमला-कान्तराय ओ सम्भुचन्द्रराय पितृव्यदिगे राखिया निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, आर ताहार स्त्री ताहार मृत कायार सहित सति हइयाछे । एमते महेश चन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भग्नि श्रीमती, जाहार पदयणे पुत्र नावालग आछे, ताहाके अर्थ, कि ताहार पितृव्य कमलाकान्तराय ओ सम्भुचन्द्ररायके अर्थ । एइ प्ररनेर उत्तर एइ चुम्बके लेखा जाय जे महेशचन्देर भग्नि श्रीमती ओ ताहार सन्तानके अर्थ, कमलाकान्तराय ओ ओ सम्भुचन्द्ररायपितृव्यरा अधिकारी हइवेक ना इति । आर ~ काशीनाथेर स्त्री करुणामयी दिगर आपिताष्टिथान ओ ~ चन्द्र-मालार स्वामी जयचन्द्रघोर रेण्वाडस्टेर ३२६ लम्बरेर मकदमार व्यवस्थाय इहार विपरीत लेखा जाय जे विरोधीय वस्तुर कर्तार अर्थात् कीर्तिनारायनेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर मरणेर

समय यदि ताहार पुत्र ना थाके, तवे ताहार पीतार दीहित्र यदि पितामह वर्त्तमान थाके, तवे पितामह, तदभावे पितामही, तदभावे पितृव्य, तदभावे पितृव्यपुत्र, तदभावे भ्रातृपौत्रगणके अर्थो। एकारण हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नइल परिडतके अर्पन करा जाय जे परिडत बाङ्गलादेशेर चलित शाखानुसारे एइ विशयेर व्यवस्था जे यदि श्रीमतीर गर्भजात सन्तान मातृगर्भ हइते अन्ध ओ चक्षुरहित एवं ए पर्यन्त ऐ अन्धावस्थाते थाके, एमते महेशचन्द्रेर त्यज्य धनेर धनाधिकारि ऐ पुत्र ह्य कि ना। यदि ना ह्य, तवे कोन व्यक्ति ताहार अधिकारि हइवेक, ओ इहार जओव जे एइ मकईमा, ओ उपरेर लिखित लम्बेरेर मकईमा एक प्रकार ओ ऐक्यभाष तथा च बङ्गदेशेर चलित एकशाखा-गुजाइ, एकेर व्यवस्था अन्येर विपरीत कि कारण दाखिल हइल; एइ रुवकारिर प्राप्तेर पर पाँच दिवस मध्ये दाखिल करेण; ताहा दाखिल, ओ मोलाहजा हइले जे उचित ह्य हुकुम सादेर इह-वेक इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्गर्भाधिकरणाधिपतिश्रीयुतएवरटहालडनराटरीसाहेवधर्माधिकर-णलिखितेशवीशन्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयबानवरीमासीयाङ्गेन्दुमि-तदिवसौवविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्र यच्चदन्दीयफेपरवरीमासीयरसमि-तदिनसम्बन्धिशुक्रनासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तर लिखते—

यदि श्रीमतीगर्भजातः पुत्रो अन्मान्धोऽप्याद् गर्भत एव चक्षुरहितः एतस्मालपर्यन्तमन्धावस्थायामेवास्ति तदा महेशचन्द्रत्यक्तधने स अन्धा-वस्थायामधिकारी न भवति। एवञ्च सति श्रीमतीपुत्रान्तरस्य महेशचन्द्र-त्यक्तधनाधिकारिण उत्यक्तेः प्राक्कालपर्यन्तं पूर्वं लेखितैतद्विवादविषय-निविटास्मदत्तं स्वस्थालिखितरीत्या श्रीमत्येवाधिकारिणी भवति। तत्प्राश्न

धनाधिकारिपुत्रस्य पुत्राणां वोत्तमौ तस्याः पुत्रस्य पुत्राणां वोपरिलिखित-
व्यवस्थालिखितरीत्या अधिकारः । महेशचन्द्रत्यक्तधने सम्भावितपुत्रत्वेन
पूर्वलिखितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थानुसारेण आताधिकारायाः
श्रीमत्या जीवन्त्या स्वत्वध्वंसस्य तद्गर्भजातपुत्रस्य महेशचन्द्रत्यक्तधनाधिकारि-
णः स्वत्वोत्पत्तेरेव जनकत्वाद्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादाय-
क्रमसंग्रहदायतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादमङ्गार्ववादिग्रन्थानुगारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम् —

अनंशौ क्लीवपतितौ जात्यन्वयधिरौ तथा ॥—इत्यादि दायभागादि-

(पृ० १०१) ग्रन्थधृतमनु (६।२०१) वचनम् ॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीवः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्स्वरोगात्तो मर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

पूर्वलिखितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थालिखितानि पञ्चप्रमा-
णानीति ॥५॥०॥

एवञ्च काशीनाथदत्तपत्नीकृष्णामयीप्रभृत्वर्धिनीनां चन्द्रमालापतिजय-
चन्द्रवोपप्रत्यर्धिनीरस रत्नाभ्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्य-
वस्थया सहैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थाया विरोधशङ्कापरीहारः ।
इत्यचोशब्दप्रतिपाद्येन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयद्वाविंशतितमदि-
वसीयश्रीयुतमान्तक्रीयूहेनरीटरम्बलसाहेवाभिधानैतद्धर्माधिकरणप्राचीनाधि-
पतिकृतोपरिलिखितसप्तभ्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादसम्बन्धिविचारपत्रतदधो-
लिखितारस्मद्दत्तव्यवस्थाम्पामेव स्पष्टतम इति ज्ञात्वा पुनर्न लिखित इति
निवेदनम् ॥०॥०॥०॥—

इत्यचोशब्दप्रतिपाद्येन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयकेनरवरीमासीयविंशतित-
मदिनसम्बन्धशुक्रवाचरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयपतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५६) ल ३५८५ सदर—

रुबकारि आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिठाचा वैष्टक श्रीयुत जारअड्टाकोएल साहेव कायेम मोकाम हाकिम । एइ आदालतेर सन १८३५ साल तारिख १८ फिरेआयादि मोतावेक सन १२४१ साल ता० ८ फाल्गुन बुधवार—

कानाइलाल मफलछ

आपीलाष्ट

गोरा ओ दन्वु ओ गयरह

रेण्पाडएटान्

आपीलएटेर उकिलान् मुनशी दादार वक्स ओ सदासुर-पण्डित हाजीर आशालेन । रेण्पाडएटान् एयालामनामा जारि हओते ओ ताहार रशीद लिखिया देओते ए पर्यन्त खोद किम्वा उकिलेद्वाराय हाजीर हइल नाइ । एइ मोरुहमा श्रीयुत तामस केमल रावरटसेन साहेव कायेम मोकाम हाकीमेर सन १८३४ सालेर १६ भाइ जुलाइ तारिखेर हुकुमानुसारे आमार वैठके रुबकार ओ प्रचिनसन कोटेर नथीर सम्बलित आरजी प्रभृति कागजात ३५ लम्बर पर्यन्त पडागिया आपीलएटेर उकिलदिगेर सम्मति क्रमे एइ मोरुहमार गतिक एइ प्रकार स्थीर हइल, जे विरोधीय वस्तु जानकीरामेर स्वो पाजित वटे, ओ जानकीराम ओ शीताराम, दुइ सहोदर भ्राता ओ जानकीरामेर स्त्री वदनेर गर्भजात सन्तराम ओ साधुराम, दुइ सन्तान, ओ ऐ दुइ सन्तान आपन पिता अर्थात् जानकीरामेर सन्मुखे श्रीमत्या गोरा ओ श्रीमत्या दन्वु दुइ भाय्या निःसन्तान वर्त्तमाना राखिया परलोरु हय । ओ शीतारामेर एक पुत्र अर्थात् कानाइलाल फरियादी ए च्चेनकार आपीलाष्ट वर्त्तमान आछे । ओ जानकीराम मजपुर आपन तावठ विपयेर तमलिकनामा आपन स्त्री श्रीमती वदनके लिखिया दिवाते श्रीमत्या मजपुरा ऐ प्राप्त वस्तुर उपर आपन जीवदशा पर्यन्त भोगवाना थाकिया मृत्यु हइयाछे । ए च्यने एइ मोरुहमा चूडन्त हुकुम देओनेर पूर्व ए विषय ए आदालतेर

पण्डितेर निकट जाना आविश्यक जे श्रीमत्यावदन मजकुरार मृत्युर पर शास्त्र प्रमाण उहार त्याज्य वस्तुर ओयारिस ओ स्वत्वाधिकारि श्रीमत्या गोरा ओ दुखु उहार पुत्रवधूगण हइवेक, कि शीतारामेर पुत्र कानाइलाल हइवेक । अतएव हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरकार लिखित सओयालेर जओोव पश्चिम देशीय चलित शास्त्र प्रमाण एइ रुवकारिर नकल पाइशर पर एक दीवसेर मध्ये लिखिया पाठान एइ आदालतेर पण्डितेर निकट देओया जाय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतजार्जइष्टाकोएलसाहेव-धर्माधिकरणलिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाष्टेन्दुमितदिवसीवविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीया-ङ्केन्दुमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशत्रोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्वदीभूतधनात् श्रीमत्या वदननाम्न्याः पुत्रवधोर्यावज्जीवं पतिकुलौचितप्रासाच्छानोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्या-चरणोपयुक्तधन विहायावशिष्टधने तत्पतिभ्रातृपुत्रस्याधिकारः—इति पश्चिम-देश चलितमनुमिताचरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

देश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयेन्दुपक्षमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५७)—तं० २७१ सन १८३३ साल—

मो० कलिकातार सदर देओनि आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडिन साहेवेर बैठकेर सन १८३५ सालेर १७ फिव-

रेल मोतावेक वाङ्गला सन १२४१ सालेर ७ फागुन मङ्गलवार दिवसेर रोवकारि—

विमलामयीदेव्या

आपिलाण्ट

श्रीमती अन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर फालफ्टर साहेब रेष्पा-
दर्यान् आपालाण्टेर उकिल मौलधि करम होउनेन हाजीर
आइल । सन १८३४ सालेर १६ दिजम्बरेर लिखित सदर पोस्-
टेर साहेबलोकेर एक केता चिठी प्रेरित पर ओ आनार नकल
सम्बलित नः प्राप्त ओ अद्य हजुरे दरपेस हइया मोरुद्दमार
अनेक कागजसकलेर महित दष्टे आइल । स्थित कागजसकल
हइते बोध हइतेछे जे गौरीशङ्करराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ
ईशानचन्द्रराय तिन जन सहोदर भ्राता छिलेन । ओ मरकारेर
दानानुसारे मोसाहेरा एक २ व्यक्तिर मुवलगे २८३ टाका हि०
मोट मुः ८४८ टाका शालीयाना सरकार हइते माकरर छिल,
ओ ए द्यने शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार जन्य विरोध उपस्थित
आछे । ए जन्य हुकुम प्रकारा हओनेर पूर्व शाखेर बेओरा
शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार पत्ते ज्ञात हओने उचिन बोध हइया
हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित
प्रश्नोत्तर नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पाँच दिवसेर मध्ये
लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय ।

प्रश्न :—गौरीशङ्करराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ ईशानचन्द्र-
राय तिन सहोदर भ्राता छिलेन । उहारदिगेर मध्ये गौरीशङ्कर
आपन पत्नी रुद्राणीके राखिया ओ ईशानचन्द्र आपन छो गौर-
मनिके राखिया ओ शम्भुचन्द्र आपन वनिता मन्दोदरि ओ
आनन्दचन्द्र ओ नारायणचन्द्र ओ रामधन पुत्रगण ओ विम-
लामयीदेव्या ओ अन्नपूर्णादेव्या कन्यागण राखिया, ताहार पर
रुद्रानी गौरीशङ्करेर छो ओ तत्पश्चान् उक्त आनन्दचन्द्र ओ
नारायणचन्द्र निःसन्तान, ओ ताहार पर उक्त मन्दोदरी एक

व्यक्तिरपर अन्य व्यक्तिर मृत्यु ह्य, ओ ए क्षणे उक्त शम्भु-
चन्द्रेर पुत्र रामधन ओ कन्यागण अन्तपूर्णा अविरा ओ विम-
लामयीदेव्या जीवदशाय आच्छेन । एजन्य जिज्ञाशा करा जाइतेछे
जे उक्त शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरा कि प्रकार उहार जीवित उत्राधि-
कारिगणेर मध्ये बाङ्गलादेशीय चलित शाखानुसारे विभाग
हइवेक इति ॥—

श्रीर्जयतिराम

एतद्रमार्थाधिकरणाधिपतिधीयुत-ओलियमवेराडीनसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताश्रीयफेवरवरोमासीयात्रीन्दु१७-
मितदिवसीधविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तद्वदोपत्तन्मासीयगजेन्दु-
१८मितदिनसम्बन्धिद्युधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो षात-
स्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते षति शम्भुचन्द्रस्य मासिकं यत्तन्मरणानन्तरं
उत्पुत्रैस्त्रिभिरर्थाद् आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्ररामधनैरुत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं
तत्र मासिके यदि आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्रयोः पुत्रादिमातृपत्यन्तानां
मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा शम्भुचन्द्रपुत्रस्य रामधनस्याधिकारः, शम्भुचन्द्र-
कन्ययोरन्नपूर्णादेवोविमलमयीदेव्योर्यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितप्रासाञ्छा-
दनोपयुक्तावश्यकधर्माद्याचरणोपयुक्तस्वस्वपतिपत्नीयधनाभावे पितृत्यक्त-
मासिकाद्यनुसारेण यावज्जीवं पितृकुलोचितप्रासाञ्छादनोपयुक्तावश्यकधर्मा-
द्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्था-
नुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ त्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थपृथयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

मृते भर्तृर्यपुत्रायाः पतिपत्तः प्रभुः स्त्रियाः ।

विनियोगात्तरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिहृष्ये पतिकुले निर्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्संप्रियेषु चासत्सु पितृपत्नः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

ईशकीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्द्रीयकेवरवरीमासीयवेदपद २४
मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे प्रश्नपत्रसहितेय व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५८)—सञ्चाल करार श्रीयुत पण्डित आदालत जेले
जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर
प्रति । यदि जातीर प्रति ह्य तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली
शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि
देशेर प्रति ह्य तवे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन
देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेरु । ओ यदि कोन एक
व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान
परित्याग करिया एइ बङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे
वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष
पर्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये
शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार
कोन शास्त्र मते ह्य, ओ यदि ताहारदिगेर वर्तमान सन्तानादिर
मध्ये विवाहादि ओ श्राद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित
थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ऐ सकल क्रिया
दायभाग सम्मत चलित थाके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि
वस्तु विचार कोन शास्त्र मत हइवेरु इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अविरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह । ओ ताहार स्वामीर भ्रातृपौत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय । इहाते ताहार स्वर्ज्य धनाधिकारि के हय—
दुइ शाखेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिवेन इति ।

तृतीय—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जओओहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ वेलकुमारि नामे जओओयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातृपुत्र राखिया मृत्यु हय । इहाते जओओहेरसिंहेर तेस्य धनादि मैथलि शाख मते काहाके ओ दायभागशाख मते काहाके वर्त्त । ओ यदि जओओहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकाग्रमुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किन्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्न मृत्यु हइयाथाके, पइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शाख मते जओओहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय । एवं आपनाके इहाओ ज्ञातो करा जाइतेछे ये ऐ घनाधि^१ ताहारदिगेर सकलेर पैतृक । इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहओलेर निचे लिखिया ३ तिन दिवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व पइ अदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्^१ प्रथम सओओलेर उत्तरं लिख्यते । चलित मैथिलि शास्त्र एवं बङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे । पारिभाषिक

परिक्रीणे पतिकृते निर्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्सापण्डेषु चासत्सु पितृपत्नः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयफेवरवरीमासीयवेदपद् २४
मितदिनसम्बन्धिमङ्गलरासरे प्रश्नपत्रसहितेय व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्जनयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५८,—सञ्चाल चरावर श्रीयुत पण्डित आदालत जेले
जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर
प्रति । यदि जातीर प्रति ह्य तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली
शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि
देशेर प्रति ह्य तवे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन
देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेरु । ओ यदि कोन एक
व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान
परित्याग करिया एइ वङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे
वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष
पर्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये
शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार
कोन शास्त्र मते ह्य, ओ यदि ताहारदिगेर वर्तमान सन्तानादिर
मध्ये विवाहादि ओ आद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित
थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ये सकल क्रिया
दायभाग सन्मत चलित थाके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि
वस्तुर विचार कोन शास्त्र मत हइवेरु इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अचिरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह । ओ ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु ह्य । इहाते ताहार व्यर्ज्य धनाधिकारि के ह्य—
दुइ शाखेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिबेन इति ।

तृतीय—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जओोहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ बेलकुमारि नामे जओोयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातृपुत्र राखिया मृत्यु ह्य । इहाते जओोहेरसिंहेर तेद्य धनादि मैथलि शाख मते काहाके ओ दायभागशाख मते काहाके वर्त्त । ओ यदि जओोहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकात्रमुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किम्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्न मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शाख मते जओोहेरसिंहेर धनाधिकारि के ह्य । एवं आपनाके इहाओ ज्ञातो करा जाइतेछे ये ऐ घनाधि^१ ताहारदिगेर सकलेर पैलुक । इहार यथाशाख ये व्यवस्था ह्य प्रति ब्रह्मओोलेर निचे लिखिया ३ तिन विवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व एइ अदालते पाठाइबेन इति ॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्^२ प्रथम सओोलेर उत्तरं लिख्यते । चलित मैथिलि शाख एवं बङ्गदेशीय दायभाग शाख मुख्य देशेर प्रति नहे । पारिभाषिक

१. घनादि०—इति साधियान् पाठः ।

२. अर्थात्—व्यप० ।

देशेर प्रति, अर्थात् देशस्थ लोकेर प्रति । मुख्य देश इहाके कहे । देशो नदी भूधरः कन्दरादिः । अतएव मुख्य देशेर प्रति नहे । शास्त्र जातिर प्रति बटे । किन्तु वङ्गदेशीय जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्र वङ्गदेशीय सकलहिन्दुजातिर प्रति । मैथिलि शास्त्र मिताक्षरा मिथिलादेशवासिसकल हिन्दुजातिर प्रति । मिथिलादेशस्थ कोनो व्यक्ति स्वदेश त्याग करिया वङ्गदेशे क्रमे चतुःपुरुष बास करिया मृत्यु हइले, ताहार सन्तानादि यदि मिथिलार शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, तवे मिताक्षराशास्त्रानुसारे, यदि वङ्गदेशीय शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, तवे जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्रानुसारे विरोधि वस्तु विवाद भञ्जन अर्थात् उत्तराधिकारिर निर्णय हइवेक । इहा सर्वदेशीय शास्त्रानुसारे यथाशास्त्र व्यवस्था इति—

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिडितस्य

द्वितीय प्रश्नस्योत्तरं लिख्यते—

गङ्गानाथी एक अविरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह एवं स्वामिर भ्रातृपौत्र^१ नारायणसिंहके ओरिश राखिया मृत्यु हइले, ताहार घने अर्थात् ताहार दाये ताहार स्वामिर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह अधिकारि हइवेक । ताहार स्वामिर भ्रातृपुत्र^१ थाकिते भ्रातृपौत्र अधिकारि हइवेक ना । इहा वङ्गदेश चलित जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा शास्त्र सम्मत । यथाशास्त्र व्यवस्था उभय देशीय शास्त्र मते एक व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिडितस्य

तृतीयप्रश्नस्य उत्तर लिख्यते—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जशोदेरसिंह आपन विमाता चौराशी नाम्नी एवं तत्तर्भजा एक वैमात्रेया अविवाहिता

१. भ्रातृपौत्र—इति साधोयान् पाठः । २. भ्रातृपुत्र—इति साधोयान् पाठः ।

भगिनी एवं बेलकुमारी नाम्नी एक सहोदरा भगिनी एवं पितार
 भ्रातृपुत्र नारायणसिंह-एइ चारिके राखिया कि एकात्रे कि
 पृथगत्रे थाकिया मृत्यु हइले । ताहार पैतृक धने एवं स्वकृत
 धने सकल धनेइ अर्थात् ताहार सकल दाये ताहार पितार
 भ्रातृपुत्र अर्थात् पितामह सन्तान नारायणसिंह अधिकारि
 हइवेक । ताहार विमाता एवं वैमात्रेया भगिनी एवं सहोदरा
 भगिनी अधिकारिणी हइवेक ना । किन्तु विमाता चौराशा
 उभयदेशीय शास्त्र मते प्रासाच्छादन पाइवेक । इहा एतदेश प्रचलित
 जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा-
 शास्त्र सम्मत । यथाशास्त्र व्यवस्था उभयदेशीय शास्त्रे एक
 व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना । विशेष एइ—तत्तद्देशीय
 दायभाग मते अविवाहिता वैमात्रेया भगिनीर विवाहेर ये धन
 व्यय ताहा नारायण सिंह जञ्जोहेरसिंहेर स्थावरास्थावर वस्तुर
 अष्टमांशिकांश अर्थात् जञ्जोहेरसिंहेर धन अष्ट भाग करिया
 एक भाग दुइ आना दिवेक इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिडतस्य ।

अत्र मैथिलशास्त्रमिताक्षरामते^१ प्रमाणम्—

पत्नी दुहितश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सव्यवहारिणः ।

एषामभाये पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ॥—इत्यादि मिताक्षराधृतयाज्ञ-
 वल्क्यवचनम् ।

अनन्तरः सपियडावस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति वचनञ्च ।

पित्रादिपितामहपर्यन्ताभावमुपक्रम्य पितृव्यस्तत्पुत्राश्च क्रमेण धन-
 भाजः । पितामहसन्तानाभाये प्रपितामही प्रपितामहस्तत्पुत्रास्तत्सून-
 वश्चेत्येवमासप्तमात् समानगोत्राणां सपियडानां धनग्रहणां वेदितव्यम्—
 इति मिताक्षरा, पृ० २२३ लिखनञ्च ।

भगिन्यश्चासंस्कृताः^१ सस्कर्तव्याः—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २०८)
लिखनम् ।

भ्रातृभगिन्याः समविभागं कृत्वा तयोरेकारं चतुर्धा त्रिभज्य
चतुर्भांशस्य एकारा दत्त्वा शेषं शृङ्गीयात्—इति मिताक्षराटीका(या)ञ्च
(पृ० २०६) ।

दायभागमते प्रमाणम्—पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि याज्ञवल्क्य
वचनम् ।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धन भवेत्—इति च वचनम् ।

असंस्कृतास्तु सस्कार्या भ्रातृभिः पूर्व्वसंस्कृतैः—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ।

भगिनीना सस्कार्यतामाह, नाधिकारिताम्—इत्यादि दायभाग-
(पृ० ६६)लिखनञ्च ।

पुंघनाधिकारे भगिन्यधिकारस्यालिररनात् नाधिकारः, न दायमहति
स्त्री—इत्यादि निषेधवचनञ्च ।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन त भरेत् ॥—इति (दायभागग्रन्थधृव)-
वचनम् ।

मात्रधिकारे गर्भधारणपोषणहेतुनिर्देशादिमातृनांधिकारः इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिणितस्य

ल० ६३५७

मृत हेमञ्जलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी

मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह पतिवादी

कलिकावार सदर देमानि आदालतेर परिणित स्थाने प्रश्नः

एह्ये—

मजफरपुरजिलार अन्तःपाति पश्चिमदेशीय छत्रिवंशी
हेमञ्जलसिंह चतुर्थ पञ्चम पुरुष जायत एतदेशनिवासि हइया ए

देशस्थ पैतृक वित्त ओ अवर्त्तमान खीर गर्भजात अप्राप्तवयसीय पुत्र जओोहेरसिंह ओ अविरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री चौराशी वादि ओ ताहार गर्भजात हरकुमारी नामे एक अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय । ताहार चतुथे वर्षान्तरे ऐ जओोहेरसिंह अप्राप्त वयसे मृत्यु हय । एतादृश स्थले ऐ वादि चौराशी ये एक अदत्ता कन्या राखे उक्त वित्त प्राप्ती हइवेक, कि नारायणसिंह जओोहेर सिंहेर पितृश्य पुत्रसत्वे ऐ वित्ताधिकारि हइवेक । यथा शास्त्र व्यवस्था लिखिबेन । इति सन १८३४ साल तारिख ४ जुन, मोतावरु सन १२४१ साल तेरिख २३ ज्येष्ठ ॥—

श्रीज्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रविचारपत्राणि यानीशवीशब्दप्रतिपाद्य-निगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगुणनेत्र-२३--मितदिनसम्बन्धिचन्द्र-वासरे मया प्राप्तमथचेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बर मासीयद्वितीयदिवसीयमत्कृतनिवेदनपत्रानुसारेण प्रभुसमर्पितत्रिवेदनपत्र-सहितविचारपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयकेवरत्तरोमा-सीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तम्, तेन शातमयं विवादो बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण निषन्न (इति) । तत्र कश्चिद्देशविषयकविरोधो वादिप्रतिवादिनोर्मध्ये नोपस्थितः । अत एवैतद्विवादविषये बङ्गदेशचलित-शास्त्रानुसारेण व्यवस्थालिखने सन्देहो नास्ति । अतस्तत्पत्रगतमत्रलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसार्गुत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हेमञ्जलसिंहो यद्यविद्यमानपत्नीगर्भजातम-प्राप्तव्यवहारं पुत्रं यमाहिरसिंहनामानमेकामवीर्यं दुहितरं द्वितीयपत्नीं चौरासीनाम्नीमर्थिनीं तद्गर्भजातामेका हरकुमारीनाम्नोमदत्ता कन्यां विदाय मृतः स्यात्तदा हेमञ्जलसिंहस्यकधने तत्पुत्रस्य यमाहिरसिंहस्य अप्राप्तव्यवहारस्याधिकारः । तस्मिन् पुत्रादिपितृपत्नीजगर्भ्यन्तरहिते मृते सति तस्यकधने प्रथमतस्तत्पितृदौहितस्याधिकारः । किन्तु यमाहिरसिंह-

पितृदौहित्रस्येदानीमजातत्वेन तदुत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्त यमाहिरसिंहस्यैमा
 त्रेयभगिन्या हरकुमारीनाम्न्या अविवाहिताया एव अधिकारः । तस्याः
 पुत्रेषु जातेषु तेषामेवाधिकारः । हेमञ्जलसिंहस्य मृतपत्नीगर्भजाताया
 अवीराया दुहितुर्यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाञ्छ्यादनोपयुक्तावश्यकवि-
 धवाधर्माद्याचरणोपयुक्तपत्नीयधनाभावे हेमञ्जलसिंहस्य कथनान्तर्गत-
 तत्कुलोचितप्रासाञ्छ्यादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधने चा-
 धिकारः । अयिन्याश्चोरासीनाम्न्या हेमञ्जलसिंहस्य द्वितीयपत्न्या अपि
 यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाञ्छ्यादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणो-
 पयुक्तधने तत्कन्याया हरकुमारीनाम्न्याश्चाप्राप्तव्यवहारकालपर्यन्त तद्धन-
 रक्षणादौ चाधिकारः । सत्स्वेव हेमञ्जलसिंहस्य दौहित्रेषु स्वतो हेमञ्जल-
 सिंहस्य तत्पितृपितामहस्यश्च पार्वणश्राद्धपिण्डदातृषु तेषां हेमञ्जलसिंह-
 दौहित्राणामुत्पत्तिसम्भावनायामपि हेमञ्जलसिंहप्रातृपुत्रस्य अर्थाद् यमा
 हिरसिंहपितृपुत्रस्य नारायणसिंहस्य नाधिकारः—इति वद्वदेशचलितम-
 नुदायभागदायतत्त्वदायभागटोकादायकमसप्रहविवादाद्यवसेतुविवादभङ्गाद्यं
 वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रयाणामुदक कस्य त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इत्यादि मनुवचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धन भवेत्—इति च मनुवचनम् ॥ २ ॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहि-
 त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

यद्यपि दुहितृभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्त-
 थापि तस्याः सीत्वेन पार्वणपिण्डदत्त्वाभावात्नाधिकारः । दुहितुस्तु दौहि-
 त्रात् पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवति इत्यादिविशेषोपवचनादेवाधिकार इति
 भावः—इति श्रीहृण्यवर्कालङ्कारकृतदायभागटोकालिखनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तस्मुता गोप्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभृतयाञ्जवल्क्य-
 वचनम् ॥५॥

अभावे धीजिनो माता तदभावे च पूर्वत्रः -इति व्यवहारतत्त्वा-
दिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

तदभावे पुनः पितृदोहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवै-
मात्रेयपुत्रपितृसोदरपीत्रपितृवैमात्रेयपीत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति च
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाजिखनञ्चेति ॥७॥—

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाञ्चमासौयदशमदिनसम्ब-
न्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रमत्कृतनिवेदनपत्रैर्वि-
चारपत्रैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१६)—अशेषगुणालंकृत नानाशास्त्राध्यापक श्रीयुत पीठा-
म्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य परिडत आदालते देशोनि जेला.
विरभूम सदन्तःकरणेषु —

यदि कोन विधवा खीलोक आपन तिन पुत्रेर सहित एक
अर्त्रे थाकिते दुइ पुत्र मरे, आर ऐ एक पुत्र आपन मातार
सहित एक अर्त्रे थाके, किम्वा प्रथक अर्त्रे थाके—एमत स्थले ऐ
मृत दुइ पुत्रेर धनाधिकारि वाहारदेर माता कि भ्राता के
हइवेक ?

परिडतके उचित ये एइ सश्रोलेर जश्रोव संस्कृत भाषा
शब्दे एइ सश्रोलेर पार्शे आपन दस्तखत महुरे लिखिया श्रोत्र
मध्ये हजुरे पाठान इति—

श्रीदुर्गा शरणम्

प्रभुप्रेषितप्रश्नपत्रावलोकनेन यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणात्र प्रत्युत्तरं
लिख्यते—

दौहित्रपर्यन्तरहितयौर्मृतघनिनोः स्थावरादिघने मातुरेवाधिकारि-
त्त्वम्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थसम्मतैति ॥

श्रीकाली जयति

श्रीपीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्येण ।

भाषा—

दौहित्रपर्यन्त बिहिन मृत ये दुइ व्यक्ति, ताहारदेर स्थावरादि
घने ताहारदेर मातार अधिकार ह्य, भ्रातार ह्य ना—इति
वङ्गदेश चलित दायभाग प्रभृति ग्रन्थ सम्मता व्यवस्था इति ।
समाप्तिकेयं व्यवस्थेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

पितरि मृते ये भ्रातरोऽविभक्तस्तयोः पितृपर्यन्तोत्तराधिकारिरहितयो-
र्मध्यमकनिष्ठयोरपरमे तद्धने माता अधिकारिणी । किन्तु तदानीं पैतृके-
श्वरसेवारक्षार्थमवश्यमोष्यवर्गपोषणार्थञ्च ज्येष्ठपुत्रेण यदद्यादिकं कृतं
तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं धनं पश्चात् ताभ्यां विभजनीयम् ।
ऋणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानात्—इति विदुषाम्परामर्शः ।
तस्य भाषा—

पितार मृत्युर पर तिन भ्राता वर्त्तमान, पितृ पर्यन्त उत्तराधि-
कारि रहित मध्यम एवं कनिष्ठेर परलोक हइले पर सेइ दुइ
जनेर अंशे मातार रक्षणावेज्ञणेर अधिकार ह्य । किन्तु ताहार
पर पैतृकेश्वरसेवा रक्षार निमित्ते एवं अवश्यपोष्य कुटुम्बादि
परिपालनेर कारणे ये ऋणादि ह्य ताहा ज्येष्ठ भ्राता ओ माता
दुइ जनके परिशोधन करिते ह्य । परिशोधनेर पर अवशिष्ट

धन ये थाके, ताहा दुइ जनेन्यथा योग्य वष्टन करिया लइवेक ।
किन्तु माता दानादि करिते पारेना । स्मृतिशास्त्र मते ऋणादि
परिशोधनेर परविभाग विधान करियाछेन इति—

श्रीगोपाल(१) जयति—

श्रीहरिरामशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीगुरुचरणशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीकालीप्रसादशर्मणाम् ।

श्रीनन्दगोपालः शरणम्—

श्रीहरगोविन्दन्यायालङ्कारस्य ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीत्रिलोचनशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीरामधनशर्मणाम् ।

लं० २४ शराशरि आपिल सन १८३१ मच्छिया—

रोवकारि आदालते देओयानि जेला विरभुम मैहार दुइक
पाटल साहेव एकटिन जज सन १८३४ मछिहा तारिख २६
सेतम्बर मोताबक सन १८४१ साल तारिख ११ आश्विन ।

विलाशमनिदेव्या वेलेमदार—मथुरानाथसिंह मोतार्जर—

एइ मकद्दमा शाखेक जजसाहेबेर हुकुम अनुसारे एइ आदा-
लतेर पण्डित पीताम्बरतर्कवागीश ये व्यवस्था दियाछेन प्रतिवादि
मजकुर ताहाते एइ ओजारे राखे ये ऐ व्यवस्था शास्त्र मत नहे ।
शाखेर अतिक्रम दोपरा पण्डितवर्गेर व्यवस्था, जाहा आमि लइ-
याछि, ताहा दोरस्त आछे । ताहाते मताखेर मजकुर कएक जन
पण्डितेर दस्तखति एक खान व्यवस्था दरपेप करिलेक । इहाते
मोतार्जर मजकुरेर ओजोर निवारनेर निमित्त आर एइ दुइ
व्यवस्था दरस्ति नदरोस्ति जानिवार निमित्त सदर देओयानिर
पण्डितवर्गेर स्थाने सत्य व्यवस्था तलब करोन आविश्यक
हइल । ए कारण हुकुम हइल ये एइ आदालतेर पण्डित पीता-
म्बरतर्कवागीशेर व्यवस्था आर मोतार्जर मजकुरेर दाखिल करा
व्यवस्था एइ रोवकारिर नकलेर सम्बलित आर एइ रकम इरोज

बीटी सदर देखोयानिर आदालतेर हाकीमानेर हुजुरे पाठान जाय ये हाकिमान एइ पाठान दुइ व्यवस्था सदर पण्डितेर आगे एइ निमित्तक जानिवार अनुमति ये एइ दुइ व्यवस्था मध्ये कोन सत्य ओ शाख अनुसार, आर इहार एक कोन खेलाफ शाख ह्य पाठाइया एवं पण्डितदिगेर स्थान हइते इहार सत्य व्यवस्था तलब करिया परे पण्डितमहाशयेरदिगेर सत्य व्यवस्था ओफे इफि, एइ पीछिले ताहा एइ आदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण-
नियुक्तपण्डितसम्बन्धितदधर्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयञ्च
यदीशचौशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणमजेन्दु १८३४ मिताम्दीयदिशम्बरमासीय-
प्रथमदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तर लिख्यते—

वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नरचाय-
मेव । यदि काचिद् विषया ओ स्वकीयैस्त्रिभिः पुत्रैः सहैकान्ते स्थिता,
तदानीमेव द्वौ पुत्रौ मृतौ स्यातामेकः पुत्रः स्वमात्रा सहैकान्ते पृथगन्ते
वा स्थितस्तदा मृतयोर्द्वयोः पुत्रयोर्दनाधिकारिणी माता भवति, किंवा
भ्राता भवतीति । तत्र तदधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन माता घनाधिकारिणी
भवति, भ्राता न भवतीत्युत्तर लिखितं तच्छास्त्रानुसारेण शुद्धमस्ति ।
अन्यैरनियुक्तपण्डितैश्च माता घनाधिकारिणी भवतीत्येवोत्तर लिखितम् ।
अतएवैतद्विषये द्वयोर्व्यवस्थयोरैक्यमेवेति तद्विषये विचारस्यावश्यकता
नास्ति, द्वयोरेव व्यवस्थयोरेतद्विषये बह्वदेशचलितशास्त्रीयत्वात् । किन्त्व-
नियुक्तैरन्यैः पण्डितैः स्वकीयव्यवस्थायामित्येवाधिकं प्रभुत्वप्रश्नात्
लिखितम् । किन्तु तदानीं पैतृकेश्चरसेवारस्युत्थार्थमवश्यबोध्यवर्गपोषणार्थं
च ज्येष्ठपुत्रेण यदद्यादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं
धनं पश्चात्ताभ्यां विभक्तनीयमृणपरिघोषनानन्तरमेव विभागविधानादिति

विदुषां परामर्श इति । तत्रच प्रभुकृतप्रश्नाशयबहिर्भूतत्वेन विचारानर्हत्वमेवेति । विचारार्हत्वेऽपि वा दायभागादिग्रन्थे चायमेव विचारस्तद्विषये कृतः । पूर्वस्वामिकृतेतादृशनैयायिकमृगमुत्तराधिकारिभिः स्वस्वोपयुक्तांशानुसारेणावश्यमेव परिशोध्यम् । तत्रापि विभागकर्तृभिरुत्तराधिकारिभिस्तादृशशृणुपरिशोधनं विना विभागो न कर्तव्य इति न नियमः । किन्तु विभागकर्तृणां धनिकस्य चेच्छा चेत्तदा शृणुपरिशोधनानन्तरमेव विभागः । तेषामिच्छा चेद्विभागानन्तरमेव शृणुपरिशोधनं भवितुं शक्नोतीति ॥—
अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थवृत्तयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

यश्चिष्टं पितृदायेभ्यो दत्तव्यं पितृकं ततः ।

भ्रातृभिस्तद्विभक्तव्यमृणी न स्याद् यथा पिता ॥ इदं नारदवचनम् पित्रर्णशोधनावश्यम्भावार्थं न विभागकालार्थम् । अस्माच्च नारदवचनादयमर्थः सिद्ध्यति—यद् विभागकर्तृभिरुत्तराधिकारिभिरनुमत्येव पित्रादृष्टं विभजनीयं परिशोध्यं वा—इति दायभाग (पृ० २५) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाचर्चमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिशुकवातरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां व्यवस्थापत्राभ्याञ्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६०) श्रीसुब्रह्मण्यगुरुःशरणम्

चतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीपतोत्तम्वरमाधेयपञ्चदशदिवसे प्रत्यधि-

न्योविवादविषये प्रवानसदनमीनाख्यधर्मधिकारिप्रेषितप्रश्नसबलितप्रति-
रूपकपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

मृतशटकोपदासत्यक्तधनप्राप्त्यर्थं विन्दमानयो. अमुकदासाख्यार्ध्य-
मुकप्रत्ययिन्योर्मध्ये दृश्यपि अमुकदासाख्या शटकोपदासकन्या, तथाप्येतत्-
प्रतिरूपकपत्रलिखनानुसारेण सा पतिपुत्रविहीना विधवेति प्रतिभातीति
कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासत्यक्तधने तद्धर्मभ्रान्मुकदासत्याधिकारो न
तु अमुकदासाख्याविधवाया. वैष्णवाना मध्ये केचन वानप्रस्थाः, केचन ब्रह्म-
चारिणो भवन्तीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासाख्यः स योगी चेदपि वान-
प्रस्थान्तर्भूत एवेति कृत्वा तस्यक्तधन तद्धर्मभ्रात्रमुकदास एव प्राप्नुम-
हति, न तु अनुराख्यविधवा—इति शास्त्रसंगमता व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

वानप्रस्थयतिब्रह्मचारिणा धनहारिणः ।

कमेणाचार्यसच्छिष्यधर्मभ्रात्रेकतीर्थिनः ॥—इति मिताक्षराप्रभृति-
ग्रन्थपृक्तयाज्ञानलक्ष्या २।१३७ वेचनम् ॥१॥

एव वानप्रस्थधनं धर्मभ्रातृत्वेनानुमतोऽपरो वानप्रस्थ एकतीर्थनि-
वासी एकधननिवासी वा गृह्णीयाद्—इति दायभाग(पृ० २१७)
लिखनञ्चेति ॥२॥०॥

श्रीसुब्रह्मण्यगुरुः शरखम्

श्रीसखारामशास्त्रिणः

मोहर परिदत्त आदालत देमानि—

मुकदिले बालाबोपत मोहरिर मरमहादनवीव ॥

१. धर्माधिकारीप्रेषितप्रतीकरूपं—व्यप० ।

२. वीचरमानयो अमुकदासाख्यार्थांश्चुम्प्रत्ययिन्यो—व्यप० ।

३. पती—व्यप० ।

४. विधवेति—व्यप० ।

५. तूरे—व्यप० ।

६. बोधं—व्यप० ।

७. सयोगिहचेदपी—व्यप० ।

८. विधवेति—व्यप० ।

९. नीजां—व्यप० ।

१०. निवासी—एकधननिवासी—व्यप० ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीशवोद्यन्दप्रतिपाद्यनिगम-
गुणगजेन्दु १८३४ मितान्दीयदीसम्बरमासीयमृनीन्दुमितदिनसम्बन्धिवृष-
वाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितव्यवस्था धर्मशास्त्रसम्मतता न भवति, कलौ वानप्रस्थाश्र-
मस्य निषेधादिति ।

ईशवीशब्दप्रविद्येपुरुषगजेन्दुमितान्दीयमाञ्चमासीयत्रयोदशदिनस-
म्बन्धिशुकवाधरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिद-
मुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(६१)

श्रीहरिःशरणम्

महामहिमश्रीगुतधर्माधिकरणाध्यक्षजज्ञसाहेवमहाशयसमीपेषु उपरि-
लिखितप्रश्नपत्रस्योत्तरं लिख्यते—

अपुत्रस्य मृतजयकान्तरायस्य समस्तघने पञ्चमपुरुषपीयशातिष्ठकुल्यद-
यानाधरायरायमनायरायमातृष्वस्त्रीयमधुरानायबोपाणां मध्ये धनिदेयमाता-
महपिएडदातृत्वात् मातृष्वस्त्रीयमधुरानायस्याधिकारो भवति—इति वङ्ग-
देशीयप्रचलितदायभागदायतत्त्वदायकमसंग्रहविवादभङ्गार्थं वप्रभृतिमन्धवि-
दां विदां सम्मता व्यवस्था साधोयसीति ॥

अत्र प्रमाणानि—

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यो ह्यासन्नतरस्तेपां सोऽनपत्यघनं हरेत् ॥१॥

अनन्तरः सपिएडाद्यस्तस्य तस्य घनं भवेत् ।

अत ऊर्ध्वं सकुल्यः त्यादाचार्यः शिष्य एव वा ॥२॥

१. पुराणीयज्ञातीयकुल्यदयानाधरायरायमनायरायमातृष्वस्त्रीयमधुरानायबोपाणा—२५० ।

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिरडः प्रवर्तते ।

चतुर्थः सम्प्रदातृषां पञ्चमो नोपपद्यते ॥३॥

सपिरडभावे सकुल्यः—इति वृहस्पतिमनुषौघायनवचनानि ॥

तस्मात् तद्भोग्यपिरडदातुरभावे तद्देयपिरडदातुर्मातुलादेरधिकारी
न्याय्य एव—इति दा० भा० (पृ० २१०) । एतेन वृद्धप्रपितामहात्
प्रभृतयः पूर्वपुरुषा प्रतिनप्तुः प्रभृतयोऽधस्तनास्रयः^१ पुरुषाः एकपिरड-
भोक्तृत्वाभावाद् विभक्तदायादाः सकुल्या इति आचक्ष्यते दा० भा०
(पृ० ११) । तस्माद् यो यस्तत्कुलोत्पन्नोऽतद्गोत्रोऽपि^२ त्वदौहिनपितृ-
दौहित्रादिः अतत्कुलोत्पन्नो वा मातुलादिर्धनिनो मृतस्य मातृकुलगत-
त्रैपुरुषिकपिरडदातृतया एकपिरडसम्बन्धेन सपिरडस्तस्य^३ तस्याप्यधि-
कारार्थं त्रयाणामिति वचनम् । आनन्तर्येण च विशेषार्थम् अनन्तर इति
वचनं बर्णनीयम् । तेन मृतभोग्यमृतदेयपित्रादित्रयपिरडदातुः पितृदौ-
हित्रादेरभावे मृतदेयमातामहादिपिरडदातृणां मातुलादीनामानन्तर्यकमे-
णाधिकारिकमो शोद्ध्यः । एतत्पर्यन्ताभावे सकुल्यः—इति दायभाग
(पृ० २१२।२।३) लिखनानि ।

मृतभोग्यपिरडदात्रभावे बन्धुरिति मातामहमातुलादिः—इति दाय-
तन्त्रं (पृ० १६६) लिखनानि ।

ततः पितामहत्रातृदौहित्रोऽधिकारी धनिभोग्यप्रपितामहपिरडदातृ-
त्वात् । तद्भावे मातामहः तद्भावे मातुलः तद्भावे मातुलपुत्रः तद्-
भावे मातुलपौत्रः तथा तद्भावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इति दाय-
क्रमसमूहं (पृ० ६) लिखनानि च ।

दौहित्रान्तप्रपितामहसन्तानाभावे^४ मृतदेयमातामहादिपिरडभोक्तृ-
णां तद्दातृणां चासत्तिकमेण मातामहमातुलतत्पुत्रतत्पौत्रप्रमातामह-
तत्पुत्रपौत्राणां पूर्वपूर्वाभावे^५ परपरोऽधिकारी । एवं तेना दौहित्राणामपि

१. प्रभृत्यवस्तना—अप० ।

२. तदात्र ३—अप० ।

३. भापिरड—अप० ।

४. दौहित्रे तु—अप० ।

५. पुत्रापूर्वाभावे—अप० ।

मातामहवत् पितृतत्पितृपिण्डदानामधिकारः—इति विवादभङ्गार्थव
(३६३ क)लिखनानि च इति ।

शकाब्दाः १७५६ इ० १८३४ साल १८ जुन ।

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारस्य सम्मता
श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

लं० २११ इ० सन १८३४ साल—

रोवकारि मिडिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता
श्रीयुत मेष्टर हेनरि सिक्सपीएर साहेवेर बैठके । तारिख ३
मार्च् इ० १८३५ साल मोताबके २१ फाल्गुन सन १२४१ साल
वाङ्गला दिवस मङ्गलवार—

रामनाथराय ओ गधरह

आपीलायटगन

मथुरानाथ ओरफे श्रीकान्तराय

रेग्पाडयट

आपीलायटगणोर उकिल मेष्टर निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन
वेलि ओ रेग्पाडयडेर उकिल मेष्टर जीमिप कोलवरुक सदरलेण्ड
साहेव हाजीर आइल । इतः पूर्व गतो सनेर २३ शेतम्बर तारिखे
आपीलायटगणोर सदर आपीलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि
कागजात अनुबोधन अनुसारे उक्त तारिखेर रोवकारि लिखित
प्रमाण एइ मोकर्द्दमा लम्बरे दाखिल हआयार हुकुम ह्य । एवं
अपीलायटगण जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दाखिल
नाकरण प्रयुक्त एइ मोकर्द्दमार कागजात तलय हइयाछिल ।
तत्परे आपीलायटगणोर मध्ये रामनाथराय आपीलायटेर दरखास्त
उहार पूर्वोर मोकरर करा उकिलगणेर परिवर्त्ते हालेर उकिल
निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन वेलि साहेवेर नामे ओकालतनामा
दाखिल करण विषये दाखिल हओया विधाय गतो सनेर १८
ओ २३ दिजम्बर तारिखे उपस्थित हइया मिडिलेर समिभ्यार

राखनेर हुकुम ह्य। जेला पुरनियार जज साहेबेर रिटरण ओ
 १ दिजम्बर मजकुरेर लिखित तथाकार रोवकारि सम्बलित
 पौहुच्छान मते अद्य आपीलास्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल
 ओ कागजात सम्बलित थामार वैठके दरपेस हइया अनुबोधने
 आइल। एइ मोकहमार विषये अन्य २ तदन्तेर पूर्व एइ विषय
 बोध करा आविश्यक ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था
 जाहार दृष्टे जेलार जजसाहेब एइ मोकहमार इनफळालेर हुकुम
 दियाछेन यथाथं ओ सत्व बटे कि ना—ए प्रयुक्त उक्त विषयेर
 बोध जन्य हुकुम हइल ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था
 एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये पण्डित
 मजकुर उक्त विषयेर जओयाव दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।
 ताहा पौहुछनेर पर उचित ये हुकुम ताहा छादेर हइवेक इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिरतिश्रीयुतहेनरोलिकिसूनीपरसाहेबधर्माधिकरण-
 लिखितेशन्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाच्चमासीयनृतीयदिधसीयवि-
 चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदन्दीयतन्मा-
 सोयाष्टेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य आहशबोधो
 ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रदेशचलितशास्त्रानुसारेण ज्ञातास्तीति ।

इंशबीशन्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयनृतीथदिनसम्ब-
 ण्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्या सहितमिदमुत्तर
 दत्तमिति—

श्रीज्जयतितराम्
 श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(६२)—महामहिम श्रीयुत खोदाबन्दान् न्यामत वरावरेणु—
व्यवस्थासकलेर तरजमा पारशी एवारते^१ ओ भापाय तैयार
हइया हजुरे दाखिल हइतेछे । ए प्रकार दस्तुर ए आदालते
आछे । किन्तु सम्प्रति केह पारशीनवीश मुनशी आमार काछे
नाइ, ये जाहार द्वाराय व्यवस्थासकल पारशी तरजमा कराइया
हजुरे दाखिल करि, ओ इहार पूर्व ए विषयेर वारन्वार हजुरे
निवेदन करियाछि । किन्तु ए कर्म केह मुनशी नियुक्त हये
नाइ । अतएव निवेदन करितेछि ये कोन एक जन मुनशीके एमत
हुकुम हय व्यवस्थासकल तरजमा करेण, किन्वा यदि वाङ्गला
एवारते ओ भापाय व्यवस्थासकल तरजमा करिया दाखिल
करिते हुकुम हय, तवे प्रस्तुत मते वाङ्गला भापाय ओ एवारते^१
एक प्रकार तरजमा हइते पारे । ओ दुइ किता व्यवस्थार तरजमा
वाङ्गला भापाय ओ एवारते आमार काछे प्रस्तुत आछे ।
किन्तु हजुरे हुकुम व्यतिरेके दाखिल करिते पारि ना । अतएव
आरज करिलाम, जैमत हुकुम हय, खोदाबन्दान मालिक, इहा
आरज करिलाम इति । तारिख २३ आपरेल सन् १८३५ साल
ईशवी ।

प्रतिपाल्यतम श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य
निवेदनमेतदिति

(३)—सञ्जाल—

धनि विजि पुरूप काशीरामदासेर, कालीचरण ओ कीर्त्ति-
नारायण ओ रघुनाथ ओ कान्तनारायण, चारि पुत्र वर्त्तमाने मृत्यु
हय । तत् पर कालीचरणेर हरिनारायण ओ रामनारायण आ
राधागोविन्द तिन पुत्र ओ तिन सहोदर वर्त्तमाने मृत्यु हय । तदन-
न्तर कान्तनारायण अविवाहित समय ओ कीर्त्तिनारायणेर विवा-

हेर पर निःसन्तति ऐ रघुनाथ भ्राता ओ कालीचरणेर पुत्र हरि-
नारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द भ्रातृपुत्र वर्त्तमाने
मृत्यु ह्य। एवं कीर्त्तिनारायणेर खीरह मृत्यु ह्य। ओ पर ऐ रघुनाथ
हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द आपन भ्रातृपुत्र
सहित कीर्त्तिनारायण ओ कान्तनारायणेर पैतृक ओ सकृत् धने
आपन निज अश सहित अविभक्त क्रमे भोग करिया श्रीमती भैर-
वीदास्या नामक एक अदत्वा कन्या राखिया मृत्यु हन। से मते
निवेदन कीर्त्तिनारायण ओ कान्तनारायण रघुनाथेर सहोदर ओ
रामनारायण इत्यादिर खुल्लता छिलेन, भ्राता ओ भ्रातृपुत्र
वर्त्तमाने निःसन्तान मरण हओते रघुनाथ मजकुरेर कि
पर्यन्त अंश पहुँछिया हरिनारायण ओ रामनारायण ओ
राधागोविन्देर सहित भैरवीदास्यार कि प्रकारे कि पर्यन्त अंश-
ताहार यथाशास्त्र व्यवस्था चाहि इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्र प्रश्नपत्रञ्च यशोशचीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दु-
मिताब्दीयज्ञानवरीमावीयखगुणमितदिनसन्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो प्राप्तस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति कान्तनारायणस्याकृतोदाहस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्तरहितस्य मृतस्य माता यदि तन्मरणसमये विद्यमाना स्यात्, तदा
तत्पुत्रसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः, तस्याञ्च मृताया रघुनाथाख्यस्तत्-
सहोदरभ्राता विद्यमानश्चेत्तदा तत्पुत्रसमुदायधने रघुनाथाख्यस्य तद्भ्रातृ-
रेवाधिकारः। कीर्त्तिनारायणस्यापि निःसन्तानस्य मृतस्य पत्नी यदि विद्य-
मानाया कीर्त्तिनारायणस्य मातरि मृता स्यात्तदा कीर्त्तिनारायणस्य तत्पुत्रस्य
खान्तसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः। तस्याञ्च मृताया यदि रघुनाथाख्य-
स्तद्भ्राता विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारः। एवञ्च सत्येतरस्य रघुनाथ
त्वत्पुत्रसमुदायधने यत्तस्य स्वाशरूपं यच्च वा तेनोपरिलिखितप्रकारेणोत्तरा-
धिकारित्वेन भ्रातृद्वयत्वकथनं प्राप्तम्, तस्मिन् समुदायधने तस्य पुत्रमारभ्य

पत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्यादत्तकन्याया भैरवीदास्या एवाधिकारः । हरि-
नारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानां तु त्रयाणां सोदरभ्रातॄणां स्वपितृ-
त्यक्तसमुदायधने समानाधिकारः । यदि चोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिका-
रित्वेन प्राप्तपुत्रद्वयधना माता रघुनाथस्य मरणोत्तरमपि विद्यमाना आसीत्,
तदा तस्या मातुर्भ्रमरणोत्तरं तत्संक्रान्तपुत्रद्वयधने मूत्रधनिनोः कान्तनारायण-
कीर्तिनारायणयोर्व्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः । तत्र च तयोर्वत्तरा-
धिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य भ्रातृपर्यन्ताभावेन तयोर्भ्रातृपुत्राणां-
मर्थाद्धरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानामेव समानाधिकारः । एव-
ञ्च सत्येत्तत्पक्षे रघुनाथकन्याया भैरवीदास्याः केवलं रघुनाथयोग्यांशे
रघुनाथत्यक्तधने अधिकारः । हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनाय-
यणानान्तु स्वपितृयोग्यांशे कान्तनारायणकीर्तिनारायणयोः स्वपितृव्य-
योर्योग्यांशे च समानाधिकारः । अत्र प्रश्नपत्रे कान्तनारायणकीर्तिनारा-
यणयोर्माता तयोर्भ्रमरणसमये रघुनाथस्य मरणसमये वा विद्यमाना
आसीत् वेति लिखितं नास्ति । अतएव प्रकारद्वयेन व्यवस्था लिखितेति
निवेदनम्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहवि-
वादाणां वसेतुविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं गृह्णीयात्, तदभावे चोदा—इति दाय-
भागादिग्रन्थभृतपराशरवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरी स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमानुयुः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थभृतकाल्याणवचनम् ॥३॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

इंशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवमुपद्मितदिन-

सम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रमरुनपनाम्ना सहितैय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा वाङ्मला भाषाय—

हुजुरेर सोपरद करा रोबकारि ओ सआयाल जाहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर जानवरि मासेर ३० तारिखे दिवस शुक्रवारे आभि पाइया छिलाम ताहार विवेचना करिया ये मत घोष हइलो तदनुसारे जबाब लिखितेछि इति—

सओयालेर लिखित वृत्तान्तक्रमे अत्रिवाहित कान्तनारायणेर पुत्र अवधि पितृपर्यन्त रहित हइया मृत्यु हइले ताहार मरण समये यदि ताहार माता वर्तमाना छिल, तवे ताहार त्यक्त सकल वस्तुते ताहार मातार अधिकार हइयाछिलो । आर ऐ मातार मृत्यु हइले ताहार मरण समये रघुनाथनामे कान्तनारायणेर सहोदर भ्राता यदि विद्यमान छिल, तवे ऐ मातृसंक्रान्त कान्तनारायणेर त्यक्त धने ताहार भ्राता रघुनाथेर अधिकार हइया छिलो । एवं कीर्तिनारायण निःसन्तान मृत्यु हइले ताहार पत्नीर यदि उहार माता वर्तमाना थाकिते मृत्यु हइया थाके तवे कीर्तिनारायणेर त्यक्त ताहार पत्नीसंक्रान्त समुदाय धने कीर्तिनारायणेर मातार अधिकार हइयाछिलो । ओ कीर्तिनारायणेर मातार मरण समये यदि रघुनाथ नामे कीर्तिनारायणेर भ्राता वर्तमाने छिल, तवे ऐ वस्तुते ताहार अधिकार हइयाछिलो । ए प्रकार हइले रघुनाथेर त्यक्त समुदाय धन, याहा ताहार अश योग्य छिल, ओ ऐ व्यक्ति उपरेर लिखित प्रकारे दुइ भ्रातार त्यक्त धन उत्तराधिकारित्व प्रकारे पाइयाछिल,

ताहाते ताहार पुत्र-अवधि पत्नी पर्व्यन्त केह नाथाका प्रयुक्त ताहार अदत्ता कन्या भैरवीदासीर अधिकार हइवेक, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण एइ तिन जनेर केवल आपन पितृ योग्य अंशे समान अधिकार हइवेक । यदि स्यात् कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर धन पाइया रघुनाथेर मृत्युर पर वर्त्तमाना छिल, एमत ह्य तवे ऐ माता मरिले ताहाते संक्रान्त ये ऐ दुइ पुत्रेर धन ताहाते कान्तनारायणेर ओ कीर्त्तिनारायणेर ये ओयारिश ताहार-दिगेर अधिकार ह्य । ताहाते ऐ दुइ जनेर ओयारिशेर मध्ये पुत्र अवधि भ्रातृ पर्व्यन्त ना थाकाते भ्रातृपुत्र ये हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण तिन जन ताहारदिगेर समान अधिकार हइवेक । ए प्रकार हइले ए पक्षेर रघुनाथेर कन्या ये भैरवीदासी ताहार केवल रघुनाथेर हिस्याते अधिकार ह्य, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायणेर आपन पितार हिस्याते, ओ कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायण ये दुइ पितृव्य ताहारदिगेर हिस्यातेओ समान अधिकार हइवेक इति । ओ सथोयालेते कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर मृत्यु समये ओ रघुनाथेर मृत्यु समये वर्त्तमाना छिल कि ना-इहा किछु लेखा नाहि । ए जन्ये दुइ प्रकार लिखागेल इति ।

ए व्यवस्था बाङ्गलार चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायवत्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादाणवमेतु ओ विवादभङ्गाणव-प्रभृति मन्थानुसारिणीति ॥—

इहार प्रथम प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत याज्ञवल्क्य मुनिवचन । ताहार भाषा—पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र-रहित मृत व्यक्तिर घन प्रथमे पत्नी पाय, पत्नी ना थाकिले कन्या पाय, कन्या ना थाकिले दौहित्र पाय, दौहित्र ना थाकिले पिता पान, पिता ना थाकिले माता पान, माता ना थाकिले भ्राता पान, भ्राता ना थाकिले भ्रातृपुत्र प्रभृति पाय इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत पराशरमुनिर वचन । ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र पत्नी पर्यन्त-रहित मृत-व्यक्तिर धन प्रथमे अविवाहिता कन्या पाय, अविवाहिता-कन्या ना थाकिले विवाहिता कन्या पाय इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत कात्यायनमुनिर वचन । ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र ना थाकिले पत्नी यदि भर्तार शय्या प्रतिपालन करेन अर्थात् व्यभिचारिणी ना ह्येन तवे पतित्यक्त धन यावज्जीवन भोग करिवेन, अथवा व्यय करिवेन ना । पत्नी मरिले ऐ धन पतिर अन्य ये ओयारिप थाकिवेक ताहारा पाइवेक इति ॥३॥

चतुर्थ प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा—पत्नी पतिर त्यक्त धन यावज्जीवन अथवा व्यय ना करिया भोग करिवेन । ताहार पर पतिर अन्य ओयारिप पाइवेक । एइ नियम । याहा तृतीय प्रमाणे कात्यायनमुनिर वचने लिखा गेल ताहा केवल पत्नीर प्रति नहे, किन्तु स्त्रीमात्रेर प्रति । अर्थात् स्त्रीलोक येखाने अधिकारिणी हइवेक से सकल स्थाने ऐ नियम जाना जाइवेक इति ॥४॥

इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि इजुरेर सोपरइ करा रोबकारि ओ सओयालेर सहित एइ व्यवस्था दाखिल करिलाम इति ॥—

(६४) सओल—

यद्यपि कोनो अवीरा स्त्रीलोक आपन पतियोग्य अंश स्थावर अस्थावर वस्तुते अप्राप्त ओ योत्राहिन थाकिया तदवस्तु-प्राप्तार्थे आपन स्वामीर बहु ज्ञाति थाकितेशो जनेक ज्ञातिके एमत एकरार लिखिया दिया थाके ये ऐ जन नालिपेर द्वारा किन्वा अन्य कोनो रूपे ऐ अप्राप्त वस्तुते प्राप्त कराइते पारे, तवे ऐ वस्तु अर्द्धक अथवा ताहार किञ्चित् ऐ प्राप्तकारक जन

आपन श्रम औ खरचार्ये पाइवेक, एमत अवीरा स्त्रीलोकेर एहप एकरार शास्त्र मत माह्य कि ना, एवं अवीरा स्त्रीलोक आपन पति योग्य अंश वस्तु एरुप एकरारेर द्वारा अन्यके दिवार-क्षमता राखे कि ना । यदि राखे तवे ताहार वर्त्तमान पर्यन्त कि ताहार अवर्त्तमानेओ इति ॥—

श्रीर्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रादिप्रयत्न यदीशवीरान्दप्रतिपाद्येपुगुण-गजेन्दुमितान्दीयफेवरवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिधमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचिदवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशस्थावरास्थावरात्वकवस्तुनि धन-हीनतया आयत्तत्वसम्पादनायक्ता सती तद्वस्तुप्राप्त्यर्थं स्वपतिज्ञात्यन्तगंता-यैकस्मै कस्मैचिन् ज्ञातये एतन्नियमेन संवित्त्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्तथा द्विभवान् धर्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण दोपरिलिखिताप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं कारयितुं शक्नोति चेत्तदोपरिलिखितविशदास्पदोभूतस्थावरास्थावर-स्याद्धं यत्किञ्चिद्वा स्त्रीयपरिश्रमस्य व्ययस्य वा विनिमये प्राप्स्यति इति । तत्र यदि सवित्पत्रसम्प्रदाननूतज्ञातिविशेषेण धर्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वा तादृशाप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं तस्याः कारितवान् स्यात् तदैता-दृशा अवीरायाः स्त्रियास्तादृशनियमेन सवित्त्रं ब्राह्मं भवितुमर्हति, नो चेन्न भवति । एवमवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशवस्तुन एतादृशसवित्त्रद्वारा अन्यस्मै दानक्षमतामप्युरिलिखिततादृशनियमपूर्त्तां रक्षति, नो चेन्न रक्षति । रक्ष्यपक्षे तस्या अवीराया मरणानन्तरमपि तद्रक्षणस्य समान-कार्यकारित्वाद्—इति यद्देशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादार्षवसेतुविवाद्भङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

अत एव वर्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रय-णमपि—इति दायभागप्रबलिखण्डम् ॥१॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणाणि कार्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादभङ्गा र्णवादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥२॥

सोपाधिदानमुपाप्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिल-
नञ्चेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताम्श्रीयापरेलमासीयवमुपक्षदिनस-
म्बन्धिमङ्गलवाधरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रतदतिरिक्तविचारपत्रादित्रय-
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्था तरजमा वाङ्मला भाषाय—

हजुरेर सोपरह करा सञ्चोयाल ओ ताहार सेञ्चोयाय रोवकारि
प्रभृति तिन वेता कागच याहा इङ्गेरेजी सन १८३५ सालेर
फेवरवरी मासेर ३ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि पाइया-
धिलाम ताहा विवेचना करिया येमत बोध हइलो तदनुसारे
जवाव लिखितेछि इति—

यदि कोन अवीरा स्त्रीलोक आपन पतिर योग्यांश स्थाव-
रास्थावर वस्तु ताहाते आपन अर्थ सामर्थ्य ना थाकाते दखल
करिते अचम हइया ऐ वस्तु दखल पाइवार कारण आपन
स्वामीर ज्ञातिर मध्ये एक जनके ए प्रकार नियमे एकरार
लिखिया देय ये तुमि आदालते नालिपेर द्वाराय कि अन्य कोन
प्रकारे उपरेर लिखित वेदखलि वस्तुते आमार दखल कराइते
पारह तवे उपरेर लिखित स्थावर ओ अस्थावर—प्रभृति विरो-
धीय वस्तुर अर्द्धक किम्वा किञ्चित् आपन परिश्रमेर ओ
अर्थव्ययेर परीवर्त्ते पाइवा इति । ताहाते ऐ व्यक्ति यदि आदालते
नालिशेर द्वाराय किम्वा अन्य कोनो प्रकारे ऐ वेदखलि वस्तुते ऐ
अवीरा स्त्रीलोकेर दखल सम्पादन करिया थाके तवे ऐ प्रकार अवीरा

स्त्रीलोकेर ए प्रकार एकरार ग्राह्य हइते पारे, ओ यदि ऐ प्रकारे कोनो तफात् हइया थाके तवे ग्राह्य हइते पारे ना । आर एइ रूप अवीरा स्त्रीलोक आपन स्वामीर योग्याश वस्तुर ए प्रकार एकरारेर द्वाराय अन्य व्यक्तिके दिवार क्षमता उपरेर लिखित ऐ प्रकार नियम समापन हइले राखे, ओ ऐ नियम समापन ना हइले राखे ना, ओ ए पत्ते क्षमता राखनेर प्रति कोनो काल नियम नहे, अर्थात् ऐ अवीरा स्त्रीलोक ये पर्यन्त जीवइशाय थाकिवेक से पर्यन्त ऐ क्षमता राखनेर ये फल ताहा उहार मृत्यु हइले ओ समान इति । एइ व्यवस्था बङ्गदेशेर चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायतत्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादाणवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव-प्रभृति ग्रन्थानुसारिणीति ॥

इहार प्रथम प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा— स्त्रीलोकेर खोरपोष प्रभृति अचल हइले आपन पतिर त्यक्त-संक्रान्त वस्तुर बन्धक सिद्ध हइते पारे । ताहातेओ अचल हइले ऐ पतिर त्यक्त वस्तुर विक्रय सिद्ध हइते पारे इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव प्रभृति ग्रन्थ धृत नारदमुनिर वचन । ताहार भाषा—आपत्काल व्यतिरेके स्त्रीलोकेर करा सकल कर्म असिद्ध, विशेषतः घर, द्वरोजा ओ भूमि, इहार दान ओ बन्धक ओ विक्रय आपत्काल व्यतिरेके सिद्ध हइते पारे ना इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—कोनो प्रयोजन सिद्ध हआयार निमित्ते कोनो नियमे ये किछु देय से प्रयोजन ऐ नियमे यदि सिद्ध ना हय तवे से देओया सिद्ध हइते पारे ना इति ॥३॥

इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आभि हजुरे र सोपरइ फरा सवाल ओ ताहार संशो-याय रोबकारि प्रभृति तिन केता कागच सहित एइ व्यवस्था-दाखिल करिलाम इति ॥—

(६५) लं० २५८

सन १८३२ साल ईशवी

रोवकारि मिडिल आदालत देओयानि सदर मोकाम कलि-
काता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत तामस किमिल रावटसेन
साहेबेर बैठके तारिख २१ आपरेल सन १८३५ साल ईशवी
मोतावेक तारिख ६ माह वैशाख सन १२५२ साल वाङ्गला
रोज मङ्गलवार—

राजीवलोचनसतपति

आपिलाएट—

वेचारामराय

रप्पाडएट—

जेला मेदिनीपुरेर आदालत देमानीर एक केता रिटरण
ताहार तारिख २७ माह मार्च सन १८३५ साल ईशवी ओ
एक केता रोवकारि सहित ओ गयरह कागजात रप्पाडएटेर
असाक्षाते एखाने पहुचिया अद्य मोकद्दमार कागजात समभि-
व्याहारे आपिलाएटेर वकिल मुनशी हसन आलि ओ खोद
रप्पाडएटेर साक्षाते रोवकार हइलो ओ जिला मेदिनीपुरेर
आदालतेर कागजात ओ सधाकार फयसला पर्यन्त पाठ करा-
गेल । ओ उचित हइलो ये चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्ण ए
विषय दरियाप्त करा ये जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर पण्डितेर
दाखिल करा व्यवस्थासकल मोतावेक शाख मरओजे मुलुक
वाङ्गला किम्बा उडिस्यार दोरस्त वटे कि ना, आवश्यक बोध
हइया हुकुम हइलो ये दुइ केता व्यवस्था एइ हुकुमे ए आदालतेर
पण्डितेर निकट पाठान जाय ये व्यवस्थाजात मजकुर चङ्गदेश-
चलित शाखानुसारे किम्बा उडिस्या देशेर चलित शाखानुसारे
सिद्ध वटे कि ना । ओ सिरिस्तादार ए विषयेर कैफियत दाखिल
करेण ये मुद्दर दावी डिसमिस हइया दखल रप्पाडएटेर थाके
ओ डिगरिर टाका बैविलरफार फिरिया पाइयाछे कि ना ।
यद्यपि पाइया थाके तये सेह मकद्दमार लम्बर ओ फयसलार
तारिख निशान दिया कैफियत दाखिल करेण । आर रप्पाडएटके

बुद्धिया देया जाय ये तुमि आइन्दा मङ्गलवारें हाजिर ना थाकिवा तवे तोमार अपेक्षा मुलतवी ना राखिया मकदमा फयशला करा जाइवेक । अतएव तोमाके ज्ञात करा गेल इति ॥—

श्रीश्रीदुर्गा

न० ३६—

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद् दानोद्देशेन तत्पुत्रेण वा प्राप्त-
व्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इति विद्वद्भिर्निश्चायि । पैतृकस्थावर-
भूमेरप्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इत्यपि मिताक्षरमतम् ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव ।

स्थावरं द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्जितं ॥

असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥—इत्यादि मिता-
क्षरालिखनम् ॥

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपरिडर्तैः

अस्य भाषा—

पुत्र-पौत्रादि-क्रमे भरणार्थं दत्त भूमि पाइया भोग मात्र करिते पारे । ग्रहीता किम्वा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्वे विक्रय करिते पारे ना । अरर मिताक्षरा मते पैतृक भूमि पुत्रादि थाकिते विक्रय करिते पारे ना इति । सन १८३२ साल ५ आपरेल ॥—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपरिडर्तैः

न० ३८

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद् दानोद्देशेन तत्पुत्रेण वा विक्रेतुं

न शक्यते इति व्यवस्था तु मिताक्षरादायभागदायत्वप्रभृतिष्वर्शास्त्र-
सम्मता सर्वदेशसाधारणीति विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

पैतृकतादृशनिवृत्तस्वत्ववद्भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं न
शक्नोति—इति तु व्यवस्था मिताक्षरामात्रसम्मता इति विद्वद्भिर्निरणायि ।
दायभागवृत्तीभूतवाहनमते तु पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिमपि
अप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतुं शक्नोति, किन्तु विक्रेता प्रत्यवायी
भवात्—इति च विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

तत्र प्रमाणनि—

दात्रमिसिद्धिमित्तत्वान् स्वत्वस्य २४।१।४ यथा याज्ञवल्क्य —

मण्डिमुक्ताप्रवालानां स्वत्वस्यैव पिता प्रभु ।

स्थावरस्य च सर्वस्य न पिता न पितामह ॥

पितामहश्चुतेस्तद्धनविषय वचनम् । तत्रापि स्वत्वस्येत्युपादानात् सर्व-
स्य कुटुम्बवचनहेतौर्दानादानपथ ८।२।३ जीमूतवाहनदायभागप्रथकार ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्रपौत्रादि क्रमे भरणार्थं दत्त भूमि पाइया भागमात्र
करिते पारे । ग्रहीता किम्वा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहारपुत्र सत्वे
विक्रय करिते पारे ना । ए सव्यशास्त्रवित् पण्डितदेर निर्णय ।
इति जीमूतवाहनमतः ।

अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्त्वे पिता पैतृक कोन भूमि विक्रय
करिते पारे ना—ए कवक्ष मिताक्षरामत । दायभागमते पितृ-
पितामहादि सम्बन्ध प्रयुक्त अश रूपे प्राप्त भूमि अप्राप्तव्यवहार-
पुत्र सत्त्वेऽपि विक्रय करिते पारे, किन्तु विक्रयकर्तार पाप हय
इति । जीमूतवाहन दायभागप्रन्थकर्त्ता इति ।

ए देशेर मध्ये उत्कलमतावलम्बि उत्कल ब्राह्मण आर ताहार-
दिगेर यजमान शिष्य उडिया सृष्टिकरण ओ क्षत्रिय, वैश्य ओ
कान्यकुब्ज ब्राह्मण । इहारदिगेर मितार्चरा मते व्यवस्था । राठीय
ब्राह्मण ओ दक्षिण राठीय कायस्थ प्रभृतिर दायभाग मते व्य-
वस्था । ए विवादे विक्रय कर्ता कोन जाति वाहा लइया विचार
करिते ह्य इति—

इति श्रीकमलाफान्तविद्यालङ्कारपण्डितैरिखायि—

श्रीकमलाफान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीसुततामसकिमिलरावटतेनसाहेवधर्माधि-
करणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयैकविंश-
तितमदिशसोयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्था-
पत्रं वसुगुणाङ्कितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयगुणपञ्चमितदिनसम्ब-
न्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रभुसमर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्थायां वसुगुणाङ्कितव्यवस्थायाञ्च प्रथमतो
लिखितमस्ति भरणार्थं दत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वादानोद्देशेन तत्सुतेन वा
अप्रातव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इतीति । तत्र यदि दात्रा दानोद्देश्या-
येयं भूत्वया पुत्रपौत्रादिक्रमेण भोक्तव्या, किन्त्वस्यां भूमौ मदीयं स्वत्वम-
स्त्वेवेति नियमेन भरणार्थं तद्भूमिर्दत्ता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं
तन्मतं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा
शुद्धं भवतीति । एवं तत्तद्व्यवस्थायां पुनरपि लिखितमस्ति पैतृकभूमि-
मप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं शक्नोतीति । तत्रापि अद्यप्रातव्यवहारपुत्रवता
पैतृकभूमिर्विक्रयविद्धिसम्पादकस्यास्त्रीयापरयकहेतुं विना स्वेच्छैव तद्भूमि-
विक्रीता स्यात्तदा तत्तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारे-
णोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति । एवं वसुगुणाङ्कित-

व्यवस्थाया पुनरपि लिखितमस्ति दायभागकृत्तृजीमूतवाहनमते तु पितृपिता-
महादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिमप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विनेतुं शक्नोति, स्मिन्नु
विनेता प्रत्यवायी भवतीति चेति । तत्रापि यद्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता पितृ-
पितामहादिसम्बन्धप्राप्तभूमिर्विक्रयसिद्धिसम्पादकशास्त्रीयावश्यमहेतुभिः वैश्व-
स्मितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिर्विनीता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं
तन्मतं यद्देशचलितशास्त्रानुसारेणोत्तलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा
शुद्धं भवतीति ॥—

इंशबीशब्दप्रतिपादोपुगुणगजे-दुमिता-दीयापरेलमासीयाद्वपक्षमित-
दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितत्रिचारपत्रेण व्यवस्थापत्राम्यात्र
सदितमिदमुत्तरं दत्तमिति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६६)—ल० ३५० सदर—

रुवकारि मिडिल आदालते द्वैद्योयानि सदर मोकाम कलि-
काना वैठक श्रीयुत जावर्ज्ज इष्टाकोएल साहेव कायेन मोकाम
टाकिम आदालत मजकुरा सन १२३५ साल तारिख १८ मे, मो०
सन १२४२ साल तारिख ५ ज्येष्ठ ।

मलिलाल कल्याणसिंह

आपीलएटान

ब्रजलाल ओ शीताराम ओ गयरह

रेष्पाडएटान

आपीलएटेनेर उकिल मुनशी गोलाम आहमद ओ रष्पा-
डएटानेर उकिल जिमिश कोठलवोरक सदरलेण्ड साहेव ओ
मुनशी दादारवस्क खाँ हाजीर आशीलेन । एइ मोकदमा २६
आपरेल तारिखे आमार निकट रुवकार हइया ४६ नम्बर पय्यन्त
कागजात पढागिया दिवाबरान प्रयुक्त ओ ऐ माहार २८ तारिखे
रेष्पा(ड)एटानेर उकिलेर हाजीर ना हओोर जन्ये मुलतधि छिल.
पुनराय अथ रुवकार हइया वाकी कागजात पढागेल । जे हेतुक

मिछिलेर कोगजात विवेचनार द्वाराय थो मोकईमार गतिकेरं दीष्टे एइ मोकईमार चूडन्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते एइ विशय जिझाशा करा आविश्यक थो जरुर जे बेहार देशेर चलित शाखेर द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्ध द्यमता आछे कि ना—ये आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ओ यद्यपि पुत्रेर परलोक हय, तवे पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना। ओ यद्यपि स्यात् तथाकार चलित शाखेर द्वाराय ए प्रकार वस्तु हस्तान्तरे निषेध थाके, तवे एमत स्थले ऐ विक्री अशीर्द्ध करणेर शाकीमके कर्त्तव्य ओ आविश्यक बटे कि ना, एवं पैतृक वस्तु समुदय किम्वा ताहार मध्ये किञ्चित हस्तान्तर करणेर विषये शाखेर मध्ये किछु विशेष पाओया जाय कि ना। आर एइ आदालतेर सेरेस्ता हइते एइ विशय ये इहार पूर्व्वे एइ आदालते शुभे बेहारेर मोतालकेर कोन मोकईम्मात एमत कोन फयछला ये पैतृक विशय हस्तान्तर करणे सिद्ध अथवा असिद्ध हइआ थाके जाना आविश्यक। अतएव हुकुम हईल ऐ निचेर लिखित मत प्रश्न एइ रुवकारिर नकलेर सम्बलित एइ रुवकारि पौछिवार तारिख हइते सप्ताह मेयाद मध्ये प्रत्युत्तर लिखिवार हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ओ एइ आदालतेर सेरेस्ता दारेर कर्त्तव्य ये तलवि कैफियत सेरेस्ता तह्लास ओ तहकीकात करिया गुजरान इति।

प्रथम प्रश्न :—

शुभे बेहारेर चलित शाख द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्ध थो द्य(म)ता आछे कि ना। ये—आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे।

द्वितीयप्रश्न :—

पुत्रेर परलोक हइले पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना—

तृतीयप्रश्न —

यद्यपि तथाकार चलितशास्त्रर द्वाराय एमत वस्तु हस्तान्तरैर विशये निषेध थाक, तवे एमत स्थले ए विक्री असिद्ध करिवार हाकिमक कर्त्तव्य थो आविश्यक बटे कि ना इति ।

चतुर्थप्रश्न —

पत्क वस्तु समुदाय अथवा ताहार किञ्चित् हस्तांतर करि वार विशये शास्त्रे किछु विशेष पाओया पाय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्रम्भाधिकरणाभपतिस्थानाभिपिक्तश्रोयुतवाञ्छदृष्टाक'एलसाहेब धर्माधिकरणलिखितेशचीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगने'दुमितान्दीयममासीयाष्ट दशदिवसीयावचारपत्रान्तगतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तद्वदीयत'मासीयत्रयाविश तितमदिनसम्बाधश नवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त दनुसारेणोत्तर लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

बहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण पुत्रस्य पौत्रस्य वा अनुमति विना पैतृकरथावरस्य हस्तान्तरकरणे पितु पितामहस्य वा स्वच्छया स्मृता मास्तीति । द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पय्यब्रहितामति पृथङ् न लिखितमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालाना सर्वस्यैव पिता प्रभु ।

स्यावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामह ॥—इति मिताक्षरादि प्र भूतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्य उत्तरम्—

बहारदेशचलितशास्त्रानुसारेणैतादृशवस्तुनो हस्तान्तरविषये पितु पितामहस्य वा स्वच्छया निषेधे सति शास्त्रनिषिद्धविक्रयासिद्धकरण धम्माधिकरणाभपते कचन्यम'वश्यञ्च भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिर्नोक्तयैः सह ।

धर्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि मिनाक्षरादिग्रन्थभृतनाशकत्वप्रचनम् ॥१॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पैतृकवस्तुसमुदायस्य यत्किञ्चिद्भस्तुनो या हस्तान्तरकरणविषये शास्त्रे कश्चिद्विशेषोऽस्ति^१ । स च विशेषः प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणे लिलितः—

इति वेदार्देयचलितमनुमिताक्षराबोरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति ॥

इंशपोशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयनवमदिनसम्बन्धि-
मङ्गलवाचरे मया प्रश्नप्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६७.— सं २२२ सन १८३३ साल—

मोक्षम कलिकाता सदर देशोञ्जानि आदालतेर ध्रीयुत
ओलीयम घाडिन साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर पैठकेर इ० सन
१८३५ सालेर २८ मे भोलाचक बाङ्गला सन १२४२ सालेर १५
ज्येष्ठ बृहस्पतिवारेर रोवकारि ॥—

भोलाजाधदास

आपोलायट

श्रीमतीसावित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ गायरह रेप्पाडयटान

आपोलायटेर उकिलमुनशी होछेन थालि ओ हाजिरा
रेप्पाडयट श्रीमतीसावित्रार उकिल राधाकृष्ण ओ गोपालकृष्ण-
सिंहेर उकिल सदासुखपरिदत हाजिर आइल । एइ मोकरना

एइ मासेर १६ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य पुनराय दरपेस हइया ए आदालतेर पण्डितके हजुरे तलव करिया ये व्यवस्था कोटेर हाकिमेर तलवानुसारे पण्डित लिखियाछिलेन ताँहाके अर्पन करिया निज्ञाशा। करामेल ये एइ व्यवस्था दृष्ट करिया ताहार ये अर्थ यथार्थ ह्य बलेन। पण्डित दृष्ट ओ गधोर करार पर कहिलेन ये प्रथम प्रनेर शेपेर प्रत्युत्तरेर विशयेर अर्थ एइ ये ये पुत्र आपन माताके मन्द कहे से पुत्र, ये पय्येन्त प्रायश्चित्त ना करे, उत्तराधिकारिहेतुते कोन एक सत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे। ना जखन भोलानाथदास हलफ करिया कहियाछे ये ताहार विमाता व्यभिचारिणीर कर्मे इच्छुक हइया मानेर लापव करियाछे, ओ व्यभिचारिणीर कर्मकरार हेतुते शास्त्रानुसारे जातीर व्यवहार हइते वाहिर हइयाछे, उपरेर लिखित विशय हाकिमेर तजविजे साबुद ह्य नाइ। एवं उक्त व्यवस्थार मध्ये ए विशयेर कोन विस्तारित ये एमत मन्द कहने कि प्रकार प्रायश्चित्त करिते हइवेक लेखा नाइ। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ ये ए विशयेर जओव, ये विमातार पत्ते उपरेर लिखित विशय सम्बन्ध करणे ओ ताहा साव्यस्त ना हओने उहा वक्ता पुत्रेर पत्ते वक्तादेशीय चलित शास्त्रानुसारे कि प्रकार प्रायश्चित्त उचित, ओ ये प्रकार पापेर प्रायश्चित्तेर जन्य शास्त्रेर मध्ये किछु मेयाद निःधाय्य आछे कि ना। यदि थाके, तवे ताहार प्रकाश हओनेर दिवस हइते कत दिवस मध्ये प्रायश्चित्त करिबेक—एइ रोवकारि पाओर तारिख हइते तिन दिवस मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिधीयुतओलिपमवेराडीनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताश्रीयमेहमासीयाष्टविंशतितम-

दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिषोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणांतरं लिख्यते—

व्यभिचारदोषरहिताया विमातृ राजसन्निधौ शानपूर्वकं व्यभिचारदोष-ख्यापनात्यन्ताभ्यासजनितपापप्रशमनायं द्वादशवार्षिकं महाव्रतं कर्त्तव्यम् । तत्राराक्तौ साशीतिशतसंख्यकधेनुदानं तन्मूल्यस्य वा चत्वारिंशदधिकपञ्चशतकार्पाणस्य तत्तुल्यस्य सुवर्णस्य रजतस्य वा दानं कर्त्तव्यम्, दक्षिणा च गोशतं तन्मूल्यं वा कार्पाणशतं देयम् । एतत् प्रायश्चित्तं संवत्सरमध्य एव कर्त्तव्यम् । संवत्सरानन्तरमुपरिलिखितैतत्प्रायश्चित्तस्य द्विगुणं प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्—इति मनुप्रायश्चित्तविवेकप्रायश्चित्ततत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अथ प्रमाणम्—

अनृतन्तु समुत्कर्षे राजगामि च पेशुनम् ।

गुरोश्चालीकनिर्वन्धः समानि वसहृत्यया ॥ इति मनु(११।५५)-

वचनम् ॥ १ ॥

अकामतो द्वादशवार्षिकं कर्त्तव्यम्, तदशक्तावशीत्युत्तरपयस्विधेनुशतं देयम्, तदशक्तौ चत्वारिंशत्पुराणोत्तरचूर्णीपञ्चशतमूल्यं हिरण्य-दिकं देयम्, दक्षिणायां गोशतदानाशक्तौ चूर्णीशतमेकं देयम्—इति प्रायश्चित्तविवेक(पृ० ८८)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्मृतिसागरे देवलः—कालातिरेके द्विगुणं प्रायश्चित्तं समाचरेदिति । कालातिरेके संवत्सरातिरेके संवत्सराभिशास्तस्य दुष्टस्य द्विगुणो दमः इति मनुवचनेन—इति प्रायश्चित्ततत्त्व(पृ० ४७४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥ ॥०॥०॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयत्रयोविंशतितमदि-नसम्बन्धिषड्वलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६८)—लं १४ सन १८३४ साल खास आपिल—

रुक्कारि मिडिल सदर देओनि आदालत मोकाम कलि-
काता आदालत मजकुरे कायेम मोकाम हाकिम एडओयार्ड
जान हारिस्टन साहेवेर बैठके इ० सन १८३५ साल तारिख
२६ मे मोताबक घाडला सन १८४२ साल तारिख १६ ज्येष्ठ
दिवस शुक्रवस ? ॥—

रत्नाकरविपुइ ओ पुरिविपुइ आपिलाएटान

साधुचरणाविविगञ्जन ओ गयरह रण्पाडएटान

आपिलाएटानेर उकिल मुनशी दादारवक्स खाँ हाजिर
आइल । रण्पाडएटान तालपत्रे उडिया अहुर ओ मजमुने एतैला
नामार रशीद लिखिया दियाओ हाजीर ह्य नाइ । अद्य एड
मोकदमा एकतरफा सुरत आमार बैठके उपस्थित हइया मोक-
दमार कागजात मोनाहेजाय बोध हइल ये वादि अर्थात्
आपीलाएटान नेहालपुर जमिदारि मध्ये रकम (१५८) आना
आपनारदिगेर पेटुक एजहारे दखल देलाइया पाइवार दाविते
जेला कटकेर देओनि आदालते नालिस करे । प्रतिघादिगण आप-
नारदिगेर जओव वादिदिगेर एजहार ओ दावि हइते अस्वीकार
हइया गुजराइलेक । जेलार जजसाहेवेर तजबिजे मुदइयानेर
हबेक डिकरि हुकुम सादेर ह्य, एवं सेइ डिकरि आपिलेर
आदालते रद ह्य, ताहार पर खास आपील सुरत ए आदालते
उपस्थित ह्य । एइ मोकदमार कागजात द्वारा प्रकाश ये जमिदारि
मजकुरार मालिक मुदइयानेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगञ्जनेर
मृत्युर पर तिन पुरुश पर्यन्त मतओफा मजकुरे हासील
करा वस्तु प्रधान पुत्रेर नाने कालेकटरि ओ गयरहते नामाङ्कित
ह्य, ओ आमलि सन ११६५ साले पूर्व पुरुष मजकुरेर आसल
ओयारिसानदिगेर मध्ये प्रथकात्र हइया स्थावर वस्तु हिस्या
करिया नय । ए ह्यने उभय विवादिर मध्ये एइ विवाद
प्रकाश ये आपिलाएटान प्रकाश करे ये आसल पूर्व पुरुष

मजकुरेर सकल थोयारिसान जमिदार थो हकदारेर न्याय विधादेर वस्तुते दरिखलकार स्थित । प्रधान पुत्रेर नाम जारि थाकिते बेवाक जमिदारिर हकदार ओ गालिक से नहे इति । उभयेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगञ्जनेर सोपात्रित ओ त्यक्त सकल जमिदारि करार दिया रेग्नाडस्ट जाहेर करे ये सुदइयान आपिलास्टान ऐ जमिदारिर हक्रीयत ओ कर्तृत्व ओ दरिखलकारिर पचे किछुहु एलाका राखे ना, वरं आपोलास्ट-दिगेर पिता मालगुजारिर उमुल तहशील कागज पत्र लिखित पडित करा पत्र ऐ जमिदारिर परखि ओ मददगारि कर्म नियुक्त थाकिया रेग्नाडस्टदिगेर स्थाने मोशाहेरा लइयाछे । अतएव प्रथम एइ विशय बोध करा आविश्यक हइल ये एन काल गतो होार परे ए द्यने ऐ जमिदारिर परस्पर उत्तराधिकारि-दिगेर मध्ये विभाग हइते पारे कि ना । ए कारणे हुकुम हइल ये एइ कवकारिर सकल कागजात सम्वलितएइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय ये मोकरमार कागजात दृष्टे फटकेर चलित शास्त्रानुसारे एइ विशयेर व्यवस्था ये एतो काल गतो परे विरोधि जमिदारि पूर्वोक्त पूर्व पुरांर उत्तराधिकारिदिगेर महित एत्तेने वचक हइते पारे कि ना—एक समाह मध्ये लिखेन इति ॥०॥

श्रीर्जयतिराम्

एन इस्मायिकस्य अधिपतिरथानामि. विकधीनुनए उओका उर्जवान इति एतोन-
सा हेवभस्मानि इरणलिगिने राको रान्दप्रतिनाये गुणगजेन्दुमिता न्दीर्षमनाधी-
येनत्रि रात्तनदिनसीधमिनाएव्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरुग्नेन तत्तमभिहितेद्विवादनि-
पयनि विद्वारसीक लभिजातञ्च सत्तदन्दीयज्ञानमासीयननुयंदिनसम्बन्धिदृश्य-
तिवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य वादराबोयो वातन्त्रदनुवायेत्तं चरं लिख्यते—

गते येतानवि काले इदानीमपि विवादात्तदंभूतसरावकरस्यावरस्य

विभागस्तद्धनस्यामुत्तराधिकारिणां मध्ये भ्रिनु योग्यो भवति—इति कटक-
देशचलितमनुमिताक्षरावीरमिश्रोदयादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते निजे प्रेते तत्सुतमृन्महागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेताशं स पित्र्यन्तु पितृव्याद्वापि तत्सुतात् ।

स एवांशस्तु सर्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभते तत्सुतो वापि—इति वीरमिश्रोदयादिग्रन्थवृत्काल्पायन-
वचनम् ॥१॥०॥

इंशवीशब्दप्रतिपान्नेपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाद्रिपक्षमितदिन-
सम्बन्धशनिवासरे मया प्रमुखमपितैतद्विवादनविष्टपत्रजातविचारपत्राभ्यां
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६६)

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरसाधिपतिश्रीयुतश्रलकसिन्दरज्ञानकालविनसाहेवधर्मा-
धिकरणकवेदान्यप्टेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिचिचारपत्र-
संवलितेतन्मधुरादेव्यायिनीप्राणकुण्डकृष्णलालप्रत्ययिविवादनविष्टपत्रजात-
यदेतदब्दीयैतन्मासीयपष्ठदिवसोयशनौ घटिकैकोत्तरयामद्वये मया प्राप्तं तद-
वलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर दीयते—

एतद्विवादनविष्टपत्रजातमवलोक्य कश्चिद्धर्मचन्द्रनामा पुरुषः सर्वत्रैव
स्वपत्न्यपुत्रपत्न्योः स्वविभक्तसक्रान्तस्थावरास्थावरसकलघनस्य स्वदौहित्र-
विहारीलालसम्प्रदानकं दानपत्र विलिख्य स्वपत्नीपुत्रपत्नीदौहित्रोत्पत्त्वा-
ममार । पुनस्तत्पत्नी देवापि स्वपतिदत्तघनस्य दानपत्रं तस्मा एव दौहित्राय

दत्त्वा पुत्रवधूँ दौहित्रं च विहाय स्वर्लोकमगमदिति निश्चितम्भया । तत्रैतन्-
प्रकारके वृत्ते सा स्तुपा प्राप्तदानपत्रविहारोलालपुत्राभ्यां प्राणकृष्णकृष्ण-
लालाभ्यां स्वश्वशुरधने लब्धुमीहमाना विवदते । तत्रैवं विषये धर्मचन्द्र-
तत्पत्नीदत्तदानपत्रमनुसृत्य तद्धनादर्थिनोमदत्त्वा प्रत्यर्थिनोः पितुः किञ्चित्
प्राप्नोति न वा । अथ तद्दानपत्रमनुसृत्य नाप्नोति चेत्तदा धर्मचन्द्रस्य
मातामहस्य धने विहारीलालस्य दौहित्रत्वेन किञ्चित् स्वत्वमंशं वा
प्राप्तुर्महति न वा । प्राप्नोति चेत्तस्मिन्नुः कथं तत्स्तुपायाश्च श्रीगोपाल-
पुत्रपत्न्याः कीदृग् (अशः) इति प्रश्नः । तत्र तेन धर्मचन्द्रेण तद्दाना-
वसरे तस्माद्दानात् स्वपत्न्यै पुत्रपत्न्यै च पृथक्त्वेन किञ्चिद्दत्त्वा तद्दानपत्रं
दत्तमिति दानपत्रादिभ्यो प्रतीतेस्तद्दानमसिद्धं भवितुर्महति, सर्वस्वदानादु-
त्तराधिकारितत्वे सर्वस्वदाननिषेधस्य सकलनिवन्धसिद्धत्वात् । तथा च
तद्धनं धर्मचन्द्रस्यासीत् । अथ धर्मचन्द्रमरणात् तद्धनं तत्पत्न्या
देवाया आसीत्, दौहित्रादिसत्त्वे विभक्तापुत्रमृतधने पत्न्यधिकारस्य सर्वपि-
सम्मतत्वेन प्रसिद्धत्वात् । अथ धर्मचन्द्रमरणाद्देवाप्राप्तं तद्धनं देवाया
'अपि दातुं न शक्यते पूर्वोक्तहेतोरत्रापि तुल्यत्वात्, विशिष्योत्तराधिकारि-
सत्त्वे स्त्रियाः स्वापतेयस्थावरदिदाननिषेधाच्च । तथा च यद्यपि मिताक्षरादि-
ग्रन्थेषु स्तुपाधिकारो न गणितो गणितश्च दौहित्राधिकारस्तथापि श्वश्र्वा
देवाया मरणात्तद्धनं मथुरादेवी तत्स्तुपा प्राप्तुर्महति', पत्न्योत्तराधिकारि-
शून्यविभक्तमृतधने सत्स्वपि दुहित्रादिपुत्राधिकारिषु स्तुपाधिकारस्य सर्वदे-
शीयानादिसिद्धलोकव्यवहारसिद्धत्वात् । लोकव्यवहारस्यापि शास्त्रसम्मतत्वात्,
लोकव्यवहारविरोधे प्रजाप्रज्ञोमादिदोषाणां कीर्तनाच्च । परन्तु तथा मथुरा-
देव्या विवादास्पदीभूतं गृहत्रयं भाटकादिरूपेण भोगेन भोक्तव्यमेव, परं
न तद्दानव्यथादिकं कुर्व्याद् आवश्यकं विना, उत्तराधिकारिसत्त्वे तन्निषेधात् ।
अथ यदि पूर्वोक्तदोषसद्भावेऽपि प्रभुणा अनादिसिद्धलोकव्यवहारो नाद्रि-
यते' तदा देवाया मरणात् तद्विहारिण एव आसीत्, तस्य दौहित्रत्वेन प्रब-

१. देवायापि—न्यप० ।

२. मथुरादेवी तत्स्तुपा प्राप्तुर्महति—न्यप० ।

३. नाद्रियते—न्यप० ।

लोचराधिकारित्वात् । तन्मरणात्तत्पुत्र्याः प्राणकृष्णकृष्णलालयोरासीत्,
पितृधने पुत्राधिकारस्य निर्विवादसिद्धत्वात् । परञ्चास्मिन् पक्षे विहारीलाल-
पुत्राभ्यां मधुराया भरणमवश्यमेव कर्तव्यम्, तस्या मूलधनिनः पुत्रवधू-
त्वात्, विहारीलालस्य च धर्मचन्द्रस्थानीयत्वादेतादृश्या भरणस्य लोका-
प्रसिद्धत्वात् । अधार्थिपित्रोर्विभागस्तु न सम्भरति मातुलेन तदा पुत्रयोर्वि-
भागस्य शास्त्रलोकोभयविरुद्धत्वाद् इत्येतद्देशप्रचलितमनुमिताह्णरावीरमिनो-
दयविवादचिन्तामणिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेयमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वकुटुम्भाविरोधेन देयं दारसुतादते ।

नान्वये सति सर्व्वस्व यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥ इति मितान्तरादि-
सफलनिबन्धधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

गृह्णात्यदत्तं यो मोहाद् यश्चादेयं प्रयच्छति ।

दण्डनीयावुभावेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता ॥—इति विवादरत्नाकरे
नारदवचः ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि सकलनिबन्धधृत-
याज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

भर्त्रा प्रीतेन यदत्तं स्त्रिये तस्मिन्मृतेऽपि तत् ।

सा यथारोगमश्नीयाद्द्याद्वा स्थावरादते ॥—इति मितान्तराधृत-
वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः आरूपवृत्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥

जनापरह्निर्भवति नल कोशश्च नश्यति ।—इत्यादीनि वीरमि-
नोदयादिधृतानि बृहस्पत्यादिवचांसि ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा उर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति तत्रैव
कात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

यावत्सो विधवा नाभ्यो ज्येष्ठेन स्वशुरेण वा ।

गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याच्छादनाशनेः ॥—इत्यपि तत्रैव नारद-
वचनञ्च ॥७॥

एतदन्दीयदिशम्बरमासीयविशतिदिवसीयशनी दत्तेयं व्यवस्था मयेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

संशोधितमिदं व्यवस्थापत्रं पण्डितहरदयालमिश्रनागरीनवीक्षेनेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

रोवकारि मिड्डिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
एलाहाबाद मानएटुकु हुन्नरि टरम्बर साहेव आदालत मजकुरेर
हाकिमेर बैठके तारिख २० जानेर सन १८३५ साल इ० मोतावके
तारिख ६ माघ सन १२४२ फइलि रोज मङ्गलवार ॥

मथुरा दलोइ —

आपीलाएट—

प्राणकृष्ण ओ कृष्णलाल, बेहारीलालेर पुत्र—रेण्वाडएटान्—

आपीलएटेर उकिल लाला लछमनसिंह ओ रेण्वाडएटेर उकिल
मिरजारङ्गीनवेग हाजीर हइल । एइ मकईमा सन १८३४ सालेर
२१ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे प्रथक प्रथक तारिखे आमार
बैठके रोवकार आर ऐ सकल तारिखेर रोवकारिसकलेर
लिखित कागजात पढा जाइया मुलतवि छिल । अब्ब पुनराय
रोवकार हइया बोध हइल ये आपीलाएट साबेक मुइइया आप-
नार स्वामीर पिता धरमचाँदेर विषय तिन खान चाटीर दखल
पाओनेर दावीते मुदाआलेहेमार नामे नालिस करे । मुदाआले-
हेमार जघाबेर खोलसा एइ ये मुदाआलेहेमार पिता बेहारि-
लालके ऐ बेहारिलालेर मातार पिता धरमचाँद आपनि यत्तमाने

हइते प्रति पालन करिया आपनार काइम मोकाम करिया । पुष्य पुत्र करिया फरजन्दीनामा लिखाइयादेन, आर आपन नामेर खालीसा सरिफारनाम वादसाहेर हुजुर हइते मुहा-आलेहमार पिता बेहारिलानेर नामे लिखियादेय । ओ ताहार फौत परे मोहम्मतात देओयानविधि धरमचादेर स्त्री आदालतेर साहेवेर दस्ताखति दस्तावेज लिखिया उहार हाओयाले करे, आर आपन विशय साबुत करणेर निमित्ते सन १८१२ सालेर १२ सेतम्बर तारिखेर लिखित धरमचादेर मोहरि फरजन्दीनामा दस्तावेज ओ सन १८१५ सालेर २३ नवम्बर तारिखेर लिखित धरमचादेर स्त्रीर लिखिया देओया दस्तावेज दरपेस करिलेक, आर एइ आदालतेर पण्डित सन १८२४ सालेर १ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे एक केता व्यवस्था एइ खोलासाय जे मिशिलेर कागजात हइते प्रकाश हय ना—जे धरमचादे हेवानामा लिखन कालिन आपनार स्त्रीके क्रिम्या आपनार पुत्रवधूके दिह्यु दिया थारे, तवे से हेवानामा ग्राह्य हइते पारे ना । आर हेवा अग्राह्य करण ऐ मालेर मालिक धरमचादे हय । ओ धरमचादेर फौत परे उहार स्त्री मालिक हय । धार ऐ मालेर हेवा उहार स्त्रीर करणेर क्षमता नाइ । आर यद्यपि भितानरा पुथिते पुत्रवधूर हकियतेर शुमार लेखे नाइ, आर दीहित्रेर हकियतेर शुमार लिखियाछे, तथापि मोहम्मतात देओयानेर फौत परे ऐ मालेर अधिकार आपीलण्टेर हइवेक । यदि जे केइ विशय बिना सरिकि राखिया फौत करे, आर ताहार पुत्र जो पीत्र ओ स्त्री ना थाके, आर फन्या ओ दीहित्र ओ गयरह ओयारिप थाके, तथापि ऐ माल पुत्रवधुर हकियते पीछन चीर काल हइते देशेर रक्षम आर रेओयाज सकल मुलुके न्याय्य आछे । आर ताहा शाखेते ओ न्याय्य आछे, आर आपीलण्टेर ज्ञान विक्रि करणेर क्षमता नाइ । आर यदि रेओयाज अग्राह्य हय तवे देओयानेर फौत परे बेहारिलाल, जे दीहित्र ओयारिस

आछे, उहाके पौछिवेक दाखिल करिलेक इति । ए कारण एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखनेर धाराय प्रकाश आछे ये मितान्तरा पुथिते पुत्रे खीर हकिएतेर शुमार किछु लेखा नाइ, दौहित्रे हकिएतेर शुमार लेखा आछे; ताहाते ओ ऐ रछम ओ रेओयाज चिरकालेर ओ शाखेर पछिन्दो लिखीयाछे, आर मेघनाटनसाहेवेर तैयारि दायभागेर तरजना केतावेते प्रकाश ये यदि कोन व्यक्तिर पुत्र पौत्र ना थाके ताहार विषयेर मालिक ताहार दौहित्र हइवेक, पुत्रवधु हइवेक ना, जाहार स्वामी आपन पितार सुमुखे मरे—ए निमित्त चुडन्त हुकुम छादेर करगोर पूर्व कलिकाता सदरेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलव करा आर एइ विषय जानियार निमित्त ये एइ धारार मकदमाते रछम रओयाज अपेक्षा शाख बलवान कि चिरोकालेर देशेर रछम रओयाज ये प्रकार एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाते लिखा आछे, ओ ताहा यदि शाखेर बहिर्भूत हय तवे रेओयाज हओयार योग्य हइते पारे कि ना । मोनाछव बोध हइया हुकुम हइल ये मकदमा अद्य मुलतवि थाके, आर एइ रोवकारि नकल एइ आदालते पण्डितेर व्यवस्था नकलेर सहित एइ आविरयके ये एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था मोलाहेजार परे तलव करा व्यवस्था दाखिल करेण—एइ आदालतेर रेजष्टर साहेवेर चिठीर द्वाराय मोकाम कलिकातार सदरेर रेजष्टर साहेवेर निकट पाठान जाय इति ॥—

श्रीर्जयतिराम

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रम् यदीश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुगुण-
गजेन्दुमितान्दीपकेवरवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया
प्राप्तं तदबलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

धर्मचन्द्रनामा कश्चित् परत्यां पुत्रपत्याञ्च विद्यमानायां स्वस्वत्वा-
त्सदीभूतस्थावरास्थावरसमुदापन्नं विदारोलालनाम्ने स्वदीहिनाय दत्त-

वान्—इति प्रभुसमर्पितव्यप्रस्थापनेण श्रावम् । एवञ्च सति धर्मचन्द्रस्य धन तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीव स्वस्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्त चेत्तदा तादृशधने तद्दानं सिद्ध्यति । धर्मचन्द्रस्य धन यदि तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्त न भवति तदा तद्दानं न सिद्ध्यति । एवञ्च सति तद्दानस्यासिद्धत्वात् धर्मचन्द्रत्यक्तधने तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या देवानाम् वा एवाधिकार आसीत् । तस्याञ्च मृताया तस्य धर्मचन्द्रस्य काचिद्दुहिता चेद्विद्यमाना तदा तस्या अधिकार आसीत् । तदभावे धर्मचन्द्रस्य दौहित्राणामेवाधिकारः । किन्त्वेवञ्चेदपि धर्मचन्द्रपुत्रवध्वा जीवति धर्मचन्द्राख्ये स्वपतिपितरि मृतपतिकाया यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्ते धर्मचन्द्रत्यक्तधनान्तर्गतधने अधिकारः । तत्र च धर्मचन्द्रपुत्रवध्वाः पतिपुत्रादिविहीनत्वेनानन्यपतिकाया धर्मचन्द्रत्यक्तधनमात्रोपजीविन्या धर्मचन्द्रदौहित्रैः सह विरोधे सति पृथक्त्वेन यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनग्रहणस्य आवश्यकतैव । तदतिरिक्तधन एव धर्मचन्द्रदौहित्राणामधिकारः । एव च सति परिचमदेशीयैर्धर्मशास्त्रार्थविशारदैरन्यैर्वा धर्मशास्त्रार्थानुष्ठातृभिः शिष्टैः प्राचीनैर्जीवति पितरि मृतस्य पुनस्य पत्न्या विद्यमानाया स्वदौहित्रेषु विद्यमानेष्वपि पुत्रवध्वा यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तमात्रमेव धनमस्तीति ज्ञात्वा यावज्जीव पुत्रवध्वा एवाधिकारो न्याय्यः । दौहित्राश्चेत्तद्दानाधिकारिणस्तदा तेषां पुत्रवध्वा सह विरोधोऽस्तीत्यतस्तस्या यावज्जीवं प्रासाच्छादनाद्यावश्यकविधवाधर्माद्याचरणमपि न निर्वहतीति विविच्य यावज्जीव पुत्रवध्वा एव तद्दाने अधिकारोऽस्त्विति व्यवहृतस्तन्मूलशब्देत् पुत्रवध्वा यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तरवशुत्यक्तधने तस्या अधिकारस्तदा धर्मशास्त्रीययुक्ति सिद्धरैतादृशव्यवहारस्य धर्मशास्त्राविरुद्धस्य

धर्मशास्त्रानुसारेण प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं शक्नोति, अन्यथा प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं न शक्नोतीति पश्चिमदेशचलितमनुमिता-
क्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥--

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनोदये यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वान्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सवस्त्रचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरांतरः ॥

स्वर्ग्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णोप्ययं विधिः—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

यावत्यो विधयाः साध्यो ज्येष्ठेन स्वशुरेण वा ।

गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याश्चादनाशनैः ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्यायः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥५॥

ईशवीर्यबद्धप्रतिपात्रेपुगुणभजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयद्वितीयदिन-
सम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रं च यत्तदब्दी-
यफेवरवरीमासीयवगुणद्विमितदिनसम्बन्धिशनिकासरे मया प्राप्तं ताभ्यां
सहिता प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तरमंगरेजोलिखनञ्च यत्तदब्दीयमेमासीयसरे-
न्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं ताभ्यां च सहितेषु व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७०) रोवकारि मिखिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस-पिपरसाहेवेर वैठके । तारिख १६ भाइ इ० १८३५ साल मोतावके ६ ज्यैष्ठ १२४२ साल वाङ्गला दिवस मङ्गलवार ॥—

रामकृष्णराय

छायेल

छायेलेर उकिल सदामुखपरिटत ओ द्वितीय पत्त काजी-किशोररायेंर उकिल मुनशी होसन आलि हाजिर आइल । सन हालेर २३ आपरेल तारिखेर हुकुमानुसारे जेला मयमनसिंदेर देओयानी आदालतेर जजसाहेवेर रिटरण ओ इ० १८३५ सालेर ५ आपरेलेर लिखित तथाकार रोवकारि ओ साचीगणेर एजहार सम्वलिष्ट इं १८३४ सालेर २८ जानेओयारिर छादेर हओया एइ आदालतेर हुकुमेर प्रत्युत्तरे छओयालादि कागजसकलेर सहित अद्य दरपेप हइया पढागेल । रिटरणेर सम्वलित जजसाहेवेर प्रेरित साचीगणेर एजहारेर द्वाराय प्रकाश ये नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार स्थाने रामनृसिंहराय डिगरिदारेर पाओना कर्ज टाका ताहार किछु जमीदारिर कम्म निर्याह अर्थात् सरकारि मालगुजारि आदायेते आ किञ्चित गोलकमनिर सावेक देना परिशोधे खरच हइयाछे । ओ कोन सन्देह प्रनाश हय नाये कर्जार टाका मजकुर उक्त देव्यादिगेर सेच्छा ओ बाञ्छा सिद्धिते निज तछरुपे खरच हइयाछे । ए जन्य उचित ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर प्रत्युत्तर दुइ समाह मेयादे तलय हय, ये उपरेर लिखनानुसारे उक्त देव्यादिगेर हिस्यार वस्तु, याहा इं १८३३ सालेर १२ जानेओरिर जेलार जजसाहेवेर रोवकारिर लिखित रफानामा ओ छोलेनाभार द्वाराय उक्त देव्यादिगेर जीवदशापर्यन्त स्थैर्यता पाइयाछे, डिगरिदारेर हासील करा डिगरि परिशोध विक्रय हइते पारे कि ना । एवं एइ आदालतेर पण्डितेर उचित ये उपरेर लिखित छओयालेर प्रत्युत्तर लिखने गौरिप्रसादचौधुरि

चनाम जयमालाचीधुराणीर ८३५ लम्बरेर मोऊर्दमार इ १८२७ सालेर ७ फिवरओयारिर लिखित पइ आदालतेर व्यवस्था एवं खजे आवेठेरुठोएव एस्फानुद्ध' द्याएलेर मोऊर्दमार दख्त इ १८३३ सालेर १६ दिजम्बरेर लिखित आपन दाखिल करा व्यवस्था प्रति, जाहार प्रसङ्ग इ १८३४ सालेर १० फिवरओयारिर आमार रोवकारिते लेखा आछे, अनुबोधन करेण । आर चदि स्यात् पूज्जेर ओ पइ चनकार व्यवस्था-सकलेते किहु अन-अक्य ह्य, उचित ये उक्त पण्डित ताहार विस्तारित हेतु लिखेन, एवं पइ विशयेरो प्रत्युत्तर लिखेन—ये यद्यपि स्यात् देव्यादिगेर हिंस्या उद्धारदिगेर उभय ओ कालीकिशोररायेर छोलेंनामार दृष्टे, जाहार द्वाराय देव्यादिगेर हकीयत जीवइशा पर्यन्त स्थैर्यता पाइयाछे, त्रिकय हइते ना पारे, ओ प्रकार देनादार-दिगेर अर्थात् उक्त देव्यागयेर देनार सामुदाइक टाका, जाहा जमीदारिर मुनाफार जन्य खरच हइयाछे, निज खरचे व्यय ह्य नाइ, उक्त कालीकिशोरेर स्थाने तलब हइते पारे कि ना, आर से तलब पइ चने हइते पारे कि, उक्त देव्यादिगेर मृत्युर पर इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिध्रीयुतहेनरीठिकिसपीयरसाहेवधर्माधिकरण-लिखितेशबोशन्दप्रतिपात्रेगुणगजेन्दुमितान्दीयनैमासीयोनधिरातितमदिव-सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तद्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिनन्दवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुहुतविचारपत्रलिखितानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरंगी यौतयोर्जीवनपर्यन्तमीशशब्दप्रतिपात्ररामगुणगजेन्दुमितान्दीयजानवरी-

मासीयार्कमितदिवसीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिवृत्तविचारपत्र-
 लिखितनिष्पत्तिपत्रसन्धिपत्राभ्या स्थिरता प्राप्ती, जयपत्रकारयितृणा व्यक्ति-
 विशेषाणा जयपत्रलिखितमृगपरिशोधनार्थं विक्रययोग्यी भवितु न शक्नुतः,
 राजस्वीकृतसन्धिपत्रे तद्विक्रयस्य निषेधात् । शास्त्रानुसारेण कालीकिशोररा-
 याभिधेयस्य दत्तकपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारताया तत्स्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनस्य
 राजस्वसर्वतोभावेन रक्षकत्वेन राजकरदानार्थमप्राप्तव्यवहारपाकरणीयमृग
 शास्त्रानुसारेण केनचित् कर्तुंमावश्यक न भवति । एवमप्राप्तव्यवहारापाकर-
 णीयमृगपरिशोधनमपि तस्याप्राप्तव्यवहारताया केनचिच्छास्त्रानुसारेण
 कर्तुंमावश्यक न भवति, शास्त्रे अप्राप्तव्यवहारतायामृगपरिशोधनस्य विशेषे-
 षतो निषेधात्, कालीकिशोररायाभिधेयस्य प्राप्तव्यवहारतायाञ्च तद्देश्यमृग-
 परिशोधनस्य राजकरदानस्य च तन्मात्रकर्तव्यत्वेन तदितरेषा तद्ग्रहीतृमा-
 नृपितामहीप्रभृतीना कर्तव्यत्वाभावात् । एव गौरीप्रसादचतुर्दशीस्यार्थिनो
 जयमालाचतुर्दशीस्य^१ प्रत्यर्थिन्या पञ्चत्रिंशदधिकवसुशतपरिमिताङ्कितवि-
 वादनिषिष्टे तद्गर्माधिकरणीयेशश्रीशब्दप्रतिपाद्याद्रिपद्मगजेन्दुमितान्दीय
 फेवरवरीमासीयसप्तमदिनलिखितव्यवस्थायाः खाजाअवयटकटीयरइष्टपानु-
 सस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिन्या ईशवीशब्दप्रतिपाद्याग्रिगुणगजेन्दुमितान्दीय-
 दिशम्बरमासीयाङ्केन्दुमितदिनलिखितासप्तदशव्यवस्थाया भिन्नविषयकत्वेना-
 नैक्यशङ्कैव नावतरति । तथाहि गौरीप्रसादचतुर्दशीस्यार्थिनो विवाद-
 सम्बन्धुपरिलिखितव्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति—मृत्युञ्जयशर्मण्यः
 प्राप्तजयपत्रलिखितमृगं यदि शिवप्रसादस्यावश्यकथादासौर्ध्वदैहिकक्रि-
 यार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृत स्यात्तपरिशोधन
 यदि स्वसंश्रान्ततदीयाशुविक्रय विना न भवति, तदा जयमालोपस्थापितवृक्षा-
 न्तस्य सत्यत्वे असत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितमृगपरिशोधनोपयुक्तस्य
 तदीयाशान्तगतस्य विक्रयो भवितुर्महति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा,
 जयमालया कृतस्य मृगस्य परिशोधनार्थमिति । एतद्विररनस्येद बोधम्—
 शिवप्रसादचतुर्दशीस्य त्यक्तधन तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्यन्ताभावे तद्-
 ग्रहीतृमात्रा जयमालयेत्तराधिकारित्वेन प्राप्तम्, अतएव जयमालाजीवनप

व्यन्तमन्त्रेण फेनचिदुत्तराधिकारित्वेन धनिनः शिवप्रसादस्यावश्यकभ्राद्धाद्यौ-
 द्ध्वदैहिकक्रियाजातं जयमालाया भरणीपोषणञ्च शास्त्रानुसारेण कर्तुं न
 शक्यते, केवलं जयमालयैव कर्तुं शक्यत इति स्वाज्ञा अथपट कटीयर इष्ट-
 फानुष्ठस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिभ्यां व्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति । यदि
 मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य एतद्वर्माधिकरणार्थिनः पितृस्यक्तधने
 सन्धिपञ्चानुसारेणैतद्वर्माधिकरणार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जगदीश्वरीदे-
 व्याश्च स्वत्वं निश्चित स्यात्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तरधर्मा-
 धकरणे सत्यं जात स्यात्, एव तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवोमणोत्तरं
 सदायत्तीभूतांश्च एतद्वर्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा
 जगदीश्वरीदेवीदेयश्रृणुपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्यन्तमुपस्वत्वभोगार्थं तत्-
 पुत्रस्वत्वात्पदीभूततदायत्तीभूतोर्यो विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति, सन्धिप-
 त्रतात्पर्यार्थं धर्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्यवसानादिति । एतद्विस्तृतस्येदं बीजम्—
 मूलधनिनो रामाकशोररायाभिधेयस्य त्पक्तसमुदायधने उत्तराधिकारित्वेन,
 कालीकिशोररायाभिधेयस्य तदीयदत्तकपुत्रस्य स्वत्वं शास्त्रानुसारेण जातम्,
 न तु जगदीश्वरीदेव्यास्तत्पत्न्या नारायणीदेव्यास्तन्मातुर्वेति । अथ च
 मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यावश्यकभ्राद्धाद्यौद्ध्वदैहिकक्रियाजातं
 सत्त्वलोभातृप्रभृतीनां भरणीपोषणञ्च तदीयश्रृणुपरिशोधनं तद्देवराजकर-
 दानं च तदीयदत्तकपुत्रेण कालीकिशोररायाभिधेयेनैव कर्तुंमावश्यकं भवति,
 न तु तत्पत्न्या जगदीश्वरीदेव्या, तन्मात्रा नारायणीदेव्या वेति । यदि नारा-
 यणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरशयोर्नारायणीदेवाजगदीश्वरीदेव्योः कालीकिशो-
 ररायाभिधेयस्य सन्धिपञ्चानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्जीवनप-
 र्यन्तमुपस्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वयोश्चपरिलिखितानुसारेण विक्रययोग्ययोर्भ-
 वितुमशक्ययोरधर्मयोर्नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्द्वेषमृणुमुद्राजातं का-
 लीकिशोररायाभिधेयमूलधनिदत्तकपुत्रस्वत्वात्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य कृ-
 द्ध्यर्थमेव व्यवहितम्, नतु स्वस्वोपव्ययार्थं व्यवहितमित्यवगम्यमानं भवति,
 तथाप्युपलिलिखितोत्तरदृष्ट्या सन्धिपत्रलिखितनियमजातविवेचनया च समु-
 दायश्रृणुयाचनं कालीकिशोररायाभिधेयस्यान्तिके इदानीं जगदीश्वरीदेवी-
 नारायणीदेव्योर्भरणानन्तरं वा कदाचिदपि भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रता-

स्वर्गार्थशान्नाभ्या तथैव पर्यवसानाद्—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागा-
दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्वतो विद्रुते भयात् ।

रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजन् प्रभुः ॥ इति मनु(७।३)-

वचनम् ॥ १ ॥

वालदायादिकमृक्थ तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत् स स्यात् समावृत्तो यावन्नातीतशैशवः ॥ इति मनु(८।२७)

वचनम् ॥ २ ॥

नाप्राप्तव्यरहरैश्च पितृभ्युपरते क्वचित् ।

काले तु विधिना देय वसेयुर्नरकेऽन्यथा ॥ इति विवादार्यावसेतु

(पृ० २८) विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ५५२।पृ० ६।९)-

वचनम् ॥ ३ ॥

सर्वे ह्यनोरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतदेवलवचनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्या द दायभागादिग्र यधृतयाश्वल्क्यवचनम् ॥ ५ ॥

न स्त्री पतिपुत्रहत न स्त्रीकृतं पतिपुत्री—इति विवादार्यावसेतुविवाद
भङ्गार्णवादिग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ॥ ६ ॥

ईशवीशब्दप्रतिपादोपगुणगण्डेन्दुमिता•रीयजुलाश्मासीयेन्दुपद्ममितदि-
नसम्बन्धमङ्गलवासर मया प्रभुसमर्पितावचारपत्रविहितेव व्यवस्था-
दचेत ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७१)—मोकाम कलिकातार सदर दमानि आदालतेर सन
(१९५५ सालेर १६ जुन मोठापरु धात्रला सन १९५० सालेर ३

आपाठ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुन ओली-
यमत्राडिनसाहेवेर वैठकेर रोवकारि—

ल० २८६ सन १=३३ साल

वीरेन्द्रनारायणचीधुरि ओ गायरह

आपीलायटान

श्रीमती सत्यभामादेव्या

रेष्पाडेट

आपीलायटदिगेर उकिल सदासुकपरिडत ओ रेष्पाडेटेर
उकिलेदिगेर मध्ये गुनशी आमिनहीन महम्मद हाजिर आइल।
अद्य ए मोकदमा उपस्थित हइया जेलार ओ ए आदालतेर कागज-
सकल पाठ करागेल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए आदा-
लतेर परिडतेर स्थाने व्यवस्था तलय करा उचित बोध हइल।
ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर
लिखित विशयसकलेर उत्तर पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल
करेण, ए आदालतेर परिडतके अर्पन कराजाय।

प्रश्न-एक व्यक्ति हिन्दुर पाँच पुत्र छिल। ताहारदिगेर मध्ये
दुइ पुत्र आपन २ पितार समिचे निःसन्तान लोकान्तर हय, ओ
ताहार पर ऐ हिन्दु व्यक्ति मृत्यु हय, ओ ताहार मृत्युर पर उहार
वर्तमान तिन पुत्रगन आपन २ पितार तेज्य वस्तुर पर विभाग
द्वाराय दखलीकार हयेन, ओ तिन भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार
उत्तराधिकारिगण आपन २ पितार तेज्य विशयेर पर दखलीकार
आछेन, ओ एक भ्राता एक छां ओ एक कन्या राखिया लोकान्तर
हय, ओ मृत व्यक्ति स्त्री स्वामीर तेज्य विशयेर पर दखलीकार
हइया आपन कन्यार विवाह देओनेर पर ऐ विशयनकल आपन
कन्या ओ जामाताके हेवा करे, ओ ऐकन्या ओ जामाता हेवार-
द्वाराय ऐ विशयेर पर दखलीकार हयेन, ओ ताहारदिगेर नाम
केलकटारि सेरेस्ताय दाखिल हय। ताहार पर उक्त कन्या आपन
मातार समिचे एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय, ओ उक्त पुत्र
उत्तराधिकारि द्वाराय आपन मातार तेज्य वस्तुर पर दाखिल ओ
उहार नाम ताहार पितार अर्थात् उक्त कन्यार स्वामिर नाम

सम्बलित कालेकट्टरि सेरेस्ताय जारि ह्य । तत्परे उक्त पुत्र
 आपन पिता ओ मातामहिर समिचे लोकान्तर ह्य । ओ ऐ
 पुत्रे मृत्युर पर उक्त पुत्रे पिता ऐ सकल विशयेर पर हेवार-
 द्वाराय ओ उत्तराधिकारिरूपे दखिल हइया ताहा आपन द्वितीय
 छोके हेवा करिया ऐ खीर नाम कालेकट्टरि सेरेस्ताय जारि
 करिया दियाछे । अतएव मृत व्यक्तिर खी आपन कन्या ओ
 जामाताके ये हेवा करियाछे ताहा बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारं
 सिद्ध बटे कि ना, ओ मृत व्यक्तिर गोष्टीर पञ्चम पुरुशीय
 खुडततो भ्रातृपुत्रगणेर दाओो ये ऐ मृत व्यक्तिर ओ ठाहार
 खीर उत्तराधिकारिद्वाराय आछे, हेवार विशयेर संक्रान्ते ए
 हेतुते ओ ये उक्त भ्रातृपुत्रगणेर पत्त हइते हेवानामा लिखित
 पठित समये कोन एक आपत्य ना हइया थाके, तवे अर्थ
 कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणधिपतिभ्योयुतश्रीलियमवेराडिनसाहेवधर्माधिकरण
 लिखितेशबीरन्दप्रतिपात्रेपुण्यगजेन्दुमितान्दीयजुनमासीवरसेन्दुमितदिवसी-
 यविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयजुलाइमासीयमुनिमितदिन
 सम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणो
 त्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने
 ज्ञाताधिकारया पत्न्या यदि स्वानन्तरोत्तराधिकारिण्यै सम्भावितपुत्रायै स्व
 कन्यायै तत्पतये च स्वसक्रान्तपतिस्थावरादिधन दत्त स्यात् तदा तद्दान बङ्ग
 देशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, पत्न्यनन्तरोत्तराधिकार्यनुमत्या पत्नी-
 कृतस्यसक्रान्तरतिस्थावरादिधनदानविद्धेः शास्त्रीयत्वेन, पत्नीकृतस्वानन्त-
 रोत्तराधिकार्युद्देश्यकदानविद्धेः शास्त्रीयत्वस्वार्थसिद्धत्वाद्, जामानुद्देश्यक-
 दानस्यापि कन्यासम्प्रदानतायाः दान्या जामातुः पृथक्स्वत्वेऽप्यापि

ब्राह्मणजातीयजामातृद्देश्यकदानस्यादृष्टार्थतायाश्च शास्त्रीयत्वात्, पत्न्याः स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिघनस्यादृष्टार्थं दानक्षमताया अपि शास्त्रसिद्धत्वाच्च । एवं घनिनो मृतस्य पञ्चमपुरुषीयसगोत्रभ्रातृपुत्रैर्मृतस्य धनिनस्तत्कन्याश्चोत्तराधिकारित्वेनामियोषो दानविपयीभूतस्य बल्लुन उतरिलिखितोत्तरदृष्ट्या तेभ्यो भ्रातृपुत्रेभ्यः यकाशाचदानपत्रलिखनसमये तद्दानविपयकप्रतिबन्धकताया असम्पादनदृष्ट्या च शास्त्रानुसारेण साकांक्षो भवितुं न शक्नोति, तद्दानसमये तेषां भ्रातृपुत्राणामप्रतिषेधरूपाया अनुमतेरपि तद्दानसिद्धिसम्पादकहेत्वन्तर्गतायाः सत्त्वात्-इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

एतान्यपि प्रमाणाणि भर्ता यद्यनुमन्यते ।

पुत्राः पत्युरभावे च राजा वा पतिपुत्रयोः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

यदत्तं दुहितुः पत्ये स्त्रियमेव तदन्वियात् ।

मृते जीवति वा पत्यौ तदपत्यमृते स्त्रियाः ॥ इति दायभाग (पृ० ७५)-ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

दात्रभिसन्धिनिमित्तत्वात्स्वत्वस्य--इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

विष्णुं जामातरं मन्ये—इत्युद्गाइतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥४॥

मृते भर्तारि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।

स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सतिलाञ्जलीन् ॥

कुर्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम् ।

विष्णोराराधनञ्चैव कुर्यान्नित्यमुपोषणम् ॥

दानानि विप्रमुल्येभ्यो दद्यात् पुरयविष्टस्ये ।

उपवासांश्च विविधान् कुर्याच्छ्राद्धोदिताञ्जुने ॥

लोकान्तरस्थं भर्तारमात्मानञ्च वरानने ।

तारयत्युभयं नारी नित्यं धर्मपरायणा ॥—इति दायभागादि(दाभा०
पृ० १६४।१६५)ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥५॥

प्रार्थ्यमानोऽर्थिना यत्र यो ह्यर्थो नाभिधातितः ।

दानकालेऽथवा तृप्या स्थितः सोऽर्थोऽनुमोदितः ॥—इति प्राय-
श्चित्तविवेकादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनञ्चेति ॥७॥

ईशवीर्यवन्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयपञ्चमदिनसम्प-
न्निधुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७२)—ल० २१६

रुवकारि मेडल आदालते देशोयानी सदर मोकाम कलि-
कात्ता एजलाखे श्रीयुत जाबर्ज इष्टाकोएल साहेव हाकिम आदालत
मजकुरा सन १८३५ साल ता० ६ जुलाइ मोतावेक सन १२४२
साल वारिस २० आपाढ ।

गुरुपसादवसु

आपिलाष्ट

महेन्द्रनारायणवसु

रेप्पाडष्ट

आपिलाष्टेर उकिल मुनशी राधाकृष्ण श्रो रेप्पाडष्टेर
उकिल वंशीवदनमित्र हाजिर आसिल श्रो मिडिलेर कागजात
मोलाहेजा हइल । ये हेतुक एइ मोकदमार चुडन्त हुकुम छादेर
हशोनर पूर्ण एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ विशय ये
कायस्थ जाति गङ्गानारायणनामक एक व्याक्तर तिन पुत्र छिल,
ताहार मध्ये एक पुत्रेर विवाहकालिन किञ्चित भूमि, ये पुत्रेर
विवाह हइलो, ताहार शसुरेर स्थाने प्राप्त हइल, एवं तद्भूमिर

दानपत्र यत् द्वारा दान कृत इहिलो, गङ्गानारायणेर नामे लिखित इहिल, ए स्थले गङ्गानारायणेऽ परलोकानन्तर ऐ भूमि पूर्वोक्त-व्यक्तिर तिन पुत्र समान अंश करिया लइवेक, किन्था ऐ-विवाहकर्ता व्यक्तिर, जाहार विवाहोपलक्षे ऐ भूमि प्राप्त इहिल, सेइ व्यक्ति पाइवेक, जिज्ञाशा करा आविश्यक-ए प्रयुक्त हुकुम इहिल ये एइ रुयकारिर नकल उपरेर लिखित पत्रसम्बलित एइ आदा-लतेर पखिडतेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पूर्वोक्त प्रश्नेर प्रत्युत्तर याङ्गलादेशीय चलित शाखानुमारे एइ हुकुम पौउद्धनेर तारिख अवधि पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्दर्माधिकारशाधिपतिश्रीयुतभाज्जंइष्टाकोएलसादेवधर्माधिकारण लिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्योगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरस मतदिवसी यविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तइन्दीयतमासीयरसनेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्त तदयलोख बाटशशोधो जातस्तदनुसारेखोचरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सात गङ्गानारायणस्य मरणानन्तरं विवादा-स्तदीभूतघने गङ्गानारायणस्य प्रयाणामेव पुत्राणां समानाधिकारः—इति, बद्धदेशचलितमनुशासनादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम् -

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितृम्युपरते पुत्रा विभजेदुर्द्धनं पितुः—इति दामभागादिग्रन्थधृतदेवला-वचनञ्चेति ॥२॥॥॥॥॥॥

इशबीशब्दप्रतिपाद्योगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयरसमितदिनसम्बन्धिबुद्धस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रद्वितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७३)—मोनछर्फ डिगिरि जारिर लम्बर १२४३३

रोयकारि आदालते देश्रोयानि जेला वर्द्धमान एजलास मे०
जेमछ करटिछ साहेव काइम मोकाम जज सन १८३५ मछिया
वारिख ४ आपरेल—

गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतर्फा— वादि—

कार्तिकमोएडल देयेनदार— प्रतिवादि—

दयाकुमारि ओ सुन्दरकुमारि— ओजोरदार—

खन्दकार नाछेरदिन माहम्मद ओ कृष्णधनमुखोपाध्याय
दयाकुमारि उकिल एज्जत होशेन, सुन्दरकुमारि उकिलेर मध्ये
एक उकिल मिछिले हाजिर हइलो । परे मिछिलेर कागज मोला-
हेजा हइया बोध हइलो जे एइ मकरमा ४/१) १ टाका आदाय
कारण डिगिरिदार मोतर्फा तरूफ हइते किस्तिबन्दि जारिर दर-
खास्त गुजराण ओ प्रतिवादिर जायदाद कोक हइले परे दया-
कुमारि मजकुर सन १२३१ सालेर १६ ज्यैष्ठ वारिखे आपन
मुकाबिलाय एऊ केता दरखास्त एइ मजमुने एइ आदालते
दाखिल करिलेक—ये उहार पुत्र गोकुलचन्द्रमिश्र फौत करियाछे,
ओ उहार समस्त विशय ओ ठाकुरसेवा प्रभृति उहाके दान
करियाछे, ओ मोतर्फा मजकुरेर विशय दखलिकार, ओ ओया-
रिप आपनि आछे, आर एइ मरुहेमार तजविजेर निष्पत्येर प्रार्थना
करिलेक, आर सन १८३४ सालेर १४ जुन वारिखेर आपनार
दरखास्तेर उपरेर लिखित हुकुम अनुसारे दानपत्रेर निचेर
लिखित तिन जोन साक्षी हाजिर आनिया तिन जोन साक्षीर
एजाहार, ओ सन १२४१ सालेर २० बैशाख वारिखेर लिखित
दानपत्र दाखिल हइले परे सुन्दरकुमारि एऊ केता दरखास्त उहार
स्वामि गोकुलचन्द्रमिश्रेर फौत हओया ओ आपनि ऐ मोतर्फा
मजकुरेर मालामालेर दखलिकार ओ ओयारिप ओ उहार
स्वामी उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देओया, एवं सकल
विसय उहाके मालिक करानो ओ चावि छोडान प्रभृति आपन

जीवदपाय मातर्त्वर लोकेर सादयाते अर्पन करा, ओ दया-
कुमारि एजाहारि दानपत्र नितान्त मिध्या-एइ सकल
वित्तान्ते सन १८३४ सालेर ३० जुलाई तारिखे दाखिल
करिल्लेक । एइ मकईमा पूर्वें सन हालेर १० फेवरवरि तारिखे
रोवकार हइया ऐ तारिखेर लिखित रोवकारि अनुसारे दोपरा
विषयेर कैफियात पुरुपोत्तमदासमोहोन्तेर स्थाने तलव हइया
सुन्दरकुमारि उकिलेर पर जे सकल लोकेर साक्षीते सुन्दरकुमा-
रि स्वामी गोकुलचन्द्रमिश्र आपन समस्त विशयेर मालिक
सुन्दरकुमारिके करा ओ उहाके पुण्यपुत्र करणेर अनुमति
देश्योया साबुद हइवेक-ऐ सकल लोकेर नामे इशमनविसि
दाखिल करिते हुकुम हय । तदनुसारे सुन्दरकुमारि उकिल सात
जोन साक्षिर नामे इसमनविपि दाखिल करिल्ले । साक्षिर पर
सफिना जारि हइले परे परान आच(१)य्य ओ रामचाँदराय ओ
कार्तिकचोप ओ लक्ष्मी वैश्वोया एइ चारि जन हाजिर हइले
उहारदिगेर एजहार घाङ्गला अत्तर ओ एवारते आलाहिदा
२ फर्दे नओया जाय इति । अद्ये दयाकुमारि मजकुर एक कंता
दरखास्त एइ मजमुने जे मदन मजकुरेर वयेय' दश वारो
वत्सर, ओ मदन मजकुर सुन्दरकुमारि सहोदर भ्राता निमि-
त्तक शास्त्रानुसारे जज्ञ उपवित्त हइले परे पुण्यपुत्र लओनेर
विधान हए ना, ओ उहार पितार फौत परे उहार पितार गोत्रेते
विधान हइते पारे ना; ओ सुन्दरकुमारि एक कंता दरखास्त
एइ वित्तान्त ये मृत समय कोनो दान सिद्धि हये ना । आर
स्वामिर अनुमति क्रमे आपन सहोदर मदनठाकुरके पुण्यपुत्र
करियाछे-एइ सकल अन्य २ वित्तान्त दाखिल करिल्लेक इति ।
एइ मकईमाय एइ प्रकार व्यवस्था तलक आविस्वक जे यदि
केहो आपन वर्त्तमान थाकिते मृत्यु समय ज्ञान पूर्वक परकालेर
पुन्येर निमित्त आपन गुरुर साक्षीते आपन माताके दान करोनेर

एकरार लिखित पढितेर द्वाराय ह्मओक किम्या ताहार वाक्याव-
द्वाराय ह्मक, दान करिया फौत करे । ए प्रकार दान साखेर
बिधान कि ना, ओ गुरुर एजहार कोन त्रिशयेते शिष्येर पत्ते
काफि ह्य कि ना, अर कोन एक पुत्र दश कि द्वादश वत्सर
वयक्रम ह्मओयाते ओ ताहार यज्ञोपवित ह्मलेओ पितार फौत
परे आपन पितार गोत्रेते ए पुत्रे भगिनपुत्र मजकुरके आपन
मातार अनुमतिते पुष्यपुत्र लइते पारे कि ना । ए कारण हुकुम
ह्मले ये एइ रोवकारिर नकल डिगारि जारिर नथिर सम्यलित
इहरेजी चोठीर द्वाराय सदर देखोयानि आदालतेर हाकिमेर
हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय-ये उररेर लिखित वृत्तान्तेर
सओयालेर जबाब शास्त्रानुसारे ऐ आदालतेर पण्डितेर स्थाने
लइया एइ आदाजते प्रेरण करिते आज्ञा ह्य इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रमुसमर्षितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेतद्विश्वदक्षिण्यनिक्रिष्टपत्रजात
मङ्गरेजीलिखनञ्च यदीशचीश०२प्रतिपात्रेपुगुणगजेन्दुमितान्दोयमैमासीव-
शरे-दुमितदिनसम्बन्धिशुभवाशरे मया प्रप्त तदवचोक्य साहशबोचो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदान दातुं पत्न्या यामजीव दातृकुलो-
चित्प्रासाङ्ग्यादनुपमुकावश्यकविधवाधम्माद्या चरणापयुतातिरिक्ते दानुस्व-
त्वास्वडीभूतधने शास्त्रानुसारेण सिद्धयति । एव गुणराज्य शिष्यं प्रति
विषयविशेषे प्रबन्धप्रमाणं भवत्येव । एवमेकमात्रपुत्रस्य कस्यचित् तमक
पुत्रे दशवर्षवत्स्कं द्वादशवर्षवत्स्कं वा जनकभात्रेण जनकमरणानन्तर
मुपवीत तद्भगिनो स्वमातुरनुमतिमात्रेण दत्तरूपरत्नेन ग्रहीतुं न
शक्नोति—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी ०यवस्येति—
अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यजारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्त्यसनादेयं यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थ
वृत्तवृत्तविवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्धितैः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥३॥

अत्र भयादिरुगन्धितान्ताः^१ पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः—
इति तत्तद्ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

स्वस्थेनात्तेन वा दत्तं ध्यायितं^२ धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थ-
धृतकाल्याणवचनम् ॥५॥

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिशुद्धीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्मर्तुः—इति दत्तरु-
मीमांसादिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥६॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेषु वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतकालिकापुराणव-
चनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशान्दप्रतिगद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्थमाशोमगुणेन्दुमितदि-
नसन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रगुणमपितविचारपत्रैतद्विवादविषयनिधिष्ट-
पत्रजाताङ्गरेनीलिखनैः सहितैर्यं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७)—प्रश्नः—

संन्यासीदासनाम्नः कस्यचिद्धनिनो द्वितीयस्त्रीजात एकः पुत्रो वर्त्तते,
एका द्वितीया स्त्री वर्त्तते, एका पुत्रवधूर्वर्त्तते । इदानीं मृतसंन्यासीदासस्य
स्थावरादिधने एतेषां मध्यं कस्याधिकारः—इति धर्मशास्त्रानुसारेण
व्यवस्था लेखनीया ॥

अस्योत्तरम्—

उक्तप्रश्नानुसारेण—

संन्यासीदासस्य द्वितीया स्त्री एषं द्वितीयास्त्रीजातनायालकपुत्रः एवं
प्रथमास्त्रीजातपथमपुत्रवधूपुं सन्तु मृतसंन्यासीदासस्य स्थावरादिधने द्वितीय-

स्त्रीजातनावालकपुत्रस्यैवाधिकार एव, न तु प्रथमास्त्रीजातपुत्रव्योरिति-
त्तिदुपा परामर्श ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितर्युद्ध्वंगते पुत्रा विभजेयुर्द्वेन पितुः ।

अस्वाम्य हि भवेदेषा निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागधृत-

नारदवचनम् ॥ अपरम्—

ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पेतृक रिक्त्वमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति दायभागधृत

मनुवचनम् ॥०॥

श्री दुर्गा

सन्यासीदासेर दुइ स्त्री । प्रथमा स्त्रीते एरु पुत्र हय, परे
द्वितीया स्त्रीते एक पुत्र हय, ऐ पुत्र नावालक । प्रथमा स्त्रीते ये
पुत्र हय ताहार विवाह हइयाछे^१ । इतो मध्ये ऐ सन्यासी-
दास नगर कलिकाता सिमुलिया मध्ये ४ काटा भूमि आपन
नामे क्रम^२ करिया आपनि वत्तेमान थाकिते प्रथमा स्त्रीर ओ
प्रथम पुत्रे काल हय । परे ऐ सन्यासीदासेर द्वितीय स्त्री एव
ऐ नावालक पुत्रः एव मृतपुत्रे वधू- एइ तिन व्यक्तिके राखिया
सन्यासीदास परलोक प्राप्त हय । एइ छने उक्त भूमीर वाटो
आछे । ताहाते ऐ तिन व्यक्ति वर्त्तमान आछेन । ऐ सन्यासी-
दासेर विषय काहार प्राप्त हइवेक— यथाशास्त्र व्यवस्था दिते
आज्ञा हय इति ।

उत्तर :—

सन्यासीदासेर द्वितीया स्त्रीजात नावालक पुत्रः, एव द्वितीया
स्त्री, प्रथमा स्त्रीजात मृतपुत्रवधू- इहादिगेर मध्ये सन्यासीदासेर
स्थापरादि धनेते द्वितीयस्त्रीजात नावालक पुत्रे हइवेक इति,
इहार प्रमाण —

श्री श्रीदुर्गाशरणम्

(७५)—रोजकारी मिडिल सदर देओयानि आदालत मोराम कलिकाता आदालत मजकुरेर हारिम श्रीयुत हेनरि सिफिस पिएर साहेबेर बैठके । तारिख १३ जुलाइ इङ्गरेनी सन १८३५ साल मोताबके वाङ्गला सन १२४० साल तारिख ३० आषाढ दिवस सोमवार ॥—

कुशाइचन्द्रकविराज

आपीलाएट

मोळ्मर्मांत जयमनी ओ कृष्णमनि ओ कृष्णमनीर मृत्युर पर मोळ्मर्मांत जयमनी ओ जयमनीर मृत्युर पर नृसिंहराय—रेप्पाड्येट ।

आपीलाएटेर उकिल मुनशी ह्यदर आलि ओ रेप्पाड्येटेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजीर आइल । जेला विरभूमेर देओयाणो आदालतेर जजसाहेबेर रिटरण ३० सन १८३५ सालेर २३ मार्चेर लिखित तथाकार रोजकारी सम्बलित ओयारिप साबुदेर लओयाजिमा कागजात सम्बलिष्ठ मोरुद्दमार कागजातेर सामिल अद्य दरपेस हइया, ऐ सनेर २ जुनेर रोजकारि समिभ्यार पढागेल । हुकुम हइल जे एइ मोरुद्दमार रेप्पाड्येटीते नृसिंहरायेर नाम लेखा जाय । परे अन्य २ कागजात अनुबोधने बोध हइलो जे ३ सन १८३१सालेर १०सेतम्बर तारिखे एइ मोरुद्दमार कागजात व्यवस्था तलचेते एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान गियाडिल, आर ताहार उत्तरे तहकिक ह्य जे मोळ्मर्मांत जयमनी ओ कृष्णमनीक भैरव कविराजेर जोधानि हेवा उचित बट, किन्तु प्राविणसीयान कोटर डिगरिर पर, जाहार द्वाराय जेकार फयल्ला उक्त मोळ्मर्मांतादगेर हक्के बहाल धाके, उक्त मोळ्मर्मांत कृष्णमणीर मृत्यु ह्य, आर मोळ्मर्मांत जयमणी जोयाणी हेवार पुनियाद उदार हिस्साते दाविदार ह्य, एव एइ आदालतेर पण्डित जिज्ञाशा मते ए प्रकार हेवा सत्य लिखेन । ३ सन १८३३ सालेर १३ माइ ताहार सत्व तावत

हकिकेर हुकुम जेलार जजसाहेबेर नामे छादेर ह्य । ताहार उत्तरे जजसाहेब ऐ सनेर २६ दिशम्बरेर लिखित रोवकारी तहकिकेर लश्रोयाजिमा सम्बलिष्ट एइ आदालते पाठान । किन्तु मोछर्मात जयमणीर मृत्यु हश्रोया जन्य जे इति मध्ये हइयाछे, उक्त मोछर्मातेर ओयारिप हाजीरेर जन्य इस्तहार जारि हश्रोया प्रयुक्त मोकदमार तजविज स्थकिद छिल, अथ तहकिकेर कागजात ओ गयरह ओ साचीगणेर एजहार अनुबोधनेते जयमणीके मोछर्मात कृष्णमणीर जोवानि हेवा सत्वताय पीछिल । किन्तु एइ मोकदमार डिगरि हाशील करा ओ एकात्र प्रयुक्त नितान्त अनुमान ह्य जे ए प्रकार हेवा यदि स्यात् हइयाथाके, तवे उक्त तहकिकेर द्वाराय सामुदाइक विवादीय वस्तु मोछर्मात जयमणीर हक्कें पीछे । किन्तु उक्त मोछर्मातेर मृत्यु जन्य उक्त मोछर्मातेर ओयारिशेर जन्य एइ मोकदमार विवाद पुनराय हइल । एइ प्रकारे जे उभय विवादिर पूर्व पुरुष मोनहरकविराजेर दौहित्रेर पुत्र सुरते विवादीय वस्तुते आपीलाएट हक राखे, कि नृसिंहदेव, जे आपनाके मोछर्मात जयमनीर स्वामीर द्वितीय पत्तेर छीर पुत्र अर्थात् उक्त मोछर्मातेर स्वपत्निपुत्र करार देय, ओयारिप हइवेक । ए प्रयुक्त ए विशयेर प्रकाश जन्य हुकुम हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कागज पाठान जाय एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विशयसकलेते अनुधापन करिया उहार उत्तर दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, आर से पर्यन्त हुकुम हश्रोया स्थकिद थाके इति ॥—

श्रीजयतितराम

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीविक्सपीयरसाहेबधर्माधिकरणा-
लिखितेशवोशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दोयजुजाइमासीयगुरेन्दुमितदि-
नसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेतद्विवादनिविष्टपत्रजातञ्च यच्चदन्दो-
यतन्मासीयाद्रिपत्तमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवातरे मया प्राप्तं तदपलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति जयमनीमरखोत्तरं विवा-
दासरदीभूततत्त्वकसौदायिकस्त्रीधने तस्याः प्रपितामहदौहित्रपुत्रसपत्नीपु-
त्रयोस्समवाये सपत्नीपुत्रस्याधिकारः—इति बहुरेशुचनितमनुदायभ.गादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रपर्यन्तानन्तरमेव सपत्नीपुत्रः—इत्यादि दायक्रमसप्रहग्रन्थ-
लिखनम् ॥१॥

ईशब्रीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिसाब्दीयसितम्बरमासीयनवमदिन-
सम्बन्धितुत्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादनविष्टपत्रजातैः
सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३५६ ल० सदर—

(७६) रोवकारि मिडिल सदर देओयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत हेनरि सिन्डिस-
पीयेरसाहेवेर वैठरे । तारिख २२ जुनाइ इङ्गरेजी सन १८३५
साल मोतावके ७ श्रावण चाङ्गला सन १२४२ सात दिवस
बुधवार ।

शिटवरतसिंह

आपीलाष्ट

मोहम्माम कुडा ओ गयरह

रेण्याडस्टान्

आपीलाष्टेर उकिलगणेर मध्ये मुनशी गोत्राम आहम्मद ओ
मोहम्माम कुडा ओ मोहाएलसिंह दुइ जन रेण्याडस्टानेर उकिल
सदासुख पण्डित हाजीर आइल, धार रच्यालाल रेण्याडस्ट
कोटेर इथालामनामा एवं पइ आदालतेर एतलानामा जारि
हओयातेओ हाजीर नाहि । पइ आदालतेर कायम मोकाम
हाकीम एडओयाडे जान हारण्टी साहेवेर इ सन १८३५ सालेर

१७ मार्चर लिखित हुकुमानुसारं एइ मोकईमार कागजात आमार वेंठके दरपेप हइया उक्त तारिखेर हाकिम मौज्जेफेर लिखित रोवकारिर राय ओ प्रथम आदालत सदर आमिनेर तजविजेर वावतेर कागजात इस्तक नालिशो आरजि ओ तथाकार फयइला पर्यन्त ओ द्वितीय आदालतेर वावत जज आपीलेर कागजात इस्तक मौजेवात ओ तथाकार फयइला ओ क्रोट आजिमावादे दाखिल हओयो मौजेवातेर न्याय खास आपीलेर दरखास्त ओ क्रोट मजकुरेर हाकिम जिमिस हारएटी साहेव ओ खास कमीसनर वावतो आलियाट साहेवेर इ० १८२६ सालेर २२ आपरेल ओ इ० १८३३ सालेर १५ आपरेल तारिखेर लिखित खास आपील मज्जुरिर विशयेर राय आर ताहार नामज्जुरिर विषये उक्त कोटेर हाकिम छेजलि वामप कटवरट साहेवेर इ० सन १८३२ सालेर ६ जुलाइ तारिखेर लिखित राय ओ एइ आदालतेर दाखिल हओयो मौजेवातेर जआयाव सामुदाइक पडान गेल । यदि स्यात्—प्रकाश ये एइ मोकईमा जेलार आदालते तथाकार पण्डितेर व्यवस्था मते फयछेल हय, आर मेष्टर वारडो आलियाट साहेव खास आपीलेर मज्जुरिर रोवकारिते उक्त व्यवस्थार सत्वतार प्रति सन्देह आनेन । ए जन्य चुडन्त हुकुम छादेर हआनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर बोधकरण ये जेलार पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसार उचित वदे कि ना । कर्त्तव्यत्व दृष्ट हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल पण्डितेर नामेर दुइ केत। सआयाल ओ पण्डितेर पत्र हइते ताहार उत्तरेर नकल सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुम देओया जाय जे उक्त पण्डित उपरेर लिखित विशयेर उत्तर दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं एइ विशय ये यदि स्यात् विवादीय वस्तु साधारण थाकाय किम्वा साधारण ना थकाय व्यवस्थार कोन तफात हइवेक कि ना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिपतिभ्योयुतद्देनरीसिद्धिसपीयरसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितेशशीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिता•दीयजुलाइमाद्योयद्वाविशतितमदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपर तत्समर्पितजिलाख्यावान्तरधर्माधि-
करणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वय तत्परिहृतदत्तोत्तरद्वयञ्च यत्तद•दीयाग
स्तिमासीषपष्ठदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबो-
धो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

विवादास्पदीभूतधनमसाधारण्य चेत्तदा जिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण
नियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी भवति ।
विवादास्पदीभूतधन साधारण्य चेत्तदोपरिलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलित
शास्त्रानुसारिणी न भवति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिता•दीयसितम्बरमासीयनवमदिनसम्ब-
न्धिवृषवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनि-
युक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वयतत्परिहृतदत्तोत्तरद्वयेन सहितेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैधनाथमिश्रेण

यदि'कश्चिदनरत्यः पत्नीं विहाय मृतस्ताहिं तद्धने तत्पत्न्य
धिकारिणी, अपुत्रधन परित्यभिगामि—इति विष्णुवचनात्, अपुत्रा शयन
भक्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता, पत्न्येव दद्यात्तत्पिण्ड कृत्स्नमश लभेत
च इति बृहन्मनुवचनाच्च ॥ मित्राक्षरादायभागादिमहाप्र-थानुसारेणैव
व्यवस्येति—

वदति'त्रिपाठिश्रीवोधकृष्णशर्मा ।

(७७) सदर देमानि आदालतेर पण्डित प्रति प्रश्नः—

छुयरे जातिर पात्रर नख काटीले श्री विवाहेर समय ताहार-

दिगेर माथाते सूत्र धरिल्ले नापीतदिगेर जातिर पर किञ्चु
आघात हए कि ना । उचित थे तुमि यथाशास्त्र प्रश्नेर निचे ताहार
उत्तर लिखह । इति सन १८२५ तारिख २७ माइ मोतावेक
सन १२४२ तारिख १४ ज्यैष्ठ ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशन्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दु-
मिताब्दीयजुलाइमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिगुणवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अस्मदृष्टशास्त्रे विशेषत एतद्विषयकविधिनिर्भाविदानां नोपलब्धौ,
अतएव लुथर इति प्रसिद्धजालीयपादनखलपने विवाहसमये तज्जातीय-
शिरशि छत्रधारणे^१ च नापितजातीयानां जातिव्याघातस्तद्देशे व्यवहृतश्चे-
त्तदा तत्तत्कर्मकरणे नापितजातीयानां जातिव्याघातः शास्त्रतो भवत्येव ।
तद्देशे एयं व्यवहारो न चेत्तदैवं शास्त्रतो न भवति — इति बङ्गदेशचलित-
मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मावित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥ इति मनुवचनम् ॥ १॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयवित्तम्बमासीयवेदेन्दुमितदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितैर्यं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथभिध्रेण

(५८)

ल० : २२५ सदर

ल : ६४२३, क्रोट ढाका

मो० कलिकातार सदर दैद्योनि आदालतेर ई : सन १८३५

सालेर ५ आगष्ट मोतावेक वाङ्गला मन १२/२ सालेर ०१ थायण
बुधवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्री युन थोलायम प्राडीन
साहेबेर पैठार रोवकारि--

ईशानचन्द्रदास ओ गायरह

आपीलाएटान

प्राणकृष्णदास

रेण्डाडएट

आपालाएटदिगेर उकिनगणेर मध्ये एक व्यक्ति तारकचन्द्र-
राय आ सदासुखपण्डित ओ मुनशा राधाकृष्ण, रेण्डाडएट
उकिलगण हाचीर आइजेन ओ श्रीरामराय आपीलाएटदिगेर
द्वितीय उकिल ओ मुनशा होत्रेनआनी रेण्डाडएट नृतीय उकिल
हजुरे हाचीर नाइ। ए मोरुहमा ए आदालतेर सावेक कापम
मोहाम हाकिम एच्यने हाकिम जार्ज इष्टाकआएल साहेबेर सन
हालेर १२ आपरल तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार पैठार
उपस्थित हइया जेलार आदालतेर फयशला ओ अन्न २ दोपर
कागजात हाकम मौसुफेर ऐ तारिखेर रोवकारि विस्तारित
लिखित रायेर सम्बलित पाठ करागेल। कोन हुकुम देखोनर
पूर्व निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पाण्डतेर स्थान
लओ उचित बोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि
नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर एइ रोवका-
रि नकल पाओर दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए
आदालतेर परिदतके अपन कराजाय।

प्रश्न :—यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दु, ये ताहार माट
विषय कान त लुकेर फयल छय आनाखिल, ताहार मध्ये चारि
आना आपन अर्चमान खाक ओ दुइ आना आपन द्वितीय मृत
खीर गर्भ ताता कन्याके हेरा करे, ओ ऐ कन्या आपन स्वामीर
मृत्युर पर दश वत्सर बयस्समे आपन विमातार समिचे लोकान्त
हय तवे बद्धदेशाय चलित शाखानुमारे ऐ कन्यार तेज्य विशयेर
उत्तराप्रिया ताहार विमाता किम्वा ताहार स्वामीर पिता
हइवेक इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरण्याधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराहीनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशयीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्तिमासीयपञ्चमदिवसीय-
विचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चमदिवसीयषष्ठ-
दिनसम्बन्धिवृद्धसतिवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति तत्कन्यान्यकथने श्वशुरोऽधिकारी भवति ।
इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—
अत्र प्रमाणम्

ततः श्वशुरः — इति दावभागटीका (पृ० २१८ लिलनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बरमासीयवेदेन्दुमितदि-
नसम्बन्धिवृद्धवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

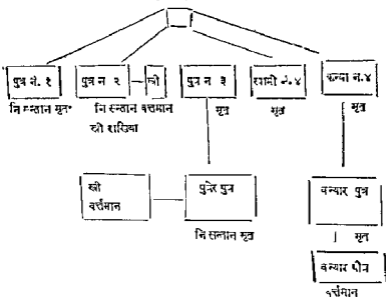
श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७६) कोन व्यक्तिर द्वितीय ओ तृतीय पुत्र आपन २ श्रमेर द्वारा
कयेक ग्राम लाभ करिल । ताहार पर द्वितीय पुत्र निःसन्तान एक
स्त्री राखिया जरिल । तृतीय पुत्रेर पुत्रओ निःसन्तान एक स्त्री
राखिया मरिल, एवं ऐ स्त्री एखन पय्यन्त निःसन्तान वर्त्तमान
आछे । इहाते जिज्ञासा करा जाय—१ प्रथम सञ्जोयाल—एइ ये
ऐ द्वितीय पुत्रेर विधवा स्त्री एवं तृतीय पुत्रेर पुत्रबधूर ऐ कयेक
ग्रामे अधिकार थाके कि ना, यदि थाके तवे कि पय्यन्त थाके—
२ द्वितीय सञ्जोयाल—एइ ये द्वितीय ओ तृतीय पुत्रेर
अभितीर पौत्रेर ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना ॥

एइ व्यवस्था चारानस देसेर चलित शास्त्रानुगारे देओया जाय इति ॥

कुरचीनामा



श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितवङ्गदेशीयाक्षरप्रश्नपत्रं वरावलीपत्रं च यदीशबोशब्दप्रति-
पात्रेपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाकनूवरमासीयाङ्गपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवा-
सरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता
ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, एव द्वितीयपुत्रो विद्यमाने
च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा मृतस्य पितृव्यस्य पत्न्या यावज्जीव स्वपतिविभवो-
चितप्रासाच्छादनोपयुक्तवश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः ।
यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये
साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अवि विभक्ता आसन्, एव
च एव द्वितीयः पुत्रो धीवति भ्रातृपुत्रे च मृतः स्यात्तदा मृतस्य

पितृव्यस्यासाधारणस्वत्वात्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः । यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च स एव द्वितीयः पुत्रो मृते च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजितग्रामसमुदायेषु द्वितीयपुत्रस्यैव साधारणप्रतियोगिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादात्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकारः एव । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि विद्यमाने पितरि मृतः स्यात्तदा तस्य पितृधने असाधारणस्वत्वानुत्पत्तेस्तत्पत्न्या अपि तदने नाधिकारः, किन्तु यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छ्लादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थितास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छ्लादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनेऽधिकारः । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता जातास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्यासाधारणस्वत्वात्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः । यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च तृतीयपुत्रस्य पुत्रो मृते पितरि पितृव्ये च मृते मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजितग्रामसमुदायेषु तृतीयपुत्रपुत्रस्यैव साधारणप्रतियोगिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादात्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

श्ली दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुतो गात्रजो चन्धुः शिष्यः सबलचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्थात्स्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ इति मिताक्षरावीरमित्रो-
दयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिता-
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तरमादपुत्रस्य स्वर्थात्स्य विभक्तस्थासत्पुष्टिनो धनं परिणीता स्त्री
रायता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)ग्रन्थ-
लिखनम् ॥३॥

स्वर्थात्ते स्वामिनि स्त्री तु मासाच्छादनभागिनी ।

अविभवते धनसौ तु प्राप्नोत्यामरण्यान्तिक्रमम् ॥ इति वीरमित्रो-
दयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोस्त्यक्तधने तयोर्मगिनीपौत्रस्याधिकारप्रतिपादक
शास्त्राभावाद्वाजप्रसाद विना नाधिकारः—इति वागण्ठीप्रदेशचलित-
मनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति ॥—

ईशवीरशब्दप्रतिपादोपगुणगजेन्दुमिताक्षरीयदिशम्बरमासोपदशमदिन-
सम्बन्धिब्रह्मस्पतिवासरे भया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रवशावलीपत्राभ्या सहि-
तेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिथेण

(८०) धीमण्येधाय नमः । अवधूराय धूरीणाय-सरन्मराया भ्रातरः
सहोदरा आसन् । तेषा मध्ये अवधूरायनाम्नान्वदायादापार्जितग्रामः परइस्त-
गता निब्रम्यत्तन स्वभोग्ये प्राणीतः । स ग्रामः पृथ्वीपार्जितादन्यः । यदा
अवधूरायैण ग्रामार्थं चादिना सह विवाद आरब्धस्तदा धूर रायेण तद्भ्राता
न स्मृत्तः, उक्त च नाह विव द करिष्यामीति, स्वाशोऽपि न गृहीतः ।
तदनन्तरं ग्रामविभागावसरे अवताररायोऽवधूरायात्मजः हरिमोहिन्द्ररायो

धुरीरायात्मजः सर्वज्ञितरायस्मरनामरायात्मजः तेषां मध्ये हरिगोविन्द-
रायेण भागो न स्वीकृतः, उक्तं मत्पित्रा भागो न गृहीतस्तस्माद्दहमपि न
गृहीष्यामीति । ग्रामविभागावसरे रामजतनरायप्रभृतय उत्तरजा आसन्,
परजार्त्तवालकाः हरिगोविन्दरायात्मजाः । साम्प्रतं हरिगोविन्दरायत्मजा
रामजतनप्रभृतयो भागमर्थयन्ते । ते पितृतिरस्कारेण पूर्वं पित्रा भागो न
स्वीकृतः, अतो भागार्हा न भवन्ति वा भवन्तीति प्रश्ने—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रं पारशीकप्रश्नपत्रञ्च शदीशवीशब्दप्रतिपाद्ये-
पुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागरेनमाभीवचतुर्धदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्वदीभूतग्रामस्येदानीं विभागमर्थयन्तो
हरिगोविन्दरायात्मजा रामजतनरायप्रभृतयो विभागार्हा न भवन्त्येव । अन्य-
दायादोपार्जितग्रामे यथा पितृपितामहाभ्यां द्वाभ्यां किञ्चयेण तयोर्द्वयोः स्वत्व-
नाशे न पौत्राणां स्वत्वनाशो भवति, तथा पितृपितामहयोः स्वांशग्रहणोपेक्षा-
मूलकस्वत्वनाशेनाप्राप्तव्यवशासणां पौत्राणां विभागमर्थयतामपि स्वत्वनाशः
शास्त्रविवेचनया भवितुं शक्येत्येव इतिपश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीर-
मित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।—

अत्र प्रमाणम्—

संविभागक्यप्राप्तं पितृभ्यं लब्धं च राजतः ।

स्थावरं सिद्धिमाप्नोति भुक्त्या हानिमुपेक्ष्ये ॥ इति वीरमित्रोदयादि-
(पृ० २०३)ग्रन्थधृतवृद्धहाति (पृ० ७३)वचनम् ॥१॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमाभीवर्कमितदिन-
सम्बन्धशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रपारशीकप्रश्नपत्राभ्यां
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८१) प्रश्नः—

यथाशास्त्रानुसारे परिहृतेर प्रति जिज्ञास्य हृदयाळे—

१ दफा—

यद्यपि एक व्यक्ति धर्माकाङ्क्षी हृदया तीर्थयात्रा करिया २० वत्सरेर मध्ये आपन वासस्थाने पुनरावृत्ति ना हृदया सर्व्वदा अज्ञात थारुं, ताहाचे एइ जिज्ञास्य ये ऐ संवाद रहिस व्यक्तिर जीवनावशेष विवेचित ह्य कि ना ।

आर ऐ व्यक्तिर समुदाय वस्तु दान प्रहीता व्यक्तिस्वले ऐ अज्ञातसवादी अर्धात् अनुद्दिश्य व्यक्तिर तीर्थयात्रार पूर्व्वकृत उद्दल प्रमाण प्राप्त वस्तु ऐ लिपिर निर्द्धारित मते आपन २ अंश विभाग करिया लइते पारे कि ना, येमन एक मृत व्यक्तिर इष्टेतेर न्याय—

२ दफा—

एवं ऐ व्यक्ति आपन वासस्थाने २० वत्सरेर मध्ये किम्वा परे पुनरावृत्ति हइले उहार निज वस्तुसकलेर मालिकत्व रहित हृदया अनधिकारि हइचे कि ना—इहाइ परिहृतेर व्यवधार अविश्यक हइयाळे, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा ह्य इति ।

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दु-
मिताश्रीयागस्तिमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे प्रभुसमर्पित-
विचारपनान्तरञ्च यत्तदन्दीयसितम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे
मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुकारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सनि प्रस्थानदिनमारभ्य विंशतिवर्षपर्यन्तं
संवादरहितस्य भरण्यावधारणं शास्त्रतो भवति । एवञ्च सति तदीय^१

समुदायघनं तत्कृत-उद्देश्यप्रतिपाद्यलिपिनिर्द्धारितस्वस्वांशानुसारेण दान-
ग्रहीतारो मृतस्य कस्यचित् त्यक्तघने तदुत्तराधिकारिन्यायेन विभज्य ग्रहीतुं
शाल्लतः शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद् वार्ता यावद् द्वादशवापिकी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्तव्यं सुतबान्धवैः ॥—इति तिथितत्त्वादि (पृ०
२०) ग्रन्थधृतयमवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

य एव प्रस्थितो व्यक्तिविशेषो यदि विशतिसंवत्सरमध्ये तत्परतो वा
पुनरागच्छति तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानुमितप्रस्थितप्ररणावधारणप्रमुक्त-
स्वत्वनाशस्तस्य स्वकीयघने न भवति । प्रस्थानेन सम्भाषितस्वत्वनाशस्य
प्रस्थितागमनेन बाधितत्वात् । किन्तु प्रथमप्रश्ने दानोत्प्रेक्षो लिखितः ।
तत्र दाने यद्यप्य नियमो दानुर्यद्यद् जीवामि न जीवामि बोधययैव दान-
ग्रहीतृणां तद्धनं भविष्यति तदेतादृशदानेन दातुः स्वत्वत्वागेन स्वामित्व-
राहित्यं शास्त्रोपमेव । यदि तद्दाने अयं नियमो यद्यद् जीवामि तदा तद्धनं
ममैवास्ति, यदि न जीवामि तदा दानग्रहीतृणां भविष्यति, तदा दातुर्जावन-
दशायां दातुः स्वत्व(ः)त्वागेन स्वामित्वराहित्यं न भवति—इति बङ्गदेश-
चलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारीणी व्यवस्थेति ।

अथ श्रोत्र-शब्दप्रतिपाद्यलिपिभेदप्रा प्रश्नयोराशयः सम्यङ् न
शातोऽथ एवैवमुत्तरं लिखितमिति निवेशनम् ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितद्वितीयप्रमाणम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्थवग्रन्थलिख-
नञ्चेति ॥२॥

ईशबीशब्दप्रतिपाद्योपगुणगजेन्दुमितांशीयदिशम्बरमाषोयमुनीन्दुमित-

दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाचरे मया प्रमुक्तमपितोपरिलिखितानिच.रत्नद्वय-
प्रश्नपत्रैः सहितेषु व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतिनरान्
श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

(८०)—रोषकारि मिद्धिल सदर दैओयानि आदालत मो० कलिकाता । आदालत मजकुरेर हाकिम शीयुत हेनरि सिक्स-पियेर साहेवेर वैठके तारिख ६ आगष्ट ईसन १८३१ साल मोताबके २२ आबण सन १८४२ साल वाङ्गला दिवस वृहस्पतिवार ।—

वैठल

छापल—

छापलेर पत्तेर एक वेता ओकालतनामा मुनशी आडवाँछ आलि दाखिल करिया हाजीर आइल । इतः पूर्व ईसन १८३५ सालेर २० जुलाई तारिखे ओलिपम वेराडीन साहेवेर ऐ सनेर १६ जुनेर छादेर हओया हुकुम मोताबक छापलेर छओयाल तत्समिभारि कागजात उपस्थित हइया छापलेर गरहाजीरि प्रजुक्त मुलतवि छिल, अच पुनराय उपस्थित हइल । एइ आदाल-तेर हाकीमान ओलिपम वेराडीन साहेव ओ डेबिड इश्मीट साहेवेर २ जानेओयारि ओ १६ जुनेर छादेर हओया रायेर सहित पडागेल । यदि स्थात ऐइ छओयाल छरछरि आपील मञ्जुरि प्रार्थनाय बटे, ईसन १८३४ सालेर २६ कातुनेर ३ दफार २ धारार लिखित प्रकरणसकल ताहार मञ्जुरि जन्य प्रकाश नाइ, ये तदृष्टे मञ्जुरि योग्य हय, आर जज साहेवेर फयदलार उपर, जाहा रेजष्टर साहेवेर फयदलार पर हय, ताहार खास आपील प्रचलित कानन मते मञ्जुर हइते पारे ना । ए प्रजुक्त आमार राय ओलिपम वेराडीन साहेवेर १६ जुनेर लिखित राएर सहित पइ प्रकारे अक्य हय—ये ताहार मञ्जुरि हुकुम

छादेर हइते पारे ना । किन्तु यदि स्यात् एइ आदालतेर तावेर कोन आदालते नितान्त आइनेर बहिर्भूत कोन हुकुम छादेर हय, आर से नोकईमा खास आपील मञ्जुरिर योग्य ना हय, ताहार दोरस्त करा ए आदालत हइते उचित । तट्टे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशय जिज्ञाशा उचित जे छापल थो अन्य २ मुर्दाआलेहमेर गोलामीर विशयेर नोकईमा शाख मतो तहकिक हइया निष्पत्य हइयाछे, कि ना । परे हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल डेविड इप्पीट साहेव हाकीमेर तल्लव मते, ये कागज पौछियाछे, ताहा सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये उक्त पण्डित उपरेर विशयेर जओयाव लिखेन । यदि स्यात् जजसाहेवेर फयल्लाय तजविजेर कोन व्यतिक्रम प्रकाश हय तवे ताहार शोधन करार जन्य हुकुम छादेर हइते पारे, आर यदि पण्डितेर जओयावेर द्वाराय व्यतिक्रम प्रकाश ना हय, ए आदालतेर हस्तार्पनेर कोन कारण हइते पारिवेक ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयागतिमासीयपष्टदिवसीयवि-
चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिज्ञपत्रं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च
यच्चदन्दीयतन्मासीपरसप्तदशमितदिनसम्बन्धिशुभवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

एतद्धर्माधिकरणाधिनिस्तदितरप्रत्ययिनां च दासत्वविषयकविवाद-
निष्पत्तिःशास्त्रानुसारेण भातास्ति-इति मन्वादिशास्त्रानुसारिणो व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायाहुपागतः—इत्यादि नारदवचनम् ॥१॥

ईशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयशिवमित-
दिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैः तद्विवादविषयनिविष्ट-

पत्रजाते संहितेय व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीर्घनाधमिश्रेण

(२३) श्रीदुर्गा शरणम्

सवालैर तरजमा—

यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दु आपन वृद्ध प्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रे वश ओ आपन वृद्ध प्रपितामहेर वैमात्रेय भ्रातार पौत्रे वश एइ दुइ व्यक्ति श्रोयारिश रारिद्या मरियाऊ, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त धन, ग्रस्थारर हउक, किम्वा स्थावर हउक, विभक्त हउक, किम्वा अविभक्त हउक, उभयेर वशकं अशिवेक, किम्वा मृत व्यक्तिर वृद्धप्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रे वश, ये अव्यवहित सम्पर्की वटे, केवल सेइ पाइवेक इति ।

मूल पूरूप नाहार दुइ पत्रो

एक पत्रार दुइ पुत्र

ताहार मध्ये एक पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

द्वितीय पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

द्वितीय पत्रो

ताहार पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

श्रीर्जयतिराम्

प्रमुषमर्षितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयं च यदीशवीशब्दप्रतिगद्येषु-
गुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिन्यानिवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रमुषमर्षितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रा-
तृपौत्रवंशमृतधनिवृद्धप्रपितामहवैमात्रेयभ्रातृपौत्रवंशयोर्मध्ये मृतधनिवृद्ध-
प्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशस्यैव मृतधनित्यक्तविवादास्वदीभूतधने मृत-
धनिसन्निहृतसपिण्डत्वेनाधिकारः-इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्--

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्-इति मिताक्षरादि-
ग्रन्थवृत्तमनुवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरोमासीवरसेन्दुमित-
दिनसम्बन्धिन्यानिवासरे मया प्रमुषमर्षितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितैर्यं
व्यवस्था दत्तेति -

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



(८४) रुक्कारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत जाज्ज इष्टाकोयेल
साहेबेर बैठके । सन १८३५ तारिख ११ डिसेम्बर मोतावके
सन १८४२ वाङ्गला तारिख २७ अग्रहान रोज शनिवार ॥

४८४ लम्बर सदर--

जगन्नाथवसु

रामफानाइवसु

आपीलाष्ट

रेण्पाडेष्ट

आपीलाएटेर उकिल सिवनारायनचट्टोपाध्याय उपस्थित
 हइल । रेप्पाडेष्ट स्वततः वा उकिलतः उपस्थित नाइ । मक-
 र्दमा तरतिव नम्बर मते वत्तेमान वत्सरेर ? डिसेम्बर तारिखे
 आमार बैठके रुबकार हइया कतक कागजात दृष्टि परे ऐ
 दिवसेर रुबकारि लिखिस हेतुते मोलतवि छिल, अद्य पुनराय
 रुबकार हइया हिसावेर विषये आपीलाएटेर उकिलेर कथार
 आभाप विवेचनाय उचित हइल ये मिछिलेर सम्बलिष्ट २ दुइ
 ज्ञाता एइ आदालतेर खाजाञ्चीर जिम्बा करा जाय । जे से
 रामकानाइवसुर खातार लिखित अङ्कसकल, जाहा तारिणी-
 चरणवसु ओ जगन्नाथदासेर नामे लिखित आछे, जगन्नाथ-
 दासेर खातार अङ्कसकलेर सहित, जाहा रामकानाइवसुर नामे
 लिखित आछे, मोकावेला अर्थात् ऐक्य करिया समान अथवा
 न्यूनातिरेक, जाहा प्रकाश हय, ताहार कैफियत दाखिल करे ।
 एव जे हेतु प्रकाश आछे जे फरियादी रामकानाइवसु पिता ओ
 एइ मकईमार एक जना आसामी तारिणीचरणवसु उदार पुत्र
 एवं फरियादिर निकट एइ मकईमार दाविर टाका कर्ज लओन
 आसामिर सहित अर्थात् पिता पुत्रेर एक स्थान वास ओ एकान्न-
 भूक्तेर समय प्रकाश आछे । अतएव आदालतेर परिडतेर स्थाने
 ए विषयेर प्रश्न, जेमत प्रकार विषये पिता कर्त्रिक पुत्रेर प्रति
 कर्जा टाका प्राप्ति जन्य नालिश ए प्रदेशेर चलित शास्त्र मते
 वैध एवं यथार्थ वटे कि ना, आविश्यक ! अतएव हुकुम हइल जे
 एइ रुबकारि नकल एइ विषयेर उत्तर लिखनेर इङ्गिते जे यदि
 स्यात् पुत्र पितार स्थाने एकेत्र वास ओ एकान्नभूक्त अवस्थाय
 टाका कर्ज नय, ताहा प्राप्ति जन्य पुत्रेर प्रति पितार नालिस
 वैध ओ यथार्थ वटे कि ना-एइ आदालतेर परिडतेर निकट
 प्रेरित हय, एवं मकईमार मिछिलेर सम्बलिष्ट खाता आदालतेर
 खाजाञ्चीर जिम्बा हय-जे से उपरेर लिखित मत कैफियत १ एक
 सप्ताहेर मध्ये गोजराय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजाज्जईष्टाकोएलसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितेश्चदीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिराम्बरमासीयशिवमितदिव -
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनोन्दुमितदिन-
सम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ॥—

यदि पितापुत्रयोरेकवाकेन वसतोर्मध्ये पुत्रः पितुः सकाशाद् ऋणं
गृह्णाति तदा तत्प्राप्त्यर्थं पुत्र प्रति पितुरभियोगः शास्त्रविहितो न
भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायमागविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी
न्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

आतृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि ।

प्रातिभाष्यगृह्यं साक्ष्यमविभक्ते न तत्स्मृतम्—इति विवादमङ्गार्य-
वादि(१ विवा० १५२ क ,ग्रन्थश्रुतयाज्ञवल्क्य(पृ० २।५२)वचनम् ॥१॥

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमिताब्दीयधिवरवरीमासीयदिङ्मित
दिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८५) मोकाम कलिकातार सदर देओनि आदालतेर इ० सन
१८३५ सालेर १६ दिजम्बर मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर
२ पीप बुधवार दिवशेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेवेर
चैठकेर रोवकारि—

भिक्षुनारायणसिंह वनामे तिलकधारिसिंह ओ भिक्षुधारि-
सिंह ओ गायरह ।

छायेलेर उकिल मुनशी ओलीवला हाजिर आइल । पञ्चाश

टाका मूल्ये इष्टाम्पेर पर छायेलेर दरखास्त मौजे भजापट्टीर अर्द्धक ओ मौजे नओरङ्गावादेर मोद्धलमेर चारि आना ओ मौजे नोमा ओ मौजे दिखि ओ गायरहर मोट सोल आनार वारो आना हिश्यार दखल पाइवार ओ हकीयतेर तजविजेर ओ कालेकट्टीर केतावे नाम लेखाइवार मोर्द्धमाय जमा रुलेर तिन गुण ओ वयमेवादिर टाका मुवलगे एक हाजार दुइ सत शातशष्टी टाका साढे दश आनार संख्याय खास आपिल मञ्जुर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेरे नामेर उकालतनामा ओ सन १८३३ सालेर ८ जुलाई तारिखेर लिखित तेरहोत जेलार सदर आमिनेर तजविज करा एक केता डिगरिर नकल ओ सन १८३४ सालेर २० आगष्ट तारिखेर ऐ जेलार जजसाहेवेर एक केता फयसालार नकल ओ सन १८१६ सालेर ३० जुलापर लेखा जेला मजकुरेरे रेजष्टर साहेवेर एक केता फयसालार नकल ओ सन १८१६ सालेर २३ जुलाईयेर प्रकाश हओो तेरहोत जेलार आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल सम्बलित, ये एइ मासेर प्रथम दिवसे दाखिल हइयाद्विल, अद्य दरपेप हइया हष्टे आइल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व शाखेर विवरण ज्ञात हओो उचित बोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर नइल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय।

प्रश्नः—यद्यपि स्यात् तेरहोत जेला निवासीय दुइ व्यक्ति हिन्दु पैतृक विशयेर पर साधारणे दखलीकार ओ उद्दारा देनादार, एवं उभयेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण थाके, अथ एमन कोन विशय उद्दादिनेर ना थाके जे ताहा हइते उद्दादिनेर देनार टाका परिशोध हइते पारे ओ उद्दारा अनुपाये पैतृक विशय अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण थाकितेओ आपन ० महाजनेर देना परिशोधये

विक्रय अथवा तमलीक करे, तबे ऐ विक्रय ओ तमलीक परिचम-
देशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बदे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणविपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडीनसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितेशचोशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताश्रीपदिशाम्बरमासीपरमेन्दुमित-
दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदद्वितीयतन्मासीयवेदपक्षमित-
दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रति-
पाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्धवति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरा-
प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ —

अत्र प्रमाणम् —

अप्रातर्व्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादायसमर्थेषु भ्रातृषु वा
तथाधिषेष्वाविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापादे तत्सोपणे चावरय-
कर्त्तव्येषु च पित्रादिश्राद्धादिषु स्यावरस्य दानाघमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः
कुर्याद्—इति मिताल्लरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताश्रीवाकिवरवरीनासीवैकादश-
दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविवापेवकहिनेयं व्यवस्था
दत्तेति ॥ —

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८६) प्रथम प्रश्नः—

यदि कोनो व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय, आर
ताहार ज्येष्ठा स्त्री अधोरा, कनिष्ठा स्त्रीर गर्भजातक कन्यार एक
पुत्र अर्थात् मृता व्यक्तिर दौहित्र सन्तान थाके, तबे एतद्देशीय
चलित शास्त्रसम्मत उत्तराधिकारि के हइते पारे ?

द्वितीय प्रश्नः—

यद्यपि एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दीहित सन्तान उत्तराधिकारि ह्य, तवे ऐ ज्येष्ठा अवीरा स्त्रीर जीवनावधि भरण-पोषणार्थर किं हइते पारे । सन १८३५ साल तारिख २७ जुलाई मो० सन १२४२साल तारिख १२श्रावण ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयं च यदीशबोशन्दप्रतिपाद्येपुगुण-गजेन्दुमितान्द्रीयसितम्बरमासीयशिवनेत्रमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य धनिनो द्वे पत्न्यो जीवन्त्यौ चेत्तदा द्वयोः पत्न्योरेव मृतस्य धनिनस्त्यक्तस्थावरास्थावरसमुदायधने यावज्जीवं समानाधिकारः । तयोर्द्वयोः पत्न्योर्मध्ये एका चेज्जीवन्ती, तदा केवलं तस्या जीवन्त्या एव यावज्जीवं मृतधनित्यक्तसमुदायधनेऽधिकारः । जीवन्त्योर्द्वयोः पत्न्योर्जीवन्त्यां वैकस्यां पत्न्यां मृतधनिदुहितुर्दोहितस्थ वा मृतधनित्यक्त-धने नाधिकारः इति ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैवपर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्— इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

ईशबोशन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्द्रीयफेवरवरोमासीयगजेन्दुमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं न्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(८७)—मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर इ० सन १८३५ सालेर १४ जुलाइ मोतावक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ३१आपाठ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडीन साहेवेर बैठकेर रोवकारि—

गोलोकनारायणराय

छापल

छापलेर उकिल सदासुखपण्डित हाजीर आइल । छापलेर छओलात ओ ताहार सम्बलित कागजात, जे ए आदालतेर सावेक हाकिम रिचार्ड ओआलपोल साहेवेर बैठकेर मोतालक छिल, अद्य आमार बैठके दरपेप हइया पाठ करा गेल । कोन हुकुम देओनेर पूर्व निचेर लिखित विषयेर प्रत्युतर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओओ उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्च दिवसेर मध्ये लेखेन-ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय । एइ हेतु जे श्रीमती तारिणी किछु टाका मृत कालीप्रसादरायेर पुत्रगण श्यामसुन्दर देओ प्रभृतिर स्थाने कर्ज लय, ओ शेष ताहा परिशोध ना हओने ऐ श्यामसुन्दर प्रभृति आदालतेर डिगारि ऐ श्रीमतीतारिणीदेव्यार नामे हाशील करिया चारि पाच बत्सर पर्यन्त, जे ऐ श्रीमती जीवइशाय छिल, ताहा जारि ना करिया उहार मृत्युर पर डिगारि जारिर दरखास्त छापलेर नामे जे उत्तराधिकारि हेतुते मोट परगने भओलेर नय आनार मध्ये तिन आना ऐ श्रीमतीर तेज्य अंशेर पर दखलीकार हइयाछिल, जेलार आदालते गुजराय, ओ छापल आपत्य करे जे ऐ श्रीमतीर स्वकीय अनेर टाकार जओओ देओन आमार पर नाइ । ए जन्य जिहारा करा जाइते-छे जे बङ्गदेशीय चलितशाहानुसारे ऐ श्रीमतीर देना परिशोध करा छापलके उचित हय कि ना-इति ।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितेश्वरीशन्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीयवे -

देन्दुमितदिवसीयविचारपत्र तत्प्रतिरूपणितं च तदन्दीयागतिमासीय-
दिङ्मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया व्यवस्थालिखनार्थं प्राप्तम् । किन्तु
तद्विचारपत्रान्मृततारिणीदेवीत्यक्तं घन तस्याः स्त्रीधनमासीत्, तत्प्रति-
पुत्रादिपरित्यक्तं वा तत्सम्मान्तमासीदिति, किं वा तारिणीदेव्या एतद्व्य-
क्तिमर्थं कृतमिति, तारिणीदेव्या सदैतद्धर्माधिकरणाधिनिः कः सम्बन्धः
इति च त्रितयं ज्ञानु न शक्यते । तद्विषयज्ञानं विना प्रभाराज्ञापितव्यवस्था
भवितु न शक्नोतीति । अतो निवेदयामि । यथा आशा तथा कर्तव्यमिति
निवेदनमिति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयदिशम्ब (मासीयगुणपद्ममित-
दिनसम्बन्धिविषयवासरे मयैतन्निवेदनं कृतमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रस्य निवेदनमिति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेशाडीनसाष्टैव वर्माधिकरण
लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयजुलाहमासीयवेदेन्दुमितदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयागस्तमासीयदिङ्मित-
दिनसम्बन्धिवचन्द्रवासरे तत्प्रमुधर्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरस-
गुणगजेन्दुमितान्दीयफेरवरीमासीयवसुमितदिवसीयविचारपत्रान्तरं यत्तद-
न्दीयतन्मासीयवेदपद्ममितदिनसम्बन्धिविषयवासरे च मया प्राप्तं तद्वज्रोत्प-
यादृशशोषो जातस्तदनुसारेणात्तरं लिख्यते—

प्रमुधमर्षितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सतीशवीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दु-
मितान्दीयफेरवरीमासीयवसुमितदिवसीयप्रमुकृतविचारपत्रदृष्ट्या च तारि-
णीदेवोक्तवर्णपरिष्ठापनमविना याज्ञानुसारेण कर्त्तव्यं न भवति—इति-
वद्देशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थात ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवे-
दन्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तदब्दीयागस्तिमासीयेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्र-
वासरे यद्यपि मया प्राप्तम्, किन्तु कर्मबाहुल्यवशात्सप्तमये तदन्तर्गत-
प्रश्नाशयो नागतो यदैतस्योत्तरं लेखनीयं तदैवैतस्य प्रश्नस्थायोऽपि
सम्पग्ज्ञातव्य^१ इत्येव मनसि निधाय प्रभुषधिषो निवेदनं न कृतम् । एत-
स्मिन्नेवावसरे श्रीयुतहेनरीसिक्विपीयरसादेवाभिधानैतदध्माधिकरणप्राची-
नाधिपतिभिराह्वयत निवेदनलिखनार्थमेकमाशापत्रमोशवीशब्दप्रतिपाद्येगु-
णगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयेन्दुगुणमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे प्राप्तम्,
तदनन्तरं तन्निवेदनलिखनप्रवृत्त्येतरेतरकार्यसमुदायव्यग्रैश्च प्रभुमपित-
प्रश्नस्य प्रश्नान्तरजातस्य वा तत्पूर्वमपि प्राप्तस्योत्तरलिखने श्रीश्रीश्वरपूजार्थ-
धर्माधिकरणावकाशात् पूर्वमवकाशश्लेशोऽपि न प्राप्तः । अनन्तरं त्रेगु-
णमितदिनपरिमितो धर्माधिकरणस्वावकाशोऽपि श्रीश्रीश्वरपूजार्थमुत्पितः ।
अत एव श्रीयुतहेनरोसिक्विपीयरसादेवाभिधानैतदध्माधिकरणप्राचीना-
धिपतिभिराह्वयत तन्निवेदनपत्र लिखित्वेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिता-
ब्दीयनवम्बरमासोपरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे दत्तम् । तदनन्तरं
च यद्यत्प्रश्नजातं प्रभुमपितप्रश्नात् पूर्वं परतो वा प्राप्त तस्य तस्योत्त-
रलिखनप्रवृत्तेनापि यस्य व्यवस्थाजातस्य मत्कर्तव्येतरेतरकार्यस्य वा

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुश्रुताज्ञानुसारेण निवेद्यते—

प्रभुमपितेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवे-
दन्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तदब्दीयागस्तिमासीयेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्र-
वासरे यद्यपि मया प्राप्तम्, किन्तु कर्मबाहुल्यवशात्सप्तमये तदन्तर्गत-
प्रश्नाशयो नागतो यदैतस्योत्तरं लेखनीयं तदैवैतस्य प्रश्नस्थायोऽपि
सम्पग्ज्ञातव्य^१ इत्येव मनसि निधाय प्रभुषधिषो निवेदनं न कृतम् । एत-
स्मिन्नेवावसरे श्रीयुतहेनरीसिक्विपीयरसादेवाभिधानैतदध्माधिकरणप्राची-
नाधिपतिभिराह्वयत निवेदनलिखनार्थमेकमाशापत्रमोशवीशब्दप्रतिपाद्येगु-
णगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयेन्दुगुणमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे प्राप्तम्,
तदनन्तरं तन्निवेदनलिखनप्रवृत्त्येतरेतरकार्यसमुदायव्यग्रैश्च प्रभुमपित-
प्रश्नस्य प्रश्नान्तरजातस्य वा तत्पूर्वमपि प्राप्तस्योत्तरलिखने श्रीश्रीश्वरपूजार्थ-
धर्माधिकरणावकाशात् पूर्वमवकाशश्लेशोऽपि न प्राप्तः । अनन्तरं त्रेगु-
णमितदिनपरिमितो धर्माधिकरणस्वावकाशोऽपि श्रीश्रीश्वरपूजार्थमुत्पितः ।
अत एव श्रीयुतहेनरोसिक्विपीयरसादेवाभिधानैतदध्माधिकरणप्राचीना-
धिपतिभिराह्वयत तन्निवेदनपत्र लिखित्वेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिता-
ब्दीयनवम्बरमासोपरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे दत्तम् । तदनन्तरं
च यद्यत्प्रश्नजातं प्रभुमपितप्रश्नात् पूर्वं परतो वा प्राप्त तस्य तस्योत्त-
रलिखनप्रवृत्तेनापि यस्य व्यवस्थाजातस्य मत्कर्तव्येतरेतरकार्यस्य वा

श्रीमतां प्रभूणामेतद्धर्माधिकरणाधिपतोनामवान्तरधर्माधिकरणपतीनां वा आशावशात् शीघ्रता चात्ता, तद्व्यवस्थाञ्जातं प्रथमतो लिखित्वा दत्तम्, तत्तत् कर्म च कृतम् । अनन्तरं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखनप्रवृत्तेनापि यद्विषयत्रयं प्रभुसन्निधौ निवेदितं तस्य त्रितयस्य ज्ञानं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखने अत्यावश्यकं जातम् । तस्य त्रितयस्य ज्ञानं विना प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरं दातुमशक्तेनागत्य प्रभुसन्निधौ निवेदितमिति निवेदनमिति ॥

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमितान्दीयकेवगवरीमासोयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितमिदं निवेदनपत्रं दत्तमिति ।

श्रीर्जन्यतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा शरणम्

(८८)—जिला कटकेर दिमानि आदालतेर सदर आमिन आलार चैठकेर सवाल । मोकाम कलिकावार सदर दिमानि आदालतेर पण्डितानेर प्रति । प्रथम सवाल एइ ये, कय ओ विक्रय प्रभृति मोकदिमार विषयेते शाखेर आज्ञासकल हिन्दुजातीर मध्ये बाङ्गला ओ ओडिस्या ओ वेहार ओ तैलङ्ग ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार वटे, कि पृथक पृथक इति ।—

द्वितीय सवाल एइ ये, हिन्दुजातीर मध्ये कय ओ विक्रयेर स्थले केना ओ विक्रेतार स्वीकार कराते कय विक्रय सिद्ध हय, कि मूल्येर समस्त टाका दिले सिद्ध हय, कि किञ्चित मूल्य दिले ओ निलेओ सिद्ध हय इति ।—

तृतीय सवाल एइ ये, यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु जाति आपन स्त्री ओ अप्राप्त व्यवहार पुत्र विद्यमान थाकिते पैतृक कोनो स्थावर किम्बा स्वोपार्जित कोनो स्थावर काहारो निकट विक्रय करे, तवे ए प्रकार विक्रय शाखानुसारे सिद्ध वटे कि ना इति ।—

श्रीर्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्योगुण-
गजेन्दुमिताब्दीपाकतृवरमाधीपाङ्कपद्ममितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिपाधरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—
प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

हिन्दुजातीयकयविक्रयप्रभृतिविवादविषयकशास्त्राणां वङ्गदेशे उत्कल-
देशे वेदरदेशे त्रैलोक्यदेशे महाराष्ट्रदेशे च क्वचित् क्वचित् स्थलविशेषे
एकाप्यस्तीति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

कयविक्रयस्थले समस्तमूल्यप्रदणपूर्वककेतुविक्रेत्रोः स्वीकारेण विक्र-
यस्य सिद्धिर्भवति । किञ्चिन्मूल्यप्रदणेन विक्रयस्य सिद्धिर्न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

मत्सोन्मत्तेन विक्रीतं हीनमूलं भयेन वा ।

अस्वतन्त्रेण मूढेन त्याज्यं तस्य पुनर्भवेत् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
(पृ० ४४१) ग्रन्थभृत्कृहस्पति (पृ० १५५) वचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचित् पत्न्यां विद्यमानायामप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेष्वपि विद्यमानेषु
कमागतं स्वोपाजितं वा स्थावरं शास्त्रोपावश्यककार्यार्थव्यतिरेकेण विक्रीतं
स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण न सिद्धयति, शास्त्रोपावश्यककार्यार्थव्यतिरेकेण
विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण सिद्धयति—इति कटकप्रदेशचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मखिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा
प्रभृतिग्रन्थभृत्पाञ्चलस्मृत्यवचनम् ॥१॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिं ते ऽप्यभिक्रान्तिं न दानं न च विक्रयः ॥-इति मिताक्षरादि-

(पृ० २०० ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥)

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथा-
विधेष्वभिगन्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्याग्न्यामापदि तत्सोपरो चावश्यकर्तव्येषु
पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्वाद्—
इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताक्षरीप्रमोचर्चमासोयदिद्वमितदिन-
सम्बन्धिवृहस्वतिवासरे मया प्रभुव्रमापितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितैः
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(२६) मोराम कलिकातार मदर देओनि आदालतेर इङ्गरेजी
सन १८३६ सालेर ७ जानेर मोता(ब)के वाङ्गला सन १२४२ सालेर
२४ पौष वृहस्वतिवार दिवशेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रोयुत
ओलियम ग्राडीन साहेवेर रोवकारि ।—

फाशीचन्द्रमुस्तोफि

छायेल—

छापलेर वकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय हाजीर आइल ।
सन १८३५ सालेर १६ दिशम्बरेर लिखित हुगलि जेलार आदा-
लतेर एक केता रिटरण तथाकार एरु केता रोवकारि ओ ओछि-
नामार नरुल ओ गयरह ऐ रिटरखेर सम्बलित सन मजकुरेर
३१ आगष्टेर प्रकाशित ए आदालतेर हुकुमेर जओावे प्राप्त ओ
अथ दरपेप हइया छायेलेर छओाल ओ गरह ऐ छओालेर
संक्रान्तेर कागजसकलेर सहित ओ ए आदालतेर परिडतेर व्य-
वस्था हष्टे आइल । ए आदालतेर परिडतेर व्यवस्थार लिखित
हइयाछे जे यदि एरु व्यक्ति अथिरा कन्यार स्वामि कुनेर स्वामिर
भातार न्याय प्रभृति जे ताहा हइते ऐ अथीरा खीर धम्म ओ लज्जा

मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे थाके, तवे आपन स्वामीर गृहे अवीरा खोर जाओन कर्त्तव्य वटे, ओ यद्यपि ऐ प्रकार ना थाके, ओ ऐ कन्यार पितृकुजेर पिता ओ भ्राता प्रभृति थाके जे ताहादेर हइते ऐ कन्यार धर्म प्रभृति लज्जा मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे, तवे ताहा त्याग करिया कन्या मजकुरार आपन स्वामिर गृहे जाओन आविश्यक राखे ना; वरं स्वामिकुजेर एक व्यक्ति पुरुस रक्षणावेक्षणेर उपयुक्त ना थाकार सन्भवे ऐ खीर रक्षणापेक्षण ऐ खीर पितृकुजेर मनुष्यदिगेर पर उचित वटे । किन्तु व्यवस्था मजकुरा श्रीमती कमलकुमारिर स्वामि मृत गमेशचन्द्रेर लिखिया देओ। ओछिनामा दिष्ट व्यतिरेक लिखित हइयाछे । ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ प्राप्त ओछिनामा एइ हुकुमे जे नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चदिवसेर मध्ये बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारं लेखेन जे ओछिनामा मजकुरार दिष्ट अप्राप्तव्यवहारा श्रीमतीकमलकुमारी स्वामीर ग्रहे आपन शाशुडिर निकट थाऊन आविश्यक वटे, अथवा ताहार पितार निकट थाकिते पारे—ए आदालतेर परिडतके अपन करा जाय इति ।

श्रीकृष्णः शरणम्

परमपूजनीयश्रीमतीबन्नाकुमारीदासी माता ठाकुराणी श्रीचरणाम्बुजेपु ।

लिखितं श्रीरमेशचन्द्रदत्तकस्य ओछियतनामापत्रमिदम् । कार्यनञ्जागे' आमि सारिरिक पीडाय अत्यन्त पीडित, एवं जीवन संशय बोध हइतेछे । अतएव एदयने आमार होप बाहाल आछे, आपन ओ श्रीमतीकमलकुमारीदासीके पुण्यपुत्र लओनेर अनुमति पत्र लिखिया दिया आमार पैतृक ओ सोपार्जित मनकुता ओ गएर मनकुला दोरोवस्त विपयेर

एवं आमार ऐ खीर ओ ताहार लओओ ऐ पुष्यपुत्रेर रक्षण ओ हेफाजत कारख आपनाके ओछि मकरर करिया लिखिया दितेछि—जे आपने मालिक निचेर तपसील सकल कर्म करिवेन ।

१ दफा । दोरवस्त एमलाक मनकुला ओ गयेर मनकुला, जे किछु आमार दखले आछे ओ जाहा आमार सरिकानेर निकट हइते बुझ समुझ करिया लइते बक्री आछे,—ताहा बुझ समुझ करिया लइया तावत विषये दखिलकार थाकिया हेफाजत करि-वेण, एवं देना ओ पाओना जाहा आछे ताहा बुझ समुझ करिया दिवेन ओ लइवेन ॥—

२ दफा । नित्य-नैमित्तिक क्रिया-कलाप ओ संसारेर खरच-पत्र अर्थात् परिवारेर भरण पोषणादि समय मत करिवेन ॥—

३ दफा । आमार खी आमार अनुमत्यानुसारे यथाशास्त्र जे पुष्यपुत्र लइवेक, ऐ पुष्यपुत्रेर एवं आमार ऐ खीर रक्षण-पत्तन आपने करिवेन । जावत ऐ पुष्यपुत्र ब्येस-प्राप्त ना हथ तावत समुदाय विशय ओछि सुरत आपनकार दखलकबजे थाकि-वेक । ऐ पुष्यपुत्र ब्येस-प्राप्त हइले आपने ताहाके समजाइया दिवेन । यद्यपि पुष्यपुत्रेर ब्येस-प्राप्त हओनेर मध्ये आपने कोन पीढाय अथवा अन्य कोन कारणे जीवन संशय बुझेन, तवे आपन परिवर्त्त अन्य काहाके त्वातिर्जमा मते ओछि मकरर कारिवार एकेयार आपनकार थाकिल ॥—

दाफा । आमार पैठक आं सोसार्जित कालेकट्टरि माल-गुजारि समपर्कीय ओ पत्तनि ओ दरपत्तनि तालुकात जे आछे, ताहाते आमार एजागाएत खरच-पत्रेर बाहुल्यताय ओ अन्य देना परिशोधे सन हालेर सदर मालगुजारि आदायेर अनेक असंस्थान आछे । आपने ऐ तालुकातेर मध्ये कोनो एक अथवा बतोधिक तालुक पत्तन करिया दरपत्तन दिया ताहार पन बाहाय ऐ असंस्थान मालगुजारि सरघराह करिया विषय रक्षा करिवेन । इति सन १२३७ साल तारिख ६ कार्तिक—

श्रीरामदत्त

सां० देवानन्दपुर ।

श्रीगोविन्दपाल

सां० देवानन्दपुर ।

इशादी

श्रीवैद्यनाथमित्र

सां० हाजीपुर पं० चौगुहा ।

श्रीपाँचकडियोप

सां० गडु ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीसुतश्रीोलियमवेराडोनसाहेवधर्माधिकरण -
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयज्ञानवरीमासीयमुनिमित -
दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितासीयभ्रामाख्य पत्रं
च यच्चद्बदीयकेवरवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिवृहत्स्यतिवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितासीयभ्रामाख्यपत्रदृष्ट्वा अप्राप्तव्यवहारयाः श्रीमत्याः
कमलकुमार्याः पतिगृहे स्वभूषन्निधानस्थितेः शास्त्रानुसारेणावश्यकता
नास्ति स्त्रोत्वेन स्वतोऽस्वतन्त्रायाः स्यन्तररक्षकत्वस्याशास्त्रीयत्वेन तस्य
पितृसन्निधौ(१)ने स्थितिर्भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पिता रक्षति क्रीमारे भर्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥—इति मनु(६।३)-

वचनम् ॥१॥

भर्ता रक्षति यौवन इत्यादि प्रायिकम्, अभर्तृपुत्रायाः सन्निहितायाः
पित्रादिभिरपि रक्षणात्—इति कुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीग्रन्थ(पृ०
३४६)लिखनम् ॥२॥

मृते भर्तृर्पुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।

विनियोगात्मरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिस्त्रीणो पतिकुले निर्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपत्नः प्रमुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
(पृ० १७३।१७४) ग्रन्थधृतनारद (१३।२८-२९) वचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयापरेल मासोयेमुमितदिन-
सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राधीयत्रामारूपपत्राम्यां
प्रहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६०)—रुक्कारि मिडिल मोकाम कलिकाता सदर देशो-
यानी आदालतेर सन १८३६ सालेर मार्च मासेर स्याष्टादस
दिवस बुधवारे डिबड इसमिट साहेव-कायेम मोकाम हाकिमेर
वैठके ॥—

जगतचन्द्रअधिकारि—

साएल

साएलेर उकिल निलमनिवन्धोपाध्याय हाजीर हइल । सन
१८३५ सालेर दिजम्बर दशम दिवसेर जिला बर्द्धमानेर जज
साहेवेर ओ जिलार पण्डितेर व्यवस्थानुसारे सायेलेर एवं
मधुसूदनबडाल प्रतिवादिर पूर्वपुरुषेर स्थापित ओ प्रकाश करा
श्रीधीश्वरठाकुर-ठाकुराणी सूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटिते लइया
जाइवार अनुमतिते मकरेमा निघ्नत्य करियाछेन, ए कारण
साएल ताहाते असम्मत हइया श्रीमन्दिह हइते ठाकुर-ठाकुराणी
अन्यन्तरे लइया जाओया रहित हुकुम छानेह हओनेर प्रार्थनाय
आपन सओल आर उकिलेर नामेर ओ कालतनामा ओ सन १८३५
सालेर दिजम्बरमासेर दशमदिवसेर ऐ जिला आदालतेर रुक्-
कारि नकल ओ साएलेर सन १८३२ सालेर आषष्टमासेर
सप्तदशदिवसेर हुकुम देओया दरखास्तर नकल आर सन १८३५
सालेर जानेओरि मासेर चतुर्दश दिवसेर हुकुम देओया मधुसूदन

बडाल प्रतिवादिदरखास्तर नकल आर ओ जिला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल सम्बलित एइ मासेर पञ्चम दिवसे सेरेस्ताय दाखिल हइयाछिल, अद्य तारिखे दरपेस हइया पडा-गेज इति । जिला मजकुरेण जज साहेबेण गतो सनेण दिजम्बेर मासेण दशम दिवसेण रुवकारि द्वाराय प्रकाश हइल जे जिलार पण्डित सदर आमिनेण काछारिते उभय विवादीण जे सकल साक्षी गुजरियाछे तदनुसारे उभय विवादीण पूर्व पुरुसेण रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणीजीउके वाहारदिगेण शूद्रजाति सेवकेण वाटीते लइया जाओया प्रमाण हइयाछे । एवं ओ पण्डित सदर आमिनेण व्यवस्था द्वारातेओ ठाकुर-ठाकुराणीजिउण शूद्रसेवकेण दिगेण वाटीते गमने देवत्त हानि हओया किछु बोध हय ना । ये हेतु एक वार तथाय गमन करियाछिलेण, ए कारण साएलेण प्रति किछु हुकुम छादेण करार पूर्व ए आदालतेण पण्डितेर द्वाराय एइ व्यवस्था तलव करा उचित हइल जे यदि ब्राह्मणेण प्रकाशीत ठाकुर ओ ठाकुराणीजिउ एक वार शूद्रजाति सेवकेण दिगेण वाटीते गमन करिया थाकेण, तवे पुनराय पूर्व रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणी शूद्रसेवकेण दिगेण वाटीते गमन करिते पारेण कि ना । एवं यदि गमन करेण ताहाते वाँहार-दिगेण देवत्तर किछु हानि हय कि ना । एमते हुकुम हइल जे ए आदालतेण पण्डित बङ्गदेशेण चलित शाखानुसारे उपरेण लिखित वित्तान्तेण व्यवस्था पञ्च दिवसेण मध्ये दाखिल करेण । व्यवस्था दाखिल करा पर्यन्त सञ्चोचाल स्थकिद् थाकिल इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपंतिसंस्थानाभिपिक्तश्रीयुतडिडिइशमितसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितेशचीरान्दप्रतिपावरसगुणुगजेन्दुमितान्दोयमान्चमासी-
यरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीर-

द्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

व्राह्मणजातिप्रकाशितदेवताविग्रहाभ्यामेकवारं केनचिन्निमित्तेन शूद्र-
जातिसेवकस्य गृहे गतं चेत्तदनुसारेण पुनरपि तन्निमित्तवशाच्छूद्रजाति-
सेवकस्य गृहे ताभ्यां विग्रहाभ्यां गन्तुं शक्यते । तद्धेतुवशाच्छूद्रजाति-
सेवकगृहगमनेन चैतादृशविग्रहयोर्देवत्वदानिर्णं भवति—इति बह्वदेशचलित-
मन्वादिधर्माशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मावित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥ इति बृहस्पति-
वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यसपुत्रगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयाङ्कमितदिन-
सम्बन्धिरनित्यासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

(६१)—तरजमा सवालात—

जिला तिरहुतेर कायेम मोकाम सद्दर आमीन आला सैयद
अवदुल ओ आहिद खान बहादुरे र वैठकेर सवाल सद्दर
दिमानी आदालतेर पण्डितानेर प्रति ओ वाराणसेर पाठशालार
पण्डितानेर प्रति—

मदारीलालेर उत्तराधिकारि रामभजनसिंह आपीलाएट
ओ तालेवरसिंह रप्पाडयदेर मोकदिमाते मैयिल देशेर चलित

शाखानुसारे ओ वाराणस देशेर चलित शाखानुसारे ओ नदियार चलित शाखानुसारे यवाव लिखेन—इति ।

प्रथम सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शाखानुसारे विभागेर अर्थ कि—इति ।

द्वितीय सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शाखानुसारे साधारण्य कय प्रकार बटे—इति ।

तृतीय सवाल—एइ ये ए प्रकार कोन साधारण्य आछे, ये हिन्दुजातिर सन्तानहीन कन्यासकलेर अधिकार पितार मृत्युर पर पितामहेर सपिण्ड विद्यमान থাকिते पितृपितामहेर त्यक्त धने ह्य कि ना इति ।

चतुर्थ सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति आपन पितामहेर पौत्रसकलेर सहित विवाद उपस्थित करिया आपन अंशेर डिगरी आवालत हइते पाइया ओइ डिगरी अनुसारे दखिलकार हइया आपन जीवन पर्यन्त पृथक् पृथक् असूल तहसील करिया मरियाथाके, तवे एमत विपयेर विभाग बला याइवेक कि ना इति ।

पञ्चम सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु आपन पितामहेर पौत्र सकलेर सहित पृथगन्व ओ कारोवार ओ दान ओ ग्रहण ओ आय ओ व्यय पृथक् पृथक् करिया ओ पितामहेर त्यक्त किञ्चित भूमि अविभक्त राखितो, ओ ओइ भ्रातासकल आपन आपन अंशेर परिमित असूल तहसील पृथक् पृथक् करितेछिलेन—ए प्रकारे ओइ पितामहेर त्यक्त स्थावर विभक्त जाना जाइवेक कि, अविभक्त जाना जाइवेक । ओ ए प्रकार साधारण्य कन्यार अनधिकारेर कारण हइते पारे कि ना इति ।

षष्ठ सवाल—एइ ये यद्यपि पितामहेर पौत्रसकलेर मध्ये क्रमागत स्थावर विभक्त ना हइया थाके, ओ ओइ स्थावरेर उपस्वत्व अंशीसकल आपन आपन अंशेर अनुसारे पृथक् पृथक् असूल ओ तहसील करिते थाकेन—तवे ए प्रकारे ओइ स्थावर विभक्तेर मध्ये गणना हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त-

पदेर अर्थ हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त पदेर अर्थे
मध्ये गणित हइवेक कि, अविभक्त पदेर अर्थे मध्ये गणित
हइवेक इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रं च यशीशवीशब्दप्रतिपात्रेणुखगजेन्दु-
मत्तान्दीयसितम्बरमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

द्रव्यसमुदायविपयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशे प्रादेशिकस्वत्वव्य-
वस्थापनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण विभाग इति ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविपयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशेषु
व्यवस्थापनम्— इति मिताक्षरा (पृ० १६७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविपयाणां तत्तदेकदेशे व्य-
वस्थापने शक्तः— इति वीरमित्रोदयादि (वो० म० पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

एकदेशोपात्तस्यैव गोभुहिरण्यादावुत्पन्नस्य स्वत्वस्य विनिगमना-
प्रमाणाभावेन वैशेषिकव्यवहारानर्हतया अव्यवस्थितस्य गुटिकापतादिना
व्यञ्जनं विभागः— इति दायभाग (पृ० ८) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यमनेकविधमस्ति । तत्
सर्वमधोलिखितवचनजातेष्वेव स्पष्टमिति ॥

अत्र प्रमाणम्—

दानमहणपरवचगृहक्षेत्रपरिग्रहाः ।

विभक्तानां पृथग् ज्ञेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥— इति विवादरत्नाकर-
(पृ० ६०६) विवादचिन्तामणि (पृ० २५३) विवादचन्द्र (पृ० ८७)
मिताक्षरावीरमित्रोदय (पृ० ७१६) दायभाग (पृ० २३०) दायतत्त्व (पृ०

१७६) विवादाशुंबसेतु (पृ० ८३) विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थभृतनारद (नाम-
सं० पृ० १५६) वचनम् ॥१॥

साक्षित्वं प्रातिभाष्यं च दानं ग्रहणमेव च ।

विमक्ता आतरः कुर्युर्नोविमक्ताः कथञ्चन ॥—इति तत्तद्ग्रन्थभृत-
नारद (नामसं० पृ० १५६) वचनम् ॥२॥

येपामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वच्छ्रवथतः ।

विमक्तानवगच्छेयुर्लोक्यमप्यन्तरेण तान् ॥ इति तत्तद्ग्रन्थभृतनारद-
(नामसं० पृ० १५७) वचनम् ॥३॥

तृतीयप्रश्नस्थोत्तरम्—

मृते पितरि विद्यमानेषु पितामहसपिरडेपु पितृपितामहत्वकथने येन
साधारण्येन सन्तानरहितदुहितृणामधिकारो न भवति, तत्साधारण्यञ्च
भ्रातृणां पितृव्यभ्रातृपुत्रादीनां वा सपिरडानां परस्परमविभक्तघनाना-
मेकपात्रेण वसतामेकत्र पितृदेवद्विजाञ्चनमायव्ययादिकमपि कुर्वतां परस्पर-
मृणप्रातिभाष्यसाक्ष्यादिकमप्य(पा)कुर्वतां^१ तत्तत्कर्मजातमेवेति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

चतुर्थप्रश्नस्थोत्तरम्—

चतुर्थप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं
शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

पञ्चमप्रश्नस्थोत्तरम्—

पञ्चमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येत्तत्प्रश्नलिखितपितामहत्वकं साधारं
धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोति, एतादृशसाधारण्यञ्च कन्या-
धिकारप्रयोगं भवितुं न शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥

१. ० मध्यकुर्वताम्—व्यस० ।

पठप्रश्नस्योत्तरम्—

पठप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं स्थावरं विभक्तमध्ये गणितं भविष्यति, एतादृशं स्थावरं विभक्तदवाच्य भविष्यत्येतादृशं स्थावरं विभक्तपदार्थान्तर्गतञ्च भवति ॥—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादरत्नाकर-विवादचिन्तामणिकल्पतरुपारिजातविवादचन्द्रप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी वाराणसीप्रदेशचलितमितात्राधीरभिन्नोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाभवव्यवहार-कौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी नदियाप्रदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादाद्यैवसेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरसेन्दुमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसम्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितैर्यं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०१ लं जारि—

(६२)—जेला चव्विम परगनार मोतालक चौडि नवाव-गञ्जेर मोनछफी काछारि हइते सदर देमानि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निरुद व्यवस्थाकारण सओल पाठान जाय ।

श्रीमतीपार्वतीदासी साकिन नैहाटी ५० हाविलीसहर—

डिगारिदार

श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ रामनारायणमित्र— देनदार
कालीप्रसादमित्र ओ वेनिभाषवमित्र ओ मधुसूदनमित्र—
नाबालगदिगेर माता श्रीमतीकरुणामयीदासी—मोजाहेम ।
गोविन्दचन्द्रमित्र सा० गैहाटी ५० कलिकाता—

दोपरा मोजाहेम

दा० २७३।।। टाका माय खरचा—

यद्यपि कमललोचनदे आपन स्थावर ओ अस्थावर विषये ओ आपन स्त्री श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ दुइ कन्या श्रीमती-
करुणामयीदासी ओ आनन्दमयीके राखिया परलोक ह्य आर
करुणामयीदासीर गर्भजातक सन्तान श्रीयुतमधुसूदनमित्र ओ
वेनिमाधवमित्र ओ कालीदासमित्र नावालग वत्तमान थाके—
एमत दशाय ऐ करुणामयीर माता श्रीमतीठाकुराणी कमललोचन-
देर स्त्री ऐ करुणामयीर स्वामी रामनारायनमित्रेर सम्बलित
कमललोचन मजकुरेर खरिदा ब्रह्मोत्तर ॥१ जमि बन्धकेर द्वाराय
टाका कर्ज लइया थाके, आर डिगरि हओनेर पर डिगरि जारि
द्वाराय ग्रविनामार लिखित जमि ऐ कमललोचनेर त्यागी वस्तु
फोक हइया थाके, तवे कमललोचनदेर दौहित्र लोक थाकिते
ताहार त्यागी वस्तु ऐ ठाकुराणीदासी ओ रामनारायण मजकुरेर
देनाय विक्री हइते पारे कि ना । यदि ठाकुराणी मजकुरा ऐ
टाका आपन निज खरच किम्चा आपन स्वामीर गयातीथं
पिण्डदान किम्चा आपन द्वितीय कन्यार विवाहेर कारण लइया
थाके—एमत तृतीय हेतुते कमललोचन मजकुरेर त्यागी वस्तु
हइते ठाकुराणीदासीर देना परिशोध हइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशत्रीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दु-
मितान्द्रीयदिशम्बरमासीयगुणपद्ममितदिनसम्बन्धिपुत्रवाचरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य मूलधनिनः कमललोचनदेनाम्नो
दौहित्रेषु विद्यमानेषु कमललोचनत्यक्तधने पत्नीत्वेन जाताधिकारया
ठाकुराणीदास्या मृतधनिपत्न्या प्रश्नलिखिततद्वर्णं यदि शास्त्रीयावश्यक-
कार्याभ्यन्वितरेकेणार्थात् स्वेच्छया स्थाभिप्रायेण वा कृतं स्यात्तदा तद्व्य-
परिशोधनार्थं कमललोचनत्यक्तधनस्य विक्रयो भवितुं न शक्नोति; यदि

च ठाकुराणोदासी तदेव ऋणं शास्त्रीपावश्यककार्यार्थंमर्यात् स्वकीयभरण-
पोषणायथं स्वपत्न्युः आदायथं द्वितीयकन्याविवाहायथं वा कृतवती
स्यात्तदा कमललोचनत्यक्तघनात् ठाकुराणोदासीकृत्यपरिशोधनं भवितुं
शक्नोति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यव-
स्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभृत्याञ्चवल्क्य-
वचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दयादा उद्ध्वंमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थभृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्तुरीर्षदेहिर्नकन्यायथं दानादिकमप्यनुमतमिति । वर्तनशक्ती-
वाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्ती विक्रयणमपीति च-दायभागग्रन्थ-
लिखनम् ॥३॥

कन्या वैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु यत् कृतम् ।

एतत् सर्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्वादि-
ग्रन्थभृतकात्यायन (कास्मृ० ५४३.पृ० ६८)वचनञ्चेति ॥४॥

ईशवीर्यशब्दप्रतिपाशरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयशिवमितदिनस-
म्बन्धिषडुषडाठरे मया प्रमुक्तमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६३)—लं० ६७० सदर—

इ० सन १८३६ सालेर १६ मार्च मो० वा० सन १२४२ सालेर
८ चैत्र शनिवारेर श्रीयुव जाज्ज इष्टाफोएल साहेब विचारा-
दूर्धचेर आधिपत्येर मोकाम फलिकातार सदर देश्रोयानी आदा-
लतेर मिद्धिलेर रुवकारि—

राणीजयदुर्गा

आपीलाएट—

राणीकृष्णमणी

रेप्पाडएट—

आपीलाएटेर उकिल वर्ग सदासुखपण्डित ओ वंशीवदत मित्र ओ रामना(रा)यण उपस्थित हइल । रेप्पाडएट एयानाम-नामा ओ एस्तहारनामा जारि हओनेओ स्वततः वा उकिलतः उपस्थित हइल ना । अद्य एइ मकईमा संख्यार शृङ्गलामते आमार आधिपत्ये समग्र हइया मिछिलेरे कागजसकल पठित हइल । अवधारित हइल ये मोदाइया अर्थात् वादी उभयेर स्वीकृत विमलादास्यार स्वोपाज्जित सागुदाइक अर्द्धक मौजे राणी प्रानेर अर्द्धक अर्थात् उक्त मौजेर ।) चारि आना अंश पाओनेर दावि उपस्थित करे । मोदांलेहा अर्थात् प्रतिवादी राणीजयदुर्गा विमलादास्या कथिक विक्रयेर आपत्य उत्यापन करिलेक । जेलार सदर आमीन सेइ विक्रयके अवीरा खीर पत्त हइते अशीद्ध विवेचना करिया वादीके डिकी देन । ऐ डिकी आपीले जेला रङ्गपुरेर जजसाहेवेर अग्रे अङ्गिकार पत्र विक्रीर न्याय साव्यस्थ ना हओनेर बोधे स्थिरतर रहिल, एवं विषय हस्तान्तर हओन सिद्ध वाक्येर विशेष हओनेर निमित्त आपील खास ग्राह्य हइल । अतएव उपरोक्त विक्रयपत्र साव्यस्थ कि असाव्यस्थ—अनुसन्धाने साक्षिगणेर उक्तिसकल दृष्टी करणेर पूर्वेंइ उचित हइल जे आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा जाय जे । विधवा स्त्री, जाहार सन्तान सन्तत्यादि जीवहपाय नाइ, एवं स्वइस्ते विषय उपाज्जन करे, से विषय हस्तान्तर करणेर क्षमता राखे कि ना । हुकुम हइल जे एइ रुबकारिर नकल एइ आद्वाय जे आदालतेर पण्डित लिखित प्रश्नेर उत्तर २ दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय—इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतदहर्माधिकरणाधिपतिओयुतबाज्जईदृष्टाओएतवाहेवधर्माधिकरण-

लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्द्रीयमाञ्चमासीयाङ्केन्दुमितदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्तदन्दीयतन्मासीयमजपत्तमितदिन-
सम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते ॥—

मृतसन्तानमा विधवया स्त्रिया यदि स्वयमेव धनमुपाजितं स्थातदा
तस्या विधवायास्तद्दानद्वस्तान्तरकरणक्षमतास्त्वेव—इति बङ्गदेशचलितमनु-
दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-

(पृ० ७६ 'ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ६०६।पृ० ११०)वचनम् ॥१॥)

पतिमरणोत्तरं च विधवाया न कश्चित् स्वामी, किन्तु भरणादि-
कर्ता गुरुरेव श्वशुरादिः, अतस्तदानीमजिते स्वातन्त्र्यमेव—इति
विवादभङ्गार्थं (२, पृ० ३६४ क 'ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्द्रीयमैमासीयरसेन्दुमितदिनस-
म्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रमुसमपितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(६४) सर्वशास्त्राध्यापक पण्डित आदालत देओनि सदर
मोकाम फलिकाता सतचरित्रेपु—

प्रथम प्रश्नमिदम्—

यद्यपि कोन श्रीलोक किछु दिव्यादि राखिया निःसन्तान मृत्यु
ह्य । ततपरे ताहार त्यज्य धनेर उपर ताहार स्वामीर पितामहेर
सधवा एक कन्या एवं ऐ कन्यार एक दत्तरु पुत्र एवं ऐ मृता स्त्रीर
स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातृपौत्र राधागोविन्दनामक एक जना
आर ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातृपुत्रवधु श्रीमती-
लक्ष्मीप्रियानाम्नी एक जना एवं तस्य दत्तकपुत्र गोविन्दकीशोर

नामक दाविदार हय; तवे यथाशास्त्र ऐ सकल दाविदारानेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ भृतार त्यज्य घनाधिकारि हइवेक, एवं दत्तक पुत्रेर माता वर्त्तमान थाकिले दत्तक पुत्रके धन पौद्धिते पारे कि ना— एहार यथाशास्त्र उत्तर लिखिवा । परन्तु दुइ किता वंशावलीपत्रिर नकल तोमार ज्ञातार्थे प्रश्नपत्र सम्बलित पाठान जाइतेछे इति । १ माहे मार्च सन १८३६ इङ्गरेजी मतावक सन १२४२ वा० तारिख १६ माहे फाल्गुन ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्र वंशावलीपत्रद्वयं च यदीशवीशब्द-प्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयाद्दिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गल-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हरिश्चन्द्ररायत्यक्तत्ववीसक्रान्त-घने मृतायाः स्त्रियाः पत्युः पितामहस्य सधन्वाकन्याया दत्तकपुत्रस्यार्था-न्मृतघनिहरिश्चन्द्ररायपितामहदौहित्रस्यैवाधिकारः—इति; एवं दत्तकपुत्रस्य मातरि विद्यमानायामपि दत्तकपुत्रस्यैवाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनु-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभृतयाश्वत्थन्य-यचनम् ॥१॥

पितामहप्रपितामहसन्तरेपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिकमे-णाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पितृव्यपौत्राभावे पितामहदौहित्रस्याधिकारः—इति दायभागटीका- (पृ० २१८) दायक्रमसंग्रह (पृ० ८) प्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाद्दिपक्षमितदिनसम्ब-न्धिवृहस्पतियासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारवंशावलीपत्राभ्याश्च सहितेयं व्यवस्था दधेति ॥ —

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६५) यदि कश्चिन्निरपत्यो द्राक्षणः स्वभार्या समीपवर्तिनः सपिण्डारव त्यक्त्वा मृतस्तदा तत्समीपवर्तिनि सपिण्डे विद्यमाने लब्ध-पतिधना तत्सन्तो स्वभर्तुः स्थावरधन पत्रकरणपूर्वक कस्मैचिद्वत्तवतो चेत्, तत्स्त्रीकृतं दानमप्रामाणिकम् ।

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादचन्द्रग्रन्थस्थ-कृतनिवृत्तिप्रकरणधृताप्यवचनादिति ॥—

सही—कल्याणमिधपण्डित

आदालत दिवानी जिले तिरहुत बकलम

रामनाथमिधपण्डित ।

शरीराद्धं स्मृता त्राया पुण्यापुण्यफले समा ।

यस्य नोपरता भार्या देहाद्धं तस्य जीवति ।

जीवत्यर्द्धशरीरेऽथं कथमन्यः समाप्नुयात् ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दायभागविवादचन्द्र-स्थकात्यायनवृत्तति (पृ० २११) वचनादिति ॥—

सही—कल्याणमिधपण्डित आदालत दिवानी

जिले तिरहुत बकलम

रामनाथमिधपण्डित ।

ल० ३५६ सदर—

०० इ० सन १२३६ सालेर १७ मे सोतावक सन १२४३ सालेर ५ ज्यैष्ठी मङ्गलवारेर प्र कारय मोकाभ कलिकातार सदर देओयानि आदाजतेर मिडिलेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रोयुत जाजर्न इष्टा कोयेल साहेवेर नेसस्ते—

गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विजयराय ओ गायरह—

आपीलागटान

रेष्यानडेण्टान

मोड्णमात धनेश्वरी ओ गयेरह

आपीलाण्टानेर उकिल बजरङ्गीलाल ओ रेष्यानडाण्टानेर उकिल मुनशी दादारबक्स हाजीर हइल । एइ मोकईमा अद्य तरतिव नम्बर मते आमार नेसस्ते रोवकार हइया मिडिलेए कागजात पठोत हइल । ताहार मध्ये ये जेला तिरहुतेर आदालतेर पण्डितेर दुइ व्यवस्था मोलाहेजा हइल । यदि स्यात् उक्त दुइ व्यवस्थार मध्ये रेजेष्टर साहेवेर सओयाल ओ जजसाहेवेर सओयालेर मध्ये विभिन्नतार प्रति दृष्टीते आमार निकट कोनो प्रभेद प्रकाश नाइ । किन्तु जे हेतुक प्रकाश आछे—जे एइ मकईमार खाश आपील लिखित व्यवस्थासकलेर लेहाजे मञ्जुर हइयाछे, ए जन्य ए आदालतेर पण्डितके उक्त व्यवस्थासकलेर लिखित जओयावेर यथार्थता तिरहुतेर चलित शास्त्र अर्थात् मैथिल अनुसारे जिज्ञासा जन्य ताहा समर्पन उचित विवेचना हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल मोकईमार नथिर ग्रन्थितो आसल दुइ व्यवस्था समेत एइ आदालतेर पण्डितेर निटक पाठान जाय । एइ हुकुम, ये उक्त पण्डित दुइ व्यवस्था दृष्टेर पर एइ विषयेर जओयाव जे लिखित व्यवस्थासकल तिरहुत जेजार चलित शास्त्र अनुसारे यथार्थ बदे कि ना—एऊ सताइ मेयाइ मध्ये दाखिल करेन इति ॥

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतब्रह्मर्षिश्रीकोएलसाहेवधर्माधिकरणा-
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यस्सगुण्यगजेन्दुमितान्दीयमैमासीयमुनीन्दुमितदिव-
सीयत्रिचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिकारपत्रमेवं तस्मर्षिततीरभुक्तिविज्ञाख्यायान्तर-
धर्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थाद्वयं च यत्तदन्वीयतन्मासीय-
गजपद्ममितदिनसम्बन्धिसनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधा
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोस्तात्पर्यार्थं स्वयमेव—कस्यचिदनपत्यस्य मृतस्य ब्राह्मणस्य पत्न्याः स्वसंकान्तपतिस्थावरादिघनस्य पतिसर्पिण्डेषु विद्यमानेष्वन्यस्मै हस्तान्तरकरणे क्षमता नास्ति, किन्तु यावज्जीवं भोगाधिकार इति । तत्प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नद्वयलिखितवृत्तान्ते सति मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति, प्रभुसमर्पितव्यवस्थाभ्यां तद्व्यवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नाभ्यां चैतद्विधादे पत्न्याः स्वसंकान्तपतिस्थावरादिघनस्य हस्तान्तरकरणक्षमताबोधकशास्त्रीयावश्यकहेत्वनवगमादिति ॥—

ईश्वीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वाविद्यतितम-
दिनसम्बन्धिवुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राभ्यां व्यवस्थापत्राभ्यां
च निवेदनपत्रेण च सद्दितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६६)—६३ ल० सदर—

६० सन १८३६ सालेर ६ एफरेल मोतावक सन १२४२ सालेर
२६ चैत्र वारिख बुधवारेर प्रकाश्य मोकाम कलिकातार सदर
देओयाणी आदालतेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत
जाज्ज इष्टाफोयेल साहेवेर एजलागे—

रामनाथसिंह—

राजारूपसिंह ओ राधेकृष्ण—

आपीलाएटेर उकिल मुनशी दादारवकस ओ रेष्पाडेएटानेर
उकिल मुनशी अलीउल्ला उपस्थित हइलो । एइ मोरुईना अद्य
तरतिव नम्बर मते आमार नेसस्ते रोवकार इइया मिछिलेर
कागजसकल विवेचनाय जाना गेलो जे मुईइआन अर्थात रेष्पा-
डेएटान राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णं नओयान परगनार दत्तेट
ओ गयरहे मौजाहायेर पर हक-सफा सुरते दखल करयेर दाविते

आपीलाएट—

रेष्पाडेएटान—

विक्रेता धुरमनसिंह श्री खरिदार रामनाथसिंहेर नाने जेला साहावादेर देओयाणी आदालते नालिस करिलेक । जेलार जज साहेवेर तजविजे आदालतेर मौलविर स्थाने फनओया अर्थात् व्यवस्था लइया सफा अनुसारे विरोधीय वस्तुर प्रति मुद्दाइआनेर दावि यथार्थ हओ्योनेर विशय डिक्री करिलेन ओ सेइ डिक्री द्वितीय निष्पत्य स्थाने एलाका आजिमावादेर प्रोविनरीयन क्रोटे वहाल करिल, जे वर्तमान आपीलार्ड ताहाते नाराज हइया ए आदालते आपील खास वपस्थित करिलेक । सन १८३३ सालेर २३ जुलाई तारिखेर रोवकारि मते एइ आदालतेर हाकिम रायट हालडन राटरि साहेवेर नेसस्त हइते मञ्जुर हइलो । जे हेतुक प्रकाश जे आपील खास मञ्जुरि कारण—ये जाहार उभय पक्ष हिन्दुजाति, से मकहमा तजविज हओया शरा अर्थात् जवनीव धर्मशाखेर अधिकारिके जिज्ञाश्यमते । अतएव अन्य विषयसकल तजविजेर पूर्वे आदालतेर परिडतके व्याओरा जिज्ञाशा उचित । यथा उभय पक्षेर उकिल प्रकाश करिलेक जे यदि जजसाहेवेर फयशालार लिखित सओयालसकलेर जओयाव वेहारदेशेर चलित शाखानुसारे ए आदालतेर परिडतेर स्थाने लओया जाय लभ्यजनक हइवेक । अतएव हुकुम दइलो जे एइ आदालतेर परिडत निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण, ओ रोवकारि नकल बाङ्गला तरजमार सहित आदालतेर परिडतेर निकट प्रेरित हय ॥—

१ प्रथम सओयाल—

देशोट तालुकेर हिस्यादार धूरमलसिंह विक्रेता, बाबु रामनाथसिंह खरिदार, राजरूपसिंह श्री राधेकृष्णसिंह हक-सफा तलविर ओजरदार, आर मौराशो तालुक मजकुरार हिस्यादारान, एवं चतुथे पट्टी, जाहाते विक्रेता वेसरिक आछे, ताहारो हिस्यादार राजरूपसिंह श्री राधेकृष्ण ओजरदारेर दाओट तालुकेर

मध्ये अन्य एक मौज्जार खरिदार उक्त बाबुरामनाथसिंह । यदि-
स्यात् विक्रेता आपन अंश बाबुरामनाथसिंहेर निकट विक्री करे,
उपरेर लिखितेर प्रति विवेचनाय राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णे
दृकसफा अर्शे कि ना ॥—

२ द्वितीय सञ्चोयाल—

धूरमलसिंह विक्रेता बाबु रामनाथसिंह खरिदारके सन १२३५
फर्रुखीर लेखा एक केता वयनामा मवलगे तिन सत टाकार
क्ये दे(य), ओ बायनार तारिख हूइते एक मासेर मध्ये कवाला
लिखिया दिवार ओ तत्कालीन पानेर वाकि मवलगे एक हजार
पञ्चाश टाका लइवार एकरारे लिखिया देय । इति मध्ये राजरूप-
सिंह ओ राधेकृष्ण एक मास गतो हओनेर पूर्व्वे अर्थात् सन
१८२८ सालेर १६ मै तारिखे तिन सत टाका उपस्थित करिया
नलवे लओया सुरत अर्थात् तत्परता चेष्टा करिलेक, फलिताथं
प्रादाजते दाखिज करिलेक । ए प्रकार विषय एमत् आनामत
दृक-टाका रक्षा करणार्थं फलदायक ह्य कि ना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिगतिधोयुतत्राजर्जयकोएलछादेवधर्माधिकरण-
लिखितेशबोधप्रतिपायसगुणमजेन्दुमितान्दीयापरेलमासीयविचारपत्रा-
नर्गतप्रश्नप्रतिरूपार्थं यत्तदन्दीयतन्मासोपरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिषष्ठनिवा-
गरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुममन्तिलप्रथमप्रश्नलिखितविवेचनया धर्मशास्त्रानुसारेण राजरूप-
सिंहराधेकृष्णयोर्दृकटाकारान्दप्रतिपाद्यं भवितुं न शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणैः सह ।

धर्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि मितान्तरादिग्रन्थयुतथाशक्तान्य (२१)

वचनम् ॥१॥

यद्ये कजाता वहवः पृथग्धर्माः पृथक्क्रियाः ।

पृथक्कर्मांगुणोपेता न तत्कार्येषु सम्मताः ॥२॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति वीरमित्रोदयादि-

मन्थधृतनारदवचनद्वयम् ॥३॥—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितद्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते एति एतादृशमूल्यस्थापनं इकस-
फाशब्दप्रतिपादस्य रक्षार्थं धर्मशास्त्रानुसारेण फलदायकं न भवति— इति
वेदार्देशचलितमनुमितान्तरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥३॥—

यद्यपि महानिर्वाणतन्त्रग्रन्थे इकसफाशब्दप्रतिपादविषये उपरि-
लिखितव्यवस्थाया विरुद्धमपि लिखितमस्ति, किन्तु महानिर्वाणतन्त्रग्रन्थो
धर्मशास्त्रान्तर्गतो न भवति। अत एव तद्ग्रन्थानुसारेण व्यवस्था न
लिखिता इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीरशब्दप्रतिपादरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासोयदाविंशतितम-
दिनसम्बन्धिबुधवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६७)—लम्बर—११६

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डित
समीपे प्रश्न एइ -

कालीकान्तवल

आपीलाष्ट

पार्वतीदास्या

रेषाडष्ट

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र ओ एक स्त्री राखिया मृत्यु हय,
ओ ताहार स्त्री ओ पुत्र दिगेर अनेक्यताभाव अशं, तवे एतद्देशीय

चलित शाब्दानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर स्त्री पुत्रदिगेर समक्षे पतिर
वित्तेर अंश पुत्रदिगेर समाप्त मते पाइते पारे कि ना । यदि पुत्र-
दिगेर समाप्ते वित्तासि ना ह्य, तवे कि परिमाणे वित्तासि ह्य-
एह्यार उत्तर लिखिवेन इति । १८३६ ता० फेब्ररओरी मोतावेक
वङ्गला सन १२४२ तारिख २७ माघ ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितभरनरत्रं विचारपत्रं च यदीशवीरन्दप्रतिपादरसगुण-
गजेन्दुमितान्दीयमाञ्चमासोयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषकोऽन् पुत्रानेकां पत्नीं च विहाय मृतः स्यात्,
अथ च मृतस्य पत्न्या सह मृतस्य पुत्राणामर्थान्मानुपुत्राणां मध्ये पुत्रकृत-
वित्तुधनविभागद्वारेणानैक्ये सति अर्थात् त्रिभिः पुत्रैर्भात्रे भागमदत्त्वा
वित्तुधनं समांशेन विभज्यते, तदा मातापि पुत्रसमांशं ग्रहीतुमर्हति,
पुत्रकृतवित्तुत्कधनविभागोपक्रमं विनैव मात्रा स्वेच्छयैव विभागं कृत्वा
पतित्वत्कधनांशयाचनेन अनैक्ये सति माता विद्यमानेषु पुत्रेषु पतित्वत्क-
धनांशं पुत्रांशं समांशानुसारेण प्राप्तुं नार्हति, किन्तु यावज्जीव
स्वपतिकुलोचितप्रासाञ्छादनोपयुक्तधनवश्यकविधवाधर्माद्याचरणोऽनुक्त-
धनस्य चाधिकारिणी भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागान्दिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे कियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो
दातव्यः—इतिदायभाग (पृ० ६७)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

भरुणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्त स्वर्गसाधनम्

नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थभूतमनुवचनम् ॥२॥

पिता माता गुरुर्भार्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।

अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्गं उदाहृतः ॥ इति दायभागटीका(पृ० ३४)धृतमनुवचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीयगुणेन्दुमितः दिनसम्बन्धिषुधवासे मया प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां इङ्गरेजीपत्राभ्यां च सदितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम् श्रीचैद्यनाथमिश्रेण

(६८) लं० २०२ सन १८३३ ।—

मोकाम कलिकातार सदर देखोयानी आदालतेर मिछिलेर रुवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जावर्ज इष्टाकोयेल साहे-
वेर नेमस्ते इंराजी सन १८३६ सालेर १६ आपरेल मोतावक
वाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ वैशाख शनिवार प्रकाश्य—

शिवनारायणचौधुरि

आपीलाण्ट

राधाप्यारीदासी ओ गयरह

रेण्पाण्डेएटान

राधामोहनमित्र

जेळार मोजाहेम

मधुसूदनदास

एइ आदालतेर छायेल

आपीलाण्टेर उकिलवर्ग जेमेप कोलत्रोक सदरलेण्ड साहेव
ओ सदासुखपरिडत ओ रेण्पाण्डेएटानेर उकिल ताराचौदवन्धो-
पाध्याय ओ राधामोहनमित्रेर उकिल गौरहरिवन्धोपाध्याय ओ
मधुसूदनदासेर उकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय उपस्थित हइल ।
एइ मऊई मा अपरिमित तारिखे आमार नेसस्ते रुवकार हइया
मिछिलेर कागजसकल पठित हइल । घोष हइज जे मोईइ
आपीलाण्ट लाट राधानगर आपन खरिदा पर्चनिर हकियते

दखल पाओनेर दाविते वयनामार लिखित मूल्य ओ तालुकेर उपस्वर्त्त मवलगे ७०५१ टाकार तायदादे राधाप्यारिदासी ओ कृष्णदासदत्त ओ तिलकरामदत्त आसामीयानेर नामे हुगलि-जेलार देशोयानि आदालते एइ एजदारे नालिश करे जे राम-गोपालदत्त उहार भ्रातृगण तिलकरामदत्त ओ रघुनाथदत्तेर सहित अन्न प्रथक हओनेर परे सन १२२१ साले आपन उपाज्जन-हइते नाट राधानगर तालुक पर्त्तनी सुरते स्वरिद करिया दखिल ओ कावेज हइया लोकान्तर हय । ताहार मृत्युर पर ताहार वनिता राधाप्यारीदासी आपन स्वामीर ज्येष्ठ भ्राता तिलकराम-दत्त ओ पोष्य पुत्र ओ दौहित्र कृष्णरामदत्तेर सरवराहकारिद द्वारा दखिलकार हइया सदर जमिदारेर जमिदारि सेरेस्ताय आपन नामे दाखिल कराइया नाम जारिर लिपि हासिल करिया स्वामिर अण परिशोध ओ मालगुजारिद वाकि निमित्त उक्त तालुकेर सामुदाइक हुकुक सन १२३८ सालेर २३ फाल्गुण तारिखे मवलगे पाँच हजार टाका पने फरियादिर हस्ते बिक्रय करिया, ताहार वयनामा साक्षिगणेर साइदीते ओ रेजेष्टरी निशा नीते लिखिया दिया, खारिज ओ दाखिल कराइया फरियादिके ओ दखीलकार करार परे उक्ता राधाप्यारि अन्य प्रतिवादिगणेर कुपरामर्शे फरियादिर हस्ते बिक्रय करि अस्वीकार सम्बलित फौजदारिते दरखास्त गोजराय ओ उक्ता राधाप्यारी ओ तिलकरामदत्त ओ रघुनाथदत्तेर पर्त्तनी दावि सुरते ओ जगमोहन-मिश्रेर ओयारिश राधामोहनमिश्रेर उक्त नाटेर चारि आना रकमे दरपर्त्तनीदारि पदे दखल थाकनेर हुकुम ओ लम्बेरि नालि-सेर अनुमति फरियादिर प्रति छादेर कराय । आसामीयान ताहार जओयावे पष्ट अस्वीकारी हइया विरोधीय तालुक जे राधाप्यारीर स्वामी रामगोपालदत्तेर सोपार्जित ओ ताहार भ्रातृ-बर्गेर सहित प्रथकान्ने थाका मुनकीर, वरं ए काल पर्यन्त ताहार-दिगेर तावत कारवार साधारणे ओ एजमालीते थाका प्रकाश-

करे, एवं फरियादिर दरपेश करा कवाला जाल ओ कित्रिम करार दिया शास्त्र मते उक्ता राधाप्यारिर कन्या ओ दौहित्र वत्तमाने दान ओ विक्रय अशीध्व वयान करे। जेलार जज-साहेव जुरिरदिगेर राध, ए विषयेर विशेष तहकीकाते जे विरोधीय तालुक रामगोपाल दत्तैर स्वोपाहित कि तिन सरिकेर अंश आछे, लइया आपन रायेर ऐक्यताय तदानुसारे सन १२३४ सालेर ३ मार्च तारिखे लिखित फयसलार कारणमकले फरियादिर दावी डिपमिप करिलेन। एइ प्रकारे जे फरियादी, यदि राधाप्यारिदास्यार हिंस्यार प्रति कोन दावि राखे, प्रथम नालिश उक्तापन करणेर ह्मता आछे। मोहइ ताहाते नाराज हइया एइ आदालते आपिल करियाछे—जे हेतुक आमार निकट राधामोहनमिश्रेर मोजाहेमो सभोयालेर प्रति, जे आपनाके विरोधीय तालुकेर चतुर्धाशेर दरपर्तनीदार करार देय, एइ विवेचनाय जे से ए मकहमार आसामियानेर मध्ये नहे। केवल दर पर्तनीदार मात्र, कोन हुकुम छादेर करा आविश्वक नाइ, ओ मधुसूदनदासेर अर्पित दरखास्तेर प्रति ओ जे से आपन खरिद करिया ए आदालते दाखिल करियाछे, कोन हुकुम उपयुक्त बोध हय ना। जखन ए मकहमा निष्पत्य हइवेक एवं विराधीय वस्तु, आपीलाण्ट किन्वा रेण्डाण्डेण्ट, जाहार हक, हइवेक, ताहार पर दावि उपस्थित करा व्यतिरेके उहार देखलेर हुकुम हउते पारे ना। अतएव ताहा परित्याग करिया ए मकहमा आसल अव-स्थार प्रति मोहनलालखाँ आपीलाण्टेर मकहमार प्रसङ्ग जाहा राणी सिरोमखी रेण्डाण्डेण्टेर नामे सन १८१२ सालेर ३१ आगष्ट तारिखे एइ आदालत हइते निष्पत्य पाइयाछे। एवं आमार अनुगाने ताहार लिखित हेतुसकल जावदीय उत्तराधिकारी जाहारा हस्तान्तेर समय जीवतमान थाके ताहारदिगेर सम्मति ओ अनुमति भिन्य स्वामीर त्याग्य सामुदाइक विषय हस्तान्तर करणेर विषये अशीद्ध बोध हय। अनुष्ठान करा गेल। ताहाते

आपीलएटेर उकिल कहिलेक जे आमि अनुमान करि से मक-
ईमा दान विषयक, ताहाते पण्डितवर्गेर लिखित जे व्यवस्था
ताहा एइ विक्री विषयक, मकईमार सहित कौन सम्पर्क नाइ ।
ए जन्य ए विषय शास्त्रवेत्ताके जिज्ञाशा करा उचित बोध हइल ।
अर्थात् एइ आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा करा जाय जे से
उपरेर लिखित फयसला दृष्टी करणेर परे सकल उत्तराधिकारि,
जाहारा विक्रयपत्र लेखा हइवार समय जीवईशाय छिल, ताहार-
दिगेर अनुमति भिन्न टाकार परिवर्त्त स्वामीर त्याग्य्य मामुदाइक
भूम्यादि विक्रयेर प्रति विधवा स्त्रीर क्षमता विषये शास्त्रे आज्ञा
वचन करे, ओ ए विषये स्वामिर ऋण थाकुन वा ना थाकुन
कोन प्रभेद आछे कि ना; एवं यदि स्यात् स्वामीर त्याग्य्य सामु-
दाइक भूम्यादि विक्रय कारिते ना पारे, तबे तन्मध्ये कि परिमान
विक्रय करिबार क्षमता राखे—पष्ट करे । अतएव हुकुम हइल जे
मकईमा अद्य मोलतवी थाके, एवं उपरेर लिखित विषयमकलेर
जिज्ञाशा करेण । एइ स्वकारि नकल एइ आदालतेर पण्डितेर
निकट प्रेरित हय इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकार्याधिपतिश्रीयुवनाब्जदशाकोएलसाहेवभर्माधिकार्य-
लिखितेराबोसन्दप्रतिपाद्यरसगुण्यज्जेन्दुमितान्दीयाररेलमासायस्तेन्दुमित -
दिवसीवविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्र यत्तदन्दीयमेइमासीयशिवमित-
दिनसम्बन्धिपुष्पासरे तत्समर्पितरसगुण्यज्जेन्दुमितान्दीयजुलाहमासीयनुनि-
मितदिवसीयविचारपत्रान्तरञ्च यत्तदन्दीयतन्मासीयगुण्येन्दुमितदिनसम्बन्धि-
पुष्पासरे च मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण प्रमु-
समर्पितविचारपत्रलिखितव्यपत्रावलोकनेन-चोत्तरं लिख्यते—

विक्रयपत्रलिखनकालीनविद्यमानोत्तराधि कारिसमुदायानुप्रतिमन्तरेण
राजतमुद्राविनिमये पन्थाः स्वसंकान्तसमस्तपतिस्वावरादिधनस्य विक्रयकरण-

क्षमता शास्त्रीयावश्यककार्यार्थं मर्यात् पतिकृतार्थपरिशोधनार्थं पत्नीर्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं पतिकुटुम्बभरणार्थं स्वभरणपे.पणाद्यर्थं चास्त्येव । पत्नी शास्त्रीयावश्यककार्यार्थं व्यतिरिक्तस्त्रेच्छया स्वभरणानन्तरं विद्यमानपत्युत्तगाधिकारिस्वत्वंनाशकविक्रयकरणक्षमतां न रक्षतीत्येवात्र विशेषः । एवञ्च सति पतित्यक्तस्थावरादिधनान्तर्गतेन यावता घनेन पतिकृतार्थपरिशोधनस्योपरिलिखितावश्यककार्यान्तरस्य वा निर्व्वाहो भवति विधवायास्तररिमितपतित्यक्तस्थावरादिधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव । यदि च पतित्यक्तस्थावरादिममुदायधनस्य विक्रयमन्तरेण पत्नीकर्त्तव्यशास्त्रीयावश्यककार्यजातस्य तदन्तर्गतस्य कस्यचिदपि कार्यस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते, तदा तत्तत्कार्यस्य निर्व्वाहार्थं पत्न्याः पतित्यक्तस्थावरादिममुदायधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव—इति वङ्गदेशनलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऋषयमाही ऋणं दाप्यः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थवृत्तयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

मर्त्तुकामेन वा मर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपञ्चापि सा दाप्या धन यथाश्रितं स्त्रिया ॥ इति विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थवृत्तयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

मर्त्रा जीवन् यथा यस्य पोषणादिक यद्यद्वा कर्म करोति मृतमर्त्तु-कापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीति—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मर्त्तुर्देहैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतमिते । वर्त्तनाशक्ता-वाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि च—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

ईशबोशब्दप्रतिपाद्यरमणुगजेन्दुभिजावरीयजुलाइमासोयइन्दुपत्नमित-

दिनभ्रमन्निघुषवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण चतुर्भिर्व्यवस्थापत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

अत्र प्रमाणम्—

पश्यन्नन्यस्य ददतः क्षिति यो न निवारयेत् ।

स्वामी सतापि लेख्येन पुनस्तान्न समाप्नुयात् ॥ इति वृहस्पति (पृ०-

७५)वचनादिति—

सही - रामनाथमिथ, पण्डित अदालत दिवानी
जिले—तिरहुत ॥

श्रीश्रीदुर्गा

(१००) - लं० १६४—

मोतफरका सन १८३६ इ०—

रोवकारि मिछिल आदालत देओनि सदर मोकाम कलि-
काता श्रीयुत डेविड इशमितसाहेब कायेम-मोकाम हाकिम आदा-
लय मज्जुरार बैठके । तारिख १८ जून सन १८३६ इ० मोतावक
६ आपाठ सन १२४३ घाङ्गला रोज शनिवार ॥—

मोछमात रुकमन—

साएला—

साएलार उकिल तारकचन्द्रराय हाजिर हइलो, गत रोजेर
हुकुमानुसारे जिला भागलपुरेर जजसाहेबेर गत २८ माइ माहार
लिखित रोवकारि ओ रिटरण जाहा एइ आदालतेर हाल सनेर
२४ मार्च माहार लिखित रोवकारिर जवावे एइ मकदेमार
कागजात ओ ताहार इंजेरि सरजमा सम्बलित पौछियाछिल,
अच साएलार सओल ओ गयरह कागजात सहित उपस्थित
हइया विवेचना हइल । जे हेतुक साएलार सओल प्रति नातरु-

(१०१)—पण्डितेर पर सञ्जाल—

श्रीरामराममुखोपाध्याय नामे एक जन छिल । ताहार चारि पुत्र । ज्येष्ठ श्रीरामलोचनमुखोपाध्याय, द्वितीय श्रीराममोहनमुखोपाध्याय, तृतीय श्रीरामतनुमुखोपाध्याय, चतुर्थ श्रीताराचांदमुखोपाध्याय । ताहार मध्ये राममोहनमुखोपाध्याय निःसन्तान फीत करियाछे । आर वाकी तिन जनार ओयारिस वर्त्तमान आछे । ऐ रामराममुखोपाध्याय आपन ब्रह्मोत्तर देढ विद्या जमि धागान आपन एक कन्या करुणामर्यादेवीके दान करे । ताहार दानपत्र एक केता सन ११७४ सालेर २५ वैशाख तारिखेर लिखित दाखिल हइयाछे । ऐ दानपत्रेर शाइद हय नाइ । अतएव जिज्ञास्य एइ ऐ दानपत्रे दानदत्तार ओयारिसान अर्थात ताहार पुत्रसकल सत्ते यदि दान हइया थाके, आर ऐ दानदत्तार पुत्रेरा सेइ दानपत्रे यदि साक्षि ना हइया थाके, आर दानदात्तार अयारिशानेर अनुमति व्यतिरेके ऐ दान यदि हइया थाके, तबे एमत दान सिद्ध हय कि ना—यथाशाख इहार व्यवस्था, जाहा हये, लिखिवेन इति । सन १८३६ साल तारिख १२मे ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुत्तमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयञ्च यदीशधीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमितान्दीयजुनमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दात्रुत्तराधिकारिणां विद्यमानतायां दानं यदि वास्तवं जातं स्याद्, एवं तद्दानपत्रे दातृपुत्राः साक्षियो नैव जाताः स्युः, दात्रुत्तराधिकारिणामनुमतिमन्तरेण तद्दानं जातं स्यात्, तत्र तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यमर्त्तव्यकुटुम्बभरण्योपयुक्तातिरिक्तश्चेत्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्धयति, तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यमर्त्तव्यकुटुम्बभरण्योपयुक्तातिरिक्तं न चेत्तर्हि तद्दानं न सिद्धयति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्थं वादिग्रन्थ-
धृतवृद्धस्वतिवचनम् ॥१॥

परममूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात्प्रत्युपकारतः ।

त्रीशुल्कानुग्रहाय च दत्त दानविदो विदुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद-

(नामस० पृ० ६०)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीरानन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीनसितम्बरमासोयमुनिमित-
दिनसम्बन्धिबुधवाशरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०२)—महामहिम श्रीयुत अभ्यापक महाशय वरावरपु—
निवेदन ।

प्रथम प्रश्न :—

एक व्यक्ति धनि आपन स्वोपाजित तथा विद्युपाजित स्थाव-
रास्थावर माय इमारतादि भद्रासन बाटी चागान पुष्करणी तथा
प्रज्ञोत्तर जमि आपन भोग-दखले फायेम थाकिया ओयारिस
चारि पुत्र । ताहार ज्येष्ठ प्राप्त वयस, मध्यमदीगर नाबालगके ऐ
सकल वस्तुते भोग दखले राखिया सन १९०२ साले लोकान्त
हयेन । ताहाते ऐ ज्येष्ठ सहोदर ऐ सकल वस्तुर उपस्वत्व तथा
किञ्चित २ आपन उपाज्जन-द्वारा ऐ संसार भरण पोषण आन्दाज
१७ वतमर करियाछेन । ताहार मध्ये जमिदारलोक तथा इजारा-
दारलोक कोन ० जमि आटक करियाछिल, ताहाते ऐ एकान्त-
गृत्ति ऐ ज्येष्ठ सहोदर ए जमिर दलिल' ओ भोग सममाण देखा-
डया आपन परिश्रमेर द्वारा ऐ जमिर फमल छाड करिया खालाम

करियाछेन। अतएव ए द्यने ऐ जमिर किरूप अंश हइवेक,
शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ॥—

द्वितीय प्रश्न :—

ऐ चारि सहोदरेर मध्ये तृतीय भ्राता आपन वनिता ओयारिप राखिया ऐ रूप एकात्रवृत्ति थाकिया लोकान्त हयेन। ऐ मृत व्यक्ति वनिता ओ तिन सहोदर एकात्रवृत्ति थाकिया ताहार मध्ये मध्यम विदेशस्थ हइया आपन चाकुरि द्वारा प्रतिपालन नित्य नैमित्तिक क्रिया आन्दाज २० वत्सर करियाछेन, आर पैतृक भद्रासन वाटी भद्र हइयाछिल, ताहाते अनेक टाका खरच-पत्र-पूर्वक उत्तम करियाछेन। ए द्यने ऐ वाटीर किरूप अंश हइते पारिवेक, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ॥—

तृतीय प्रश्न :—

ऐसकल ब्रह्मोत्तर जमिर मध्ये कोनो जमि जमिदार आटक करियाछिल। ताहाते मध्यम ओ कनिष्ठ सहोदर विदेशस्थ प्रजुक्त ज्येष्ठ सहोदर आबालते आपन नाम जारि करिया साधारणेर धन व्यय करिया ऐ जमिर नालिस करिया आलास करियाछेन। ए द्यने ऐ डिगारि जमिर किरूप अंश हइवेक व्यवस्था लिखिते आज्ञा हइवेक ॥—

चतुर्थ प्रश्न :—

ऐसकल सहोदरेर मध्ये मध्यम सहोदर संसार प्रतिपालन करिया आलिते छिलेन। अकुत्तान मते किछु टाका कर्ज हइयाछे। अतएव ए द्यने ऐ संसार भरण-पोषणेर देना ऐ व्यक्ति परिशोध करिवेक, कि ऋण परिशोध हइया अंश हइवेक, ताहार शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय, निवेदनमिति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

प्रमुखमपितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशजीशन्दप्रतिपाद्यरसगुण-
गजेन्दुमितान्दीयागदितमासीयाभ्रपक्षमितदिनसम्बन्धिगशनिवासरे मया प्राप्तं
नदवलोक्य यादृशबीधो नातस्तदनुसारेषोत्तरं लिखने —

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतां भूमिं समं चतुर्धा विभाज्यैकैको भागश्चतुर्णां भ्रातॄणां भवतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विभजेरन् सुताः पित्रोरूढ्वंमृक्यमृक्यं समम्— इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाशबलत्ववचनम् ॥१॥

पितेव पालयेत् पौत्रान् ज्येष्ठां भ्रातॄन् यवीयसः ।

पुत्रवन्थापि वर्त्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्मतः ॥— इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतभद्रासनवाच्याः समं भागचतुष्टयं कृत्वा एको भागो ज्येष्ठस्य, एको भागो मध्यमस्यैको भागो मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः, एको भागः कनिष्ठस्येति ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणद्वयम् ॥२॥

विधुयाद्वेच्छतः सर्वान् ज्येष्ठो भ्राता यथा पिता ।

भ्राता शक्तः कनिष्ठो वा शक्यपेक्षा कुले स्थितिः ॥ इति दायभा-
गादि (पृ० ६२) ग्रन्थधृतनारद (नमसं० १३५) वचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव— इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाशबलत्व-
वचनम् ॥४॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तत्तद्भक्षत्रभूमोनाम्मध्ये काचिद्भूमिः सराजकरस्थावराधिपतिप्रतिबद्धा सती ज्येष्ठसहोदरेण साधारणधनव्ययेनाभियोगेन च स्वायत्तीकृता स्यात्, तदा तस्यां भूमौ द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितानां चतुर्णां समानांश एव भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणचतुष्टयमेवेति ॥५॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्णां सोदरभ्रातृणां मध्ये मध्यमसहोदरेणाशक्त्या यदृणं भ्रातृ-
चतुष्टयसाधारणकुटुम्बभरणार्थं कृतं स्यात्, तदृणं उर्वरेवांशिमिः स्व-
स्वांशानुसारेण परिशोधनीयम्—इति वद्वदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविमिः ।

यद् दृहीतं कुटुम्बार्थं तद्दृही दातुमर्हति—इति विवादभङ्गार्थवादि-
ग्रन्थ(१ विवा० १६५ ख)धृतवृहस्पति(पृ० ११८)वचनम् ॥१॥

ईशावीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्द्रीयाकतूवरमासोयतृतीयदिन-
सम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेषु
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतितराम
श्रीवैचनाथमिश्रेण



कलिकातार सधर देओनि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओ-
याल, एइ ये—यद्यपि ए-वी-नामे दुइ जन सहोदर भ्राता छिखो ।
ताहार मध्ये ए-नामे एक पुत्र राखिया वीनामे द्वितीय भ्राता
विद्यमान थाकिते मृत्यु हय । एवं वी-नामे द्वितीय भ्राता एक
पत्नी एवं कयेक कन्याके राखिया एवं आपन स्वोपाजित ओ
असाधारण धन राखिया आपन भ्रातृपुत्र अर्थात् ए-नामक
आपन भ्रातार पुत्र विद्यमान थाकिते मृत्यु हय । अतएव जिज्ञाशा
करा जाइतेछे जे ओइ वी-स्यक्त धन ओइ वीर स्त्रीके किम्वा
कन्याके किम्वा भ्रातृपुत्रके अशिवेक-इहार व्यवस्था वारानश-
रंर चलित शास्त्रानुसारे लिखेन इति ।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितश्रद्धरेजीशन्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रं यदीशवीशन्दप्रतिपाद्य-
मुनिगुणगजेन्दुमितान्द्रीयज्ञानवरीमासीयगजप्रक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य प्रभुप्रेषितगुरुचरणवसुकिरानीशन्दप्रतिपाद्यमुल्लोच-
रितशब्दार्थविवेचनया च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति योनामक व्यक्तिविशेषत्यक्तपत्रे
तत्पत्न्याः, पत्न्यभावे दुहितृणा चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलित-
मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थभृत पालवल्लभ्य (२।१३५)-
वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ (मिता० पृ०
२२७) वृत्तविधुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्यमुनिगजेन्दुमितान्द्रीयकेरवरीमासीपरसमितदिन-
सम्बन्धिवन्द्यासरे मया प्रभुसमर्पिताक्षरेजीशन्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रसहि-
तेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०३)—२३६ सन १८३४ ई—

इं सन १८३६ सालेर २४ डिसेम्बर मोतावेक वाङ्गला सन १२४३
सालेर ११ पीप तारिखेर सदर देभोयानी आदालतेर मिडिलेर
रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत उद्दममनी साहेबेर
वेठके—

मोद्धमावसूर्यकुडर

कारसिद्ध ओ गयरह

आपीलाएटानेर तरफ एइ मरुईमार हामकालेव ई सन १८३६

आपीलाएट

रेपराडेएटान

सालेर १४६१ नम्बरेर मकद्दमार उकिल चारलेस जेमेस कोलत्रोक सदरलेण्ड साहेब ओ मुनशी महम्मद हानिफ ओ एइ मकद्दमार रेण्पाड्यटानेर उकिल चारलेस फ्रेञ्च साहेब ओ बलबन्तसिंह मकार ओ नम्बर मजकुरेर मकद्दमार रेण्पाड्यटानेर तरफ उकिलान तारकचन्द्र ओ श्रीरामराय उपस्थित हइल ओ एइ मकद्दमार आपीलाण्टेर उकिलान सदासुखपरिडत ओ मुनशी दादारवक्स पीडित ओजरे उपस्थित नाइ । एइ मकद्दमा वर्त्तमान मासेर २२ तारिखे तरतीब नम्बरमते आमार बैठके रोवकार हइया ३३ नम्बर-पर्यन्त कागजात टट्टीपरे दिवा अवसान प्रयुक्त मोलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया मिछिलेर दाखिल हओया व्यवस्था सकल पठित हइल । जेहेतुक आमार निकटे निचेर लिखितमते आदालतेर परिडतके जिझाशा आविश्यक-एजन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे आदालतेर परिडत निचेर लिखित सओयालेर जवाब २ दुइ दिवस मेयादे दाखिल करेण-आदालतेर परिडतेर निकट प्रेरित हय ओ आदालतेर परिडतेर निकट हइते जवाब आसा पर्यन्त मकद्दमा मोलतवि थाके ॥—

यदि स्यात् त्रिहत-जेला निवासी हिन्दुजाति कोन एक व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय एवं उक्त व्यक्तिर मृत्युर परे ऐ दुइ स्त्री आपनार दिगेर स्वाभीर त्याज्ज विषये अधिकारिणी थाकिया प्रत्येक स्त्री आपन आपन गर्भेर एक एक कन्या राखिया मृता हय एवं ऐ उभय कन्यार मध्ये एक जन एक पुत्र राखिया मरे, अपरा एक पुत्र-प्रसूता हइया उक्त पुत्रेर सहित जीवित । ओ वर्त्तमाना थाके—ए विधाय मृत व्यक्तिर त्यज्ज वस्तु जे कन्या मरियाछे ताहार पुत्रे कि जे कन्या एक पुत्रेर (सहित) वर्त्तमाना आछे ताहाते आर्शिवेक; किम्वा कि । एवं यद्यपि मृा व्यक्तिर ज्ञातिगण, जाहार दिगेर सम्पर्क ऐ मृतेर सहित तिन किम्वा चरि पुरुषेर दुर हय, वर्त्तमान थाके—ए मृत व्यक्तिर

त्याज्यं वस्तुते ताहार दिगेर प्राप्यता ओ यथार्थतार प्रति शाखेर
आज्ञा कि आछे-ए विपयेर उत्तर मैथिलशास्त्र जाहा त्रिहत
प्रदेशेर चलित तदनुसारे लेखेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिधीयुतउद्ग्रममनीसाहेवधर्माधिकरणलिखि-
तेशबीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयदिसम्बरमासीयवेदपक्षमितदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयरसपक्षमितदिन-
सम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रप्रौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य
स्थावरादिधने जाताधिकारियोर्द्वनिपत्योरुपरमे विद्यमानपुत्राया दुहितुरे-
वाधिकारः ; दुहित्रभावे दौहित्राधिकारः इति कल्पतरुमदनपारिजातविवाद-
रत्नाकर स्मृतिसार-ग्रन्थेषु लिखितः । किन्तु विवादचिन्तामणिविवादचन्द्र-
ग्रन्थेषु न लिखितः इति तृतीयपुरुषीयसपियडानां चतुर्थपुरुषीयसपियडानां
वा अधिकारप्रतिपादकमिथिलादेशचलितशास्त्राणामर्थादधोलिखितग्रन्थ-
जातानां परस्परं विरुद्धमाशाजातमधोलिखितप्रमाणजातेष्वेव स्पष्टीकृतं
विस्तरभयाद् व्यवस्थाया न लिखितम् इति निवेदनम् इति मिथिलादेशच-
लितमनुविवादचिन्तामणि-विवादरत्नाकर-विवादचन्द्र-कल्पतरु-मदनपारि-
जातस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विष्णुः—अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे
दौहित्रगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि
तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि इति ।

दुहितृदौहित्रानन्तरं पुनः बृहस्पतिः—तदभावे भ्रातरस्तु भ्रातृपुत्रा-
सनाभयः ।

सकुल्याः बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च घनाहकाः ॥—इति कल्पतरु-
ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनमाक् । यदाइ विष्णुः—

अपुत्रपौत्रसन्ताने दौहित्रा धनमाप्नुयुः ।

पूर्वेषान्तु स्वधाकारे पौत्रा दौहित्रका मताः ।

अयमर्थो याज्ञवल्क्येनापि दुहितरश्चैव इत्यत्रैवकारेण द्योतितः ।

दौहित्रस्याप्यभावे पितरी धनभाजौ—इति मदनपारिजातग्रन्थलिखनम् ॥२॥

दुहितृदौहित्रानन्तरं बृहस्पतिः

तदभावे आतरस्तु आतृ-पुत्राः सनाभयः ।

सकुल्या बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च घनाहेकाः ॥—इति विवाद-
रत्नाकर (पृ० ५१५) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभाग्युत्तरोत्तरः - इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २००) विवादरत्नाकर (पृ० ५६७) विवादचन्द्र (पृ० ८०) प्रभृति-
ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥४॥

अनपत्यस्य धनं पत्यभिगामि तदभावे दुहितृगामे तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि
तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २३५) विवादचन्द्र (पृ० ८१) विवादरत्नाकर (पृ० ५६५) प्रभृति-
ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥५॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रस्तदभावे साध्वी भार्या तदभावे
दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे आता तदभावे तत्पुत्रस्तद-
भावे आतृवसपिर्यडस्तदभावे यथाकमं व्यवहितसपिर्यडस्तदभावे आसत्-
सकुल्यस्तदभावे यथाकमं व्यवहितसकुल्यः—इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

बृहस्पतिः

यथा पितृधने त्वाम्यं तस्याः सत्सपि बन्धुषु ।

तथैव तत्सुतोपीष्टे मातृमातामहे धने ॥

मनुः—

दौहित्रो ह्यखिलम् ऋषयमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ॥

स एव दद्यात् द्वौ पिण्डौ पित्रे मातामहाय च ॥

एतद्द्वयं मात्राद्यभावे पत्नीदुहितरः— इत्यादि क्रमानुरोधत्— इति

विवादचिन्तामणि (पृ० २३६) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥७॥

इंशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयकेवरवरीमाषीयगजमित-
दिनसम्बन्धिवुधवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा सवाल—

(१०४)—अलिफ ओ वे दुइ भ्राता द्विलो । ताहार मध्ये कनिष्ठ भ्राता अर्थात् वे पित्रादि-क्रमागत धनोपघातव्यतिरेके किछु धनोपार्जन करिलेक । ताहाते ज्येष्ठ भ्राता अर्थात् अलिफेर किछुइ स्वत्व द्विलोना । वरं आपन जीवदशाभ्यन्त अलिफ किछुइ अंश ऐ धनेर पाय नाइ ओ एक पुत्र राखिया मृत्यु हइलो । ताहार पर कनिष्ठ भ्राता आपन छौ ओ कन्या सकलके राखिया मृत्यु हइलो, एवं उक्त व्यक्ति पुत्र किम्वा पौत्र किम्वा प्रपौत्र किछुइ राखे ना । अतएव प्रश्न करा जाइतेछे जे उपरे ये प्रकार लिखा गेलो ताहाते ऐ कनिष्ठ भ्रातार त्यक्त धने ताहार स्त्रीके अर्शिवेरु किम्वा ताहार स्त्रीके ना अर्शिया ताहार ज्येष्ठ भ्रातार पुत्रके अर्शिते पारिवेरु इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याचरप्रश्नपत्रमंगरेजीशब्दप्रतिपाद्याचर-
पत्र च रदोशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयकेवरवरीमाषीयगज-
मितदिनसम्बन्धिवुधवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनु-
सारेणोचरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते मति वेनामकव्यक्तिविशेषत्यक्तधने
तत्पत्न्याः पत्न्यभावे दुहितृणां चाधिकारः-इति वाराणसीप्रदेशचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
(२।१३५)वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्-
ग्रन्थ(मिता० पृ० २१७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयफेवरवरीमासीयगुणपत्न-
मितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याक्षर-
प्रश्नपत्राङ्गरेजोरब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्राभ्यां सहितैर्य व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्विघनाथमिश्रेण

(१०५)—मोकाम कलिकातार सदर दैत्र्योनि आदालतेर
इंसन १=३६ सालेर १९ मे मोतावेक वाङ्गता सन १२४२ सालेर
७ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवार दिवसेर श्रायुत श्रोत्रियेग घ्राडिनसाहेवेर
वैठकेर रोचकारि—

भेकनारायणसिंह—

वनाम—

तिलकधारिसिंह ओ भेकनारायणसिंह ओ गयरह छापलेर
उकिलदिगेर मध्ये एक व्यक्ति मुनशी दादारवक्स ओ द्वितीय
पञ्च सदाशिवसिंह ओ भनकसिंह ओ तिलकधारिमिंह खोद ओ
मृत रङ्गलालसिंह ओ अमृतलालसिंहेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण
ठाकुरसिंह ओ कालुसिंह ओ भुवनसिंहेर ओतिर उकिल मुनशी
होलेन आलि हाजिर आइलेन । द्वितीय पक्षेर छयोत धवेक
विषयेर सम्बलित उहारदिगेर उकिलेर नामेर एक वेता ओकाल-

लतनामा श्री लाला काशीप्रसादेर नामेर मोक्षारनामा सहित जे एइ मासेर १२ तारिखे दाखिल हइयाछिल अद्य दरपेस हइया छापलेर खास आपीलेर छओल श्री गायरह ऐ छओलेर एलाकार कागजसकलेर सहित श्री छापल जे सकल कागज सन हालेर १४ आपरेलेर दरपेस हओ। आपन छओलेर सम्बलित गुजराइया छिल, दिष्टे आइल। परे द्वितीयपक्षेर वकिल गोपालचन्द्र श्री गायरह आपिलाएटान, बाबु कुडरसिंह रेण्पाडएटेर २६०५ नः मोरुईमार सन १८३० सालेर ३ आपरेल तारिखेर एनफइललि रोवकारिर नकल एक केता दाखिल करिलेक, पाठ करा गेल। तदपरे छापलेर दाखिल करा मोतिलाल श्री कल्याणसिंह आपीलाएटान व्रजलाल श्री गायरह रेण्पाडएटदिगेर मोरुईमार सन १८३५ सालेर १ जुलापर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत जाजे इष्टाकोपल साहेवेर बैठकेर रोवकारिर नकल दिष्ट करिया ऐ मोरुईमार मिछिल सेरेस्ता हइते तलब करिया मोरुईमा मजकुरेर दाखिल हओ। ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दिष्ट करिया बोध हइजे जे ए आदालतेर पण्डित वैशनाथमिथ ये व्यवस्था ए मिछिले दाखिल करियाछेन ताहा ऐ मोतिलाल श्री कल्याणसिंहदिगेर मोरुईमार दाखिल हओ। उहार व्यवस्था विपरीत। आर यद्यपि स्यात ए मोरुईमार श्री मोतिलाल श्री गायरहेर मोरुईमार प्रश्नसकलेर लिखित शब्दसकल जाहेरा अन्यथा हइयाथाके। किन्तु ए दुइ मोरुईमार प्रश्नसकलेर मम्मं एकइ आकार राखे एअन्य आमार निकट ए मोरुईमा द्वितीय चार विवेचनार जोग्य, श्री ए मोरुईमार आपिल खास मजूरिर जोग्यबोध हइया हुकुम हइल जे छापल एक मास संख्यार मध्ये खास आपिलेर वकी सरसकल आमले आने आर कागजात मोर ओव करिबार' जन्य ए आदालतेर कायेन मोरुईमा हाकिम श्रीयुत डेओट इपमिट साहेवेर हजुरे पाठान जाय, आर एइ

रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे ए मोकदमा ओ मोतिलाल ओ गायरहेर मोकदमार प्रश्नसकलेर मर्म ओ अभिप्राय एक दुइ वाते ओ दुइ मोकदमार वैपरित्य व्यवस्थासकल देशोनेर कारण कि, नकल-रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडोनगादेब्रधर्माधिकरण-
लिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमितान्दीयमैमाधीयाङ्केन्दुमितदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयजुनमासीयगजेन्दुमितदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोबो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितैर्द्विवादिष्यकप्रश्नस्त्वयमेव । यदि तोरभुक्तिजिला-
ख्यावान्तरदेशनिवासिनो द्वौ हिन्दुजातीयौ स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनं
साधारण्येन भुञ्जानौ ऋणग्रस्तावप्राप्तव्यवहारपुत्रवन्तौ च स्वस्वपित्रादि-
क्रमागतस्थावरमिन्नऋणपरिशोधनोपयुक्तधनरहितावशक्त्या ऋणपरिशोध-
नार्थमप्राप्तव्यवहारस्य स्वस्वपुत्रस्य विद्यमानतायामपि स्वस्वपित्रादिक्रमागत-
स्थावरधनस्य विक्रयण तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतवन्तौ स्याताम्,
तदैतादृशविक्रयस्तमालिकशब्दप्रतिपाद्यं च पश्चिमदेश बलितशास्त्रानुसारेण
सिद्धवति न वेति । अनेन ऋणपरिशोधनस्योपायान्तररहिताभ्यां स्वस्वपित्रा-
दिक्रमागतस्थावरधनविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यकर्तृभ्यां हिन्दूजातीयाभ्यां
तद्व्यवहारपरिशोधनरूपस्थातोवावश्यकस्य कर्मणः सम्पत्त्यर्थमप्राप्तव्यवहारपुत्र-
वद्भ्यां पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयण तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च
कृतमिति निश्चितम् इति । एतादृशावश्यककार्यार्थं दासकृतस्यापि धनि-
पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धे-
शशास्त्रीयत्वेन ऋणपरिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितेन ऋणग्रस्तेन पित्रा कृतस्य
तद्व्यवहारपरिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां पित्रादिक्रमागत-
स्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वस्य

निस्तन्दिग्धतया अर्थसिद्धत्वात् । सर्वत्रैव शास्त्रे विशेषतो लिखितमस्ति
 आवश्यककार्यार्थं पितृकृतं पित्रादिकमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिक-
 शब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रोपमेव भवति । अतएव प्रभुत्वैतद्विवादविषयको-
 परिलिखितार्थप्रतिपादकप्रश्नस्योत्तरव्यवस्थायां प्रभुत्वमपितप्रश्नलिखित-
 वृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्धव-
 तीति मया लिखितमिति । मलिकाल-कल्याणसिद्धार्थिकप्रज्जलाल सीताराम-
 प्रभृतिप्रत्यर्थिकविवादविषयकश्रीयुतबार्जेश्टाकोएलसाहेबाभिधानैतदधर्मा-
 धिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नानामध्ये प्रथमप्रश्नस्त्वयमेव ।
 वेदार्देशचलितशास्त्रानुसारेण गितुः पितामहस्य वा पुत्रस्य पौत्रस्य वा अ-
 नुमतिं विना पित्रादिकमागतस्थावरधनस्य हस्तान्तरकरणञ्च मतास्ति न वेति ।
 पुत्रस्य मरणानन्तरं पौत्रानुमतेरावश्यकतास्ति न वेति द्वितीयः । यदि च
 पित्रादिकमागतस्थावरधनस्य तद्देशचलितशास्त्रानुसारेण विक्रयस्य निषेध-
 स्वदा धर्माधिकरणाधिपतिभिस्तद्विक्रयस्य परावर्त्तनं कर्तुमावश्यकं भवति-
 न वेति तृतीयः । पित्रादिकमागतवस्तुसमुदायस्य यत्किञ्चिदस्तुनो वा हस्ता-
 न्तरकरणविषये शास्त्रे किञ्चिद्विदोषः प्राप्तुं शक्यते न वेति चतुर्थः । एतेषां
 चतुर्णां श्रीयुतबार्जेश्टाकोएलसाहेबाभिधानैतदधर्माधिकरणाधिपतिकृत-
 विचारपत्रलिखितानां प्रश्नानां मध्ये कुत्राप्येतादृश पदं नास्ति येनैत-
 द्विक्रयस्यावश्यककार्यार्थताया बोधो भवितुं शनोति । अतएवेतैश्चतुर्भिः
 प्रश्नैः पित्रादिकमागतं स्थावरधनमावश्यककार्यार्थमन्तरेणार्थात् स्वेच्छयैव
 पत्रा हस्तान्तरं कृतमित्येव निश्चितं भवति । अतएव मया तत्रोत्तरं लिखितं
 गितुः पितामहस्य वा पुत्रानुमतिं विना पौत्रानुमतिं विना वा पित्रादिकमा-
 गतस्थावरधनविक्रयस्य स्वेच्छया चमता वेदार्देशचलितशास्त्रानुसारेण
 नास्तीति । अनेनावश्यककार्यार्थं पित्रादिकमागतस्थावरधनविक्रयस्य
 चमता सामान्यतः पुत्रानुमतिमन्तरेण पौत्रानुमतिमन्तरेण वा गितुः पिता-
 महस्य वास्त्येवेति । अस्य स्पष्टत्वेन शास्त्रानुसारेण अनुमतिदानानर्हाप्राप्त-
 व्यवहारपुत्रानुमतिमन्तरेण श्रृणुपरिशोधनरूपागतोरावश्यककार्यार्थं तद-
 परिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितस्य गितुः कर्त्तव्यमागतस्थावरधनविक्रयस्य चमता
 शास्त्रानुसारेण स्पष्टतरैव । श्रीयुतबार्जेश्टाकोएलसाहेबाभिधानैतदधर्मा-

धिकारणाधिपतिकृतोपरिलिखितविवादविषयकविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नाशयानां प्रभुकृतैतद्विवादविषयकावश्यककार्यार्थविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यप्रतिपादकप्रश्नाशयस्य च भेदः स्पष्टतर एव । तद्व्याख्यानस्थावश्यकता नास्ति । अत्रातन्व्यवहारस्य पुत्रस्य पित्र्यमागतार्थां तदनुमतिमन्तरेणावश्यककार्यार्थं पित्रा कृतस्य क्रमागतस्थावरघनविषयकहस्तान्तरस्य तिद्धिविपयिणी पश्चिम-देशचलितशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थाप्येतद्धर्माधिकारस्य पूर्वं ज्ञाता । तदनुसारेण तद्विवादनिष्पत्तिरप्येतद्धर्माधिकारणे ज्ञातास्तीति निवेदनमिति ।

इशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाचर्चमासीयगणपक्षमित-दिनसम्बन्धिमंगलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रवदितेदमुत्तरं दत्तमिति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीकृष्णः सहाय

(१०६)—पण्डितेर पर सञ्चाल—

काशीनाथचौधुरिनामे एक इयक्ति फौज करियाछे । ताहार सपण्ड ज्ञाति अर्थात् तिन पुरुपीया ज्ञाति केह ओयारिस नाइ । एइ स्थले ऐ काशीनाथेर मातुल रामजयसिमलाइ ओयारिस हइते पारे कि ना ऐ मोतओफार पञ्चम-पुरुपान्त ज्ञाति ऐ काशीनाथ मोतओफार ओयारिस अर्थात् उत्तराधिकारि हइते पारे चाङ्गलादेशेर चलन शास्त्रानुसारे इहार जे व्यवस्था ताहा ऐ सञ्चोयालेर दक्षिणपार्शे लिखिवेन । इति सन१२३६तां१६ आगष्ट मो० सन १२४३ तां ५ भाद्र ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यपत्रञ्च यदी-यादीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयमुनीन्दुमितदिनस-

स्वन्विशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यते -

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य काशीनाथचतुर्दशीणस्य
त्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य मातामहपर्यन्तानाम्मध्ये कश्चिन्नस्ति
तदा तन्मातुलस्य रामअयश्चिमलाइनाम्न एवाधिकारः-इति बङ्गदेशचलित-
मनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसप्रह्विवादाख्यवसेतुविवादभङ्गा-
र्थावप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥ -

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरी आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि उपरिलिखितग्रन्थभृतयाञ्चवल्क्य-
(२।१३५)वचनम् ॥१॥

प्रपितामहसन्तानस्य दौहित्रान्तस्य मृतभोग्यपिएडदानुरभावे मृत-
देयमातामहादिपिएडदानेन पिएडानन्तर्याम्भातुलादिग्रहणार्थं 'बन्धु-
पदं' प्रयुक्तवान् याज्ञवल्क्यः । मनुना तु पिएडदानानन्तर्यवचनेनैव
दर्शितं मृतदेयमातामहादिपिएडत्रयस्य मातुलादिभिर्दोषमानत्वान् मातु-
लाद्यर्थत्वं धनस्य धनद्वारेण तस्यापि पिएडदातृत्वात्—इति दायभाग-
(पृ० २०६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

तदभावे मातामहस्तदभावे मातुल—इत्यादि दायक्रम संप्रहग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितांशरीयापरेलमाद्योपरसमितदिन
स्वन्विशगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्करेवीशब्दप्रतिपाद्यत्राभ्या
विचारपत्राभ्यां च सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥ -

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीर्वचनाथमित्रेण

(१०७)—नोकाम कलिकावार सदर देओनि आदागतैर
पिएडतेर पर सञ्जोलः फरिवादि श्रीरघुनाथराय ओ श्री राधा-
नाथराय ओ श्रीगोपीनाथराय सा० कपिलेश्वर पराणो उखडा

आसामी कुँदपाडा साकीनेर श्रीसमशेर खाँ वनामे जमि दखल पाओवत नालिस करे ऐ मोकईमार एक व्यवस्था लओओः आधिश्चक हइल । विवरण एइ— फरियादियान जे जमिन्दखलेर प्राधेनाय नालिस करे ऐ जमि पूर्व पण्टीदास सिद्धान्तेर छिल । ऐ पण्टीदास एक पुत्र जगन्नाथपञ्चानन आर दीहित्र फरियादियानेर पिता भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन । आर ऐ जगन्नाथ आपन जीवतमान पय्यन्त आपन पितार विपयेते भोगवान थाकिया अगुत्रक आपन स्त्री यशोदादेव्या ओ भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन । यदि ऐ श्रीवीरा यशोदादेव्या सन १२१८ साले आपन स्वामिर ऋणपरिशोद अर्थ ऐ विरोधीय जमी आसामिके विक्रय करिया थाके आर सेइ विक्रयानुसारे ऐ जमिते आसामि भोगवान थाके आर ए काल पय्यन्त फरियादियानेर पिता ए विपयेर कोन आपत्त ना करिया थाके, तवे शाखानुसारे ऐ विपय सिद्ध हय कि ना । आर फरियादियानेर दावि ऐ विपयेर पर अर्शे कि ना—इहार व्यवस्था बाङ्गलार चलन शाखानुसारे जे हय एइ सओलेर इत्तिण पार्शे लिखिवेन । इति सन १८३६ साल १६ शेतम्बर ॥

श्रीर्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीधनवम्बरमासीयग्रहेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति श्रीवीरया यशोदादेव्या यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनस्य विक्रयस्त्वपतिकृतरूपपरिशोधनार्थमेव वास्तवं कृतः स्यात्तदादृशविक्रयशशास्त्रानुसारेण सिध्यति एवं तद्विक्रयस्य सिद्धौ सत्यामर्षिनां चाभियोगस्तद्विषये शास्त्रीयो न भवतीत्यर्थसिद्धमेव—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायमागादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

ऋषयमाही ऋणं दाप्यः—इतिविवादार्यावसेतुविवादमङ्गार्यावादि-
(१ विवा १७६ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२५१) वचनम् ॥१॥

मर्तुकामेन वा मर्त्री उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रवचापि सा दाप्या धनंयथाश्रितं स्त्रिया ॥—इति तत्तद्ग्रन्थ(पृ०६०)

(१ विवा २०६) धृतकात्यायन (कारम् ० ५४७पृ० ६६) वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुरुगजेन्दुमिताब्दोयमैमासीयार्कमितदिनम-
न्वन्विशुकवासरे मया प्रातश्मर्पितप्रश्नपत्रेण विचारपत्राभ्यामङ्गरेजीशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रेण च संहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०८)—तं १४७ सन १८३५ साल मो० कलिकातार सदर
वेओनि आदालतेर इं० सन १८३७ सालेर २ मार्च मोतावेक
वाङ्गला सन १२४३ सालेर २० फाल्गुन वृहस्पतिवार दिवशेर
श्रीयुतओलीयमन्नाडीनसाहेव पे आदालतेर हाकिमेर बैठकेर
रुवकारि—

श्रीमत्तितओपकलकुडर—

आपीलाएट

श्रीमत्तिनन्दकुडर ओ गैरह—

रेण्याडएटान

आपीलाएटेर उकिल लाला वस्ति ओ रेण्याडएटानेर उकिल-
गण मुनसि हुद्यन आली ओ जेमेद्य कुलवरूक छदरलपलाएड साहेव
जे छदरलपलाएडसाहेवेर नामेर, ओकालतनामा अद्य गुजगियाछे
हाजीर आइलेन ए आदालतेर हाकिम श्रीयुतओकरेमनिसाहेवेर
गत २१ फिवरिओयारिर हुकुमानुसारे ए मकईमा गतकल्प
आमार बैठके रुवकार ओ गत कल्पेर रुवकारिर विस्तारित
लिखिन कागजसकल पाठ हइया स्थकित छिल । अद्य पुनराय
रुवकार हइया सदर आमीन अलार ओ जजसाहेव मकईमार

पकी कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल प्रसंसीय हाकिमेर गत २१ फिवरिओयारिर रोवकारिर लिखित राएर सम्बलित पाठ करा गेल । परे आपीलाएटेर उकील सन १२०७ फसलिर ११ कार्तिकेर लिखित श्रीमति सुगन्धाकुड्डेर लिखिया देया हेवानामार नकल एक केता दुइ टाका मूखेर फिरिस्तिर द्वाराय लम्बरे दाखिल करिलेक दृष्टे आइल बोध हइलो जे भोलासिंहनामक श्रीमतिसुगन्धानामक एक स्त्री ओ श्रीमतिनन्दकुड्डर ओ वदनकुड्डर दुइ कन्या व्यतित द्वितीय उत्तराधिकारि राखितो ना, ओ उक्त भोलासिंह आपन निज दखील ओ वएटकि पैत्रीक विशय आपन स्त्रीर सन्मतिते आपन कन्यार दिगेरके जवानि हेवा करिया हेवा नामा लिखिया देओर जन्य आपन स्त्री श्रीमतिसुगन्धाके अनुमति करियाछे तदनुसारे श्रीमतीसुगन्धा उहार स्वामि भोलासिंहेर मृत्युर पर आपन स्वामि अनुमत्यनुसारे आपन जामातागण अर्थात् मित्रजितसिंह ओरफे बुलाकिसिंह उक्त नन्दकुड्डेर स्वामि ओ केनरसिंह उक्त वदनकुड्डेर स्वामिर नामे हेवानामा लिखिया दियाछे ओ तदनुसारे मित्रजितसिंह ओ केनरसिंह श्रीमतीसुगन्धार सम्मतिते कालेट्टरि सेरस्ताय आपन-आपन नाम दाखिल करिया अनेक दिवस हेवा करा विषयेर पर दखिल ओ कावेज आछे । ओ शाखेर वृत्तान्त ज्ञात हओगे एइ विषय जे भोलासिंहेर एमत क्षमता जे आपन निज दखलि मीरुशी विषयेर अंश जे अनेक दिवस वएटक हइयाछे आपन कन्यागत ओ जामातागणके आपन स्त्रीर सन्मतिते हेवा करिते पारे कि ना, आर ए प्रकार हेवा मैथिल देशीय चलित शास्त्रानुसारे ग्राह्य ओ सिद्ध वटे कि ना । उचित बोध हइल ए जन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर एइ रोवकारिर नकल प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन ओ आदालतेर परिष्ठतके अर्पन करा जाय इति—

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिधीयुतञ्चोलियमवेतडीनसाहेवधर्माधिकरण --
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिव -
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनिपद्धमितदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारे-
णोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति भोलासिंहनामा कश्चिद्
व्यक्तिविशेषः सिन्नादिक्रमागतस्वायत्तीभूतविभक्तविषयस्य स्वगतीसम्मत्वा
स्वकन्याभ्यो जामातृभ्यो दानं कर्तुं शक्नोति । एतादृशदानं च मिथिला-
देशचलितशास्त्रानुसारेण सिध्यति—इति मिथिलादेशचलितमनुविवाद-
चिन्तामणिविवादचन्द्रविवादादरत्नाकरकल्पतरुमदनपारिजातस्मृतिषारप्रभृति-
ग्रन्थानुसारीणो व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥१॥

पश्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्वा स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

सीशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं सप्तविधं विदुः ॥—इति कलरतदविवादा-
रत्नाकर(पृ० १३३)प्रभृतिग्रन्थभूतनारद(ना० स० पृ० ६०)-
वचनम् । २॥

तान्येव तु प्रमाणाणि भर्ता यद्यनुमन्यते—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थभूत-
नारदवचनम् ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयनखमितदिनस-
म्बन्धिशासिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेषु व्यवस्था दत्तेति—

श्रीजर्जयतिहराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०६)—प्रश्न वनाम परिद्धत आवालते सदर देशोनि—

१, दत्तं दानविशेषे विदुः—इति पद्ये, वाटः ।

यद्यपि कोन वेक्तिर कुलाचारे एतत् रितं थाके ये अवीरा
स्त्री ओ कन्या ओ दीहित्रेर नाम जमिदारिते जारि हइवेक नाइ,
आर यद्यपि उभय विवादिर पूर्व पुरुपाद्गोर आपसे ऐमत एकरार
लेखा पढा हइगा, ऐ रित चलित थाके, तवे पुनराय शास्त्रानुसारे
व्यवस्थार आविश्यक हय कि ना । यद्यपि आविश्यक हय, तवे
अवीरा स्त्रीर नाम ताहार स्वामीर त्यक्त वस्तुते जारि हइते पारे कि
ना—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे एइ प्रश्नेर पार्शे लिखिवेन इति—

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं चाङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रमा-
ज्ञापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाच्यमासीयदि-
ब्धितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कस्यचिद् वंशे अवीरापत्निकन्यादीहित्राणां नामनिर्देशः
सराजकर्मणावरतिपदे न भवतीति व्यवहारो वादिप्रतिवादिनोः पूर्वपुरु-
पाणां परस्परसवित्तरेण प्रचलितः स्यात् तदा कुलाचारविरुद्धव्यवस्थाया
एतदधिपदे आवश्यकता नास्ति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृति-
ग्रन्थानुसारेण व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं परिपालयेत् ॥—इति मनु-

वचनम् । १॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्य मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयबाणपक्षमित-
दिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षर-
पत्राभ्यां विचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(११०)—रोवकारि मिदिल सदर देखायानी आदालत मोकाम कलिकाता । उक्त आदालतेर कायम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ़ाणशीप करुख इपमीत साहेबेर बैठके । तारिख ४ मार्च इङ्गरेजी सन १८३७ साल मोवाबर २२ फाल्गुन सन १२४३ साल वाङ्गला दिवस शनिवार—

पञ्चानन्ददास वनाम राधाचन्द्रबाबू

छापलेर उकिल मुनशीआमीनीद्दिनमद्दम्द हाजीर आइल । ३२ टाका किर्म्मतेर कागजेर उपर छापलेर खास आपीलेर छओयाल जेला मेरुनिपुरेर आभोशशन जजसाहेबेर कृत सन १८३६ सालेर २६ शेतम्बरेर फयदलार हुकुमेर नाराजाते, जाहा तथाकार सदर आमोनआलार सन १८२४ सालेर ४ शेतम्बरेर लिखित फयदलार बहालिते छादेर हइयाछे, मीजे गोशमदारदखल पाओचार मोरुहेपाय मयलगे ५२३६११ टाका तायेदादे खाप आपील मज्जुरेर उमेदे उकिल मजकुरेर नामेर एक फेता ओकालतनामा मन्बलित ओ गोशात्रचन्द्रसिंह ओ विनदकीशोर घोपेर नामेर एक फेता मांकारनामा ओ जेलार देओयानि आदालतेर उपरेर लिखित तारिखेर दुइ फेता फयदलार नऊन आभिशशन जज साहेब ओ सदर आमोन आलार तजविजी, जाहा गतो फिबरेल माहार ८ तारिखे दारिल हइयाछिल, अरा उपस्थित हइया पडा नेज । द्वितीय हुकुम छादेर हओनेर पूर्व पइ बिपयेर सओवाल फरा जे एक व्यक्ति हिन्दुजाती यसतिर चाटी त्याग करिया अत्य वन्धु-हइते तफात हइया उदामिन ओ तीर्थवाशी हय, थार ताहार अत्य वन्धु हइते तफात हओया मुदव विप वरसर गतो हय, थार ए समये किछु मिलकियत स्वरिद करिया भोगयान थाकिया दिपनेदेह नामे एक जन मिजोकरके ओयारिस राखिया नरे । ए प्रकारे बहालित व्यक्ति ओयारिस साम्बलुबाह उक्त मोसममांत हइवेक, कि प्रहरय-धम्मंभ्य आापवन्धु । थार यदि एगन् एओय मते उदासोन अफिकर ओयारिस उक्त मोसममांत हय,

ओ प्रकारे उक्त मोह्यर्मातेर उदासीन उपक्तिर त्याज्य वस्तु र
दखल करा ओ विकयेर क्षेमता आछे कि ना एइ आदालतेर
परिडतेर स्थाने उचित बोध हडया हुकुम दइल जे एइ रोवकारिर
नकल छओयाल प्रभृति कागज सम्बलित एइ हुकुमे जे परिडत
मोह्यक उपरेर चाओया प्रश्नेर उत्तर एक सप्ताह मध्ये लिखेन-
पाठान जाय, आर से पर्यन्त हुकुम छादैर हओया मुलतवि
थाके इति—

श्रीर्जयतिराम्

एवद्वर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतफ्रानसीसकरुणइसमित-
याहेवधर्माधिकरणलिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमा-
न्त्रमासोयवेदमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितैतद्-
चिवादनियमनिविष्टलिखितादिकं च यत्तदब्दीयतन्मासोयनखमितदिनसम्ब-
न्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रसुप्तमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति धनिनो मृतस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-
भावे सति मृतधनित्यक्तधने तत्सन्धा दीपनदेहनाम्न्या एवाधिकारः,
तस्याश्च मृतपतित्यक्तधनध्यायत्तोरुत्तरक्षमता शास्त्रसिद्धैव, एव हस्तान्तर-
करणक्षमता तु शास्त्रोपावश्यककार्यार्थमन्तरेण नास्ति-इति धर्मशास्त्रा-
नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति कार्त्तव्यन-
वचनम् ॥१॥

ईशबीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासोयप्रथमदिनसम्ब-

न्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेणैतद्विवादविषयनिविष्टलिखित-
जातैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१११) तरजमा रोवकारि—

नकल रोवकारि आदालत दिमानि जिला चाटीप्राम हेनरी-
मोरसाहेब कायेम मोहाम जजेर बैठके तारिख ८माइ अकतूबर
सन १८३६ आठारह सय छत्तिस ईशावी—

प्रतापनारायणचक्रवर्ती, साकिम दुर्गापुर डिगरीदार,
परमानन्द चक्रवर्ती ओ रामधन ओ रामलोचन ओ
प्रतापनारायण ओ उमाकान्त ओ लक्ष्मीनारायण ओ रामकीशोर
ओ रामशरण ओ रामकान्त ओ शिवप्रसादठाकुर ओ राममोहन
ओ द्वितीय रामलोचन ओ रामप्रसाद ओ द्वितीय परमानन्द
ओ फारोनाथ ओ वेचन ओ रामदास ओ विजयनाथ
प्राणसकल साकिमान दुर्गापुर ओ उत्तरदुर्गापुर ओ मुरालीपुर
ओ गोपालपुर ओ मिठारा ओ मटमारिया तरफसानियान्—
मोकहिमा इजराय डिगरी समाज—

हेजुरेर हुकुमानुसारे एइ मोकहिमा मौलवी अबदुल मजीद
नॉ वाहादुर सदर आमिन आलार निकटे दरपेश दइयादिलो ।
गत अगस्त मासेर २० तारिखे ऐ सदर आमिन आला डिगरी-
दारेर सहित तरफसानोमकलके एकत्र बसिया आहार करिते
आज्ञा दिलेन, ओ लक्ष्मीनारायणचक्रवर्ति तरफसानी ऐ सदर
आमिनआलार हुकुमेर नाराजाते एक पैता दरवारत अपिल
मरसरीर बाबति गत सितम्बर मासेर ७ तारिखे गुजराइनेक, ओ
पूजहार किलेक ये इहार ज्ये प आदालत दइते सदर दिमानी

आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लइवार कारण आज्ञा हइयाछिलो, तरफसानीसकल ऐ डिगरी जा रि हओयाते खालास-पाइयाछे । ऐ आज्ञार बहिर्भूत ऐ सदर आमीन आला ऐ डिगरी जा रिर समये तरफसानीसकलके ऐ डिगरीदारेर वाटीते आहार करिते हुकुम दिया तरफसानीसकलेर जातिर प्रति शत्रुता करितेछे, ओ सन १८३६ सालेर २०सितम्बर तारिखे लक्ष्मीनारायणठाकुर ओ रामधन ओ कमलाकान्त ओ प्रताप ओ भञ्जन ओ रामलोचन ओ वैद्यनाथठाकुर-गणेर उकिल सेख अहमदुल्लाहेर साक्षते सरसरी आपीलेर सवाल ओ सदर आमीन आला मौसुफेर सन १८३६ सालेर २० अगस्त तारिखेर रोवकारि नकल छटे आइलो । बोध हइलो ये उभय विवादिर एइ प्रकार विवाद बटे ये सदर दिमानी आदालतेर हुकुम एइ प्रकार आसियाछे । ये आदालतेर पण्डितेर स्थान हइते व्यवस्था लइया एइ डिगरी एजराय करा जाइवेक । अतएव आदालतेर पण्डित व्यवस्था दाखिल करियाछे—ये शाखानुसारे एइ डिगरी यथार्थ बटे । ताहाते मुद्दाआलेहगण विरोध करिया एइ प्रकार आपत्ति करे ये एइ आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दियाछे से व्यवस्था चाटप्रामेर व्यहेरालोकेर प्रति बटे । ऐ प्रकार रसम रवाज व्यहेरालोकेर रवाजेर बरखेलाफ बटे, ओ तरफसानीगण निजामपुरेर बटे, ओ तरफसानीदिगेर उकिल प्रकाश करिलेक ये चाटप्रामेर लोक निजामपुरेर व्यहेरालोकेर सङ्गे सकल कर्मो आहार व्यवहार करे नाइ इति । ओ ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल तलब करार आज्ञा ओ ऐ व्यवस्था नकल सदर दिमानी आदालतेर प्रबल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठाइवार हुकुम ओ सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलब करा एइ प्रकार जे एइ डिगरी निजामपुरेर दस्तुर माताविक किम्बा चाटप्रामेर दस्तुर मोताविक जा रि हइवेक—हुकुम दिवा गेलो, ओ उभय विवादि निजामपुरेर

सामाजेर वटेन, ओ सदर दिमानी आदालत हइते जयाव आसा पर्यन्त एइ डिगरी जारि मकुफेर हुकुम सादर हइलो इति । ओ अद्य आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल सदर आमीन आलार स्थान हइते ए आदालते पौछिलो । अतएव हुकुम हइलो ये आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल याहा ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आसियाछे एइ रोक्कारि सहित ओ अङ्गरेजी चिठीर सम्बलित सदर दिमानी आदालतेर प्रबलप्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय । सवाल एइ ये, उभय विवादि निजामपुरेर वासिन्दा वटेन, ओ जाति ब्राह्मण वटेन, ओ व्यहेरासकलेर पुरोहित वटेन, ओ नेजामपुरेर व्यहेरार यजन-पूजन कराते मुद्दके मुद्दाआलेह ब्राह्मणसकल, जाति हइते बहिर्भूत करियाछिलो । ताहाते मुद्दै पण्डित सदर आमीनेर आदालते नालिस करिया आपन हक के डिगरी हासिल करियाछिलो । ओ ऐ डिगरी आपिल आदालते अर्थात् जतसाहेवेर निकट बहाल थाकिलो । ऐ डिगरी जारी हओयार समये रसम-रवाजेर तकरार दरपेश हइया सवाल सदर दिमानी आदालत पर्यन्त गुजरियाछिलो । ओ ऐ सदर दिमानी आदालते हाकिमान हुकुम दियाछेन—ये एइ डिगरी पण्डितेर व्यवस्थानुसारे जारी करो । ओ पण्डित आदालति एइ प्रकार व्यवस्था दाखिल करिलेक—ये एइ डिगरी याथार्थ, ओ मुद्दाआलेहसकलके मुद्दैर सहित एकत्र आहार व्यवहार करा आवश्यक, ओ एजराय डिगरी आमले आइलो । ओ ऐ हुकुम ओ ऐ व्यवस्थाने मुद्दाआलेह तकरार करे । ओ मुद्दाआलेहसकलेर उजुर एइ प्रकार वटे—ये ऐ मुद्दाआलेहदिगेर सहित निजामपुरेर वेहारा दिगेर जवन-पूजनेर बिषये निजामपुरेर वेहारादिगेर सङ्गे एइ मोकहिमा उपस्थित हइया निजामपुरेर वेहारा एइ एजहार करे ये आमरा निजामपुरेर वेहारा वटी, आमारदिगेर रसम रवाज चाटिआमेर वेहारादिगेर ओ ब्राह्मणसकलेर

प्राचीन रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार बटे, ओ ऐ आदालतेर पण्डितेर' व्यवस्था चाटग्रामेर वेहारादिगेर रसम-रवाजेर विषये बटे इति । ए कारण सवाल करा जाइतेछे कि यद्यपि नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार रसम-रवाज ये सवाल लोकेर रसम-रवाजेर विषयेर एइ व्यवस्था आछे, ह्य एइ व्यवस्था शाखानुसारे यथार्थ बटे कि ना । वास्तव सवाल एइ आछे-ये यद्यपि एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था शाखानुसारे यथार्थ ह्य, तवे यदि नेजामपुरेर वासिन्दा ब्राह्मणसकल ओ वेहारासकलेर रसम-रवाजेर विपरीत ह्य, तवे नेजामपुरे जारी हइते पारिवेक कि ना । आर यद्यपि कोनो देशे पुरोहित-यजमानेर मध्ये पूर्व हइते पुरुषानुक्रमे ये रसम-रवाज जारी थाके, यद्यपि ए रसम-रवाज जारी हओर तारिखेर निभय ना थाके, एइ प्रकार रसम-रवाज नितान्न चलित नाइ, बरं चलनेर विरुद्ध बटे । तथापि प्राचीन रसम-रवाज, जाहा ओहादिगेर शाखेर न्याय चलित बटे, ऐ रसम-रवाज ऐ नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर बटे कि ना । ऐ सदर दिमानी आदालतेर प्रथमप्रताप हाकिमान अनुग्रह पूर्वक एइ विषयेर व्यवस्था सदर दिमानो आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करेण इति । अद्य मत्त १८२६ साल ईशवी तारिख २८ भाह सवम्बर डिगरीदारेर उकिल रामसुन्दरदत्त आरज करिलेक ये डिगरीदारेर मोस्कार रामकुमार हजुरे ए विषय आरज करिवार कारण हाजीर छिलो ये मुद्दाआलेहसकल वेहारा जाति बटे, ओ गुलाम ओ लौंडी आपने आपन घरे मेत्तइसकल यजन-पूजन जलाञ्जलि करितेछे । नयीर सामिल साहिदिगेर एजहारेर द्वाराय ए विषय निश्चित ओ ए कथा रोवकारिते लिखा जाय इति । उकिलेर प्रार्थना मते रोवकारि लेखा गेलो, किन्तु ए विषय सवालतेर सहित सम्पर्क

राखे ना । ए विषय एक तजविजेर स्थान वटे । सवाल ये प्रकार लेखा गेलो सेइ यथाथे वटे-ए विषयेर यवाव आसिवार परे दुइ व्यवस्था दृष्टि करिया ओ कागजात ओ उभय विवादीर सवाल ओ यवाव सोलादिजा करिया डिगरी जारी विषयेर उचित हुकुम देया जाइवेऊ इति ॥—

श्रीदुर्गा शरणम्—

श्रीयुक्तजानलुइपजजसाहेवमहाशयप्रेरितान्वेतानि विवादपत्रादीन्पत्रलो-
काथ व्यवस्था लिखते—अत्रार्थी एतद्देशीयवेदहारानामशूद्रविशेषगृहकृत-
यजनपूजनादिव्यापारः प्रत्यभिभिरव्यवहार्यो नैव भवेदिति विदुषां परममर्थः ।
एतद्देशीयवेदहारानामशूद्रविशेषानीतजलवानस्य एतद्देशीयप्रधानब्राह्मणशू-
द्रादिभिः क्रियमाणत्वाद् विशेषतोऽत्राधिक्यत् प्रत्यधिनामपि केपाञ्चिन् तद-
शवेदहारानामशूद्रविशेषाणां यजनपूजनादिव्यापारकरणेऽपि श्रवणव्यवहार्यत्वा-
भावस्य साक्षिभिर्निवृत्तत्वाद्, “येषु स्थानेषु यच्छौच धर्माचारश्च यादृशः,
तत्र तन्नावमन्येत धर्मस्तत्रैव तादृशः”—इति शुद्धित्त्वधृतवचने देशविशे-
षीयपारम्पर्यकमागतयादृशधर्माचारस्तादृशस्यामितत्वज्ञापनान्वेति ।

अस्यार्थः—

श्रीयुक्त जान लुइप जज साहेव महाशय कर्तृक प्रेरित एमकल
कागज पत्र अवजोकन करिया ए विषये व्यवस्था लेखा याइतेछे ।
ये ए डिग्रीदार एतद्देशीय वेदारा शूद्रेर गृहे यजन-पूजनादि
व्यापार कराते आसामि-कर्तृक अव्यवहार्यं हइते पारे ना ।
कारण एउद्देशीय वेदारा शूद्रेदर जलाचरणादि व्यवहार एतद्दे-
शीय प्रधान ब्राह्मण ओ शूद्रादिमन्त्रे करिया आसितेछे, एवं
विशेषत एइ फेरादिर मत कोन आसामि वेदारा शूद्रेर यजन
पूजन करातेओ ताहार व्यवहार्यरव साक्षि कर्तृक कथित आछे,
एवं ये स्थाने यादृश शौच ओ यादृश धर्माचार, से स्थाने ताहा
अवमत हइवे ना, ताहाइ प्रचलित हइवे-एइ शुद्धित्त्व धृत वचनेते

पूर्वापर यादृश धर्माचार रूप व्यवहार ये देशे ये मन चलिया आसितेछे, ताहार अभिसतत्व ज्ञापन करियाछेन-बोध दइल दःयादि । इं सन १८३५ तारख १ आफ़ेल—

श्रीअखिलचन्द्रन्यायरत्नशर्मणाम्

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रमङ्गरेलीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रं च यदीशधीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणेन्दुमित-
दिनसम्बन्धमङ्गलवासरे मया प्राप्त तदवलाक्य यादृशबोधो वातस्तदनु-
सारेणोत्तर लिख्यते । —

प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिखितवृत्तान्ते सति चट्टग्रामप्रदेशीयजिलाख्या-
वान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपरिण्डतनिखितव्यवस्था नेजामपुरप्रदेशवासिना-
मधिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां प्रचलितव्यवहारानुसारिणी चेत्तदैव नेजामपुर-
प्रदेशवासिनावधिप्रत्यर्थिनो ब्राह्मणा प्रति शास्त्रसिद्धा भवेतुमर्हति,
नेजामपुरप्रदेशवासिनामधिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां कथञ्चिदपि प्रचलित-
व्यवहारविरुद्धतया ज्ञातुं शक्यने चेत्तदा नेजामपुरप्रदेशवासिनावधिप्रत्य-
र्थिनो ब्राह्मणी प्रति शास्त्रतः प्रचलितं नार्हति ; एव कस्मिंश्चिद्देशे पुगेहित-
यजमानयोर्द्वयोः पूर्वंपुरुषपराम्पर्यक्रमेण कश्चिद्व्यवहारोऽनिश्चितप्रचारदि-
वसोऽपि यदि तेषां तादृशप्राचीनव्यवहारः शास्त्रसाम्येन प्रचलितः स्यात्तदा
तादृशव्यवहारो नेजामपुरप्रदेशवासिनामधिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां शास्त्रतः
समोचीनो भवत्येव—इति नेजामपुरप्रदेशचलितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृति-
वृहस्पतिस्मृतिशुद्धितत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकामभृतिप्रस्थानुसारिणी व्य-
वस्येति ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिज्ञानपदान् धर्माञ्च श्रेणीधर्मांश्च धर्मचित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं परिपालयेत् ॥ इति मनु-

वचनम् ॥१॥

यस्मिन्देशे य आचारो व्यवहारः कुत्रस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्यस्मृति-
प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

देशजातिकुलानां च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-
प्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥३॥

केवल शास्त्रमाश्रत्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजापते ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-
व्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥४॥

येषु स्थानेषु यच्छीचं धर्माचारश्च यादृशः ।

तत्र तत्रावमन्येत धर्मस्तत्रैरतादृशः ॥—इति शुद्धितत्त्व(पृ० २७५)-
प्रभृतिग्रन्थधृतमरीचिवचनम् ॥५॥

देशानुशिष्टं कुलधर्ममग्रय' सगोत्रधर्मं नहि संत्यजेच्च—इति
शुद्धितत्त्व(पृ० २७६)प्रभृतिग्रन्थधृतवामनपुराणवचनञ्चेति ॥६॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यप्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यप्रतया चैतद्व्य-
वस्थायाः फाठिन्यतरत्वेन चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो ज्ञात इति
निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितादीयजुनमासीयमुनीन्दुमित-
दिनसम्बन्धिस्यनिवासरे मया प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रविचारान्तादरेजीशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रैः सहितैर्ष्यं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिविराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(११२)—मो० कलिकानार सदर देओनि आदालतेर इ० सन १८३७ सालेर १५ फिवरेल मोतावेक बाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ फाल्गुन बुधवार दिवसेर श्रीयुत घोळियम ब्राडिन साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर रुक्कारि—

सिउद्धहाय ओ कुञ्जवेहारीलाल—

बनाम

मोळ्ममातान् मञ्जणविवि ओ गैरह—

छापलानेर उकिल तारकचन्द्रराय, फरिकछानिर उकिल गण मुनशी दादारवक्त ओ श्रीरामराय हाजीर आइलेन । छापलानेर खास आपीलेर छओल ओ ऐ छओलेर सम्पर्कीय कागजसकल, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे दरपेप एवं छापलान दरवारिलालेरेर पुत्रगण हओर विपये दरवारिलालेरेर एकरारेर निदर्शन दाखिल करणे हकुम छापलानेर उकिलेरेर प्रति प्रकाश हइया स्थकित छिल, अथ पुनराय दरपेस हइया सन १८२१ सालेर ८ जानेर तारिखे हकुम हओर वैजनाथ छहायेर दरखास्तेर नकल ओ सन १८२० सालेर ६ आपरेल तारिखेर लिखित जेला भागलपुरेर देओनि आदालतेर नकल रुक्कारि ओ सन १८१३ सालेर १४ शैतम्बर तारिखे लखित ऐ जेलार आदालतेर फयदलार नकल समरलित, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे हकुमानुसारे छापलानेर उकिल दाखिल करियाछिल, दृष्टे आइल । छापलान कहेन जे उद्वारा दरवारिलालेरेर पुत्रगण एवं उत्तराधिकारिगण वटेन, ओ फरिकछानि ऐ दरवारिलालेरेर आपन भातपुत्र । वैजनाथछहायेर उत्तराधिकारिगण जे कहेन छापलान दरवारिलालेरेर डेमनितायफादार खीर गढेर् जन्मियाछे, ओ एइ इयने उक्त दरवारिलालेरेर विवाहिता खीर गढेर्जात फन्या श्रीमती मल्लार तेज्य

विषयेर जन्य उभय विधादिर विवाद उपस्थित आछे । ए जन्य कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए मोकद्दमार शाखेर वृत्तान्त ज्ञात हओगे उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नोत्तर नकल रुयकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये लेखेन ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति—

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दुर अविवाहिता स्त्री अर्थात् उद्धार टेमनि हइते सन्तान उत्पत्ति हइयाथाके, आर ए व्यक्ति कोन एक आदालते आपनाके ए पुत्रेर पिता एवं आज्ञा दर्शाइया नालिस करे, तवे उक्त पुत्र ए व्यक्ति मृत्युर पर ए व्यक्ति उपरेर प्रसङ्ग करा एकरारेर हउते ए व्यक्ति आपन भ्रान्तपुत्र उत्तराधिकारिगण धारितेओ ए व्यक्ति विषयेर हकदार पञ्चिन ओ चङ्गदेशीय चलित शाखानुसारे हइते पारे कि ना इति—

श्रीज्जयतिराम्

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिश्रोतुनश्रोत्रियमवेराडोनसाहेबयर्माधिकरण-लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयकेवरवरामासायबाणेन्दु-मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्र यत्तदन्दायमाचंनानायायशिव-नेत्रेन्दुमितदिनसम्बन्धिसन्द्रवासरै मया प्राप्त तदवज्ञान्य थाहशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रमुखमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवर्षाक्तविशेषो यदि ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यो वा स्यात्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य नाधिकारः, किन्तु धनिना मृतस्योत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं प्रासाञ्छादनभागिता भवति । यदि च मृतधनिव्यक्तिविशेषः शूद्रजातोयस्तस्य यदि धनिनो मृतस्य विवाहितस्त्रीगर्भजातकन्यासौहित्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य मृतधनिभ्रातृपुत्रस्य विद्यमानताया-

मधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमिश्रोदयप्रभृतिग्रन्थानु-
सारिणी बद्धदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसमग्रप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी
च व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोऽशहरो भवेत् ।

मृते पितरि कुर्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥

अभ्रातृको हरेत् सर्वं दुहितृणां सुतादते ।—इति मिताक्षरा-
दायभागप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य वचनम् ॥१॥

शूद्रेण दास्यां समुत्पन्नः पुत्रः कामतः पितुरिच्छया भागं लभते ।
पितुरूर्ध्वन्तु यदि परिणीता पुत्राः सन्ति, तदा ते भ्रातरस्तं दासीपुत्रमर्द्ध-
भागिकं कुर्युः, स्वभागादर्द्धं दद्युरित्यर्थः । अत्र परिणीतापुत्रा न सन्ति
तदा कृत्स्नं धनं दासीपुत्रो गृह्णीयात् । यदि परिणीतादुहितरस्तपुत्रा
वा न सन्ति तत्सद्भावे त्वर्द्धभागिक एव दासीपुत्रः । अत्र च शूद्रग्रह-
णाद् द्विजातना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं
दूरत एव कृत्स्नं किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा (पृ०
२१६)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

शूद्रस्य पुनरपरिणीतदास्यादिशूद्रापुत्रः पितुरनुमत्या पुत्रान्तर-
तुल्यांशहरः—इति दायभाग (पृ० १४३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्यवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जातः इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दोयजुनमासीषद्विपक्षमितदिन-
सम्बन्धिवृहस्पतिवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिवेदनपत्राभ्यां सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

तरजमा सञ्चाल—

(११२)—जिला साहावादेर सदर आमिन आला सैयद
मनौअर अलि मोराम गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३:५—
नरकुसिह मुदाआलेह आपालाण्ट वनाम मेघसिह ओ
अक्षरसिह
रफाडरटान्—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पखिडतेर
प्रति सवाल । एइ ये, यद्यपि एह व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरु-
शी घन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रानत्पुत्र विद्यमान
थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृष्वसृपुत्रेर प्रतिपालनेर दृष्टे ऐ व्यक्ति-
के दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार
नकल एइ सवालसकलेर सङ्गे आछे लिखिया दिया थाके । तवे
ए प्रकार दस्तावेज शाखानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानप्रहीता-
सकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्ता
अर्थात् अंशोकारकसकलेर जीवदशाय दानकर्तासकलेर पुत्र-
पौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अर्शिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेञ्जीशब्दप्रतिपाद्यत्तरपत्र दस्तावेज-
शब्दप्रतिपाद्यत्रमाशानत्र च यदोशबोशब्दप्रतिपाद्यनुनिगुणगनेऽनुमिता-
न्दोयज्ञानवरीमाशोयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिषुक्रवाशरे मरा प्राप्तं तद्व
लोक्य यादृशबोधो वातस्वदनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यत्रं
त्तरत्रलिखितनियमज्ञातदृष्टिविवेचनाभ्या शाखानुषारेण सिद्धयति, एवं
दानप्रहीतृणां स्वत्वे प्रमाण भवति । दानकर्तृणां विद्यमानतायां तेषां
पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचर्जित-
मनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिप्रन्थानुषारिणो व्यवस्यते ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पर्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

श्रीशुल्कानुग्रहार्थञ्च दत्तं दानविदो विदुः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २४५) बीरमित्रोदय (पृ० ३६७) प्रभृतिग्रन्थभृतनारद (नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यप्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यप्रतया रोगप्रस्त-
तया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगत्रेन्दुमिताब्दीयजुनमाधीपमुनिपत्नमित-
दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुधर्मपितप्रश्ननत्रविचारपत्राङ्करेजोशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेषशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रभुयाचितनिवेदनेन च सहितेषं
व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—ल० २३६ ई सन १८३५ साल—

रोचकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि
आदालत डक आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत प्राणशोप
करुण इपमित साहेबेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी
सन १८३० साल मोताबक वाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १०
आपाठ दिवस बुद्धस्पतिवार ।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलमचन्द्रधर-
आपीलाएट—

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह— रेण्वाडएटान—

आपीलाएटेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ हाजीर
रेण्वाडएट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिप कोलवरूह

श्रीदुर्गा

तरजमा सञ्चाल—

(११३)—जिला साहाबादेर सदर आमिन आला सैयद
मजीअर अलि भोक्राम गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३:५—
नरकुसिंह मुद्दाआलेह आपीलाएट वनाम नेघसिंह ओ
अक्षरसिंह
रफगाडरटान्—

भोक्राम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर
प्रति सवाल । एइ ये, यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरु-
शी धन हडते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातृपुत्र विद्यमान
थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृपुत्रमृपुत्रेर प्रतिपालनेर दृष्टे ऐ व्यक्ति-
के दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार
नकल एइ सवालसकलेर मझे आछे लिखिया दिया धाके । तवे
ए प्रकार दस्तावेज शाखानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानप्रहीता-
सकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्त्ता
अर्थात् अंशोकारकसकलेर जीवदशाय दानकर्त्तामकलेर पुत्र-
पौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अशिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यान्तरपत्र दस्तावेज-
शब्दप्रतिपाद्यमन्त्रमात्रापत्र च यशेशबोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिता-
न्दोयज्ञानवरीमाभीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुकवाठरे मरा प्राप्त तदव-
लोक्य थादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यार्त्तं
तत्रलिखितनियमजातदृष्टिविवेचनाभ्या शाखानुसारेण सिद्धवति, एव
दानप्रहीतृणां स्वत्ये प्रमाण भवति । दानकर्त्तृणां विद्यमानतायां तेषा
पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचलित-
मनुमिताक्षराधीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पश्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्वा स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

सौशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं दागविदो विदुः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २४५) बोरमित्रोदय (पृ० ३६७) प्रभृतिग्रन्थधृतनारद (नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया रोगप्रस्त-
तया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशवीर्यशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताक्षरीयजुनमासीयमुनिपद्मिल-
दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नत्रयविचारस्त्राङ्गरेजोशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रशुचाचितनिवेदनेन च सहितेवं
व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्जयतितराम
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—ल० २३६ ई सन १८३५ साल—

रोबकारि मिडिल मोकाम कलिकातार सदर देखोयानि
आदालत उक्त आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ्राणशीप
करुण इपमित साहेबेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी
सन १८३७ साल मोताबक वाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १०
आपाढ दिवस बृहस्पतिवार ।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अलि आलमचन्द्रधर-

आपीलाएट—

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह— रेष्पाडएटान—

आपीलाएटेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ हाजीर
रेष्पाडएट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिप कोलवरुह

सदरनेएड माहेव हाजीर आइल । गतो कल्य एइ मोकईमा
 आमार घैठके उपस्थित । प्रथम आदालत सहर मुरशीदावादेर
 कागज सकल आर एइ आदालतेर दाखिल हओयो मोजेवात
 ओ जओयोव प्रभृति सान्यक कागज एव अन्य २ दलिलसकल
 जाहा गतो कल्य उभये दाखिल करियाछिल, पडा इइया दिवा-
 वसान प्रजुक्त मुलतवि छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइल ।
 रेष्पाडएटेर उकिल भैरवचन्द्रन्यायवागीशेर एककेता व्यवस्था
 ओ रामतनुरामान्यायवागीशेर एक केता व्यवस्था ओ वेदकण्ठ-
 शर्मा एक केता व्यवस्था ओ शिवनाथशिरोमणिर एक केता
 व्यवस्था, एकुने चारि केता, ताहार चारि केता तरजमा सम्बलित
 आर दुइ फई फिरिस्त न आठ तड्का किर्मतेर दाखिल करिलेक ।
 बोध हइल जे आपीलाएट मुहई एक आना अष्ट गोएडा दुइ
 कडा दुइ कान्ती जमिदारि प्रभृतिर दखल पाओनेर दाविते
 मबलगे ६५७० ॥६॥ टाकार तायदादे विजयगोविन्दबडाल
 प्रभृती मोर्दाआलेहेर नामे सहर मुरशीदावादेर आदालते नालिस
 करे । तथाकार जज साहेव आपन तजविज कालिन वँहार
 आपन फयसलार लिखित हेतुते एइ मोकईमार व्यवस्था तलवे
 तिन फई सओयाल सहर मुरशीदावाद ओ जेला नदिया ओ
 जेला विग्भूमेर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेर नामे पाठान
 तिन जेलार पण्डितदिगेर व्यवस्थासकल सानन्दमर्यादासीर
 वृतीय पुत्र, जे उक्त सानन्दमयीर भ्राता महानन्ददत्त ओ तस्य
 वनितार मृत्युर पर जन्मियाछे, सत्व ना राखा विवागणे पौछिले
 पर उक्त व्यवस्थासकल एवं जजसाहेव मोडफेर फयसलार
 लिखित अन्य २ व्यवस्था अनुजाइ इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर
 २१ जुलाइ तारिखे मुहई आपीलाएटेर दावि डिस्मिस हय ।
 मुहई आपीलाएट ताहार असम्मविते आपीलेर हागव एइ
 आदालते उपस्थित आने, आर ताहा इङ्गरेजी सन १८२६ सालेर
 ३१ मार्चेर हओयो एइ आदालतेर रोवकारिर लिखित हेतुते

श्रीयुव रावरट हाल डन राटरि साहेव हाकिमेर बैठके द्वितीय विवेचना ओ गीरेर जोन्य घोव ह्य इति—

जे हेतुच कोन हुकुम प्रकाश करखेर पूर्व निचेर लिखित मतो तिन सञ्चोपाल पद आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञीश्य उचित । प्रथमत, एइ जे मुरशीदावाद मोतालगेर जङ्गीपुर साकिनेर कृत्तीचन्द्रदत्त आपन पुत्रगण महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त ओ कन्यागण आनन्दमयीदासी ओ सानन्दमयीदासी ओ पूरणानन्दमयीदासी ओ जमीदारि डिहिगणकर प्रभृति विपय राखिया देह त्याग करे । ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त दुइ पुत्र आपन २ पिहू-वस्तुर पर दखलीकार थाकिया उक्त परमानन्ददत्तेर विवाह ना करिया मृत्यु ह्य । ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त आपन पितार तावत वस्तुर पर दखलिकार हइया आपन वनिता द्रवमयीदासीके ओचारिस राखिया निःसन्तान परलोक प्राप्त ह्य । ताहार मृत्युर पर द्रवमयी उहार आपन स्वामीर स्थावरादि विपयेर पर दखलिकार हइया स्वामीर भग्नीगण आनन्दमयी ओ सानन्दमयी ओ आनन्दमयीर गर्भजात पाँच पुत्र ओ सानन्दमयीर गर्भजात दुइ पुत्र ओ उक्त मृत महानन्ददत्तेर अवीरा भग्नी पूरणानन्दमयीर सन्मुखे मृत्यु ह्य । ततपरे आनन्दमयीर स्वामी देह त्याग करे, आर सानन्दमयीदासीर गर्भे तृतीय आर एक पुत्र जन्मे । परे जे पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर मृत महानन्ददत्तेर भग्नी सानन्दमयीदासीर गर्भे जन्मियाछे, से पुत्र शाखानुजाइ महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीर स्थावरादि धन हइते द्वितीय भ्रातागणेर तुल्याश पाइते पारे कि ना । आर यदि इहार पर सानन्दमयीदासीर गर्भे पुनर्वार पुत्र जन्मे, से पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता स्थावरादि वस्तु हइते उहारदिगेर तुल्याश पाओनेर सत्त्वाधिकारि हइते पारे कि ना । द्वितीय, सुचे उडिस्या ओ वाङ्गतार शात्र ओ व्यवहार प्रथम

सञ्चोयालेर लिखित विषये अक्षय आछे, किन्वा किछु अनैक्य ।
 तृतीय, ये हेतुक आनन्दमयीर पाच पुत्र ओ सानन्दमयीर दुइ
 पुत्र, सास्यक सात जन, आनप २ मातुल मृत महानन्ददत्तेर
 मृत्युर पर रित मते आदालते नालिस करिया आपन २ सत्वे
 डिगारि हासिल करिया तदानुजाइ सात जना आपन २ अंशेर
 पर आदालतेर हुकुमेर द्वाराय सरकारेर ताहुते नाम जारिते भोग-
 वान हइया थाके । ए विषय अष्टम पुत्रेर, जे महानन्ददत्त ओ
 तस्य बनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर जन्मियाछे, ताहार सत्वेर
 अन्यथार कोन हेतु हइते पारे, कि ना । ए प्रयुक्त हुकुम हइल
 जे एइ रोवकारि नकल एइ मोकईमार फयसलार सम्बलित
 एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय जे
 उपरेर लिखित तिन सञ्चोयालेर उत्तर एइ हुकुम पौञ्जार दिवस
 हइते तिन दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण, आर अर एइ
 मोकईमा स्थकित थाके इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तभीषुतफानशीरुकरणइशमित-
 शादेवधम्माधिकरणलिखितेश्वोरादप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितांशोपपुन-
 मासीपद्विपद्ममितदिवसीयविचारपशान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्रं तत्समर्पितत्रयपत्रं
 च यत्तदन्दीयतन्मासीपमुनिपद्ममितदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं
 तदवलोकय यादृशबोधो जातस्तदनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतमहानन्ददत्तस्य भगिन्याः सानन्द-
 मयीदास्या गर्भतो महानन्ददत्तस्य तत्तल्या द्रवमयीदास्याश्च मरणानन्तरं
 बनितो जनिष्यमाणपुत्रश्च महानन्ददत्तस्य तत्तल्या द्रवमयीदास्याश्च त्यक्त-
 स्थावरप्रभृतिधनतोऽबोलिखितप्रथमप्रमाणेन भ्रात्रन्तरतुल्यंशभागी भवितुं
 शक्नोति । किन्तु अपोलिखितद्वितीयतृतीयप्रमाण्यां भ्रात्रन्तरतुल्यंशभागी
 भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिञ्च तेऽभिकांक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
कृतदायभागटीकालिखनम् ॥२॥

कमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति विवादभङ्गाण्यव-
ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि उत्कलदेशे प्राधान्येन प्रचलितग्रन्थः शम्भुकृष्णपेयी विद्या-
करवाक्येयी च । तयोर्वारंवारग्रन्थेषुऽप्यद्यापि सी ग्रन्थी न प्राप्ती ।
तावदप्या ताभ्यां बङ्गदेशचलितशास्त्रवैक्यमनेक्यं वेति निश्चयो न जातः ।
किन्तु उत्कलदेशे मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थानुसारेणैव व्यवस्था भवति । अत-
एवोत्कलदेशे चलितशास्त्रव्यवहाराभ्यां बङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारयोः
प्रथमप्रश्नलिखितविषयभेदोऽस्त्येवेति—

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तृतीयप्रश्नलिखितविषयो महानन्ददत्तस्य तरलत्या द्रवमयीदास्याश्चो-
परमानन्तरं जनितस्याष्टमपुत्रस्य स्वत्वस्यान्वयाकारको भवितुमर्हति, यतः
शास्त्रानुसारेण राजाशया च व्यक्तीभूतप्रादेशिकस्वत्वात्पदीभूततत्तद्भ्रात्रो
महानन्ददत्तस्य तरलत्या द्रवमयीदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्य पूर्वधन-
स्वामिमृतमहानन्ददत्तपितृदौहित्रस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति—इति बङ्गदेश-
चलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सहृदंशो निपतति सहृत् कन्या प्रदीयते ।

सहृदाह ददानीति श्रीश्वेतानि सतां सहृत् ॥ इति मनु-
वचनम् ॥१॥

अस्यतन्त्राः प्रजाः सर्वाः स्वतन्त्रः पृथिवीपतिः--इति व्यवहार-
तत्त्व(पृ० ६४)विवादाचार्यवत्सेतुविवादभङ्गाचार्यवप्रभृतिग्रन्थभृतनारद(ना-
सं० २६।पृ०२६)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयद्विपक्षमित-
दिनसम्बधिशनिवासरे मया प्रभुसमपितविचारपत्रादिसहितेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

(११५)—तरजमा सवाल—

यद्यपि रामगोपालमित्र नामे एक व्यक्ति कायस्थ जाति
गुडवा तालुका जमोदारी खरिद करिया ताहाते दखिलकार
छिलो । उहार पत्नीर गर्भे तीनि पुत्र । प्रथम महतापराम, द्वितीय
गुलावराम, तृतीय मानिकराम जन्मियाछिलो । ताहार मध्ये ऐ
महतापराम ओ मानिकराम केवल आपन आपन स्त्रीके उत्तराधि-
कारिणी राखिया आपन पिता रामगोपालमित्रेर साक्षाते निस्स-
न्तान मरियाछे । ओ ऐ मृत दुइ भ्रातार स्त्रीगण ए द्यग पर्थ्यन्त
विद्यमाना आछेन । इहार पर गुलावराम द्वितीय पुत्र ओ आपन
पितार साक्षाते आपन चारि जन पुत्रके अर्थात अनूपराम ओ
दुर्लभराम ओ मुकुन्दराम ओ माधवरामके राखिया मृत्यु हय ।
ओ रामगोपालेर मृत्युर पर ऐ गुलावरामेर पुत्रगणेर नाम समस्त
जमिदारीते दाखिल हइया लेला गेलो । ताहार पर गुलावरामेर
प्रथम पुत्र अनूपराम ओ तृतीय पुत्र मुकुन्दराम केवल आपन
आपन स्त्रीके राखिया क्रमे परलोक प्राप्त हइलेन, ओ द्वितीय
पुत्र ऐ दुर्लभराम आपन कनिष्ठ भ्राता माधवराम ओ अनूप-

रामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्री सहित साधारण्ये ओ एकान्ते ऐ जमीदारीते दखिलकार थाकिया एक स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या ओ आपन कनिष्ठ भ्राता माधवरामके राखिया परलोक गमन करिलेक । ताहार पर ऐ अविवाहिता कन्यार विवाह ऐ कन्यार पनेर टाका व्यय करिया किम्या ऐ जमीदारीर उपस्वत्वेर द्वाराय माधवरामेर कर्तृत्व थाकिते हइलो । ताहार पर ऐ महतापरामेर स्त्री ओ गानिकरामेर स्त्री ओ अनूपरामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्री ऐ जमीदारीर उपस्वत्व हइते आपन आपन खोरोपोसेर उपयुक्त धन लइवार नियम करिया फलकटरीते ऐ जमीदारीर नादावी धिषयेर दरखास्त गुजराइया ऐ जमीदारीर दावी हइते निरास हइलेन । ए दृश्ये ओइ मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ माधवरामेर अंश आठ आना जमीदारी ओ चारि आना जमीदारी ओइ चारि जना अवीरा खोगणेर खोरोपोपेर जन्वे मिनहा दिया वाकि चारि आना जमीदारीर हिस्सा आपन स्वामीर अंश करार दिया, आपन स्वत्वेर एजहारे ओ आपन मृत्युर पर आपन कन्यार स्वत्वेर एजहारे आदालते नालिस करियाछे—ए प्रकारे वङ्गदेशेर चलित शास्त्रानुसारे मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ जमीदारीर चारि आना अंशेर स्वत्वाधिकारिणी बदे कि ना इति—

श्रीर्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीषापरेलमाधीयवेदपद्ममितदि-
नखम्बन्धचन्द्रनाभरे मया प्राप्तन्तदत्रलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य मर्यान्तरं विद्यमानानान्तत्वीव्राणामर्थाद् गुलावरामस्य धनिद्वितीयपुत्रस्य पुत्राणाम-
नूपरामदुर्लभराममुकुन्दराममाधवरामाणां मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य

त्यक्तस्यावगादिसमुदायधने पौत्रत्वेन समानाधिकारे जाते सति तेषाम्मध्ये दुर्लभरामस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरमे तद्योग्यांशे अर्थाद्रामगोपाल-
मित्रस्य दुर्लभरामपितामहस्य त्यक्तचतुर्थांशे दुर्लभरामपत्न्या एवाधि-
कारः-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी कुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ॥—इत्यादि दायभागादि-
ग्रन्थभूतशाश्वत्स्यवचनम् ॥१॥

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । प्रपौत्रपर्यन्ताभावे
पत्नी च ।—इति भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥२॥

सदरदिमानीधर्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्यवातव्यग्रत्या बहुदिना-
न्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति
निवेदनमिति । ईशवीशन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिश्रादीषतितम्बरमा-
सीवैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्ग-
रेवीशन्दप्रतिपाद्यलिपिभिः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्मितसत्यवि-
रूपपत्रेण प्रमुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्माधिकरणे एतद्व्यव-
स्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपारशीकलिभित्तप्रश्नप्रतिरूपैश्च
सहिता इत्येति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र

श्रीदुर्गा

(११६)—प्रश्न वनाम पण्डित आदालते सदर देओयानि-
एद ये, रामपृथादेव्या आपन स्वामी ओ पुत्रेर लोकान्तरेर पर
आपन पुत्रवधूर समिच्याय आपन स्वामिर पूर्वं पुठपेर विपयेर
मध्ये किञ्चित भूमि अर्थात पे विरधीय वस्तु आशीलाएद

सावेक मुद्दर पितार सहित आपन भग्नीर गर्भयात फन्या श्रीमतिदेव्यार विवाह देशोन कालिन कुलमर्यादा सरवे आपीलाएटेर पिताके दान करिते पारे कि ना । यद्यपि करिते पारे, तवे तन्निमित्त शास्त्र सम्मत पुत्रवधूर सम्मतितर आविश्यक आछे कि ना—इहार उत्तर यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर पार्शे लिखि-वेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं निषेदनपत्रमङ्गरेजोशब्दप्रतिपाद्य-लिपिमाहापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुत्तिगुणगजेन्दुमिताब्दोपापरेलमा-सीयवेदपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्यादायं विवादास्तदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकत्तव्यं चेत्तदा राम-प्रियादेवीपुत्रवधूसम्मत्या रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हति । तद्दानसिद्धौ रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमतिरप्यावश्यकी । यदि च श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्यादायं विवादास्तदीभूत-किञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकत्तव्यं नासीत्तदा रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमत्तावपि रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितु-मर्हति—इति चङ्गदेशचरितमनुदायभागमभृतिप्रणयानुसारिणो व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

मर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद् वा कर्म करोति मृतमर्तेऽपि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत— इति निवादमङ्गार्यवमन्थलिखनम् ॥२॥

स्वामिनोऽनुमतिसरत्रे तु अस्वामिरुतविकयोऽपि सिद्धयति, व्यवहा-रोऽपि तथा—इति तद्मन्थलिखनम् ॥२॥

मृते भर्तारि ताघ्नी सौ ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।

स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सलिलाञ्जलीन् ॥

कुर्याच्चानुदिनं मस्त्या देवतानाम्च पूजनम् ।

विष्णोराराधनञ्चैव कुर्याच्चित्तमुपोषणम् ॥

दानानि विप्रमुत्स्येभ्यो दद्यात् पुण्यविबुधदेवैः ।

उपवासांश्च विविधान् कुर्याद्द्वैतादिताण्डुभे ।—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥३॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् ज्ञान्ता दायदा उर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दाय-
भागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

सदरदिमानीषर्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्यज्ञातव्यप्रतया बहुदिना-
न्यात्वन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्द्वयवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति
निवेदनम् इति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणश्रेष्ठुदिताब्दीयसितम्बर-
मासौथैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राद्वरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यलिपिनिवेदनरश्मिचिन्तापत्राम्याञ्च सदितेयं व्यवस्था पारशोक्तलिपि-
निर्मिततत्प्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीषर्माधि-
करणे एतद्द्वयवस्थाप्रतिरूपरक्ष्यार्थमेतद्द्वयवस्थाप्रतिरूपवङ्गदेशीयलिपि-
निर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपैश्च सदिता दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

श्रीश्रीदुर्गा

(११७) प्रश्नः—

यदि कोन अंशानामाय जीवतमान वेत्तीर अयत्तमान वेत्तीर

सहित अंश ह्योयार कथा लेखा थाके, से अंशनामा शास्त्रानुसारे
ग्राह्य हइते पारं कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं विभागपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्य-
लिपिमात्रपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यगुणिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासी-
याङ्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्मिंश्चिद्विभागपत्रे विद्यमानव्यक्तिविशेषस्याविद्यमानव्यक्तिविशेषेण
सहितांशभवनं लिखितं स्यात्तदा तद्विभागपत्र स्वतोऽविद्यमानव्यक्तिविशेष-
स्यांशप्राप्तितात्पर्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति, अविद्यमानव्यक्तिविशेषस्य
स्वतोऽंशप्राप्तकत्वाभावात्; किन्त्वविद्यमानव्यक्तिविशेषेत्तराधिकारिणामंश-
प्राप्तितात्पर्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति— इति अङ्गदेशचलितमनुदायभाग-
प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

सदरदिमानीधर्माधिकरणसम्बन्धित्वकर्त्तव्यकार्यज्ञातव्यप्रतया बहु-
दिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्द्वयवस्थादाने विलम्बो जात इति निवेदन-
मिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीवशात्पक्ष-
मितदिनसम्बन्धित्वमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविभागपत्रविचार-
पत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः प्रभुशान्तिनिवेदनपत्रपारशीकलिपिनि-
र्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था एतद्धर्माधिकरणे
एतद्द्वयवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्द्वयवस्थाप्रतिरूपपत्रवङ्गदेशीयलिपिनिर्मि-
तप्रश्नपत्रपारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैः सहिता दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

(११८)—लं० ३२१ सन १८३५ सालेव—

रुक्कारि मिडिल आदालते सदर देओयानि मोकाम कलि-
काता । वैठक जान रास हेचिसन साहेव उक्त आदालतेर काएम
मोकाम हाकिम सन १८३७ साल ता० ६ सेतम्बर मोवावेक
सन १२४४ साल तारिख २२ भाद्र दिवस बुधवार—

सिउस्वहायसिंह ओ गयरह— आपीलाएटान—

चेताकुडर ओ ओमेदकुडर— रेघाडेण्डान्—

आपीलाएटेर बकिलगण मुनशी होसनआलि ओ जिमिस-
चारलेस कोलवरक सदरलेण्डसाहेव श्री मिरकवित्र होसन
ओ काजि पेगाम्बर वरस मोक्कारगण ओ हाजिर रेघाडेण्डर
उकिल मुनशी गोलाम आहम्मद हाजिर आसिल । गतो आगष्ट
माहार १० तारिखे ए मकहमा आमार वैठके पेस हइया सकल
कागज पत्र पडा जाइया मुलतवि डिल, अच पुनराय पेस हयाते
घोष हइल जे एइ आदालतेर फयडला अनुसारे केहरसिंहेर
हिस्सा ताहार कन्या ज्ञानकुडरेते अर्शे, आर केहरसिंहेर द्वितीय
कन्यार पुत्र तोतासिंह, जे ज्ञानकुडरेर मृत्यु पर सत्व राखितो,
ज्ञानकुडरेर सादयाते मृत हय, आर ताहार पर ज्ञानकुडर
आपन कन्या उमेदकुडरके राखिया मरे । आर ए दयने उक्त
तोतासिंहेर पुत्र सिउस्वहायसिंह आर तोताकुडरेर भ्राता नाथु-
सिंहेर पुत्र नरेन्द्रनारायण ओ गयरह, जे तोतासिंह आपन
मातार सादयाते फौव करियाडिल, आसल मालिक केइरसिंहेर
वस्तु उत्तराधिकारि सुरते ऐ हिस्सार दावि राखे । ए कारण
चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्ये एइ मकहमाते शाखेर हुकुम ज्ञातो
हओया एइ विपयेते, जे विवादीय हिस्साते उभयेर मध्ये के स्वत्व
राखे, उचित हइया हुकुम हइल जे एइ रुक्कारि नकल एइ
हुकुमे जे विवादीय हिस्सार प्रति दृष्टी आर दाविदारानेरदिगेर
प्रति दृष्टी जे ताहारदिगेर प्रसङ्ग उपरे लेखा गेल (विचार) करिया-
लेखेन जे पश्चिम प्रचलित शाख अनुसारे केहरसिंहेर हिस्सा,

जाहा ज्ञानकुडरेते पीछियाछिल, ज्ञानकुडरेर मृत्युर पर ताहार कन्याके किम्बा केहरसिंहेर दीहित्रगण नाथुसिंहेर पुत्रगणके ओ तोतासिंहेर पुत्रके पीछिवेक—एइ आदालतेर पखिडतके समापन करा जाय इति —

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रियुतज्ञानरासदेचिसनसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बर -
मासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासी-
यगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवाउरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितविषये ज्ञानकोमराख्यासंक्रान्तकेहरसिंह-
स्यकांशे ज्ञानकोमराख्याया उपरमानन्तरं तत्कन्यायाः स्वत्वं मिताक्षरा-
बालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसारेण भवितुमर्हति—इति
पश्चिमदेशचलितमिताक्षराबालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसा-
रिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तगर्भग्रन्थुपागतम् ।

आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्॥— इति मिताक्षरा-
वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थघृतपाश्वलकपवचनम् ॥१॥

पित्रा मात्रा पत्या भ्रात्रा च तदत्तं यच्च विवाहकाले अग्नावधि-
कृत्य मातुलादिभिर्दत्तम् । आधिवेदनिकमधिवेदननिमित्तमधिविधिसिद्धे
दद्यादिति वक्ष्यमाणम् । आद्यशब्देन ऋक्थकयसंविभागपरिमहाधिगम-
प्राप्तमेतत्स्त्रीधनं मन्वादिभिरुक्तम् । स्त्रीधनशब्दश्च यौगिको न पारिभा-
षिकः, योगसम्भवे परिभाषाया अयुक्तत्वाद्—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यथा मातृधनग्रहणे दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रादिकमस्तथा पितृ-
धने पुत्रपौत्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रदौहित्र्यादिकमस्य प्रत्यासत्तितार-

तम्येन न्यायप्राप्तत्वात् स्तीधनं दुःहितृणां प्रदानात् प्रतिष्ठितानाञ्चेति
गीतमवचनस्य पितृधनेऽपि समानत्वादित्यनुपदमेवोक्तवता विज्ञानेश्वरेण
सूचितत्वात् तत्सम्मतमपीदमिति—इति बालम्भट्टविरचितमिताक्षरायटीका-
रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(११६) ल० २६३ सन १८३३ साल—

रोवकारि मिडिल आदालत सदर देओनी मोकाम कलि-
काता तारिख २१ सेप्टेम्बर सन १८३७ साल मोतावके ६ आरिबिन
सन १२४४ वाङ्मला श्रीयुत चारलिस हारिडिङ्ग साहेब फाएम
मोकाम हाकिमेर बैठके—

बल्लभिकान्नचौधुरि

अपीलाएड

नवकान्तचौधुरि—

रेग्पाडएड

आपीलाएडेर उकिल मुनशी आवास आलि ओ रेग्पाडएडेर
उकिलान्त मुनशी वंशीवदनमित्र ओ रामप्राणराय हाजिर आशी-
लेन । अद्य एइ मकहमा तरतिव मोतावेक आमार बैठके दरपेश
हइया आदी ओ द्वितीय ओ एइ विचारस्थानेर नावत कामजात
पडा गेलो । यदि स्यात एइ मकहमाय रेग्पाडएडेर पुष्य-पुत्र
राखनेर विशयै जेसा ओ एइ आदालतेर पण्डितलोकेर निकट
जिहारा गियाछिल, ताहाते पण्डितान् आपन २ जओवाय पुष्य
पुत्र सिद्धि हओनेर विशयै लिखियाछेन । विशेषत एइ मकहमार
हुकुम हओनेर पूर्व मन्देह भञ्जनार्थ एइ आदालतेर पण्डितेर
निकट कएक विशय जिहारा आविश्यक हइया हुकुम हउल
जे एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर
स्थाने समर्पन करा जाय जे निचेर लिखित प्रदनसकलेर जओवा
चङ्गदेशीय चलित शाखानुसारे काधारि बन्देर पर एक सप्ताहेर

मध्ये दाखिल करेण । प्रथम, एइ जे, यदि कोन पीडित व्यक्ति पीडाते अज्ञान हइया रय, आर ततकालिन् कोन एक व्यक्ति एक बालकके लइया ऐ पीडित व्यक्तिके कहे जे तुमि पुण्य पुत्र लइवा, आर से समय ऐ पीडित व्यक्तिर मुखे हइते हँ शब्द निर्गतो हय, तवे शास्त्रानुसारे एइ प्रकार पुण्य पुत्र सिद्धि हइते पारे कि ना । द्वितीय एइ जे, पुण्य पुत्रेर विशये शास्त्रानुसारे बयेशेर किछु निरपन आछे कि ना । यदि निरपन थाके, तवे सेइ निरपन जावदीय हिन्दु जातीर निमित्त, कि हिन्दुर मध्ये सकल जातीर विभिन्न्य बटे-विस्तार करिया लिखेन इति—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरखाधिपतिस्थानामिपि कभीयुतचारलिसहारिडिगसाहेव-
घर्माधिकरखलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बर-
मासीयेन्दुपञ्चमितदिवसीयविचारपञ्चान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयनव-
म्बरमासीयेन्दुपञ्चमितदिनसम्बन्धिवृद्धत्वसतिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

रोगाभिभूतस्याज्ञानावस्थायां केनचिदेकं बालकमादाय तमेव रोगाभि-
भूतव्यक्तिविशेषमुद्दिश्य त्वं दत्तकपुत्रं ग्रहीष्यसीत्युक्तौ रोगाभिभूतव्यक्ति-
विशेषमुखतो हौं इति शब्दप्रयोगे सत्येवभूतदत्तकपुत्रस्यास्त्रानुसारेण न
सिद्धयति, दत्तकपुत्रतासिद्धिसम्वादकशास्त्रीयनियमजातनिष्पत्तेः प्रथम-
प्रश्नलिखितविषयतो शातुमशक्यतया तत्रियमजातनिष्पत्तिमन्तरेण दत्तक-
पुत्रतासिद्धेशास्त्रीयत्वस्य भवितुमशक्यत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाह्वय राजनि निवेद्य निवेशनस्य मध्ये व्या-
हृतिभिर्हुत्वा अदूरवाग्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृहीयात्—इति दत्तक-
मोमांसा (पृ० १०२) प्र(भृ)तिग्रन्थचूतवशिष्टवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यजातीयानामुपनयनप्राक्कालपर्यन्तं शूद्रजातीयानाम् विवाहप्राक्कालपर्यन्तं दत्तकपुत्रता शास्त्रीया भवति—इति यज्ञदेश-
चलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसा-
प्रभृतिग्रन्थधृतवचनम् ॥१॥

एवञ्च चूडाद्या इत्येतद्गुणसविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुप-
नयनलाभः, शूद्रस्य तु विवाहलाभः—इति दत्तकचन्द्रिकाग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्द्रमिताद्रीयनवम्बरमासीयगुणपद्मि-
तदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था मया
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१२०)—तरजमा रोवकारि—

जम्बर ६१३१ । रोवकारी मिसिल आदालत दिमानी सदर
मोकाम इलाहाबादे तारिख २५ माह अपरेल सन १८३७ ईशवी
मोताविक ५ माह वैशाख सन १२४४ फसली, रोज मङ्गलवार
ओलियम मनकटन् साहेव कापम मोकाम हाकिम आदालत
मजकुरार बैठके इति—

मोसम्मात लजुमना ओ ठाकुर—

आपीलाएटान्

वेचनलालेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दलाल—रप्पाडएट

आपीलाएटेर ओकीलगण शेख महम्मद सफी ओ लाला-

मथुरादास ओ रष्पाडण्टेर ओकीलगण मीलवी इनामुल्लाह ओ लाला रामचन्द्र हाजीर हइलेन । ओलियम फिलमेकडीक साहेव हाकिमेर सन हालेर फिवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर हुकुमानुसारे ए मोकहिमा अद्य आमार बैठके रोवकार हइया जिलार दुइ आदालतेर कागजात ओ चाराणसेर कोर्ट आपील आदालतेर कागजात ओ ए मोकहिमार तजविज-सानोर कागजात ओ ओइ हाकिमेर राय सम्बलित सन हालेर फेवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर लिखित ओइ हाकिमेर रोवकारि लिखित विस्तीर्ण हेतुसकल ओ सन १८२३ ईशवीर अपरैल मासेर दशइ १० तारिखेर रजिस्तर साहेवेर फैसलार सम्पर्कीय फौजदारी आदालतेर कागजात ओ भजनलाल मद्दे ओ मोसम्मात लजुमना मुदाआलेहेर मोकहिमार कागजात ओ जज आपीलेर ओइ मोकहिमार सन १८२४ ईसवीर जुन मासेर १४ चौदही तारिखेर फैसलार सम्पर्कीय कागजात पढा गेलो । अतएव ए मोकहिमाते कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर निकट हइते व्यवस्था तलव करा आविश्यक बोध हइया हुकुम हइलो ये नीचेर लिखित विस्तीर्ण सवाल ये प्रकार एइ रोवकारीते लिखा आछे सेइ प्रकारे लिखिया एइ रोवकारीर नकल सम्बलित ओ ए आदालतेर रजिस्तर साहेवेर चिठोर सहित कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेवेर निकट पाठानो जाय ये कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेव कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ओइ सवालेर जवाब लइया ए आदालते पठाएत इति । सवाल एइ थे, यद्यपि दुइ भ्राता ताम्बुलि जाति पैतृक स्थावर धन विभागेर पर आपन आपन अंशेते दखिलकार छिलेन, ओ ओइ दुइ भ्रातार मध्ये एक जन एक स्त्री ओ एक अविवाहिता कन्या राखिया मृत्यु हइया थाके, ओ ओइ स्त्री आपन कन्यार विवाह कराइया थाके । ताहार पर ओइ कन्यार मृत्यु हय । ताहार पर ओइ मृत भ्रातार स्त्री आपन

पतिर विभक्त धने दखिलकार छिलो, द्वितीय पति करे। ए प्रकारे जिज्ञासा करा जाइतेछे ये मृत व्यक्तिर पत्नीर द्वितीय पति करण शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना। यद्यपि सिद्ध ह्य तवे आपन प्रथम पतिर स्थावर धन याहा ओइ छीर दखले आछे ताहा पाइवेक, किन्वा ओइ छीर दखली स्थावर धन ओइ छीर प्रथम पतिर भ्राताके अशिवेक। ओ यद्यपि ए विषयेर खुलासा शास्त्रे ना पाओया जाय तवे देशाचार ओ जाल्याचार प्रमाण जाना जाइवेक कि ना। ओ एइ सवालेर यवाव वाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे लेखेन इति—

श्रीज्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रमद्वरेओशब्दप्रतिगद्यलिपिमाहापत्रं च यदीशवी-
शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणमजेंदुमितान्दोयमैमासोयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिवन्द-
वाचरे मया प्राप्तदवलोक्य यादृशबोधो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ताम्बुलिकजातीययोर्द्वयोर्भ्रात्रोः पैतृकस्थावरधनस्य विभागानन्तरं स्वस्वार्थे आयत्तत्वं सम्पादितवतोरेकस्य पत्नीमेकामविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतस्य पत्नी स्वकन्याविवाहं कारितवती स्यात्, पश्चात् सा विवाहिता कन्या परलोकं जगाम, तदनन्तरं च मृतस्य भ्रातुः पत्नी स्वपतित्यक्त-विभक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्य पत्यन्तरं कृतवती चेत्तत्पत्यन्तरं करणं यद्यपि साध्वीस्त्रीयां शास्त्रसिद्धं न भवति। किन्तु साध्वीभिद्यानामपि स्त्रीयां कृतिनिष्प्रभेदाः शास्त्रे उक्तः। तेषाम्प्रभेदानां तृतीयस्त्रीलक्षण-मिताक्षरप्रभृतिग्रन्थेषु स्पष्टतया लिखितम्। तद्दृष्ट्या वाराणसीप्रभृतिदेशे ताम्बुलिकजातीयस्त्रीयां पत्युपरमानन्तरं पत्यन्तरकरणं व्यवहृतं चेत्तदेतद्वि-वादसम्बन्धिन्या मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः शास्त्रानुसारेण तृतीयस्त्रीरिययाः पत्यन्तरकरणं तज्जातीयव्यवहारानुसारेण सिद्धं भवितुं शक्नोति। एवमुपरि-लिम्बिनप्रकारेण तस्याः स्त्रियाः पत्यन्तरकरणस्य सिद्धीं सत्यामुत्तमधिकारि-त्वेन स्वायत्तीभूतप्रथमपतित्यक्तधने यावज्जीवं तस्या एवाधिकारस्तस्या-ञ्जीवन्यान्तरप्रथमपतिभ्रातुर्जापिकारः, उत्तराधिकारित्वेन स्वत्योःतत्पत्यन्तरं

केनचिद्दोषेण तत्स्वत्वनारास्य शास्त्रानुसारेण भवितुमशक्यत्वात्-इति वाराणसीप्रदेशचर्चितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति —

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते ।

सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥—इति मनु(६.४७)

वचनम् ॥१॥

न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद् भर्तोंपदिश्यते ॥—इति मिताक्षरावीर-
मित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

मृते भर्त्तरि तु प्रातान् देवरादानपास्य या ।

उपगच्छेत् परं कामात् सा नृतीया प्रकीर्तिता ॥—इति उपरिलिखित-
ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० ५० । पृ० १७६)वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रो-
दयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्ष-
राग्रन्थलिखनम् ॥६॥

एतेषां विभागात् प्रागेव दोषभाक्त्वेनांशित्वम्, न पुनर्विभागोत्तर-
मपि दत्तविभागापहरणम्, प्रमाणाभावात्—इति वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥७॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्व-
कर्त्तव्यकार्यंजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैद्द्वयवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् । इति ईशवीशब्दप्रतिपाद्य-
मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनचम्बरमासीयमुनिपञ्चमितदिनसम्बन्धिसम्बन्धिसरे
मया प्रभुयमर्षितविचारपत्रांगरेञ्जीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभ्यां सहितेयं व्यवस्था
पारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण कलि-

ज्ञाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूप-
रक्षणायमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवि-
चारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दधेति—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मुकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

(१२१)—तरजमा रोवकारी—

रोवकारां आदालत दिमानी जिला फतेहपूर जाननेयावलि-
सरेवाज साहेब जजेर बैठके । तारिख २ जुन सन १८३७ ईशवी ।
गङ्गापुत्रदिगेर ओ जमुनापुत्रदिगेर वृत्ति क्रमागत धन बटे कि
यजमानेदिगेर एमत क्षमता आछे ये आपन आपन इच्छा मते
याहाके तुष्ट हइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेन— ए विषय
सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ज्ञात हओया आवश्यक
बोध हइथा हुकुम हइलो ये पइ रोवकारीर नकल अङ्गरेजी चिठीर
सहित मोकाम एलाहाबादेर सदर दिमानी आदालतेर प्रबल-
प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय, ये उपरेर लिखित ओइ
पण्डितेर निकट हइते ए विषय ज्ञात हइया ए आदालते अनुग्रह-
पूर्वक प्रेरण करेण इति—

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रसूचीपत्राद्वारेबीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाहापत्रस्य यदी-
शवीष्टंशप्रतिपाद्यप्रनिगुण्यगजेन्दुमिवान्शीयजुलाहमाभीवरसमितदिनसम्ब-
न्धिवृत्तवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

गङ्गापुत्राणां यमुनापुत्राणां च वृत्तिः प्राचीनपुरोहितानां तेषां कृपागतौ भवितुमर्हति प्राचीनपुरोहितान्तां पीरोहित्यकर्मनिधिनारप्रयोजकशास्त्रीय-
दोषमन्तरेण यजमानाः परित्यज्य स्वस्वेच्छया पुरोहितान्तरं कर्तुं न शक्नु-
वन्ति इति-पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षराशोरमित्रोदयप्रभृतिसन्धानुसारिणी
व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

ऋत्विजं यस्त्यजेद्वाज्यो याज्यं चत्विक् त्यजेद्यदि ।

शक्तं कर्मण्यदुष्टं च तयोर्दण्डः शतं शतम् ॥— इति श्रीरमित्रो-
दय (पृ० ३६३) प्रभृतिसन्धृतमनु (८।३८८ इचनम् ॥१॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्माधिकरणसम्बन्धि-
स्वकर्त्तव्यकार्यज्ञातव्यप्रतया बहुदिनान्यात्त्वन्तिकरोगप्रस्ततया चैतद्व्यवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीशब्दप्रतिपा-
द्यमुनिगुणगजेन्दुमिताश्रीयनवम्बरमाषीयमुनिपञ्चमितदिनसम्बन्धिसन्धुवासरे
मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राङ्करेश्रीशब्दप्रतिपाद्यलिपिसूत्रोपदेः सदितैर्यं
व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुवाचितनिवेदन-
पत्रेण कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्माधिकरणे एतद्व्य-
वस्थाप्रतिरूपरक्षणा र्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रप्रारशीकलिपिनिर्मितव्य-
वस्थाप्रतिरूपविचारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सदितौ दत्ता इति ॥

श्रीजनेयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमित्रेण

भोक्तानिला श्रीवैद्यनाथमित्र—३

श्रीश्रीहरिः

(१२२)— न० २१२ सन १८३५ सालेर—

रूपकारि निश्चित आदालते देओयानि सदर मोहाम कलि-

काता बैठक ज्ञान राम हेचिसन साहेब, उक्त आदालतेर काश्म
मोकाम हाकिम । सन १८३७ साल तारिख ६ सेतम्बर मोतावके
सन १२४४ साल तारिख २२ भाद्र बुधवार—

सिस्वहायशाहुर मृत्युर पर ताहार पुत्र गोपाललालेर ओयालि-

वदामुकुडर

आपीलाएट

बुनियादिसिंह

रेप्पाडेएट

गतो मार्च माहार २८ तारिखे एइ मऊईमा आमार चेटके

पेस हइया सकल कागज-पत्र पढा जाइया रानी कुण्डमनी आपी-
लाएट ओ राजा उदअन्तसिंह रेप्पाडेएट एइ मऊईमार एइ
आदालतेर फयछेला मोनाहेजा करणेर कारण आर मृत आपी-
लाएटेर उत्तराधिकारि हाजिरेर निमित्त इस्ताहार जारि करणेर
कारण मुजतवि छिल । अद्य पेसकारेर ज्ञात करान मते जे मृत
आपिलाएटेर उत्तराधिकारि साबुदेर वाचत रिटरन फामेल
पौद्धिया मृत आपिलाएटेर जाएगाय गोपाललालेर अलि मोइमर्मात
वादामुकुडरेर नाम लेखा गियाछे; आर ताहार तरफ हइते मुनसि
होसन आलिर नामे ओ जिमिस चारलेस कोलवरक सदरलेएट
साहेबेर नामे ओकालतनामा दाखिल हइयाछे । उक्त उकिलगणेर
हाजिरिते आर रेप्पाडेएडर गरहाजिरिते जे पयालामनामा
जारिते रसिद् लिखिया देओयातेओ उकिलेद द्वाराय किम्बा खोद
हाजिर नाइ । पुनराय पेस हइवाय बोध हइल जे काजियार प्राम-
सकल पूर्ब हइते ७००० टाका आगामिते इस्तफ सन १२२३
नागाद सन १२२६ फसलि सातवत सरमियादे आपीलाएटेर
पितार इजारा छिल, आर ऐ आशामिर टाका आदापर ओ-
यादा इजारार अन्वसनेर अन्ते छिल । यदि स्यात ताहा ओयादा
मते आदाय ना हय, तवे ऐ टाका आदाय पर्यन्त इजारा वाहाल
थाकिपेक । इहार परे बुनियादिसिंह रेप्पाडेएडर ओ प्रताव
सिंहेर पिता खडगनारायण ४३०० टाका तमसुकसकलेर द्वाराय
उक्त इजारादारेर निकटहइते लइया १२२५ साले काजियार प्राम

सकल आर दोसरा ग्रामसकल आर रेप्पाडेण्ट आर प्रतावसिंह नावालग पुत्रगणके उत्तगधिकारि राखिया फौत करे । ताहार पर तमसुकेर टाका तलय तागादाय खडगनारायणेर धनिता मतिकुडर नावालगदिगेर माता काजियार ग्रामसकल १२००१ टाकाते वयवेल उफा राखिया किर्म्मतेर टाका हइते आशामिर टाका आर तमसुकेर टाका मिनाह दिया चाकि टाका आपनि लय । यदि स्यात्, रेप्पाडेण्ट प्रकाश करितेछे जे मतिकुडर वयवेल थोफार द्वाराय काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर ज्ञेयता राखे ना, आर इजारार आगामि टाका आदापर थोयादा इजारार अन्त सने, न चेत ताहा आदाय पर्यन्त इजारा बाहालेर शरत छिल । आर इजारा बाहालेते रेप्पाडेण्टर विषये स्थर्य्य वैतितो कोन खेति छिल ना । किन्तु चुडान्त हुकुम हओनेर पूर्व शाखेर हुकुम जाना एइ विषये जे मतिकुडरेर निकट हइते तमसुकेर टाका तलय करा आर तमसुक ओ गयरहेर टाका आदाय कारण काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर मतिकुडरेर ज्ञेयता छिल कि ना उचित हइतेछे । ए कारण हुकुम हइल जे एइ रूबकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर पश्चिम देशीय प्रचलित शास्त्र अनुसारे रूबकारि पौछिवार तारिख हइते एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन, एइ आदालतेर पारडतक समापन करा जाय ।

प्रथम, एइ जे, खडगनारायणेर लिखित तमसुक ओ गयरहेर टाका मतिकुडरेर निकट हइते तलय करा उचित छिल, कि ना ।

द्वितीय, एइ जे, यदि स्यात् नावालगणेर अलि मतिकुडरेर निकट हइते तमसुक ओ गयरहेर टाका तलय करा उचित हय, तवे उहार इजारार विषय परिवर्ते कारियार ग्रामसकल वयवेल थोफा राखिया तमसुकेर टाका आर आशामि टाका किर्म्मतेर टाका हइते मिनाह करणेर ज्ञेयता छिल कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम

एतधर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिपिक्तभीयुतज्ञानरा सहेचिसनसाहेवध-
र्माधिकरणलिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बरमा-
सीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नज्ञातप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मा-
सीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशदोषो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखतविषये स्वङ्गनारायणलिखितर्णलेख्यप्रभृति
राजतमुद्रायाचनकरणं मतिकोमराख्यासन्निधौ शास्त्रानुसारेणोचितज्ञासीत् ।
पुत्रेषु विद्यमानेषु पितृच्छर्शापाकरणस्य^१ प्रथमतः पुत्रैरेवकर्तुमुचितत्वात् ।
द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्यवसितमिति पृथङ्ग्न लिखितमिति निवे-
दनम्—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताज्ञगवीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्था
नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

श्रुणुमात्मीयवत् पित्र्यं पुत्रैर्देयं विभावितम्—इति मिताक्षरा (पृ०
१५२) प्रभृतग्रन्थधृतवृहस्पति (पृ० ११७ वचनम् ॥१॥

तत्र क्रमोऽप्ययमेवपित्रभावे पुत्रः—इति मिताक्षरा (पृ० १५२) ग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥२॥

इंश्वीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बरमासीयरसमितदि-
नसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था इत्येति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१२३)—१०० ल० जारि—

जैला चव्विस परगणार महालक चौकि नवावगञ्जेर मोन-

छफी काछारि हइते सदर देओनि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थार कारण सओल एइ—

गुरुप्रसादराय—१

डिगरिदारान्

इन्द्रनारायणराय—१

सा. काठालिया—

परगणे कलिकाता ।

श्रीमतीगुणमयीदासी

देनादार—

सा. सुकचर प० ऐ—

दावि २१७१६ टाका—

मा० जारिर खरचा—

यद्यपि देनादार श्रीमत्या गुणमयीदासीर स्वामी रघुनाथ-
वल्लभ स्थावर ओ अस्थावर दिव्यादि एवं श्रीराखालवल्लभ
नामक अप्राप्तवयेप एक नाबालक पुत्र एवं स्त्री दासी मजकुराके
राखिया लोकान्त हय । ऐ रघुनाथ मजकुरेर लोकान्तेर परतस्य
वनिता अर्थात् दासी देनादार मजकुरा अप्रओल जन्य ऐ नाबालग
पुत्रर प्रतिपालनार्थे ऐ डीगरिदारानेर निकट सुखा तामाकु कर्ज
लइया व्यवसा करिया ऐ नाबालगेर प्रतिपालने खरच करे । ऐ
तामाकुरेर किर्मत परिशोद ना हओते डिगरिदार मजकुरान
नालिपेर द्वाराय डिगरि हासिल करिया ऐ डिगरि जारि करिया
ऐ रघुनाथ, मतओफार जायदाद १४ दाफा जाहा ऐ नाबालगेर
हक ताहा क्रोक कराइयाछे । अतएव शास्त्रानुसारे नाबालग
राखालवल्लभेर पिता ओ रघुनाथ वल्लभ मतओफार जायदाद
श्रीमतीगुणमयीदासीर देना परिशोध्याये विक्रय हइते पारे कि—
इहार व्यवस्था इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्गरेजोलिपिमाञ्जापत्र च यदीशवी-
शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगनेन्दुमितान्दीयमैमासीयत्राणेन्दुमितदिनसम्बन्धि च -

(१२४)—सञ्चोपाल—

यद्यपि कोन एक व्यक्ति हिन्दु आपन जातीय धर्म हइते जात्यन्तर हइया अन्य धर्मावलम्बीय हय, आर ताहार स्त्री आपन जातीय हिन्दु धर्म अवलम्बी थाकिया आपन ऐ स्वामीर निकट जाइते अशान्मतो हय, तवे हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ऐ स्त्री आपन जात्यन्तरीय स्वामी हइते विच्छेद हइया आपन पितृ कि भ्रातृ आलये थाकिते पारे, किम्वा विचारकर्ता हाकिम आपन क्षमताय ऐ स्त्रीके ताहार ऐ जात्यन्तरीय स्वामीके अर्पन करिते पारेन—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे जाहा हय, एइ प्रश्नेर प्रति उत्तर लिखेन इति—

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरसमितदिनय - म्वन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधोजातस्तदनुसारे- षोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितविषये हिन्दूजातीया काचित् स्त्री स्वजातीयधर्मानिरता सती स्वजातीयधर्मच्युतजात्यन्तरधर्मानुष्ठानतृपतिवन्निधौ गन्तुमसम्भता चेत्तदा स्वजातीयधर्माच्युतजात्यन्तरधर्मानुष्ठानतृपतिविरहिता एव पितृभ्रातृ- वां गृहे स्थातुं शक्नोति, एवं राशापि शास्त्रानुसारेण स्वजातीयधर्माच्युतजात्य- न्तरव्यवहर्तृपतिवन्निधौ स्थापयितुं योग्या न भवति-इति मनुदायभागविवा- दभङ्गाण्वमितद्वारावीरमिश्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

नाटः प्रयजितः क्लीवः पतितो राजकिल्बिषी ।

लोकान्तरगतो वापि परित्याज्यः पतिः स्त्रियाः ॥ इति विवाद- भङ्गार्थवप्रभृतिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्मव्यतिक्रमे सत्यन्यतरज्ञाने दरडेनापि स्वधर्मव्यव-

दरवारे हाजिर नाइ। एइ मकदमा सन हालेर २१ सेतम्बर तारिखे आमार बैठके दरपेस हइया मिछिलेर कागजसकल दृष्ट करणेर पर तारिख मजकुरेर रोवकारीर लिखितानुसारे कएक प्रश्न एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाश्य हइया स्थकित छिल। परे अथ रोवकार हइया पण्डितेर दाखिल करा एइ मासेर २३ तारिखेर लिखित व्यवस्था दृष्टे आइल। ताहाते एइ मकदमार खास आपील मञ्जुरेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डित एइ आदालतेर सोओल्लेर जओवे जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाय रेष्पाडण्डेर पुण्य पुत्र सिद्धिर विषये जेलार पण्डितेर व्यवस्था जयार्थ लिखियाछेन। आर पण्डित मौछफेर हालेर दाखिल करा व्यवस्था द्वाराय जेलार आदालतेर व्यवस्था अनकवी बोध हइतेछे। अतएव हुकुम हइल जे पुनराय सावेक व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितेर हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल एइ रोवकारि नकल सम्बलित एक सप्ताह मेयादे पण्डितेर स्थाने समर्पन करा जाय जे आपन सावेक व्यवस्था ओ हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर व्यवस्था मजमुनेर प्रति विचक्षण विवेचना करिया रेष्पाडण्डेर पुण्य पुत्रेर विषये जाहा यथार्थ हय विवरण करिया लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितेर कैफियत दाखिल करा पर्यन्त एइ मकदमा स्थकित थाके इति—

श्रीज्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतचारलिपहारडिगसाहेब-धर्माधिकरणलिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयन्वम्बरमा-सीयगजपद्ममितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितमदत्त-प्राचीनार्वाचीनव्यवस्थाप्रतिरूपपत्र विज्ञासुवाचान्तरधर्माधिकरणनियुक्त-पण्डितलिखितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं न यत्तदन्दीयदिशम्बरमासीयमुनिमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तन्तद्वलोक्य यादृशानुभो जातस्तदनु-सारेण निवेद्यते—

व्यवस्था सूची

सन १८२४ साल ई

- | | | |
|---|-----------------------|-------|
| १—बाबु हरप्रकाशसिंह
मृत राबा देलगञ्जनदेशी
पत्नी ओ भ्राता ओ भ्रातृपुत्र धारिते के अधिकारि हय,
एहार व्यवस्था | आपीलाएट
रघाडएट | १-४ |
| २—दुष्तीपाडे ओ गयरह
काशीपाडे ओ गयरह
एक पुत्र दत्तक करिते पारे कि ना
ओ महाभाक्षणीय वृत्ति हस्तान्तर करिते पारे कि ना, एहार व्यवस्था | आपीलाएटान
रघाडएटान | ४-७ |
| ३—मृत ध्यक्तिर भ्रातृपुत्र ओ भ्रातृपौत्रे
व्यवस्था | उत्तराधिकारि हओयार | ८-९ |
| ४—मुथम्मात दिपु
गौरीराऊर
उत्तराधिकारि व्यवस्था | आपीलाएट
रघाडएट | ९-१० |
| ५—शेख गोलामअली वनामे मिरजा एवराहिम बेग
हिन्दूजातीय स्त्रीलोक यवनबाति प्राप्त हय, ताहार उपार्जित द्रव्य के
पाव एहार व्यवस्था | | १८-२० |
| ६—रामसेवकसिंह
मृत हानारिदमनसिंह ओ गयरह
उत्तराधिकारि व्यवस्था | आपीलाएट
रघाडएटान | २०-२२ |
| ७—जगमोहनमुखोपाध्याय
पञ्चाननचट्टोराध्याय प्रभृति
उत्तराधिकारि व्यवस्था | आपीलाएट
रघाडएटान | २२-२४ |

- ८—स्वर्णकारजातीर मुञ्जेर व्यवस्था २४-२६
 इ० सन १८२५ साल
- ९—श्रीमति हेमलताश्रीधुरायी ॲपीलाएट
 श्रीमति पद्ममणि रणाडएट
 उत्तराधिकारि व्यवस्था २६-३२
- १०—श्यामसुन्दरमहेन्द्र ॲपीलाएट
 कृष्णचन्द्रभ्रमरवरराय (पापड) रणाडएट
 दासीर गन्भंजात पुत्र सम्पर्कीय व्यवस्था ३२-३६
- ११—मृत व्यक्ति दत्तकपुत्र श्रो श्रीरसपुत्रेर सहित विभागेर व्यवस्था ३६-३७
- १२—योगिजातीर स्त्री सती हथोयार व्यवस्था ३८
- १३—मृत व्यक्ति शोपात्रित धन पिता श्रो भ्राता श्रो पुत्रदिगेर सहित विभागेर व्यवस्था ३८-४०
- १४—प्रियागसिंह ॲपीलाएट
 अयोध्यासिंह रणाडएट
 श्रीरसपुत्रेर सहित दत्तकपुत्रेर विभागेर व्यवस्था ४०-४३
- १५—धर्मचन्द्र श्रो गयरह सायेलान
 देहालये सेवाइत नियुक्त करणाधिकारेर व्यवस्था ४३-४८
- १६—धर्मचन्द्र प्रभृति सायेल
 ऐ उपरेर लिखित विषयेर व्यवस्था ४८-५१
- १७—जानकीनाथराय प्रभृति ॲपीलाएटान
 गङ्गागोविन्दबन्धोपाध्याय रणाडएट
 उत्तराधिकारि व्यवस्था ५२-६१
- १८—मृत राजा अरिमहंनशादि ॲपीलाएट
 शिवदयालउपाध्याय रणाडएट
 मृत व्यक्तिर भ्राता श्रो भ्रातपुत्रेर मध्ये के उत्तराधिकारि हय, एहार व्यवस्था ५६-५८
- १९—ब्राह्मण सोदण नुद भगिने विवाह करिया ऐ नुद जनके एकत्र रखिते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था ५८-६०

- २०—कुन्दनगिर आपीलाण्ट
दुर्गागिर ओ गयरह रेष्पाडरटान
हिन्दूर औरस जात यवनीगर्भजातेर कोन जाति व्यवहार हय, इहार
व्यवस्था ६१-६३
- २१—ब्राह्मणजाति सरिकि मते मदिसार वोतल व्यापारेर व्यवस्था
६३-६४
- २२—मृत व्यक्तिर प्येष्ठ पुत्रेर स्त्री ओ कनिष्ठ पुत्रेर सहित विभागेर
व्यवस्था ६४-६७
- २३—दास दासीके विक्रय करिवार व्यवस्था ६७-७०
- २४—कृतदास मोक्षेर व्यवस्था ७०
इं० १८२६ साल
- २५—मृत भवाणीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारि राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह
आपीलाण्टान
मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरि उत्तराधिकारि जगचन्द्रचौधुरि ओ गयरह
रेष्पाडरटान
देवत्रेर मोकररी पाटार व्यवस्था ७१-७६
- २६—राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह आपीलाण्टान
जगचन्द्रचौधुरि ओ गयरह रेष्पाडरटान
ऐ उपरेर लिखित विषयेर व्यवस्था ७६-७९
- २७—मित्रजित्सिंदेर अली भौमती मनुविधि शाण्डला
स्वामीर मानुलपुत्र उत्तराधिकारि इओवार व्यवस्था ७९-८२
- २८—श्रमति सुलक्षणा आपीलाण्ट
श्यामाप्रसादनन्दि ओ गयरह रेष्पाडरटान
उत्तराधिकारि व्यवस्था ८२-८५
- २९—कमलाकान्तघोषाल ओ गयरह
वनाने रागदसिनन्दिग्रामि ओ गयरह
ब्रह्मोत्तर जमि दानेर व्यवस्था ८६-८८

- ३०—भवाणीलाल वनामे हरीशबिविर मर्कडमा
उत्तराधिकारीर व्यवस्था ८६-६३
- ३१—मृतगौरिप्रसादचौधुरि
मुसम्नात अयमालाचौधुराणो
मातृसंक्रान्त पुत्रवनेर विक्रयेर ओ उत्तराधिकारिर व्यवस्था
आपीलारट
रणाडएट
६३-६७
- ३२—मृत व्यक्तीर सतम पुरुष ज्ञाति ओ मातुलपुत्र, इहार मध्ये उत्तराधि-
कारिर व्यवस्था ६७
- ३३—सत प्रकार आगमेर व्यवस्था ६७-६८
- ३४—कुशलरायेर उत्तराधिकारिदिगेर विभागेर व्यवस्था ६८-१०१
- ३५—मृत व्यक्तीर तिन स्त्री, ताहारदीगेर सात पुत्र, ताहार विभागेर
व्यवस्था १०१-१०४
- ३६—प्रसादसिंह राजपूत जातेर श्रीरस एवं धानुरु जातेर स्त्रीर गर्भे
उत्पन्न इइयाङ्गिल, ताहार खोरपोयेर व्यवस्था १०४
- ३७—भ्रातृपुत्र याकिते दौहित्रके कृत्रिमपुत्र करिते पारे कि ना, ताहार
व्यवस्था १०५
- ३८—स्वामीर अनुमतिते दत्तक राखियाछे, सेइ दत्तक उत्तराधिकारि
इओवार व्यवस्था १०५-१०६
- ३९—आबमीर देशेर समर्प्य व्यवस्था, बङ्गदेश दायभाग मते दत्तक-
पुत्रेर सत्वे सिद्ध वटे कि ना, ताहार व्यवस्था १०६-१०७
इ० १८२७ साल
- ४०—अप्राप्तव्यवहार शिवनाथधेयेर पत्ने अलि वल्लयमवशु वनामे
भानुमजी दास्या । स्त्रीधनेते पुत्र ओ मृतपुत्रेर स्त्रीर उत्तराधिकारिर
व्यवस्था १०७-११०
- ४१—नवकिशोरदास चायेल
ताहार देवा उत्तराधिकारिर व्यवस्था ११०-११४
- ४२—शङ्करदास चायेल
स्त्रीवन्धकेर व्यवस्था ११४-११७

४३—नद्धिराम	आपीलाएट	
मुशम्मात आनन्दिवाह	रषाडएट	-
सर्त्ति हेवार व्यवस्था		११८-१२०
४४—राममोहनघोष वनामे रामघोनराय श्री गयरह हिन्दूर परवेर		
बन्दर दिने पत्युने तालुकेर निलेम इश्रोनेर व्यवस्था		१२०-१२३
४५—छुन्दासिंह	आपीलाएट	
मुशम्मात दुर्गाकुमार	रषाडएट	
स्त्री कन्या सत्त्वे हेवार व्यवस्था		१२३-१२७
४६—छुन्दासिंह	आपीलाएट	
मुशम्मात दुर्गाकोटर	रषाडएट	
उत्तराधिकारि व्यवस्था		१२७-१२९
४७—रायवंशीधर वनामे मनोहरलाल		
उत्तराधिकारि व्यवस्था		१२९-१३१
४८—आनन्दिलाल	सायेल	
श्री रायधुमनलाल	सायेल	
उत्तराधिकारि व्यवस्था		१३१-१३४
४९—अभिमानराय	सायेल	
हकस्यपादारैर दाश्रोयार व्यवस्था		१३४-१३६
५०—भवाणीचरणदत्त	सायेल	
स्त्रीतोकेर दस्तावेज देश्रोयार व्यवस्था		१३६-१३८
५१—गणेश	आपीलाएट	
विनसिया	रषाडएट	
देवरके सॉगा करार व्यवस्था		१३८-१४१
५२—गणेश	आपीलाएट	
मुशम्मात वेलसिया	रषाडएट	
सॉगा करा स्त्रोर श्रोयारीसैर व्यवस्था		१४१-१४३

- ५३—सरकार मुद्दई
श्रीमरायोराय शतिर श्रीयारिष श्री दण्डधारिचौवे श्री भाम
मुर्दायालेहेम । अनुमरणेर व्यवस्था १४३-१४५
- ५४—कालीप्रशादराय सायेल
अप्राप्तव्यवहारेर घन जिम्वार व्यवस्था श्री उत्तराधिकारि
व्यवस्था १४५-१४७
- ५५—रामप्रशादवन्दोपाध्याय श्रीपीलाएट
आपन अप्राप्तव्यवहारा कन्या अन्नपूर्णदेव्यार पत्न हइते श्रीमति देव्या
श्री गयरह रणाडएटान
मुवर्णदेव्या श्रीजरदार
पितृघने दुइ कन्यार अधिकार हइया एक कन्या मरिले ऐ घने ऐ
कन्यार पुत्र श्री ऐ कन्यार भग्नि, इहार मध्ये काहार अधिकार—
इहार व्यवस्था १४७ १५१
इ० सन १८२८ साल
- ५६—देविदयाल प्रभृति श्रीपीलाएटान
हरहोरसिंह रणाडएट
राश वसिवार व्यवस्था १५१-१५३
- ५७—अयशमगिर वनामे मायागोर श्री देविगोर
गुरर त्यक्त घन पाइया आपन चेलार असम्मतिते हस्तान्तर करे,
ताहार व्यवस्था १५४-१५६
- ५८—सपत्नी श्री ताहार कन्या श्री ताहार पुत्र याकिते स्वामीर विना
अनुमतिते पुष्यपुत्र करिते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था १५७
- ५९—नफरमित्र श्री राजोवमित्र श्रीपीलाएटान
रामकुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति रणाडएटान
स्वामीर त्यक्त घन पाइया तत्वरे आपन दीहित्रके देवा लिखिया
दिया परे बिक्री करे, ताहार व्यवस्था १५८-१६२

- ६०—मुसम्मात शानकोडर औ जयाकोडर आपीलाएटान
 दुःखबहनसिद्ध औ दोवदत्त रणाडएटान
 कन्या पितृघनाधिकारिणी इहया पुनवधूके यदि ऐ धनेर हेवा करणेर
 समता ना राखे, तवे ऐ धनेर स्वत्वाधिकारी के इहवेक, ताहार
 व्यवस्था १६२-१६६
- ६१—कोनो गृहस्थकन्यार मूल्य ना लइया कोनो लोकेर नफरेर मङ्गे
 विवाह देय, औ ऐ कन्यार सन्तान ऐ दातेर मनोयेर दाणदाखो
 इहवेक कि ना, ताहार व्यवस्था १६६-१६८
- ६२—अप्राप्तव्यवहार राजा शशीभूयणदेवरायेर पत्ने-अग्नि कमलाकान्त-
 चक्रवर्ति आपीलाएट
 गुणगोविन्दचौधुरि रणाडएट
 मातार खोरपोतेर जमीर विकरेर व्यवस्था १६८-१७१
- ६३—रत्नसिंह सायेल
 कोनो छो स्वामीर धने उत्तराधिकारिणी इहया कन्या औ दौहित्र
 औ स्वामीर भ्रातृपुत्र राखिया मरे, इहार मध्ये के उत्तराधिकारि
 इहवेक, ताहार व्यवस्था १७२-१७४
- ६४—गङ्गाधरवाचस्पति सायेल
 एजमालि जमिदारि मध्ये दुइ भाइ बन्धक राखे, ताहार मध्ये आर
 दुइ भाइर अनुमति लावन आविसयक राखे कि ना, ताहार व्यवस्था
 १७५-१७६
- ६५—जयसामधामि स्वयं औ मृत बखोविधामिर स्त्री दिपुधामिनीर अप्राप्त-
 व्यवहार पुत्र रामचन्द्रधामिर पत्ने अलि प्रकारे आपीलाएट
 मुशनधामि रणाडएट
 स्वामीर बिना अनुमतिवे पुष्यपुत्र करिते पारे कि ना, औ ताहाके
 वृत्ति हेवा करिते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था १७७-१८०
- ६६—राजा गिरीशचन्द्र राय आपीलाएट
 मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण राजकोडर
 नरहरिचन्द्रदेवराय प्रभृतिर उछि

राजा उमेशचन्द्रराय

रघाडरट

अविभाज्य राज्येर प्रतिनिधि ये मसेहेर, ताहा पुत्र-पौत्रादि क्रमे
हअनेर व्यवस्था १८०-१८४

६७—अयमण्डिदेव्या प्रभृति

आपीलायटान

फकिरचन्द्रचक्रवर्ति

रघाडरट

देवर्षर ओ देवसेवाते माता ओ पत्नी इहार मध्ये के अधिकारिणी,
ताहार व्यवस्था १८४-१८८

६८—मृत बाबु अमवनारायणसिंहेर स्त्री मुशम्मात पुनितकोडर ओ
कन्या मुशम्मात अश्वमेघकोडर सोयल

अविभक्त स्थावरेर पत्नी ओ कन्या ओ सपिएडेर सहित् उच्चरा-
धिकारिर व्यवस्था १८८-१९२

६९—अविभक्त स्थावरेर निबांण विक्रय कराते इकस्वगाशरेर दाविर
व्यवस्था १९२-१९३

इ० १८२९ साल

७०—राजचन्द्रराय

सायेल

देवधरेर उपस्वर्च विकोर व्यवस्था

१९३-१९६

७१—बाबु गङ्गाप्रसादनारायण

आपीलायट

बाबु लक्ष्मीनारायण

रघाडरट

स्त्रीकृत व्यवहारेर अशिंदेर व्यवस्था

१९६-१९९

७२—मुशम्मात दुलालदेह ओ सोनोसिंह

आपीलायटान

क्षेमाजितराय ओ कोर्चिराय

रघाडरटान

पतिर विभक्त वस्तुते पत्नीर दानेर क्षमता आछे कि ना ओ अवि-
भक्त वस्तुते पत्नीर हस्त्व हय कि ना, ताहार व्यवस्था १९९-२०२

७३—गोवर्द्धनलाल

आपीलायट

मोहनलाल ओ मृत मोहनलालेर उच्चधिकारि गङ्गाप्रसाद
रघाडरटान

यवत करिवार ओ यहू पुत्र छये एक पुत्रके दानेर व्यवस्था
२०२-२०६

- ७४—इलधरमुक्तोपाध्याय
अन्नपूर्णादेव्या प्रभृति
स्त्रीलोकेर हेवार व्यवस्था
आपोलाष्ट
रप्पाडयदान
२०६-२०६
- ७५--आकवरराय प्रभृति मफलेठ आनीलाष्टान
चदुनाथसिंह श्रो सादेवसिंह प्रभृति रप्पाडयदान
अप्राप्तव्यवहारेर अंग विक्रयेर व्यवस्था २०६-२१२
- ७६—जयशमधामि स्वयं उच्छि प्रकारे मृत बलोरिधामिर स्त्री दिपु-
धामिनीर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्रधामिर पत्ने आपोलाष्ट
मुश्नधामि रप्पाडयष्ट
पतिर अनुमति व्यतिरेके दत्तक करिते पारे ना, ताहार व्यवस्था
२१२-२१६
- ७७—शिञ्जोवकशमिध वनांमे देवोप्रसादपांडे प्रभृति
मालाणेर दौहित्र पुष्यपुत्र करिवार व्यवस्था २१७-२१६
- ७८--आनन्दनाथराय अप्राप्तव्यवहारेर अश्लिगण भवाणोप्रसादनौधुरि
श्रो विश्वनाथचकदार आपोलाष्ट
राणी जगदम्बा रप्पाडयष्ट २१६-२२१
- ७९—देवर्त्तर जमिदारि विक्रयेर व्यवस्था २२१-२२३
- ८०— " " " " २२३-२२४
- ८१— " " " " २२४-२२६
- ८२—कन्या पितृ-पत्ने अधिकांश हदवा आपन नावालक पुत्रे मरण
पोषणादि कारण पितृवस्तु विक्रय करिते पारे कि ना, श्रो निवा श्रो
माता थाकिते अन्य व्यक्ति अश्लि दइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था
२२६-२२८
- ८३—कृष्णलोचन प्रभृति आपोलाष्टान
तारामणिदास्या प्रभृति रप्पाडयदान
नावालक पुत्रे मृतमातुल दइते प्राप्त रपावर वस्तु लुप आनार
कम नावालकेर माता विक्रय करे, ताहार व्यवस्था २२६-२३४

- ८४—बदनचन्द्रसिंह ओ अम्रासव्यवहार रामनारायणघोषेर पिता जीवन-
 कृष्णघोष आपिलाएटान
 राधानाथसिंह रणाडएट
 उत्तराधिकारिंर व्यवस्था २३४-२३८
- ८५—पुत्रवधूकृत स्वसुरेर स्थावर वस्तु विक्रयेर व्यवस्था २३८-२३९
- ८६—गङ्गागोविन्दसेन फैरादी
 रामलोचनसाहा आशामी
 पुत्र सत्ये ऐ पुत्रेर स्त्रीके दान करे, ताहार व्यवस्था २४०-२४६
- ८७—नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्रगोस्वामीदिगर फैरादी
 वैष्णवानन्दगोस्वामीदिगर आशामी
 गोस्वामीदिगेर भायक महलेर व्यवस्था २४६-२४९
- ८८—प्रासव्यवहार भ्राता अप्रासव्यवहार भ्रातार अंश सहित विक्रय करेण
 ताहार व्यवस्था २५०-२५१
- ८९—विक्रय करिया दखल दिया पुनवारं चेदखल करे ताहार व्यवस्था
 २५१-२५३
- ९०—सरति हेवार व्यवस्था २५४-२५५
- ९१—विवादकाले कन्याके कोन स्थावर वस्तु देय, ताहार व्यवस्था
 २५५-२५७

इं० १८३० साल

- ९२—गोपालचन्द्र प्रभृति आपिलाएटान
 वासु कोंडरसिंह रणाडएट
 दानेर व्यवस्था २५७-२६१
- ९३—अप्रासव्यवहार हरनाथसिंहेर माता मुसम्मात स्वदो विवि ओ
 द्यस्त नेत्रामदिनेर माता मुसम्मात करिमन ओ अप्रासव्यवहार
 अलोचरणेर माता मुसम्मांत पत्न ओ मुसम्मात यादासु ओ मुसम्मात
 उदासी सापेलगणा
 उत्तराधिकारिंर ओ खोरजेदेर व्यवस्था २६१-२६५

- ६४—वाधु माघोसहाय ओ वेनिसहाय अमातव्यवहारगणेश मोकार
 वाधु रामचरखलाल आभिलाष्ट
 मोशम्मात वदामो प्रभृति रघाडयटान
 पत्न्यनुमति व्यतिरेके दत्तक करा ओ पतिर वस्तु हेवा करणेश
 व्यवस्था। २६५-२७०
- ६५—कन्दर्पसिंह मोफलेरा आभिलाष्ट
 मृत राजा मोहनलालखॉर स्त्रीगण राणी मुगन्धलता ओ राणी
 वङ्गलता प्रभृति रघाडयटान
 ओयारिणेश व्यवस्था २७०-२७६
- ६६—विष्णुराम मुद्दद पापत
 धीरचन्द्रवडुया जमिदार परगणे घूमर्मा मुद्दाआले
 ओ गयरह
 उत्तराधिकारि व्यवस्था २७६-२७८
- ६७—परामानिकि लभ्येर व्यवस्था २७८-२८०
- ६८—व्याधिग्रस्येर ओयारिणेश व्यवस्था २८०-२८१
- ६९—कालीप्रसादरायपोषाल आभिलाष्ट
 दुर्गापसाद रघाडयट
 व्याधिग्रस्येर ओयारिणेश व्यवस्था २८१-२८४
- १००—मुशम्मात चिन्नादासी सायेला
 पुत्र याकिते पुत्रयधूके हेवा करे, ताहार व्यवस्था २८४-२९१
- १०१—*वितार जीवहराय पैतृक अथवा पैतामद सभक्तिर विभावन पुत्र
 करिते पारे कि ना, एहार व्यवस्था २९१-२९५
- १०२—कोम्भानि वाडादुर, अर्थात राजा, ओयारिणेश हइये पारे कि ना,
 ताहार व्यवस्था २९५-२९८
- १०३—स्त्रीधने हेवार व्यवस्था २९८-३००

इं० १८११ साल

- १०४—काशीनाथदत्त मोतकार स्त्री कल्याणमयी ओ गयरह आपीलाएट
चन्द्रमाला मोतकार स्वामी जयचन्द्रघोष रघ्नाडएटान
भविष्यत् पितृदौहित्रे उत्तराधिकारि व्यवस्था ३००-३०६
- १०५—श्रीउमल्लुकिंइह आपीलाएट
रामप्रकाशकिंइह रघ्नाडएट
हेवार व्यवस्था ३०७-३१३
- १०६—राजा गोविन्दनाथराय आपीलाएट
गोलालचन्द्र ओरके लालकावालु रघ्नाडएट
दत्तकपुत्रे जेहनशास्त्रे व्यवस्था ३१३-३२२
- १०७—कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ गयरह चापेल
भगिनीर ओयारिपेर व्यवस्था ३२२-३२५
- १०८—आनन्दमयी देवी चापेला
भगिनीर उत्तराधिकारि व्यवस्था ३२५-३२७
- १०९—मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री कल्याणमयी प्रभृति आपीलाएटान
चन्द्रमालार पति जयचन्द्रघोष रघ्नाडएट
भविष्यत् पितृदौहित्रे उत्तराधिकारि व्यवस्था ३२८-३३१
- ११०—दलमर्दनसाहि आपीलाएट
राजा पृथ्विरतिसाहि वाहार मृत्युपर लक्ष्मणाशादुरेर अलि ओ
माता राजेश्वरकोटर ओ मोराम्मात मदनकोटर रघ्नाडएटान
दत्तकेर व्यवस्था ३३१-३३६
- १११—बदनचन्द्रराजदार ओ गयरह वनामे रामचर्चिमुलोपाध्याय चापेल
अपोरा स्त्रीर पत्निकेशित् दानेर व्यवस्था ३३६-३४१
- ११२—भरगार्थ प्राप्तितृधना कन्या भरखेर पर ऐ धन के पाय, हहार
व्यवस्था ३४२-३४३
- ११३—कन्या ओ धनि यर्चमाने मृत कन्यार पुत्र, हहार मध्ये के ऐ धन
पाय हहार व्यवस्था ३४३-३४४

- ११४—पुत्र श्रो मृतपितृक पौत्र, इहार विभागेर व्यवस्था ३४५-३४६
- ११५—मथुरराय श्रो लक्ष्मणराय
राजु पाइक
सति हेवार व्यवस्था ३४६ ३४८
- ११६—स्वामीर श्राद्धेर जन्ये देवतेवा सहित देवर्त्तर देशोयार व्यवस्था ३४९-३५०
- ११७—मृत राधाकृष्ण उकिलेर उत्तराधिकारि व्यवस्था ३५१
- ११८—उत्तराधिकारि अनुमतिते अवीरास्त्रोकृत विक्रयेर व्यवस्था ३५१-३५३
- ११९—कनज ब्राह्मण वाङ्मालाय यास करे, ताहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ३५३-३५६
- १२०—रामप्रसादचक्रवर्त्ति
फेनका श्रो पाचि वेओया
दास-दासीर व्यवस्था ३५६ ३५८
- १२१—कृतप्रायश्चित्तेर पत्नी उत्तराधिकारिणी हइते पारे कि ना, इहार व्यवस्था ३५८-३५९
- १२२—कट्टेश्वरीर मर्द्दना, ओयारीसेर व्यवस्था ३५९-३६१
- १२३—विधवा स्त्रीलोक आपन स्वामीर पैतृकधने अधिकारिणी हय कि ना, ताहार व्यवस्था ३६२
- १२४—उत्तराधिकारि अनुमतिक्रमे दानविद्विदर व्यवस्था ३६३-३६४
- १२५—उपपत्नीर गर्भजातपुत्रके दान करे, इहार व्यवस्था ३६४ ३६८
- १२६—पुत्रकर्तृकविभागे मालार भाग हय कि ना, श्रो अप्राप्ताया माता मरिले ऐ मातृयोग्याशे कन्यार अधिकार किन्वा पुत्रेर अधिकार एइ प्रकार सओयालेर व्यवस्था । काशीर परिद्वतेरा ये लेले, ताहार उपर व्यवस्था ३६९-३७६
- इं० १८३२ साल—
- १२७—भैरविदासि
उत्तराधिकारि व्यवस्था ३७६-३७८
- वनामे
नवकृष्णावसु
३७६-३७८

- १२८--बदनचन्द्रसिंह श्री महेशचन्द्रसिंह वनामे मथुरामोहनपालित
अप्राप्तव्यवहार भ्रातार अश विक्रयेर व्यवस्था ३८८-३९२
- १२९--विश्वेश्वरिदेवी वनामे ताराचन्द्रचट्टोपाध्याय
उत्तराधिकारिर व्यवस्था ३९२-३९४
- १३०--दुर्गादेव
कुनियादसिंह
शोलानामार व्यवस्था
इ० सन १८३२ साल
श्रीपीलाएट
रणाडएट
३९५-३९७
- १३१--भैरवीदासी वनामे नयकृष्णवसु
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ३९७-४००
- १३२--भोलानाथराव
फैरादी
मृत रामस्मरणरायेर स्त्री श्रीमति सावित्रा श्री गोपालकृष्ण श्री
मदनमोहनसिंह श्री मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री श्रीसामीयान
सावित्रार १४११ क्रान्ति हिस्सा जमिदारिर कश्चोवाला असिद्ध
करिया ताहा दखल पाओयार मकहमार व्यवस्था ४००-४०३
- १३३--भोलानाथराव
फैरादी
सावित्रा श्री गोपालकृष्णसिंह श्री गयरह श्रीसामीयान
मातार दोष प्रकाश करिले पितृवस्तु पाओयार निषेध कि ना,
इहार व्यवस्था ४०३-४०५
- १३४--मृत रामस्मरणरायेर पुष्यपुत्र भोलानाथराव
फैरादी
रे मृत वरकिर स्त्री सावित्रा श्री गोपालकृष्णसिंह
श्री गयरह श्रीसामीयान
पुत्रोक्त व्यवस्था पुनर्निरीक्षण प्रकार तथा पुष्यपुत्रे उत्तराधिकार
व्यवस्था ४०५-४०७
- १३५--उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४०७-४०९

इ० सन १८३२ साल

- १३६—वागचे ब्राह्मण गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे कि ना ?
आर यदि स्यात् सगुण करे तथे ताहार धर्मे हाश्न हइते पारे
कि ना, इहार व्यवस्था ४०६
- १३७—लागान विक्रय सिद्धिर व्यवस्था ४०६-४११
- १३८—उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४११-४१५
- १३९—महाराजा गोविन्दनाथराय आपीलाएट
गुलालचन्द्र ओरफे नानकाबाबु प्रभृति रेष्वाडसटान
पति मरणानन्तर पोष्यपुत्र ग्रहणाधिकारेर गौतमप्रनोथ जैन
शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ४१५-४२०
- १४०—राधाचरशुक्लिक छापल
पतिघने छोर उत्तराधिकार विषयक व्यवस्था ४२०-४२२
- १४१—आनन्दमोहनघोष आपीलाएट
मोशम्मात हरिप्रिया रेष्वाडसट
दानपत्रानुसारिणी धनविभागव्यवस्था ४२२-४२६
- १४२—पद्मलालसिंह ओगयरह आपीलाएटान्
शिवरामसिंह रेष्वाडेएट
दान ओ हेवार अधिकार सम्बन्धि व्यवस्था ४२६-४३०
- १४३—मृतदुर्गादासेर स्त्री मसम्मात प्रहमपरीदेव्या छापला
दीहिनेर घनाधिकार विषयक व्यवस्था ४३०-४३३
- १४४—अबीरा छोर दान सिद्ध्यसिद्धि निर्णय व्यवस्था ४३३-४३५
- १४५—कोन उदासीन ब्राह्मण उदासीन वैरागी शिष्यगण वर्तमान याकिते
ओ यदि आपन समुदाय वस्तु स्त्रीपुत्रवान् संगरी अत्रालण उन्पूत
जाति व्यक्ति उदासीनेर शिष्य हइले, ताहाके दान करे-एइ प्रकार
दान शास्त्रानुसारे सिद्ध हय कि ना, ताहार व्यवस्था ४३५-४३८
- १४६—पद्मलालसिंह ओ गन्धर्वलाल आपीलाएट
शिवरामसिंह रेष्वाडसट

- उत्तराधिकारि सूत्रे प्राप्त धन रत्नो हस्तान्तर करिते पारे कि ना इहार
व्यवस्था ४३८-४४०
- १४७—दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह आपीलायान
राउत गिरिधरसिंह ओ धनश्यामसिंह ओ वन्दरसिंह रेष्वाडयान
पितार जीवदशाय पितामहेर स्थावर वस्तु अरु करिया लक्ष्मिनेर
हकदार पुत्र इहते पारे कि ना, इहार व्यवस्था ४४०-४४४
- १४८—महाराजा गोविन्दचन्द्रराय आपीलायट
महाराणी कृष्णमण्डिदेव्या रेष्वाडयट
दत्तक पुत्र ग्रहण विषयक व्यवस्था ४४४-४४७
- १४९—बालिदास गङ्गोपाध्याय दी :
छानि तजविज आः प्रेमचन्द्र चौधारी दी :
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४४७-४५०
- १५०—अनन्तमञ्जरी आपीलायट
फकिरचन्द्रवरवार रेष्वाडयट
वोप्यपुत्र ग्रहण विषयक व्यवस्था ४५०-४५३
- १५१—मोहम्मदात वेनुधामन छापला
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४५३-४५५
- १५२—गोसाभीचन्द्रकविराज आपीलायट
मोहम्मदात बयमण्ण ओ कृष्णमण्ण मोतओफा रेष्वाडयान
दानेर सिद्ध-असिद्ध विषयक तथा उत्तराधिकार विषयक व्यवस्था
४५५-४६०
- १५३—मोहलमाननातोत्र फोन व्यक्ति हिन्दूजातीय फोनो व्यक्तिर स्त्रीके
सुभारवा तादार पतिर अस्तम्भविते मोहलमान धर्म अनिवार
मानस करे अथवा हिन्दूजातीय फोनो व्यक्तिर स्त्री आपनार जातीय
धर्म त्याग करिया मोहलमानेर धर्म स्वीकार इन्दा करे तये पतिर
नालिख मते हाकिम व्यक्तिके मोहम्मदात मन्त्रुय ओ मोहलमान
व्यक्तिदिगेर प्रार्थना इहते वारण करिया यथा सुक्ति सिद्ध कि

ना ? यदि ऐ स्त्री मोक्षलमान हृदया थाके, तबे वाहार पतिर
जातिर किछु हानि ह्य कि ना, एह विषयेर व्यवस्था ४६०-४६१
१५४--दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह
शउत गिरधरसिंह ओ मयरह
उत्तराधिकारि र व्यवस्था
आपोलाखटान्
रखाडखटान्
४६२-४६४

१५५—सन् १८३३ साल इङ्गरेजी—

आनन्दकिशोरगुप्त वनाम श्रीमतीचेमङ्करीदासी
भानुस्त्री वर्तमाने भानुकन्यारदिगेर आनन्दकिशोरगुप्तेर स्थाने
ग्रामाच्छादन पाइवार चमता गखे कि ना, इत्यादिर
व्यवस्था ॥ ४६५-४६७

१५६—गोलकमण्डिदासी

फैरादि

सा० वेहाला प० वालिया
पीताम्बरहालदार ओ सूर्यवेओया ओ गैरह—आषामी—
धनि व्यक्तिर पौत्रि र स्वामी एवं आसनार पक्षेर कन्या आछे—
इहार मध्ये उत्तराधिकारि के इहवेक, ताहार
व्यवस्था ॥ ४६८-४७०

१५७—मोक्षमार्त लक्ष्मीप्रिया

आपिलाखट

भैरवचन्द्रनीधुरि ओ बयचन्द्रनीधुरि रेखाडखटान
मृतः कुण्डचन्द्रेर आदाधिकारि एवं घनाधिकारि पितुदौहित्र
इहवेक, कि वैमात्रेय आतार पुत्र इहवेक, इत्यादिर
व्यवस्था ॥ ४७१-४७६

१५८—सामरामदास

वनाम वेहालचन्द्र मोतओकार स्त्री राधा-

चरण नावालगेर माता सुन्दरीदासी मोफलेय—
यद्यपि दुइ भ्राता, एक मातव्यवहार एक अर्मातव्यवहार,

एकान्ने याकिया ज्येष्ठ भ्राता दोकान करे । ए प्रकारे कनिष्ठ
भ्राता ऐ दोकानेर किछु हिस्सार हकदार इहते पारे कि ना,
ताहार व्यवस्था ॥ ४७६-४८०

१५६—गोशाम्बिचन्द्रकविराज आपिलायट
मोक्षर्मात जयमणि जीवतमान ओ कृष्णमणि मोतओपात
रेष्वाडयटान
कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेय
करे । दुइ मतेह डिगिरि हय । ततपरे दोशराके देवा करिया
मृत्यु हय । एमत देवा सिद्ध इहते पारे कि ना, ताहार
व्यवस्था ॥ ४८०-४८२

१६०—लक्ष्मीप्रिया आपिलायट
भीरवचन्द्रचौपुरि ओ गौरह— रेष्वाडयटान
उत्तयधिकारिर एवं श्वेत कुञ्ज याकिते उत्तयधिकारित्व इहते पारे
कि ना, इत्यादिर व्यवस्था ॥ ४८२-४८६

१६१—दुलारसिंह ओ गौरह आपिलायटान
राण्यो पद्मावती ओ गौरह रेष्वाडयटान
रत्नलालेर पुत्रावधि प्रवितामह पुत्र अर्थात् गरिवदासेर पुत्र
वर्ष्यन्त ना धारिजे रत्नलालेर प्रवितामह गरिवदासेर पीत्र
दुलारसिंह मन्वितेर उत्तयधिकारिर व्यवस्था ॥ ४८६-४९०

१६२—मठर्मात लक्ष्मीप्रिया आपिलायट
भीरवचन्द्रचौपुरि ओ गौरह रेष्वाडयटान
उत्तयधिकारिर व्यवस्था ॥ ४९१-४९३

१६३—गोपालस्यहायेर अलि नश्रोआवराय आपिलाएट
 मोशम्माति भगवतीकोडर ओ गैरह रेष्पाडएटान
 कलियुगे निःसन्तान व्यक्ति आपन सहोदर भ्रातर कन्याके
 सन्तानस्वे शश्रोण ययार्थ ह्य कि ना—इत्यादि पाँच सश्रोयालेर
 जयाव व्यवस्था ॥ ४९३-४९६

१६४—कोन अवीरा छी पितामातार स्थावर अस्थावर पाइया
 भोगवाना थाकिया मृत्यु ह्य—ताहार उत्तराधिकारि
 व्यवस्था ॥ ४९६-५००

१६५—वैद्यनायेर उत्तराधिकारि पुत्रसम्भाविता कन्या इहवेक कि पितृदौ-
 द्विज इहवेक—इहार व्यवस्था ॥ ५०१-५०३

१६६—कोन व्यक्ति पुत्रसम्भाविता भनीके साधारण स्थावरास्थावर
 वस्तु दान करे, ताहा विद्व ह्य कि ना—इत्यादिर
 व्यवस्था ॥ ५०३-५०५

१६७—कोन व्यक्ति दुइ पुत्र : ज्येष्ठ पुत्र एक कन्या राखिया पितृ
 वर्त्तमाने मृत्यु ह्य; कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र
 राखिया मृत्यु ह्य; इहार के घनाधिकारि इहवेक—ताहार
 व्यवस्था ॥ ५०५-५०७

१६८—राजाहरकुमारवत्त दुइ विवाहितार छीर गर्भजात दुइ पुत्र :
 ज्येष्ठ पुत्र राजातेजप्रताप समुदय अवएटक जमिदारि कुलाचार
 मते वैमाश्रेय भ्राता याकिते आपन तीनि छीर मध्ये महाराथी
 तिलोत्तमाके दान करे, से दान विद्व हइते पारे कि ना—ताहार
 व्यवस्था ॥ ५०७-५१०

१६६—कृष्णकान्तपोद्धार

छायेल

देवसेवार खरच ओ सेवाहतेर खरच मिनाह वादे वाकि
उपस्वत्व डिगरिर टाका, बाहा सेवाहतेर नामे हइयाछे, ताहा
आदाय हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१०-५१२

१७०—कालीकिशोररायचौधुरि

छायेल

दानपत्रानुसारे बगदीश्वरी अधिकारिणी हइया ये श्रृण्य करिया
मरे, सइ श्रृण्य परिशोधेर निमित्ते ताहार पुत्रेर स्वत्वास्पदीभूत
अंश बिक्रय हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१२-५१५

१७१—मोहम्मति भवानीदेव्या

छायेला

मोहम्मति ब्रह्ममयी आपन स्वामीके ओछीकरणेर ज्ञमता राखे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१५-५१६

१७२—सन १८३४ साल

लोकनाथदत्त ओ बगनाथदत्त—धनाम कुविरभारडारि
दातेर विषय सदर आमिन आला बाहा करियाछेन ताहा यथार्थ
बटे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१६-५१८

१७३—अनुदित्य व्यक्तिर मृत्यु अवधारित कोन पर्यन्त गणा बाह्येक—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५१८-५२३

१७४—रामदासशर्मा मफलेछ

मुद्दाह

यथाचरयशर्मा ओ गयरह

मुद्दाआलेहे

नान्दिमुल्ल भाद स्वामि ओ खीर पत्तेना हइया याके—ए प्रकार
विवाह सत्य हइने पारे कि ना—इत्यादि सप्तम सप्तोयातेर
व्यवस्था ॥ ५२३-५२८

१७५—रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र , छायेलान्
 पैतृक कर्जेंर डिगरिरे टाका पितार मृत्युर पर पुत्रेरदिगेर अंश
 निर्णय व्यतिरेक पितार त्यज्य वस्तु हइते उमुल हइवेक कि ना—
 ताहार व्यवस्था ॥ ५२८-५३०

१७६—राजापटनीमन ओ रायवनशीधन आपिलाएयान
 राय मनोहरलाल ओ गैरह रेधाडेयान
 वारानशेर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीमकोट ओ अन्य २
 पशिहतेर व्यवस्था श्रीपुत अलियम वेराडीन साहेवेर हुजुरे दाखिल
 हइयाखिल, सेइसकज व्यवस्था परस्पर विरोध आछे कि ना—
 ताहार जवाब व्यवस्था ॥ ५३०-५३५

१७७—कन्या ओ दौहित्र याकिते भ्रातृपुत्रके रोगावस्थाय दान करे, से
 दान सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५३६-५३८

१७८—रामगोपालदेओ वनाम गकुलचन्द्र तइविलदार ओ गैरह
 दासत्व विषयेर जेला मयमनसिंहेर सदर आमीनेर फयसला
 सकल बाङ्गला देश चलित शास्त्र मते यथार्थ कि अयथार्थ—
 ताहार जवाब व्यवस्था ॥ ५३८-५४०

१७९—राधानाथचौधुरि आपिलाएट
 भीमतीकृष्णमनीदास्या कृष्णनाथ मोतओफार कन्या ओ परान-
 चन्द्रनेउगी ओ राधाचन्द्रनेउगी नावालगादिगेर
 माता रेधाडेयट
 पितृदौहित्र याकिते पैतृक विषय पितृ-सहोदरके देवा करे, से
 देवा सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५४०-५४२

१८०—लक्ष्मीकान्तकालिया

आपिलायट

रघुनाथरायेर मृत्यु ओ बानाराओ लक्ष्मीराओ गैरह ॥

रेषाडयटान

अवष्टक विषयेर तमलिक ओ देवा वारानश देशेर चलित
शास्त्र मते सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार जवाव व्यवस्था ॥

५५३-५५२

१८१—रामगोपालदेशो वनाम गोकुलचन्द्र तहविलदार ओ गैरह

दास खरिद करिले ताहार पुत्रपौत्रादिर दासत्व सिद्ध हओन विषये
वे फयसला इइयाछे, ताहा शास्त्र सम्मत यथार्थ बटे कि ना—

ताहार जवाव व्यवस्था ॥

५५२-५५४

१८२—मह्यर्मात विश्वेश्वरीदेव्या मफलद्धा

आपिलायट

ताराचौदचहोपाध्याय ओ गैरह

रेषाडयटान

उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥

५५४-५५८

१८३—इनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय मुद्दहयान

मृत चण्डीदत्तेर वनिता मह्यर्मात छोलछन श्रीधुराण ओ
परमेश्वरिदत्त मुद्दाआलेहे

चण्डीदत्त माझणजाति आपन भगीर सन्तान परमेश्वरीदत्तके
कर्त्ता पुत्र करियाछे, ताहा सिद्ध बटे कि ना—इत्यादिर
व्यवस्था ॥

५५८-५६३

१८४—कोन व्यक्तिर दुह सन्तान । ज्येष्ठ सन्तान पितु वर्त्तमाने एकाग्र-
वर्त्तिने कोन रथावर वस्तु आपन क्षमताय ठपारज्जेन करे । परे
रितार मृत्युर पर ऐ वस्तु अष्ट कनिष्ठ भ्राता क्लिष्ट पाइते पारे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

५६३-५६४

१८५—शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहण कालीन कि कि कर्म कर्त्तव्य उचित—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६४-५६६

१८६—चेतराम तेओरि सावेक मुहाइ
आशानाय तेओरि सावेक मुहाआलोहे
सापियडेर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५६६-५७४

१८७—काशीचन्द्रमुस्ताफि
छायेल
अप्राप्त-व्यवहारा अर्धीरा विधवा कन्या शासुडी शत्रुतार निमित्ते
स्वामीर वाटोते जाइते सन्मत ना हय, तवे शास्त्र सन्मत
साओया उचित वटे कि ना—ताहार जनाव व्यवस्था ॥
५७४-५७७

१८८—आर केह ना थाके, आपन भग्नीर पुत्रवती कन्या उत्तराधिकारिणी
हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५७७-५७८

१८९—प्रथमा स्त्रीर सन्तान ना हओयाते सन्तान प्रार्थनाय अन्य स्त्रीके
विवाह करिया आपन भग्नीर पुत्रदिगेके समुदय वस्तु दान करे,
पुनराय द्वितीया स्त्रीर सन्तान हय, एमत दान असिद्ध हइते
पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५७८

१९०—कोन व्यक्ति टाका कर्ज रूपे किम्वा अन्य प्रकारे घारे, सुदेर
विषय निर्दार्प्य ना हइया थाके, तवे कि प्रकारे, कि परिमान ऐ
टाकार सुद मकर कर जाइवेक—इत्यादिर व्यवस्था ॥
५७९-५८१

१९१—सन १८३५ साल इ०
राधाचरणवर्षिक
लक्ष्मीसहार ओ गयरह
भातृपुत्रेर दौहित्रेर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५८१-५८३

१९२—वल्लविकान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी श्रो नवकान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुषु व्यक्ति के कहिले तुम पोष्यपुत्र ग्रहण करह ।
ऐ व्यक्ति हुँ वलि उत्तर दिलेक । एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये
परिद्धत लिखियाछेन, ताहा वटे, कि ना—ताहार ज्वाव
व्यवस्था ॥ ५८४-५८८

१९३—एक व्यक्ति मनीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया
निःसन्तान मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥
५८८-५९१

१९४—बनाइलालमफलेछु आपिलाएट
गोरा ओ दुषु ओ गेराह रेभाइएटान
कोन व्यक्ति स्त्री दुह पुत्रवधू ओ पतिर भ्रातृपुत्रके राखिया
मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारि
व्यवस्था ॥ ५९२-५९३

१९५—विमलामयी देव्या आपिलाएट
भीमतीअजपूर्णा ओ दिनाबपुरेर कलेकटर साहेव रेभाइएटान
शम्भुचन्द्रेर मोलाहेगय ताहार तीन पुत्रेर अधिकार हइया दुह
पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुह पुत्रेर मोलाहेगार अथ शम्भुचन्द्रेर पुत्र
पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था ॥
५९३-५९६

१९६—मृत हेमबलसिहेर स्त्री चौराणी वादी
मृत हयालसिहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय क्षत्रिय पञ्चम पुरुष पर्यन्त एतदेशे वास करिया पुत्र
ओ अनीय कन्या ओ द्वितीया स्त्री ओ ताहार अदत्ता कन्या
बर्धमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय—इहार

उत्तराधिकारि अदत्ता भग्नि इद्वेक, कि पितृव्यपुत्र इद्वेक-
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६६-५०३

१९७—विलासमण्डिदेव्या केलेमदार, मधुरानाथभिद मोताञ्जर
कोन-विधवा स्त्रीर तीनि पुत्रेर मध्ये दुद पुत्रेर मृत्यु इय । ताहार
उत्तराधिकारिर दुद व्यवस्था ये पण्डितेर दियाछेन, ताहार
मध्ये कोन पण्डितेर व्यवस्था उत्प-ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥
६०३-६०७

१९८—वानप्रस्थ व्यक्तिर उत्तराधिकारिर सखारामराज्ञी ये व्यवस्था दिया
छेन ताहा धर्मशास्त्र सम्मत वटे कि ना-ताहार व्यवस्था ॥
६०७-६०९

१९९—रामनाथराय श्री गयरह अपिलायटगन
मधुरानाथ थोरफे आक्रान्तराय रेणाडस्ट
सपिण्डाधिकारि विपवेर लक्ष्मीनारायणपण्डितेर व्यवस्था
यथार्थ वटे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ६०९-६१२

२००—एक जन हुनशीर निमित्ते सदरे दरखास्तेर नकल

६१३

२०१—इतिनारायण इत्यादिर सहित भैरवोदास्यार कि प्रकार अर्थ
निर्णय इय-ताहार व्यवस्था ॥ ६१३-६१८

२०२—अविरा स्त्रीलोक आपन पति योग्यांश स्थावर वस्तु प्राप्तार्थे कोन
एक जन आतिके एकरार लिखिया देय, ताहा प्राश कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६१८-६२१

१९२—बल्लविकान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवमान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुर्षु व्यक्ति के करिले तुमि पोष्यपुत्र ग्रहण करइ ।
ऐ व्यक्ति हुँ बलि उत्तर दिकेक । एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये
परिहृत लिखियाछैन, ताहा बटे, कि ना—ताहार बवाव
व्यवस्था ॥ ५८४-५८८

१९३—एक व्यक्ति भग्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया
निःसन्तान मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥
५८८-५९१

१९४—फनाइलालमफलेछु आपिलाएट
गौरा ओ दुखु ओ गैरह रेष्वाडगटान
कोन व्यक्ति स्त्री दुइ पुत्रबधू ओ पतिर आतपुत्रके राखिया
मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारि
व्यवस्था ॥ ५९२-५९३

१९५—विमलामयी देव्या आपिलाएट
श्रीमतीअन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर कलेकटर साहेब रेष्वाडगटान
शम्भुचन्द्रेर मोसाहेराय ताहार तीन पुत्रेर अधिकार इहया दुइ-
पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुइ पुत्रेर मोसाहेरार अथ शम्भुचन्द्रेर पुत्र
पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था ॥
५९३-५९६

१९६—मृत हेमञ्जलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी
मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय छत्रि पञ्चम पुरुष पर्यन्त एतदेशे वास करिया पुत्र
ओ अचौरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री ओ ताहार, अदत्ता कन्या
वर्तमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय—इहार

उत्तराधिकारि अदत्ता भग्नि इहवेक, कि पितृव्यपुत्र इहवेक-
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६६-६०३

१६७—विलासमखिदेव्या केलेमदार, मथुरानाथविह मोताजर
कोन विधवा खीर तीन पुत्रेर मध्ये दुइ पुत्रेर मृत्यु इय । ताहार
उत्तराधिकारिर दुइ व्यवस्था ये परिडतेरा दियाछेन, ताहार
मध्ये कोन परिडतेर व्यवस्था सधे—ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥
६०३-६०७

१६८—वानप्रस्थ व्यक्तिर उत्तराधिकारिर सखारामशास्त्री ये व्यवस्था दिया
छेन ताहा चर्मशास्त्र सम्मत बटे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥
६०७-६०९

१६९—रामनाथराय ओ गयरह
मथुरानाथ ओरफे आकान्तराय
सपिण्डाधिकारि विपयेर लक्ष्मीनारायणपरिडतेर व्यवस्था
यपार्थ बटे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ६०९-६१२

२००—एक जन मुनशीर निमित्ते सदरे दरखास्तेर नकल
६१३

२०१—हरिनारायण इत्यादिर सहित भैरवोदास्यार कि प्रकार अंश
निर्याय इय—ताहार व्यवस्था ॥ ६१३-६१८

२०२—अविध खीलोक आपन पति योग्यांश स्थावर वस्तु प्राप्तार्थे कोन
एक जन जातिके एकरार लिखिया देय, ताहा ग्राह्य कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६१८-६२१

२०३—राजीवलोचन सतपति
वेचानरामराय

आपिलाएट
रेभाडएट

नाबालक पुत्रसत्वे भरण्यार्थं दत्त भूमि विक्रय विषयेर कमला-
कान्तविद्यालङ्कार ये दुइ व्यवस्था दियाछेन, ताहा वल्लदेश ओ
उडिस्यादेशेर चलित शास्त्र मत सिद्ध वटे कि ना-ताहार
व्यवस्था ॥ ६२२-६२६

२०४—मतिलालकल्याणसिंह

आपिलाएट

मबलाल ओ शीताराम ओ गयरह

रेभाडएटान

शुभे वेहारदेशेर चलित शास्त्र मते पिता ओ पितामहेर पैतृक
स्थावर वस्तु पुत्र ओ बिना अनुमतिरे इस्तान्तर करिते पारे कि
ना-इत्यादि चारि सञ्जोयालेर प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥ ६२६-६२९

२०५—भोलानाथदास

आपिलाएट

धीमती सविप्रत ओ गोपालकृष्ण ओ गयरह रेभाडएटान
आपन विमाताके व्यभिचारिणी इत्यादि मिथ्या कहिले से पुत्रेर
वल्लदेश चलित शास्त्र मते प्रायश्चित्त कि प्रकार-इत्यादिर प्रत्युत्तर
व्यवस्था ॥ ६२९-६३१

२०६—रतनाकरविमुह ओ सुरिविमुह

आपिलाएटान

साधुचरणविविगञ्जन ओ गयरह

रेभाडएटान

पूर्व पुरुषेर जमिदारि तीन चारि पुरुष परे कटकेर चलित शास्त्र
मते बघटक इहते पारे कि ना-ताहार व्यवस्था ॥

६३२-६३४

२०७—मयुरादलोह

आपिलाएट

प्राणकृष्ण ओ कृष्णलाल वेहारिलालेर पुत्र रेभाडएटान

पत्नी ओ पुत्रेर पत्नी विद्यमाने आपन दीहिष विहारिलालके
दान विषयेर हीरानन्दमिभ ये व्यवस्था दिवा छेन-इत्यादिर
प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥

६३४-६४१

२०८—रामकृष्णराय

छायेल

नारायणीदेवी ओ जगदीश्वरीदेवीर अंश जीवतमान पर्यन्त-
भोगवान थाकिते विचार कर्त्तारा जयपत्र दियाछेन । ऐ जयपत्र
लिखित ऋण परिशोधेर निमित्ते विक्रय इहते पारे कि ना-
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ६४२-६४६

२०९—वीरेन्द्रनारायणचौधुरी ओ गायडू

आपिलाएटान

श्रीमती सत्यभामादेव्या

रेषाडएट

कोन स्त्री स्वामीर विषये उत्तराधिकारित्व रूपे अधिकारिणी इहया
पञ्चम पुरुषीय छाति सत्वे आपन कन्या ओ नामाताके हेवा
करे-शाखानुसारे सिद्ध घटे कि ना-इत्यादिर व्यवस्था ॥
६४६-६५०

२१०—गुरुप्रसादवसु

आपिलाएट

महेन्द्रनारायणवसु

रेषाडएट

एक व्यक्तिर तीन पुत्रेर मध्ये एक पुत्रेर विवाह समय दानपत्र ऐ
व्यक्तिर पितार नामे लिखित इहलो । ऐ पितार मृत्यु पर ऐ दान-
पत्र लब्ध भूमि तीनि पुत्र समान अंश करिया लइवेक कि ना-
ताहार व्यवस्था ॥ ६५०-६५१

२११—गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतर्फा

वादी

कात्तिकमण्डल देयेनदार

प्रतिवादी

दयाकुमारो ओ मुन्दरकुमारी

ओजोरदार

कोन व्यक्ति स्त्री वर्तमान आसन माताके दान करिया मृत्यु इय
ए प्रकार दान विद्ध घटे कि ना, एवं यशोपवीत इहले दश वारो
वतखरेर एक मात्र पुत्रके दत्तक ग्रहण करिते पारे कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६५१-६५५

२१२—कोन व्यक्ति प्रथमा-स्त्री-जात मृत-पुत्र-वधु एवं द्वितीया स्त्री जात

६५५-६५७

खीर विषय इहते ऐ तारिखीर उत्तराधिकारिपर परिशोध कर
उचित हय कि ना—इहार कैफियतेर व्यवस्था ॥

—श्रीमती तारिखीदेव्यार पुनर्वार ऐ विषयेर जबाब व्यवस्था

—श्रीमती तारिखीदेव्यार ऐ विषयेर कैफियत व्यवस्था ॥ ६८१-६८४

२२६—ऋय आ विक्रय प्रभृति शास्त्रे आशा सकल बाङ्गला ओ उडिस्या
ओ वेशर ओ तैलङ्ग ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार, कि पृथक
पृथक । एवं केता ओ विक्रेतार स्वीकार कराते ऋय-विक्रय सिद्ध
हय कि ना—इत्यादि तीनि सञ्चोपालेरे जबाब व्यवस्था ॥ •

६८४-६८६

२२७—काशीचन्द्र मुस्तोफि

छायेल

अप्राम-व्यवहारा श्रीमतीकमलकुमारी स्वामीर गृहे आपन
शाशुडिपर निकट ना थाकिया ताहार पितार निकट थाकिते पारे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

६८६-६९०

२२८—बगतचन्द्रअधिकारि

छायेल

मालखनातीर ठाकुर-ठाकुराणो बिउर शूद्र सेवकेर वाटीते गमन
करिले पूर्वैर रीत्यनुसारे पुनरागमने देवत्वेर किञ्चु हानि हय कि
ना—ताहार व्यवस्था ॥

६९०-६९२

२२९—मिथिला देशेर चलित शास्त्रानुसारे एवं नदियार चलित शास्त्रा-
नुसारे विभागेर अर्थ कि, एवं साधारण्य कयेक प्रकार—इत्यादि
छय सञ्चोपालेरे प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥

६९२-६९६

२३०—श्रीमतीगार्बतीदासी

डिगविहार

श्रीमतीठाकुराणोदासी ओ रामनाथसुमित्र देनदा(रा)न
कालोप्रसादमिय ओ गैरह

मोबादेमान्

कोन व्यक्ति स्त्री ओ दुह कन्या राखिया मृत्यु हय, परे ऐ स्त्री
दोहिन सत्ते ऐ दोहिनो पिता मूल धनिर पैतृक जमि वन्यक दिया
थाके, तरे ऐ देनार निमित्ते विक्रय इहते पारे कि ना—इत्यादि
व्यवस्था ॥

६९६-६९८

- २३१—राणीबयदुर्गा
राणीकृष्णमनी
कोन अवीरा स्त्री स्वहस्ते विषय उपावर्जन करे । से विषय ऐ
छोर हस्तान्तर करणेर ज्ञमता राखे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥
६६८-७००
- २३२—कोन अवीरा स्त्री पितामहेर सभवा कन्या एवं ऐ कन्यार दत्तक
पुत्र एवं स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातार पौत्र एवं स्वामिर प्रपितामहेर
भ्रातार पुत्रवधू एवं ऐ पुत्रवधूर दत्तक पुत्र वर्त्तमान राखिया
मृत्यु हय । शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर घनाधिकारि के ह्दवेक—
ताहार व्यवस्था ॥ ७००-७०१
- २३३—गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विजयराय ओ गयरह
आपिलायटान,
मोह्यन्मात घनेश्वरी ओ गयरह रेष्वाडयटान
छो उत्तराधिकारिणो हइया सापिएड विद्यमाने हस्तान्तर करिते
पारे कि ना—ऐ विषयेर परिहतेरा ये दुइ व्यवस्था दियाछेन,
त्रिहुत जिलार चलित शास्त्र मते यथार्थ बटे कि ना—ताहार
व्यवस्था ॥ ७०२-७०४
- २३४—रामनाथसिंह
राजलूपसिंह ओ रावेकृष्ण
हक सफा विषयेर व्यवस्था ॥
आपिलायट
रेष्वाडयटान
७०४-७०७
- २३५—कालीकान्तबल
पार्वतीदास्या
यदि कोन व्यक्तिर पितृ अवर्त्तमाने मातार सहित अनैक्य हय,
तवे माता पुत्रेदिगेर समानांश पाइते पारे कि ना—ताहार
व्यवस्था ॥
आपिलायट
रेष्वाडयटान
७०७-७०६
- २३६—शिवनारायणचौपुरि
राधाप्यारीदासी ओ गयरह
राधामोहनमित्र
आपिलायट
रेष्वाडयटान
जेलार मोडाहेम

मधुसूदनदास एह आदालतेर छायेल,
 उत्तराधिकारि अनुमति व्यतिरेक स्वामीर त्वाग्य वस्तु, स्वामीर
 श्रृण याकुक वा ना याकुक, विक्रय करिते पारे कि ना—
 इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७०६-७१४

२३७—झीर पतिर त्यक्त रथावरादि धन दान विषयेर वे व्यवस्था त्रिहुत
 जेलार परिद्वत दियाछैन, मिथिलादेशेर चलित शास्त्रानुसारिणी
 वटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७१४-७१५

मोक्षमति रूकमन छायेला

२३८—द्विस व्यक्तिय शरीर एव विषय रक्षा करथोर सत्व विमाताके इहवेक
 कि पत्नी (के) इहवेक—इहार व्यवस्था ॥ ७१५-७१६

२३९—कोन व्यक्ति पुत्रगणेर बीना अनुमतिरे आपन कन्याके एक
 वागान दान करिया थाये, एमत दान सिद्ध हय कि ना—ताहार
 व्यवस्था ॥ ७१७-७१८

२४०—यदि कोन व्यक्तिय चारि भ्रातार मध्ये एक प्राप्त-व्यवहार इहया
 एकाग्रभुक्त थाकिया पैतृक विषय जमिदार लोक आटक करे,
 ताहा आपन परिभमेर द्वाराय खालास करे, तवे ऐ जमिदर कि
 रूप अथ इहवेक—इत्यादि चारि सद्योयालेर व्यवस्था ॥
 सन १८२७ साल— ७१८-७२१

२४० क-बी नामक द्वितीय भ्राता स्त्री ओ कन्यागण्य ओ भ्रातपुत्र विद्य-
 मान राखिया परलोक प्राप्त हय, इहार वारामण देशेर चलित
 शास्त्रानुसारे उत्तराधिकारि के इहवेक—ताहार व्यवस्था ॥
 ७२१-७२२

२४१—मोक्षमति रूकमन
 कारसिंह ओ गयरह रेष्वाडरदान
 त्रिहुत जिला निवासी एक व्यक्ति दुह स्त्री राखिया मृत्यु हय, ऐ
 दुह स्त्री एक २ कन्या राखिया मृत्यु हय, परे ऐ दुह कन्यार
 मध्ये एक कन्या एक पुत्र राखिया मृत्यु हय । एक कन्या उपुत्रा

वर्तमान आंछे । एवं तिन किम्बा चारि पुरुषेर जाति आंछे । इहार के उत्तराधिकारि इइवेक-ताहार व्यवस्था ॥ ७२२-७२६

२४२—कोन व्यक्ति पितृधनोपघात व्यतिरेक धनोसर्जन करिया स्त्री ओ कन्यागण ओ भ्रातृपुत्र राखिया मृत्यु हय, से घने वारानस देशेर चलित शास्त्र मते काहार अधिकार इइवेक—ताहार व्यवस्था ॥

७२६-७२७

२४३—भेकनागपणसिंह बनाम तिलकधारिसिंह ओ भेकधारिसिंह ओ गयरह

मोलिलाल ओ गयरहेर मकईमार प्रइनसकलेर मम्म ओ अभिप्राय एक वैरोस्व व्यवस्था देओनेर कारण कि—ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥

७२७-७३१

२४४—एक व्यक्ति मानुज एवं पञ्चम पुरुषीय जाति राखिया मृत्यु हय । इहार उत्तराधिकारिमानुज इइवेक कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

७३१-७३२

२४५—कोन अवीरा स्त्री आपन स्वामोर पितृदौहित्र विद्यमाने स्वामोर श्रृणु परिशोधार्थे विक्रय करे । ताहा सिद्ध हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

७३२-७३४

२४६—श्रीमतिश्रीकूलकुडर
श्रीमतिनन्दकुडर ओ गैरह
भोलासिंह नामक एक व्यक्ति आपन छोर सन्मति क्रमे कन्यार दिगेर ओ जामातादिगेर नामे देवा करे । ताहा मैथिल देशेर चलित शास्त्रानुसारे (सिद्ध हइते) पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

७३४-७३६

२४७—कोन व्यक्ति कुलचारे एमत रित थाके ये अवीरा स्त्री ओ कन्या ओ दौहित्रेर नाम जमिदारिते जारि इइवेक ना । एमत एकरार थाके, तवे पुनपय शास्त्रानुस्रा आवश्यक हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

७३६-७३७

२४८—पञ्चाननदास वनाम राधाचन्द्र बाछ

कोन व्यक्ति तीर्थवासि हइया बिहु मिलकियत खरिद करिया भोगवान थाकिया स्त्रीके गलिया मृत्यु इय । शास्त्रानुसारे उत्तराधिकारि ग्रहस्थधर्मर आत्मबन्धु हइवेक, कि ऐ स्त्री दललिभार हइया दान विक्री करिते पारिवेक-साधार व्यवस्था ॥ ७३८-७४०

२४९—प्रतापनारायणचक्रवर्ति

द्विगरीदार

परमानन्दचक्रवर्ति ओ गैरह

तरफसानियान

निजामपुरेर ब्राह्मण वहेगादिगेर जयन पूजन विषये बिलार परिदत ये व्यवस्था दियाछेन ताहा यथार्थ बटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥

७४०-७४६

२५०—सिउद्धदाय ओ कुञ्जवेहारिलाल वनाम मोड्डुर्मातान मन्त्रणबिबि ओ गै(रह)

कोन व्यक्ति अविवाहिता स्त्रीर सन्तान हइयाथाके । ऐ सन्तानेर पिता बलिया आदालते अलि दर्शाइया नालिष करिया थाके, तबै उहार उत्तराधिकारि ऐ सन्तान हइवेक कि भ्रातष्पुत्र हइवेक-इहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ७४७-७४९

२५१—नरकुसिह मुदाआलेह

आपिलाएट

वनाम

मेघासिह ओ अचरसिह

रेष्पाडएटान

एक व्यक्ति पुत्र ओ भ्रातष्पुत्र विद्यमाने मोरशी घन हइते किञ्चित भगिनीर पुत्रके ओ पितृश्वस-पुत्रके दान, एवं अशी करिया दियाथाके, ए प्रकार दस्तावेज यथार्थ बटे कि ना-इत्यादिर व्यवस्था ॥

७५०-७५१

२५२—दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलम—

चन्द्रधर

आपिलाएट

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह

रेष्पाडएटान

पितृ-दौहित्रेरा अधिकारि हइया विभाग करिया लइले पुनराय

पितृ-दौहित्र अन्माइले, से ऐ धनेर विभाग पाइते पारे कि ना—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७५१-७५६

२५३—मृत दुर्लभरामेर स्त्री स्वामीर योग्यांशे चारि आना जमिदारि
अंश पाओनेर व्यवस्था ॥ ७५६-७६८

२५४ कोन स्त्री स्वामी ओ पुत्रेर मृत्युर पर स्वामीर विषय इइते किञ्चित
भूमि आपन भगिनीर कन्यार विवाहेर समय कुलमर्यादार निमित्ते
पुत्रवधूर असन्मतीते दान करिते पारे कि ना ताहार व्यवस्था ॥
७५८-७६०

२५५—यदि कोन अशनामाय जीवतमान व्यक्तिर अर्वाचमान व्यक्तिर
सहित अंश इओयार कथा लेला याके, से अंशनामा शास्त्रानुसारे
ग्राह्य इइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६०-७६१

२५६—सिउसहायसिंह ओ गैरह आपीलाएटान
जयाकुडर ओ उमेदकुडर रेण्वाडएटान
ज्ञानकोमरेर सन्तान्त केहरसिंह त्वक्तांशे ज्ञानकोमरेर मृत्युर पर
ताहार कन्यार स्वत्व हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६२-७६४

२५७—वल्लभिकान्तचौधुरि आपिलाएट
नवकान्तचौधुरि रेण्वाडएट
मुमुर्षु व्यक्तिर दत्तक पुत्र निपये मुख इइते हौं इति शब्द निर्गत
इइले दत्तक पुत्र सिद्ध हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६४-७६६

२५८—मोमभर्मात लल्लुमना ओ ठाकुर आपिलाएटान्
वेचनलालेर मृत्युर पर ताहार पुत्र सुकुन्दलाल रण्वाडएट
कोन व्यक्ति तामुलि जातिर स्त्री स्वामीर धने अधिकारिणी इइया
द्वितीय पति करे, ताहा सिद्ध इइते पारे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था
७६६-७७०

२५९—गङ्गापुत्रदिगेर ओ यमुनापुत्रदिगेर वृत्ति क्रमागत धन बटे, कि
यजमानदिगेर पमत क्षमता आछे, ये आपन २ इच्छा मते
याहाके तुष्ट इइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेण—इहार
व्यवस्था ॥ ७७०-७७१

- २६०—सिद्धस्वहायसाहू मृत्युर पर ताहार पुत्र गोनाननालेर भोवालि
 वशमुकुळर आरिशाण्ट
 बुनियादिनिह रेणाडण्ट
 लङ्गनारायणेर लिखित तमगुळ ओ गवरदेर टाका नावालक पुत्र
 स्वत्वे उदार खोर निवट इहते तलव् करा उचित खिन, कि
 ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७७१—७७४
- २६१—गुणममादाय ओ इन्द्रनारायण डिमरिदायन्
 भोमतीगुणमयोदाही वेनादार
 गुणमयोदाही अमात-व्यवहार पुत्र प्रतिपालनाथे ये अण करिया
 थाके, ताहार निमित्तेणे नावालक पुत्रेर गितु-विपर विकय इहते
 पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७७४—७७६
- २६२—पदि कोन इन्दु शक्ति स्वभातीय धर्म त्याग करिया अन्य धर्माय-
 लम्बो हय, ताहार खो स्वभातीय धर्म त्याग ना करिया पितु-कि
 भ्रातृ-भ्रातृये शकिते पारे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥
 ७७७—७७८
- २६३—बल्लविकान्तधौपुरि आपिलाण्ट
 नवबान्तधौपुरि रेणाडण्ट
 पोभ पुत्र विपये थावेक ओ शालेर ओ जेलार व्यवस्था । इहार
 मध्ये यथार्थ कोन व्यवस्था ताहार—वेकियतेर व्यवस्था ॥
 ७७८—७८०

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
४	१०	मनुवचनञ्चेति	मनुवचनञ्चेति
५	१५	दालिल	दखिल
६	५	धन	धनं
६	६	देवोयानि	देश्रोयानि
६	११	अदालतेर	आदालतेर
६	२०	दरखाश्त	दरखास्त
११	८	पटी	पट्टी
११	८	शतरञ्जी	सतरञ्जी
११	२२	जो	जे
१४	१८	आपीलाएटेर	आपीलाबडेर
१५	१	शास्त्रमते	शास्त्र मत
१५	१५	एतद्धर्मधि०	एतद्धर्ममाधि०
१६	५	प्रमारोज्ञा०	प्रभोराज्ञा०
१६	८	शताम्	शतम्
२५	२२	निबन्धनुमु०	निबन्धनमु०
२५	२२	मुकावल्या	मुक्तावल्यां
२६	११	सस्त्रराणामभन्नतः	संस्काराणामन्वतः
२६	१५	मुर्दत	मुर्दत
३२	२	उर्ध्वे	ऊर्ध्वं
४६	४	भोजाक	भोबोक
५४	६	भ्रातृपर्यान्ता०	भ्रातृपर्यन्ता०
६१	६	माहार	माहार लिखित
६४	१३	गर्भजातत्वेन	गर्भजातत्वेन
६७	द्व्यनोट	रक्षेत्तत्तन्नु०	रक्षेत्तत्तद्०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
७१	८	राधावन्धव	राधावल्लभ
७१	१८	१७२२	१७३१२
७१	२५	सखवाह	सखराह
७२	४	पाडा	पाडा
७२	७	से	से व्यक्ति
७२	८	राखे ना	राखे कि ना
७२	१६	भूम्युत्सर्जं०	भूम्युत्सर्जं०
७२	२०	देवस्वभूम्यादे०	०भूम्यादे०
७६	१६	दाखिलकार	दखिलकार
८०	२१	व्यवस्था	व्यवस्था
१०१	१०	श्रीर्जं०	श्रीर्जं०
१०४	८	साहेवेर	साहेवेर हुजुर
१०४	१३	इ	देन
१०४	१४	यदि	यः
१०४	१६	मेकनटन	मेकनाटन
१२१	१४	व्यवस्थार	व्यवहार
१२१	२१	करायय	कराराय
१२१	२२	याखेर	याखेर आशा
१२२	२१	वाप्युपधि	वाप्युपाधि
१२६	२२	तत्तत्कन्याया	तत्कन्याया
१३०	२२	लिखित्वात्	लिखितत्वात्
१३३	१०	प्रतिष्ठितानां	अप्रतिष्ठितानां
१४०	१४	भातणां	भ्रातृणां
१४१	१४	दाखिले	दाखिल
१४१	२२	घन	घन इहते
१४३	१४	रामकनिर	रामकालीर
१४३	१५	इवसालि	इवसालि

पृष्ठे	श्लोकी	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४३	२१	सउ टाकार	सओ टाकार
१४४	१४	कारिष्यामिती०	करिष्यामीति०
१४४	१२	राष०	रज०
१४८	२	दद	दुद
१५०	१७	कुमाय्यभावे	कुमार्यभावे
१५४	१६	व्यक्त	व्यक्ति
१५७	१५	१८१८	१८२८
१५६	११	स्वत्वाभे	स्वत्व वाकी
१६२	८	१८१८	१८२८
१६६	१३	अच्छादनेर	आच्छादनेर
१७०	१२	यावञ्जीव	यावज्जीवं
१७२	१३	अजिमावादेर	आजिमावादेर
१७४	१६	०स्यशांहरणे	०स्यांशहरणे
१८८	२०	मान्चं	मान्चं
१८६	६	चीधरिरो	चीधरि
२०३	१७	कोठ	कोटे
२२०	२२	सराजका	सराजकरा
२२२	३	कारिया	करिया
२२३	२४	समानजातीययोः	समानजातीययोः
२२५	१४	करग्रहरण०	करग्रहण०
२२७	२३	० व्ययाथ	० व्ययार्थं
२३७	१०	पितुर्युपरते	पितुर्युपरते
२३८	३	०तर्कालङ्कार०	०तर्कालङ्कार०
२३८	१६	प्रश्नेर	प्रश्नेर
२४४	१०	व्यवहारिके०	व्यावहारिके०
२५२	३	सद्मन्धे	सम्मन्धे
२५५	३	सब्ब०	सर्व०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
२५५	१६	८७	८३
२६२	४	नेजामन्निनेर	नेजामद्दिनेर
२७८	२	व्यतिरिक्तो उत्तरा०	व्यतिरिक्तोत्तरा०
२९७	९	एत्ते	एते
२९७	१८	याशवल्क्यः	याशवल्क्यः
३०२	५	०प्रत्यर्थ०	०प्रत्यर्थि०
३०४	३	ग्रन्थकारैर्वा	ग्रन्थकारैर्वा
३०४	२६	पितुरञ्छयैव	पितुरिञ्छयैव
३०५	२	काङ्क्षन्ति	काङ्क्षन्ति
३०५	१६	निरुदो	निरुदो
३०५	२५	मरणपातित्वादि	मरणपातीत्वादि
३०९	९	लिखितैतद्विद्य	लिखितैतद्विद्य
३१६	४	त्रिशंखहस्तो०	त्रिशंखहस्तो०
३२४	७	०धिकारः	०धिकारः
३२६	१९	०प्रपौत्रपर्यन्त०	०प्रपौत्रपर्यन्त०
३२७	२४	०द्वितीय०	०द्वितीय०
३३७	९	आपत्ति०	आपत्ति०
३६५	७	यदेतद्विद्य	यदेतद्विद्य
३६५	१५	भ्राता भ्रा०	भ्रात्रा भ्रातृ०
३६८	१	सहादि०	संग्रहादि०
३७५	६	तद्ग्राहकाणां	तद्ग्राहकाणां
३७६	५	शब्दस्वचनस्यैक०	शब्दस्वचनस्यैक०
३७६	१५	दशः	दशुः
३७७	८	वचनेभ्यो	वचनेभ्यो
३७८	३	निनादशादत्वांशं	निनादशादत्वांशं
३७८	१६	वैयर्थ्यां	वैयर्थ्यां
३७९	१	विषयपञ्चस्था०	विषयपञ्चस्था०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
३८१	१३	पितर्य्यपरते	पितर्य्युपरते
३८२	६	०योग०	०योग०
३८६	१८	वर्षसहस्रै०	वर्षसहस्रै
३९१	१०	०याग्ये	०योग्ये
४१८	६	एतद्दर्माधिकरणा०	एतद्दर्माधिकरणा०
४५२	२४	विवारयिष्यन्तीति	निवारयिष्यन्तीति
४५५	६	ग्रन्थ०	ग्रन्थ०
४९६	२३	सद्दियुप०	साद्दियुप०
५४९	२१	दानकथादेः	दानकथादेः
५५३	२५	तच्छुद्धसम्मतं	तच्छुद्धसम्मतं
५५७	७	दीपचन्द्रभागिनी	दीपचन्द्रभागिनी
५५७	१४	"	"
५६०	१७	साक्षयै०	साक्षयै०
५६०	२५	प्राबल्येण	प्राबल्येण
५६६	१६	दायभागादि०	दायभागादि०
६१२	१५	लिखितेशब्द	लिखितेशवीशब्द०
६९८	१२	भर्त्त०	भर्त्तु०
७१२	१६	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७१३	२९	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७२४	२६	धनाहकाः	धनाहकाः
७३४	४	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७७४	८	श्रृण्णा०	श्रृण्णा०
७७४	१८	०प्रतिवाच०	०प्रतिवाच०